ਭਕ੍ਤ ਵਿਨੋਦ

भाषा पद्य

श्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूका
श्मीरतिब्बताद्यनेकदेशाधि
पतिप्रभुवर श्रीयुतश्री १०८ रा
णावीरसिंहसाहबबहादुरजी
की आज्ञानुसार यह भक्तवि
नोदग्रंथ भक्तजनोंकी प्रीतीलिये

जम्बू

विद्याविलासनामकमुद्रायंत्रा
लयमें मीरमहम्मदनिसारली
शीहरनकेअधिकारसेमुद्रितभया
सं. १९३५

भक्तविनोद ॥ १ ॥

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ दोहा ॥ दानपती कर अवकरूं कथन श्र
वणसुख दान कथा महातम ललिततर हृदय हरण मदमान १
जासु सुनत श्रुति रसिक जन मन प्रमोद सरसाहिं उपजहिं अव
रिल नवल नित प्रीति चरण हरिमाहिं चौपई भयो नास केसी
कर जवहीं भीत्यो कंस सुनत अस तवहीं १ लीन तुरंतवोलि प
ति दाना तासु मनोरथ सकल वखाना २ गोकुल जाहु दान पति
प्यारे तुमहु मोर सज्जन हित कारे३ भाखि धनष मख गाथ सुधी
रा लावहु उभे कृष्ण वलवीरा ४ सुनत दान पति कंस उचरना
हरष सोक वस भयो विवरना ५ प्रभ आवन इतमै [illegible] शमस्या
[illegible] जयजाना
चाहत हनन अधम अभि माना ६ मैकस अभि सुख जाय अभा
गी लावहुं तिनहिंजाय वध लागी ७ पै इक मोर भाग्य अधि
काई देखहुं राम स्याम तन जाई ८ इह अस कत तिन कर व
धमाहीं खल दल दलन दलहिं इहिकाहीं ९ हृदय गुनत स
फलक सुतएहू चल्यो जान चाढि वृज पतिगेहू १० कृष्ण
कमल पद प्रीति वढाई कव देखहुं नैनन भरि जाई ११ ॥
भक्तप्रधान ज्ञानगुणनीके करतविचारजातपथजीके १२ सोरठा
कोसुकृतजगमोर कवनदानसनमानअस जिहिप्रभाव चितचोर
देखहुंनंदकसोरदृग १ चौपाई मुनिजोगिनकहंदुर्लभजोई परसहुं
चरनकरनमैसोई १ पतितमौलि मणिविषय विकारू निरतअ
धम विस्म्रतसंसारू २ अस मोसे दरसन भगवाना अहोवात

अश्वर्यमहाना ३ आवागमव जगतजंजाला मिटहिं मोरदरस त नंदलाला ४ हितुमम काहुकेस समनाहीं पठ्यो जास ल्या वन प्रभु काहीं ५ इननैनन मुनिमन मुदभरना देखिलेहुं प्रभु पंकजचरना ६ नखदुति देखिजास भगवाना अंवरीष आदि क सुखमाना ७ विदत घोरभव भीतविहाई लीन्योविमल कृष्ण पदपाई ८ दोहा मैहुंद्दगन अविलोकि तेनखदुति कृपाअगार विनुअजास गोपदसरस तरहुं अगम संसार १ चौपाई जेपद चतुरानन सिवसेवा अरु कमला मुनिप्रीति अभेवा १ भक्त मोदप्रद जे[illegible] जेपद पावन समस्त जगत जाल विनसावन २ जेपद गय्यन पाछिलआई विचरत वृजमेदन सुखदाई ३ चिह्नत कुचकुंकुम वृजवंता परसहुंसोपद आज अनंता ४ अमलकपो ल जुगलदुति वदना कुंडिल ललितलसत सुखसदना ५ घ्रा णसुभग सुकनिदरत जासा हसनिमंद मृदुमोद प्रकासा ६ अं वुज अरुण चक्षच्छवि वरनी चितवनि चारु भक्त मनहरनी ७ कुटिल अलिक जहिवदन विराजी मानहुं स्याम भुजगछ विलाजी ८ आजसो विमल वदन गिरधारी ग्वालजूथ जु तलेहुं निहारी ९, मंदनिभार हरनहितस्वामी वृज अवतस्यो जन न अनुगामी १० तीनभवन करलावन ताई देखिपरत तनगो कलराई ११ अस अनूप छबिद्दगन निहारी लेहुंधन्य निज जनम विचारी १२ दोहा निकसत मोरे जानकहुं दैदैदक्षण

ऐनु सकुनहोत निश्चय स्फुट सुभगसुमंगल दैन १ चौपाई अ
पन म्रजाद देवप्रति पाला रमारमन प्रभु दीनदयाला १ भेअव
तरणवंस जदुमाहीं हरण भारहरि मेदनिकाहीं २ करि करि इमत
चरित मनहारू विस्त्रत करहिं सुजस संसारू ३ सो सुजस्य प्रभु
चरित सुहायन सुरमुनि कराहिं मोद जुत गायन ॥ ४ अस कृपा
य निध सज्जन तारन तीनलोक|कर दूख निवारण ५ रमामोहत
छविजास विलोकी प्रभुसम ललित कवन त्रैलोकी ६ सो वचित्र
छवि इन दृग ल्याई होहुं धन्यजनमफल पाई ७ आज दिव
स मैं सुखद विचारहुं कृष्ण चरणजलजात निहारहुं ८ रामस्या
मदरसन जवपावहं तज्जहुंतुरत सिंधन्न पदधावहुं ९ परहुं लुकट
इवचरण नजाई लेहुंदगन पदरेनु लगाई १० विधिहर हृदय
जवन पदधारी लेहिं ललित मनवांछितसारी ११ सोऊ चरण
पंकज गहिपाना होहुंधन्य संसारमहाना १२ दोहा दीनद्याल
करदरसदृग सपनेहं देखतजोय लागत तांकर नयन नित अतफी
कोत्रैलोय १ चौपाई वंदि कृष्ण वलचरन सुहाए प्रणवहुं वहुरि
सषन समुदाए १ धन्य धामवृज तरुवर धन्यां धन्य धन्य मेदनि
वृजमन्यां २ त्रासकृतंत हरण करजोई सरणागत विदलन दुख
सोई ३ तीन भवन ईश्वर्य वडाई इंद्रपूजिजेहं करवरपाइ ४ व
लिदैतीनलोक करजासा वसकीन्हे प्रभुरमा निवासा ५ वृजतृयरा
स विलास मझारा जेहंकर परसिलीन सुखभारा ६ जेहंकर की

जलजारनसोभा हरत सकल वृजलोगन क्षोभा ७ सोकर सौ समीरजनलेखी धराहिंयाल निजरूपावसेखी ८ यदपि जाहंनृप कंसपठावा वारबारमनकरपछतावा ९ तदपि कबहु जन कृपा उमंगा करहिंनवैर वुद्धि मोहिसंगा १० घटघट अंतरजामि भगवाना जगत प्रकासिक कृपानिधाना ११ दरसत कोटि जनम अग भारी ॥ मोर प्रसाद मिटाहिं गिरधारी॥ १२ ॥ दोहा ॥ देवकिनंदन पदमपद मैं गहिहों जवजाय राखहिं मोरे सीस तव करनिज कृपा वढाय चौ० तो मोहि मोद अवधगतनाना निज समसं श्रुति गिन हुंनआना १ हमरे सखे जाति कुलदेवा भुज पसारि निज कृपा अभेवा २ मोकहं मिलहि उताइल धाए करहिं मोर इह पावन काए ३ छूटहिं करम वंध सवमोरा कृत्यकृत्य जगहोहुं नथोरा ४ मिलि जुहारि पुनि जोरतपाना ठहैहों ठाड पाय सनमाना ॥ ५ ॥ तव वसुदेव कुवर अस कैहीं मोरअक्रूरकका सुखिऐहीं ॥ ६ ॥ तव मैलेहुं जनम फल पाई ॥ होहिं काम पूरण समु दाई ७ हरि प्रीय भयो भक्त न हि जेहू दीन्यो वृथा जनम विधितेहू ८ जिमि कौकाम विटप ढिग जाई ॥ लैत लालित मनवांछित पाई ९ मिति ठाडि हुं जुग जोरत पाना देखि राम मुहि दीन महाना १० भेट हिंमं जु मधुरमुसकाते ॥ गहि कर जुगल मोर रति राते ११ अति सन मान जुक्त जुग वीरा ॥ लैज हिहं मोहि सदन सुधीरा १२

दोहा होहुं चरण लगि जोरि कर जवसमीप मैठाढ ॥ तकिहैं सव मोहित ननुरत प्रभु करुणा निज गाढ ॥ १ ॥ मित्र सत्र पृय अपृये प्रभु कहं नाहिं नकोय ॥ पैजस जहिकर भावना तस तहि दरसन होय २ चोपाई कंस करन अपकार जडन सन पूछ हिंसो मोहि कृष्ण कृपातन १ देहुंवतायरुकल मै सोईं ॥ नहि राखहुं कछु पाछिल गोई २ ॥ अस प्रकार उर सोचित वाता ॥ गाधीतने चल्यो पथ जाता ॥ ३ ॥ अस्वन वाग जब दीन सिछाढे ॥ चल्यो वेग सिधन अति गाढे ४ धव्यो प्रात मथुरातें सोई ॥ वृज्ञ पहुंच्यो जामनिजवहोई ५ गोकल निकट गयो जत्र धीरा ॥ लखि छित चरण चिन्ह जदु वीरा ६ बल समेत थल थल वृज धरणा दरसत चरण चिन्ह तन हरणा ७ सुरअजइंद्र चरण रज जासा ॥ धारत निज निज कोटहुलासा ८ सोपद भूषण भूतल केरे ॥ सेवत जन कहं सुखदघनेरे ९ पुंडरीक अंकु समन हरना ॥ साचि रेखा जिन पावन चरना ॥ १० ॥ वृजरज माहिं सुहाव निचारू प्रभुपद अवलि भक्त मन हारू ११ देखि दान पति नयनन सोई ॥ हरष विवश प्रेमा कुल होई १२ दोहा जिय अभि लाखत हरि दरस सुफल कसुवन प्रवीन तुरग नकर पथ अपथ कछु हगन नपर तन चीन १ तनमे रही न तनक सुधि पुलका वलि सव काय ॥ नथ नन सोछिन छिन विपुल प्रेम वारद्रुत्तजाय २ चौपई तजि

तुरंत निज सिंधन काहीं ॥ लाग्यो लोठन वृज रज माहीं १ क
हत सुव चन प्रेम रस राता ॥ इह रज चरण मोरजन त्राता २
आज धन्य संसार महाना ॥ मुहिस मभाग वंत नहि आ
ना३ लोटत रजतें उठयोनजाई तव सिंधन भूतलीन झढाई४स
दन नंदताकि सन मुखकोरी देख्यो गोपवास चहुंओरी ५ अति
प्रमोद वसवृज करसोभा चल्योजात देखत मनलोभा ६ आग
ल चौकवीच तवजाई रामस्याम देखे जुगभाई ७ भएरूपत
किअनमिखनयना वोलिनसकत प्रेम वसवयना ८ दोहा अ
तिसै माधुरी मनहरन मोराति जुगल सुहाई कोनहोत संस्र ति लु
भत देखि दृगन सुखदाई १ सवैया नीलद कूलदुती मकरा कृत
कुंडिल कान सजे छवनीकी लोयन लाल लरै मनुखंजन ओ
कल कंजनको धजफीकी बीचसुखानके राजतहै जदुराज छरी
कर कंचिन हींकी दूधदुहावतहै जगनाथ सुहायधरे दूहनी प्रीय
जीकी१ सुभृत सारिद वारिध सावन से तनस्याम भुजान अजा
ना आनन इंदुलसै परिपूरण पांति सुदांतकी कांति महाना वछ
विसाल वनीवनमाल कटी कलाकिंकनि जालसजाना दच्छन
प्रांतठडे वलरामउ वामखडे खलखे भगवाना २ जेहं ध्वज अं
कुस लोप दाचि न्हसो आंकेत है वृजकी धरनी निजदायासो
घालसुची करिके करिहै कल किरति महि भरनी जगनाथसों
कौन उदार इतो अस दोन उवारनकी करनी भवमेटत वेरनला

बत जेजन आवत तेचरनी सरनी ॥ ३ ॥ मुखमे मुस
क्यान मनोहर मंजुल दीहदया दृगपूरण जासा चालमतंग
जकीकलकोमल मूरति मानमनोज विनासा हीरनओमुकता ह
लजालहृदयवन मालरसाल विकासा भानुभूमिको भारउतारन
कहं अवतारभए वियविस्व प्रकासा ४ दोहा अस प्रकार अक्रूर
दृग हरिछाबिदेखि अपारभयो विथतगतधीरहै मगणमोद निधवा
र चौपाई परुयो कूदिरथतें ततकाला धावासनमुख दीनदयाला
१ चरण सरोज कृष्ण बल वीरा गिरचो दंड बत विकल अ
धीरा २ आनंद वारधारदृगछाए प्रेममगण तन दसा भुलाए ३
सनमुख देखि जुगल निधदाया पुलका वली प्रकट भई काया
४ गद गद गिरा भई अट पाटी दसा प्रेम कछु जायन राटी
५ अस अक्रूरहिं जदु पति देखी ठाय लीनानिज कृष्ण
वसेखी ६ भरि भरि भुजा मले घन स्यामा जायेन प्रे
म प्रमोद वखाना ७ बहुरि हरषवस प्रीति अघाए दौरि मिले
बलराम सुहाए ८ पुनिकल कर कमलनसों गेही लैगमने सुभ
सदन सुतेही ९ वहुरि जुगल वीरन सतकारचो कनक प्रजंक
दीन बैठारचो १० लागे विजन करन बलरामा हेरहिं कृपादृष्टि
घनस्यामा ११ पुनि प्रभु जानि पंथ स्रमभूरा चापन लगे चरण
अक्रूरा १२ दोहा वहुरि चरणतहि प्रेमजुत डारि देवसरि नीर
लागे प्रक्षालन करन करन कमल जदुवीर १ चौपाई पुनि प्रभु

कहिस वचन सनमाना ऐहुं कुसल तुवकके सुजाना २ तेइकट
क चित तव प्रभु कांहा प्रेम विकल कछु उच्चरत नाहीं ३ वहुरि
कह्यो प्रभु ककाप्रवीना तुमरे क्षोभ छुधाअतिकीना ४ ताते
अपनो भवन सुहावा जानि करहु भोजन मन भावा ५ अस
कहि प्रभु निजकरन लयाए बिंजन विविध रुचिर सुख दाए ६
कहि कहि वदन नाम संपूरा दीन जिमाय मुदित अक्रूरा ७
पुनि करवाय आचवन तासा रतन प्रजंक दीन कलवासा ८ तव
दीन्यो बलराम सुधीरा तात तात कहि पाननवीरा ९ पुनि
पाहिराइ सुमन सुचि माला कह्यो हर्षजुत वचन रिसाला १०
कंस महीपद यागत ऐसे जीव हुतास निकट तुम कैसे ११ जि
मिअज निकट कअमख विकेई नाहिन भरोसाजियन कछु तेई
१२ हते सुवन भगनी निज जासा देवकि यद्यपि कीन अजासा
१३ पै नाहिं मिटयो अधम अभिमानी बारबार देवकि विल
पानी १४ दोहा लागी दयान तनकतहि दुष्ट स्वभाव महान
तुम ताके पुर वसतहो कका कवन कल्यान १ अस भाष्यो
बलराम जब तव अक्रूर प्रवीन भए पंथ स्रम विगत तव हरष
मोद मन लीन २ चौपाई राम स्यामसों पुनि पति दाना कह्यो
कंस कर सकल वखाना १ उदय प्रभात बोलि रथ लीन्यो
बैठि चले तहि परत वतीन्यो २ उमग्यो विरह सिंधु तहि काला
वूडन लगी सकल वृजबाला ३ हाहाकार परयो वृजमाहीं रही

सरीर धोर कछु नाहीं ४ झरझर परत प्रेम असुआना विरह वि
खाद न जाय बखाना ५ हो अक्रूर कहत का कीना निरदय
विरह क्रग्गा कत दीना ६ गोपि विजोग सिंधु गत
पारा के सामर्थ कथन संसारा ७ निज निज मति
अनुसार सुहावा सूरदास कवि गोविंद गावा ८ नेतिनेति
करि अंत पुकारयो तो मे कवन तुच्छ मतिवारयो ९ र
सिकजनन आधार रसाला गोपी विरहं कटन जगजाला ॥ १०
गोपिन सहस को संसारा नाहि लजदु नंदन कहंप्यारा ११ ति
न कहं पति पितु सुततन जोई ऐहिन जदु पति सम प्रीयकोई
१२ दोहा सेस जीह सारद सुमति लेखक गज मुखभेख मसि
समुद्र गोपी बिरहंतौ नसकहि कछु लेख१ चौपाई सुफलकसुत
जुगभ्रात नकांही लेत चल्यो मथुरा रथमांही २ रामस्यामछविद्द
गन निहारी मगण मोद तन दसा विसारी ३ नंद नगरते चले
सधाई अये अरुण पुहुंचे तब आई ४ जमुना तट अवेर जिय
जानी लग्यो करन मज्जन सुखमानी ५तब अस जिय विचार प्रभु
कीना इन लोटन वृज से दनिकीना६ मन वच करम दासइह
मोरा प्रेम नेम कछु हृदय नथोरा ७ ताते वृज रज प्रकट प्रभाऊ
देहुंआजनिजजनाहिंदिखाऊ ८ जब अक्रूरजमुनाजलजाई मज्ज
न लग्योप्रेमसरसाई ९ तबताहिनिज कौतुकभगवाना दीनतुरत
वैकुंठपठाना१०तहंनिजसकल विभूतिसुहाई दीनादिखायभागवत

गाई ११ तवहूवेपुलकगातपतिदाना कीनकृष्णकलअसत्वतिनाना १२ जलतेंबहिरवहुरिनिकसायो रमारमनपदसीसानिवायो १३ प्रभुकौतुक अदभुत जियजानी वहुरिवहुरिवंदितपगपानी १४ दोहा वारवारलाग्योकरनाविनयजुगलकरजोर नाथधन्यधरनीकियो मोहिअधमासिरमोर १ चौपई असकहिजुग आतन सुखगूढे लावापुर पुनिजान अरूढे १ अतिपुनीत मुखगिराउचारी प्रभु निजचरण सदन जनधारी२ चरण वारसोंकुलपरिवारा आजकरहु पावन प्रभुसारा३ कहिस कृष्ण जुतप्रीतिसनेहू मैंऐहों सज्जन तुव गेहू ४ कका मोर तुव प्रानन प्यारे सव बिधि सुखद रुचिराहित कारे ५ सत्यजानि प्रभु वरणन काहीं चल्यो दान पति निज ग्रेह माहीं ६ तवमधुपुरी निकट सुखदाई वेठेप्रभु विलोकि अमराई ७ हरि आगमन नंदादि कपाए दरसन करन हरष जुत आए ८ तव प्रभुग्वालवालजुत रामा अथे अरन पुर देखनकामा ९ कीनप्रवेसरुचिरपुरआई जाहिमुनिजनमनलेखिलुभाई १० नगरसोरचहुंओरवढय्या आयेरामकृष्णयुगभय्या ११ खानपानतनदसाविसारी देखनआइनगरनरनारी १२दोहा धारिवसनवप्रीतवपूचलीदौरिगतधीर मृदुमूरतिदेखनदृगनरामकृष्ण जुगवीर१ कवित्त जितजितजातजगजीवनजुगभ्रातातिताततरटथे दरसातअतुरातनयन अलिएतोस्यामलसलोनेओगवरगातमान सहरातानिहरातछविकोठिमैन चितवनिचारुसोचुरावतहैचितचो

पलावतललिनओपअमिललितातवैन भूमिभागआजवृजकरनर नारिनकेजांकेदृगगोचरप्रमोदसातसानदेन १ मोहननेंकीनोनिज रूपकोमोहनमानोमोहिवृजवनतासुतनमोरहीनचेत एकटकाचित्र सीविलोकतसकलठाढ़िवाढ़िगाढ़िप्रीतपलककलनवपुखलेत एक केऊपरएकव्याकुलपरतजातमारतअचातमाराटिकेनाटिकनदेत री झरिझवारीसारीवृजमेदनिकीनारीरामगिरधारीदऊदेखके रूपान केत २ दोहा तहांरजकइक कंसकर लीएवसनमगजात ताहिपू छ्योजदुवीरअसवचनवदनमुसकयात १ चौपई कोतुमरजक कवनकरऐहों हमकहंएहुवसनकछुदैहों १ कहिसरजकअसवचन अधीरा रेगवारमतिअधमअहीरा २ मांगतपटनिजवदननदेखो भयोमोहिआश्चर्यवसेखो ३ इहकसछुद्रगोपकरलाइक वसनअमो ल कंसनर नाइक ४ सुनि अस अधम बचन यदुनाथा आसि प्रहारि काट्यो तांहि माथा ५ दीनाग्वाल वसन सब लीने कछु क विभगत सखन कहं कीनें ६ तव इकरह्यो धरम मति नामा वाइक भक्त कृष्ण धनस्यामा ७ जुगवीरन कहं आवत देखे उ ठ्योजानि निज भागवसेखे ८ नंमृत पर्यो चरन हरखाला प्रे मवार नयननढुरि जाता ९ मुहि किंकर निजजानि अभेवा कहियेदीनद्याल कछुसेवा १० साधि देहुतववसन हमारे कृपा सिंधुअसवचन उचारे ११ वाइक साधि दीएपटताहां अभय कौन तुहिसुरनर नाहां १२ निजकरुणाते विस्वप्रकासा सवत्रि

धि कीन कृतारथतासा १३ दोहा सम्पति बलविद्याविमलसुमतिसु जसलुखचारु तासुदेत करुणायतन कीनमुक्तसंसारु १ चौपई आगलचले बहुरि जुगभ्राता सखनसहित पूरण सुखगाता १ रुद्येएकमधुपुरीमझारा मालाकार भक्तप्रभुप्यारा २ नाम सुदामाविदितसुहावा भवनतासकंचिनकृतभावा ३ ताकरसदनगवनप्रभुकीना सोदेखतमनहरषप्रलीना ४ चरणपरत असबचनप्रकासा मैमालीप्रभुतुवपददासा ५ पावनकरहुंमोरप्रभुगेहू चल्योलेत असभाखिसनेहू ६ सादिरलाचि आसनबैठारे धन्यभागनिजतासविचारे७ जाकेसदन चराचर त्राता आएगवरस्यामजुगभ्रात ८ अरगादिक आचमनकराए धूपदीपनैवेदलगाए ९ कीन्योदीनद्यालकरअंगा चंदनलेपनहृदयउमंगा १०जसपूजनप्रभुकरताहि कीना तससनमानसखनसबदीना११ विनयकीनकरजोरिबहोरि आजकीनप्रभुसुचि कुलमोरी १२ जियनजननधनधाम हमारा जन्योआजसफलसंसारा१३उधरेपितरदेव रिखिमोरे आजप्रसाद जगतप तितोर १४ दोहा उदयभाग्यताहिपुरषकर धन्य जनम जुगतास धरहुसदन जहिचरण तुव द्वैहरणभवत्रास १ चौपई माली करसुनिवचनसुहाए रहेसोन संस्रति सुखदाए १ तबमाली प्रभुजियकरपाई लखत विपुल निजभागबडाई २ कोमल सुमन सुगंधितनीकी विरचित माललितप्रीयजीकी ३ रामस्यामकले कंठसजाई और हुं सखनदीनपहिराई ४ कृष्णाविलोकि प्रीति

निजजगकी मांगहु कहिसभक्तहृच्चिमनकी ५ नृपपदकै प्रहूत पद चारू कैविविधदसासिधरपदमारू ६ लेहुभक्तनाहिं दुरलभ तोरे अ वहि देहुंकछु वेरनमोरे ७ माली जोरि जुगलकरभाखाइनकरमां हिननाथअभिलाखा ८ निजपदभक्ति संतसिवकाई इहमोहि दे हुजनन सुखदाई ९ प्रभु पदभक्ति सरसजग आना मैवसेषपदना हिंनजाना १० दीननाथ तहिदेखिअकामा निजपदभक्तिदीन अ भिरामा ११ मानहुं संपति अचलसुहाई दीनीतासुदयाल जदुराई १२ लोक मलोक सुजस सुखरूरा दीन्योतासुदयानिध पूरा १३ हरिसम कोदाताजग ऐहीं एक देतसत गुण प्रगटैहीं १४ दोहा तबबल संजुत रवन हरि मंद मंद सुखपाय चले कालितकूबरि हगन परीहारि प्रभुआय १ चौपई वैकिशोरकर लीएसुहावन कलितकटोरि कनकमनभावन १ श्रीखंडन कुंकुम सनपूरी तकतजातचहुं कितदृगरूरी २ सुंदरिजबसमीप कछुआई तबनंदलाल कह्यो मुसकाई ३ हमकहं अंगरागइह देहो भाम निमनवांछित निजलेहो ४ कुबरीकह्यो कंस नृपकेरी दीनानाथ एहुंमैचेरी ५ इह चंदिनप्रभुतें प्रीयनाहीं असकहितृयेहरषिमन माहीं ६ हरिमुद्रामन हरनसुहाई ऐंचिदृगनपथमानसल्याई ७ ध न्यभागनिज संस्रातिजानी सादरअंगरागनिजपानी ८ प्रभुकरअं गलगावनलागी अंग अंगपूरणअनुरागी ९ तवनिजहृदय गुन्यो जदुराई इहिफलउचितदरससिबकाई १० असकहिजुगम अंगुरि

निजपाना धरयो चिवक तहिक्रुपानिधाना ११ पगअंगूठ सनपग दविलीना मुखउठाय ऊपरजबकीना १२ दोहा तवकूवरगतरूप अतद्दगमृगबतसवनीय लखिलाजत तृयमदनमनुमनुजकवन रम नीय १ चौपाई इरिसरूप मुनि मानस लोभा देखतकीन मदन तहिक्षोभा १ अंचलछोर गहित निजपानी बोलिबहसिकटाक्ष जुतवानी २ प्रीतमच लहुसदनसुभमोरे निकसत प्राणतजत अव तोरे ३ नाहिनछिन कसकहुं तजितोही मैमूरति मृदुस्यामलमोही ४ कुबरीकर सुनिविनयवसेखी सकुचिगये प्रभुवलतनदेखी ५ भारव्यो मोरसदन तुबभामन व्हैहेंदेवकाज करिआवन ६ असमृ दुवचन सुनत भगवाना महां प्रमोद कुवरिउरमाना ७ अंचल त जतगवन निजकीना जदुनंदन सुचिप्रीति प्रलीना ८ प्रभुधनुभंग रंगमहि कीने गजमल्लादिप्रचंडह तीने ९ पठेवहुरि उदववृज काहीं आपुगए कुवरीग्रेह माहीं १० मणिगणजटित भवन ताहि सोभा जांकरलखत इंद्रमनलोभा ११ कुवरीदेखिहरषहगनीरा ग ईलेन आगलधरि धीरा १२ दोहा लाईकरगहिसदन निज सु चिप्रयंकवैठार भूरिभाग निज जियगुनत कीयेविवधु सतकार १ चोपई रमासरसप्रभु तासुवडाई दीनाविविध वदननिजगाई १ को कृपाल जदुपतिसमनाहींहरणदीनदुखदुसहसवाहीं २ कहांअनंतअ जरजगपालिन कहांकंसकरकूवरिमालिन ३ जानिकपटगतचं दनसेवा मिलेजायतहिआपुअभेवा ४ भगवनकहं केबलसंसारा

सरलकपटगतप्रेमपियारा ५ ऊंचनीचकुलजातिवडाई इनकरनहिं रीझतजदुराई ६ सदादीनबंधूकररीती रीझहिंलखिअवरिलजन प्रीती ७ असप्रकारकुवरीकरताहां करतकृतारथसुरनरनाहां ८ पुनिवलरामसहितभगवाना कीनभवनअक्रूरपयाना ९ सुनिआग मनभमनजदुराए अतिप्रमोदमानसनिजच्छाए १० चल्योदारआग लअकुलाई प्रेममगणतनदसाभुलाई ११ चरनपरतअसागिराअलाई नाथसनाथकीननमोहिआई १२ दोहा चरनकमलरजसीसधरि वंदि रामपदपानि सखनजुहारतसदननिज चल्योलेतसुखमानि १ चौपाई सादिरभवनरतनसंघासन वैटारेजुगभ्रातहुलासन १ गहितकरनकंच नभृंगास्योरामस्यामपदपदमपखास्यो २ चरनवारासिंच्योग्रेहसारीक हतधन्यकुलआजहमारी ३ भूल्योविधीकरनकललागा पूजनकृष्णदेव अनुरागा ४ करिजसतसपूजनभगवाना धारत अंकचरनसुखमाना ५ चापनलग्योहरषसरसाई जानिभागनिजविपुलवडाई ६ निक सतागिराप्रेमवसनाहीं अनमिखलखतरूपप्रभुकाहीं ७ स्रधि सं भारिपुनिवचनवखाना धन्यधन्यतुवकृपानिधाना ८ मोहिसमप ततनाथसमपावन होहिंनकोकरुणासरसावन ९ तुवरजमेरुमेरुरज करने कृपानकेत अधमउद्धरने १० जोनहोतअसदीनसनेहू तौमोसेउ धरतकसएहू ११ मुसकिमंदप्रभुवचनवखाने तुवहमारकुलककासयाने १२ दोहा हमवालकजगजनत नहिं वचनसुभासुभज्ञान छिमहु स दातुवछोहुनिजदाऊदयानिधान १ चौपई इहतुववात्सलभावहमा

रा राखहुसदाहृदयनिजप्यारा १ वात्सलरससदृसन हिंग्राना हर विरंचिकमलामनमाना २ असप्रभुबचन सखापनदेखी मानिभक्ति सोहृदयबसेखो३ कवनधन्यअक्रूरसमानाजाहिबृजरजप्रियमानसमा ना४परसितजाहि प्रभावसुहायोहरि वेकुंठहगनदरसायो५आएव हुरिसदनजदुराई बृजरजकोप्रभावमुखगाई ६ करहिंजतनहठमु निजननाना जेपदपदमनआवतध्याना ७ अबअक्रूरअंकपदतेहू रह्योतरनतहिकवनसंदेहू८द्रवहिंदीनपरदीनसनेहीं जोविस्वाससदा दृढतेही ९ जननिस्वासनाथकरछोहू मेटतइमतविकटजगमोहू १० अबविचारकछु आननकीजे प्रभुकहंप्रीधेप्रेमलखिलीजे११ विनाप्रेमसाधनसवनाना मृगतृष्णाकरनीरसमाना १२ दोहा रीझ तकेवलप्रेमपेंसंस्रातिनंदकुमारा तातेतजिसवजतनहठकरियप्रेमआ धारा १ बिनाप्रेमजदुवंसमणिवरनहुंवारंवारनाहिरीझतजपतपजत नकरहिंनकोटिप्रकार इतिश्रीमनूमहाराजाधिराजजंबूकाश्मीराद्य नेकदेशाधिपतिप्रभुवरश्रीरणवीरसिंहा ज्ञप्तकविमोहांसिंहाविरचि तेभगवद्भक्तिमाहात्म्येअक्रूरचरितकथनंनामसर्गः १ ॥ अथधरम सुवनचरितं ॥ दोहा सुनहुसंतआश्चर्यप्रदकृघामहात्मएहू जासुसुनत लखिपरतप्रभुजदुवरदीनसनेहू १ चौपई अवसरएकधरमसुतराई वैठिरह्योनिजसभासुहाई १ हृदयविचारतासअसठाना होहिंसु जसकहिभांतिमहाना २ राजसूयमखकहुंअनंदू मोरसहायकृष्ण सुखकंद ३ जोनकरहुंअवइहनिजभाखा तोरहिजाहिंजियेआ

लाला ४ रह्योकरतअसभूपविचारा आयगएनारदतहिद्वारा ५ स भासकलउठिमुनिहिंनिहारे हरषेहृदयपांडुअतिभारे ६ चलिसा दिरअग वायनल्याए सुचिकंचिन आसनवेठाए ७ नृप विधि जु तपूजनमुनिकीन्यो पदजल सिंचिभवनसुभदीन्यो ८ लेतकुसलनृप वारहिंवारा विनयवचननिजवदनउचारा९ जोहारिकरहिंकृपानि जनेका उपज्योमोहिमनोरथएका १० मुनितुवजाहुद्वारकामाहिं जहांवसतप्रभुत्रुभुवनसाईं ११ कहियोविनयवचनअसमोरा वोलत तुमहिंनाथजनतोरा १२ दोहा करनचहत मख राजसु प्रभु तुव दास नरेस करहुंसफल इत आय हरिकरिनिजकृपा वसेस १ चौपाई सुनि मुनि वचन भूपअनुरागा हरषि वदन अस भाखन लागा ॥ १ ॥ नृप तुव नीक कीन मन कामा ॥ ऐहैं इत अव रवघन स्यामा २ चल्यो वेग अस भाखि मुनीसा जहां विराज मान जग धीसा ३ सभा सुधर्म जनन कर लागी ॥ वैठ्यो उ ग्रसे नवड भागी ४ उग्रसेन नृप दाह नराजे ॥ कृष्ण कोटि मं सज छवि लाजे ॥ ५ ॥ कृत वरमा अक्रूर विचच्छन ॥ ऊधो सा त्वाकि हरि कर दच्छन ६ अस ओर हुंजादव जन सोहीं ॥ वी र धीर कछु कथन नहोहीं ७ उग्रसेनवाएवलवीरा तहिंआगल प्रदुमनप्रुवधीरा ८ कृष्णसुवनसांवादिकजेते वैठेअस्त्रसस्त्रधृत ते ते ९ जादवजठिरवीरवरआना राजेसकलसुजसमतिमाना १०

उरवसिआदिगंधरवसारी करहिंनृत्यगायनमनहारी ११ पहुंचे

आयतहांरिषिराइं देखिउठीसदसभासुहाइं १२ दोहा उठिआ
गलघनस्यामवलवंदिदेव रिषिकाहीं वैठारयो पूछित कुसलकनक
संघासनमाहीं १ चोपाई॥ कहियेमुनिपांडवकुसलाता। नादकहि
सवचनसुखदाता १ राजसूयमखदीनदयाला। चाहतकरनधरमम
हिपाला २ दैवतासपूरणहिततोही वोलनपठयोआजनृपमोहीं
३ जदुवरसुनतपरमसुखपावा सजनरुनसासनगुहगावा ४
हरिनदेसवससाजिसजिनाना चल्योकटकचतुरंगमहाना ५ पाछे
उग्रसेनवलवीरा। पुररखवाररहेमतिधीरा ६ इतहरिइंद्रप्रस्थथलआ
ए पांडवलेनअग्रउठिधाए ७ चलेवसन वप्रीतमरीरा आतिद्रुतसा
हव्यवस गतधीरा ८ जेपहुंच्यो आगलजहिहाला मिलेताहितस
कृष्णकृपाला ९ प्रेमप्रवाहवारदृगजाता मिलेआयपुनिपाच्यों भ्रा
ता १०धरमभूपभीखमपगलागे वहुरि नंद्मअरुजनअनुरागे ११स
कलअनुजजुत कीनप्रणामा वंदेपुनिपांडवघनस्यामा १२दोहा प्रभु
दलकहंसानुजसुवनपुनि नृपधरमसुजान इंद्रप्रस्थपुरलायकैकयोको
टिसामान१चौपाई सिवकारूढमानरतिहरनी खोडससहस्त्रकृष्ण
कलतरनी १ तिनहिंभूपआगलचलिल्याए ॥ नि
जअंता पुरवासदिवाए २ खोडससहस भवनसुखदाईं वसीतहां
महिखी जदुराईं ३ भिन्न भिन्नकुवरन कहंवासा दीननृति निजहृ
दय हुलासा ४ औरहुं रहेजवनजदु वंसी सवकहं दीननिवास
द्रसंसी ५ नितनव कीनरुचिर सनमाना वरनिनजायप्रतापमहा

ना ६ वासरएकसभा सुखदाई पांडवजुतराजे जदुराई ७ कह्योधर्म नृपजोरितपानी मेमखराज सूयहचित्ठानी ८ करहुंकाम पूरण प्रभुएहा मोहिभरोसतुव दीनसनेहा ९ इहसुभकाज धरमनृपराहा करहुअश्व कृष्णअसकाहा ॥ १० ॥ तवलीय भीमअर जन संगा गए मगध देस हिं अग भंगा॥ ॥ ११ ॥ भीमहाथ मागधहत कीने राजतासत हिंसुतकहंदीने १२ दोहा आए पुनि करुणायतन इंद्र प्रस्थसुख दाऊ वरणनकीन व्रतांत सववेठि निकट महिराऊ १ सोरठा इह संक्षत वखान आनं द अवधि कथा सुची अवआगल सनमान करहुं कथन मखरा जपू १ चौपाई सचवनजुत वंधुन महिराई वैठ्यो सुखि निज सभासजाई १ कनकासनकल कृष्णकृपाला करन पांडव न काजरसाला २ वालमीककौसत कमुनि नाहां अरु अगस्त गौतम जुत ताहां ३ भार्ग वआसुरि गाल भनामा लोमसगर गचिवन अभिरामा ४ सनकादिक नारद जुतसारी आए जहंवै ठे गिरधारी ५ तिन कहं धरम भूप भगवाना वैठास्यो करिक रि सनमाना ६ तव अस नृपति मुनिनसन काहा मोरे राज सूय रुचिराहा ७ पूरण करहुं नाथ मखकाहीं तुव प्रसादकछु दुर्लभ नाहीं ८ एवमसतु कहिकहि मुनिलोगू सुदिनदेखिम खकीन उद्योगू ९ सुररिषहु चिर ब्रह्मरिषजेतू देखिपरत सवनृ पतिनकेतू ॥ १० ॥ भोरभार कछुजाय नवरनी राजारंक वृद्ध सिसुतरनी ॥ ११ ॥ सिद्धनाथ तापसादिज नाना आयसकलमे

वन भगवाना ॥ १२ ॥ दोहा विद्या धरधारन पितर गंधरगु
ह्यकआय हरबिरं चिदिग पाल जुत लोक पाल समुदाय ॥ १
चोपाई देखन राजसूय मखकाहीं कोतृभुवन जांकर रुचिना
हीं ॥ १ ॥ इंद्रप्रस्थ पुर अवसर ताहू देखन आय सबल
जदुनाहू ॥ २ ॥ करिसंमति नृपधर्म प्रवीना मखकार जविभ
गतसबकीना ३ वनेभीमनाइकपरुदाना बनवावहिंविंजन
सुचिनाना ४ ओधनकोसाधोतबनाए करहिंकाजहरिसासनपा
ए ५ लेआवनधनजानिधीना इहआवि कारनकुलकइंदीना
६ विप्रनृपतिपूजनसतकारा सहदेवहिंदीन्योअधिकारा ७
रिदिमुनिसाधुसंतसिवकाई इहदीन्योअर्जुनसुखदाई ८ मख
दिजसाधुपुरोषणकाजा लीन्योकुवरिद्रुपतमहराजा ९ संतचर
णप्रक्षालनसेवा आपुकृपालकृष्णइहलेवा १० भीषमविदर
मंत्रप्रदचारू कीन्योकरनदानअधिकारू ११ असप्रकारहोवनमख
लागा हरख्योधरमभूपवडभागा १२ दोहा ताहिकालअतिसो
रभाजहंतहंमुनिगणमाहिं कवनअग्रपूजनलहैकहिपररुचिसवका
हिं १ चोपई तहंमहंरिषी देवरिषिजेते लगेविचारकरनस
वतेते १ जुरेभूपगौरवअभिमाना इहसंदेहनकाहुमिटाना २
तवअसवदनकह्योसहदेवा मुनिज्ञानीसवसुनहुअभेवा ३ जग
व्यापकजगतेपुनिन्यारे कृष्णदेवसवकरहितकारे ४ सोऊअग्रपू
जनकरलाइक दीनवंधुप्रभुदीनसहाइक ५ इनपूजनतेहमुनिराजू

हांहिसकलजगपूजनआजू ६ इहविचारहमरेमनमाना आ
गलजनहुचिनोरसुजाना ७ मुनिसहदेवबचनउसचारा मुनिज
नहदयकीनसुईकारा ८ इहितेंनहिनप्रमारथदूजा लेहिंअग्रजदु
नंदनपूजा ९ धरमभूपमुनिमुनिजनकाहा भयोप्रलीनपरमउत
साहा १० अनकआभरन वसनमंगायो हरिकहंसंघासनबै
ठायो ११ चरणपखारिकरननिजराई लीनचरणजलसीसच
ढाई १२ दोहा जबकीन्योविधिजुतहरषिहरिकोपूजनराऊ
साहिनसक्यो सिसुपालजढ दुरमतिदुष्टसुभाऊ १ चौपई
सभामद्धकटु वचनउचारा सुनहुसकल मुनिजनपरिवारा १
कालवक्रमतिभईसबोरी जानिपरतकछु और किशोरी
२ रिषीवृद्धरिषिमुरारीविज्ञानी धर्मधुरिंद्रभूपबहुमानी ३ इंद्रव
रुणलोकपचतुरज्ञ री तृभुवननाथईशवृपुरारी ४ असनरी सस
रईसबतत्यागी कितमति सभ्यजननकरभागी ५ कवन ए
कासिसुमतीविहीना सगरन कथनसत्य जाहिकीना ६ दीन
अग्रपूजन गुपकाहीं रह्यो आन कौलाइक नाहीं ७
नंदगो पकर सुतमतिहीना भाग्यव्यवस विसुता
कलुलीना ८ सरव धर्म गत जानित करा कारि
काय मानुल निजहारा ९ अति अचरजवात संदेहू
कीन्यो अग्र पूजक सएहू १० हरिजन सुनि निंदा हरिकोरी
हाय हाय बोले चहुं ओरी ११ मुनि रिषसाधुदि जन बुधनाना

लीने मूदि अंगुरिधरिकाना १२ दोहा जोहरि हरि केजनन कर अ
पजस करहिं अभागि हतन उचित तहिजाहिं नत मूदि श्रवण
जुगत्यागि १ चौपई साधुविप्र अस मानस वरना चलेदु खितउ
ठि मूदत करना १ मुनिहुर वचन दुष्ट करभाखे साजुइ उठेपां
डु मननाखे २ द्रोण विदर भीषम वलखाना क्रोधित धस्यो धनष
करवाना ३ देखि सस्त्रजुत आवत सारी उठिचंदीपअसगिरा
उचारी ४ करिअनीतिअत्र जानिन पैहौ अहोसहाय गोपतुम
ऐहो ५ अस कहिगहि करवा लकराला उठयोरिसाकिसिसु
पालाभु आला ६ धावतत पांडव सुतकाहीं मच्योअति सको
लाहलनाहीं ७ जवलगइरि कईवोलतराहा तव लग प्रभु भाख्यो
नहिंकाहा ८ जवधायो दासन कहमारन तव अस रिसकिकह्यो
खलु हारन ९तुम वैठहु भटि सकलसमाजू मैंदेहौं इहि करफल
आजू १० अस कहिगिरधर चक्रवहास्यो सीस तास कटिमेद
निडास्यो ११ जय जय जय मुनिसाधुस माजा बोलेपरि चरदु
धविवाजा १२ दोहा जेहरि हरिजन द्रोहि नृप चलेसुअधमप
लाय कीनो अन तुति धर्म नृप मुनिनस हित सुख पाय १
चौपई पुनि राजसु मखहो वनलागा छायो वेदधुनि चहुं भागा
१ सुरनर सिद्धदेवरिषज्ञानी महरि षपस मुनीसअ मानी २
साधु विन आए मखजेहू लीनमनोरथनिजानिजतेहू३ असप्रमाणत
हिमखकरररहयो जानिदरहिंपूरणत्रभयौ ४ बाजाहिंपांचजन्यजा

6397

बञ्आपू भरन प्रमोद हरन संतापू ५ सोमिरवकर सुरनरमुनि जेते खायपाय वांछित मनतेते ६ पैनाहिं वज्यो संखपच जन्य तहिंतें नृपकलेश जियमन्या ७ सभा मद्ध तवजात अधीरा पूछ्यो कर जोरित जदुबीरा ८ रिखिमुनि सिद्धसाध समुदाई ब्रह्मरुद्र तुमत्रिभु वनराई ९ भईतृप ति सवकर मखमाही वाज्यो संखहेतु कहिनाही १० रह्यो कवन मख भाग वहीना जहिं निज मन वांछित नाहि लीना ११ दीनद्याल कहिये अवकारण वजै संख जिमि सोकानिवारण १२ दोहा सुनि असवचन नरेस कर कृष्णदेव लखिहेतु कहि समंद मृदुवचनमुख विहसि प्रभुकृपान केतु १ सवैया वारिंचि सुरेसुमहेस कुवेरलोदेखन आयस दैमख तेरो और मुनीरिष देव महारिषराज रिषी दिज प्रेमघनेरो नेक कस्यो सतकारतिनै तुवपूरणतान भईजगकेरो संखवज्यो नाहिंहे तुसोईइक आवअनेनसुदासनमेरो १ ज्ञारतभीनसदातुमरेवचाकर औपरतोरानिवासी हानऔलाभसुमानपमानमें रहतसदारसएकउ दासी खावतखावत संतनजूठ सुचीमतितासअनूढप्रकासी जातिअनीकभनैवलमीकसुनोनृ पतोरसोभाग्यविकासी २ साधरिषि दिजदेवनलोतुवपूजननेककरोसिवकाई भूपखवायरज्ञायकै दानसों मानदे हौकिनारंकनराई राऊरकाजसरैंइन तेनहीं आनहुंकोटिक रैंजोउपाई जोलोन आवहिंसोवलमीकसुतोलोनसंखवजै सुखदाई ३ ताहिकोलायवोजोगतुमैपै पठोअवपारथभीमकोराई तेतुव

प्रेमको नेमजनायकैआवहिक्षेमसोंसंगलिवाई पादपखारकैपाकर चैद्रुपतीनिजहाथसों देहिंजिवाई तेपदवारकेसिंचनसोइतसं ख वजैमखपूरणताई ४ दोहा दीननाथकरवचन अस सुनि नरेस विसमाय जानिभक्तमहिमा अमितआग्सदीन सुनाय १ चौपाई अर्जुनभीमसेन तुवजाई लावहु वेगभक्तजदुराई १ पारथ भीम चलेततकाला खोजत खोजत नगरविसाला २ एक ओरपुरदे खिकुटीरा बैठेद्वारजीथेमतिधीरा ३ पारथ कह्यो कवन तुम वाला कोइतवालमीक करशाला ४ भावनकह्यो नामजहिलेहू मैतृयतास सदन इहतेहू ५ भूरिभागमोरे जगरेहा आएकवन काज प्रभुगेहा६ तवअर्जुनअसवचन उचारा भामनि पातिवरहां तुमारा ७ तीथेकहिसप्रभुभीतरभवना लावहुवोलि वेग करिगव ना ८ हमहुंचलवपार्थ असवरना वंदन जोगतोरपति चरना ९ अर्जुनभीमभाखि मुखएहा चलेहरख जुतभीतरगेहा १० वाल मीकआवतदौभाई देखिपस्योचरननअकुलाई ११ वहुरि भीमअर्जुनहरखाते परेचरनतहिप्रेमअघाते १२ दोहा साधुभेषत नवसनधृतउरवनमालसुहाइ हरिपूजनव्रतादिवसानिसि निरतसंत सिवकाइ १ चौपाई वोल्योनअजुगलकरजोरी नाथकवनचुकाति जगमोरी १ जेतुववारवुहारनहारा ताकेसदनचरणनिजधारा २ सुपचजाति अति मंदमलीना काहुविचारनाथनहि कीना ३ इह अचरजकछुलख्योनजाई अवनदेशप्रभुदेहुसुनाई ४ तवअर्जुन

असभाषनलागे धर्मभूपतुव दरसनरागे ५ चलहुजग्यपूरणअवकीजे नृपकहुंछाचिरसुजससुखदीजे ६ साधुसिरोमणिभक्तअमान्योकृष्णदेव जाहेनिजप्रियजान्यो ७ असकहिपदरजसीसधराए चलेलेतजहं पांडवराए ८ आवतदेखि द्वरअगवाना चलेभूपजुतकृपानिधाना ९ तव नृपधरमधीरतजिधाए परेसुपचपदप्रेमअघाए १० पुनिपुनिमिलतसनेहअपारावह्योजाततनयन जल धारा ११ कृष्णदेवउरलीनजुडाई वालमीकपगपर्योलजाई १२ निकसतप्रेमव्यथवसनहिंवयना साधुद्विजनानअचरजछयना १३ निजनिजवदनकहतअससारी अहोप्रेमकरीतिनयारी १४ दोहा तवइककरगहि कृष्णताहि इककरनृपति गहीत लाए रखथलदीनकलआसनसुभगपुनीत १ चौपाई राज्योमुनि मंडलि जहिठामा॥वैठयोतहांसुपच अभिरामा १ द्रुपतसुता आंइपुनि तांहीं॥जलमयकनकपात्रकरमाहीं २ हेमथारभूपतिकरलीने सुपचचरणप्रक्षालणकीने ३ करतसशोषणपुनि नरनाहू पहिराएपावनपटताहू ४ पुनिलीन्योचंदन सुखदाई सुमनमालउरदीनसजाई ५ सादिरधूपदीपनृपकीना द्रुपतसुताकहं आयसदीना ६ भक्तप्रवरकहं विंजनलयाई देहुसपारि परोसिजवाई ७ तवभगवानकह्योमुसकयाईद्रोपतिजाहि लगतुवचतुराई ८ तहंलगसाचि विंजनविरचावहु मोरभक्तकहंकरनजिमावहू ९ पकभवनत वद्रुपतकुमारी जायरच्यों विंजन सुखकारी १० धरिधारे हाटकभाजननाना राखेअग्रभक्तभगवाना ११ निजमुखद्रुपतपुता अभिरामा पृथक्पृथक् भाखेसव

नामा १२ दोहा धरेसकलविंजनसुजन वालमीकस नमान नयनन मूदिलाग्यो करन तव अरपन भगवान १ चौपई अस प्रकार प्रभु कहं तहिदोने॥पुनि इकत्र विंजन सवकीने १ जब इकग्रासतास मुखपावा॥एक वारतव संखधुनावा २ वाल्मीकसवकोन अहारा॥पै नवज्यो मख संखदुवारा ३ रिसकि संख कहंज द्रुपति ताड्यो॥तवहुंन तास धुनी कछु काढ्यो ४ तव द्रोपति सन भगवन काहा॥संखमोन कहि कारण हा ५ हरि मुख सुनत वचन अस सोई ॥वोली परम सकुचवस होई ६ मै आने विंजन जोइ नाना॥वाल्मीक सवएक मिलाना ७ खायो रस अनरस नाहें लेखा॥इह गिलानि मोहि उपाजि वसेखा ८ जान्यो जिये वृथा स्रमकीना॥इहि विंजन कछु सारनचीना ९ मोरे जानि पस्यो कछुनांहीं भक्तभक्त भाखत इहिकाहीं १० तव भगवन अस वचन वखाना॥अवलग तुमहिं भयो नहिज्ञाना ११ महिमा मरम भक्त मम जोई॥मेजानहुं जानत किमि कोई १२ दोहा विरचे विंजन जवन तुम सो अरपे मोहितास॥ मोरे कस पूछ्योन तुम सकल स्वाद मोहि भास १ चौपाई रस अनरस सम संस्रति एहा॥भक्त मोर अति परम सनेही १ जब भगवन अस गिरा उचारी मिटयोसकलभ्रमद्रुपतकुमारी २ अतिअचरजमान सनिजमानी वंद्योवाल्मीकपदपानी ३ जवद्रोपति पदसुपचजु हारे॥तवहुं संखधुनिघोरपुकारे ४ सुरनरमुनि देखत विसमाने

भक्ती प्रभाव महानवखाने ५ मुनिसुरविप्रधरनपतजेते नावहिंसी स सुपचवदतेते ६ प्रभु कहंवारं बारसिहाहीं तोरभक्तमहिमा अव गाहीं ७ जैतिसवदसवकरहिंसमाजू कहतधन्यपांडवसुतआजू ८ राजसूयपूरणतवभैयौ वालमीकजसदसदिमछैयो ९ आवात हांएक जनकाहू लीनिसंगनकुलइकताहू १० प्रकटतासअसव चनअलावा भैतोतीनलोकफिरिआवा ११ मरुतराजकरराजसु माहीं गयोनकुलजतमुनिगणजाहीं १२ तहिमखकरकलइमतप्र भाऊ सुनहुसंतमुनिरविविरराऊ १३ दोहा तिनपदप्रक्षालतस लिलनकुलहिंलोटनकीन भयोकनकआधोवपुख मैप्रभावइहचीं न १ जहंजहंभामखराजसूमेतहंतहंनिजजाव नकुललुटायों बारवहुभयोनकांचिनकाय २ सुनि भाष्यो भगवन विहासि अवहिंसुपचपदतोय लौटा वहु निज नकुलहं कसनकनक वपुहोय ३ तब लौटायो नकुलकहंवालमीं कपदवार भयोप्रकट आधोकनक लख्यो सबनानिहार ४ भए सकल अचरजविवस जयति जयति धुनिगाय भक्ति प्रभावअनं तलखि कृष्ण चरनसिरनाय ५ विवध सुकीरति वदन निजकीरह रिभक्तसनेहु हरिअनुसासनलेत सवगवने निज निजगेहु ६ असइह पावनचरित मैवाल मीककछुगाव जासुसुनतश्रुति प्रीतिदृढकृष्ण कमल पदछाव ७ इतिश्री वाल्मीकचरितं नामद्वितीय स्सर्गः २ ॥ दोहा कृष्ण चरन रति दायनी हरन सकल भ्रमभीत करा

मोद मंगल महाँ वर नहुं कथा पुनीत १ विप्र जनार्दननामइक निपुण भक्त भगवान ताहिहरिवंस पुराण मध कथा श्रवण सुखदान २ चोपई ब्रह्म दत्तइकभूप मधीरा वसिहैंनाल्व नगर गुण खीरा १ धर्म निरत इंद्रे जित ज्ञानी अनकजग्यकारकजगमानी २ महिखीरही तास कल दोई सुमतिसुसीलानिपुण गुण सोई ३ भूप मित्रइक विप्ररहावा जाहि सहमित्र नामजगावा ४ नृपअरुविप्रमित्र सहकाहीं दीनन देवसुवनग्रेइ माहीं ५ नृपति कीन चिरराज अंगा विप्र मित्र जुत हृदय उमंगा ६ अवसर एक पुत्रदुख मानी नृपति जग्य वैष्णव रुचिठानी ७ हेतु प्रसंन्न सुभभगवाना मख वैष्णव नृप कीन महाना ८ विप्रमित्र सुहातिमि जियजानी कृष्ण प्रसन्न हेतु सुखमानी ९ वेदवहीत पुनीत अचारा करि कीन्योवैष्णव मखभारा १० नृप दुज भक्ति प्रेमदृढजाना भेप्रसन्न हरिहर भगवाना ११ गएनरेसजग्यसासि भाला आए कृष्ण विप्र मुखशाला १२ दोहा नरनाइकहर पगन पर वरमांग्यो करजोर देहु प्रचंड प्रतापपरप्रभु मोहि जुगल कसोर १ चौपई विप्रमित्र सहति मिहरिपाहीं मांग्यो बर भावत जियकाहीं १ निज अनंत सेवक जस माना देहु सुवन मोनि कृपा निधाना २ अस हर नृपहि दीनसुतदोई अमर समर धीरज धृत सोई ३ तिमिसुत दिजहिदीन भगवाना विषय बिरक्त भक्तगतमाना ४ भेनृप सुत जग प्रबल अ

पारा नाम हंस डिंभक तिन धारा ५ राख्यो नाम जनार्दनता सा विप्र सदन जोइ सुवन प्रकासा ६ दिजसुतकर नृप पुत्रन संगा बन्यो परस्पर नेह अभंगा ७ शस्त्रशास्त्रपठिभये प्रवीना तव तप हेतु गवन वनकीना ॥ ८ ॥ कीन उग्र तप भूप कुमार न कार निजहृदय संभुपद धारण ९ जाविन भक्ति भक्त हितका रो कीन उग्रतप विप्र मुरारी १० कानन पंच वरष लग तीन्यो विधि पूर्वकहरि हर तप कीन्यों ११ नृप सुत रहे करत तप जाहां आएहर प्रसन्न मनताहां १२ दोहा मांगहुमांगहुभक्त वर मुहि प्रसन्न जियजान तुव कीन्यो तप कठिन मम तजिभरो स लग आन १ चौपई भूप सुवन सुनि संकर वाणी मानहुं तप निद्रातें जागी १ उठे हरष पूरित जुग भाई॥हरपद परे दंड वत जाई २ असतुति लगे करन वहुभांती जैति जैति हर त्रिपुर अराती ३ जैप्रभुभाल चंद्रमुख सारा ॥ जैहर हरणत्रास संसारा ४ जैति जैति संकर भगवाना जैति वृषभ पत कृपा निधाना ५ जैउमीस गौरीस गरीसा ॥ जैति जैति आभरण अहीसा ६ जै गंगा धर जैति पिनाकी जैतिभीमभगवानइकाकी ७ जैजैनं दिनाथवरदाता जैति भसमासित मंडितगाता ८जैतिजैति चरमं वरधारी जैजै मदनदहनदुखहारी ९ जैजै करन विश्वसंघारा जैति जैति प्रभुभक्तउवारा १० जेजै भूतचराचरसेवा जैंति जैति मंडिन दिजदेवा ११दोहा असप्रकार असतुति करत तिनमांग्यो

बरएहू हमकहं संस्मृति अनुरसुर जीति सकै नहिकेहू ॥ १ ॥ चौपाई दीजे दिव्यअसत्रहमकाहीं आवहिं मीच निकटरणनाहीं १ एवमस्तुकहि रंभुक्तपालादीने असत्रसमर अरिघाला २ बहुरिकृपाजुतवचनउचारे सदासंगतुमेरेरखवारे ३ रहिहैंसुभटजुगगणनेरे अरिकौजीतिसकैनहीतोरे ४ इहतुमरेजनसदासहघ्या रिपुकहंहकालरूपदरसघ्या ५ कुंडोदरविरुपाक्षवखानौ विदितनाम निजरक्षकजानौ ६ असकहिअंतरध्यानसिवभयऊ हृदयहंस द्विभक्त सुखछयऊ ७ रुसुद्ररुादकवचकरि धारन पानिपरसुग हिसोक निवारण ८ दोहा जुगलवीरगवने भगवनभीमसंगगणदोऊ सदन आयवंघो चरण जनक नंघवतहोऊ १ चोपाई ललित लिलाट त्रिपुंडविराजत भसम स्वेततन चांदनिलाजित १ रुद्राक्षनस्त्रजअंगनधारू पिंगलसीसदेवसरिचारू २ अष्टजाम सिवसिव ध्वनि बाजे बागंबरअंबरतनसाजे ३ असनकेत निजनिवसन लागे नृपसुतप्रबलजुगल वडभागे ४ उतजनार्दन विपुन निवस्या हरिप्रसन्नहितकीनतपस्या ५ हरेरामरघुबररघुराई केसवकृष्णजनन सुखदाई ६ रटनरुचिर रसनादिजएहू प्रेमवारदृगवारनलेहू ७ सुधिसरीरसगरीविसराना भजत नरंत्रकृष्ण भगवाना ८ पंचवरष इहि भांतिवितासा हरिहरि रटतादेवस निसितासा ९ अवरिलभाक्ति प्रेमदिजजाना॥प्रकटि प्रसन्न भएभगवाना १० विप्रदेखिप्रभुकहं अकुलाई परचोलुकटइवचरणन जाई ११ अस्तुती करचोअने

कत्रकारा जैजेजदवर कृपाअगारा १२ तुमहिंदीन उद्धारनहारे तुमहि सरणगत दूखनिवारे १३ तुमहिबिप्र सुग्मेदानिगद्या॥दी नयालदुख त्रासहरय्या १४ असरन सरनतुम हुंजगजाने तुमहुं गरीवनिवाज कहाने १५ तुम आधारसकल जगकेरे तुमहुं भक्तजनसुखद घनेरे १६ दोहा मुनितियतारन तुमविदत वारन सोकनिवार तुमहुंउवारन अजामल तुनतारनवधुवार १ द्रुरतमु ताकीलाजतहं तुमराखीजदुराय तुमहुंभए प्रल्हादकर धरनर सिंह सहाय २ चोपाई असप्रकार अस्तुतिमुखगाई मगनप्रेम दृगवा रवहाई १ तवप्रसन्न भगवनअसकाहा मांगहु भक्तजवन रुचिरा हा २ तुवनिसकपट कीनासिवकाई मेप्रसन्नतुमपें दिजराई ३तव दुजजोरि जुगलकरभाखा अवमोहि नाथ कवन अभिलाखा ४ जोगिसिद्धतापन मुनिज्ञानी करहिं जतन हठअनक अमानी ५ तुवदरसन हितभक्तउवारी नानालोंहिंविपुखदुखभारी ६ तिनकहं धानपात्रभगवाना आवतकवहुंनकृपा निधाना ७ मोरभाग्यकर कवनवडाई जोप्रतक्ष प्रभुसन्मुखआई ८ मांगमाग वरदैवउचारा मोहिसमकवनधन्यसंसारा ९ जहिगोचर दृगात्रिभुवनराई का मांगहुं अवभक्तसहाई १०पैमोपेंप्रभुजोअनुकूला तोमोहिदेहुसकल सुखमूला ११ चरणकमलनिजभक्तिसुहाई अवरिलप्रेमसंतासि वकाई १२ दोहा इहदायानिधदेहुमोहिनाहिनआनकछुकाम वोलेसुनिदुजवचनअसरमारमनअभिराम १ चौपाई मैनि जभक्तिसंतासिवकाई तोरेदीनाविप्रसुखदाई १ असकहिसजल

नयनभगवाना दुजहिंलीननिजहृदयजुडाना २ वहुरिवदननिजाक्रि भुवनरायाकह्योदुजहिंश्रसपूरितदाया ३ कछुदिनभक्तमोरकरिसेवा मोरधामतुवश्रैहोश्रमेवा ४ असकहिकृष्णअंत्रहितभयऊ विप्रमुदितश्राश्रमनिजगयऊ ५ तवतें एहुरुचिरव्रतधारारारख्यो कृष्णचरणआधारा ६ ऊर्ध्वपुंडमसतककलसोहत द्वादसतिलकअंगमनमोहत ७ सुचिवनमालकंठकरलीला सरलुभावसनेहसुसीला ८ दोहा श्रसाडिंभक्तश्ररुहंमजुगविप्रजनार्द्दनजोय सालुनगरनिवसत भए मुदितसुजसरतहोय १ चौपई एकसमयनृपसुतयुगवीरा सेनसजायमुदितरणधीरा १ लीएजनार्दनदुजकहंसंगा काननगएकरनमृगभंगा २ तहांवराहव्याघ्रमृगनाना हतेकीनमृगज्ञानतनाना ३ जुगलजामावहरतवनमाहीं वीतिगएदिजनृपपुतकाहीं ४ तवचमूसमेतृषित भएभारी तवश्राएपुष्करतटसारी ५ करिजलपान कियोविश्रामातहांवसहिं तापसमुनिनाना ६ सुनतवेदध्वनि सैनतयागे नृपसुतदुजनदरस श्रनुरागे ७ विप्रमीत निजसंगलिवाई गवने जहंमुनिमंडलिछाई ८ मुनिदरसन करिनृपसुततेहीं वंदिचरनसुभ श्रासिषलेहीं ९ वहुरिनम्रवत कहत उचारी मुनिकृपाल श्रसविनयहमारी १० पितुकरि राजसूयमषकाहीं विजय करन सवमेदनिचाहीं ११ हमजवकरिहोंनिमंत्रणतोरे तव श्रैहोंतुममुनि पुरमोरे १२ दोहा श्रस प्रकार सव मुनिनसन विनयकरतकरजोर श्राश्रमश्राश्रम मुनिनके फिरतनरेसकसोर १ चौपई करिदरसन

परसनसुखपायो मुनिगणतिनसोंवचन अलायो १ करहिंजग्यजव जनकतुम्हारा तवआवनउतहोहिंहमारा २ इहिविधिसुनतकथन तिनकाहीं गवनेदुरवासामुनिजाहीं ३ रुचिरसहसदससिषनम झारयोराजितअनलरूपजनुधारयो ४ जासकोपदवभवनउदंडा जरतसुरासुरसापप्रचंडा ५ अंवरअरुनदंडकरधारी जारनजगत अवज्ञाकारी ॥ ६ ॥ लोयनलालभसमवपुछाजे सेतसीसजटजूट विराजे ॥ ७ ॥ मनहुं कालमूरति मुनिराई ॥ देखतकोनविकल हैजाई ॥ ८ ॥ डिंभकहंस निकट तहिंआए जोरिपानिचरणन सिरनाए ९ पूछिकुसलजनानन हरषाई ॥ मुनि समीपवैठे जुगभा ई १० विप्रजनारदनपु निपगलागे कृष्णभक्तलाषिमुनिअनुरागे ११ मुनि नाथ हिंविरक्त जगजानी । भूपसुनतअनुचितचितमानी १२ दोहा कह्योकठिनकटुवचनअस कालरूपमुनिकाहिं चौरग्रहस्तत जिकतवन्यो संन्यासीजगमाहिं १ चौपई प्रथमधराहिंसन्यस्तनको ई ग्रहस्थाश्रमविधिजुतदृढहोई ॥ १ ॥ पहिरेरक्तवरुनपाखंडी मूरखवन्योमूखातुवदंडी ॥ २ ॥ कहितेरीतवेद प्रतिकूली लीनी अधमग्रहस्तपथभूली ३ जामेअतथि संतदुजदेवा सवविधिहोत रुचिरसुचि सेवा ४ ग्रहस्तआश्रमसंकरमनमाना दाइकनरनावि स्वकल्याना ५ तुवकपटी करदंडधगए । दीनसिधर्मकर्म विसराए ६ पुसकरतटवकध्यानलगाई बैठ्योजनवंचनहितआई ७ रोविरू पउनमतमतिहीने । तेजउवृथो दासहरलीने ८ गताचारअज्ञानर

ताना भसमरमतसठलाजनमाना ९ निपटअमंगलरूपवनाए दुर
वासाजगनाम कहाए १० असपाखंडनिरतसठकोरी पकरतदेत
दंडहमजोरी ११ वाधहुं अवहिं वेरनाहिंकाहू गवनिभवन एहि
करवाविवाहू १२ दोहा गृहआश्रमीवनाय इहिकरि विधिवद
अजास संसकारकरवायपुनी करिहुंनिरतसंन्यास १ चौ० असभनि
जायअत्रि मुनिपासा वैठेजुगलवीरवलरासा १ तहांवहुरिकटुवच
नप्रकासा रेसठदंभनिरत दुरवासा २ नहिनमूढकछुज्ञानतुमारे
वृथासहसदस विप्रविगारे ३ मूरषआपु विनासनऔर अवलगभ
योनसासनतोरे ४ कोपापीदंभीनहिं तोसौ तोहितेंवसतधर्मसतको
सो ५ दुजहमारतुवलेहुसिखावन पैहौंअवअनाकसुखपावन ६
करिपूरव गृहआश्रमकोरी वानपरस्थपदलेहुवहोरी ७ ब्रह्मचरय
धरि पुनिसंन्यासू लेहुविप्रवरधरमप्रकासू ॥८॥ जोहमारअसकथ
ननकरहौ तोदुखपाय विपुलवपुमरहौ ॥ ९॥ मुनितहि समयमौ
नजपलीना सुमरतध्यानकृष्णपद दीना ॥ १० ॥ सापवचननहिं
सकेउचारी छयोकोपमुनिमानसभारी ॥ ११॥ घोरअनर्थजनार
दनजाना भूपसुतनसनवचनवखाना १२ दोहा नहिसेवावृद्धन
कियो नासतसंगउपास मुनिहिंवृथादुरवचनकहिकरिलीन्योनिज
नास १ चौपई अवतुमलेवमहांदुखदोई कीयोकुबादकालवस
होई १ सिवअवतारपुंजतपछाए दुरवासामुनिसंस्तुतिगाए २ ड
रपतलोककोपजहिघोरा मुनिसंन्यस्थविदतसिरमोरा ३ तुमतिन
कहंदुरवचनउचारे अवनहोहिंकल्यानतुमारे ४ वेगगैहुउनकर

पदजाइं जोअपराधछिमहिंमुनिराई ५ सिसुपनतेंतुमसंगसुहाई रहीपरस्परप्रीतिमिताई ६ वाहितदोखिविनासतुम्हारा उपज्योमोहिसोकदुखभारा ७ मरहुंखायविषकीतजिजाऊं गिरितेंगिरहुंकिवारिवुडाऊं ८ सुनतविप्रसुभगिराउचारी वोलेभूपसुवनहंकारी ९ ऐदुजकरहुकथनकतत्रासन कोकरसकेहिमारविनासन १० तुमहुंपक्षउनकरजढठाना लग्योहमहुंउपदेससिखाना ११ असतिनकथनसुनतदुरवासा कोपअनलमनुकीनप्रकासा १२ दोहा निकसीरिसज्वाला ज्वलत रोमरोममुनिआय वंकभृकुटितिनतनचत्यो मदनभीमाजिमिभाय १ चौपई प्रवलकोपदवदृगनदिखाई मानहंप्रलैअवहिंनियराई १ आयहंसडिभकढिगतांहां कंपतकोपाविवसमुनिनाहां २ दीन्योघोरसापअसवागी होहुभसमतुवजुगलअभागी ३ मुनीकुपतजद्यपिअसकाहा पैनाहिंसापसक्योकरिदाहा ४ दुरवासातवअचरजमानें विलषिविपुलअसवचनवखाने ५ जाहुजाहुमुहिसनमुषत्यागी राखनजोगनतुमहुंअभागी ६ तुमरोजानिपापहंकारा करहिंनासभगवानतुम्हारा ७ भगवननामसुनतसुतराई हृदयकोपकीन्योअधिकाई ८ करकोपीनदीनमुनिनाथा पहिरायोवरवसगहिहाथा ९ असमुनिवरकरदसानिहारी हाहाकरतभगे सिषझारी १० दुरवासाअपमानकराए लगेचलनहसिहंसविठाए ११ तवहुंजनार्दनवहुसमुझायो मन्योनमूढकालनियरायो १२ दोहा तवप्रसन्नमन विप्रपें दुरवासामुनिहोहि कह्योरैं

हिजातत सदा कृष्णदेवप्रीयतोहि ॥ १ ॥ थोराहिंदिनमधतुमाहि
दिज मिलहिं मुकुंदकृपाल इनअधमनकरसंगतुव तजहुजा
निवसकाल ॥ २ ॥ चौपाई दुजकरअरुमुनि वर कर देखी
हंसमित्रताहृदयवसेखी ॥ १ ॥ भाष्योअरे दुष्टदुजजाती मुनि
करवन्योमूढअवनाती ॥ २ ॥ आयोमीचनिकटतुवजानो जोअ
वनिजनीकोकलुमानो ३ ताजिहमकहंकटुकैहुनवागी नतरकढि
हुअवजीहअभागी ४ सुनतजनार्दनहृदयदुखारी गयोमौननिज
सदनसिधारी ५ इतकोपेनृपसुतजुगवीरा जारिदीनसवमुनिनकु
टीरा ६ दंडकमंडलभाजनभूरी तोरिफोरिसवकीनसिदूरी ७ प
करिपकरिपुनिमुनि सिषसारे करिदुरदसाविवधविधिमारे ८ दु
रवासा तकिचलेपलाइ मानतहृदयत्राससुतराई ९ कीनजढन
अपमानमहाना विधिमतिफेरिकालानियराना १० जारिजटापट
जोगिनकेरे काननवहिरदीनसवप्रेरे ११ इहिविधिजढनअनर्थप्र
कासा मुनिननिवासकीनसवनासा १२ दोहा कवहुंनइतकानन
हुतोमानहुमुनिननिवास असकरिउनरेताहिथलहरषिजुगलअगरा
स १ चौपाई तहांकरतअमखादिअहारू चलेसुखितपुनिभवनासि
धारू १ भागतगएदूरिदुरवासा वपुख विपुलश्रमसोक प्रकासा २
वेचजवनसिषविकलीवहाला मिलेजायकरि रुदनविसाला ३
मुनिप्रवोधकरिविवधसिखाए धीरजधरहुविप्रसमुदाए ४ दुष्टवि
दलनदीनहितकारी वसतद्वारिकाकृष्णमुरारी ५ सोहमाररछवार

सुहावा असरनसरनविरदजहिगावा ६ इनेतासअसखलजगझा
री भनेविदततबनामखलारी ७ असकरिसावधानासिपतारे लिये
संगद्वारिकासिधारे ८ सरणागतपालकजदुनाथा कसहमारसिर
धरहिंनहाथा ९ असधीरजमुनिसिषनउचारी चलेजातपथश्रमत
दुखारी १० सहस्रपंचासिपसंगरहाने पंचसहस्रनृपसुतनहताने
११ दोहा पहुंचेजसत कैनिकट द्वारावतिमुनिझारि फटेकटेप
हिरानेपटकरिसनानसुभवारि १ चौपई कीनप्रवेसनगिरअभि
रामा कृष्णदेव दरसन मनकामा १ ठाढे द्वारदाहिर प्रभुजाई
द्वारपाल सन कह्यो बुझाई २ देहुजणायवेगप्रभुपासा आए
मुनि दरसन तुव आसा ३ द्वारप दुरवासै मुनि जानी हरि
सनजाय कह्यो सुभवानी ४ ठाढेद्वार मुनी दुरवासा लावहुं जो
पावहुं अनुसासा ५ कह्यो कृष्ण लावहु द्रुतजाई तवद्वारप मु
नि वरपेआई ६ सादिरगयो लेत गहिहाथा देखे मुनिन नाथज
दुनाथा ७ महा वीरजदु वंसिन संगा राजमानमनमोद उमंगा
८ उग्रसेन म राज सुहाए कनकासन राजत छविछाए ९ मणि
गण रचित सिंघा सनचारू सोभित जदुवरकपा अगारू १०
तिन समीपवल राम विराजे मनहुंकोटि छविसुरपति लाजे ११
दच्छन वाम विराजतधीरा हरिके उद्धव सातकि वीरा १२ दो
हा कृतवरमा अक्रूर जुत आन सुभटवलधाम हरि भ्रातागदलौं
सकल बैठे सभाललिाम १ चोपई खेलत नरद रसातुकीसंगा

दीन ग्वाल उरहरख उमंगा १ वालक जुवा जठर समुदाए वसुदे वादि सकल सुखछाए २ वारवार मुनि मानस मोहन चितवत कमल नयनछवि सोहन ३ अस प्रकार प्रभु त्रिभुवन राए बैठे साचि निज सभा सजाए ४ जिमिसुग्रीव संगरघुराई खेले विव ध खेल सुखदाई ५ तिमि सात्वकि संग कृष्ण विलासे देखिदे खि सवलोग हुलासे ६ आए सभा सुभ्र दुरवासा उठे विलोकि सुभट वसत्रासा ७ दीनाग्वाल लखत मुनिकाईं छाडि तुरत नि ज केलित हांहीं८ लीएकरन कल गोलप खेला सहित वीरव ल रामसुहेला९ चलि आगल मुनिवर पदलागे अति प्रसन्न मा नस अनुरागे १० पुनि आहुक नृप कीन प्रणामा परेचरन सव जादवनामा ११ पंचसहस सिष मुनि वरसंगा तेआसिषसवदेत अभंगा १२ दोहा रामकृष्ण वसुदेव कहं आहुक भूप समेत आ सिष दीन प्रसन्न मन मुनिवरकृपा नकेत १ चौपई सिषन सहि त मुनिवरकर देखी दीन ग्वाल दुरदसा वसेखी १ केततन घाय लविथताने केतन कर जट जूट जराने२ टूटेफूटे डंड कमंडल विथुरेकेस विथत मुनि मंडल ३ कोपीनादि वसनत फाटे ॥ हा यहाय अस मुनि सव राटे ४ फरकत अधर अरुनदृग ताहां कालहुं काल मनहु मुनिनाहां ५ जादव देखि सकल अस भाषे कवन हेतु मुनि नाइक माषे ६ डरपत ठाड सकल करजोरी चिंताकुलचितवतमुनिओरी ७ कनकसंघासनवेगम

गाए तापरमुनिमहराजाविठाए ८ पदपखारिपूजनमुनिकीना च रनवारिप्रभुसिरधारिलीना ९ जथाउचितसबमुनिनहुलासन दीनाद्यालदीनसुभआसन १० पुनिकरजोरिकृष्णअसकाहा को अपराधिनाथतुवराहा ११ आएकवनहेतुमुनितज्ञा कामोहितेंक छुभयोअवज्ञा १२ दोहा हमअंननसेवकसकल मनवचकर्मतुम्हा र कसआएमुनिनाथाफिरिथोराहिंकालमझार १ चौपई तुवअग मनमोहिसुजसवडाई पैकारणकछु लष्योनजाई १ असकहिअर्घ पाद्यसनमाना कीन्योमुनिकरकृपानिधाना २ प्रभुकेसतकारतमु निकाहीं उपज्योकोपदुगनमनमाहीं ३ अरुननयनकंपतथरथरहीं चितवतभसममनहुंमुनिकरहीं ४ फेरतदृगचहुं कितरिसछाए लो कविलोकिसकलअकुलाए ५ निकसतवचनकोपवसनाहीं अ नामिखनयनतकतप्रभुकाहीं ६ जसतसकैपुनिकोपसंभारी विलि खिवदनमुनिगिराउचारी ७ तुवभरोस हमदीनउवारे विचर तधराणित्रासगतसारे ८ जोहमकहंअवतुमहिंविसारयो तोजगआ नकुवनआधारयो ९ पूछतजनहुंअजानसमाना हमकारनकछुना हिनजाना १० विश्ववृतांतविदतप्रभुकाहीं इहकारनजानतकस नाहीं ११ दृगनदेखिदुरदसाहमारी पूछहुआगमहेतमुरारी १२ करहुहासिमोहिदुखितविचारी भेतुवविभूविवसहंकारी १३ विप्र पालनिजविरदसुहावा उपजतमदहुंदीनविसरावा १४ दोहा पूछतमोहिअजानसेघटघटजाननहार कहिनसकहुंकछुलाजवस

निज दुरदसा विचार १ चौपई जद्यपि तुमजानत सभत्र्प्रौ हौं तद्यपि पूछेपरप्रभुकेहौं १ डिंभकहंसभूपसुतपापी सात्वनगर जुगबसहिंप्रतापी २ पहुकरवसतहमारमहाना तिनजढजातिकी नअपमाना ३ मुनिआश्रमसवजारिउजारे भएहननासिषविपुल हमारे ४ तोरचोडंडकमंडलझारी पटकोपीनदोनसवफारी ५ इहअचरजतुवइछतअपारो हैहंअसदुरदसाहमारो ६ अवतुमए हुजुगलअगधामा जोनहिंकीयेहननसंग्रामा ७ तोतु मारपुरसंजुतवंसा देतसापसवकरहुंविध्वंसा ८ अर्जुनभीषम तुवभटिजोई इनकहंजीतिसकैनहिकोई ९ तुमबिनुकवनातिन हुंजगहंता जिनहुंकीनितपसंभुअनंता १० दुष्टप्रवलजुगसुभटअ राती मारहुंवेगइनहुंधरिछाती ११ तोतुमारबरवंसवचैहीं होहिंअवस्थसकलनतछैहीं १२ दोहा दुरवासाकरकथनसुनि कह्योकृष्णमुसकाय लघुकारजबसनाथअसकसमानसरिसछाय १ चौपई कवनवातडिंभकअरुहंसे आपुमरहिंदिजद्रोहिअसंसे १ यद्यपिहराविरिंचिकिनाआई करहिसमरतिनकेरिसहाई २ बरुणकुबेरमेरजमकाला इनकरवनहिसकलरखवाला ३ जद पिसुरासुरद्रोहिसहय्या तदपिइतहुंतुबचरनदुहय्या ४ तजहमु नीससोकसबभाती अवनवचहिंतुवदुष्टअराती ५ सपतस्वर्ग अरुसपतपताला सप्तसिंधुमहिमंडिलशाला ६ पूवसहिंकुल सभवनकिनाजाई कौनसकहिमुनिनाथवचाई ७ सुनिप्रभुवचन

उग्र इहिभांती भयोमुनीसकोपकछुशांती ८ लग्योंवदनअस तुतीउचारन दीनाद्यालदासदुखहारन ९ जैजैचक्रपानिभगवंता जैमुकुंदजैजैश्रीकंता १० जैतिकृष्णजैभक्तउवारन जैमहिहरण भारजगकारन ११ जैतिविप्रसुरसंतसहय्या जैजैमानभक्तभव दय्या १२ जैअनंतजैअजरमुरारी जैतिजैतिदीननदुखहारी १३ जैजैजेतिचराचरत्राता जैजैदलनदुष्टसंघाता १४ असप्र कारअसतुतिप्रभुगाई मुनिवरलीनशांतिसुखपाई १५ तवप्रभु कह्योछिनहुंमुनिनाइक छिमावरमसंन्यासिनलाइक १६ दोहा असकहिकृष्णकृपायतनघनव्यजनवनत्राय दुरवासामुनिमुनिनजु तप्रमुदितदीनाजिवाय १ हुवैसंतुष्टप्रसन्नमनपुनिपुनिआसिषदेत मुनिनाइकसवमुनिनजुत गवनेरुचिरनकेत २ चौपई उतैहंस डिंभकजुगभाई पितुपंजायचरनसिरनाई १ वारंवारहरषजुत होई वोलेवदनवचनअसदोई ॥ २ ॥ करिअवराजसूयमख काहीं लीजैजनकसुजससजगमाहीं ॥ ३ ॥ हमजीतवमहिमं डलसारा होहिं जनकमखसफलतुम्हारा ॥ ४ ॥ समरसुरासु रसुभटसवाहीं हमजीतवसंसयकछुनाहीं ॥ ५ ॥ विदतहमा रहेतुरषवारी निजगुणजुगलदीनात्रिपुरारी ६ महिमहीपकर जीतनजेहू हमकहसहजसुगमीपतुएहू ७ ब्रह्मदत्तसुनिसुतनवखा ना परमहरषनिजमानसमाना ८ कह्योतुमहुंलाइकसुतदोई मखसं भारसजनअवहोई ९ असतिनकथनश्रवण.निजधारी विप्रजना

र्दनभक्तमुरारी १० करखवचनभूपतिसनकीना काहिपरोतुव भयोमलीना ११ पापीउभेअधमसुतदोरे भाषतवचनगरलजनु वोरे १२ मरिहैंआपुतोहिपुनोमारहिं मूरखामंदमुखवचनउचा राहिं १३ जानिनृपकरहुभननइनकेरा ह्वैहैंनतरनरकतुवडेरा १४ अगमहोनराजसुमषएहू भाषहुंसत्यभूपगुणगेहू १५ सुनिअ सविप्रकथनसुतराई वोलेवचनरोषसरसाई १६ दोहा मषनि वरणकरकवनदिजदेहुनवेगजणाय अवहिंसीसकटितासहमधरहुं अग्रपितुल्याय १ चौपई विप्रजनार्दनतवहुंउचारे वृथाकाममषह दयतुम्हारे १ भीषमदेवजीयतजगमाहीं जीतनसमर पगसुधर काहीं २ जीवत जरा सिंधधुत्रधीरा तहिसनकवन समरथिरवी रा ३ जादव सकल प्रबल भटिभारे जिनहुं इमत अरि समर बडारे ४ तिनमध कृष्ण खलन क्षैकारी तासन कवन करन रणरारी ५ स्वजन हारवहि मंडनिकाया अजअनंत अनभवप तिमाया ६ जाहिवलरामनामगुरुभ्राता हलधरसुभट सूरवक्षाता ७ सरसबसरिसधराणिसिरधारा भनत वेदफनपति अवतारा ८ सुमरतजासनामअगजाला ९ सकललोकआधारकपाला १० महावीरसात्वकीअभिरामा जीतवतासूकबनसंग्रामा ११ प्रबल सुभटइनजीतनकाहीं तुवअभिमानवृथामनमाहीं १२ दोहा सु निननाथअपमानतेंतुमहभागगतहोई ब्रह्मघातसमपातकीभणवि दतजगदोई १ दुरवासासंजुतसिषनदुखितनिरादरपाय करनिक

धनुवकरनाहितगएसरणजदुराय २ चौपई सुनतहंसवोल्योरि समानी दिजकसकरतभीतिवसवानी ॥ १ भीषम निरवल जाठिरअनीती धनुषधरन कछुलखहिंनरीती ॥ २ ॥ समर ठाडहमसन मुषसोई तीनकाल दिज कवहुंनहोई ३ भने तुमहुं जादववरजेते निवल दीन कायर सवतेते ४ वीरधीरति नक वत उचारा हरेसमर मागधवहुवारा ५ सात्यकिसोऊ सुभट कि मिजोगू भीरु विपुलजानत सवलोगू ६ इहबाल कघरहींके वाढे परेकाहु संगरनहिं गाढे ७ रामवीर तुमजवन वखाना सोसनि अच रजहोत महाना ८ वारुणिमत्त रहत नितसोई धनुषधरनत हिज्ञान नाकोई ९ जाहि कृष्ण कहंईश्वर लेष्यो सोकबतें भ्रमतु म हिमसेष्यो १० नंदगोपकर सुवन कहावा हमरे कवहुं नसन मुषआवा ११ पांडु कुमोर मित्रपतिधरणा तांकीकरत गोप अनुकरणा १२ दोहा धरणवर्मधरनी विदत जरासिंधघनवोध मोरसहायकहोहिं सो करहिं न वैरविरोध ॥ १ ॥ चौपई ॥ तवहुं जरा दिन प्रकट वखाना मूढदरप वसपरहिं नजाना १ भीषमदेव पांडव कुरुवंती जियत सकल जादवरि पुध्वंसी २ कहि विधि राज सूयतुव होना ऊखर धरनी बीज जिमिवोना ३ हंसअनथकछुगिरानमेरी तुवमतिदीनप्रकटाविधि फेरी ४ वो ल्योहंसकुपर अधिकाई जायन विप्रतोर जडताई ५ पुनिपुनि भ न हुप्रवलरि पुकाहीं जानहु निवल हमहिं मनमाहीं ६ इह अप राध छिमाहमकीना जानि दीन जाचि कम तिहीना ७ पेअव

सासन मानिहमारी विप्रजाहु द्वारिका सिधारी ८ नंदगोप सुतत
न गत त्रासा मोरकथन अस करहु प्रकासा ९ रच्यो राजसू जन
कह मारे हमहुं सकल महि जीतनहारे १० तुमरे देस लवन
अधिकाई चलहु लेतवहु वृषभभराई ११ आनडंडतुमतेंहिन लेसू
देहुंन कछु धन हेत कलेसू १२ दोहा जो अनु सासन हंस नृप
तुव नसी सधरिएहु तोकहियो कुल सकलतुवहरहि विगत संदेहु
१ जोइह सासन हंस नृप तुवनसीसधरि लीन तोदेखहु निज
वंस तुव तास हननसवकीन २ चौपई हंस कथनसुनि दिज वर
काना भये सहाय कृष्ण मुनि जाना १ मोहि मुनी सवर दीन सि
जेहू अव फुर भयो कवन संदेहू २ उपज्यो हृदय विप्र सुखभा री
चल्यो प्रवाहजात दृग वारी ३ निकसतवचन हरष वसनाहीं कृ
ष्णदेवमनुमिलेतहांहीं ४ बोल्योवहुरिहंसअसगाथा मेरेसिपथतो
हिदिजनाथा ५ मैजसकह्योतहांतसकहना भीतिविवसकछुमो
ननरहना ६ सुनतजनार्दनवचनवखाना सुनहुनरेसस्रवनगुण
खाना ७ तुवनदेसद्वारिकासिधारी वरननकरहुंकथनतुवसारी
८ अवमैकरहुंसदनानिजजाना होहिंसुदिनसुभपूछिपयाना ९ अ
सकहिविप्रहरषउरछाए चल्योभवनमनुसंपतिपाए १० करत
विचारजातजियतेहू निश्चयभएकालवसएहू ११ पैमोहिसननृप
हंसभलाई कीनीवदनकहिनकछुजाई १२ दोहा रहीजनमतें
लालसाकरनदरससुखऐन भईसफलअवभागवसदेखहुंभरिभरि

नैन १ चोपई असगुनिजायभवननिसिसोयो तनकननयननीदवस होयो १ चल्योप्रातउठिबाजिअरूढा प्रभुदरसनऊ.निलाखतगूढा २ जेठमासाजिमिपथकपयासू धावतसरपीवनजलआसू ३ तिमिदुजचल्योद्वारिकाधाई लीनासिमनहुंकल्पद्रुमपाई ४ तुरगहिंवेगयदपि वहुदीना तदपिमंदगतिमानसचीना ५ छुधात्रिषादिनश्रमकछुवूझा पथविश्रामपर्योनहिसूझा ६ कवपहुचहुंद्वारावतिधामे देखहुंकमलनयनघनस्यामे ७ मोहिसनहंसकोनउपकारा दरसायोवसुदेवकुमारा ८ आजकवनसंसारमहाना धन्यधन्यमोहिसद्दशआना ९ जहिइननयननहोहिंसुहावा नंदलालदरसनमनभावा १० भयोविदतदाहिनमोहिधाता देखवचरनकंजजगत्राता ११ दीनद्यालदरसनतेकाहू नहिनअधिकउत्साहतिउतसाहू १२ दोहा धरहुंउपायनकवनपैप्रभुसनमुखअवजाय करवनिछावरप्राणमनतनचरणनासिरनाय १ कवित्त भयोएकमेरोईजनमजीवनसफलमेरोईसुभागजागेज्ञानेजगजातहै मेरोईप्रभावपुंन्यसूरसौउदितपूरहेषणउलकदूरदारिददरातहै मोकोधन्यभयवेकोभयेनप्रसंगभव अवलों वितायोअपदामैदिनरातहै आजविधिदाहिन विचारके निहारू जाय राधावरस्यामलसलौनेजौनेगातहै १ मंडितमणीन मुनिमानसहरनकीटकुंडिल मतसकृतकानन विराजे जास हीयरोविसाल पेल सतवनमाल तापैकौसतुभ जाल ओरिसालमुख मंदहास नीरजनवल

नयन कोटिछविमैन दैनसांवरे चरय्याधयन काननकरनवास अहोभाग करुणा निधान भगवान आजऐसोध्यान गोचरविलोक वहगनदास २ दोहा सुमरत रूपअनूप कलकृष्णदेव भगवान मोहि आगलजनु चतुरभुज चलतहोतअसभान १ पैईकवडोकलेस मोहि उपजरह्यो जियमाहिं हंसहुंमागनलवन करकस काहिहीं प्रभुपाहिं २ जोनकहूं अवउत्र तव करहुं कवनमुखजाय उतकठोर अतिहंस इत अतिकोमल जदुराय ३ पैमहृदय भोसइह दीन बंधुभगवान जनहियकी जानतसकल यदपिअयोग वखान ४ धर्मदूतअरुमीतको नीतरीतसंसार वूझतनलहिं कृपायतनश्रीवसुदेवकुमार ५ दीननाथ कइंकृपटगत मिलहिंजोसन मुखजाय ताकरदोषनगिनहिकछु अतिउदारजदुराय ६ ताते जाहुं असंकमै यद्यपिहंसपठेहु मेरोदोषनगिनहिंकछुजदुपति दीनसनेहु ७ गुनतमनहिंमनविप्र अस गयो सरतपातितीर उतरतपारप्रवे सपुर कयो सुमरिजदुवीर ८ सवैया बहुरिबिचारकरै दिजमानस जहिहित जोगीजतीव्रतधारी संभुसमाध अगाधधरैं उकरैं हठकोटितपीस्वरझारी आवतध्याननतेभगवानथके सवअंतहुंनेति उचारी आजसुगंनमैनै ननजायसोदेखिहुंरूपप्रतक्षमुरारी १ दोहा भूरिभागमोहिसरसजगआजनदूजोकोई विनुअजासजाके सुगम कृष्णमिलावाहोई १ चौपाई असप्रकारादिजगुनतमनअनप्रमोदसुखपाय आयभवनहरि द्वारथिरभयोनंअसिर

नाथ १ चौपई द्वारपाल तहंदेवसमाना पहिरेमुकत मालमणि नाना १ तिनसौंविप्र सुन्हहरषाई नम्रवदनअस गिराअलाई २ मेटुजजातिजनार्दननामा सात्वनगरद्वारपममधामा ३ हंसभूप सनमोरमिताई आवाकरण दरसजदुगाई ४ अवतुम कृपासिंधु पैंजाई मोरखबरसबदेहुजनाई ५ द्वारपसुनत विप्रवरभासा हरष तगयो दौरिप्रभुपासा ६ जोरिजुगल रकविनयप्रकासी सात्वनगर व विप्र निवासी ७ कहतजनार्दन नामसुहावा प्रभुतुमार दरसन हितआवा ८ जोनदेसकरुणा निधहोई तोआवहिं प्रभुसनमुखसोई ९ कृपासिंधुसुनिवचनउचारा लावहुंदूतदुज हिंदरबारा १० प्रभुनेदसबसद्वारपताहीं लावादुजहिंसभासद माहीं ११ हरिछविदेखिविप्रमनहरनी व्याकुलपस्योदंडवतध रनी १२ ॥ दोहा ॥ सुधिसंभारपुनिउढयोदुजलखिसनाथ निजकाहिं चितवतअनमिषकृष्णतनकरिचिंतनमनमाहिं १ ॥ झूलनाछंद ॥ जाहिहैग्रीवधररूपसंखासुरैकरतवधवेदअंबुधि निकास्यो मछओकच्छवपुधरतकीन्योचरितसुजसाविसतरतसुर नरउबास्यो होतमृगराजनरहस्योप्रहलाददुखदीनगजराजरुज दीनटास्यो कोलकलरूपभवकूपभयहरनहारिचरितनिजधरतध रनीउधास्यो १ ॥ दोहा ॥ सोइभृगुवररघुवरसोई सोईजदुब रजगगाय कीनेअगनितचरितप्रभुधरिनानानिजकाय १ अस निजमानसगुनतादिजभगवनसभासुहाई छविअनूपलोकनलग्यो

प्रेमहरषतरसाई २ चोपई नाचरहिअपचरगणनाना गुनिगंध
र्वकरहिंकलगाना १ सूतवंदिमागधसुभवानी हरिजसकरहिं
कथनसुखमानी २ उग्रसैनमहाराजविराजे विभुविलोकिजाहि
सुरपतिलाजे ३ कनकसिंघासनसुखदसुहाए रामकृष्णजुलछ
विछाए ४ सात्यकिअरुउद्धवअभिरामा सोभितजुगलादिसन
घनस्यामा ५ जादवआनसुभटसमुदाए प्रवलउदारसिंहजनुभा
ए ६ पटअमोलकलआयुदधारे प्रभुकहंसकलप्रानतेंप्यारे ७
झूलतचवरविजनछविदेहीं सकलप्रमोदपारसपरलेहीं ८ रामकृष्ण
छविकनकसिंघासन मनहुंमेरुरविचंद्रप्रकासन ९ पीतस्यामपटअं
गविराजे जिहनैविलोकिमदनछविलाजें १० लोलकपोलकुंडल
नलोभा गीरवानमुनिमानसलोभा ११ तकतभौंहप्रभुवीरप्रचं
डा सालनहोतकौनकहिडंडा १२ दोहा तवनारदकहंनिकट
लखिहसिहासिकृपाअगार दुरवासाकरविथासवभाखिसवदनउचार
१ चौपई सुनतजनार्दनप्रभुअसवानी मानसुसकललोकसुखमा
नी ॥ १ ॥ परयोलुकटइवदौरिसधाई चरनकंजमंजुलजदुराई
॥ २ ॥ प्रेमाकुलतनचेतविसारी चल्यौंप्रवाहजातदृगवारी
॥ ॥ ३ ॥ कछुकवेरपाछिलजवचेत्यो छकयोदेखिछविकृ
पानकेत्यो ॥ ४ ॥ पुनिधरिधरणिसीसअनुरागा जैजैजैतिउचार
नलागा ५ हेभगवानमानप्रदस्वामी अखिललोक विश्रामनिमा
मी ६ करआकरसामर्थकृपाला दुजसुरधराधेनुप्रतिपाला ७

सदादीनरक्षकभगवंता अनभवअजरअनादिअनंता ८मैदिजवस हुंसालवकलगाऊं हंसभूपकाभित्रकहाऊं ९ जनकजनार्दननामधरावा तुमरेदरसहेतइतआवा १० अधनअपावनदुरमतिभारू अनाचाररतविषयविकारू ११ पैतुवरततपुनीतकृपाला दैदरसनमोहिकीयोनिहाला १२ अवमैचरनसरनप्रभुलीन्यो जनमसफलनिजसंसृतिचीन्यो १३ मोहिजानियेअवआपनवाला राखियेकृपादृष्टिनंदलाला १४ दोहा तवउठि दिजहिंकृपायतनलीनासिहृदय जुडाय वारवारपूछतकुसलहरषवारदृगछाय१ चौपाई पुनिसिंघासिनदीनविठाई लीनकनकभृंगारमंगाई १ दुजकरदीनद्यालअनुरागे निजकरचरणपखारनलागे २ तेचरणोदिकविप्रसुहावा कृपासिंधनिजसीसचढावा ३ करिपूजनविधिसंजुतसारी दीनद्यालपुनिगिराउचारी ४ अहोभाग्यतुवदिजवरआई जोमोहिदीनदरससुखदाई ५ जनहुंआजमैसरबसपायो धन्यधन्यसंसारकहायो ६ तुवदिजनाथप्राणप्रीयमेरो मोहिजियमरमाविदितसवतेरो ७ अवनहोहिंतुम्हरेसंसाग सत्यवचनादिजसृष्टहमारा ८ सुनतजनार्दनप्रभुमुखवानी सकललोकमानससुखमानी ९ जोरिजुगलकरविनयअलायोमैजदुनाथदूतवतआयो १०प्रभुसिंघासननीनविठाईइहनउचितमोरेजुदुराई ११ दिजआसनसोभितमहिमाहीं हृदयराखिप्रभुचरणनकाहीं १२ दोहा अवअनुचितकछुविनयममकाहिनसकहुंजदुराय जहिहितहंसनरेसइतपठयो सिदूतवनाय १चौपई कभाख

हुंकरुणानिधतोही होतसकुचअतिभाषततोही १ बिहसिबोलेप्रभु दूतहिंबानी नहिअजोगजानतबुधज्ञानी २ कहोहंसडिंभकजुगभाई ऐहिकुसलकछुखबरनपाई ३ अभयसकुचगतदिजवरहोईंबरन हुंहुंसकथनअवसोई ४ इहिमेतुमअदोषदिजभाई जनिराखहुक छुमरमदुराई ५ मोरतोर कछु अंतरनाहीं तुवअनंन सेवक मोहिकाहीं ६ दूतसत्यजेभनहिंनबाणी सो अतिहोहिंपापकरभागी ७ तातेहंसभननसवआजू मोहिसनकरहकथनदुजराजू ८ सकुचिउत्रतवदिजवरदीन्यो असजढताइहंसप्रभुकीन्यो ९ जस अपमानकीनदुरवासा तुमहिंबिदतसवविश्वप्रकासा १० बहुरि हंसजवसदनसिधावा तवमोहिसनअसवचनअलावा ११ जा हुबिप्रद्वारावतिमाहीं केहुंकथनममजदुपतिकाहीं १२ दोहा पितुहमारमषराजसूकरतहरषसरसाय हमजीतवनिजभुजनवलसकलप्रवलमहिराय १ तुम्हरेदेसवसेषकरउपजतलवनअपारसोतुमहमकहंदंडइहपठहुवृषभवहुभार २ चौपई जोतुमकवहुंलवनइहलीनो मषमांडिलआवननहिंकीनो १ तोनिश्चयइहवातहमारी होहिंहननजादवकुलसारी २ असदुरवादहंसजढताई औरहुं कथनकयोनाहिजाई ३ सुनिहरिहंसभननमुसक्याने तेजुगआतकालवसजाने ४ दुजसनकह्योवचनजदुराई हंसवखानसत्य सवभाई ५ हमतोलवनंडडकरजोगू भलाहिंबिदतजानतसठलोगू ६ दुजतुमजायहंससनकहियो अतहमदेतडंडतुवलहियो ७

सुनतवचनवलरामसुरारी विहँसेवदनदैदैकरतारी ८ असअविलो
किहासवलराई हिसीसभाजादवसमुदाई ९ विप्रजनादनलज
तमहाना बारवारमानसपछताना १० कहतदूतवनिमिकतआयो
प्रभुकहंकतकटुवचनसुनायो ११ पावकजरहुंकिवारिवुडाऊं प्र
भुहिंवदनकाहिभांतिदिखाऊं १२ दोहा पाहिपाहिमुखनंस्रवतक
ह्योविप्रकरजोर दुष्टभवनकसजाहुं अव द्यालसरण तजितोर १
चौपई तवसात्यकितनजदुपतिदेख्योंउठ्योंतमाकिरिसमानिवसेष्यो
१ तवप्रभुकह्योंहंसढिगजाई मोरवचनअसदेहुसुनाई २ हमते
जवनडंडतुमजांचा चाहतहमहुंदेनसवसांचा ३ जहांनदेसहोव
तुवराई तहांलवण हमदेवपठाई ४ पितुतुमारमषजहांकरैहैं
कोतहंपठयो लवणहमदैहैं ५ दिजसनकह्योवहुरि भगवाना
तुमसात्यकिसंग करहुंपयाना ६ तुमरोविप्रदो षकछुना
हीं मैजान्यो अपनो तुमकाहीं ७ तुवनकहोदिज मोरवखा
ना सवकहि हैंसात्यकि मतिधाना ८ तुवसाषी वतसुनतरहाना मो
रकथनसात्यकिमुखनाना ९ लौटिआहुपुनि सात्यकिसंगा राखि
भरोसममचरनअभंगा १० सिरधरिप्रभुनदेससुखदाई जैहोक
षादिजगिराअलाई ११ तवसात्यकिपदवंदिमुरारी लगे
करनानिजगवनतयारी १२ दोहा तवसात्यकिसनप्रभुकह्योतुव
एकलमतिधीर जायहंससनभननममभनहु विदतवृतिवीर १ चौ
पई नीतिमरमतुमरेसवराइ मैअवकरहुं सिखावनकाहा १ क

हियोउचितजवनजियतोरे तासुसंदेस्रुदेहु इतमोरे २ तवसात्य
किप्रभुचरणजुहारी सुभटसिरोमणिसंकनिवारी ३ लीनेविप्रजना
र्दनसंगा होतरूढवरचपलतुरंगा ४ पहुंचिहंसनृपनगरसुहावन
सभाद्वारकीन्योपुनिआवन ५ तवजनार्दनआगलजाई हंसहिंआ
सिखवदनअलाई ६ पूछोहंसकुसलसुखमानी कह्योविप्रसादिरसु
भवानी७ भन्योभूपजहि अर्थपठिन्यो सोकारजहमरोदिजकीन्यो
८ कहिसविप्रताहिकारजेहतू सात्यकिपठेकृपायनकेतू ९ सोनिजमु
खतुमसनसवगाथा कहिहेंजथाभन्योजदुनाथा १० कह्योहंससात
किकहं ल्यावहु तुमआपनकलुभाषिसुनावहु ११ कुसलकृष्णजदु
वंससवाहीं हमकहंकरादिजदोहींकि नाहीं १२ दोहा तवदिजसा
त्यकिकहंतुरतलायहंसदरवार प्रभुप्रतापलागेभननकरि करिविवध
प्रकार १ चौपाई तुवसमहंसमोहिजगसारी क्योनजानिपरतउपका
री १ जाहिद्वारावतिदूतप्रकारा पठयोकृपालकृष्णदरवारा २ तहांवी
रजादवसमुदाई बैठेचतुर प्रांतजदुराई ३ मनहुंवीररसधारिसरू
पा वैठयोसभामद्ध जदुभूपा ४ दिपतमानकलकनकसंघासन कृष्ण
कुमदजदुचंद्रविकासन ५ गदापदमदरचक्रविराजे वसनपीतदुति
दामनिलाजे ६ सुंदरस्यामकमलकलकाया कैवकीटमुनिमानसभा
या ७ खोरचोरचितचंदनभाला नयननलिननवनैस्वकलाला ८
उरविसालवनमालविराजी उपमादेखिसरुलजहिलाजीं ९लोल
कपोलभृकुटिकलवांकी देखतदृष्टिसुरासरथांकी १० कुंडिलकरन

स्फारिकृतचारू कचश्राले श्रवलिभक्त मनहारू ११ माधुरि मंद वदन सुभहासी नखसिख कृपा सिंधुछविरासी १२ दोहा अस दरसन मैदेखिद्दगज दुपति सहतस माज संस्रतिनिज जीवनजन मलष्यो सफल सबश्राज १ दैव महा।रि षराजरि षब्रह्मऋषीस मुदाय सर्वकाल सेवनकर गानि श्रनंतजदुराय २ चौपई मागधसूतवंदिजन नाना सादिर पठहिं विरद भगवाना १ उद्धव श्रति उदंड मति वीरा बैठ्यो दिसिदाहिन ध्रुवधीरा २ कृतवरमा दिदानपति चारू सोहिं सुभटजदुपति दरवारू ३ उग्रसेन वसुदेव सुहाए औरहुं वृद्धबीरस मुदाए ४ हरि भ्रातागद श्रादिहु लासन सकल विराजहिं निज निज श्रासन ५ जिमि मयंकउडगन परिवारा तिमि जदु पति जादव दरवारा ६ सबपें कृपा दृष्टि निज हेरें हरए दीन दुखदुसहघनेरें ७ दुरवासा मुनि श्रारत वानी विलपि दुखित निज वदन वखानी ८ मुहु सोंश्रधम श्रजामळकाहीं प्रभु निज विरद सुमरि मन माहीं ९ सब विधि कीन नाथ श्रप नाईं दीह्नो चरण सरण जदु राईं १० सुनि मुनि कर श्रस श्रारत गाथा भयेतुरत कोमल जदु नाथा ११ श्रभयदेत मुनि कीन विदाए श्रस भगवान द्वारि काछाए १२ दोहा कहं लगकरहुं वखान मैं प्रभु प्रताप श्रति घोर निगमनेति जाहि कथन किय कवन तुच्छमति मोर १ चौ- श्रव जाहि मेकल्यान तुम्हारी हंस जनक जुत लेहु विचारी १ राज सूयमषज बन श्र

राधा सोंकीन्यो अपनो तुमवाधा २ अहै असाध्य सिद्ध किमि होना गरलपान करि जिमि सुखसोंना ३ ताते मष अभिलाष निवारहु जोआप नकल्यान विचारहु ४ कृष्ण सरोज चरन चित दैहौ संसृति जनम सफल करिलैहौ ५ जो प्रसन्न प्रभु होहिं उदारा तवहुं जग्य जन सफल तुमारा ६ भएडर नहम तुम इंवु झाई करहुं जवन अव भावंतिराई ७ सुनि दुज वचन हंसरिसपा गाक्रूर दृष्टि करि भाषण लागा ८ अरे विप्र वालक मति हीना काविक्षप्त कृष्ण तोहि कीना ९ तीनलोकजो त्योजिन जाने तुव तिनसनकटु वचन वषाने १० गोपसुवन कछु मोहन कीन्यो तुव मति जनहुं प्रकट हरि लीन्यो ११ हमरे आगलतास वडाई करत वार वहु लाजन आई १२ मैजाने यादवसमुदाया दिज तुव मृषा वदन जस गाया १३ कौन होहिं तुव बित जुत सेवा तवहुं प्रसंसन लग्यो अभेवा १४ दोहा सिसुपनतें अवलगवस्यो मोहि समीप दिज कोहि भन्यो मीत याते नमै करहुं हन नसठ तोहिं ॥ १ ॥ चैापाई नतर अवहिं आवतजियमोरे दैअसिकरहुंखंडजुगतोरे १ पैदुज जानिहोतमनसंका अवन दिखाहुवदनसकलंका २ जाहुवेगजितभावतितोरे देखिदेखिउपजतरिसमोरे ३ हंसवचनसुनिदिजहरषाता उठ्योभनतमुखआसिषवाता ४ चल्योवेग मनुसवंसपाई सुमरतचरनकमलजदुराई ५ द्वारावतीआय

मतिधीरा लाग्योबहुरि चरन जदुवीरा ६ प्रभु सनकारि लीन उरलावा निजपार्षद पददीन सुहावा ७ ब्रह्मानंदमगणद्विज भैयौ जियजगभीतिसकलमिटिगैयौ ८ जिमि उद्धवगद भ्रातउदारे तिमि प्रभु कहंदिज प्राणन प्यारे ९ दिन दिन कृपा दृष्टि अधिकाई दिजवरलीन जनमफलपाई १० कछुक काल करि हरि अनुरागा पुनिगवन्यो हरिपुरव डभागा ११ प्रभु प्रसाद दिज सुगम सुहावा मुनिनअगम पदलीन सिपावा १२ सोरठा इहहरि वंसपुराण अतनोकिथा जनार्दन अव आग ळवाक्षानकरहुं हंसडिंभकजथा १ उतैसत्य कीजाय जवहंस भूप दरवार वैठयो निरभय संकगत कृष्णचरन उरधार २ चौपाई हंसवदन तव वचन अलाए सात्याकि इहा कवन हितआए १ नंदगोप सुतसा सनमोरा मान्योनाहिंन कवन करजोरा २ मित्र मोर पौंडुकपति धरना करतगोपता कर अनुकरना ३ उपजी कुमति कवन जियतासा जोनमन्यो मोरिअनुसासा ४ अवनहोहिं कछुता सभलाई आयोकसन आपजदुराई ५ पठयोन लवन वृषभ भरिभारा अहोगोप उनमत्त विचारा ६ अवसात्यकि तुवदेहु सुनाई ऐहीं कुसलगोप समुदाई ७ तरनी वृद्ध वालसव कोहीं निज निज सदन सुखित सवहोहीं ८ हंस कथन सुनिसात्य किधीरा वोलेवदन वचन गंभीरा ९ तुमसे जहा कुसल करलेवा तहाकुसल सवभाति अभेवा १० वडो

कुसल तुम कहं करदेना सोअब लेहंजथा विधिलेना ११ नी
केतुमहुं लखेनरनाइक जदुपति ऐहिंडांड कालाइक १२ दो
हा जाकर विधिसंकर सर्वदेवअ देवमुनीस सेवतरहत अनन्य
गति चरण रेणधरिसीस १ चौपाई तुमतासें करलवनअहो
री मांग्योधिगधि गधिगमति तोरी १ पापनि तोरसकल कुल
दहती गिरीनजीह वचन अस कहती ॥ २ ॥ इह
सिषदीनकवनअसतोंही भलोमित्रतुवमानसद्रोही ३ मरयोआपुतो
हिमारनहारा कपटिदुष्टसठमीततुह्मारा ४ भाविभूमि भलाई भाई न
हिंविरोध कीजजदुराई ५ कहांहंसतुवनिवलस्रगालू कहांप्रवल
मृगपतिजदुपालू ६ विंदुसिंधुजिमिसदसताई समतामेरूकराहिं
किमिराई ७ पट्योमोहिप्रभुतुवहितजानी करहुनहंसवंसनिजहा
नी ८ दोहा जद्यपिकरमांगनलवनतुवअपराधमहान सरणगहित
तद्यपितुरतछिमहिंचूकभगवान १ सुनिसात्यकिकरवचनअसहंस
परमरिसमानि अरुननयनफरकतअधरभन्योवदनकटुवानि २ चौपा
ई अरेअधमजादवमतिहीना इहकसकथनवदनतुवकीना १ को
वलकवनकृष्णाकितलेखे गोपकवहुंसंगरथिरदेखे २ जरासिंधजा
न्योहमसोई भाग्योजमनत्रासवसहोई ३ तेअहीरतुमवडोवखा
न्यो कहतनसकुचलाजकछुमान्यो ४ आवातुमहुंवसीठिहमारे
तोततजहुंअधमदुरचारे ५ नतरकाटितुवसीसकृपाना पठहुंसमीपगो
पअभिमाना ६ करहुंवदनमूदनमतिमंदा अवनभनहुकछुअनु

चितछंदा७तवसात्यकिबोलारिसमानी अरेअधमकारककुलहानी ८ मोहिसनमुषजदुनंदनलागी कसदुरवचनभनतहतभागी ९ दीन्योप्रभुआयसनहिमोरे करत्योअवहिअधमवधतोरे १० लघुतेलघु अनुचरजदुराई करवहननतुवदुरमतिआई ११ समरसुरासुरजीत नहारे विदतमहारथिऔहिनयारे १२ दोहा छतवरमाअक्रूरजुत आनवीरवलधाम उद्धवरामगदादिसवपरमसुभटसंग्राम १ चौपाई सिववरदानविवसमदवाढा अवैनपर्योसमरतोहिगाढा १ जदपिकोटिकिनासंभुउवारै तदपिहननजदुवीरनटारैं २ सिवगणजुगलसंगतुवजौने भूतकवहुभटसनमुखहोने ३ असरिसभरतभूरिउरमोरे करहुअवहिहतदुरमतितोरे ४ दूतधर्मपैसोचिविचारी तजहुतोहिउरधीरजधारी ५ कह्योमोरप्रभुसुनसठवानी जोमतिसमरकरनहुलसानी ६ तोगोवरधनमधुपुरिकाहीं कैप्रयागपुषकरथलगाहीं ७ आवहुसजतसैननिजसारी देखहुसमरहोहिं कंसरारी ८ तुमकहएहुंडांडहमनादेना वाकछुमुनिन वैरधरिलेना ९ वोल्यो सुनतहुं सारिसमानी तुवभावति मोहिवात वषानी ॥ १० परौंप्रात मुहुकरतुमस्यारे आवहु निज निजविरद संभारे ११ मैंवलगोपगरवभटताई देखत तहांसमर महिआई १२ दोहा अवलौलख्यो नजीवजग जेमोहिडांड नदीन नौचपरैरकवन इहगोपगनातिकहिकीन १ चौपाई सुनिअस हंसवदन दुरबानी भनेवचन सात्यकि रिसमानी १ जहि निजप्रभु नि

दासुनिलीना तहिमनुब्रह्मवधन अगकीना २ भयोकाल वसतुव
दुजद्रोही विपुलवुझाय कहुंकातोही ३ अ..कहि सात्यकिसुभट
सियाना समरवीरधरधीर महाना ४ उठयोअसंकतमक्तितरताहीं
चल्यो चपलद्वारावतिकाहीं ५ आयोनंदनंदनदरवारा करिप्रणाम
असविनयउचारा ६ दीनानाथ हंसमैजान्यो कालविवस प्रभुकथ
ननमान्यो७ अवजनिकरहु विलमजदुराई वेगसुभटनिजसैनसज्जा
ई ८ पहुकरचलहुप्रात भगवाना आवहिं तहांहंसअभिमाना ९सु
निसात्यकि असवचन मुरारी सैनापतिसवलीये हंकारी १०दीन
नदेससजनहितसैना उमघेसुभट सुनतरणवैना ११जायवेगसबकी
नतयारी लीनेअस्त्रसस्त्रनिजधारी १२ दोहा पायक पारनपराहिंक
छुहैगैसिंधनसंग जदुकुलकमल दनेसकरसजीसैनचतुरंग१ देखिसु
दिनसुभ डंडप्रभु आयसदीनपयान हरषेसुनि सासनसकल समर
सुभटवलबान झूलना२ चलीरणधीरचमुजबै जदुवीरबर डमडमनु
खीरखयधूरिछायो उठयोरवसोरचहुं औरअतसे अघटभटनभुज
जोरजुगफर फरायो चल्योदलजात जिमिमरुतप्रेरतजलधवाजिहे
नातदसदिसनधायो गजनाचिक्कारझंकार घंटन परनधरन कंपरक्करन
थर थरायो १ लुपतदिनमानरजरथनउडनतें डगरअनभान भोभरि
भ.री जैतिजदुबीरजैजातवोलत सफुटसुभट ध्रुवधीररणकरन रारी
सक्तिसरपरगधनुखरगवांधेविरद सुवृधनिध विवधधिषवीरभारी ना
दमृगराजन वगरजगौरवकरत डरतधृतिधरकरिपुबरगझारी२ चढे

जाहिजानसुखकंदजदुकुमद कुलचंदतहिचामिकरचक्रचारू मणि नगणखचित रथपचितहाटिक हथनमनहुंमनमथनधजसज सबारू सुभ्रसिततुरगचतु चतुरचंचिल चपलनवलनिदरत मरुतवेगधारू ध्वजाफहरात विलसातकल कनककृतदि पतमनुदमानि दसदिसनभारू ३ दोहा समरसूरअल्हाद्प्रदवज हिंअनेकानिसान चल्यो जात असकटकप्रभुसकुनहोतसुभदान १ चौपई रणवांकुरे सकलजदुवंसी वीरधी ररिपुवरगाविध्वंसी १ जहिंनिजउग्रभुजनवलपाई जीतिसमरप्रवलाछितराई २ द्वादसअच्छू हनिदलसंगा उरउतसाह लरनमहि रंगा ३ राजतउग्रसैनमहरा जा चारुचमरसिरछत्रविराजा ४ गदउद्धवसातकिवलरामा अग नितआनसभटवलधामा ५ सवके उररिपुजीतनकेरी वढतजात अभिलाषघनेरी ६ रंगभूमिरिपुसनमुषजाई हमकवहोवडाडसमु दाई ७ करिप्रहारआजुधवहुरंगा अरिदलकरिहुंसकलवलभंगा ८ दोहा असप्रकारजदुनाथजुतसुभटवीरसमुदाय करतकथनारिपुम थनमदपुष्करपहुंचेजाय १ चौपई तहांकरतमज्जनजलपाना वसे विचिंतरजानिसुखमाना १ समरहरषदृगनींदन लीने लखतादिसादि परैनवतीने २ भोरहिं सुभटसदलमतिधीरा उठिकीन्हेमज्जनसरनी र ३ उतहंसडिंभकजुगभाई आएपुसकरसैनसजाई ४ सप्ततीन अछूहानिभारी चमुचतुरंगकरनरणरारी ५ धरेधनुष जुगवीरविसाला लसतात्रिपुंडतिलककल भाला ६ स्रजरुद्राछसकलतनधारू भस्म

वलेपतअंगकारू७ धरेमौलिवलपिंगुलभारी सिवासिवासिवमुखजा तउचारी ८ स्यंदनचढेजुगलभाटिवीरा उरउतसाहसम रनिधधीरा ९ उभयभीमगणभूपावनभारे नखसिखकालरूपमनुसारे१० कूरकुभे षलंवधृतकाया रुश्यनगनविनवसनअदाया ११ कटकटातरव करतमहाना वमतवदनपावकभयभाना १२ दोहा इतउतडिंभक हंसकरदहुंदिससिवगणसोय करतजातरछनडगरसगरसुभटमुखदो य १ चौपई एकविचक्रनामदनुजाता मित्रहंसडिंभकजुगभ्राता १ वरुणकुवेरइंद्रजमसारी जीतेतासमरकरिरारी २ भयेदेवसन्मुषरण जवहीं पायोविजयदनुजपति तवहीं ३ शक्रधाय ऐरावतचढ के हन्योविचक्र समरमहिवढकै ४ श्रीपतिसनरण कीयेमहाना प्रवलजानि भयमानि पलाना ५ तवतेरिसकिदनुजदुरचारा द्वारावती जायवहुवारा ६ करत अपद्रवरह्योअतंता अव श्रुति सुन्योसमर स्त्रीकंता ७ जयहित लीयेदनु जवहुरंगा आवा हंस भूप करसंगा ८ एकहिडंव नाम दनुभारा सोविचक्र करमी तपयारा ९ मायानि पुणप्रवल भटधीरा चाहत कुमतिविजयज दुवीरा १० सहसअठा सीतमि चरसंगा विकट भीमरण सुभट नभंगा ११ अस चमुसाजि जुगल सुतराई आएपहुकरगर्व व दाई १२ दोहा अरि अगमन अस सुनतहरि सजन सयन समु दाय वजनवा जजूझन समर सासन दीनसुनाय १ चौपाई हरि अनुसासपाय सववीरा भेउद्युगद समर निघधीरा १ वाजनलगे

अनेक निसाना छयोघोर खदसहुं दिसाना २ गणमातु गतुंग सतु रंगा स्यंधनसजे सुभटवहुरंगा ३ वीरधीर भारथ अनुरागे सिंह नादमुषगरजनलागे ४ अस उदंड निजसैन निहारी चढेआपु स्यंधन गिरधारी ५ पांचजन्य कीन्यो तवसोरा छायोदस हुंदिं सतरवघोरा ६ चढयोकटक जदुवंसिनभूरी भयोसि भानु लुपत नभधूरी ७वीरधीरध्रुव रणअभिलाषे चलेजात सन्मुषरि पुमाषे८ डिंभक हंससाजि उतसैना आयेसमर सुभट भरिचयना ९ दऊ दलमनहुं उमग निधनीरा वरनिन जायसमर भटभीरा १० दुंदविदल नहंद वहुवाजी भेरनफीरघोर धुनगाजी ११ पंन वसंख सुभ्र सैनाई वजेनि सानगगन धुनिछाई १२ मंदमं द उरपूरि उमंगा दऊदल मिलेआय महिरंगा १३ भिंडि पालसर सूलकृपाना मुदगर पासत्रासरि पुदाना १४ पाहन परसु कवच करवाला धनुषगदा दिचक्र धृतभाला १५ अस प्रकार सववीर प्रचंडा लागेलरन समर महिमंडा १६ दोहा वदन प्रचारि प्रचारि तरकरहिं परस्परवार जूझिसुभट सनमुष समर सुरपुरजाहिं सिधार १ भुजंग प्रयादछंद उडयोछित चहूं कितछयोग गनधूरी रह्योमारु धरमुषरदस दिसनपूरी १ परी समर आजुधन झनकारभारी करैरिसाकि किलकार भटि प्रवल झारी २ उडैंसी सतनती व्रतरसरतलागे चलेचपलका दरसमर सूसत्यागे ३ वह्योजात श्रोणतसरित समरभारी भषैंगीधखग

गणश्रमष भटनझारी ४ जुरीजोगनी भूतप्रेतंपसाचैं करैपानु स्रो णितसमरधरननाचैं ५ सुभटपरस्पर गरजतरजतप्रचारैं गहैं एक करएकधरि धरन मारैं ६ उतैविकट दनुजात दलवलश्रखंडा इतैवीरध्रुवधीरजादव प्रचंडा ७ महा विक्रमी सुभट जुग दलन केरे लरैं परस्पर हगन करि अरुणत्रेरे ८ रह्योमारधरसवदद हुंदिसनपूरी भिरैंभढभयो घामसंग्रामभूरी ९ लगैंसरसमर सूरग रजत प्रचंडा परैंघुरमघायल अनकखंडखंडा १० उठैंवहुरि सं भारकरिकोपधावैं परगसक्ति सरकरनकरि भटचलावैं ॥ ११ ॥ रयौं गजनसोंजगन कीरथन सोंरथनकी परीरारजनुरणग गनद्वंदघ नकी १२ दोहा धायजात धरनी विपुल गहि कुवंधकरबाल भयो घोरभारत समर प्रलैकाल केहाल १ अस प्रकार करि रारभट भये थकत समुदाय लगे करन पुनिद्वंदरण वीरवीर रसछाय २ चौपई भटि विचक्र दान वजदुवीरा लागेकरनजुद्धरणधीरा १ हंस भूप वलरामश्रखंडा लरन लाधगहि सस्त्र प्रचंडा २ डिं भकसन सात्य किमतिधामा लागेकरन घोरसंग्रामा ३ उग्रसैनवसु देवारिसाए सुमराहिडं वदनु जपेंधाए ४ गदश्रक्रूर आदिकृतवरमा लरहि सुसमरानिरतभटि धरमा ५ हरि श्रखंड वाननझरिलाई कियेविदलनदनुजसमुदाई ६ रहीन धीर विकलमनमारे चले जात कादररणहारे ७ तव विचक्र दनुजातरिसान्यो गहिकर धनुषवान संधान्यो ८ तानि स्रवण लगदीन सिछाडे लागे सोमु

कुंद उरगाढे ९ कछुकवेरमुरछाय मुरारी उठे वहुरि निज चेत सं भारी १० मास्योरि सकिधनुषधरि वाना ध्वजपता कदनुजात उडाना ११ पुनिसारथि जुतगरव प्रहारी कीने हननतुरगरथ चारी १२ दोहा पांचजन्य कर सोरतव कीयो घोरजुदराय प्रलैमेघ समजनहुरव दियोदहुंनदल छाय १ चौपई वेगविचक्रत म कित निजाना गौरवगदा गहित निजपाना १ गरज्यो सिंहनाद जिमिघोरा हन्यो मुकुंदमुकुट भुजजोरा २ तासवार प्रभु लीन वचाई तब प्रचंड कोप्योदनुराई ३ साधिकरण सठासिलामहाना मास्योता किवछ भगवाना ४ सोप्रभु प्रेरदीन तहिओरा लाग्यो हृदय दुष्ट सिलघोरा ५ गिस्यो सिचुरमिधरन मुरच्छाई उठ्यो वहोरि सुरति जवआई ६ लेत तुरत करपरघ विसाला बोल्यो बचन सुनहु नंदलाला ७ हरहिं परघइहदरपतुह्मारा ॥ तुम हिं वाहुवल विदत हमारा ८ भयो सुरासुर जवरण घोरा हम तुम लरे जुगल इकठोरा ९ सोभुजवलहमारहम सोऊ कासुधि विसर गईअवतोऊ १० अहुवीरतवपरघवचेहों नतरनवे रप्राणअवलैहों ११ असकाहिहन्योपरघभुजघोरा सोआवतजदुनंद नतोरा १२ दोहा भयोकपततवदनुजसठसमरभूमिआतिकूर हन्यो उपारतसाषसताविटपवेगवलपूर १ भुजंगप्रयादछंद कस्योषंडपं डासुह्रुमजननमंडा भरेभूरिरिससमरथबलअषंडा १ वधन दनुजपतिसुमारिमानसमुरारी हन्योपतृसर तीव्रतरकरनधारी २ ल ग्योजायदनुतनअनलअस्त्रचंडा भयोभस्मततक्षणसुरनरिपुअखंडा२

पतत्रीवहुरिष्ठवसहहारित्रूणआई भयेलुपतदानवसकलजलधिजाई ४ उतैहंतवलरणलगेकरनधोरा हनेवानदसाविरुषरोहानिकिसोरा ५ हलीकरहनेपांचसरहंसगाढे लियेसुभटसन्मुषसमरधरठाढे ६ हन्यो रिसकिवलवानपुनिसीसहंसा गिरयोधरनमुराछितविकलवलविधंसा ७ उठयोवहुरिकारिसोरजनुसिंहघोरा हन्यो वानरामैभवकीभुजनजोरा ८ हलीकेलग्योवानजघपिमहाना रहेसुभटतघपिसमरसावधाना ९ सपतसहसपुनिवानहलिहंसकोरी प्रहारेकठिनकोपकरिधनुषजोरी १० उडयोवाजिर थसारथसिरनलागे गिरयोहंसमुराछितधरनधीरत्यागे ११ उठयोवहुरिसरपंचहनिहंसनामा दल्योछत्रसारथितुरगत्रूणरामा १२ दोहा तवस्यंधनवलरामतजिगदाधारिकरधाय उतहुंआयगौरवगदागहितहंसगरजाय १ रोडाछंद उभैवीरविक्रालप्रवलभुजगदाचलावैं तिजनिजि वार प्रचारपरस्य रमारवचावैं १ करैंमत्तगज मनहुंसमर मेदनि अतिजुद्ध भिरैंभि मजसुभट टोकिभुजउउन क्रुद्ध २ असतिनकरसं ग्रामगगनसुरचढे विमाना देखहिं निज निजठाउ मानि अश्च जंम हाना ३ धायधायह लिजवैंजोरभुजगदाचलावैं तवैवरखिसुरसुमनजैतिजैजैति अलावैं ४ टूटगदाप्रचंडाभि रतभटजुगलन केरे तवधाएवलरा मकुपतकरिनैनतरेरे ५ हंसवक्षथलजायल लिकिनिजलातप्रहारी गिरयोतुरतमहीवि कलसकलधनसुरति विसारी ६ तववोलेवलरामउठहुसठदुष्टअमंडा हमहुंप्रहारनदे हुखडगभुज जोर

प्रचंडा ७ जवलगउठहुन हुसस्तुतरलगभूय लोभा मरेपरेपरवा
रकरनकछुवीरनसोभा ८ दोहा उठयोनसुरछितहंसनृपठाढरहेवल
राम डिंभकसात्यकिकोलगेलषनउग्रसंग्राम १ चौपई करतपरस्पर
बानप्रहारी उभेप्रवलभटवदनप्रचारी १ तवसात्यकिदसविसष
प्रचंडा हनेनराचप्रवलभुजडंडा २ भेदिवच्छतनडिंभकसोई पृव
सेधराणिवेगगतहोई ३ जद्यपिलगेकठिनतरवाना तद्यपिरह्योसू
रसवधाना ४ धनुसंधानिलच्छसरगाढा वेगकुपतसात्यकितनछा
डा ५ सोआवतरोहनिकुमारे गहिपिनाकनिजवानप्रहारे ६ टूक
टूकसायक करितासा कियोधनुषडिंभककरनासा ७ हंसअनुजदू
सरधनुधारी लग्योकरन तरवान प्रहारी ८ छाडेअसानिराचाविसपू
रे भयेविपुल घायलरणसूरे ९ स्रोणतभरे सुभटतनऐसे फूलेवन
किंसुकछविजैसे १० तवकोपे सात्यकिवलधामा लेतवदनडिंभक
करनामा ११ अरेअधमकादरमतिहीने इहवियकतघायलतुव
कीने १२ प्रयोसमरमोहिसनतुव गाढा वृथारोष औरनपरकाढा
१३ दोहा असकहि सात्यकितमकितर हन्योधनुषधरवान भंज्यो
धनुरिपुतूणजुत भजि भनिवचन अमान १ रोडाछंद तवडिंभक
अतिकुपत तजतरथखडग उठायो सिंहनादकरिगरजतरजरि
पुसनमुषआयो १ उतहुंजानतजिधनुष गिहितकरवालकराला
धाएसात्यकि तमकितउतजनु पडतउछाला २ लागेकरनप्रचा रिप
रस्परखडग प्रहारा एकएक करपावसुभट विक्रमनहिपारा ३ परेअं

तमुरछाय धरणजुगवीरप्रचंडा घटचोनउर उतसाह करनरणमेदनि खंडा ४ दोहा असतिनकर संग्रामसुरचाढिचढिरुचिरविवान ठाड विलोकहिगगनपथपावहिं मोदमहान १ चौपाई उग्रसैनवसुदेवप्र वीरा वलि वक्षातसमरध्रुवधीरा १ ग्याननिरतविग्यानसुजाना प्र जापाल गुणनीतिनिधाना २ तेदऊसमरकरनअनुरागे रथचढिवा नप्रहारनलागे ३ उतहिडिंवदनु प्रवलप्रचंडा सनमुष आवसमर धरषंडा ४ ठाढेलोमवपुष कचपीता वाहुविलंवदसन प्रदभी ता ५ गिरिगोहमनुनासिक भ्यावन चिवकविकटमुषजीह अपा वन ६ वपुषकरालवंधगिरिभासा कढतवदनमनुपावकस्वासा ७ असहिडिंव दनुभीमकराला धावाभक्षण भटन विसाला ८ गजउछाय गजनपरमारै धरिवाजिनपरवाजि प्रहारै रथपेंरथ धरिधायपछारत सिंहनादचहुंवोरपुकारत १० ॥ मनहुंकृतंतरूपधृतधावा गहिगहिसुभटसमरवहुखावा ११ कीन सकलदलघायलतासा परेइमतमूर्छितरणनासा १२ दोहा भनत मारधरमारसठलेतनतनकविराम तवव्याकुलचमुजादवनचलीत जितसंग्राम ९ चौपाई जिमिरणकुंभकरणकुपतायो मरकटकटक कोटिभटखायो १ तिमिहिडिंवदनुजातप्रचारी भक्ष्योजदुवंसिनच मुसारी २ काहुसुभटसनमुषनहिलेवा तवनृपउग्रसैनवसुदेवा ३ वीर महानवृद्धवलचंडा रथारूढगहिकरनकुदंडा ४ गेहिडिंवसनमुषाविन देरी छुधितवाघआगेजिमिछेरी ५ वृद्धनलषिआवतदनुघोरा धा

वाग्रसनकरनकारिसोरा ६ अंधकूपसदृसमुषवायो मृतकमनुजचा
वतघटआयो ७ उग्रसैनआहुकजुगवीरैं भस्योकदनराछसतवतीरैं
८ चाविसकलसरदानवघोरा धावागरजिग्रसनातिनओरा ९ उभै
बृद्धवीरनकरजाईं लीनतोरिधनुसार्थीखाईं १० भुजनपसारिधरन
तिनहेतू भयोवहुरिदनुजातसचेतू ११ वोल्योवदनहासजुतवानीरे
हरिजनकसुनहुमातिहानी १२ उग्रसैनसंजुततुवकाहीं अवमैग्रसहुं
वेरकछुनाहीं १३ जद्यपिजठिरअमषनुवरूखा तद्यपिमैंहुंस्रमतर
णभूखा १४ अवउपायतुववचननाकोईं आपुपरहुमोरेमुखदोईं
१५ जोनहिंमनिहुजठरगथमेरी तोमैंखैहंअवाहिंविनवेरी १६ दो
हा असकहिभुजापसारि निज वदनभयंकरवाय दौंस्यौभक्षणकरन
तिनधरिकृतंतजनुकाय १चौपाई जान्योअवनतजतसठएहा गह
नग्रसनकरकवनसंदेहा१ निजरक्षककऊनाहिंनलेखा चहुंकितचि
तयत्रासअवसेषा २ धनुषवानआजुधविसराई जठिरजानताजिच
लेपलाई ३ तवहिडिंवपाछिलतिनलागा हाहामच्योचहूंकितवा
गा ४ उग्रसैनवसुदेवहुकाहीं भछतदनुरछतकऊनाहीं ५ ऐसोसो
रमच्योचहुंओरा सुन्योअवणरोहनीकिसोरा ६ भिरतहंससनमुखर
णमाहीं लोचनफोरिलष्योदनुकाहीं ७ जान्योंमहाप्रवलखलऐहीं
निश्चयपितुमहीपकरषैहीं८ असउरगुनतहंससंग्रामा हरिकहंसौपिरा
मवलधामा९ धायेकुपतसिंहजनुगाजेरेरेहोहिडिंवगतलाजे १०क
तधावासठवूढनपाछूइहनअधमतुवसाहसआछू ११छाडछाडजठ

वूढनकांहीं इहनधरमवीरनरणमाहीं १२ मोहिषायपुनिजठरनखाना तौवलतोरहोहिंअनुमाना १३ असकहिहलीसुभटरणगाढे जाय मद्धराछसपितुठाढे १४ वोल्योदेखिदनुजहसिजीके आजअहार दीनविधिनीके १५ खायनवलतनतरणतुह्मारा इनवूढनकरतजहुंअ हारा १६ दोहा दौरयोद्रुतअसभनतखल भुजपसारिमुषवाय प्रवर वरिवलरामकहंधरयोधराणिरणआय १ चौपाई कुपतरामतवआ पुधडारी तमकिदनुजउरमुष्टप्रहारी १ सोजनुवज्रसरसतहिलागीप रयोघुरमिमुर्छितसुधित्यागी २ दऊकरचरनपकरिततकारयो धाय धायवलरामपछारयो ३ परयोजायषटकोसाहिडंवामानहुंगिरयो गगनपथंवा ४ भयोदनुजजनुमृतकसमाना विपुलकालतहंपरेवि ताना ५ ररयोभीमकरताकरघाता यातेंअवनमरयोदनुजाता ६ उठयोवहुरिजवतनसुधिआई वलअनंतसुमरतवलराई ७ त्रास तसमरभूमिताजिताहू गयोसमायउदधिअवगाहू ८ वलकोवलवि लोकिजदुवंसी जैजैकारकियेअरिध्वंसी ९ तौलोगवनकरत दिनसोई भयोसिलुपतअसतगिरिजाई १० प्रगटयोअंधका रअतिभारा सूझिपराहिंनिजकरनपसारा ११ तवदहुंदिसनमि ट्योसंग्रामा जवमयंकपूरणउदताना १२ दोहा हैसजग्यभटि द्वंददल निजनिजसैनसजाय लगेलरनपुनिधरनरणसायुधकरन सुहाय १ चौपई उतैहंसडिंभकजुगवीरा भयेसैनआगलरणधीरा १ इतैकृष्णवलरामसुहाए विजैकरनारिपुसनमुषआए २ लागे

लरनहुंददलभारी सुभटसूरसमविक्रमधारी ३ निजपरभानरह्योकछु
नाहीं भिरतप्रचारिवोररणमाहीं ४ इतउतप्रबलहोतदहुंओरा करत
रजनिचमुभारथघोरा ५ असप्रकाररणकरतअनंता भयेअनंतहननव
लवंता ६ गोवरधनतटजानिनपायो लरतलरतलोचनदलआयो ७
जमुनातीरभयोभिनसारा भिरतवीरवरलेहिनवारा ८ मिल्योनसंध्या
करअवकासू होतवरोवरवीरविनासू ९ सारनादिसात्यकिहरिरामा
कियेमनहिंमनगिरिहिंप्रणामा ॥ १० ॥ वहुरिहंसडिंभकजुग
बीरैं घेरिमहारथिजादवधीरैं ॥ ११ ॥ वसदेवैंछाडेसरसाता
नृपतितिहत्तरवातनिपाता ॥ १२ ॥ दोहा ॥ सात्यकिमा
स्योसातसर निसठतिहत्तरमान पंचबीसरूारनहन्योकिंककानदस
तान॥ १ ॥ चतुरवीसाविप्रथाकिये वानमुचततहिंओर उद्धवदस
इषुहन्योसरतानिप्रबलभुजजोर २ चोपई डिंभकहंससुभटरणधीरैं
काटितोरिइनसवकरतीरैं १हन्योसवनकहंभरिभरिवाना मूंदिदियोधु
जसाराथिजाना २ वहतरुदरतनवीरविहाला जिमिकुसमततरुाकें
सुकलाला ३ डोलिउठाजादवचमुसारी हंसविसषसरसाकिनस
हारी ४ उद्धवसात्यकिआदिकजेते मुराछितपरेसमरमाहिकेते ५
आनसुभटसवचलेपराई डिंभकहंससरनझरिलाई ६ रामकृष्णर्वं
ढिआगलआये हननहंसडिंभककहंधाये ७ करतजुद्धभटचारियोकु
द्धा एकएकतैवीराविरुद्धा ८ संभुजुगलगणअवसरजानी रक्षणहेतु
अयरिसमानी ९ डिंभकहंसभूपसुतदोई राखेमद्धसंभुगणसोई १०

लगेसिआपुकरनचहुंओरा मायावरनवरनवहुघोरा ११ उतप्रचारि डिंभकसनजुद्धा लागेकरनरामवलक्रुद्धा १२ दोहा हंसभूपसनसम रमाहिकोपिकठिनघनस्यामवरिवचनभनिभानिवदनलगेकरनसंग्राम १ चौपई तेसंकरगणजुगलसहाथा लागेकरनाविवधविधिमाया १ डिंभकहंससंषधुनकरहीं वारवारनिजजैतिउचरहीं २ पूरहिइतहुंसंषच हुंओरा वारवारदेवाकिकिसोरा ३ हंसडिंभकैसिथलनिहारी भरे अमरषसंभुगणभारी ४ उभेभयंकररूपकराला धायेगहित्रिसूलकरवा ला ५ दहुंनओरतेआजुधछूटे अंगनिसंगभंगभटिटूटे ६ तरकि वेगततकालमुरारी गहितचरनगणजुगलपुरारी ७ संभुलोककहंवे रविहाई जाहुअधमभाषतजदुराई ८ भूमिभुवायधायवहुबारयो दी नवहुरिकैलासपछारयो ९ परेतहांमुरछितसुधिवीन्योहरहासिसाव धानपुनिकीन्यो १० वहुरिंनसमरकरनरुचिकीने हरिविक्रमविलो किभयभीने ११ हंसत्रिविक्रमाविक्रमदेखीमानित्रासनिजहृदयवसेखी १२ कहतहमाररराजसूमाहीं तुवहारिकरहुविघनभलनाहीं ॥ १३ ॥ जोनवन्योइहलवनतुह्मारे तोऔरहुंकरदेहुहमारे ॥ १४ ॥ क रहुसवंदाजोतुमनाहीं तौकैसेहमतेसहिजाहीं ॥ १५ ॥ छि तकरभूपगरवलघुजेहीं हमरीसासनसिरधरिलेहीं ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥ जोतुमकवहुंकिदरपवसदेहुनकरहमकाहिं तोदेख हुनिजदसाअवगोपकुवरइहिठाहिं १ चौपाई एकहिंवानप्राण हरितोरे पठहुंभमनजमवेरनमोरे १ असकहिधनुसाइकसंधानी

हन्योसीसजदुनंदनतानी २ हरिलिलाटसुरसोहतकैसे पुष्पस
राकातिसासिउरजैसे ३ तवदारुकपाछेप्रभुकोन्यो सात्यकिकहंसार
थिकरिलीन्यो ४ भन्योहंससोंअवकरलेहौ इहिअवसरनाहिसो
चकरेहौ ५ दिजद्रोहीतुवआगिजगमाहीं करिपाषंडभज्योसिव
काहीं ६ मोरेजियतविप्रअपम.ना करनकवनसमरथजग.जाना
७ असकहिवेगकुपतभगवाना मास्योंअनलअस्त्रधनुताना ८
तहितेंमनहुंजरनब्रह्मंडा जगीज्वालचहुवोरप्रचंडा ९ हन्योअ
स्त्रवारुणतवहंसा अनलज्वलतकरिकियोविध्वंसा १० मरुतअ
स्त्रजदुनाथप्रहास्यो हनिमहेंद्रसरहंसनिवास्यो ११ रुद्रअस्त्रपुनि
हन्योमुरारी रोकयोसोंऊंहंसधृतिधारी १२ दोहा तवमारेहरिकुप
तधनुअस्त्रतीनसंधान गंध्रवदनुजापिसाचबहुभूतप्रेतप्रकटान १ चौ
पाई हंसहुंतीनअस्त्रपुनिघोरे सुमरतसंभुधनषनिजजोरे १ तिन
तीननकहंतीनहुंमास्यो हरिहेंब्रह्मअस्त्रपुनिडास्यो २ राक्षसभूत
प्रेतसमुदाई ब्रह्मअस्त्रसवदीनमिटाई ३ वैष्णवअस्त्रकृष्णपुनिमारा
औहिंनवारनजासप्रकारा ४ तहितेंचडचहुंनदिसिआई उपजी
अनलभीमभयदाई ५ जरनलागजनुलोगसवाहीं हाहाकारम
च्योजगमाहीं ६ तजिदीन्योसागरमरजादा विधिसंकरकिय
विषमविषादा ७ मनुजदेवसवकहतउचारी हंससुद्रजढहेतमु
रारी ८ लागेप्रलैकरनजगकेरी वनीबातइहकठिनघनेरी ९ वि
ष्णुअस्त्रअसभीमनिहारी भयोहंसव्याकुलरणभारी १० विगत

कोपतनसिथलविहाला छूटयोकरतेधनुषविसाला ११ तवडरप
तनिजजीवबचाई कूदिजानेतचल्योपराई १२ कालीदहद्रुतजा
यदुराना भयोगिरततहिसोरमहाना १३ दोहा तहिपरातजदुना
थताकिरथतेंकूदितुरंत दौरेसाथहिरोषभरिकरनकुमतिअरिअंत
१ चौपाई जायसवलदेवकिकुमारा उभरिकीनतहिचरनप्र
हारा ॥ १ ॥ बूडिगयोकालीहृदमाहीं अवलोंदेखिपस्यो
सठनाहीं ॥ २ ॥ भाषतकाहुहंसवसकाला भयोकह
तकोऊभक्षण्याला ३ देखिनपस्योहंसजवताहीं तवहरिआयच
ढेरथमाहीं ४ देवनमुदितदुंदभीदीनी वरषिप्रसूनजैतिध्वनिकीनी
५ हन्योहंसहरिदीनसनेहू रह्योपूरिरवसंस्रातिएहू ६ भ्रातामरनविलो
कितहांहीं भयोविकलडिंभकमनमाहीं ॥ ७ ॥ हलिकहंप्रवलदे
खिधृतित्यागीभागिचल्यो तजिज्ञानअभागी ॥ ८ ॥ द्रुयो
सिजायहंसथलजाहां कूदिपयोडिंभकद्रुतताहां ॥ ९ ॥ दौरे
तहि पाछिलवलरामा कालीदहद्रुत विक्रमधामा ॥ १० ॥
तवडिंभक निज अग्रजकाहीं षोजनलग्यो जमन जलमाहीं ११
कहुवूडतनिकसतअकुलावा हंसवीरनिजनाहिनपावा ॥ १२ ॥
रामनिरायुधतासनिहारी हनहिंनवीरनधरमविचारी १३ तवडिंभ
कहारिकाहिंपुकारा अरेनंदसुतभ्रातहमारा १४ कहांदिखायदेहु
कतनाहीं नातोहनहुंवेगतुवकाहीं १५ मेजानोसवसक्तितुमारी अ
वलनगुरुवृंदावनचारी १६ दोहा पूछहुजमुनातेंनकतकह्योकृष्ण

मुसकाई भयोतोरअग्रजजहांसोसवदोहिंवताई १ चौपाई तवजम
नासोपूछनलागा डिंभकपरमसोकरसपागा १ हलिहसिभन्योवदन
असवाता हन्योतोर अग्रजमम भ्राता २ कापूछसि जलतेंमति
हीना बूड्योसालिल परतनहिचीना ३ सुनतरामकरवचनकठोरा
भयोविकलमातिडिंभकभोरा ४ बंधुविनासनहृदयविचारी लग्योवि
लापकरनजढभारी ॥ ५ ॥ हायआजमोहिपरिहरिभ्राता कहां
गवनकीन्योसुखदाता ॥ ६ ॥ असडिंभकमनविकलवसेषी
रोदनकरतमरननिजलेषी ७ ॥ विरहभ्रातानहिंसक्योसहारी
जानिप्रवलवलरामअरारी ॥ ८ ॥ अचवतकरनजोहनिजकाहीं
बूडिमरयोजमुनाजलमाहीं ॥ ९ ॥ तवदेवननभहन्योनगारा
वराषिसुमनजैजैतिउचारा ॥ १० ॥ रामहुंनिकरिचढेरथआ
मिलेपरस्परआनंदपाई ११ मृतकसैनसवलीनजिपाई चारिओ
रजैजैधवनिछाई १२ चढिस्यंधनवल कृष्णवहोरी सात्यकिआ
दिसुभटसभजोरी १३ गिरिगोवरधनआनंदछाये कृपासिंधुआनि
संजुतआये १४ निसिनिवसेतहंसारंगपानी भयोविगतश्रमविथा
गिलानी १५ वीरपरस्परहरषअघाये समग्रभावकृष्णवलराये १६
दोहा करतकथनारिपुमदमथनधृतचितचौगनचाय भयेनैननहिनी
दवसगयोरैननिसराय ॥ १ ॥ चौपाई ॥ हरिजैडिंभकहं
सविनासा फैलियोसंस्त्रातिचहुंपासा ॥ १ ॥ गोपगोवरधनधे
नुचरावन आयेहुतेजमनजलप्यावन २ तिनवृंदावनजायतु

रंता जसुमतिसनकहसकलब्रितंता ३ कऊनृपअघीअधमदुजद्रोही पैअतिसमरसुभटजुगसोई ४ कालीदहजमुनाजलमाहीं रामकृष्णजुहन्योतहांहीं ५ तिनकरविजयपायजुगवीरा वसेआयगोवरधनतीरा ६ गोपनवचनसुनतसुखदाई नंदजनकजुतजसुमतिमाई ७ चात्रिकस्वातिवूंदजिमिपाई नृपतिप्रमोदलेतअधिकाई ८ जननिजनकतिमिआनंदछाये रामकृष्णदरसनहितधाये ९ कवदेखव भरिनैननजाई गंवरस्याममंजुलजुगभाई १० जीवनजीवप्राणआधारे सभकरसुषद सवनहितकारे ११ छिनविजोग जिनकर नाहिसहऊ तिनविछुरे दिनविपुलवतहऊ १२ आजनैन पूतरिजुगवारे सोआयेसर्वस्वहमारे १३ नृयनरआन नगरसमुदाई सुनिआगमनकृष्णवलराई १४ नंदजसोमतिसन अनुरागे गवनेद्रुतधनधामतयागे १५ भामानिभनतपरस्परएरी हमहुंआजइन नयननहेरी १६ दोहा गंवरस्याममृदुमाधुरीमूरति जुगलकसोर दनन कोटि छविमनमथनवृजवंतन चितचोर १ चौपाई गोपिग्वाल वालसमुदाई सुनतअगमन स्रवनजदुराई १ चलेजातगोवरधनकाहीं दरिदरसनलालस मनमाहीं २ वृजवासी जनसकलसुखारी तरुणवृद्धवालक नरनारी ३ भेटदेननंद नंदनकाहीं हरषपूर पथदौरतजाहीं ४ पथकनसोंपूछैंहरषाई तुमदेखेकहंकुवरकहाई ५ हरिदरसनलालसाघनेरी जुगसमइकइकछिन वितएरी ६ कऊनवनीत लियेकरमाहीं हमहंदेवनंदनंदनकाहीं ७ कऊदाधिलिये कहतहमजाई आ

जलालकहंदेहुंषवाई ८ चीनवहमहुं कृष्णधौंनाहीं वनीभेटवहुयो सनमाहीं ९ सुनियतस्याम विभौवडपायो नवलनामजदु नाथधरा यो १० हमहुं पृथमदेषवअवआई नंदलालकहंअंकउठाई ११ चूमववदनलेववलिहारी महाविरहंदुषदेवनिवारि १२ वृजवासी भाषतहरषाई नंदलालकहंवरवसल्याई १३ वृजतेंपुनिद्वाराव तिमाही अवतोजानदेवहमनाही १४ रहेसंगकरसषाषेलारी बारवारतकहतउचारी १५ भयेभूपतेनहिंकछुषोरी हमनि जदावलेव वरजोरी १६ दोहा जद्यपिवीतेयोसवहु विछरे कृष्ण मुरारि तदपि मिलेपरले वहमअपनो दावसंभारि १ चौपई वृद्धवृद्ध गोपि कासयानी गवनत कहत परस्परवानी १ जेवृज करत रह्यो तजिषोरी सुधिहूवैहेंदाधिमाषनचोरी २ वालच रित कासु मरण रहेऊ॥ अवतो भूपनंदसुतभैऊ ३ रहीगोपि काजेहरिप्यारी तेअस कहत नैनजलढारी ॥ ४ ॥ आज लषवहम प्राणपयारो जो वृजवासिन सुरातिबिसारो ॥ ५ ॥ लैजिय दैदुषगयो कन्हाई कुवरी केकररह्यो विकाई ॥ ६ ॥ लेववैरसगरो गाहिस्यामै जोदैदगागयो वृजवामै ॥ ७ ॥ सुनियत किये विवधउतसाहू नंदलाल कलनवल विवाहू८ औरहुं रंगरंगेज दुराई दीनहमार सुरति विसराई ९ अस वृजवासनिहृदयहु लासी चलीजात प्रभु दरसनप्यासी १० राषिवीच जसुमति नं दकाहीं वृजवासी चहुं कितपथजाहीं ११ आयेजव गोवरधनने

रे जदुसेनानैननतवहेरे १२ दोहा दूतन हरिसोंजायद्रुतभेनमु
दितमृदुवैन वृजवासीतुमरे सकल प्रभु दरसन तुवलैन १ आयेन
रतृयसकल जतुनंजदसोधामाई हरषेदूतन कथन अस सुनत कृष्ण
वलराई २ चौपई जैसेजहंवैठेदऊभाई तैसेतहंधाये अतुराई १
दलमहंमचोसोरचहुं ओरा गवने कहुं वसुदेव किसोरा २ सात्य
किउद्धव आदिसवाहीं धावतन हिपावत प्रभु काहीं ३ छत्रचम
रव्यंजनकरधारू जहंतहं चलेजात परिचारू ४ नंदलालकर खो
जनपैहीं चहुं कित फिरतचकत चित अैहीं ५ परभरपरयो सक
लदलमाहीं धाये कौतुकदेषन काहीं ६ गोपसमाजजसोमतिनं
दू जवसमीप आयेजुगवंधू ७ तव दृगदेषि विकल महतारी ला
ललालमुष मुषरउचारी ८ धायवत्सज नुधेनुलुभाई लीन्यो अंक
उठायकन्हाई९चूमि वदन गहि हृदय जुडायो मानहुं रंकदेवद्रुम
पायो १० कृष्ण परहिंपुनि पुनि पदमाता ठाडेहरष लोमसवगा
ता ११ आनंदवसनिकसत नहिंवाता चल्यो जातजल दृगज
लजाता १२ दोहा जसुमति पोंछत वदन मृदुलालन वचन
वषान आजुमिले जुगभाग वसमोरे जीवन प्रान १ चौपई ला
लदिवस वहुकहां वितायो विपु लदिनन पाछिल वृजआयो १
तोलोपरे चरन वलराई हरषि मातु लियअंकउठाई २ चूमति
वदन हरष रसवोरी देति असी सजियो जुगजोरी ३ नंद चरन
पुनिपरेमुरारीमिल्योउठायढारिदृगवारी ४ सूंघतासिरचूमतमुष

स्यामै मोहिसम्मकहतधन्यधरामै ५ रामहुंनंदचरणपुनिवंदू मिलेनंदउरपूरिअनंदू ६ रामस्यामकहंपुनिहरपाई लीननंदानिजअंकउठाई७ तहिछिनकरसुपआनंदभारी एकवदनाकिमिसकहुंउचारी ८ वृद्धवृद्धसगरेवृजगोपा रामस्यामदेषनाचितचोपा ९ आयआयरतप्रीतिघनेरी करहिंनिछावरहरिवलकेरी १० प्रेमाकुलदृगवारिवहाये वारवारमिलहिंउरलाये ११ रामकृष्णसवगोपनसंगा भेटहिंभरिभरिभुजाउमंगा १२ दोहा वृद्धनकहंपुनिवंदिप्रभुलीन्योसुभगअसीस अतिअनंदरतरैहुनिततुवद्वारिकाअधीसै १ चौपाई मिलेसषनसनस्यामवहोरी कहिनजायकछुप्रीतिअथोरी १ तेभाषतभुजगहितकन्हाई वृजसुधिभूलिगईवृजराई २ हरिकहजवतेंवृजाविलगाने तवतेंकवहुंनछिनसुषसाने ३ वृद्धवृद्धगोपीजुरिऐयां रामस्यामकरलेतवलैयां ४ चूमतवदननिहारतरूपा तोरततृणलषिरूपअनूपा ५ वरषहिंआषिनआनंदआसू लेहिंअंककलरमानिवासू ६ हरिपेंहरापिरतनगणवारत जसुमतिलालवदनउचारत ७ तुमविनहमहुंलालितनंदवाला इहजगजीवनभयोजंजाला ८ मिलहिंसषीहरिप्राणपयारी जेप्रभुहितधनधामविसारी ९ निजनिजपूरवप्रीतिजणाई करतकटाक्षवदनमुसक्याई १० काहुपरस्परकरताविचारा मिल्योवहुतदिवसनपियप्यारा ११ अवछालियाछूटननाहिपावें हमकहंवृजवसिरसिकरिझावें १२ कोऊसषिकरिहरिकरकाहीं कह

तकान्हकसचीन्हतनाहीं १३ रामस्यामवृजवासिनकेरो भयोस
मागममोदघनेरो १४ धन्यधन्यजदुवंसिवषाने प्रभुकररीतिदे
खिविसमाने १५ पराहिंचरनसवजसुमतिनंदू जदुसमाजउर
पगिअनंदू १६ दोहा जसजानैपितुमातुकहंकृष्णदेववलराय त
समानैसनमानजुतजदुवंसीसमुदाय १ हरिवलसनाजामिकरहिंक
लनंदजसोमतिप्रीति तिमिजदुवंसिनसवरुचिरकराहिप्रेमरतिरीति
२ चौपाई तवघनस्यामरामकरजोरी भाषिसागिरानअरसवोरी १
हमरेसिवरचलहुपितुमाता नंदजसोमतिसुनिसुभवाता २ गोपगो
पिकासंगसुहाई औरहुंजदुवंसी समुदाई ३ निजानिजहरष
प्रफुल्लतकाये सकलसुषद सुभासिवरासि धाये ४ परमदिव्य
कनकासनमाहीं हरिवलनंदजसोमतिकाहीं ५ वैठायोसादिरग
हिपानाजदुवंसि ॥ नअचरजमनमाना ६ जवजसुमतिवलराम
सयामै हरषिगोदालिन्योअभि रामै ७ पोंछतिमुषचूमतिवहुवारा
कहतिअवैन हिकियोअहारा८ तुवदाधिदुधनव नीतषवय्या मैछि
नछिनसुत रहातिदवय्या ९ कान्हवांमोरसुरातिविसराई कहतरहे
माईमुषमाई १० एकवडोअचरज जियमोंही पुछहुंमै डरपतसु
तोही ११ वडेवडेनृपदैत्यनकाहिं मारच्योतातसुन्यो स्रुतिमा
हिं १२ दोहा आजुदवियाभटनगुनकव सीष्योसुतएहु कसजी
त्योअरिसमर इठमोरेविपुलसंदेहु १ चौपई दानवभूपभयं करभारे
तुमहअंगको मलसुकमारे १ उनसनसमरकियोकसरारी इहमा

नतिअचरजमहतारी २ राजकाजकसकरहुकन्हाई छुटिनअज
हुंतातलरिकाई ३ जोतुमकरतरहेतजिषोरीविसरि गईसुधिमा
षनचोरी ४ दूवरताईलालमुषतेरैं देषिपरतइननयननमेरैं ५ का
गोरसदधिमाषनमावा मैजान्योकहुंनाहिंनषावा ६ तजिवि
लंभअवलेहुकन्हाई मैंव्यजनवहुतुवहितल्याई ७ भोजनकर
हुलालइहिकाला वैठिसंगसववालगुपाला ८ असकहिजसुमति
विवधप्रकारू दधिमाषनमिस रिरसचारू ९ कदलीपदमपलवन
दोनाभरिभरिआनधस्योचहुंकोना १० वैठेविचरामघनस्यामावाल
वालचहुवोरललिामा ११हरिवलक हंजसुमतिसुषसानीलागिपा
ककरावनपानी १२दोहा विलगाविलगपूछातिवदनसुचिव्यंजनरस
स्वादुभनतमुदितवलरामहरिभरिभरिउरअहलादु १ चौपई जवतें
हमनिजवृजताजिआये तवतेंअसभोजननहिपाये १ मातुकेऊंमोहि
वदनउचारी औहिंसकलवृजकुसलहमारी २ सुनिप्रीयवचनजसो
मतिकन्हवां तुमविनकहातिवि कलवृजजनुवां ३ हरिकहमैजननि
तुवदाया जीत्योमहाप्रवलरिपुराया ४ पैदुषहिंदुषमैदिनवीते कवहुं
नकारजतैहमरीते ५ वृजसमसुखत्रिभुवननाहिंजाना जदपिसक्रसत
विभोसमाना ६ ग्वालवालतववदनउचरहीं तुंवअनतवलअंतनप
रहीं ७ हमदेखेवृजमेंबहुवारा कियेअनेकअसुरसंघारा ८ सुषमुसक्या
यनंदपुनिकाहा कीयेस्यामबहुरुचिरविवाहा ९ वसहुंसदनद्वारावति

माहिंसिषासुहृदतुवसंगसवाहीं १० अवतोसुनियतवडोवडाई छोडिदईलालनकरिकाई ११ वारवारसुत विनैहमारी लषिनिजजठिर तातमहतागि १२ दोहा अवनतजहुवृजकाहिंतुमवृजल्पारिवृजराऊ आयेहमरेभागवसवृजवंसिनसुषदाऊ १ चौपाई ननतरचलबहमसंगसिधारी तुमविनजीवनवृथामुरारि १ कह्योकान्हतुवजनकविछोरा कारकदमनसकलसुषमोरा २ पैमोहिहृदयपरमसंदेहू जोतुवसंगचलनापितुकहेहू ३ मैंतोनिततुवहृदयवसैय्या कोकरसंगचलातिपितुमैय्या ४ सुनहुतातसंदेहविहाई लषहुसदामोहिसंगसहाई ५ गिरागूढअसकृष्णउचारी सुनतनंदजसुमतिमहतारी ६ भयेमगएरुषसिंधुअपारा नयननवहातिप्रेमजलधारा ७ असप्रकारकरिपाककन्हाई वैठेनंदअंककलजाई ८ हरिरचनाअविचरितनिहारी भनतपरस्परजादवसारि ९ धन्यनंदजसभाजनभाई धन्यधन्यजगजसुमतिमाई १० कोदुरलभसंसारनताके तीनभवननायकसुतजाके ११ सत्यसनेहकृष्णपरकीन्यो जीवनमुक्तविदतइहचीन्यो १२ दोहा तवनंदनंदनंदसोंआनंदवचनउचारि कह्योअहैवृजमैकुसलपितुसवधेनुहमारि १ चौपाई वतसिवतससवअहिंसुषारी जिनमहंछिनछिनसुरतिहमारी १ कहहूकुसलवृजकुंजनताता विसरतजोनहमहुंसुषदाता २ वणतृणसकलफूलफलवारी कुसलवारिवरभानुकुमारी ३ कदलिकदंवअवकलछाया जहांरहतमनमोरलुभाया ४ केलिस्थानआनवृजजनकी देहुकसलमोहिजनकसवनकी ५ सुनतनंदकान्हर

असवानी बोलेचूमिवदनसुषमानी ६ वृजकरकुसलकवनहमकहिहों जहांस्यामइकतुमहुंनरहिहों ७ औरकुसलतनीकीसवताता पैविजो गतुवसह्योनजाता ८ अतनेंमैवलरामसुधीरा आयेहरषपूरिदृगनीरा ९ नंदगोदआनंदवढाई बैठेमंदमंदमुसक्याई ॥ १० ॥ कछुकारज वसप्रीयेपिनाकी गयेदूसरेसिवरइकाकी ॥ ११ ॥ ईहांनंदअ तिसैअनुरागे जदुकुलकुसलस पूछनलागे ॥ १२ ॥ हल धरकरहुंकथनमोहिकाहीं रहहिंकुसलवसुदेव सदाहीं ॥ १३ ॥ सुषितभोजनृपजादवसारी कहहुरामवलसकलउचारी ॥ १४ ॥ हलिहसिकहकलकृपातुह्मारी अहिंकुसलजादवकुलसारी १५ इतैइकंतर्क तकहपाई गोपीसकलहरषसरसाई १६ गवनीपूरि प्रेमदृगवारी पारिवारितकीनेगिरधारी १७ तिनकहंदोषिस्यामनि जकीने अधोवदनकछुनयनलजोने १८ तववोलीहसिकैहरिप्यारी अवकतमानियेलाजविहारी १९ भलीकरीजोकरीकन्हाई वीती वातकौनसुषगाई २० दोहा अवतो॰नभुषकीजियेनयननलननंद लाल तुह्मेनदीजैदोषकछुविधिगतिअगमगोपाल १ जोलिलारवि धनालिष्योहोतसुफुरजदुराय राईघटैनतिलवढैकीजैकोटिउपाय २ तवकरसुधिकान्हरतह्मैविसरिगई सगरीय सवकररुचिराषतरहे अवकछुरीतिनइंय ३ चौपाई जानिपरतहोहृदयविरागी मानहु लगनआनकहुंलागी १ चंचरीकचितरीतितुह्मारी रहैनवलनित वेलिविहारी २ तुमकहंदोषनहींकछुप्यारे रहेअैसहींभागहमारे

३ सदारीतितुमरीमनभावन सनमुषदेषिप्रीतिउपजावन ४पीठदी येपरऔरनकेरे वनहुस्यामनीकेहमहेरे ५ अवतोव्याह्योराजकुमारी बिसरिगईसुधिकान्हहमारी ६ जातिअहीरगवारनिजोई कवभा वतिअवकान्हरतोहीं ७छलकरिसषीस्यामवहुरंगी गयेसकलवृजक रसुषभंगी ८ जातसमयभाष्यो गोहराईहमऐहैं वृजवेगपराई ९ सषीसोचजनि मानसकरहीं हमतुम्हरेसबविधि अनुसरहीं १० सोअनुसारभयेभलस्वामी वनेजायऔरनअनुगामी ११ हमरीसु धिकसकरहुपयारे इहछलछंदसदाहितुम्हारे १२ दोहा मिली एककुवरीतुम्हेजहिमुष जियहुनिहारि तासकटाच्छनिराच वसहमरी सुरति विसारि ॥ १ ॥ चौपई पैकुवरीसनहमहुलि लामा जवतुवसुन्योनेहघनस्यामा १ तवपछतायकह्योहमजीके यहिपरिनामहोहिंकवनीके२ सदाएकरस स्यामनऐहीं छलवलन वलकरतानितरैहीं ॥ ३ ॥ भयोसत्यसऊकथनहमारो तजिकुव रीद्वारिकासिधारो ॥ ४ ॥ तहांसुन्योरुकमनीविवाही कछु दिनताकीप्रीतिनिवाही ॥ ५ ॥ तापरवरीअष्ट पटरानी षो डशसहसवहुरि मनभानी ॥ ६ ॥ पृथमहुंते विगरी जिनरी तो तिनकरकवहुं नपरत प्रतीती ७ वृजकहंवारिध विरहं वहाए अवमुषकौनदिषावनआए ८अति उपकार इंस नृपकीना जहिमि सतुमहुं चरन इतदीना ९ अवलौंगई नचंचलताई भली निवा ही प्रीति कन्हाई १० पैजोभयो गयो कढिकाला अवसो चित

दुषजाहिं नटाला ११ तुवदरशन दुरलभजगलीने हमइहन यन सफल निज कीने १२ दोहा आनलाभयातें अधिक कछुजान्यो नहिजाहिं इहिलगिरहेसि प्राणइहप्रान नाथत नमाहिं १ चौपई अवनिज कुसल कहोगिरधारी रहेरामजुततुमहुं सुषारी १ जब तें तुमतजि वृजबनस्यामा जहंजहं विचरतरहे लिलामा २ तहं तहं रसिकासिरोमणि नीके पायो वृजसदसुषजीके ३ कहहु स त्यजियकीगिरधारी धोंवृजकरसुष दियो विसारी ४ सुनिगोपिन अस वचन कन्हाई वोले लाजित मंदमुसक्याई ५ सषीप्राण प्रीयतुम मोहिकाहीं विसरी तुमरि सुरति पलनाहीं ६ काहकहुं कछु कारजहेतू गवन कियो पितुमातु निकेतू ७ वृजवंतन सद शसषिमोहीं त्रिभुवन प्राण पृयेनहिकोहीं ८ छिमहुछिमहु अप राधहमारा तुवदुषदेषिन जाहिंसहारा ९ तुमजो कहीसषीसव सांची मोहितिंसरी करी सवकांची १० तुमहु दोष नाहिं दोषह मारे चलत नजुगतिदाऊ सुषिहारे ११ तुमाहिं कौन विधिमैसमु झाऊं अपन किये पराजिये लजाऊं १२ दोहा जोकछुकियोसो मैकियो दोषकाहु करनाहिं डारि विरहंवारिध तुम्हेगयो द्वारिका माहिं १ चौपई पैतुवसषीभलो प्रणधारा सत्य निवाह्योप्रेमहमा रा १ अवनिज धरहु धीरजियमाहीं सोच विषादकरहु कछुना ीं २ पैहौतुमहु सरवदाप्यारी मोरामिलन अहलादसुषारी ३ असक हि उठिसानंदकन्हाई मिलेसबिन हगवारी वहाई ४ भरिभरि

भुजातिनहंहरिभेंटे दुसहविजोगसोगदुषमेटे ५ मिलतनतजहिंस्या
मघनकाहीं परहिंसुधा जिमिमृतमुषमाहीं ६ विपुलवुझायकह्यो
गिरधारी अबमोहिदेहु रजायसुधारी ७ जाहुंवेगद्वाराव
तिमाहींदेहुं अभयधीरजसवकाहीं ८ व्याकुललो गनगारि
नरनारी देषतहोहिंमोर पथसारी ९ गिरागमन जवस्याम
सुनाई वृजवेतामानस अकुलाई १० विरहंसिंधुमनुवूडनलागी
स्यामसरोजचरन अनुरागो ११ वोलीवारधारदृगढारी पुनि
मिलिहौकवकुंज विहारी १२ दोहा सखिआननघनस्यामतु
वइहदृगजुगलचकोर कबदेषवहमरेवहुरसुनहुरसिकसिरमोर १
चौपाई सुनतसषिनमुषवचनलिलामा वोलेमुसकिमंदघनस्यामा
१ सषितुह्मरेमानसममवासा मेतोरहौंसदातुवपासा २ कुरुक्षेत्र
कहंआउवजवहीं इहसुषहमतुवपाउवतवहीं ३ जवसषिकरहुध्यान
सुधिमेरी तवमैहोहुंप्रकटाविनुवेरी ४ असमुनिवृजभामनिअनुरागी
वारवारमिलिप्रभुपदलागी ५ तवतिनतेंहरिहोतविदाये हरषिनंद
जसुमतिढिगआये ॥ ६ ॥ मांग्योसासनजुगकरजोरी अवपितु
औहिंचलनमतिमोरी ॥ ७ ॥ सुनिअसनंदजसोमतिकाहीं
विरहंवानलाग्योउरमाहीं ॥ ८ ॥ सिथलअंगतनउठेदुषारी
लियेलगायहियेगिरधारी ॥ ९ ॥ विलपिकह्योदंपतिअसवा
नी तुवविजोगसुतप्राणनहानी १० चलनवातजानिकहहुमुरारी दे
हुनहमहिंदुसहदुषभारी ११ कह्योकृष्णअवतेंपितुमोरा तुम्हरेकवहुं

नहोहिंविछोरा १२ दोहा मोपैंराखेरेहुंनिततुवनिजकृपामहान अ
सकहिसमुझायेपिताकरिहरिविविधवखान १ नंदजसोमतिहियेक
रहरिदुषसकलमुरारि सानकूलनिजवदनप्रभुपुनिअसगिराउचारि
२ चौपई जनकमोरकुरुक्षेतरमांहीं होवमिलापराचिरतुसकाहीं १
मैसुततातमाततुममेरे कोटिकलपलगफिरहिंनफेरे २ असकहिव
सनआभरननाना वेगमंगायकृष्णभगवाना ३ गोपीगोपिनकहंसमु
दाई हरषिविभगतकीनजदुराई ४ पुनिप्रभुवारवारसवकाहीं मि
लेमोदपूरितमनमाहीं ५ रामसहितमानसअनुरागे वहुरिनंदजसुम
तिपगलागे ६ व्हैगयेप्रेमविकलगिरधारी ढारतलोचनवारजवारी
७ नंदज सोमतिविकलअधीरा भयेनिमगणविरहंनिधिनीरा ८ गो
पीगोपसकलसुधित्यागे कृष्ण कृष्णकरिरोदनलागे ९ स्यामजान
जवभयेसवारा गिरेलोगसवखायपछारा १० जलवहीनाजिमिमी
नदुषारी तरफततिमिव्याकुलनरनारी ११ तिनकरदसादेषिभगवाना
आयेनाजितुरंतनिजजाना १२ करिकरिवदनप्रबोधसुहावा वार
वारसवकरसमुझावा १३ दैदैआस्वासनगिरधारी सावधानकीनी
वृजनारी १४ दोहा जनकजननिकहंदीनपुनिधीरजकृपानकेतवा
रअनेकलगायाहियेंदंपतिप्रेमसमेत ॥ १ ॥ चौपाई जसतसकैपु
निहोतविदाए चलेस्याम चलिजान सुहाए ॥ १ ॥
इतपथनंदजसोमतिलीन्ये। कृष्णविरहव्याकुलमतिकीन्यो ॥ २
पुनिपुनिचितयजातनवस्यामै तकत नयननाहिलेतविरामै ३ ॥

देषतवहुरिवहुरिसवग्वाला कहंलगअवैगयेनंदलाला ४ उतफिरि फिरिपथतकहिंकह्वाई कसजहिंग्रेहजसुमतिमाई ५ असप्रकार वलरामुरारी जीतिहंसडिंभकरणारी ६ गयेद्वारिकासानंदभूरी रह्योसुजससुभत्रिभुवनपूरी ७ जसुमातेनंदलोगसमुदाए इतैसुम रिहरिगोकलआए ८ एकआधारकृष्णजियिजानै वयोभरोस स्व पननहिंमानै९ काहकहूंवृजवासिनरीती जाकीइमटकृष्णपदप्रीती १० करिकरिप्रेमअनंदमुरारी लोकप्रलोकह्वियोजसभारी ११ ध न्यधन्यभाजनजगएहू रहतसदारतकृष्णसनेहू १२ असवृजवासि नकीमनभाई मैइहकथाअलपकछुगाई १३ नतरअग ।६ ७ ८ ध जगाथा अगनितचरित चारुवृजनाथा १४ कोसामरथकथनकर अैहीं पैरैप्योधिपारकिमिपेहीं १५ मतिअनरूपसमयअनुसारा जान्योएहुभयोविसतारा १६ दोहा प्रेमनेमजसकीनकुलवृजगो पिनभगवान सुनहुसंतस्रोता सकलअैहिंनतासप्रमाण१ वृजवा सनिवृजवल्लभीवृजपतिप्राणपयारि सदारहतताकरहृदयनिवसत कुंजविहारि २ ॥ इतिश्री वल्लदत्तभूपश्री सहमित्रद्विजचरितम् राजासुरथ राजासुधन्वा

॥ दोहा ॥ अबमनहरनप्रमोदप्रद कृष्णचरनरतिकारि वरनहुंकथापुनीतसुभसुजसभरनभ्रमहारि ॥ १ ॥ सुरथसुधन्वा भूपजगजिमिनिजभक्तिप्रभाव मुनिजोगिनदुरलभअमलल्लीनमुक्ति पदपाव २ चौपई अबसरएकजुधिष्टरराई कीन्योवाजिमेधमषआ ई १ छाडयोविधिजुतपूजितुरंगा चलेमहानसुभटतहिसंगा २ इंद्रसवनप्रद्युमनसुहाएआनमहारथीवीरनिकाए ३ अभिलाषतरण राजनसंगा भ्रमतदेस देसनसतुरंगा ४ आवाचंपक पुरीरसाला पारथजुतदल सुभटबिसाला ५ तहांनरेस हंसध्वजनामा धर्मप्रवी नधीरधुवरामा ६ तासुदूत द्रुतआय अलावा सुनहुंवृतांतनवलनृपभा वा ७ करतअहैविधि संजुतआला अस्वमेधमष धर्मभुवाला ८ दलअखंडजुततास तुरंगा आवातुम्हरेनगर निसंगा ९ भटप्रद्युम्न पारथसंगराजे औरहु इमतसूरछविछाजे १० मैकीन्योपरिचितनृ पतोहीं अबकीजैमनभावतिजोई ११ दूतवचन अससुनतसुहाए भूपहंसध्वजहरषअघाए १२ दोहा बोलिवगभटस चिवजनउर विचारअसकीन इनआगमन हमरेनगर विपलल्लाभबिधिदीन १ सवैया पूरणप्रेममुकुंदकोभाजन भूपजोधिष्टरसंस्रातिगाए तहिअ श्वमेधआरंभकीयोकलछाडतुरंगचमूचतुलाए पुत्रप्रद्युम्न अर्ज्जनऔर हुसंगसुदासहु लाससोआए वांधितुरंगकरोरणरारसुदास सुरारल होपदपाए १ रोडाच्छंद जहां अर्ज्जुन वीरसुभटप्रद्युमनसुहाए अहैतहां जदनाथ हरन दुषदीनन काए १ एहि व्याज जदुराज

दरसदुर्ल्लभजगजेहू भरिभरिलोचन लेहुसदलजुतसुभटसनेहू २ कबहुंनदेखेस्यामजलधतनमंजुलसोभा रंजनसुरदुजधरनकरनमुनिमानसलोभा ३ बीत्योजनम अमोलुमोरजगवृथासबाहीं तातें आजरझायसमर हरिदासनकाहीं ४ दोहा होहुंकृतारथसुजनपैजुतसमाज समुदाय बिनुअजास हरिदासपदलेहुंसुगमरुभपाय १

चौपाई सेनपसचिवपुत्रपुरवासी रहेसकलहरिदरसनआसी १ सुनतहंसध्वज वचनसुहाए निजनिजहृदयसकलहरषाए २ भनतनाथहरिदासनकेरी हमरेदरसनप्रीतिघनेरी ३ इहअवसरहंकुलसुषदाई नाथनिसंकलिसानवजाई ४ चमुसमेतभटवीरनकाहीं आयसुदेहुवदननरसाईं ५ राऊसुनतमानसहरषाए सजनसैनहितसुभटवुलाए ६ करहुवेगजनसमरतयारी कृष्णसरोज चरनउरधारी ७ राउरजायसीससबराखे वैष्णववीरसमर अभिलाखे८ रथमातंगमतरणगाजे बाहनइमत आनभटसाजे ९ अगनित प्रबलपदातिसवारा चतुरंगनि चमुचढ्योअपारा १० मुदगरसक्तिसूलअसिपासा कचचकृपानप्राणरिपुनासा ११ धारेधनुषतूणकटिसूरेवीरप्रधानसथरवलपूरे १२ असजवसैनसुभटसाजिआए तवनदेसअसभूपआलाए १३ एकनारिवृतजेहरिदासा जाके कृष्ण चरनविस्वासा १४ दोहा तेआवहिंरणधरनिध्रुववांधि बिरदनिजवीर हरिदासनसनसमरलरि लेहिंअमरपदधीर १ चौपई हरिदासनबिनुआननकोई हरिदासनरणसनमुषहोई १ नृपतिसैनअसकाहुन हेराजोन

होहिंहरि दासघनेरा २ विधिवतदान होमकारिसारे ऊरधपुंडदैति लककलिलारे ३ पहिरिपहिरितुलसीकलमाला सजेसुभटवरवीर विसाला ४ पांचपुत्रभूपतिअभिरामा करहुंकथनतिनकरअवना मा ५ ससीकेतुससीसेनसवीरा सुवलसुधन्वासुरथमधीरा ६ इह वालिसुभटसैनसरदारा अभिलाषत रणराजकुमारा ॥ ७ ॥ समरगमनतिनकरतियदेखी मानिहरष निजहृदयवसेखी ॥ ८ ॥ ॥ दोहा ॥ भएअधरतुवस्यामसुषि भनतपरस्परवाततुवप तिहियकदराईतुवअधरनप्रकटजनात् १ तासकह्योसषिकादरी मोरेपतिकीनाहिं पतिहतगुनिहारिकरनमैसुमस्योजदुपतिकाहिं २ सोऊस्यामताअधरममरहीप्रकटसषिछाय वीरधीरजदुवीरजनप तिनाकवहुंकदराय ३ चौपई असप्रकारवधुवीरस्यानीहरषतभ नतअनेकनवानी ४ भूपहंसध्वजसीससुहावा चलैछत्रचांवरमन भावा ५ लागेवहुविधिवाजनवाजा छयोसंखधुनिगगनदराजा ६ सैनपसुभटइमतदलसाजे नगरवाहिरसवआयाविराजें ७ तवप्रणरोपि हंसध्वजराई सुनहुसुभटअसभन्योरिसाई ८ ममसासनमानवनाहिजो ई तिनकहंसुनहुंडंडअसहोई ९ संषलिषितउपरोहितमेरे रहेजुगल पाछिलतुवहेरे १० तिनकरपूर्ववृतांतविचारी करहुंकथनकछुसमय निहारी ११ संषविरच्योएकआरामा सुमनद्रुमनछविछयोलिलामा १२ तामधालिषतगयेइककाला वदरीढलदृगदेखिरसाला १३ षायेतु रततोरिलषिपाके पाछे उपजज्ञानजियताके १४ विनुपूछेफलकिये

अहारा अहो विपुलअपराधहमारा १५ जोमैयाको डंडकदाई एहितनमैनाहिंलीनासिपाई १६ तोसुरपुरगवनेमोहिकाहीं होइहे दुरगति संसयनाहीं १७ संसारहु सुषस्वपननमोही असविचारि निजमानससोई १८ दोहा गयोतुरतानिजवीराढिगकह्यो वदनअ तुरात भयोपापमोहितें विपुल भ्रातभन्योनहिजात १ चौपाई ताकर डंडअवहितुवदेहू नातोटरनअगमअगएहू १ कियोविचारसंष मनमाहीं याकोगतीडंडविनुनाहीं २ पैएहडंडदेननरनाहा उ चितमोरअधिकारनराहा ३ असगुनिछितपतसरनसिधारे जुग लभ्रातनिजविथाउचारे ४ भन्योभूपपंडिततुवदोई यामैजसन देसतुवहोई ५ सोमोहिकरनउचितसूइकारा तुवप्रवीनपथवेद विचारा ६ तववोल्योअससंषप्रवीना होहिंवीरममकरनवहीना ७ दुजकरजुगलपानिमाहिपाला दीनकटायतुरततहिकाला ८ लषिप्रालवधभोगजुगवीरा करनकटनकछुमामिनपीरा ९ असति नकरद्दढधरमनिहारी भाप्रसन्नमनभूपतिभारी १० संषलिषतक हंनिकटवुलाई भूपवदनअसगिराअलाई ११ पूरिमहाइकतै लकराहू वैठहुनगरवहिरतुवजाहू १२ दोहा अनलचंडताकर तरेतुवद्रुतदेहुजराय चुरततैलजवअरनअतिहोहिंअनलवतआय १ तवजेवेमुषसमरतेंहोहिंसुभटकदराई तपततेलद्रुततासुतुमकरहुसभ समजराई २ चौपाई संषलिखतनृपआयसलीन्यो तैलकराह तपतद्रुतकीन्यो १ औरवीरनृपसंगसिधारे सुमरतश्रीवसुदेवद

लारे २ लघुसुतभूपसुधन्वाजोई समरसुभटजानतसबकोई ३ कृष्णसरोजचरनदृढदास. उरउतसाहसमरनितजासा ४ सजस जायरणहेतुप्रवीरा मातुसमीपगयोमतिधीरा ५ वंदिचरनमृदुगिराअलाईं मैअवचल्योधरणिरणमाईं ६ तुवप्रसन्नमनआसिषदेहों अभिमुषलरहुंसमरजसलेहों ७ हरिसुतपृथेप्रद्युम्नसुजाना तसहिंसुहृदपारथप्रदमाना ८ आएमषतुरंगकरसंगा संजुतसुभटसैनचतुरंगा ९ हरिदासनकहंनैननदेषी अरुउझायरणधरनवसेषी १०अभिमतफलसहजाहिंसुषदाई लेवमातुभवभीत विहाई ११ हरिजनदरसनतें जगमाहीं वयोलाभजननीकऊनाहीं १२ जाकरहृदयमातुविस्वासाहरिसरूपदरसनहरिदासा १३ दोहा भन्यो मातुद्रुतजाहसुतमोदप्रमोदसमेत रणतोषतकरिहरिहिंतुवल्यावहुरुचिरनकेत १ पारथजुतप्रद्युम्नसव औरहुं हरिजनकाहिं मोहि दरसावहुसवनतुव आनिसदननिजमाहिं ॥ २ ॥ चौपई जोतुवजूझीसमरसुजैहों तौसुचिमुक्तिसुजसजगलैहों १ जियतरैहुंतवहरिकहंपावहु मोहिसमेतसुतधंन्यकहावहु २ सबविधितातदुह्मारभलाई करहुसमरध्रुवसन्मुखजाई ३ धंन्यसोजननिजगतितलचारू जासुपुत्रमाहिसमरजुझारू ४ अरुरणविमुखजाससुतहोई भलीवांझजननीजगसोई ५ सुनतसुधन्वैगिराउचारी तुवआसिषप्रसादमहतारी ६ होहुंनविमुषकवहुंमहिरंगा लरहुंसमरहरिदासनसंगा ७ असकहिवंदिचरननिजमाता तृयपैंगयोपूरिमुदगाता

८ मांग्योतहितेंविदाउचारी देहुरजायसरणकहंप्यारी ९ हरषिवद नतृयवचनवषाना मोहिसमआजनसंस्रतिआना १०जहिपतिजदुप तिसरणविचारी चल्योंकरनसनमुषरणरारी ११ जाहुप्राणपतिविल मनकीजैस्त्रीजदुवीरदरसदगर्लजै १२दों०पैरतिदानसुजानपतिएहि अवसरदैमोहि वहुरजाहुरणधराणिद्रुतसुद्धविसदवपुहोहि १चौ०तव भामनिकहंदैरतिदाना करिसनानआयुधपहिराना १हरिहरसुमरिव हुरिनरराई गवन्योरथचढिसंषवजाई २ भईतासुजवविलममहांहीं भेटतभवनजननितृयकाहीं३ उततकिसैनहंसध्वजटेरा कहांसुधन्वा नाहिंनहेरा४ आयेसकलवीरमोहिसंगा रह्योसोभवनडरतमहिरंगा ५ अवहिंजाहिंद्रुतजमनसधाते लावहिंतासुवांधिरिसराते ६ राज सुवनगुनिजनितजिआवहिं नातोकठिनडंडममपावहिं ७ सुनिन देसनृपद्रुतचांडाला चलेकरनगहिखडगकराला ८ आवतडगरसु धन्वांपायो नृपसासनतिनतासुसुनायो ९ सुनतसुधन्वावेगासिधावा आयजनकचरननसिरनावा १० भन्योभूपतववचनकठोरा अरेमं दतुवसुतनहिंमोरा ११ जोरणतेंकदरायअभागी रह्योसिसदनवी रतात्यागी १२ दोहा भन्योसुधन्वावचनतवजोरिजुगलनिजहाथ जहिंहितमैपाछिलरह्योसुनहुगाथजननाथ १ विदालेननिजजननि पैंगयोभवनयहदीन यातेंभईविलंभकछुजानिनाअनुचितकीन २ चौपई तवजुगदूतहंसध्वजराए संषालिषतपवेगपठाए १ दूतन जायनरेसवषाना भन्योसकलकछुसकुचनमाना २ सैनपसुवन

मंत्रिभटसारे आयसमरहितसंगहमारे ३ ॥ भीरुसुधन्वा एह सुतजोई रह्योसदनरणकादरहोई ४ सबकरपाछलमोहिपैंआवा याकोशास्त्रडंडकसगावा ॥ ५ जथाउचिततुवदेहुविचारी विप्र डंडयाकोअतिभारी ६ संखलिषततवभूपतिपासा पठे दूतअसवचनप्रकासा ७ तुवनदेसवसतेलकराहू कीन्योतपत अनलवतदाहू ८ कादरसमरविमुषनरकाहीं तुवसासनजारनत हिमाहीं ९ जोअवपुत्रपक्षवसहोई करहुभंगप्रणआपनसोई १० तोइमतजवदेसतुवराई पाछेकरहुजवनमनभाई ११ हंसकेतुढि गदूतनजाई दियोपुरोहितकथनसुनाई १२ दोहा तवनरेसनिज सचिवसुचिवोलिनिकटसमुझाय करहुहननएहिसुतहिंतुवजनना मोरप्रणजाय १ चौपई मंत्रीनृपसुतलियेहंकारी संखलिषतप हंचल्योसिधारी १ मारगभनतसुनहुसुतराई अहोदैवगतिलष्यो नजाई २ इहतुम्हारदगदसाविलोकी उपजमोहिदुषजनहुंतुलो की ३ छूटतआजनकायअभागी जोइहचल्योहननतुवलागी ४ मोरेप्रभुकरतुवसुतप्यारे काइप्रकारअवहतहुंतुम्हारे ५ जोनकर हुंफुरसासनस्वामी तौमैहोहुंनरकपथगामी ६ लोकप्रलोकजुग लइहमोरे विगरहिंकियेहननविनुतोरे ७ सुचिवतसुनिवचसचि वसुधन्वाभन्योवदनउरपूरिप्रसंन्वा ८ सकुचसोचतजिसचिवउ दारे पितुनदेसजसदीनतुम्हारे ९ करहुस्फुरनिजधर्मविचारी स चिवहोहिं कल्यानतुम्हारी १० एहिविधिमनतपरस्परदोऊ आ

येसंषलिषतढिगसोऊ ११ तिनहुंदेषिहगराजकुमास्यो महांको
पिमुषवचनउचास्यो १२ दोहा पावनछत्रीवंसतुवजनम्योभू
पतिगेहू होतविमुषरणतेअधमअपकीरतिजगलेहू १ अतपघा
मसंग्रामतुवसह्योनसठकदराय तपततेलअवजरहुंतोहिमरहुमंददुष
पाय २ चौपई हरषिसुधन्वावचनअलावा करहुविप्रवरजोतोहि
भावा १ मैतोअभैअचलमनमाहीं रणतैंभयोविमुषकछुनाहीं २
ममकदराईवीरताजोई जाननहैनंदनंदनसोई ३ घटघटकीप्रभु
जाननहारे भक्तटेकजगराखनहारे ४ सुनिअसउग्रवचनसुतरा
ई वोलेसंषलिषनारिसकाई ॥ ५ ॥ मंदकरमनिजजेतुवकीना
तासलेहुफलअवहिंनवीना ॥ ६ ॥ असकहिकोपिपुरोहितपापी
राजकुवरकहंकादरथापी ॥ ७ ॥ भन्योसचिवसनअवधारिएहा
डारहद्रुततुवतपतसनेहा ॥ ८ ॥ पकरतसचिवसुधन्वाकाहीं
सकुचविचारकियोकछुनाहीं ॥ ९ ॥ सायुधसंजुतवसन
अभरना डारनचलेतेलतपतरना १० तवकुसोरनृपसुभटसुधर
माअग्रगन्यरणाविक्रमिवरमा ११ परिहरिआनगतीमनमाहीं
लाग्योसुमरणजदुवरकाहीं १२ छंद पस्योजवजवैभवभीरसुरधे
नुदुजधरातवधीरतुवदीनदेवा उतैप्रल्हादअल्हाददैहरनदुषभये
मुनितारनतृयेजननसेवा दीनगजराजग्राहफंदचुतकीनद्रुताविरदनि
जचीनजगसुजसलेवा पतितहगतकतपतहोतद्रोपतिद्रुपतराषिप
तपतितउद्धरनदेवा १ दोहा तसअनाथमैनाथतुवदीनवंधुभग

वान ममाहिय हिगातिविदतसवतुम्हरेकृपानिधान १ जोवेमुषर एतेंरह्योजनकदरायअगार तपततेलतवकरहिंमोहिजारितुरतद्रुत शार २ जोकादरताहृदयममकछुनरहीजदुवीर तौसनेहपावक तपतहोहिसोसीतलनीर ३ चौपई असकहितपततेलमहंजाई कूदिपस्योसुमरतजदुराई १ भरोतेलतहंमनुजप्रमानाभवकतअनल भमिभेदाना २ पस्योतहांजवनृपसुतधीरा पृवस्योमनहुदेवसरि नीरा ३ तपततेलपावकप्रदत्रासा तासुसुषदसीतलजवभासा ४ लोकविलोकिभनतविसमाई एहनृपसुवनभक्तजदुराई ५ संषलि षततवकोपितवानी सुनहुसाचिवअसवदनवषानी ६ बिपुलवेर करचडयोसनेहूरह्योतपततजिसीतलएहू ७ यातेंजस्योनराजकुमा रा धोंजानतकछुमंत्रविचारा ८ सचिवकह्योनहिंतेलजुडाना तु मकहंदुजसूझ्योकछुआना ९ संषलिषततवहृदयरिसाई नारि येरफललीनमंगाई १० तपततेलमहंदीनसिडारा परततुरंतहो तजुगफारा ११ तीव्रवेगसोंलेतउछाला संषलिषतकेलग्योक पाला १२ फूटिगयेजुगलनकरसीसा परेधरनिद्रुतप्राणनषीसा १३ देषिसचिवअचरजएहभारी गयेहंसध्वजसरणसिधारी १४ कह्योव्रितांतसकलजसभयऊ भूपवेगानिजसुतपहंगयऊ ॥ १५ ॥ तुरततेलतेंलियोनिकारी चूमतवदनलेतवलिहारी ॥ १६ ॥ ॥ दोहा ॥ सुभटसुधन्वैभूपतवकंचिनरथवैठारि चल्योसुद्ध चितजुद्धहितकारिअनेकमनुहारि ॥ १ ॥ चौपई ॥ तुवनिरदोष

कहतसुतसाधू छिमहुमोरअनुचितअपराधू १ साधुसुधन्वाधरमप्रवी
ना बोलापितुहिजोरिकरदीना २ तुमरोदोषपिताकछुनाहीं होनहार
व्यापतसबकाहीं ३ यहमोनिसुकसोचनकीजै स्रीजदुबीरचरनाचितदी
जै ४ प्रभुकीगती विदतप्रभुकाहीं बपरोमनुजजनतकछुनाहीं ५
लखिअनंन्यजनकराविस्वासू हरहिंविपातिदुषरमानिवासू ६ असक
हिसुमरिकृष्णघनस्यामा मिल्यो जायानिजसैनलिलामा ७ बीरसुभ
टसबहृगननदेषी मानतभयेप्रमोदवसेषी ८ दोहा भूपहंसध्वजदी
नतबसासनसबनसुनाय बनस्रजसकलप्रवीरउरलेहुललितपहिराय
१ समुहनतहरिनामकलकरहुरटनसबकोय जेहरिनामनाकढहीं
मुषचढहिसमरजानिसोय २ चौपई बहुरिसुधन्वैभन्योनरेसा पकर
हुपारथबाजिसुबेसा १ मानिजनकनिजसासनबीराल्यायोपकरिबा
जिद्रुतधीरा २ रचिव्यूहपदमहंसध्वजराजा ठाढभयोजुतभटनसमा
जा ३ तपदूतनपारथाढिगजाई तुरगहरनसबकथासुनाई ४ हंसकेतु
नृपधरुघोतुरंगा ठाढोसैनसहितमहिरंगा ५ तवप्रद्युम्नपारथततका
ला बोलिसुभटसबकह्योहवाला ६ गह्योहंसध्वजबाजिहमारा ठा
ढसमरदलसाजिअपारा ७॥ बहुरिधनंजयवचनउचारा सुनहुबीर
बरकृष्णकुमारा ॥८॥ समरहेतुअनुमति ममजीकी लागहिं तुमहिं
तातजोईनीकी ॥९॥ तोहमतुमसात्यकिअनिरुद्धा समरभूमिसन्मु
षरिपुक्रुद्धा १०॥ लैसंगसुभटप्रवीरमहाना लरैंसमरकरिकौतु
कनाना ११ दलनायकतुमवकृष्णदुलारे तुमसोंसकलसुरासुरहारे १२

दोहा तुवमोरेप्रीयप्राणअतिसुभटसूरासिरमोर आगलहमरेइछतरण लरनउचितनाहितोर १ हमआगेबेदनिसमरलरवधीरहठधारि तुव परातदलतातताकि लीजोजतनसंभारि २ चौपाई बिहसिप्रद्युम्नत वचनअलाए साचोसुनहुसुभट समुदाए १ यहसमसमरसुरासुरना हीं अहिंप्रसंगआनएहिमाहीं ॥ २ ॥ एहअनंन्यहारिदासनरेसा धर मधीरध्रुव सुभटसुवेसा ॥ ३ ॥ छत्रीविदतवीरबलधामा सवकरकर वतोषसंग्रामा ॥ ४ ॥ जहिदलपूरिरह्योचहुवोरा जैहरि जैजैनंदाकिसोरा ॥ ५ ॥ ऊर्धपुंड मसतिककलटीको उरवनमा ललसतप्रीयजीको ॥ ६ ॥ एहसवाविधि अपनानिरनाहू पैदुरलभजीतनरणताहू ॥ ७ ॥ कहपारथतुव सत्तउचारा एहहमरे नृपप्राणनप्यारा ॥ ८ ॥ छत्रिधर्म लषिदैरणडंका आयोअजै बिजैत ज्ञिसंका ९ असपारथप्रद्युम्नबलधामा करिस म्मति जुगसुभट लिलामा १० समरहेतसुमरतजदुराई दन्यिोसन मुषसैन चलाई ११ तववृषकेतुवीरबलवाना अर्जनसों अस व चनवषाना १२ दोहा लषहुजुद्धममछिनकराहि पुनि विक्रम निज वीर कीजोजस रुचिरुचिर तुवसमरधारि उरधीर १ चौप ई अस कहिकियो संषधुन घोरा छायोहंसकेतुदल सोरा १ चल्योजातसन मुषमनमाषा भटिवृषकेतुसमर अभिलाषा २ दे षिसुधन्वैकह्यो उचारी कोइक सुभट करन रणरारी ३ आवतच ल्यो एकलोसोई तुवइतरहोठाढ सवकोई ४ यासोंमै अवजाय

अकेला करहु धर्म भारतरणमेला ५ असकहि सनमुषचल्यो सि
धारी गहिकोदंडकर कृष्ण उचारी ६ पूछ्योतासुसमरमहि
जाई कवन बीरतुव देहबताई ७ मैवृषध्वजसुत करन कहावहुं
तुमहुं नाम निजजनक सुनावहुं ८ दोहा मैसुतभूपमरालध्वज
जन जदुवर निसकाम कहत सुधन्वानाममम विदत बीरसंग्राम
१ सुनत कथन वृषकेतु असगहि कुदंडधृतिधार द्रुतसंधानतवा
नसतसनमुषकीये प्रहार २ चौ- लषिआवरनसरनजियमाहीं
सुभट सुधन्वाजदुवरकाहीं १ हृदय सुमरि निजबान प्रहास्यो
काटितुरंततास सरडास्यो २ वहुरि हनतमरकोपप्रलीना रथसमे
तसा रथिहतकीना ३ पुनिमास्योसरवृषध्वजकाहीं पस्यो विकल
मुरछित महि माहीं ४ सारथि आननवलरथल्याई चल्योडारि
द्रुतता सुलिबाई ५ निज दलजात जग्यो मुरछाना अधो वदन
भटहृदय लजाना ६ तासपराजयदृगन निहारी आनवीरउरधी
रजधारी ७ अजमंजसलषि सुभटनिकाये सिंहनादगरजितरण
धाये ८ उतैहंसध्वजसैन प्रवीरा आईं भनत जैतिजदुवीरा ९ जु
गदल मिलत भयोअति सोरा मानहुं मिलेजलध दहुं ओरा १०
भाअनंततहंसस्त्रप्रहारा छयोधूरि धरनी अंधियारा ११ भयेसुभट
घायलस मुदाई स्रोणनसरतवह्यो रणजाई १२ समरसुरासुर
सुरसअपास्यो भयोइमतवरवीरजुझास्यो १३ तहांसुधन्वै
रथाहिचलाई अरजनदलवाननझरि लाई १४ मारतसरजययद

वरभाषी कृष्णमिल नमानसत्र भिलाषी १५ रह्योमहार थिअति रथिसोई भयोविरसनमुषनहिकोई १६ दोहा चाहतछिनमहं हननसव पारथदल रणधीर लषिसात्याकि अक्रूरजुत कृतवरमादि प्रवीर १ औरहुंजेंजेसमरधुवसूरवीर वलमान सुभटसुधन्वैपगेवि सलगेप्रहारनवान २ उतैसुधन्वावीरवरकर तधनुषटंकोर हन नलागसरटेरिमुषजयजय नंदकिसोर ३ चौपई सुनतनामजाद वजदुनाहू भयेविगतभारतउतसाहू १ तवसुधन्वधरिधनुरणमाहीं छिनमहंकियोवि रथसवकाहीं २ भलेभुजनवलवानप्रहारे सुभटसकलमूर्छित महिडारे ३ हननधावपुनिपारथकाहीं हाहाम च्योसकलदलमाहीं ४ अयोतवप्रद्युम्नधरिधीरा सलभसरसछाड तधनतीरा ५ छुटयोप्रवाहसरनजनुसरता हृदयधरिवीरनमनुहरता ६ हतेसुभटमहिसमरउदारा कटेमतंगतुरंगअपारा ७ तदपि नडरतमरनतेंवीरा सहतसमरस नमुषसरधीरा ८ जयजयजैजदुवीर उचारी देतप्राणरणधरनिजुझारी ९ भूपहंसव्वजदलकलमाहींसक लसुभटकादरकऊनाहीं १० असानिजसैनहननअवसेषी सुभट सुधन्वानयननदेषी ११ रथारूढमुषकृष्णउचारी चल्योधायसनमु षधनुधारी १२ दोहा उततेंआये कृष्णसुत विदतवीरसिरमोर भयेसुभटसनमुषसमरठाटि जुगलइकठोर १ रह्योगुनतजनजनम तेंवननपरचोपरयास तुवपितुतुवदरसनचरनर हीकरनउरआस २ आजकामपूरणभयो तुवप्रसादरणमाहिं लेहुंसुजसुषपगनपरिक

रितोषितप्रभुकाहिं ३ चौपई नाथरुचि रपूजनरणतोरा करि होंएहुधरमकुलमोरा १ असकहिवीरवानसंधाना मास्योचरनसुवन भगवाना २ कीयोप्रणामसुभटसरद्दारा तवप्रदुम्नअसहृदयविचारा ३ एहदृढदासचरनापितुकेरो यासन लमरकहोकसमेरो ४ असगुनिता सप्रेम वस होई लागेकरनोसथलरणसोई ५ अंतहुंवढतवढत जुगवीराछाडनलगेतीव्रतरतीरा ६ जिमिजिमिभरतरोषरणसूरे तिमितिमिकढतवानविसपूर ७ होतपरस्परघायलवीरा परेसमरमूर्छित गतधीरा ८ कछुकवेरपा छिलसुधिपाई उठ्योसुध न्वासमररिसाई ९ हेरयोवीरनसन मुषकोई हरष्यो हृदय विजत रणहोई १० तवकोपित अतिपारथधायो मारिसरनरथतास दुरा यो ११ सुवनहंसध्वजसमर उदारे हनत सरनसरतास निवारे १२ वहुरि सुधन्वा मनअनुरागा हरषिवचन असभाषनलागा १३ सुनहु सषेजदुनायककेरे आज मनोरथपूरणमेरे १४ दोहा भीषमद्रोणा चरजी चारज कृपा प्रवीर तुमजीते सवकरन लोधा रिधरनिरणधीर १ चौपई तवमेरोप्रभुभारतघोरा स्योधनं जयसार थितोरा १ अव कतता सुमहांभटत्यागी आयोइहांसमरअनुरा गी २ कोटिजतन किना करिरैहों विनुसारथि निज विजनपैहों ३ तातेसारथिवोलि अपाना धरहु मोरसन मुषधनुपाना ४ मैं अनन्य सेवकजदुनाहू सपनेहुं अनाभरो सनकाहू ५ हन्योभनत अससायकघोर सरप्रहारी पारथ सवतोरे ६ पत्रिवान अर्जुन

तवमास्यो हननसलिलसरतास निवास्यो ७ अस्त्रदिव्य पारथ पुनिप्रेरे दिव्य अस्त्रहनितासनवेरे ८ जवनिज विजयहोतन हिंजाना तवलाग्यो सुमरण भगवाना ९ ततक्षण भक्तभीरभै हारी भयेप्रकट सुमरतनगधारी १० लषतसुधन्वा जदुवरका हीं रथतेंउतरि मुदितमनमाहीं ११ त्राहित्राहि मुषवचनउचा री नयोंसीसपदपदममुरारी १२ जैजैजैतिजगतउपजावन हरन त्रासजन सुजसवढावन १३ सदापैज निजभक्तरषय्या मंडिन धरनिदेवदुजगय्या १४ अनघअक्षअन भवअवनासी चिदानं दसदभवन प्रकासी १५ दीनानाथ दीनदुषहारे दीनवंधुदीन नहितकारे १६ जैजैजैति कलपद्रुमरामा पूरहु कसनजननम नकामा १७ जैपारथसारथिजदुनायक भक्त संतसज्जन सुषदा यक १८ आजजनमजनसफल सुहावा धंन्यधंन्यसंसारक हावा १९ पितरदेवसव तोषितभयऊ जोइन हगनदरस प्रभु लयऊ २० दोहा कृष्णदेव दृढदास लषि भक्तसुधन्वकाहिं गह्यो वागपारथ असुनकरन कंजनिजमाहिं १ करिप्रणाम उतरथ चढ्यो सुवनहं सध्वजराय लग्योकरन भारतसमर वीरधीरधरि काय २ चोपई भासंग्रामभयावनभारी सुरनवंन्य नभगिरा उचारी १ तववोल्यो पारथ प्रणरोपो जोमैतीनवान हनिको पी २ काटहुंसीसतोर अवनाहीं वहुरिनधरहुं धनुषकरमाहीं ३ पितरहनतअघलागहिंमोहीं जोनहिंहतहुं आजरणतोहीं ४ त

असउत्रसधन्वैदीना जोनकटहुंतुवसायकतीना ५ तोहरिविमुषपा
पजगजोई मोहिलागहिंविनुसंसयसोई ६ होहिंअजसजगजुगजु
गमेरो जोनकरहुंवारनसरतेरो ७ तवअर्जुनसायकइकमारयो हनत
तासरतुरतनिवारयो ८ तज्योधनंजयदूसरवाना सोहुंकटयोनृप
सुवनसुजाना ९ विक्रमदेखिवीरवरकेरा करतसुजस सुरगगनघने
रा १० जवपारथती सरसरलीनों तवजदुनाथभनन असकीनों ११
सषादासदोऊप्रीयमेरे कछुनकहुंतुवअनुचितहेरे १२ दोहा छाड्यो
छिप्रनिशाचतवइंद्रसुनरणधीर सुभट सुधन्वै सोऊसरहृदयसुमरिज
दुवीर १ काटिदियोनि जहनतसरपै आधोतहिजाय लग्योसीसमेद
निगिरयोप रयोअचेतमुर्छाय २ चौपाई तासतेजदेषतसमुदाई
गयोतुरतप्रभुवदनसमाई १ उठिकबंधताकररणमाहीं पांडवभटन
हनतभ्योताहीं २ सुतकरमरनहंसध्वजदेषी विलपतकरतरुदनअ
वसेषी ३ हाहासुवनप्राणप्रीयमेरो सहहुंवियोगदुसहकसतेरो ४
धर्मधुरंदरधीरउदारा आजताततुवसमर जुझारा ५ वडेमहानवीर
वलवंता कीनेतुमहंसमरसुतहंता ६ मोरेजियअचरजएइभारी
पारथसरनाहिंसक्योसहारी ७ तातदेषिअसमरनतुम्हारा भयोसूनद
लआजहमारा ८ कहिभरोसधीरजअवकाहा तुवअवलंववडोसुत
राहा ॥ ९ ॥ सुनतविलापजनकपछताना सुरथनामभूपति सु
तआना ॥ १० ॥ जुगकरजोरिभननअसलागा ताातहमार
वीरवडभागा ॥ ११ ॥ जहिहारिदाससमरसरलागे हरिसन

मुखनिजप्राणतयागे ॥ १२ ॥ सोकिमिजनकजोगजगसोकू
विजयकीनजहिलोकप्रलोकू १३ एहिहितजगजनमतिसुतमाता
होहिसूरसुभसुजसप्रदाता १४ दोहा कीजैजनिकछुसोचपितुअवे
जियततुवदास देषियेनिजनयननवलमेरोसमरविलास १ चौ.पारथ
जुतप्रद्युम्नबलधामै करिहोंसमरतोषघनस्यामै १ असकहिसत्रधा
रिरणधीरादैदुंदभिरथचड्योप्रबीरा २ चल्योसुरथरणअभयसिधारी
जैजैजैजदुवीरउचारी३ आवतदेषितासु भगवाना पारथसनअस
वचनबषाना ४ महारथीअतिरथीजगगावा सुरथनामरणमेदनि
धावा ५ तुवजोईहन्योसमरएहिवीरा आवामानितासउरपीरा ६
अवनउचितएहिसनमुखतोरा सुरथअनन्यदासदृढमोरा ७ या
कोविजयकठिनसंसारा महांवीरध्रुवधीरउदारा८ दो.असकहिवहु
रिप्रद्युम्नकहंवोलिकह्योजदुवीर जाहुसुरथसनलरहुदृढतधारिसमरउर
धीर १ चौपई वधहुकिदेहुपराजयतासातवप्रद्युम्नअसवचनप्रका
सा १ नाथसुरथसेवकदृढतेरो तासनविजयअगमभवमेरो २ पैक्र
पालतुवसासनपाई छत्रिधर्मवसकरहुंलराई ३ असकहिसन
मुषसुरथप्रवीरा चल्योलेतभटानिकरमधीरा ४ तहिआवतप्रद्युम्नकहं
देखी नयोचरनसिरनंम्रवसेषी ॥ ५ ॥ भन्योवहुरिसुननाथकसोरा
रणवांकरोवीरासिरमोरा ॥ ६ ॥ मोहिजीतनसमरथरणमाहीं
जीततरह्योसुरासुरकाहीं ॥ ७ ॥ दीनदयालतुवसरकरलागे
जोमैप्राणसमरमहित्यागे ॥ ८ ॥ तोमैसत्यभनहुंप्रभुतोही हो

हिंनकछुअपजसजगमोही ९ पैइकछपासिंधुपछतावा रहिहेंहृदय मोरएहछावा १० पारथसषास्यामघनकेरा ग्रोनसमरइननयननहेरा ११देहुवतायभटनकुलकेतू जनकतोरजहंसषासमेतू १२ दो-नव हरिहुसुतकहलालितछविकविध्वजफहरतजाहिं सषासहितजदुवंस मणिसुरथविराजततााहिं १ चौपई जायकरहुदरसनजदुराई लेहुल लितफलवांछितपाई १ सुरथसुनतअसजानउडायो दीनद्यालक रसनमुषआयो २ कियोप्रणामनअसिरनाई वहुरिवदनअसगिरा अलाई ३ आजधंन्यजनजनमसुहावा जोभरिहगनदरसप्रभुपावा ४ मुनिजोगिनदुरलभजगजोई मोरेआजसुलभभ्योसोई ५अवकु रभयोमनोरथमेरो कारिहुनाथपूजनरणतेरो ६ असकहिविसकवा नवहुछाडे चलेव्यालमनफुंकरतगाढे ७ तवभाष्योप्रभुपारथकाहीं होहोसजगवीररणमाहीं ८ सनमुषसावधानध्रुवहोई करहजुद्धजग कराहिंनकोई ९ एहरणधीरधरमधुरसूरा जहिसरहनतगगनपथपूरा ॥ १० ॥ तववोल्योअर्जनकरजोरे प्रभुप्रसादकछुअगमनमोरे ॥ ११ ॥ असकहिजुगलवीरवलधामा लागेकरनक्रूरसंग्रामा ॥ १२ ॥ हारजितकछुपरतनचीनो महांजुद्धजुगलनरणकी नो ॥ १३ ॥ दोहा ॥ सुरथगहितसरकरननिज करि प्रणव घनवषान मोरवानकरसुनहुअवतुवप्रभुसपेप्रमाण १ जोकहु सरहनतोहिजनहास्तिनपुरपहुचाऊं कीपतालदेसनदिसनकहोकि गगनउड़ाऊं २ चौपई तवअर्जनसनकहजदुराई सुरथसत्य

प्रणम्यानभाई १ जोअवनिजकल्यानचितेहौ सोएहिपृथमविर
थकरिदेहौ २ तवपारथपदसुमारमुरारी कियोविरथद्रुतवानप्रहारो
री ३ सुरथतुरतदूसरस्थलीना सोऊहननपारथरणकीना ४ तासव
हुरितीसररथधारा दलनकीनसोऊपांडुकुमारा ५ असुप्रकारस
तासिंधनतासा कीयेसमरपारथभटनासा ६ तवकोपितभाटसुर
थसुभज्जन कट्योधनुषगांडीवअरज्जन ७ जवजवहनतवानमति
धीराभनतजैतिजैजैजदुवीरा ८ तवपारथदूसरधनुधारी सुमरिच
रनजलजातमुरारी ९ मास्योवानतानलगकरना सुरथवाहुडास्यो
कटिधरना १० तवहुंचल्योसनमुषरणधाई भुजवहीनसुमरतजदु
राई ११ तीनवानपुनिअर्जुनमारे भुजजुगचरनतासकटिडारे
१२ दोहा यदपिसुरथस्योरुंडवततदपिनरुक्योप्रवीर कट्योमुंड
तहिहनतसरतवपारथरणधीर १ चौपई लग्योमुंडसोऊअर्जुनछा
तीगिरचोघुरमिमुरछितरिपुघाती १ सुरथसीसहरिहृदयउमंगा पर
स्योनिजपावनपदसंगा २ मुनितृयतरनसोचरनप्रभाहू पार्षदरूप
लयोसुभताहू ३ पुनिजगायपारथप्रभुलीन्यो वहुरिसमर्णसकुनपति
कीन्यो ४ जवआयेखगनाथप्रवीना सुरथसीसतांकेप्रभुदीना ५
तासप्रयागराजद्रुतजाई डास्योसोसभक्तजदुराई ६ सोधास्योसंकर
निजमाला जानिप्रवीरभक्तजदुपाला ७ दोहा सुरथसुधन्वासरससुभ
सूरवीरचैलोय जनअनन्यजदुवंसमणिहोहिंनदूसरकोय १ करि
सनमुषघनस्यामतनरणरुचिरुचिरहुलास हरिदासनहरिकृपातेली

न्योहरिपुरवास २ चौपई तवहतसुतनहंसध्वजदेषी भयोलोकरत दुषितवसेषी ॥ १ ॥ पैअवलंवजानिजियएहू चल्योसरनप्रभु दीनसनेहू ॥ २ ॥ उरअभिलाखलाखअसठाना करहुंजायदरस नभगवाना ॥ ३ ॥ वजतनिसानभूपजवआयो कृपानकेत मरमतवपायो ४ जानिदासनिजभक्तसहाये भुजपसारिआगल द्रुतधाये ५ नृपलषिप्रभुहिंकृपाजुतआयो भयोहरषरतसोकविहा यो ६ कीयेप्रणामदंडवतधरनी जयजयजगजदुपतिमुषवरनी ७ प्रेमविवसतवदीनदयाला लीयेलगायहियेमहिपाला ८ दोहा व हुरिभन्योप्रभुवदनअससुनहुधर्मध्वजराय धंन्यधंन्यतुवधंन्यजगजु तसमाजसमुदाय १ चौपई तुवसुतसहसात्रिभुवनमाहींमोरअनंन्य दासकोऊनाहीं १ करहुनपुत्रसोकगुनग्रामा निवसतसोविकुंठम म धामा २ तवकरजोरिभन्योनरराई सुतपितुमातभ्रातसमुदाई ३ दीनानाथतुमहुंजगमेरे सपनेहुं सोकनआवतनेरे ४ अवकीजिय पावनजनगेहू धारिचरननिजदीनसनेहू ५ प्रेमाकुलअसविनयउचा री गिर्योधरनिनृपसुरतिविसारी ६ तवकृपालकलकरनउठाई लीये भूपनिजहियेजुडाई ७ अनपायनिनिजभक्तिरसाला नृपहिंदीनप्रभु दीनदयाला ८ पुनिपारथप्रद्युम्नसनल्याई कृपासिंधुनृपभेटकराई ९ औरहुंमिलेसकलहरिदासा हृदयहंसध्वजमोदप्रकासा १० सवक रवारवारसिरनाई संदिरपुरकहंचल्योलिवाई ११ भवनल्याय जुतभक्तिअभेवा कीन्योविधिजुतपूजनदेवा १२ पूजिसषासुतदासत

हांहीं तोषितकियो भूपनतकाहीं १३ पुनिकंचिनआभरनसुहाये मणिगणादिव्यवसनमनभाये ॥ १४ ॥ दोहा ॥ कीने अरपणकृष्णकहं नृपमषवाजिसमेत भक्तिप्रीतिलाषिभक्तअस सहरषेकृपानकेत ॥ १ ॥ चौपई ॥ परममोदवसदीनसनेहू नृप कहंदीनदानवरएहू २ सुरदुर्लभजगभोगनभोगी लेहुअंतगति दुर्लभजोगी ३ ममपुरवसतदासममजाहां करहुनिवासभूप निजताहां ४ तवकरजोरिचरनासिरनाई विनयभूपअसवदनअ लाई ॥ ५ ॥ मोहिताउथोतुवदीनसनेहू पैअभिलाषनाथ जियएहू ॥ ६ ॥ जोलौंजीवहुंजगतउमंगा तौलौरहहु जननतुवसंगा ॥ ७ ॥ एवमसतुभगवानउचारे भक्तप्राणप्रीयतुम हुंहमारे८ पांचदिवसदयानिधिताहां कियेनिवासनगरनृपमाहां ९ पुरजननृपतिसहितपरिवारा कियकृतारथकृपाअगारा १० सवक हंकरिसनाथभगवाना वहुरिभवननिजकीनपयाना ११ असएह चरितजथामतिभावा मैनिजवदनसंतजनगावा १२ दोहा सुरथसु धन्याहंसध्वजभक्तप्रधानसुहाय जहिसुतसषासमेतरणनंदकसोरर झाय १ छत्रिधर्मपूराकियोलियोसुजससंसार दियोवासप्रभुभाक्तवस निज वैकुंठअगार २ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजंवूकाश्मीराद्यने कदेशाधिपतिप्रभुवरश्रीरणवीरसिंहाज्ञतकविमहि सिंहविरचितेभ क्तविनोदग्रंथे भगवद्भक्तिमाहात्म्ये सुरथसुधन्वाचरितंनामसर्गः

अथभक्तिसारचरितम् ॥

दोहा ॥ अवमुकुंपदप्रीति दृढकरनहरनदुखसूल भक्तिमहातम करहु कल कथनसकलसुखमूल १ चारुचक्रभगवंतको विदत विश्वअवतार भक्तिसारमुनिप्रकटभे करनलोकउद्धार २ चौपई सिंधुतीरमहि सुरपुरिकहिहैं भार्गवविप्रएकतहंरहिहैं ॥ १ ॥तहि दुजाविपनजायतपकीनो श्रीमाधवचरननमनलीनो ॥२ देखि देवदेवनपतिजोई परमउग्रतपदुजवरसोई ३ डरपतरूपवंतमन हरनीसुंदरिविप्रविघ्नतपकरनी ४ रचिमायकअद्भुतदोनपठाईमोह निमनहुंतपसढिगआई ५ द्विजाविलोकिताकरअकुलाये छूटयो ध्यानमदनवसधाये ६ असवेष्टतमहिदेवअनंगे रतिविलासकी न्योताहिसंगे ७ गर्भवतीतवभई सुभामा लागीवसनतास दि जधामा ८ असजववीतिगये नवमासा अमषपिंडजनम्योत्रि यतासा ९ दंपतिबिमनभयेलषिताहू सुतउपजतग्रेहमिटचोउ छाहू १० रह्योमहानवेतवनताहीं डारयोजायपिंडतहिमाहीं ११ पुनिमुनिसोऊसहितनिजभामा करतभयोसुरपुरपथगामा १२

दोहा रह्योपिंडताहिविपनमधफुटयोपायकछुकाल प्रकटयोबा लकललितमृदुमूरतितेजाविसाल १ चौपई विपनजंतुहरिकृपाप्र साधूकोनभयोताहिवालकवाधू १ सीतलतरुतररोवतवाला होत भयोकछुवपुषविसाला २ महिसुरपुरमंदिरछविछाये जोनाराय णदेवसुहाये ३ सोअनाथलषिसं जुतलालन रहेकरतकाननसिसु

पालन ४ अवसरएकसूपक्कतवारेंक्तलेनतहिविपनसिधारे ५ आव
ततिनहिंदोषिभगवाना भयेअंन्रहितकृपानिधाना ६ तववालि
कअपनेप्रभुकाहीं हेरनलग्योविकलमनमाहीं ७ पायेजवनवाल
भगवाना तवऊचेसुररोदनठाना ८ सुनतवाल रोदनअसस्रोई आ
यनिकटअचरजवसहोई ९ भनतपरस्परवालनवेलो पस्योविकलक
सविपनअकेलो ॥ १० ॥ वूढोमनुजएकतिनमाहीं ताकेसद
नरह्योसुतनाहीं ११ ॥ सोवालकहप्रीतिसमेतालपायोत्रियपै
मुदितनकेता १२ वोल्योप्रीय वनतेंभगवाना एहंकीन्यो हमरेसुत
दाना ॥ १३ ॥ भामनिचलाहें रुचि संसारा अवनिश्चयवर
वंसहमारा ॥ १४ ॥ दोहा सुनिभामनि पतिमुषवचन सिसुहिं
लेतअनुरागि निजसुतसमकरिनवलनित लालनपालनलागि
॥ १ ॥ चौपई भाजवपंच वरषकरवाला भयेदिवसइकचारि
तरसाला ॥ १ ॥ छुदितवाल मुषरोदनठाना तवएहमरम जठर
पितुजाना ॥ २ ॥ सिसुहिं करायपानपयदीना तहिउच्छिष्टआ
पुपुनिलीना ॥ ३ ॥ करतपानदंपती अघाने भयेतुरंत तरनवि
समाने ॥ ४ ॥ तवभामनि दूसरसुत जायो तास नामकनि कृ
ष्ण धरायो ॥ ५ ॥ जेष्टपुत्रहरिभक्तसुहाये भक्ति सारजगनाम
कहाये ॥ ६ ॥ दहुंनपरस्परप्रेम सुरीती सिसुपनतेंहरिचरन
नप्रीती ॥ ७ ॥ गुरुसमानकनि कृष्ण विचारी करतजजन
सेवन व्रतधारी ॥ ८ ॥ भक्ति सारकहं जदुपतिदाया सास्त्रपुरा
नज्ञान उरछाया ॥ ९ ॥ कनीकृष्ण कहंसकल सिषावा सावि

यिजोगविज्ञान सुहावा ॥ १० ॥ नितसंतोष भूतभवदाया श्री पतिचरननलिनमनलाया ॥ ११ ॥ बैठिइकांत जुगलकलभाई करहिंसुमरणदुगधानिधसाईं ॥ १२ ॥ दोहा करिकरि अनक विचारउर मथिसबसास्त्रपुराण हनतसकलमतमन्योमत परम तत्तभगबान ॥ १ ॥ चौपई नास्तिकवाद कियोसबनासा वैष्ण व मतसिद्धांत प्रकासा ॥ १ ॥ करिकरि सुचिउपदेसन ज्ञाना कियेविमुषसनमुष भगबाना ॥ २ ॥ भयेदेवतिनपर अनुकूला लषिअनन्यनिज भक्त अनूला ॥ ३ ॥ समय एकनिसी अर्धसुहा ये भक्तसुषद भगवन प्रकटाये ॥ ४ ॥ पुंडरीकलोचन अरुन्यारे भुजआजानषलन मदहारे ॥ ५ ॥ तुंडकीरकलनासिकसोहन अधरअरुन छबिबिंबविमोहन ॥ ६ ॥ उरविसालवनमा लसुहाईं भालतिलक चंदन च्छविछाई ॥ ७ ॥ चारुमकरि कृतकुंडिलकरना भृकुटिमयंकबंक मन हरना ॥ ८ ॥ मधुसमाज निदरतकचकारे भक्तिसारकविकृष्णनिहारे ॥ ९ ॥ धंन्यजन्म जीवन निजजानी परेचरन जुगजोरितपानी ॥ १० ॥ लषि अनंन्यजनमत वचकाया दीनद्याल कीनीनिजदाया ॥ ११ ॥ अनपायनिसुचि भक्तसुहाईं तिनहिंदीन प्रमुदित जदुराई ॥ १२ ॥ कीयेसनाथ नाथसंसारा भयेलुतपुनि भक्तउवारा १३ तवतें जुगल भक्तवडभागे अभय धरनितलविचरन लागे १४ पुनिविचार तिनमानसठाना अवकहुं विपुन भजियभग

वाना १५ हृदयगुनतकनिकृष्णसमेता भक्तिसारकियविपननकेता १६ निरजनस्थलपायमतिधीरा लागेभजनजुगलजदुवीरा १७ करहिंविमलवेदांतविचारा समयएकतहंवृषभसवारा १८आयेउमा सहितत्रिपुरारी ध्यानवचित्रभक्तभयहारी १९लसतभालविधुवालन वीनो उज्जलभस्मरमनतनकीनो २० गवरकायकलकांतिनियारे स जेभुजगभूषणमदनारे २१ करत्रिसूलउररुंडनमाला स्रवतसीससुर सरितरिसाला २२ भक्तिसारकहंकाननदेष्यो मानहुंपुंजतेजतपले ष्यो२३ तवकरजोरिउमाअसकाहा एहहरिभक्तनाथकऊराहा २४ मोरेजानिपातवृषकेतू वसतइकांतविपनतपहेतू २५ करहुंनाथच लिनिकटसुहावा एहिंप्रीक्षादरसनमनभावा ॥ २६ ॥ दोहा ॥सै लसुताकरवचनअससुनिमहेसजननेहु चालिआयेद्रुतउमाजुतभक्ति सारसुभगेहु ॥ १ ॥ लषिमूरतितपतेजमयजानिभक्तभगवान व्हैप्रसन्नमुषमांगवरसंकरवचनवषान ॥ २ ॥ चौपई हमरोदरस नविफलनहोई पावैजनवांछितमनजोई १ भक्तप्रधानगुनताजियका हों मोरेकछुनमनोरथराहा २ तवसिवसनकीन्योपरिहासा ॥ जो मोपैंप्रभुक्पाप्रकासा ३ तोवरसूचिछिद्रसममोरे देहुनाथकछुअग मनतोरे ४ लषिपरिहाससंभुभगवाना कीन्योतापरकोपमहाना ॥ ५ ॥ जास्योजथामदनछिनमाहीं तसअवकरहुंभस्मएहिकाहीं ॥ ६ ॥ असगुनितीसरनयनपुरारी खोलिचितयोतनभक्तमुरारी ७॥ तवप्रभावनिजभक्तसुहावा तहासंभुसनमुषप्रकटावा ॥ ८ ॥ दो

हा जेष्टअंगुरिपदवामतें कढीज्वालविकाल उमैतेजमिलिनभछयो प्रलैकालकेहाल ॥ १ ॥ चौपई जानिपश्योत्रैलोकजराना तुरत समनाहितज्वालमहाना ॥ १ ॥ प्रलैमेघप्रकटयोत्रिपुरारी सिंधुरसुं डडंडवतधारी ॥ २ ॥ लग्योवारिवरषनक्षतआई अप्रमाणकछुवरनिनजाई ॥ ३ ॥ पैनहिंसांतिमयोकछुज्वालाछयोतेजलगगनविशाला ॥ ४ ॥ भक्तिसारहरिभक्तमहाना रह्योठाडतहंअचलअमाना ॥ ५ ॥ देषिप्रभावअनंतअपारा साधुसाधुसिवबदनउचारा ॥ ६ ॥ विविधिप्रसंसकतासुउचारी कीन्योंमुदितप्रदक्षणचारी ॥ ७ ॥ लषिअनंन्यजनकृष्णअमाना कीन्योप्रणतिविभुभगवाना ८ दोहा भक्तिसारबहुवरराटिशिषिरसुजनजुततास करिप्रणामदंपतिवहुरिकियेगवनकेलास १ चौपई भक्तिसारकछकाल ताहूवसतरहेसुमरतजदुनाहू ॥ १ वासरएकभक्तव्रतधारू सियतरहेनिजगूदरिचारू ॥ २ ॥ तेजपुंजइकसिद्धिनराई चढयोसिंहनभमारगजाई ॥ ३ ॥ जबआयोतिहिथलवडभागे रुक्योसिंहतवचलतनआगे ॥ ४ ॥ कीन्योजद्यपिजतनवसेषा तद्यपिचलतसिंहनहिलेषा ॥ ५ ॥ तवचहुंकितचितवनमहिलागा देष्योभक्तिसारवडभागा ॥ ६ ॥ वैठेसियतगूदरीचारू मनहुंतेजतपमूरतिधारू ७ ॥ तहिंपैआयभीतमनमानी कियोप्रणामजोरिजुगपानी ॥ ८ ॥ दोहा लषिजीरणगूदरिमन्योसिद्धजुगतकरदोई तुवअनंन्यासियपिय सुजनएहनउाचेतमुनतोहि ॥ १ ॥ चौपई तजिगूदरितुवलेह

प्रवीना मोरवसनकलदिव्यनवीना १ फटेचीरमुनितुमहिंनभाये तुवअनंन्यसियपियजनगाये २ भक्तिसारकहवदनउचारी चितहुं मोहितकनैनउचारी ३ तवतहिचित्योभलहिमुनिकाया कंचिनमणिनजटितछाविपाया ४ वहुरिसिद्धमुकताहलमाला मुनिहिंदीनलषिललितविसाला ५ भक्तिसारमुनिमुषमुसक्याई तुलसिमालपावनमनभाई ६ अमलअनुपमइमतछाविवारीतासुदीननिजरुचिरउतारी ॥ ७ ॥ सिद्धदेषिमालामनहरनी रह्योमोनकछुसक्योनवरनी ॥ ८ ॥ दोहा चिंतामणिकीमालतेंदसगुणप्रभासुहाई भयोसिद्धविसमयविवसमुनिप्रभावअसपाई १ चौपई विविधप्रसंसिमनहिंमनमाहीं दीयेप्रदक्षणमुनिवरकाहीं १ आयोसिद्धअनुजपुनितांहां राजेभक्तिसारमुनिजाहां २ नमतसीसपदसिद्धसुहावा मुनिप्रभावकहिसकलसुनावा ३ अनुजसुनतमानसविसमायो मुनिप्रधानसनवचनअलायो ४ देखहुंपरमरंकनततोहिंतातिउपजिदयामुनिमोहि ॥ ५ ॥ ॥ देहुंदिव्यएहपारसतोहू होवपरासिजाहिकंचिनलोहू६ असकहितहिपारसजवदीना विहसिदेषिमुनिनाथप्रवीना ॥ ७ सिद्धअनुजसनकह्योवुझाई मैहुंदेवपारसतोहिभाई ॥ ८ तेरोलोहकनकप्रकटानै मेराकरहिंपुरटपाषानै ९ सिद्धअनुजलषिअचरजभारी करिप्रणामनिजचल्योसिधारी १० जुगलसिद्धइकपरवतजाई मुनिकृतपारसदियोछुवाई ११ भयोसोसैलपुरटकरसास्यो हराषिसिद्धनिजभुवनसिधास्यो १२ इतमुनिभक्तिसार

जुगवीरा उदासीनतजिरुचिरकुटीरा ॥ १३ ॥ अचलसमाधि हेतुगतमोहा पूवसेजाय अगमागिरिगोहा ॥ १४ ॥ दोहा ॥ तहांगवनकाननकरत आयतपसजुगस्वामि औसरभूतसनाम रतहरिसुमर्णानिसकामि १ चौपाई गुहामद्भुतपतेजनिधाना जान्योतिनहुंसंतभगवाना १ दहुंनप्रवेसकीनजवताहां देष्योभक्तिसार मुनिनाहां २ पूछ्योकुसलनंम्रसिरनाया मुनिकहकुसलकृष्णकीदाया ३ तहंकछुकालजुगलनिवसानो अनतदेसपुनिकियेपयानो ४ वहुरिकरतथलअटिनसुहावन महतस्वामिकीन्योतहंआवन ॥५॥ भक्तिसारकरदरसनपाये महतस्वामिमानसहरषाये ६ मुनिनायकस तसंगतभाती हरिगुनसुजससुनतदिनराती ७ कछुककालजवगयो विताई तवकनिकृष्णसहितमुनिराई ८ दोहा सिंधुतीरकलनगरइ कविदतमयूरानाम आयमुदिततहंमहतजुतजुगलभ्रातअभिराम १ चौपाई तहंतरुवरकलकेसरिनामा तहितरउभयभक्तनिसकामा १ वैठेसूनसमाधिलगाये महतभक्तकहुं अनतासिधाये २ भक्तिसारतहं वसेसुखारी रामचरनपंकजउरधारी ३ पैनरस्योचंदनतिनपासाता ससोचकछुहृदयप्रकासा ४ तवरघुपतिपदपंकजकाहीं लगेसुमर्ण भक्तमनमाहीं ५ रैननतैननींदवसभयऊ भोरहिंउठिमज्जनहितगयऊ ६ करतसोचमानसमगजाता आजसज्जनकसचंदनगाता ॥७॥ जनजियकीभगवनगुनिलीनो चंदनकुंडप्रकटतहंकीनो ८ तहमज्जनकरिभक्तप्रवीना लैचंदनकलअंगनदीना ९ हरिहरिरटतवहुरि

मनमाहीं कियोगवनकांचीपुरिकाहीं १० सोचंदनकलकुंडसुहावा अवलोविदतदेसताहिगावा ११ कांचीआयभक्तव्रतधारी तहंगौरव गिरिगोहनिहारी १२ धेरसमाधिअचलसविधाना वैठेध्यानलीनभगवाना १३ कनीकृष्णाभिक्षाटनकरिकै कराहिंतोषमुदमानसभरिकै १४ दोहा लष्योनपुरवासिनतिन्हैवसतगोहगिरिकौन हरिदासीवृद्धाश्रीयेयेकदिवसवनतौन १ आईइंधनलेनहितदरीवसत लषिसंत प्रेममलीहियहुलसिजियगुनतभक्तिभगवंत चौ० मुनिगोह द्वारमार्जनकीने वहुरिकरनकललैपनदीने १ करिपूजनसादिरमन लाई पुनिआईनिजभवनपराई २ अस प्रकारभामनिवतठाना मुनि नायककछुमरमनजाना ३ करतकरत ताकर सिवकाई गयोकछुकजवकालविताई ॥ ४ ॥ तवमुनीसइकदिवस विचारा गोहाअजरएहकवनहमारा ॥ ५ ॥ करतनित्यकल लेपनआई असगुनि भक्तिसारमुनिराई ॥ ६ ॥ एकदिवसकल कालप्रभाता दिसैंगगनउडगन कछुराता ॥ ७ ॥ दरीद्वारदेष्योजवआई लेपनकरत वृद्धत्रियपाई ॥ ८ ॥ तासुदेषिमुनि मनहरषाये कृपासहितमुषवचन अलाये ॥ ९ वृद्धेभक्तिभाव मनलीना तुवहमार सेवनवहुकीना ॥ १० ॥ अववरमांगजव नरुचितोरे नहिनअदेवआज कछुमोरे ॥ ११ ॥ वृद्धत्रियेकर जोरि अलाया जोवरदेहु नाथकरिदाया ॥ १२ ॥ तोप्रभुमोरज ठरपनछोजै जुवावैसजोवन तनदीजै ॥ १३ ॥ सदाकरहुं सेवन

मैतोरा टरैनदीननाथ प्रणमोरा ॥ १४ ॥ दोहा तवमुनीसद्रुम देवसम द्दगनदृष्टिनिजपाई वृद्धत्रियेतनचित्योजवजुवावैसप्रकटाई ॥ १ ॥ चौपई देवदारसमरूप सुहावा उपज्योतासललित मनभावा ॥ १ ॥ तवतेप्रीतिपूरवकरागी सेवनप्रकट करनमुनि लागी ॥ २ ॥ चंदनसुमनभवनतेंल्याई करतअनंन्य मुनिनासिव काई ॥ ३ ॥ तवकांचीकरभूपतहांहीं रह्योभ्रमतमृग्यानतकाहीं ॥ ४ ॥ तासुदेषि मगजातइकाकी चितवतदृष्टि द्दगननृपथाकी ॥ ५ ॥ वरवसपकरि मदनवसवाहां गवन्योलेनभवननरनाहां ॥ ६ ॥ भन्योतासुनृप संजुतनेहा कवनदीनतोहिजोवनएहा ७ तवभामनि करजोरि उचारा नाथवसतागिरि गोहमझारा ८ ॥ तेजसरूपसंतभगवानातिनदीन्योमोहिजोवनदाना ॥ ९ ॥ तुमहुंभूप चोथापनघेरे तातेमानिवचन प्रभुमेरे ॥ १० ॥ कनीकृष्ण सेवकमुनिराई तासुनिकटनरनाथ वुलाई ॥ ११ ॥ नंम्रतवि नयवदन वहुकीजै मंजुल नवलवेस निजलीजै ॥ १२ ॥ सुनतभूपद्रुतदूतपठाने कनीकृष्ण निजनिकटवुलाने ॥ १३ ॥ भाष्योवदन संकगतराई तुह्मरीकीरतिसंसातिछाई ॥ १४ ॥ दोहा जोतुह्मरेगुरुवृद्धत्रिये जुवावैसजुतकीन करहुंजुवाजुतमोहु कहंअवतुवसतप्रवीन ॥ १ ॥ चौ- जोनतुमहुंसमरथएहिमाहीं तोनिजवेगवोलिगुरुम्राहीं ॥ १ ॥ जोवनरनमोहिदेहुदिवाई जव वपुमोरतरणहूवेजाई ॥ २ ॥ तवमुनीस तुवमोरसुहायन करहु

अनुपमसुजसमुनगायन ॥ ३ ॥ सुनिसासननरजसमुनगाना
कनोकृष्णबहुअनाहितवाना ४ भन्योअरनद्दगकोपितवागी
सुनहुगाथनरनाथ अभागो ॥ ५ ॥ हमहंनआनदेवजनगावा
भूपमनुजजगकवनकहावा ॥ ६ ॥ गुन्योएकसियादियानिरधारा
सुंदरसुजसजोगसंसारा ॥ ७ ॥ श्रुतिपुराणजसगावतजाना अज
रअमरअनभवअवनासा ॥ ८ ॥ तासुसुजसहमगावनहारे
मनुजभूरजगकवननकारे ॥ ९ ॥ तातेसुनहुभूपमतिहारा मोरदे
वगुरुतोरअगारा ॥ १० परिहरिनिजआश्रमगिरिगोहा आव
हिंकवहुंनाविगतविमोहा ११ सुनतभूपकनिकृष्णवषाना अरनन
यनकरिकोपमहाना १२ कटुकठोरसुषवचनउचारा सठहमार
सासनसूईकारा १३ कीननातुमहुंदरपवसहोई जान्योअधमकु
टिलमतिदोई १४ दोहा जोनकरहतुवमंदममसुजसवदन।निजगा
न तोमेरेअवदेसतें करहुसुपचद्दुरप्यान १ चोपई अनहितकथन
सुनतअसराई उठिगवनेकनिकृष्णरिसाई १ भक्तिसारढिगजा
यतुरंता कियोकथनसवभूपाविततंता २ नाथतृप्तिमूरषअगरासू अ
वनउचितएहिदेसनिवासू ३ भाष्योभक्तिसारसुनिवाता धरहुतन
कधीरजजियताता ४ मैहुंनगिरतुवसंगासिधावहुं तुमकहंकौतक
नवलदिषावहुं ५ भनतवदनअसभक्तप्रधाना चलेहरषिसुमरतभ
गवाना ६ कांचीनगरिअभयवरदाये वरदराजभगवानसुहाये ७
जिनकरसुजसनुमंगलदाता गावतसकलविश्वविख्याता ८ आये

भक्तिसारतेहिभवना भनतजैतिजेजैश्रीरमना ९ नंम्रडंडवताके
येजुहागजुगतपानिअसविनयउचारा १० नाथभूपपुरजवनतुम्हा
रा महकुहंदीन्योदेतनिकारा ११ तातेविदाहोनहितस्वामी तुम
पैंआयभक्तअनुगामी १२ दोहा भक्तिसारअतनोभनतनाथहिंमा
थनिवाय रटतजेतिपाछिलपगननिकसिचलेअतुराय १ चौपई
भक्तिसारजवचलेसिधारी वरदराजतवभयेदुषारी १ सहिनसके
निजभक्तविछोरा कांपिउठयोमंदिरचहुंओरा २ रंगिचलीमूरति
भगवाना चलेजातजितभक्तमहाना ३ तितपाछिलमूरतिप्रभुसोंई
लागीजाहिंभक्तिवसहोई ४ लोकअलोकिकचरितनिहारी धाय
धामधनकामविसारी ५ पुरमहंमच्योकोलाहलभारा चलेअनत
कहुंविस्वअधारा ॥ ६ असभगवानगवननिजकरना नृपपैं
जायपूजकनवरना ७ वरदराजमहराजहमारे चलेजातकहुं
अनतसिधारे ॥ ८ ॥ सुनतभूपरानीजुतधायो धीर सरीर
चीर विसरायो ॥ ९ ॥ जुवा वृद्ध बालक नर नारी धाये
हाहा कारपुकारी ॥ १० ॥ मुनि पाछिल लषिभगवन जाते
दौरिलोगआगलअतुराते ११ भक्तिसारकरभक्तिनिहारी गिरेच
रनमुषआहिउचारी १२ दोहा हाथजोरिविनवैंसकलवारवारसि
रनाय अवनअनतकीजेगवनतुवकृपालमुनिराय १ नतरनाथतुवग
वनतरेंमारमसंभगवान कियेगवननिजभवनताजिहमहुंकवनकल्या
न २ चोपई एहअधारहमरेमुनिराई देषिचलनतुवचलेसिधाई १

नाथसकलजीवनहितलेषी इहांवसहुकरिकृपावसेषी ॥ २ ॥भक्ति सारसुनिगिराअलाई हमनाहिनकछुजानतभाई ३ इजोहमरे कनिकृष्णपरावे तोपाछेहमहुंफिरिआवें ४ सुनतमुनीतवदनअ सवानी विलषतभूपसहितनिजरानी ५ जायकृष्णकानिचरननलागे वारंवाराविनयरसपागे ६ हमचूकेप्रभुसंतउदारा छिमहुनाथअपरा धहमारा ७ निवसतसदासंतउरदाया चूकनिवर्णनामप्रभुगाया ८ तवकानिकृष्णदुषितजियजानी प्रजासकलसंजुतनृपरानी ९ लौटि चलेकांचिपुरिकाही तहिपाछिलनरनारिसवाहीं १० चलिआव तदेषहगताहां लौटिभक्तिसारमुनिनाहां ११ तिनपाछेपुरनरसुषदा ना लौटेवरदराजभगवाना १२ दोहा मुनिननाथतवहारिभवनआ येहरषसमेत करगहिवैठारेतहांगिरधरकृपानकेत १ चौपई सक ललोकसंजुतनृपरानी साधुसाधुभाषतमुषवानी १ धन्यधन्यएह भक्तनिमामी जासभक्तिवसत्रिभुवनस्वामी २ वरदराजभगवानसुहा ये तजितभवनपाछिललगिधाये ३ वात्सलभक्तसत्यजगभाई सुम रतजननसदासुखदाई ४ असप्रकारजनजुतप्रभुकेरा गायगायमुषसु जसघनेरा ५ महिपतिनगरलोगसमुदाई भयेसिष्यसेवकमुनिराई ६ तवमुनीसकछुकालतहांहीं वसेनगरकांचीकलमाहीं ७ विमलद्रव डभाषासुभपावन कियोप्रवंधललितमनभावन ८ भनतसुजसगुनभग वतगाढे तहांसप्तसतसंवतकाढे ९ वहुरिकृष्णसुमरतमनमाहीं गव नेचोलिमहेश्वरकाहीं ॥ १० ॥ पुनिकलकुंभकोनकहंआये

रटतनरंत्रभक्तसुषदाये ॥ ११ ॥ कुंभकोनकलनगिरमझारा रह्यो एकसुभदेवअगारा ॥ १२ ॥ दोहा ॥ तांहमूरतिमनहरन मृदुभगवनसारंगपानि भक्तिसारतहिभवनभे करतगवनमुदमानि १ चौपई जायचरनकलकमलमुरारी नायसीसमुनिविनय उचारी ॥ १ ॥ प्रभुउपज्योममहृदयसंदेहू करहुनिवर्णकृपाकरिएहू ॥ २ भुजगसेजप्रभुसैनतुम्हारा कवनहेतुकरुणायअगारा ३ धोंधरिव पुषकोलजननेहा कियोउद्धरणधरनिस्रमएहा ४ कैडंडकवन धायमहाना सोयेथाकिविपुलसुषमाना ५ सिंधुमथनस्रमधोंकछुपाये दीननाथसुषसैनारिझाये ॥ ६ ॥ सुनतभक्तनिजगिरासुहाई हरिमूरतिकहसीसउठाई ७ भक्तहेतहमगेअवतारा दौरतरहतसदासंसारा ॥ ८ ॥ करतसैनइतसोस्रमपाई नहिंकछुआनहेतमुनिराई ॥ ९ ॥ असप्रकारनिजवदनवषानी भयेमोनप्रभुसारंगवानी १० अवलोंलसिमूर्तिभगवाना उठ्योअहिंकरएकप्रमाना॥ ११ ॥ भक्तहेतप्रकटतनगधारी करतकलितकौतकमनहारी १२ दोहा चौदहशतसंवततहांनिवसेभक्तप्रधान रहे रटितगुनगनविमलश्रीपतिकृपानिधान १ चौपई तहंतेंवहुरिगवन मुनिकीना देष्योमारगचारितनवीना १ वैदकदुजनवृंदअभिरामा पठतेरहेवेदइकठामा २ जानिसूद्रजनुमुनिवरकाहीं भयेमोनदुजपठतसवाहीं ३ भक्तिसारहरिभक्तमहाना तिनकरदुजनकीनअपमाना ४ तहितेंविप्रसकलवौराने वोलिनसकहिपरमदुषसाने ५

निजअपराधजानिदुजधाये भक्तिसारचरनन सिरनाये ६ तबमुनी सदायावसताहीं फ.स्यो धानलेतकरमाहीं ७ हरिप्रसादततकाल मिटाई दुजनवृंदकरवाऊ.ताई ८ तहां ह्योइकनगरमहाना विदततिहपुरनामकहाना ९ तामधभगवनभवनसुहावा जात्रिकरनदरसनवहुआवा १० भवनद्वारठाढेनरनारी करतरहेपूजन सुपुजारी ११ दोहा भीरभारवहुद्वारतेंदेषिनपरेमुगार भक्तिसारसुविचारउरआयेदूसरद्वार १ देषनलागेतहांतेंप्रभुकहंभक्तप्रधान फिरिगईतौनहिओरतवमूढ़मूरतिभगवान २ चौपाई लषिपूजिकजात्रिकसमुदाये भ्रामकवृतिमानसाविसमाये १ विकलनारिनरधीरजत्यागे वहिरगनिकतिजवदेषनलागे २ ठाढभक्तिसारमुनिद्वारे जन अनन्य भगवननिरधारे ३ परेचरनसगरेअकुलाई ल्यायभवनकारिविपुलवडाई ४ प्रभुप्रभावजान्योहमनीके अहुअनन्यभक्तासियपीके ५ अव पूजनकछुनाथहमारा दीनचालकीजेसूईकारा ६ रह्योहोततहंजग्यमहाना जुरयोसमाजदुजनवहुनाना ७ तहांऊचेआसनसुवडाई वैठारेमुनिनागकल्याई ८ कियोपृथमसुचिसेवकरीती भक्तिसारपूजनजुतप्रीती ९ देषिअग्रपूजनमुनिग्यानी जेअभक्तपंडितअभिमानी १० भक्तिरीतिकछुजानतनाहीं निपटकुमतिरतदरपमहाहीं ११ सोतिनकहंतठनिंदनलागे जेमुनीसपूजनअनुरागे १२ दोहा सुनिनिंदनमुनिनाथतिनसभामद्धमुसक्यःई भन्योवचनानिजवदनअसहदयसुमारिजदुराई १ जोसतहोवसिविप्रजनहृदयमोरावेरुदा

स तोप्रकटैंइतहरनदुषदीननरमानिवास २ चौपाई असजवभ
क्तिसारतपधारी सभामद्धप्रणकह्योउचारी १ तवतिनकेउरश्रीप
तिगमा प्रकटेचतुरवाहुघनस्यामा २ निजनिजहृदयविप्रसमुदाई
देषिरूपअसत्रिभुवनराई ३ परिहरिमानदौरिद्रुतहाथा पकस्योजा
यचरनमुनिनाथा ४ हमअजानजान्योनाहिंकाहू तवप्रभावमहिमा
अवगाहू ५ मुनिननाथअपराधहमारा क्षिमहुक्षमहुलषिकुमातिगु
वारा ६ सदाहोतदायामयसाधू परअपराधपारपरवाधू ७ भक्तिसार
भाष्योमुसक्याई तुवअपराधनाहिंनकछुभाई ८ दोहा असप्रकार
तपपुंजमुनिभाक्तिसारजगमाहिं करतअनेकनचरतकलकरतसफल
सवकाहिं १ रंगनगरनिवसतभयेसुमरिचरनजदुनाथ असमुनिवर
सुषसुजसप्रदमैवरन्योकछुगाथ २ इतिश्रीभक्तिसारचरित प्रकरणम्

दोहा कथासुधारसपावनीसुनहुश्रवणदेसंत हरनभूरिभ्रमभीतभ वकरमसरनश्रीकंत १ जासु सुनत हरिविमुख जन होहिं सुखनसुषआय सोअनुपमसुषसुजसप्रद करहुप्रकटकछुगाय ॥ २ ॥ चौपई अग्रचरितरामानुजकेरो जामेंरुचिरराचिरुचिमेरी ॥ १ ॥ औरहुंविदतअचारजजेते करहुंवदनगायनसवतेते ॥ २ ॥ सुधानि धुतिनचरितअथाहा कोसामर्थकथनकरराहा ॥ ३ ॥ इहांकछु कछुनातिअनुसारर करहुंकथनसंक्षेपरकारा ॥ ४ ॥ सेषसेजभ गवतइककाला राजेनिजविकुंठकलआला ॥ ५ ॥ चारुचतुर्भु जस्यामलगाता निंदरतनलननीलअवदाता ॥ ६ ॥ उरविसाल वनमालविराज्यो नयननवलनीरजछविलाज्यो ॥ ७ ॥ मौलि कीटकलमणिगणमंडित रविदुतिजोतिकोटिमनुषंडित ॥ ८ ॥ करनमकरसकुंडिलचारू चनुचक्रादिचिह्नमनहारू ॥ ९ ॥ भृ कुटिलोलकलवंकविहारी वसनपीतलावन्यतन्यारी ॥ १० ॥ लाजितमदनकोटिछविअंगा दीननाथभवभीतविभंगा ॥ ११ ॥ लषिप्रवेसकलिघोरमहाना उरविचारकीन्योभगवाना ॥ १२ ॥ दोहा ममसनमुखजनहोहिंकसकीजेकवनउपाय भयेनरकगामी सकलकलिप्रभावजगपाय ॥ १ ॥ चौपई प्रभुजियसोचगुनत अहिराई वोलेवचनचरनसिरनाई ॥ १ ॥ कवनसोचवारनभ यतारन कसनकरहुंअवप्रकटउचारन ॥ २ ॥ तववोलेअसत्रिभु वननाथा सुनहुभुजगनायकममगाथा ॥ ३ ॥ धमसुकर्मपरतन

स तोप्रकटैंइतहरनदुषदीननरमानिवास २ चौपाई असजवभ क्तिसारतपधारी सभामद्धप्रणकह्योउचारी १ तवतिनकेउरश्रीप तिरामा प्रकटचतुरवाहुघनस्यामा २ निजनिजहृदयविप्रसमुदाई देषिरूपअसत्रिभुवनराई ३ परिहरिमानदौरिद्रुतहाथा पकस्योजा यचरनमुनिनाथा ४ हमअजानजान्योनहिंकाहू तवप्रभावमहिमा अवगाहू ५ मुनिननाथअपराधहमारा क्षिमहुक्षमहुलषिकुमातिगु वारा ६ सदाहोतदायामयसाधू परअपराधपरःपरवाधू ७ भक्तिसार भाष्योमुसक्याई तुवअपराधनहिंनकछुभाई ८ दोहा असप्रकार तपपुंजमुनिभक्तिसारजगमाहिं करतअनेकनचरतकलकरतसफल सवकाहिं १ रंगनगरनिवसतभयेसुमरिचरनजदुनाथ असमुनिवर सुषसुजसप्रदमैवरन्योकछुगाथ२ इतिश्रीभक्तिसारचरित प्रकरणम्

दोहा कथासुधारसपावनीसुनहुश्रवणदैसंत हरनभूरिभ्रमभीतभवकरमसरनश्रीकंत १ जासु सुनत हरिविमुख जन होहिं सुसनमुषआय सोअनुपमसुषसुजसप्रदकरहुप्रकटकछुगाय ॥ २ ॥ चौपई अग्रचरितरामानुजकेरो जामैरुचिरराचिरुचिमेरी ॥ १ ॥ औरहुंविदितअचारजजेते करहुंवदनगायनसवतेते ॥ २ ॥ सुधासिधुतिनचरितअथाहा कोसामर्थकथनकरराहा ॥ ३ ॥ इहांकछुकलघुमतिअनुसाररर करहुंकथनसंक्षेपनकारा ॥ ४ ॥ सेषसेजभगवतइककाला राजेनिजविकुंठकलआला ॥ ५ ॥ चारुचतुर्भुजस्यामलगाता निदरतनलननीलअवदाता ॥ ६ ॥ उरविसालवनमालविराज्यो नयननवलनीरजछविलाज्यो ॥ ७ ॥ मौलिकीटकलमणिगणमंडित रविदुतिजोतिकोटिमनुषंडित ॥ ८ ॥ करनमत्सकृतकुंडिलचारू चनुचक्रादिचिह्नमनहारू ॥ ९ ॥ भृकुटिलोलकलवंकविहारी वसनपीतलावन्यतन्यारी ॥ १० ॥ लाजितमदनकोटिछविअंगा दीननाथभवभीतविभंगा ॥ ११ ॥ लषिप्रवेसकलिघोरमहाना उरविचारकीन्योभगवाना ॥ १२ ॥ दोहा ममसनमुखजनहोहिंकसकीजिकवनउपाय भयेनरकगामी सकलकलिप्रभावजगपाय ॥ १ ॥ चौपई प्रभुजियसोचगुनतअहिराई वोलेवचनचरनसिरनाई ॥ १ ॥ कवनसोचवारनभयतारन कसनकरहुंअवप्रकटउचारन ॥ २ ॥ तववोलेअसत्रिभुवननाथा सुनहुभुजगनायकममगाथा ॥ ३ ॥ धमसुकर्मपरतन

हिहेरी कलिमतिहस्योलीनसवकेरी ॥ ४ ॥ मषव्रतदानदयादि विसारी दंभाचारनिरतनरनारी ॥ ५ ॥ पूर्हिअवसिनकसव जाई मोरेसोऊतोचआहिराई ॥ ६ ॥ अन्तकाल कलिलोगस वाहीं कमिआवहिंमोरेपुरमाहीं ॥ ७ ॥ तुनहंसेपसनरथविय नाहीं करहिजेममसनमुषइनकाहीं ॥ ८ ॥ तातेतुमहुंपरमउप कारी इनजीवनउद्धारविचारी ॥ ९ ॥ अवतरहौपृथवीतलमा हीं करहुजायसनमुषतवकाहीं ॥ १० ॥ सेषसुनतभगवनअनु सासा नायसीसमुषविनयप्रकासा ॥ ११ ॥ मेजावहुंभगवनम हिमाहीं देहुविभूतिजुगलजनकाहीं ॥ १२ ॥ दोहा होहिंका जसवसिद्धतवप्रभुतुवकृपाप्रसाद एवमस्तुभगवनभन्योपायपरमअ हलाद ॥ १ ॥ चौपई तवअहीपउरआनंदछाये अवनिगवन हितहोनविदाये ॥ १ ॥ चतुरषण्डततसोससुहावन धरयोनाथप दपंकजपावन ॥ २ ॥ वारवारअसप्रभुहिजुहारी लीन्योवहुरि प्रदक्षणचारी ॥ ३ ॥ तवभाष्योअसत्रिभुवनराजू तुम्हरेहा थभक्तअवकाजू ४ जसवनिपरहिंकरहुतसजाई तुमसामर्थसरवसुष दाई ५ तुमनाहिनउरदेसनजोगू गुणनिधानजानतसवलोगू ॥६॥ संषचक्रआदिकमुनिजोई पठेशीनदयानिधिसोई ॥ ७ मनुजरूप निजधारिसुहायें हरिप्रेरतअवनीतलआये ॥ ८ ॥ फणिनायककह हंवारंवारुयो दीननाथप्रतिवदनउचारयो ९ रहहुकवहुंजानिभूतलजा ईं तातमैनधारिआपुहुराई १० सकललोकहितहृदयविचारी करि

उपदेसजननसुषकारी ११ अधरमकुमतिकपटदुरचारा हरहुसकल कलिधर्मप्रचारा १२ दोहा एवमस्तुभनिभुजगपतिप्रभुसासनधरिसी स मातलोककरनंगवनकियाजियपुमरतजगधीस १ चौपई दक्षणदे सविदतसवगाई कावेरीपुरिरुचिरसुहाई १ तहिमहंसुमतिसुजस सुषगेहा द्विजवरएकनिपुणगुणरेहा २ केसवजज्वानामसुहावा भवनभूरिसुषसंपतिछावा ३ प्रमुदातासतोलगुनधामा कांतिमती असनामललामा ४ मनहुंहरनछविमनमथनारी पतिव्रतधर्मनिरत सुभचारी ५ जद्यपिदुजसुषसंपति जाने तद्यपिसुतवहीनदुखमाने ६ पुत्रजाचिनहितुसदाहीं सुमरतरहतरमापतिकाहीं ७ दंपतितजिभ रोसजगआना एकआधारकृष्णजियजाना ८ दोहा असतिनभक्ति अनंन्यलषिभेप्रसन्नफनिराय कांतिमतीकेगर्भप्रभुप्रवसेकौतकआय १ चौपई तवतेंहोनलग्योपुरिनाना नितनवमंगल मोदमहाना १ द्वारमासजवगयोविताई चैतसुकलपंचमितिथिपाई २ सुभिनसा रगुरवारसुहायो कांतिमती सुंदरसुतजायो ३ सुनिकेसवजज्वासुत भयऊ हरष्योपरममोदवपुछयऊ ४ कहतआजानिवरनदुषदीना ह मरोसफलमनोरथकीना ५ भनतसत्यश्रुतिसिम्रतिटेरे सुमरतसुलभ नाथसवकेरे ६ असकहिकेसवजज्वानाना दीयेदान विप्रनतनमा ना ७ निजगुरुवहुरिलियवुलवाये नामतैलपूरणजगगाये ८ संस कारसुतकरजगराहा करवायोसंजुतउतसाहा ९ दिनदिनवडतभ योतववाला देषिसुदिनसुभनामरसाला १० रामानुजराष्योमनभा

वा विप्रभवनमनुभावसुहावा ११ बढतबालजवभयोसियाना तव विद्यादिपठनरुचिमाना ॥ १२ ॥ रूपतेजगुनसीलउदारा ॥ जान्योसवन सेषअवतारा ॥ १३ ॥ चारिवेदषटशास्त्रपुराना कौतुकपठे सेसभगवाना ॥ १४ दोहा वरषअष्टदस करभयेते जवदीनसनेहु प्रमुदितपिताकरायतब दियोदार परिग्रेहु ॥ १ ॥ चौपई असप्रकार कछुकालसराना सेसजनककिय हरिपुरप्याना ॥ १ ॥ पितुकरप्रेतकरम जसवरना कियोसकलतसधारन धरना ॥ २ ॥ वहुरिराषिरुचिमानसमाहीं करहुंधेनसुभसास्त्रसवाहीं ॥ ३ ॥ रहेगुसाईं विदतपटुभारी जादवगिरिनामक सुभचारी ॥ ४ सुरगुरुसमविद्वानमहाना तिनकरचरन सरनहितमाना ५ ॥ लैपुस्तकमानसअनुरागे रामानुजनिज सदनतयागे ॥ ६ ॥ पठनहेतुकांचीपुरिमाहीं चलिआये सुमरतप्रभुकाहीं ॥ ७ ॥ भलाहिंन्यायब्याकरणविचारा पुनिसांगादिकियेनिरधारा ॥ ८ ॥ वहुरिकियोवेदांतअरंभा सुमरत हृदय भक्तवअवलंभा ॥ ९ ॥ पठतपठत कछुसमय बितावा ताहिपुररह्यो जवननृपभावा १० सुछबिसीलनिधि तासु कुमारी रूपप्रधान मानरतिहारी ॥ ११ ॥ ब्रह्मपसाचलग्योइक तासा तहिनिवरणहितभूप अजासा ॥ १२ कियेअनेकजदपिधनखोईं तद्यपितजतभयेनहिसोईं ॥ १३ ॥ तवजादवाछितपतसुनिपाये मंत्रसास्त्रसंपंनसुहाये ॥ १४ ॥ सुताहेतसादिरनरराई सिषसंजुतग्रेहालियेवुलाई ॥ १५ ॥ विनयप्रणाम

विविधमुषभाषी सुताल्याय सनमुषनृपराषी ॥ १६ ॥ जुगकर जोरिवहुरि असवाचा लग्यो नाथ एहि ब्रह्मपसाचा ॥ १७ ॥ मेहास्योकरि जतनसवाहीं अवउपायप्रभु विनकछुनाहीं १८ दोहा सदासंतपरहितकरन वारनपीरपराऊ एहिकलेसअवहरि यप्रभु करिं निजमंत्रप्रभाऊ ॥ १ चौपई सुनिअसदीनवचननरग या जादव भयेतुरतवसदाया ॥ १ ॥ पठिपठि मंत्रलगेवहुझारन भयोनब्रह्मप्रेतकछुवारन ॥ २ ॥ प्रवलजानिमानस विसमाये अव कीजैएहिकवनउपाये ॥ ३ ॥ तवसनमुषदुज चरनपसारी हस्यो प्रेतदैदैकरतारी ॥ ४ ॥ जाहुजाहु वामननिजगेहा देखेमंत्रजंत्रनु वएहा ॥ ५ ॥ इनतें मोहिनत्रास कछुभाई जंत्रमंत्र असअनक निकाई ॥ ६ ॥ हमउडायदुजवातनदीने मंत्रीजंत्रिहननवहु कीने ॥ ७ ॥ पूर्वजनमतुमरो दुजजाती हमरेहृदय वि दतसवभाती ॥ ८ ॥ पूर्वजनमतुवकाननभीरा वसतरहेइकस रवरतीरा ९ तहिथलसंतसृष्ठइकआये निरतभक्तिभगवंतसुहाये १० देषिविमलजलकियेसनाना करिनितकरमपाकविरचाना ११ हरि हिंलायनैवेदसुहावा आपुसंतपुनिभोजनपावा १२ जेउछिष्ठअव सिष्टरहाना तेपतरीसरदियेवहाना १३ वहुरिसंतमारगनिजलीना पाछेतुमहुंगवनतहंकीना १४ दोहा तेउछिष्टपतरीलियेजलतेंतुरत निकार विकलछुधावसवैठितटसोतुमकियेअहार १ चौ० संतउछि ष्टा[illegible]नाऊ भे[illegible]जा[illegible]जाऊ १ त[illegible]भाकिसुमतिसुपदा

ईं तुमहुंविपुलविद्यादिकपाई ३ अरुमैब्रह्मव्रतजिमिभयऊ इहांप्रवे
सभवननृपलयऊ २ सोकारनसुनहेंांदुजनाथा तुम्हरेकरहुंकथनसव
गाथा ४ मैनृपजुतसंपतिपरिवारा वसतरह्योनिजमुदितअगारा
५ समयएकजुतवेदविधाना मैलाग्योकनुकरनमहाना ६ भूलिगयो
मोहिमंत्रप्रकारा भयोतिक्रियाहीनदुरचारा ७ तासपापत्रसमेइत
आई भयोब्रह्मराक्षसदुजराई ८ जरनलग्योनिसिवासरकाया भ्रम
तभ्रमतकहुंठोरनपाया९ तवआयोकांचीपुरिमाहीं इहांदेषिनृपनंद
निकाहीं १० मैसचयोनिजकुलकरभांती तवतेंकछुकभयोमोहिसां
ती११ जंत्रीमंत्रिकोटिकिनहोई मोंहिवारनकरिसकहिनकोई १२
दोहा नृपतनयांकरतजनममपेइकअेहीउपाय होहिंसफुरसंसयन
हींदुजतोहिदेहुंवताय १ चौपई तुह्मरेसिषनमाहिंगुणधामा विद
तजासरामानुजनामा १ सोमोरेकवहुंकिदुजराई निजचरणोदिक
पानकराई २ वहुरिकराहिंमोहिआपनचेला तोनितजहुंसुतानृपमे
ला ३ सुनिजादवमानसविसमाना तवदुहितानिजभूपसुजाना ४
रामानुजपदसनमुषल्याई विनयविविधकरिदीनविठाई ५ एहकिं
करिप्रभुवरनकुमारी लग्योपिसाचब्रह्मराहिभारी ६ दीननाथतुवप
दसरनाई जानिदुषितकछुकरहुभलाई ७ सुनिअसनंम्रवचनमहिपा
ला अरुकन्यादुषदेषिविसाला ८ रामानुजनिजचरनपषारी दी
न्योसुतावदनसोऊवारी ९ धरिनिजपदकन्याकरसीसा जाहुजाहु
असभन्योवगीसा१०अष्टवरणपुनिवदनउचारी दियेसुनायभक्तव्रत

धारी ॥ ११ ॥ तरयोप्रेततत्कालउडाना मुनिदुरलभसुर पुर कियथाना १२ देखिचरितजादवविसमान्यो अधोवदनमान सविलषान्यो १३ निजअपमानगुनताजियभारी पियतजातमनु क्रोधादिवारी १४ सुताअरोगदेषिनिजराई रामानुजचरननसिर नाई १५ जादवजुतसतकारमहाना कियोनरेसाविविधसुषमाना १६ कीनवहुरिअतविनयमहाईं मोहितेंसरयोनाथकछुनाहीं १७ तुवउपकारसंतभगवाना मोपैंकीनदीनपदजाना १८ अस प्रकारकरिविनयवडाई कियेविदायसंतनरराई १९ आयेतवजा दवनिजधामा रामानुजमानसनिसकामा २० दोहा भूपतिदान महानवितजादवकहंसवदीन पैतहिसोचनतज्योकछुकीयोकपटम नलीन १ चौपई रामानुजसोंवैरवंधावा ऊपरहितमानसरिसछा वा १ एकदिवसरामानुजकेरा मौसीकरसुतभ्रातजटेरा २ आयो भेटकरनतजिधामा गोविंदाचारजअसनामा ३ परमसुसीलसंत हितकारी ज्ञाननिरतपंडितव्रतधारी ४ जादवसनमिलिहरषउमं गा वहुरिमिल्योरामानुजसंगा ५ पूछिपरस्परकुसलसुहाई वैठि गयेसुमरतजदुराई ६ भ्रातहिंदेषिपठतवेदांता लाग्योपठनआपु वृतिसांता ७ श्रुतिकोअरथसमयइकमाहीं जादवकियेविरुद्धतहां हीं ८ तवरामानुजविनयउचारा एहनसुद्धप्रभुअरथतुम्हारा ९ त वजादवकरिकोपमहाना रामानुजसनवचनवषाना १० अरेमं दमतिअधमअपावन भयेतुमहिंगुरुलगेपठावन ११ असक

हिअरुननैनतृसकारी रामानुजकहंदियोनिकारी १२ दोहा तव आयेआपनसदनरामानुजमतिधीर बैठिसास्त्रचिततचतुरउरसुमर तजदुवीर १ चौपई गयेनपठनहेतुगुरुधामा कियेपरमरिसजाद ववामा १ निजसिषवोलिभन्योअसवाता रामानुजममरिपुदुष दाता २ मैसुतसमजढपालिपठायो भलोआजतांकरफलपायो ३ मतअद्वैतषंडगतमेरो चहतषंडकियकुमतियनेरो ४ तातेसव मिलिकरहुअजासा जहिविधिमरहिंअधमअगरासा ५ मोरेजि यअसफुरयोउपाई सोतुमकहंसिषदेहुंसुनाई ६ मकरप्रयागअना वनहेतू चलहुसकलमिलिअधमसमेतू ७ तहांप्रवाहवेनिमधभाई सठाईदेहुतुवसुगमवुडाई ८ काहसोचप्रभुसिषनउचारा लषि जाजैरामानुजमारा ९ असकाहिगयोएासिषताहां रह्योभवनरामा नुजजाहां १० गवन्योकारिमनुहारलिवाई आवागुरुसमीपहर षाई ११ लषिजापवरामानुजकाहीं लग्योप्रसंसनवदनमहाहीं ॥ १२ ॥ मकरप्रयागअनावनहेतू वोल्योतुमाहिंसुजसनदसेतू १३ सत्यवचनरामानुजगाई गयेमातुपैलेनाविदाई १४ मातुमुदि तमनआयसदीना गुरुसनहरषिगवनतवकीना १५ डगरविंधपर वताढिगआई दीस्योगोविंदमरमजणाई १६ दोहा रामानुजतो हिहतनहित जादवजतनविचारि मज्जनमकरप्रयागमिसल्यायोरि सवसभारि १ चौपई रहियोसावथानअवभाई मैतोरेसवदीनज णाई १ गोविंदवचनसुनतहितकारी रामानुजनिजहृदयविचारी २ वैठिगयोतरुनरधातित्यागे जादवजातररह्योकछुआगे ३ तवगो

विंदमिल्योताहिजाई तासुलग्योपूछनअतुराई ४ रामानुजछा
ड्योकाहिठामा तवबोल्योगोविंदमति धामा ५ मैजान्योमानस
निजस्वामी भयोसंगतुवआगलगामी ६ तवजादवनिजसिषन
हंकारी दन्यिासास नवदनउचारी ७ खोजहुंरामानुजकहुंजाई
तुरतसकलसि षसासनपाई ८ गिरिथलविपनप थापथसारी मि
ल्योनखो जिफिरेसवहारी ९ तवनिश्चयजादवजि यआवा अध
मअवसिपं चाननखावा १० तासमरनअसहृदयविचारी गुनि
सनानफलसुरसरिवारी ११ सिषनजूथजुतमुदितप्रयागा कीनगव
नजादवअनुरागा १२ दोहा इतनिरजनवन विकलमन रामानु
जवसत्रास वैठेतरुतर सोंचपरपरतनवनत प्रयास १ चौपई का
हकरवजाऊवकहि ओरे ईहांनआसपासकऊनोरे १ भूरिघोरऊ य
वनवतएहू अवअधारह रिदीनसनेहू २ असविचारिउरभक्तप्र
वीना वैठिध्यानजदुनंदनकीना ३ प्रभुअवारनिरधारनकेरे संकटह
रनविदतश्रुतिटेरे ४ निजजनकरकलेसदुषभारी सहिनसकेप्रभुभक्तउ
रामावारी ५ रमासाहितभगवानसुहाए व्याधानिव्याधरूपधरिआये
६ नुजजाहितरुतरजीके रहेकरतसुमरनासियपीके ७ ताहि
मगकढेहरनदुषदीने नूनवनपसरधारनकीने ८ तवरामानुजदे
षिव्रषाना तूयजुतव्याधकियेकितपाना ९ तवकहव्या
धरूपभगवाना हमहुंसत्यव्रततीरथजाना १० तुव
एकांतइतकारनकेह वैठिरहेभ्यावनवनएही ११ जानिपरत

असदसातुम्हारी मानहुंमगणसोकनिधवारी ॥ १२ ॥ दोहा व धकरूपभगवनवचनसुनिरामानुजज्ञानि बोलेबदनउठायनिजकछु कधीरउरआनि ॥ १ ॥ चौपई मैवसहोकांचीपुरिमाहीं मकरप्रया गअनावनकाहीं ॥ १ ॥ आवामारगगयोभुलाना तववैठयोइत विकलमहाना ॥ २ ॥ देखतरह्योचकतचहुंघाहीं मिल्योनसंगि विपनमोहिकाहीं ॥ ३ ॥ तज्योआसअवमकरसनाना जोमोहिमि लहिंसहायकआना ॥ ४ ॥ तोनकेतनिजजाहुंसिधारी तासवच नसुनिवधकमुरारी ॥ ५ ॥ बोलेवदनमंदमुसक्याई कांचीनिकट सत्यव्रतभाई ॥ ६ ॥ तीरथविदतलख्योकसनाही चलहुविप्रअव मैतुवकाहीं ॥ ७ ॥ कांचीपुरितुवधामपुचाई वहुरिसत्यव्रततीर थजाई ॥ ८ ॥ दुजसुनिव्याधवचनहितकारी चल्योसंगलगिमु दितसिधारी ॥ ९ ॥ कोसप्रजंतगयेजवदोई अथेअरुनतवजाम निहोई ॥ १० ॥ तरुतरएककियेविश्रामा बीतीजवजामनिजग जामा ॥ ११ उठीसतृषतव्याधकरनारी लागीपतितैंमांगनवारी ॥ १२॥ मोरेजोनमिलहिंपतिपानी तोनिश्चयअवप्राणनहानी १३ कुसमयजानिव्याधअसकाहा ईहांनकूपनिकटपृथराहा ॥ १४ ॥ तवरामानुजवचनउचारे प्रातउदिकमैदेहुंतुम्हारे ॥ १५ ॥ असप्र कारजवभयोविहाना रामानुजकहंवधकवखाना ॥ १६ ॥ तुव जलदेनकह्योनिसिभाई भोरभईअवदेहुलयाई ॥ १७ ॥ तवरा मानुजजलहितधाई कियोप्रवेसकूपमहंजाई ॥ १८ ॥ दंपति

हुंपाछिलतहिआये व्याधवचनअसवदनअलाये ॥ १९ ॥ दु जवरदेहुवेगतुवपानी नतरहोततृयप्राननहानी ॥ २० ॥ दोहा तवल्यायोभरिअंजुलीरामानुजमतिधीर सानकूलद्रुतदहुंनकहंपान करायोनीर ॥ १ ॥ चौपई पुनिदूसरिअंजलिभरिलावा दंपति कहंसोऊपानकरावा १ तृतीयेवारवहुरिजलदीना जानितृषततृय व्याधप्रवीना ॥ २ ॥भरननीरअंजुलिचतुवारी गयेजवहिंदुजसृष्टसि धारी॥ ३ ॥अंतर्ध्यानतवदंपतिभयऊ करिवचित्रकौतुकनिजनयऊ ॥ ४ दुजजवकूपवहिरकढिआये सोनजुगलदंपतिदृगपाये ॥ ५ ॥ पैनिजदेसविलोकिसनयना कहिनसकतसंभ्रमकछुवैना ६ करत विचारमनाहिंविसमाई दियोकवनमोहिदेसपुचाई ७ असप्रकार सोचितमनमाहीं दुजवरकियेगवनपुरकाहीं ८ दोषिपथकमगपूछि तवाता कौननामएहिपुरकरताता ९ तवकांचीतिनकियोवषाना रामानुजनिजमानसजाना १० रमानाथवंच्योमोहिकाहीं धारिनि जव्याधरूपवनमाहीं ११ कपटभेषदंपतिकहंरागा वारवारदुज वंदनलागा १२ दीननाथदुषदीनानिहारी कीनमोरकाननरषवा री १३ प्रभुसमआनकवनसेसारा जनउवरनहितकरनउदारा १४ लषिदुषात्रमोहिविपनअकेला कीन्योंव्याधरूपधृतमेला ॥ १५ ॥ दूरिदेसतेंकौतुकल्याई दीननाथदियभवनपुचाई १६ दोहा हरि उपकारविचारअसवारवारउरल्याय चलिआयेतवसदन निज मन हिंसीसप्रभुनाय १ चौपाई मिलेमातुकहंचरननलागी दीनजन

निश्रासिषसुभवागी १ भेटेपुरपरिजननरवंता जादवकरसवभन्यो ब्रितंता २ सुनतसकलमानसाविसम्रान्योपुनरजनमरामानुजजान्यो ३ सुनहुतातजननीतवभाषा गिरधरदेवलीनतोहिराषा ॥४॥ श्रवनकरहुसुतहृदयसंदेहू भजहुकृष्णप्रभुदीनसनेहू ५ जाहुसत्यव्रततीर्थराना तहँकांचीपूरणश्रसनामा ६ विदितश्रनंन्यदासजदुराई तासोंनिजब्रितांतसमुदाई ७ जसकीन्योजादवश्रपकारा देहुसुनायप्रकटसुतसारा ८ पायनदेसजननिसुषदाई रामानुजगवन्योसिरनाई ९ कांचीपूरणकोंढिगजाई वंदिचरनसवविथासुनाई १० तवकांचीपूरणश्रसभाषा तोहिभगवनकरुणाकरिराषा ११ व्याधनिव्याधरूपसुभधारी तोरेजनलाषिलियोउवारी १२ दोहा तातेश्रवतुमजाहुदुजकृष्णकृपालषिभूरि ल्यावहुतौनैकूपतैकनककुंभजलपूरि १ चौपाई वरदराजकहंदेतसनाना साविधिकरहुपूजनसनमाना १ गतिश्रनन्यप्रभुपदमनलाई श्रीयुतहोंहुविप्रसुषपाई २ रामानुजश्रससासनपाई तुरतनकेतमातुढिगश्राई ३ कहिवृतांतालियमासनपाई श्रीगोविंदचरनमनलाई ४ कनककुंभलेचल्योसिधारी स्रमकरिल्यायकूपतैंवारी ५ प्रेमभक्तिजुतदेतसनाना पूजेवरदराजभगवाना ६ श्रसदुजनिवासिकांचिपुरिसेवा भयोनिरतनितत्रिभुवनदेवा ७ उतजादवप्रयागजवगयऊ तहाँरोगवसश्रारतभयऊ ८ गोविंदाचार्जसिषतासा तेसुमणंरतरमानिवासा ९ एकादिवससुद

रसुषदेनी लग्योसनानकरनकलवेनी १० तहांतासुपावनमनभा
वा मिल्योएकसिवलिंगसुहावा ११ हरष्योतासुविलोकिब्रचारी
करिसनानद्रुतचल्योसिधारी १२ गुरुपेंजायचरनसिरनाई सिला
लभदासिवदीनादिषाई १३ तवगुरुभन्योधन्यतुवताता जहिपायो
असप्रभुसुषदाता १४ असप्रकारतहंमकरप्रजंतावसतरहेध्यावत
श्रीकंता १५ वहुरिसिषनजुतहरषअवाये कांचीकहंजादवच
लिआये १६ दोहा तवगुरुसासनपायमगगोविंदसदनासिधाय
सोसिवमूरतिकहंभवनकीनस्थापतआय १ चौपई दिनदिनहरप
दपंकजचारू वाढयोप्रेमभक्तव्रतधारू १ उतकांचीवासिनसव
आई जादवकहंअसदियोवुझाई २ तुवपूरवकांचीपुरिआवार
मानुजपूरणसुषछावा ३ तवडरप्योजादवअभिमाना जहिरष
वारआपुभगवाना ४ हमरोकियोहोततवकाहा असगुनिलजित
मोनधरिराहा ५ पठयोवहुरिसिषवदनवुझाई रामानुजकहंलेहु
वुलाई ६ आयोसिषनदेसगुरुपाई रामानुजकहंचलेलिवाई ७
संतसुभावसरलसभभाती राष्योहृदयनवैरअराती ८ सहजसील
चितकपटवहीना आयप्रणामचरनगुरुकीना ९ निवसनलगेपू
र्ववततांहीं निरतपठिनवियादिकमाहीं १० ताहिसमयइककवि
दतमहाना प्रकटयोरंगनागिरविद्वाना ११ जामुनचारजनामसु
हावा विदताविदुखासिरमोरकहावा १२ दोहा भयेपंचासिषता
सुपुनिप्रकटमहांगुनधाम पृथकूपृथकूतिनकरवदनभनहुंविसदसुभ

नाम १ छपै गोष्टीपूरणकांचिपूर्णामहंपूरणभाये श्रीगिरपूरणविद तवहुरिमालाधरगाये एहपांचोनिधसीलश्रेष्टसिषजामुनकेरे नि पुणनिगमधीमाननिरतगुनज्ञानघनेरे सुचिकरतजजनसेवनसुनित रंगनाथभगवंतकर लियविभूभूरिसुषसुजसश्रतजासुनजगतसुहंत वर १ चौपई समयएकजामुनवृतधारू वैठिसदनमनकियेविचा रू १ कऊवालिकवरसुमतिनिधाना मिलहिंमोहिसेवकभगवाना २ रंगनाथप्रभुपूजनमाहीं करहुंनयुक्तभवनतहिकाहीं ३ तोकछुमि लहिंमोहिश्रवकासा असप्रकारगुनिमानसतासा ४ वोलिनिक रासिषदिसनपठाये तेवालकषोजनद्रुतधाये ५ आयेजवकांचीपुरि माहीं तहंदेष्योरामानुजकाहीं ६ गुणप्रवीनविद्यामतिनागर सर लसीलचितलोगउजागर ७ देषितुरतसिषजामुनपासा आयवृतां तकह्योसवतासा ८ रामानुजकरसुनतवडाई हरषिचलेजामुन अतुराई ॥ ९ ॥ देषनद्दगनवालकलसोभा मुनिजामुनमानसमनु लोभा ॥ १० ॥ आयेजवकांचीपुरिचारू तुवमंदिरप्रभुभक्तउवा रू ॥ ११ वरदराजकरदेषिसुहावा जामुनहृदयपरमसुषपावा ॥ १२ दोहा जोरिजुगलकरनम्रगतिआयभवनभगवान करिप्र णामलागेवदनअसतुति वहुविधिगान १ चौपई आयगयेजा दवताहिठामा परिवारतसिषानिकरलिलामा १ गहेहाथरामानुजकेरा तवकांचीपूरणद्रुतहेरा ॥ २ ॥ जामुनसोंअसमरमजनावा जासहा थगाहिजादवश्रावा ॥ ३ सोरामानुजभक्तप्रवीना तासकथाप्रभुसुन

हुनवीना ॥ ४ ॥ लैप्रयागएहिजादवगयऊ विंधविपुनजवआव
तभयऊ ॥ ५ ॥ तहांइननाहितजतनाविचारयो व्याधरूपधरिकृष्ण
उवारयो ६ निजकौतुकप्रभुभक्तसहय्या काचीपुरिद्रुतदीनयठय्या
७ ॥ तवजामुनरामानुजकाहीं हरषेदेषिविपुलमनमाहीं ॥ ८ चा
हतकियकछुवचनविलासा पैनमिल्योअवसरअवकासा ॥ ९ तव
लागेसुमरणभगवाना दीनाद्यालभक्तवरदाना ॥ १० ॥ वेदपुराण
निपुनव्रतधारी एहवालकमोहिमिलाहिंमुरारी ११ करिनास्तिकम
तमेदानिखंडा वैष्णवमतसुभकराहिंउदंडा ॥ १२ ॥ वादविवादजी
तिसुमुदाई करहिंविमुषसनमुषजदुराई ॥ १३ ॥ सवविधिदेहिंसु
जससुषमोही हराहिंकुमातिवैष्णवमतद्रोही ॥ १४ दोहा असकहि
जामुनासिषनजुतरंगनगरनिजआय रामानुजविसरयोनपैप्राणप्रीये
सुषदाय १ ॥ चौपई रंगनाथमंदिरसुभजाई विमलनवलनितअस
तुतिगाई १ विरचिस्तोत्रआलमंदारू पठहिंसुवदनवेदजनुसारू
२ कहिविधिएहवालकमनभावन श्रीवैष्णवमतजगतचलावन३ मि
लहिंमोहिपूरणसुषदातादीननाथदुषदीनानिपाता४ उतरामानुजजाद
वपासा पठेसास्त्रवेदांतअजासा५समयएकनिजगुरुवरकाहीं संजुत
भक्तिहराषि मनमाहीं ६ करनपीठकलतैललगावत गुरुसप्रीतिक
छुरहेपठावत ७ तवजादवस्तुतिअरथविरुद्धा कियेसुनतराम,
नुजक्रुद्धा ॥ ८ रिसवसनिकसिद्दगनद्रुतवारि परयोजंघजाद
वततकारी ९ देषितुंरतभन्योअस्वागी रामानुजरोवतकाहिला

गी १० ढरततपतजलदृगनतुह्मारे कहहुंसपादिसुतहेतुहमारे ११
तवरामानुजवदनअलाना प्रभुस्तुतिअरथविरुद्धवषाना १२ सोअ
जोग्यजनसक्योंनसेही हेतुढरनजलनयननएही १३ हरिलोचन
उपमानसुहावा पुंडरीककाविकोविदगावा १४ कपिनितंवसमप्र
भुउश्चारा सोअजोग्यकससकहुंसहारा १५ तवजादवरिसकियेम
हाना रामानुजकहंवचनवषाना १६ दोहा अरेनिसरगदुरातमन
विविधपढायोतोहि अवउनमतउलटोअधमलग्योपठावनमोहि १
चौपई जाहुजाहुसठसनमुषत्यागी अवनपठाउवतोहिअभागी
१ लेहुभवनमारगजडजाती वन्योनासिषसठजन्योअराती २ सु
निअसकुपतवचनगुरुस्रवना रामानुजगवनेनिजभवना ३ कांची
पूरणपेंहुतजाई गुरुवृतांतसवदीनसुनाई ४ तासभन्योअवतेंताजि
आनै सेवहुवरदराजभगवानै ५ तहिसासनवसभगवनसेवा ल
ग्योकरनजुतभक्तिअभेवा ६ उतश्रीरंगनगरइहआई विथासकल
जामुनसुनिपाई ७ रामानुजकरकियोमहाना कुमतिकुटिलजाद
वअपमाना ८ तहितेकांचीपूरणपासा निवसतअवसौसुमतिविका
सा ९ सालकूपतेंप्रतिदिनजाई मंजुलकनककुंभभरिल्याई १० ॥
वरदराजप्रभुदेवनदेवा करतभक्तिजुतपूजनसेवा ११ दोहा अस
रामानुजकररुचिरसुनिवृतांतसमुदाय हरषेजामुनहृदयानिजमनहुं
मनोरथपाय १ चौपाई पूर्नाचारजवेगबुलायो तासुवदनजामुनस
मुझायो १ जाहुवेगकांचीपुरिमाहीं ल्यावहुद्रुतरामानुजकाहीं २

तेसासनानिजगुरुवरपाईं काँचीनगरिहरषजुतआई ३ वर दराजमंदिरसुभद्दारू करतप्रणामआलमंदारू ४ लग्योस्तोत्रपठ नमनभावा सुनतभवनवासिनसुषपावा ५ तहिअवसररामानुजआ येकनककुंभजलसीसधरांये ६ सुनतस्तोत्रआलमंदारू एहक्तक हतकवनमनहारू ७ तुमकहितैआयेउतसाहा तवपूर्नाचारजअ सकाहा ८ मैतोरंगनगरतैंआवा तुमहिंलेनगुरुदेवपठावा ९ जा मुनचारिनामगुरुमेरो पठ्योस्तोत्रउक्ततिनकेरो १० सुनिपूरनक रवचनसुहाये रामानुजमानसहरषाये ११ रंगनगरसुभदरसनका हीं उपजीरुचीरुचिरमनमाहीं १२ तवपूरनआतिसेअतुराईं कांची पूरनकेढिगजाईं १३ रामानुजवोलनगुरुदेवा वरन्योसकलप्र संगअभेवा १४ दोहा कांचीपूरण सुनतअस गुरुसासन सुभदानि रामानुजकहंपठयोद्रुत रंगनगरसुषमानि १ चौपई तवपूरनउरआनंदछाये रामानुजकहंचल्योलिवाये १ रंगनग रउतभक्तउवारा रंगनाथप्रभुकियोविचारा ॥ २ निश्चयजानि परयोमोहिजीके अवतरिहैंसगरोजगनीके ३ मिलिरामानुज जामुनचारी नरकमूलसवदेहिउपारी ४ तातेअवकछुजतन करीजै इनकरभेटहोननहिंदीजै ५ असविचारभगवननिसिठाना भोरहिंभयो उदयजवभाना ६ रंगनाथसुचिपूजनकाहीं जामुनआ यभवनप्रभुमाहीं ७ तवभगवान भनेअसवागी ममसासनवसतुव वडभागी ८ अष्टदिवसमहंतजिसंसारा जाहुमोरवैकुंठअगारा

९ सुनिजामुनभगवन असवानी भयोनिमगनमोदहितमानी १० अठयदिवसउरसुमरिमुरारी गयेविकुंठजामुनाचारी ११ अरुकर देषिसकल सिषप्याना हरषेअन्नवाझदुषमाना १२ दोहा संसकार हितवहुरिदुज कावेरी तटल्याय राष्योवपुजामुन सिषनसकलसोक समुदाय १ चौपई रामानुजपूरण संगमाहीं आयगये तहिदिवसत हाहीं १ देषिमहानजननकरभीरा पूछनलगेजुगलमतिधीरा २ ॥ कावेरीतटसुनहुसनेहू जुस्योसमाजकवन हितएहू ३ भन्योसिषन तुवसुन्योनप्यारे गुरुजामुनवैकुंठसिधारे ४ पूरनसुनतगवन गुरुका ना विकलसीसधुनि धरनिगिराना ५ रामानुजसंजुतदुषमानीलगे करन सोकारतवानी ६ आयेवहुरि निकटगुरुकाया रुदनकरतचर ननासिरनाया ७ तवदेष्योअचरजएहभारी अंगुरितीनजामुना चारी ८ सकुचिरहीकछुजानिनपरहीं लोकपरस्परचिंतनकरहीं ९ तवरामानुजभुजाउठाई भाषासुनहु लोकसमुदाई १० मैप्रसा दभगवंतकृपाला श्रीवैष्णव मतजगतरसाला ११ करिप्रचलित सवजीवनकाहीं तारिहुं अवसिधरानितलमाहीं १२ दोहा धरम परायणलालितसुभ सुनिरामानुजवानि उठिजावनदेखत सवन अंगालिएकसुकचानि १ चौपई वहुरिभन्यो रामानुजवैना रचि हौंभास्यसंतसुषदैना १ तुरतसुनतअस वचनसुहावा अनतअंगुलि जामुनउठिआवा ॥ २ ॥ तवपश्चातनिपुणगुणधामा भन्योवदन असवचनालिलामा ॥ ३ ॥ विष्णुपुराण विदतसंसारा रच्योपुरा

सरसुमतिउदारा ॥ ४ ॥ सोपठैंहुसववैष्णवकाहीं प्रीतिप्रतीतिरा षिमनमाहीं ५ तहिप्रभावसाधनसुषदाई संजुतभक्तिप्रीतिमुषगाई ६ उधराहिंलोकमोक्षपदपैहीं व्रह्मानंदसुगमसुषलैहीं ७ असजवज गतजीवहितकारी श्रीरामानुजगिराउचारी ८ दोहा फैलिगईजा मुनतवैतुरतअंगलितिसरीय भयेलोकलषिचकतमनतकितनपरसप रीय १ चौपाई पुनिजामुनकहंसिषनउठायो विधिजुतकावेरीपध रायो १ तववैष्णवसवमानसरागे रामानुजकहंभाषनलागे २ रंग नगरकीजैंअवष्याना दरसियरंगनाथभगवाना ३ तवरिसवसरामानु जकाहा कियोनाथमोहिगतउतसाहा ४ मैंजामुनदरसनहितआ यों दीनद्यालकहंसोऊनभायो ५ तातेंरंगनगरकरिष्याना हमनकर वदरसनभगवाना ६ हमइतजहिदरसनहितआये सोवैकुंठदियना थपठाये ७ अवकरिहौंकांचीनिजष्याना भावतमोहिनदरसभगवा ना ८ जोमोपैदायानहिकीन्यो आजहुंकालरहननहिदीन्यो ९ नि रदयरंगनाथहैसांचे भक्तमनोरथपूरणकांचे १० असप्रकारप्रभुपेरि सल्याई वैष्णवजनकहंप्रकटसुनाई ११ चलिआयेकांचीपुरिकाहीं सरिताछीरनीरसुचिमाहीं ॥ १२ ॥ दोहा ॥ करिसना नदरसनाकियेवरदराजभगवान जायवहुरिनियभवनसुभ नि वसेभक्तप्रधान ॥ १ ॥ चौपाई ॥ सुषसोंसोयसदनानिसिसा री जागेप्रातभक्तव्रतधारी १ कांचीपूरणकेगृहजाई कियेप्रणामच रनसिरनाई २ जामुनगवनपरमपदभावा दियोवहुरिसवपृथकसुना

वा ३ गुरुजात्रासुनिहारिपुरकाहीं कांचीभयेदुषितमनमाहीं ४ तव
रामानुजमानसरागेनिसिवासरगुरुसेवनलागे ५ एकदिवसउरआनंद
छाये गुरुसनमुखअसवचनअलाये ६ विनयमोरकरुणायनिधाना
कीजैभवनदासनिजध्याना ७ करिभोजनपावनमोहिकरहौ दीनना
थसेवकअनुसरहौ ८ तवकांचीअसभन्योसनेहा मैभोजनकारिहो
तुवगेहा ९ जवकीन्योगरुवरसूइकारा तवरामानुजभवनसिधारा
१० विविधभातिविंजनवनवाये षटरसचारुअमियसमभाये ११
पुनिगुरुकंहल्यावनहितगयऊ सोहुंअनतपथआवतभयऊ १२
दोहा तवरामानुजकेसदनगुरुकृपालद्रुतआय छुध्यारततहि
पृयासनभन्योवचनअकुलाय १ चौपई मोहिभोजनअवदे
हुसुभागी सहिनजायक्षुध्याअतिलागी १ रामानुजतृयभो
जनदीन्यो कांचीपायपरमसुषभीन्यो ॥ २ ॥ सानकूलपुनिहर
षअघायेवरदराजप्रभुभवनसिधाये ॥३॥ उतरामानुजकांचीगेहूग
वनेभेटभयोनहितेहू ॥४॥ आयनिराससदनदुषमानातृयविरच्योभो
जनतवआना ५ गुरुआगमनपूछयोनिजनारी तासभन्योमुषसक
लउचारी ६ तवरामानुज भोजनपाई चलेवेगहरिभवनासिधाईं ७
कांचीपूरणकोढिगजाईं जोरिगुगलकारविनयअलाईं ॥ ८ ॥
कीजैमोहिसमासुयघालू होहुमुचितदुरगमभवजालू ९ तवक
चीकहवचनसनेहू होहिनप्रभुसासनाविनुएहू १० विनपूछेहरि
भक्तसहयपातेरमैनकरहुंसिसभ यया ११ असकहिगवनभवनहरि

कीनाचरनसरोजसरनाचितदीना ॥१२॥ दोहा नागहितचारुचांवर विजनहोतजजनरतसेव विनयनंममग्रलाग्योकरनसनमुषदेवनदेव १ चौ० दीननाथरामानुजएहू चहतहोनसिषमोरसनेहू १ यामेजसनदे सप्रभुहोई मैंअवकरहंसीसधरिसोई ॥२॥सुनिकांचीकरविनयसुहाई वोलेवरदराजमुसकचाई॥ ३ तुवकांचीरामानुजसंगा करहुकथनए हमोरप्रसंगा ॥ ४॥ जोअसउपजिसुमतिजियतोरे लागिसभक्तपरम प्रीयमोरे ॥५॥ गुरुवरसरनमोरसरनाई अहिअग्रजगमोक्षउपाई ६ जेअनंन्यममदाससुहावा ताकेदेंहुपरमपदभावा ॥७ ॥ तातेजोतुम्ह रेमनकामा वनहुजायपूरनसिषरामा ॥८॥ तवकांचीप्रभुचरनजुहारी रामानुजऐचल्योसिधारी ९ वरदराजउपदेससुहावा तासुदीन सवपृथकसुनावा १० रामानुजहरिसासनपाई रंगनगरद्रुतचल्यो सिधाई ११ दोहा ताहिनगरताहिकालसव वैष्णवविपुलदुषारि विरहंविकलजामुनसकल सोकितसुरातिविसारि १ चौपाई भनहिं परस्परमानिकलेसू कोअवकरहिंज्ञानउपदेसू १ महंपूरनलोसंतध नेरे जामुनविरहंसोकमतिप्रेरे ॥२॥ तवसवसंतनसंमतिकीना होय अचारजकौनप्रवीना॥३॥ वैष्णवसतमंडिनकरिचारू करहिंषंडपा षंडप्रचारू ॥४॥ सुचिसुधरमसंस्रतिविसतरई हरिविमुषनकहसं नमुषकरई ॥ ५ ॥ मिलिविचारठान्योसवकैही हैरामानुजलायक ऐही ॥ ६ ॥ अवहिंरंगनगरतेजवहीं उदयहोहिंवैष्णव मततवहीं ७ तवसंतनकहपूरनकाहीं तुमहंजायकांचीपु

रिमाहीं ८ आनहुरामानुजैलिवाइं सादिरसंसकारकरवाइं ९ लेहुवनायरुचिरसिसआपन तववैष्णवमतहोहिंरथापन ॥ १० ॥ गिरासुनतअससंतनसांची पूरनाकियेगवनद्रुतकांची ११ अग्रहारइकग्रामसुहावा तहांपरस्परभयोमिलावा १२ दोहा तवरामानुजदेषिदृगपरेचरनअनुराइं पूरनहुंलषिसुषपगेमनहुंमनोरथपाइं १चौपई रामानुजतवविनयवषाना प्रभुकहिओरांकियेनिजप्याना १ तवआगमप्रसंगजसराहा पूरनप्रकटवदनसवकाहा २ रामानुजतवविनयउचारी मोहिसिषकरहुदीनाहितकारी ३ तवपूरनअसकह्योवुझाइं चलहुसत्यव्रततीरथभाइं ४ विधिजुतकरहुसमास्त्रयताहीं देहुंउचितदीक्षातुवकाहीं ५ तवरामानुजगिराअलाइं नाथकालिकरकवनवसाइं ६ हमतुमजासुनदरसनहेतू आयेरंगनगरमतिसेतू ७ तेतहिदिनहारिलोकासिधारे दरसआसउरह्योहमारे ८ तातेअवकीजैजनिवेरी नाथप्रतीतनअवसरकेरी ९ जहगुरुमिलहिंतहांसिषहोना देषियदेसकालकलकोना १० सैएहदीननाथजोइंगावा सकलसास्त्रसिद्धांतसुहावा ११ प्रेमअलोकिकतासुनिहारी संतसिरोमनहृदयविचारी १२ दोहा देवभवनइकललितलषितामधगयोलिवाइं गुरुदीक्षासादिरविमलाविधिवतदीनकराइं १ चौपई रामानुजकरवहुरिप्रवीना संषचक्रचिन्हतभुजकीना १ उर्धपुंडदेललितलिलारा अष्टवरनतहास्त्रवणउचारा २ त्रिधिवतवहुरिहोमकलकीन्यो लषमनाजंतहि

नामरषीन्यो ॥३ ॥ वरदराजपूजनमनभावा तासुदीनअधिकारसु
हावा ॥ ४ ॥ पूरितपरमहरषमनमाही पनिआयेकांचीपुरिकाहीं
॥५ ॥ तवपूरनअसगिराअलाई तुवपाछेजामुनगुरुभाई ॥ ६ ॥
सुचिवैष्णवमतथापनकरहो संतसुजनउरआनंदभरहो ॥ ७ ॥
तुमवैष्णवसिरमोरकहावा चक्रवरतितुवनामसुहावा ॥ ८ ॥
रामानुजगुरुआसिषपाई वारवारचरननसिरनाई ॥ ९ ॥
धन्यजनमनिजजगतविचारी मानतभयोमोदसुषभारी ॥ १० ॥
पुनिगुरुतेविद्याअभिरामा रतिजुतपठतरहेमतिधामा ॥ ११ ॥
मनमतिपाषंडिनमतछीने सुचिवैष्णवमतमंडिनकीने ॥ १२ ॥
कांचीपुरिकलजवननिवासी विप्रसंतवैष्णवगुनरासी ॥ १३ ॥ रा
मानुजसवकरहितभीने करतरहेसनमाननवीने ॥ १४ ॥ असप्रका
रषटमासविहाये गुरुपेंकरतवाससुषछाये ॥ १५ ॥ एकदिवसअ
पनेगृहभाते अंगनतेललगावनराते ॥ १६ तहांएकअतथीदुज
आवा तहिलषिउरकरुणारसछावा ॥ १७ ॥ तृयसनभन्योवेगतु
वरामा ल्यायअमान्यदेहुएहिधामा ॥ १८ ॥ तवभामनअसकह्यो
रिसाई याहितअन्नलेनकितजाई ॥ १९ ॥ निजनकेतकछुनाहि
नपाऊं अनतअन्नकहिखोजनजाऊं ॥ २० ॥ सुनितृयवचनपरमदु
षदाई रिसवसउठेआपुअतुराई ॥ २१ ॥ दोहा निजनकेततेंअ
न्नकढितृयसनमुषद्रुतल्याय कहिसमिल्योएहहमहिंकसदुरमतिदुष्ट
सुभाय ॥ १॥ चौपई क्षुध्यतअतथिआवममद्वारा तुवतहिकीन

अधमअपकारा ॥ १ ॥ रेपापनिजढजातिअवुद्धी निपटगवारनि संतविरुद्धी ॥ २ ॥ जाहुजाहुममसनमुषत्यागी अवनकढहुकछु दुरमतिवागी ॥ ३ ॥ पतिहिंदेषिअमरषवसभामा वैठीजायलजितनिजधामा ॥ ४ ॥ उतैअमानअतथिकहंदीने रामानुजैविसरजनकीने ॥ ५ ॥ एकसमयपुनितहिपुरमाहीं जहंजलभरनसकलतियजाहीं ॥ ६ ॥ ताहिकूपमंजुलघटलीने पूरनपतानिगवनिसुषभीने ॥ ७ ॥ आईतहांसोपिहितवारी कलहकरनिरामानुजनारी ८ गुरुतृयजुतदौहनगहिपाना डास्योगगारेकूपमध्याना ॥ ९ ॥ रामानुजतृयघटपेंफेरी पस्योगगरिपूरनतृयकेरी ॥ १० ॥ तमकिउठीरिसमानिमहाना तजतअधमममनगुरुतृयकाना ॥ ११ ॥ तुवघटपरसिमोरघटसंगा भयोअपावनजोगविभंगा ॥ १२ ॥ दोहा रेनीचनिकुलकुमतिअतिनाहिजानतितुववात हमरोकुलउत्तमविसदसकलजगतविक्षात ॥ १ ॥ चौपई हमनछीवतुवपरसितवारी असगुरुपतनिविविधतृसकारी ॥ १ ॥ तवपूरनतृयकोपिवषान्यो हमवडवारितोरसवजान्यो ॥ २ ॥ असदऊहनकरभयोविवादा छूटिगइगुरुसिषमरजादा ३ तवपूरनतृयधामसिधारी पतिसनसकलवृतांतउचारी ॥ ४ ॥ पूरनमानिपरमउरहानी गवन्योरंगनगिररसिमानी ॥ ५ ॥ उतसेवनहितसांझसनेहू रामानुजगवनेगुरुगेहू ६ ॥ सोपायेआश्रमानिजनाहीं पूछनलगेपरोसिनकाहीं ७तववतिनतृयन परस्परकेरा वरन्योवदनविवादघनेरा८कहिनगयेहमकहंकछुसोहीं

रंगनगरगवनेगुरुहोहीं ९ रामानुजसुनिफिरेतुराई सिवसत्रज रभवननिजआई १० भामनिसोंपूछनअसलागे रेदुरमातिजडजा तिअभागे ११ गुरुतृयकसकीनासिअपमाना कलहकरनितवबचन बषाना १२ दो० छुवनकियोकतअसुचिममकढतकूपघटवारि मैआईहितताततहिकाहिरिसवसबहुगारि १ चौपई रामानुजकहि कोपितबानी रंजढकीनधरमकरहानी १ जहिउछिष्टहमषाय अभागी पावनहोतअपावनत्यागी २ तासतृयेपरसनजलकीने मूरषअसूचिकवनमतिदीने ३ गुरुतृयकियेपानपदवारा होहिंस कलसुचिवंसहमारा ४ भातोहितें अनरथजढभारी जोअपमान कीनगुरुनारी ॥ ५ ॥ अवनसदनतुवराषनजोगू करहिंमोरअप जसकिनालोगू ६ तवउरपतरामानुजनारी वैठीजायभवन निहन्यारी ७ उतरामानुजपूजनहेतू वरदराजाकियगवननकेतू ८ लगेविचारकरनमनमाहीं किमिएहितजहुअधमतृयकाहीं ९ वि प्रएकतहिअवसरआयो परमछुधितमुषवचनअलायो १० दातादे हुअन्नमोहिदाना तवरामानुजवचनवषाना ११ मोरसदनदुजजाहु सिधारी करहिंप्रतोषतोरममनारी १२ रामानुजतृयबैंदुजजाई कहि सदेहुभोजनमोहिमाई १३ आवाअतिथिविप्रतुवद्वारा करहुदानभो जनउपकारा १४ दोहा सोवोलीअनषायतव कामूरषतुवहेत मै राष्योभोजनाविरचिजोतुवसासनलेत १ चौपई जाहुजाहुतजिसदन भिषारी काढिहुंनतरदेतद्रुतगारी १ विप्रसुनततततकालपराई रामा नुजपैंद्रुतगतिआई २ कीयेकथनतृयगुनअपकारा तवरामानुजह

दयविचारा २ मेरोजतनलागिअवगयऊ वधुअपराधवारनैसहयू ४ मैनपतीनपतनिएहमेरो यामैआगनसवजगकेरो ५ असगुनिदु जहिकह्योसमुझाई अवतुमवहुरिसदनममजाई ६ तृयसनभनहवच नसुषदाये हमतेरेमैकेतआये ७ तोरवीरकररुचिरविवाहू सदनसुभ गमंगलउतसाहू ८ जनकजननितुवपत्रिकदीना चलहुवाचिद्रुतसुम तिप्रवीना ९ अलिगणभगनिअनतपुरनारी तुवआगमनअभिला षितसारी १० असकहिपत्रिकदीनवनाई छिरकतकुंकुमकरत मलयसुहाई ११ विप्रलेतगवन्योअतुराता हृदयविचार मगजाता १२ मैइतकवनकाजवसआवा आवागमनकर तस्रमपावा १३ अससोचितदुजपंथनिवारी आयनिकटरामानु जनारी १४ दोहा सोपत्रिककरदीनतहिलीनासिअतिसुषमानि पितुपठवनवनुगुनतमनघनप्रमोदसरसानि १ चौपई कीनविप्रस तकारसुहाया दैअहारपुनिदीनविदाया १ आयेजवरामानुजगे हा कहिसवचनतृयपरमसनेहा २ मैकेनाथवीरममकेरा सुठिवि वाहउतसादघनेरा ३ जोपावहुंसासनतुवस्वामी तोमैकरहुंगव नसुषमानी ४ जननिजनकमोहिपठयोवुलाई एहपात्रिकाप्राणप तिआई ५ तवरामानुजआनंदमानी जाहुंअवसिभाषिसमुषवा नी ६ पटआभरनलेतसमुदाई महसमाजदेहतुवजाई ७ हम दिनपांचगयेउतऐहैं तुमकहंपुनिलिवायइतलैहै ८ तवतृयेभूषण वसनसजाई पियरेगवनिहरषसरसाई ९ रामानुजलहिआनंद

शसी जान्योकटीग्रीवतेंपासी १० भाषतमनसंमतिअनुसरईं अ वत्रिदंडकलधारनकरईं ११ परिहारयहस्ताश्रमजंजाला भाजि यवैठिअवकृष्णकृपाला १२ असविचारिनिजमानसमाहीं पठत माईकेनिजसतिकाहीं १३ तृणवततारिजगतजियआसा देतवि दायअवासनिरासा १४ दोहा नारायणपदप्रेमकियवलकलपटपह राई धरेकमंडलदंडकलचलेचपलगतिधाई १ चौपई वरदरा जमंदिरमहंजाई आगेवस्योसाजसमुदाई १ सानुरागजुगपान नजोरी लागकरनसुपविनयवहोरी २ हेउदारहेकमलविलोचन कमलाकांतभक्तदुषमोचन ३ हेअनंतहेसंतसहय्याधरनिधेनुसुरत्रा सहय्या ४ हेमुकुंदहेतृभुवनराऊ जोतुम्हारअनुसासनपाऊ ५ धारहुंतोंत्रिदंडकलएही जोनिवाहुतवदीनसनेही ६ जनकरागि रासुनतमनभाई वोलेप्रभुप्रतक्षसुसकयाईं ७ भक्तप्रधानहरषिमन माहीं जाहुअनंतसरोवरकाहीं ८ मोरअनन्यदाससमुदाये नि वसततहांभाक्तिसुषपाये ९ तिनसोंसंजुतप्रीतिमिताई करहुत्रिदं डगृहणद्रुतजाई १० रामानुजसुनिभगवनवानी भयोआजप्रभुज नाजियजानी ११ सोसमातउरआनंदनाहीं गयोअनंतसरोवर काहीं १२ तहंविलोकिहरिदासुसहाये कियोप्रणामधरनिसिरनाये १३ वहुरिनंम्रमनहरषप्रलोने जामुनाजंपदवंदनकीने १४ सविधिसु संतनकृपाउदंडा हरषिकीनकलगृहणत्रिदंडा १५ तवतेरामानुजम तिधामा भनेविदतजगजतिवरनामा १६ दोहा सानुकूलअमराय

तवगगनदुंदभीपूरि कीनसिनानाअमलकलसुमनवृष्टिअतिभूरि १
चौपई संतसमाजसकलहरषाई जयजयजयमुषमुषरअलाई १ म
हिमंडिलसुभमंगलछायो कलिडरपतजनुविपुनदुरायो २ इतनि
सिकांचीपूरनकांहीं दीनस्वपनअसात्रिभुवनसांई ३ मोरचरनजल
पादुकचारू छत्रजाढितकंचिनमणिभारू ४ चमरसुभगसिवकामन
हरनी रतनअलंकृतानिदरततरनी ५ तामधममपादुकासुहाई राषि
ललितमुनिमानसभाई ६ अग्रजायरामानुजकाहीं ल्यावहुइहांभ
वनममगाहीं ७ सुनिसासनस्वपनेजगत्राता कांचीपूरनउठेप्रभा
त। ८ प्रभुपादुकाभक्तमुषदाई सिवकारूढकीनद्रुतआई
९ छत्रचारुचांमरछविछाई कहिनजयकछुलावनताई १०रामानु
जकहंआगलजाई चलेलेनसादिरहरषाई ११ प्रभुपादिकाभक्तप्र
दकामा धारतमौलिभक्तअभिरामा १२ दोहा ल्यायेकांचीनगरक
लअतिप्रमोदसुषमान सुमरतदीनदयानिधीवरदराजभगवान १
चौपाई रहीत्रिदंडगृहणकृतजोई करवाईसादिरपुनिसोई १ हरिमं
दरतवजातिवरजाई वारबारनंम्रतसिरनाई २ करनलागकलअस
तुतिगाना जयजयजयतिभक्तवरदाना ३ जैतिअनंतसक्तिसुरराया
जैमुकुंदजयजयपतिमाया ४ जयसुरधरनिधेनुरषवारे जयजयभक्त
संतहितकारे ५ जयमंडनवृंदारकजाती जयजैजैमधुकैटवघाती
६ जैवारनहारनभवपीरा जैतिप्रवरधनद्रोपातिचीरा ७ जयप्र
ल्हादकरनरषवारी जैजैजैतितरनमुनिनारी ८ जैजैसीतकरानन

सोभा जैजैसुरमुनिमानसलोभा ॥ ९ ॥ जैजैकमलविलोचन चारू जैजैजैउरवनस्त्रजधारू ॥ १० ॥ जैतित्रिभगअंगमृदुलोने जैजैहृदयभक्तजनटोने ॥ ११ ॥ जैतिसफरिकृतकुंडिलकरना जैजैकौकिकीटकलधरना ॥ १२ ॥ दोहा ॥ जैजैपीतपुनीतपरज ग्यूपवीतमुरारि जैतिसंषचक्रादिप्रभुगदापद्मधृतचारि ॥ १ ॥ असप्रभुअसतुतिकीनकलरामानुजमतिधाम व्हैप्रसंन्यकरुणायतन दीन्योजतिवरनाम ॥ २ प्रभुप्रसादजनपायकैअभयअमलाचितहोय हरिसमीपनिवसनलग्यो दुरतदोषदुषखोय ३ सुचिसंतनसतकारनितहोतानिरतगुनगेहु लाग्योनिसिदिनभजनपद वरदराजजननेहु ४ रामानुजकरचरितअस कछुकिचतमतिवार मैगायोसंक्षपतएह हरनदोषसंसार ५इतिश्रीमन्महाराजा धिराजजंवूकश्मीराद्यनेकदेसाधिपतिप्रभुवर श्रीरणवीरसिंहाज्ञत कविमीहांसिहाविरचिते भगवदभक्तिमाहात्म्येरामानुजचरित कथनंनामसर्गः ॥ ३ ॥

दोहा अबआगलइइतिहासकल रामानुजकरआन करहुंकथनसा
दिरवदनहरन भीतिभ्रमुमान १ चौपई कांचीनगरनिकटमनभावा
पूर्वदिसाइकग्रामसुहावा १ तहंअनंतदीक्षत अभिरामा रह्योएक
दुजवरमतिधामा२ जतिवरभगनिपुत्रगुनगेहू सुचिसुधरमरतसीलस
नेहू३ तासुपुत्रविद्यागुणसागर दासरथीअसनामउजागर ४ मनवच
करमभक्तभगवाना विगतविकारमार अभिमाना ५ सोमुनिमातुल
भक्तउदंडै अमलअचारजग्रहितत्रिदंडे ६ आवाभक्ति प्रीतिसरसाये
लषिभैनेमातुलहरषाये ७ कियोसमासुयसुतसमजाने विपुलग्रंथसत
पंथपठाने८ रह्योसितहां एकदुजआना गुणागारधीमानसुजाना ९
ताकेएकआतमजभावा जहिकूरे सनामजगगावा ॥ १० श्रीपति
भक्तिनिरतव्रतधारी सेवकसंतनरवहितकारी ११ सोआयोकांचीपु
रिमाहीं हरष्योलषिरामानुजकाहीं १२ दोहा करिप्रणामसिषसों
भयोविधिजुतपूरितप्रीति पठेसास्त्रविद्याविमलविविध ग्रंथगुणनीति
१ चौपई दासरथीकूरेससुजाना वैष्णवनिरतज्ञानवज्ञाना ॥ १॥
अतिसुसीलसिषजुगलउदारे जतिपतिकहंप्राणनतेंप्यारे २ गुरुस
मीपनिवसतदिनराती सेवनजजनजुक्तसवभाती ३ समयएकजाद
वकरमाता जतिबरकहंदेष्योमग्जाता ४ उर्द्धपुंडजाहिलसत्वलि
लारू संषचक्रचिन्हतभुजचारू ५ भानुसमानभासचहुंचाहीं पट
कषाय सोहततनमाहीं ६ गृहितमंडपृदपानि त्रिदंडा रतिसियपिय
पदपदमअषंडा ७ असप्रकारलषिजादवमाईं मनहिंप्रणामकियो

हरषाईं ८ आईंलौटिभवननिजमाहीं कह्योमरमसवजादवकाहीं
९ रामानुजसंगवैरवढायो निजअपवाद विस्वविथुरायो ॥ १०
अवतासोंताजियेरिपुताईं सवविधितातवातसुषदाईं ॥ ११ ॥
एहिविकुंठतेंहरिपठवायो जीवउधारहेतुजगआयो ॥ १२ दोहा
सत्यसेषअवतारइहसुतसंसयकछुनाहिं करिहैंअवसिप्रचलतजग
सुचिवैष्णवमतकाहिं ॥ १ ॥ चौपाईं वैष्णवमतसुंदरसंसारा
श्रीपतिकहंअतिमानसप्यारा ॥ १ ॥ कीननविष्णभाक्तिदुज
जेही दीन्योवृथाजनमविधितेही ॥ २ पठितश्रवणगुणविद्याचरना
बिनुहरिभक्तिवृथाश्रमकरना ३ सोभितजथानमृतकसरीरा सु
मनसुगंधिआभरनचीरा ४ कांचीपूरनलोंविद्वाना निरतज्ञानवि
ज्ञानमहाना ५ तेरामानुजकरसमुदाईं नानाधंन्यवादमुषगाईं ६
लषिआचारसारसुषदाना पूजहिंभक्तिप्रीतिसनमाना ७ तातेतुमहुं
द्वेषसुतत्यागी लेहुसरनजातिपतिवडभागी ८ जादवमातुवचनसु
निनीके वोल्योअभयमोदभरिजीके ९ कहिससत्यजननीतुववानी
मोरेहुंउरअतिभईगिलानी १० अग्रगन्यआचारचभाये सेसरूपरा
मानुजगाये ११ ताहितुल्यसंसारनदूजा औहिंजोगजगवंदिनपूजा
१२ दोहा पैमोरेमानसरह्योमातुलालिसाएहू भूप्रदक्षणाप्रथमदैपु
निगवनहुंढिगतेहू १ चौपाईं तवनदेसजतिवरसुषदाईं राषहुंज
ननिसीसहरषाईं १ सुनिजननीअसवदनअलाईं अवलोंसुतनजा
तजढताईं २ भूप्रदक्षणातेंजगमाहीं जतिपतिन्यूनप्रदक्षणनाहीं ३

परिहरितातमनोरथदूजे रामानुजसरणागतहूजे ४ जादवजननिव
चनवसप्यानाकीन्योहृदयराषिअभिमाना ५रामानुजकहंजायनिहा
रा जथाईंदुउडगनपरिवारा ६ सिषसमाजसोभितचहुंपासा अरु
सुरगणसुरगुरुजीमिभासा ७ तवजादवअसप्रकटउचारा सुनरामा
नुजवचनहमारा ८ उर्द्धपुंडजोइमस्तकदीना संषचक्रकसधारनकी
ना ९ निराकारानिरगुंणभगवाना भयोसगुनकसकरहुवषाना १०
जादवकथनसुनतअसकाना रामानुजप्रमोदसुषमाना ११ तवकूरे
सकहंसासनदीना देहुउत्रतवप्रसनप्रबीना १२ गुरुअज्ञाधकूरेससु
जाना लैंसमतिस्रुतिसास्त्रपुराना १३देदैवेदप्रमानअवंका हस्योस
कलजादवाजियसंका १४ दोहा सुनतकथनकूरेसअसआति
अचरजवसहोय जादवगवनेभवननिजकरतसोचनिसिषोय ॥ १
चौपाई प्रातकालनिद्राकछुलागी वरदराजस्वपनेकहिवागी ॥ १
होजादवअवलौंतुवकाहीं सूझिपरयोमानसकछुनाहीं ॥ २ ॥
विनुलीनेरामानुजसरना होहिंनअगमसिंधुभवतरना ॥ ३ ॥
देषिस्वपनजादवअसप्राता चौंकिउठयोसंभ्रमअकुलाता ॥ ४
मोरेहेतुहरनदुषदीना जोएहस्वपनप्रवोधनकीना ॥ ५ ॥ अव
उद्धारकवनाविधिहोई करताविचारमनहिंमनसोई ॥ ६ ॥ उतप्रात
हिंजादवमहतारी गवनीकूपभरनहितवारी ७ तहिमगसंजुतसिष
नसुहाये जतिपतिहरिपूजनहितआये ८ देषिजननिजादवअनु
रागी हृदयविचारकरतनिजलागी ९ रामानुज दुतिभानुसमाना अ

गमानिगमानिपुणगुनधामा १० मनवचकरमभक्तजदुराई ममसुतकु मतिकरतजढताई ११ राषतद्वेषभावएहिसंगा तहिकल्यानकरकवनप्रसंगा १२ दोहा जोसुतपरिहरिद्वेषहठरामानुजासिषहोय तोकल्यानतरुकलपसमकरहींसुजससवकोय १ चौपई गुनतजननिअसभवनासिधारी रामानुजकहंलियोहंकारी १ हितजुतभनतवचनअसमाता होहुजायसिषजतिपतिताता २ मोक्षउपायसुगमसुतएहू लेहुसरणरामानुजनेहू ३ होहिसहजजदुनंदनभेटा आवागौनामिटाहिंतुववेटा ४ जादवसुनतमातुकृतज्ञाना हरिप्रवोधकतस्वपनवषाना ५ पैनामिटयोताससंदेहू कियोनरामानुजपदनेहू ६ संसयसमनसमयइकतेहा गवन्योकांचीपूरनगेहा ७ करिप्रणामअसवदनउचारा दीननाथसंसयमोहिभारा ८ सोपसाचभ्रमभ्यावनछाई हरियमंत्रउपदेससुनाई ९ तुमहुंजोगजगजननसहाया हरहुनाथसंसयकरिदाया १० धोंप्रभुवरदराजढिगजाई विनयमोरअसदेहुसुनाई ११ जनकल्यानकवनविधिहोई देहिंदैवसासनजिमिसोई १२ दोहा सोमैंहितजुतजानिजियलेहुंसीसनिजधारि कांचीपूरनसुनतअसचलेतुरंतसिधारि १ चौपई वरदराजभगवनपैआई जादवकीसवविनयसुनाई १ तव तत्क्षवोलेभगवाना कांचीपूरणसुनहुसुजाना २ तुमहुंवेगजादवढिगजाई मोरकथनअसदेहुसनाई ३ विनुलीनेरामानुजसरना तोहिअगमनभववारधतरना ४ दोनस्वपनमैकारनएही तवहुंभयोविस्वासनतेही ५ अवहुंभलो

विगरयोकछुनाहीं गरैजायजातिपतिपदमाहीं ६ जोंदुरलभमानुषव पुधरई संस्रतिमोषउपायनकरई ७ तेकूकरसूकरसममूढा दुरम तिदुष्टदुरतरतगूढा ८ कांचीपूरनहरि अनुसासा लियआवद्भुत जादवपासा ९ भन्योनासनिजचाहुनजोई तोजतिपति सरणाग तहोई १० वरदराजप्रभुसासनएहू हितजुतकीनकथनतो हिनेहू ११ जादवसुनिसासनभगवाना भयोविगतसंसयअभि माना १२ दोहा जतिपति सरनासिधारकै परयोचरनग तिदीन आहिआहिनंम्रतविनय वहत दृगनजलकीन ॥ १ चौपई तुवउद्धारकरनसंसारा क्षमहुनाथअपराधहमारा १ सदाउदारसंत जगगाये चूकनिवरण जननसुषदाये २ अवउद्धारप्रभुतुमविनुनाहीं मैजान्योनिश्चयमनमाहीं ३ तुमहुंनाथजन संस्रतिहेरे करनधार भवसागरकेरे ४ ग्रसतअवरभ्यावनदुषमोऊ तुवअवलंवआननहि कोऊ ५ कीजैनाथपारविनवेरी दसादेषिआरतअसमेरी ॥ ६ ॥ असकहिपरयोचरनअकुलाई जतपतिजियदायासरसाई ॥ ७ ॥ भन्यो वचनसुनजादवधीरा तुमदुषहरहि अवसिजदुवीरा ॥ ८ ॥ उठहुसकलसंदेहविहाई भजहुकृष्णदीननसुषदाई ॥ ९ ॥ उठिजा दवजुगपाननजोरी वोल्योनाथ विनयअसमोरी ॥ १० ॥ मोहिकी जैभगवनअपनाई पांचहुंसंसकारकरवाई ॥ ११ ॥ वूडतविकट उदधिसंसारा अैचिलेहुतुवदीनउवारा ॥ १२ ॥ दोहा तवरामानु जसदिनगुनिसंतसमाजजुडाय जादवकोविधि जुतसकलसंसकार

खाय ॥ १ चोपई धर्‍योनामतहिगोविंददासा वेदमरमसवकियो प्रकासा १ नानावैष्णवग्रंथपठाई दीन्येवैष्णवधरमजणाई २ पुनिरामानुजआज्ञादीनी तुववैष्णवअपकीरातिकीनी३ तेअपराधमिटावनहेतूरचहुग्रंथवैष्णवमतिसेतू ४ तवजादववंदितगुरुचरनाहृदयसुमारिस्यामलघनवरना ५करिकरिविमलविचारसुजाना लैप्रमानस्रुतिवेदपुराना ६ रच्योग्रंथसवग्रंथनभूपा नामजासजतिधरमनिरूपा ७ ल्यायवहुरिगुरुसनमुषगावा सानुकूलकछुभूलसुधावा ८ विधित्रिदंडधारनसंन्यासा तामधकियेवसेषप्रकासा ९ रामानुजमुनिमानसरागे तहिकहंत्रिविधसराहनलागे १० तवजादवजतिपतिसरनाई कीन्योअतिसभक्तिसिवकाई ११ असप्रकारकछुसमयवतीने गोविंदजनहुभक्तिसुषलीने १२दोहा सुमरतश्रीराधारमनगुरुवरकृपाप्रसाद गवनाकियेंहारिवासकहंपायपरमअहलाद १ चौपाई देषहुसंतमहंतगयानी हरिमहिमाकछुजायनजानी १ कियेविचारपारनहिपाई एहिविधिजननिजलेतवचाई ॥ २ ॥ सोजादवहैदूसरनाहीं पठतरहेरामानुजजाहीं ॥ ३ ॥ हतनचह्योकरिजतनवसेषे अहिंसोऊजादवतुमदेषे ॥ ४ ॥ वैष्णवमतनिदरतजगमाहीं जहिरामानुजदेषिडराहीं ५ सोऊविदतजादवगहिसरना धारिसीसजतिपतिरजचरना ६ गुरुप्रसादजगकीरतिपाई गयोविकुंठनिसानवजाई ७ तवरामानुजधरमप्रवीना कृष्णभक्तिनिसवासरलीना ८ कांचीपुरिवासिसानंदरागे सिवगणरुचिरपठा

वनलागे ९ रंगनगरउतसंतसवाहीं जामुनविरहंदुषितमनमाहीं
१० विद्यावेदपठावहिंजोईं देषिनपरहिंअचाजंकोईं ११ रंग
नगरतवसंतमहंता रामानुजदरसनरतिवंता १२ आयेरंगनाथप्र
भुद्वारा वारवारअसविनयउचारा १३ जोहमकहंतुवदीनसनेहू
करनकृतारथसंस्रतिचेहू १४ दोहा ॥ वोलिलेहुतवक्रपाजुतरंगन
गरकलमाहिं भक्तप्रधानसुज्ञानघनजनरामानुजकाहिं १ चौपई
विनयकरतअससंतसमाजू वैठिद्वारमंदिरसुरराजू १ रंगनाथसुमर
णानिसिलीनो तवजगधीसस्वपनअसदीनो २ममसंघासननिक
टसुहाती लिषीमोरकलकरनसुपाती ३ कांचीवरदराजपैंसोइंप
ठहौवेगप्रातदुजहोईं ४ असप्रकारानिसिस्वपननिहारी भोरहिंउ
ठेसंतदुजझारी ॥ ५ ॥ देष्योसंघासनढिगजाईं परीहरीकरपत्रि
कपाईं ६ सासनस्वपनजानिनिसिसांची पठईंदेतदुजकरद्रुतकां
ची ७ वरदराजाढिगसोदुजआयो करिप्रणामनिजनामसुनायो
८ रंगनाथपत्रिकपुनिदीनी हरषितवरदराजजवलीनी ९ रामानु
जजाचनासुहाईं वरदराजवाचितअकुलाईं १० जामनिलिष्यो
उत्तप्रभुएही रामानुजममप्राणसनेही ११ वनहिंदेतजाचनसव
आना दीयेनजाहिंनाथपैप्राना १२ कहिप्रकाररामानुजप्यारे
दीननाथमैदेहंतुमारे १३ लिषिवितांतभगवनअसराती धरयो
निकटसंघासनपाती १४ दोहा आयेपूजिकप्रातजववरदराज
मधभौन परीधरीपातीकरीदगनविलोकनतौन १ चौपई लेतसी

वहिरभवनद्रुतआई रंगनाथकरदूतवुलाई १ दीनतासुपुनिकीनविदाया लेतसोविप्ररंगपुरआया २ वरदराजकरपत्रिकपावन रंगनाथकहंदीनसुहावन ३ भगवनवाचिमरमजियजाना तवजामुनसुतएकप्रधाना ४ नामजासुवररंगसुहावा रंगनाथतहिस्वपनवुझावा ५ गानसास्त्रतुपरमप्रवीना स्रुतिसंगीतरीतसवचीना ६ कांचीवरदराजपेंजाई निजप्रभावगुननिपुनरिझाई ॥ ७ ॥ तेंप्रसंन्यजवहोहिंउदारा मणिकंचिनवितदेहिअपारा ॥ ८ ॥ करिहोसोनतुमहुंकारांगी लेहुएकरामानुजमांगी ॥ ९ ॥ देषिस्वपनअसमानसभावा हृदयप्रमोदरंगवरछावा ॥ १० ॥ प्रातकाल उठिसुमरिमुरारी कांचीपुरकहंचल्योसिधारी ॥ ११ ॥ वरदराजप्रभुमंदरआई कियोप्रणामनंम्रसिरनाई ॥ १२ ॥ दोहा सजसजायपटआभरनमधुरनादमुषगाय निरततनेकनभावकियप्रभुसनमुषसुषछाय ॥ १ ॥ चौपई असससंगीतरीतलषितासा वरदराजउरमोदप्रकासा १ वोलेवचनजननसुषदाता मागरंगवरजियवरभाता ॥ २ ॥ हरिहिंदेषिअनकूलप्रवीना करिप्रणामकरजोरितदीना ॥ ३ ॥ कहिसनाथमोपेंजोईआपू भयेप्रसंन्यहरनभवतापू ॥ ४ ॥ तोजनवरजावनअनुरागे जोअजोगकछुप्रभुहिंनलागै ॥ ५ ॥ भाष्योकृपासिंधुमुसकाई भक्तएकतुवरमाविहाई ॥ ६ ॥ आनसकुचतजिमांगिनलेहों मैप्रसंन्यमानसतोहिदेहों ७ कह्योरंगवरजुगकरजोरे रामानुजदीजैप्रभुमोरे ॥ ८ ॥ अवक

रियेनिजवचनप्रमाना नटियनकृपासिंधुभगवाना ॥ ९ ॥ कह्यो नाथवंच्योदुजमोही जोमैंदीनवचनमुषतोही ॥ १० ॥ हुतोवातए हदुरलभभाई पैपूरवमोहिलियोहराई ॥ ११ ॥ श्रवनमृषानिजव चनकरेना पस्योश्रवसिरामानुजदेना ॥ १२ ॥ दोहा असकहि प्रणपूरनप्रभूरामानुजैवुलाय हरषिरंगवरहाथद्रुतदीन्योनाथधराय ॥ १ ॥ चौपई सानुकूलपुनिगिराउचारी रंगनगिरजनजाहुसि धारी ॥ १ ॥ करहुजायदरसनमनभावा रंगनाथभगवानसुहावा ॥ २ ॥ रामानुजसासनप्रभुपाई वारवारचरननसिरनाई ३ ॥ क रिद्रुतगवनभवननिजआयो सुचिसेवकजनलीनबुलायो ॥ ४ ॥ सिषसमूहसंजुतदुषसाना भयोरंगपुरकरतपयाना ॥ ५ ॥ पितुग्रैह तेंपतिगृहजिमिजाती कन्यांपरमदुषितविलपाती ६ तिमिमानस दुषमानिमहाना सुमरतवरदराजभगवाना ७ कावेरीतटमारगआ ई करिसनानस्रमसकलविहाई ॥ ८ ॥ द्वादिसतिलकअंगकल दीन्यों सुमरतकृष्णगवनपुनिकीन्यो ९ तवप्रमोदमानससरसाई आयेअग्ररंगवरधाई ॥ १० ॥ रंगनाथप्रभुमंदिरआई करिप्रणाम असविनयअलाई ॥ ११ ॥ आयेकलिप्रभावजगहंतादीनद्यालरा मानुजसंता १२ दोहा सुनिसंदेसवसेसअसवदनरंगवरएहु जन अगमनकलगुनतमनहरषेदीनसनेहु १ चौपई भाष्योवदनरं गवरकाहीं पठितवेदतजिसंतसवाहीं ॥ १ ॥ रामानु जअगवायनहेतू मिलिसवचलहुसंतमति सेतू २ रंगनाथअससा

सनपाई पूर्नाचार्जआदिसमुदाई ३ चलेजातद्रुतल्यावनआगे लषि
रामानुजमानसरागे ४ धायपरेपूरनपदआई तासउठायलियेउरलाई
५ वैष्णवआनदेषिहरषाने वंदिपरस्परहृदयजुडाने ६ आयेजवसमीप
हरिभवनातवआगलमूरतिश्रीरमना ७ आइलेनलगमंदिरद्वारा मुहत
सकललषिचरितअपारा ८ तववैष्णवरामानुजकाहीं ल्यायेभवनभव
नपतिमाहीं ९ तहांवचित्रविमलसुषदाई महारंगप्रभुदरसनपाई १०
करिप्रणामअसविनयउचारा मोरेहिततुवदानउवारा ११ आयले
नअगवायनदय्या काहकीनएहभक्तसहय्या १२ कवनदीनजडमैम
तिहीना असस्रमजाम्हेतप्रभुकीना १३ त्रिभुवनधनीअनंतप्रभाऊ
मैसेवकलघुरंकक्रहाऊ १४ तुवतारयोअतिदीनवडाई कीनमेरुस
हसधरिराई १५ सुनतभक्तवरविनयसुहाई रंगनाथमानससुषपाई
१६ वोलेसुनहुसिरो मणिदासा हुतोमोहितुवदरसनआसा १७
यातेंवोलिपठयोतुवकाहीं भक्तवातकछुअचरजनाहीं १८ जोमैंसंत्र
तिनिजजनकेरा काहुंनअससतकारघनेरा १९ दीनवंधुतवनामहमारा
कानकरहिंगायनसंसारा २० दोहा तुमलायकसवगुणनपररामानु
जमतिधाम मैतोरेनायककियोमुक्तिभुगतिअभिराम १ चौपई सु
निअसदीनद्यालकरवानी रामानुजप्रमोदसुषमानी १ देतप्रदक्षण
मनअनुरागा वारवारपदवंदनलागा २ वहुरिभवनभक्तनसुषदाई
महंमूरतिकरदरसनपाई ३ लैप्रसादसादिरसुषछाये वैठेगरुडभवन
द्रुतआये ४ तहंआव्रतवैष्णवगणसंगा कथाअलापकरतअगमं

गा ५ पुनिरामानुजगिराअलाई सुनहुसंतवैष्णवसमुदाई ६ ज
हिकहंजससामर्थरहाना इहमतरंगनाथभगवाना ७ वैष्णवप्रवर
सर्वसुषदाई निजनिजकरहुसथापतभाई ८ यहमैकरहिंनसाहस
जोई पावहिंडंडवेदविधिसोई ९ गिरासत्यसठकोपवषानी त
वपूनांचाग्जजियजानी १० हमरेवंसकोऊइकहोई जतिवरभन
हिंनामसवकोई ११ सोवैष्णवमतकरतउदंडा करहिंधूरिकलिध
रमप्रचंडा ॥ १२ ॥ निजजात्राअवसरसुभवानी पुनिजामुनअ
सविदतवषानी ॥ १३ ॥ कछुकदिवसवीतइतआई एकअ
नंन्यभक्तजदुराई ॥ १४ ॥ दोहा कहिकहिहितजुतवचनमृदु
मधुरप्रवोधसुनाय कराहिं सुषीसवजगतकहं वैष्णवमतप्रकटाय
॥ १ ॥ चौपई सोरामानुजतुमहुंउदारे उदयकरनवैष्णवमत
वारे ॥ १ ॥ जतिपतिसुनतगूढअसवानी परेचरनपूरनसुषमा
नी ॥ २ ॥ भनेनाथमाहिमावरतोरी कमिकहिसकहिंअलपमति
मोरी ॥ ३ ॥ असकहिउठेजननसुषदाऊ देषनलगेत्रकालप्रभाऊ
४ ॥ तिनकहंविविधप्रसंसतरागे रंगनगरकलनिवसनलागे ॥ ५
मानिसविरहंवरददुषजेता दरसतरंगमिट्योसवतेता ॥ ६ ॥ जा
पेंसानुकूलकरिदाया हगनदष्टिरामानुजपाया ॥ ७ ॥ होतकृतार्थ
संस्रातितेहू निवमेजायकृष्णकलगेहू ॥ ८ ॥ रामानुजप्रभावगतपा
रा कोसामर्थकथनसंसारा ॥ ९ ॥ कांचीतेंजव भक्तप्रधाना लागे
करनरंगपुरप्याना ॥ १० ॥ वेगवुलाय वैषणवचारी लैयकांतअ

सगिराउचारी ॥ ११ ॥ तुमहुंसैलपूरनढिगजाई तहांमोरफुफि यासुतभाई १२ गोविंदनामकहतसवकोई वैष्णवमतनिंदिकजग सोई १३ तासुकरतवैष्णवएहिकाला सैलपूर्नपरवुद्दिविसाला १४ आयेकालहस्तिपुरकाहीं तापेंतुमहुं जायद्रुततांहीं ॥ १५ पायवृतांतमरमसवतासा आवहुरंगनगरममपासा १६ तिनाहिंवद नअससासनवरनी आयेआपुरंगप्रभुडरनी १७ कछुककालमहंते व्रतधारी आयरंगपुरवैष्णवचारी १८ दोहा रामानुजपदवंदिकैजो रिकरनगातिदीन पृथकपृथकसादिरवदनमरमकथनसवकीन १ चौपई हमजवकालहस्तिपुरत्यागी आयसैलपूरनसंगलागी १डग तडागदेषिमनभावन लगेवैठितहांसिषनपठावन २ आवातहां भरनजलहेतू घटागहितगोविंदमतिसेतू ३ भरिघटचल्योभवन जववारी सैलपूर्णतवगिराउचारी ४ लैघटगवनपूरिजलजोई ताकरकहहुकवनफलहोई ५ गोविंदसुनतउत्रनहिंदीना सोचितग वनभवननिजकीना ६ आवावहुरिभरनजलताहींसैलपूर्णतवमार गमाहीं ७ सुचिसलोककलकागदलेषी धरयोडगरदगगोविंददेषी ८ लीनउठायचकितचहुंचाहीं चितवतजानिपरतकछुनाहीं ९ देषेसैलपूर्णतहिठामा तिनकरनिकटजायमतिधामा १० हरष तवदनवचनअसभाषा कोयहपत्रडारिमगराषा ११ याकोअर्थ प्रकटमोहिसंगाकरहुकथनमानसभ्रमभंगा १२ दोहा भन्योसैलपूर नवदनअरथअनेकप्रकारऔरहुंसास्त्रपुरानवहुदियेप्रमानअपार १

चौपई करतजातगोविंदसवषंड। भयोपरस्परवादप्रचंडा १ ॥ भयोअ्रतकुंठितमतिसोई गोविंदथकत चकितचितहोई ॥ २ ॥ सुनिअसकथन वैष्णवनकाना सैलपूर्णकहंधंन्यवषाना ॥ ३ ॥ रामानुजतहंसंतनसंगा भनेप्रमान अनेकप्रसंगा ॥ ४ ॥ तिनवैष्ण वजनसोंअनुरागे वहुरिवदनअसपूछनलागे ॥ ५ ॥ अवगोविं दकीकहहुसुनाई रह्योस्थिरकीगयोपलाई ॥ ६ ॥ गुरुमुषसुनत वैष्णववानी वोलेपरममोदसुषमानी ॥ ७॥ तहितेंजवनउत्रप्रभुसर यों तवनिजध्यान आनकहुंकरयो ॥ ८ ॥ सैलपूर्नविंकटगिरिआये दिवसतीसरेवहुरि सिधाये ॥ ९ ॥ जोरिजूथसुषकानिनचारू सहसगीतकल अरथउदारू ॥ १० ॥ लागेसंजुतप्रीति पठावन संसृतिसकल अनर्थमिटावन ॥ ११ ॥ तहांप्रसून लेनहितवनमहं गोविंद आयमोदभरिमनमहं ॥ १२ ॥ चढिपाटलितरवर अनुरा गे चंदनसुमननगोविंदलागे ॥ १३ ॥ तवचतुरथकल गीतसुहावा निकस्यो एहप्रसंगमनभावा ॥ १४ ॥ दोहा छीरसुतापतिनाभिनि जकटयोकमलकलएक तहितेंविधिउपजत विविधविरच्योवस्ववि वेक ॥ १ ॥ चौपई तातेसर्वविस्वकरकारन नारायणदुषदीननि वारन ॥ १ ॥ श्रुतिपुरानसव विदतअलाये सरवेस्वर भगवानसु हाये ॥ २ ॥ जेनरकरहिं भक्तिसरसाई नारायणप्रसूनसिवकाई ३ हरिहिंदिवसनितपुस्पचढावै सोअनंतफलसंस्रुतिपावै ॥ ४ ॥ अ सप्रसंगजव स्रवणनलयऊ सावधानतवगोविंदभयऊ ॥ ५ ॥ विश्व

नाथनारायणदेवा सिवविधिचरनरेनुजाहिसेवा ॥ ६ ॥ तातेसोऊ चरनरजतासा मैहुंधारिनिजसीसहुलासा ॥ ७ ॥ सुमरिदीनदुष मोचिनकाहीं होहुंपारभवसिंधुअथाहीं ॥ ८ ॥ असविचार निज मानसल्याई तरुतेंउतरि तुरतअतुराई ॥ ९ ञाहित्राहिमुषरटतत हाहीं पर्यौसैलपूरन पदमाहीं ॥ १० वहुरिवदनअसगिराउचा री दीननाथ मोहिसरनतिहारी ॥ ११ ॥ निजजढताइकुमतिवस फूली अवलगरह्यो वृथाभ्रमभूली ॥ १२ दोहा चंचरीकचुतरीतमैं हरिपदपदमप्रयाग ताजितनीचकुलकीटवतरह्योअधमक्तलाग १ चौपाई प्रभुपदपदमप्रेमनहिंकीना यातेंअवलोठौरनलीना ॥ १ रह्योभ्रमतभटकत जगमाहीं विनुहरिसरण स्वपन सुषनाहीं २ ॥वारवार असभनतगोविंदू तजतनसैलपूरणपदद्वंदू ॥ ३ ॥ हरिपदप्रेमपेषिअसतासा सैलपूर्णमनमोद प्रकासा ॥ ४ ॥ गहितकरनद्रुतगोविंदकाहीं लियेउठायलायउरमाहीं ॥ ५ ॥ झारिप्रीति पूर्वकरजअंगा वोलेवचन भीतिभ्रमभंगा ॥ ६ वीतिगयोअवसरजोईहाथा अवनकरियताकरकछुगाथा ॥ ७ आगलसावधानाचितहोई कपटद्वेषदुरमतिसवषोई ॥ ८ ॥ करि हरिपदपंकजविश्वासा तरहुउदधिभवविगतअजासा ९ गोविं दगिरासुनतहितकारी भयोनिमगणमोदनिधवारी १० सैलपूर्ण कहंगुरुसमजानी वारवारवंदितपगपानी ११ भयोभक्तवैष्णवव्र तधारी लयोसुजससुषसंस्त्रतिभारी १२ सुनतषवरपुरकरनरवंता

गोविंदवैष्णववन्योमहंता १३ सषेसुजातिनातिसमुदाई तहिँपै आयसकलअतुराई १४ दोहा सैलपूर्णकहंपृथमअसकहतकुमति सवआय तुमजानतकीनेलष्योजादूजंत्रवनाय १ चौपई गोविंदसे सकाहतुमडारा भयोवीरनिजतौरविसारा १ कौनमंत्रतुवतासु पठायो जाहितेकुमतितुरतवौरायो २ सैलपूर्णहासिवचनअलावा हमनाहिंनकछुतासुपठावा ३ पूछिलैहुतुवसनमुषराहा हमएहि दीनसिषावनकाहा ४ कुमतिसुनतअसवचनारिसातेगोविंदपक रिलीनद्रुतजाते ५ अधमकठोरकहतमुषवानी औतोरमतिभईवौ रानी ६ यासनकवनतोरसंजोगू चलहुभवननिदरतसवलोगू ७ अपनोधर्मभलोजगभाई कीजैसोऊरुचिरसुषदाई ८ यहभाषत छलछंदवनाये भूलियेनाकाहूकेभुलाये ९ तवगोविंदअनषद्दग ल्याई षोलिवदनअसगिराअलाई १० जोलोतुम्हरेसंगअगारा रहतरह्योसंसर्गहमारा ११ तवलोतुवसासनजसहोई धारतरहे सीसनिजसोई १२ दोहा जवतेंहमतुमकहंतज्योसज्जनहितचि तषोय तवतेंतुमतुमहमहिहमअवसनवंधनकोय १ चौपई उग्र वचनसुनिवांधवसारे वैठलजतमोनमनमारे १ तवगोविंदसुमर तभगवाना सैलपूर्णदिगकियेपयाना २ भयोअनंन्यदासहरिके रा कृष्णचरनडरकियेवसेरा ३ तववैष्णवद्रोहिनकहंराती संक रस्वपनदीनएहिभाती ४ सुनहुमंदजडजातिअवोधी नास्तिकवै ष्णवधर्मविरोधी ५ कृष्णदासगोविंदप्रवीना अधमतासुतुवता

नकीना ६ वैष्णवमततेंप्रेरनलागे कहि कहिनिजअज्ञानअभागें ७
७ जोचाहौअवभूरिभलाई तोनकरहुतहिसनवरयाई ८ वैष्णव
निरतज्ञानविज्ञाना एहअनन्यसेवकभगवाना ९ हरिद्रोहीअ
सस्वपननिहारी सैलपूर्णकहंविपुलउचारी १० गोविंदतेंसव
होतनिरासा कीन्योनिजानिजगवनअवासा ११ सैलपूर्णव्यंक
टागिरिआये गोविंदकहंनिजसंगलिवाये १२ तहिथलसंतस
माजसजाई पांचहुसंसकारकरवाई १३ वैष्णवसास्त्रविमलमनभाय
गोविंदकहंसवदीनपठाये १४ दोहा सोअवसेवतचरनगुरुसैलपूर्णसु
षदाई निवसतगिरिव्यंकटरह्याचिरभक्तिप्रेमसरसाई १ चौपई एहवृतां
तजतिनाथउदारा हमतिनकरसुवाकियोउचारा १ गोविंदकरअससुन
तप्रसंगा भेजतिपतिपुलकावलिअंगा २ अतिसनमानवैष्णवनकीना
भलोअनुपमहरषसोहिदीना ३ पुनिरामानुजप्रीतिसमेता सवसंतन
कहंगवननकेता ४ सानुकूलकरिदोनविदाये उठेआपुसुमरतज
दुराये ५ गवनेरंगभवनहरषाई प्रभुपदवारवारसिरनाई ६ जो
रिजुगलकरविनयउचारी दीननाथप्रणतारतहारी ७ तुवमजाद
संतनरषवारे जगतविषादविनासनहारे ८ जोनहोतप्रभुसमसंसा
रा तोसंतनकहंकौनआधारा ९ कैवलतुमहुदेवकीछय्या संतन
कीसुधिसदारषय्या १० हरिहिंनम्रअसविनयसुनायो निजनके
तरामानजआयो ११ समयएकमानससुषछाये गुरुपूर्नाचारज
गृहआये १२ करिदरसनपूरितअनुरागा कियेवंदिपदविनयसुभा

गा १३ गुरुजामुनदरसनसुषदैनाभयोनदीनद्यालइननयना १४ तातेंमैमोकारतभारी सोकजनितभगवनदुषसारी १५ मिटिगोतु वदरसनतेंमौरा मैंअनंन्यसेवकपदतोरा १६ जानिकृपालमोहि दृढदासा करियरुचिरउपदेंसप्रकासा १७ सुनिरामानुजगिरासु हाईं वोलेमहापूरणहरषाईं १८ जुगलवरनमंतरचितचोरा जा नहुसकलमंत्रसिरमोरा १९ एहजाकेउरहोहिप्रकासा कारककी टिजनमअगनासा २० दोहा भुक्तिमुक्तिप्रदसुषदजगचारिवरन महकोय सेवतसंसाराररनवपारसुगमलहिसोय ॥ १॥ चौपई वेदमू लमंजुलमनुतारक जननदोषदुषदुरतनिवारक ॥ १ ॥ तुम्हैंदेतहम जतिवरलीजै सावधानअन्तरसपीजे ॥ २ ॥ असकाहिअमरमं त्रसुषदाईं दीन्योंजातिपतिस्रवणसुनाईं ३ न्यायतत्वगीतादिसुहाव न अरथयुक्तमानससुषछावन ४ व्याससूत्रवेदान्तैचारू पंचरात्र आदिकगुनिसारू ५ संजुतप्रीतिरीतिमनभावा कियोंविमलउप देससुहावा ६ वहुरितनयानिजकरासिषकीन्यो पुंडरिकाक्षनामज हियीन्यो ७ पुनिभाष्योपूरनहरषाईं अवजातिपतिगोंष्टीपुरजाईं ८ तहांअनंन्यभक्तजदुराये गोष्टीपूरनस्वामिसुहाये९ महांविदुषतिन तेंभ्रमषंड। सास्त्रार्थसुनिलेहुउदंडा १० रामानुजगुरुसासनपाईं किये गवनगोंष्टीपुरआईं ११ वैठेजहांसुषासनस्वामी वारवारकरिनंम्रति मानी १२ दोहा जुगकरजोरतदीनवताविनयवदनअसकीन दीजैम हमंत्रार्थप्रभुनिजसेवकदृढचीन १ चौपई सुनिगोंष्टीपूरनअसवाना

लग्योविचारकरनवज्ञानो १ याकोअवअधिकारनकोऊ असगु
निरह्योमोनवतहोऊ २ वतरामानुजकरतविचारा फिरिआयेनि
जरुचिरअगारा ३ वीतेकछुकदिवसघरघरतहंभाउतसवअतिरंग
नगरमहं ४ तवगोष्टीपूरनसुनछाये उतसवलषनरंगपुरआये ५
दरसनहितमानसअनुरागे आयेरंगभवनवडभागे ६ तवप्रसन्नपूव
कअसवानी भनेवदनपूजकहितमानी ७ रंगनाथप्रभुसासनएहू
रामानुजकहंसुषदसनेहू ८ उपदेसियमंत्रार्थप्रकारू जानिभक्तस
ज्जनहितकारू ९ तवगोष्टीपूरनअसभाष्यो पृथमहिंरंगनाथक
हिराष्यो १० अधिकारीयाकोऽहैजोई विनुप्रीक्षालइहेलषिसोई
११ तातेजानिअसंभवअवहूं कीजैएहिमंत्रार्थनकवहूं १२ प्रभु
सासनकैसेकरिकीजै विनु कीजैकतप्रभुहिपतीजै १३ तवपूजक
हरिसासनपाए गोष्टिनाथसोंवचनअलाये १४ रामानुजसवगुन
नप्रवीना यासमसंस्रतिआननचीना १५ तुमजियकोतजिसक
लसंदेहू देहुरुचिरमंत्रारथएहू १६ दोहा सुनतपूजकनकथनअ
सगोष्टिपूर्णरुचिमानिप्रभुसासनधरिसीसनिज भन्यो वदनमृदुवानि
१ चौपई आवहुरामानुजममगेहू मैमंत्रार्थदेहुंतोहिनेहू १ अ
सकहिगोष्टीपूरनगवने रामानुजआयेतहिभवने २ पैमंत्रार्थंदि
योनहितासा फिरिभवनजतिनाथनिरासा ३ असदसअष्टवारत
हिधामा कियेगवनजतिपतिअभिरामा ४ उपदेसनकीनोकछु
नाहीं मंत्रारथरामानुजकाहीं ५ वारनवमदसपुनिअभिलाषे ग

येभरोसविपुलजियराषे ॥ ६ ॥ तवगोष्टीपूरनअनषाई जाहु
जाहुकटुगिराअलाई ॥ ७ ॥ सोसुनिजतिपतिषायगिलानी
फिरेनिरासरुदनमुषठानी ॥ ८ ॥ भवनजातइकसंतनिहारी
रामानुजकरदसादुषारी ९ आवारंगनगरकहंसोई संभ्रमहृदय
सोचवसहोई ॥ १० ॥ गोष्टीपूरनसोंद्रुतजाई सोरामानुजदसा
सुनाई ॥ ११ ॥ सुनिगोष्टीपूरनदुषतासा भयेसिथलतनदयाप्र
कासा ॥ १२ ॥ बोलिएकसेवकसमुझावा रामानुजपहंवेगपठा
वा ॥ १३ ॥ तहिद्रुतजायमोदप्रदवानी रामानुजकहंवदनब
षानी ॥ १४ ॥ दोहा गुरुगोष्टीपूरनतुम्हैबोल्योसुमतिनिधान कर
हुप्यानगुनिरुचिरहितअवनधरहुचितआन ॥ १ ॥ चौपई गुरु
कृपालदीननहितकारे अवमंत्रारथदेहितुम्हारे ॥ १ ॥ चलहुआपु
एकलगुरुधामा होहिंअबासिपूरनसवकामा ॥ २ ॥ सुनिरामानु
जआनंदछाये गोष्टीपूरणभवनासिधाये ॥ ३ ॥ तवकूरेसदासरथि
दोई चलेसंगरामानुजसोई ॥ ४ ॥ देषिगोष्टिपूरणजनभाषा
मोरगुरुकृपालकहिराषा ॥ ५ ॥ चलहुअकेलपूरिमनमंडा लियै
संगउपवीतात्रिदंडा ॥ ६ ॥ सिषनसंगजनिलेहुसुजाना घरहिंअ
वसिदूषनगुरुज्ञाना ॥ ७ ॥ निश्चयकरहिंकोपअधिकाई तापरहो
हिंनतुमाहिंभलाई ॥ ८ ॥ रामानुजभाष्योतिनकाहीं तुवनकरहु
चिंतामनमाहीं ॥ ९ ॥ हमसहजाहिंसवलेववनाई जहितेंगुरुन
वराहिंरिसभाई १० ॥ याविधभनतपंथमुषवानी आयेगोष्टिनग

रसुषमानी ॥ ११ ॥ गुरुगोष्ठीसनमुषकरजोरी कियोदंडवतप्र तिनथोरी ॥ १२ ॥ सिषनसहितरामानुजकाहीं तवगोष्ठीपूरनल षिताहीं ॥ १३ ॥ लषिश्रजोगनयननरिसल्याये उग्रवचनजतिप तिहिंसुनाये ॥ १४ ॥ हमत्रिदंडउपवीतसमेतू कहिपठयोआवन तुबहेतू ॥ १५ ॥ तोतुमकतसिषसंगलिवाया कियेउलंघनमोरर जाया ॥ १६ ॥ दोहा तवरामानुजनंम्रमुषविनयकीनकरजोरि नाथउलंघनदीनतैंभईनसासनतोरि १ चौपई ल्यावनसंगदंडउ पवीता प्रभुसासनअसरह्योपुनीता ॥ १ यहमोरेसिषदीनदयाला दऊदंडउपवीतरसाला ॥ २ ॥ तवगुरुभनेवदनगतमाषा कोउप वीतदंडकहिभाषा ॥ ३ ॥ गुरुकृपालअनकूलनिहारी रामानुज असगिराउचारी ॥ ४ ॥ दासरथीप्रभुदंडहमारा अरुउपवीतकू रेसउदारा ॥ ५ ॥ यहजु ाधरमसहायकहोई निवसतअंगसंग ममदोई ॥ ६ ॥ गोष्ठिपूर्णनवागिराउचारे जदापिदंडउपवीततु म्हारे ॥ ७ ॥ तद्यपिआवहुइतैंअकेले मंत्रराजसुषलेहसु हेले ८ ॥ इनकहंजथाजानिअधिकारी तुमकारिहौउपदेस विचारी ॥ ९ ॥ तवरामानुजजायइकाकी वैठेगुरुपेंसु मारिपिनाकी १० लषिसुपात्रगुरुकृपानिधाना दीनसुनायमंत्र कलकाना ११ वारवारपुनिदीनासिषावन मंत्रराजएहपावनपा वन १२ दोहा याकोप्रकटनकरहुजनराषहुजतनदुराई भुक्तिमुक्ति जगकरनकलनरनसरवसुषदाई १ चौपई एवमस्तुकहिजतिपति

ज्ञानी करिप्रणामपदपरसतपानी १ लेतविदायरंगपुरआयो जानिधंन्यनिजजनमसुहायो २ तहंनरसाग्दूलभगवाना रह्योल लितइकभवनमहाना ३ माधवमासतहांजवआयो नरहरिजन ममहुत्सवछायो४ देसदेसतेंसंतनिकाये तेलोलादरसनहितआये५ अतिसंघर्षभयेपुरमाहीं जहंतहंसाधुसमाजादिषाहीं ६ चहुंकित करतसंतपरिवारा जैहरिजैहरिघोषअपारा ७ तवजतिनाथगुन्यो मनमंता जुरेआयइतसंतअनंता ॥ ८ ॥ अष्टवरनतेंपर कछुनाहीं स्रवणपरतअघकोटिनसाहीं ॥ ९ ॥ ताते अवसिका जयहकरहों चढिउतंगमंदिरस्वरभरहों १० अष्टवरनअगहहरनसु नाई करहुंअधमउधरनसमुदाई ॥ ११ ॥ करिविचारअसजति पतिजीके सुमरतचरनकंजसियपीके १२ ॥ दोहा तहिदिनभई अधरातजव उठिअकेलसुषछाय अतिउतंगप्रभुरंगकेचठचोद्दार द्रुतजाय १ चौपई जहांअनकसिषसेवकसंगा जुरयोसमाजसंत वहुरंगा १ रामानुजमुषवारंवारा अष्टवरनतहंमंत्रउचारा ॥ २ ॥ चौहतरजनस्रवनसुहावन सोतहंपरयोमंत्रजगपावन ३ तेजोगी श्वरभयेउदंडा पायमुक्तिसुषसुजसअषंडा ४ पीठकहायसंतसुभ वेसा अवलोंविदतसोदक्षणदेसा ५ जवजतिपतिअसमंत्रप्रकासा तहंगोष्टीपूरनद्रुतदासा ६ जायमरमनिजगुरुहिंजनायो प्रभुहमदेषि हगनसवआयो ७ गुप्तमंत्रभगवनतुवजेहू जतिवरकहंदीन्योलषि नेहू ८ वरजिदियोप्रभुवारहिंवारा करिहोकवहुंनप्रकटउद्धारा ९

तीनिमंत्रजतिपतिद्रुतजाई चढिउतंगप्रभुभंगिरजाई १० ऊचेस्व
रमुषभलहिंअलावा दीन्योसवकहंप्रगटसुनावा ११ एहअनुचि
तताकरहमपाई दियो आयप्रभुतुमहिंसुनाई १२ दोहा गोष्टीपू
रनसुनतअसभरेपरमरिसनैन रामानुजकहंकटुसठेपटेसंतद्रुतलैन
१ चौपई आयसंतरामानुजपासा गुरुसासनजसवदनप्रकासा
१ ॥ रामानुजकछुविलमनकीना गुरुपंआयहरषमनलीना ॥ २
तवगोष्टीपूरनतहिहेरे भरेकोपकरिनैनतरेरे ॥ ३ ॥ भाष्योरे
मूरषमतिहीना मैजोइमंत्रराजतोहिदीना ॥ ४ ॥ सवसास्त्र
नमहंगोपमहाना कवहुनअधरवहिरनिकसाना ॥ ५ ॥ मैतोहिजा
निपात्रअधिकारी तवदीन्योतुवश्रवणउचारी ॥ ६ ॥ वारअनेक
तुम्हैसमुझावा तापरदुरमतिसपथधरावा ॥ ७ ॥ जनिकाहू सोभू
लिभुलाई गोपमंत्रएह देहुसुनाई ॥ ८ ॥ जोकवहुकितुमाकियहु
प्रकासा तोसातिलषिहुनरकनिजवासा ॥ ९ ॥ सोतुवमंत्रराजमनु
सारू चढिउतंग प्रभुरंगद्वारू ॥ १० ॥ ऊचेस्वरवहु वारउचारा
सुनतभयोतहमनुजअपारा ॥ ११॥ गुरुसासन भंगनतुवकीना दी
सतहोकोऊ मनुजमतीना ॥ १२ ॥ दोहा तुमहिंसास्त्रबिधिदंडअ
वदेनउचतगुरुद्रोहि जोमिथ्याकरिवचन तुव वंच्योदुरमातिमोहि १
चौपई तवजतिपति जुगजोरतहाथा कहिससुनहु विनतीममना
था ॥ १ ॥ प्रभुप्रथमाहिं उपदेसनकीनो एहअष्टाक्षरू पहरिची
नो ॥ २॥ तुम्हरे श्रवण रुंधरहमभरऊ काहूसोजनिभाषणकरऊ ३

पावनराजमंत्रएहजोई जासकरन कलपृवसनहोई ॥ ४ ॥ कोटि
जनमअगतास विध्वंस करहिंगवन हरिभवनअसंसे ॥ ५ ॥ प
सहिंनवहुरिजगतजंजाला हरिसेवनसुषलेहिंविसाला ॥६॥ वि
आसापरीक्षाविनुकोऊ कराहिंमंत्रउपदेसनजोऊ ॥ ७ ॥ होहिंसोअ
बसिनरककरभागी वेदपुराणभनत असवागी ॥८ ॥ सोमैसुनहुदी
नदुषहारू निजमानसकिय विमलविचारू ॥ ९ ॥ चढिऊचेकं
भवनदवारा राजमंत्रएहकरहुं उचारा ॥ १० ॥ जोनरहरि उत्स
वअभिलाषी लाषनआयसंतहाचेराषी ११ जिनजिन श्रवणमंत्र
हपरहीं तेहरि भवनगवनद्रुतकरहीं १२ दोहा मैजाऊं तोजाउंइक
नरकवातकछुनाहिं पहुंचाऊंइनजननाविनु जतनपरमपरकाहिं १
चौपई जोममअनुचितमंत्रपुकारे अरुमोरे असनरकसिधारे॥ १
हरिपुरलाषनजीवासिधाहीं तोकछुहानिनाथमोहिनाहीं २ वरक
गवनअसदीनदियाला मोरेसुजससुषदसवकाला ३ ऐहिगुनतमैदी
नउवारा अष्टवरनचढि भवनउचारा ४ गिरागूढरामानुजनीकी
पावनश्रवण सुषदप्रियजीकी ५ सुनिगोष्टीपूरनअनुरागे मानसविवि
धप्रसंसनलागे ६ याकेजिये अवधगतदार्या एहअवतार सेषसतिगा
या ७ संतभेषआयोजगमाहीं केवलअधमउधार नकाहीं ८ अहो
परमजीवनहितकारी देषहुनेजदुषदियोविसारी ९ असविचारि
निजमानसमाहीं गोष्टीपूरनह रषितहाहीं १० धंन्यधंन्य
मुषमुषरउचारी मिलेदौरिनिजभुजापसारी ११ गदगदगिराप्रेमरस

पागी भनेवदनमनुवचनाविरागी १२ मोहिपूरवकछुरह्यो नभेवा तुमसाक्षातमोरगुरुदेवा १३ सकलसृष्टिआधारसुहाये तुमहुंअनंत नामजगगाये १४ निजआधीनमोहुअवलेषी रहहुसदाअनकूलवसेषी १५ असप्रकारमृदुवचनअलाई रामानुजकहंनिकटाविठाई १६ दोहा सुभगज्ञानवज्ञानजुतविमलहितकउपदेस दीन्योजदुपतिपारथैंजमिकरिकृपावसेस १ चौपाई वहुरिवुलायसुवनुजिलीन्यो रामानुजकरसेवककीन्यो १ पुनिगोष्टीपूरनमृदुवानी भनेवदनमानससुषमानी २ अवतुमरंगनगरहितकारी सिषनसहितद्रुतजाहुसिधारी३ जामुनसुतवररंगउजागर सुमतिप्रवीनज्ञानगुनसागर ४ तासोंसुषदरुचिरमनभावाकरहुजायसतसंगसुहावा ५ गुपतारथमंतरसुपदाईराष्योजामुनतासुपठाई ६ सोतुमलेहुअवसिमुदमानी सर्वप्रकाररुचिरहितजानी ७ सुनिगोष्टीपूरनअसभाषनजतिपतिचलेलाषअभिलाषन ८ दासरथीकूरेसउमंगा औरहुंचलेज्ञातसिषसंगा ९ मारगकाटिरंगपुरआये वसेभवननिजआनंदछाये१०सुनतलोगदरसनअनुरागे चारिओरतेंआवनलागे११अष्टाक्षरकरिवदनउचारन लागेजातिवारजीवउधारन १२ भूरिभूमिमंडलतलछावा रामानुजकरसुजससुहावा १३ देदैमंत्रदानसवकाहीं कियेकृतारथलोगसवाहीं १४ रामानुजप्रसादसंसारा उधरेकोटिपातितपरिवारा १५ आयेरंगभवनसुषभीनें रंगनाथप्रभुदरसनकीनें १६ वारवारनम्रतकरजोरिकियेप्रणामप्रीतिनहिंथोरी १७ सानकूलतवकृपानिधाना

वोलोरंगनाथभगवाना १८ मैजान्योतुवभक्तउदारे अगनितअधम जीवजगतारे १९ अहींनभयोनहोवनहारी तुवसमानजीवनहित कारी २० भलोसुजससंस्रातिविसतरयो कोटिनमनुजजीवउद्धरयो २१ वसहुभक्तअवभवनसुषैना तुमरेसर्वकालकछुभैना २२ भन तवचनअसकृपानिधाना रंगनाथभयेअंतरध्याना २३ असएहचरि तचारुमनभावा रामानुजकरमैंकछुगावा २४ दोहा सर्वअर्थसाधि कसुगमसुषदसुजसप्रदचारु सेवतसहजाहिंलेहिंनरभुक्तिमुक्तिसंभारु १ रंगनाथपदपदमदृढकरनभक्तिरातिनेहू जरनदोषदुषनरनसवह रनसोकसंदेहु २ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजम्बूकाश्मीराद्यनेक देशाधिपतिप्रभुवरश्रीरणवीरसिंहाज्ञप्तकविमयांसिंहा विरचितेभग क्तिमाहात्म्ये रामानुजचारितंनामसर्गः ४

अथद्रोपदीचरितं ॥ दोहा ॥ अवप्रसन्यप्रदहरनमनकरनसरनश्री
कंत पंचालीपावनकथावरनहुंसंतमहंत १ संतसुजसमधजासज
सजथापदममकरंद करियपानसादिरसरसस्त्रोतासुजनमलिंद २
चौपई धर्मपुत्रजगधर्मप्रधाना भूपजुधिष्टिरविदतमहाना १ तास
प्रतापसुजसजगभारी दुरजोधननहिसक्योसहारी २ उपज्योदेष
विपुलजियमाहीं हरननासुछलवलकरिचाहीं ३ विरच्योअंतभ
वनगतव्रीडा दुर्योधननृपद्यूतसक्रीडा ४ करनदुसासनसकुनहुं
चारी गुन्योमंत्रनासिककुलसारी ५ वैठेआपुअंधनृपपासा वो
लिपठयोनृपधर्महुलासा ६ वरज्योहृदयकपटसरसाइं वीरधी
रधुवपौंडकभाई ७ साधुसरलचितकपटवहीने पांडुपुत्रमनहर
षअलीने ८ सुमरतकृष्णचरनवडभागे चलिआयेमानसअनुरा
गे ९ जहंधृतराष्ट्रजोरिसमाजा रह्योरुचिरनिजसभाविराजा १०
करिप्रणामतहंपांडुकुमारा वैठेअंधभूपदरवारा ११ वोल्योवच
नसुजोधनताहां सुनहुप्रवीनधर्मनरनाहां १२ हमसनकरियआ
जगतव्रीडा तुमहुंभूपवरद्यूतसक्रीडा १३ परेजुद्धद्यूतसयहिभाती
धरतवीरनृपसनमुषछाती १४ एहअवसरनहिंचूकनजोगू करहिं
भूपअपजससवलोगू १५ दोहा समयपरेपरसूरकहंहाटिपाछि
लपगदेन घटनगरवगरतादिवलकुलकलंकजगलेन १ चौपई
असजोधनादियतरकवसेसा सावधानाकियधर्मनरेसा १ भीषमद्रो
णाचारजजाहां ताहिसमाजवैठिनरनाहां २ भूपसुजोधनसोंअ

नुरागे द्यूतकेलिकलखेलनलागे ३ सकुनसुजोधनगुनतअजासा दीनचलायकरनछलपासा ४ क्रमक्रमतहांधर्मसुतसारी छलवसदी नविभूनिजहारी ५ लषिअसक्कधृतराष्ट्रराई हरतवस्तुसवदीन दिवाई ६ तवदुर्जोधनपितुहिंवषाना हमजीत्योनृपाविभूमहाना ७ प्रभुदायाकरिसकलदिवायो दीननाथएहहमाहिंनभायो ८ अव नकरियअसदयाघनेरी कौनदेतजीत्योपणफेरी ९ असकहिवहुरि सुजोधनराई धरमसुवनद्रुतलियेवुलाई १० सरुचिनृपतिजुगखेलन लागे असप्रनवदतद्यूतरसपागे ॥ ११ ॥ अवकावारहारजहि लीनो तहिरविवर्षवासवनचीनो ॥ १२ ॥ दोहा एकवरषअज्ञा तनहंविचराहिंसंसृतिसोय जोप्रकटहिंतववासवनआनवरषदसदोय १ चौपई असमूइकारपरस्परभयऔ पासासकुनिडारितवदयऔ ॥ १ ॥ भूपजुधिष्ठिरसरलसुभाऊ तेअगकुमतिकुटिलरतदाऊ २ लष्योनतिनकरकपटअजासा छलवसहारिगयेनृपषासा ॥ ३ दुष्ट समाजउठयोसवदेषी सुजनसोचउरउपजवसेषी ॥ ४ ॥ तवजो धनमुसक्यायवषाना राषियजौनरह्योकछुआना ॥ ५ ॥ विलषतध रमसुवनतवकहयौ भवनएकद्रुपदीअवरहयो ॥ ६ ॥ पणयैसोऊ राषिहमदीनी जोकुरुनाथजीतितुमलीनी ॥ ७ ॥ तोहमारनिश्च यवनवासा असकहिडारिदीनद्रुतपासा ॥ ८ ॥ हारिगयेनरनायक सोऊ महांअनर्थभनेसवकोऊ ॥ ९ ॥ नीतिनिधानधर्मसुतधीरा रतवज्ञानसुमतिगुणषीरा ॥ १० ॥ महांविदुषविद्वानउजागर वेत्ता

वेदसुजससुषसागर ॥ ११॥ भक्तिप्रधानजानजलक्रीडा भाश्रसक्तकसद्यूतसक्रीडा ॥ १२ ॥ दोहा अहोदैवभावीप्रवलजांकेन्याय तिआय ज्ञानध्यानधीरजसुमतिजातसकलविलगाय १ चौपई नतरधर्मसुतद्यूतसजोगू धरनमजादविदततबलोगू १ दुरगमहोनहारसंसारा सोनटरहिंकियकोटिविचारा ॥ २ ॥ अवतारनतेंचूकिनएहू वृथादोषजनिभूपतिदेहु ॥ ३ ॥ असविचारिसज्जनसवकोई भयेमोनभावीवसहोई ॥ ४ ॥ तववोल्योजोधनतजिषोरी सुनहु दुसासनसासनमोरी ॥ ५ ॥ जायभवनगहिद्रोपतिकाहीं ल्यावहु वेगसभासदमाहीं ॥ ६ ॥ हारिदईपैंडकनिजनारी अवजीतेपर भईहमारी ॥ ७ ॥ अभैपकारिपानतद्रुतल्याई सभासकलकहंदेहू दिषाई ॥ ८ ॥ सुनतदुसासनसासनराई अंतहपुरकहंचल्योसि धाई ॥ ९ ॥ दुरमतितजतसकलकुलकानी आवाद्रुपदिभवन अभिमानी ॥ १० ॥ तहिअवसरतृयधर्मसुजाना एकहिचीरकि येपरिधाना ॥ ११ ॥ मुकताकेसिपुसपवतिहोई वेठियकांतभवन निजसोई १२ दोहा त्यगतदुसासनलाजतवभन्योवचनसुनभाम हारयोतुवपतिद्यूततोहिसजुतधरनिधनधाम १ चौपई तोहिजील्यो दुरजोधनराई मोहिसासनअसकाठिनसुनाई १ आपनदासिजानि जियदारा ल्यावहुभुजागहितदरबारा २ भामानिअवविलंवजनि कीजै उठहुपंथपगआगलदीजै ३ चलहुसभादुरजोधनराई वैठयोजहंसमाजसमुदाई ४ जवअसकथनदुसासनकीना भई

द्रुपतिमनविकलमलीना ५ उडिगईवदनज्योतिसवलाली पिय
रिभईलषिसमयकुचाली ६ हाइहाइदईवन्योअजोगू कहांजा
ऊंकसदेषतलोगू ७ विलपतगिरावदनमृदुकहयौ मोरिमुकतके
सिगतिरहयो ८ तातेंभलहिंविदततुवकाहीं जैवेजोग्यपुसपवति
नाहीं ९ जोउपकारकरहुकरिदाया दसाविलोकिमोरएहकाया
१० समुझावहुकुरुनायककाहीं तोअसाधतुम्हरेकछुनाहीं ११
अपतहोतपतराषनहारे वीरधीरपरपांरनिवारे १२ परदुषदेषि
लहतदुषभारी तुमसेविदतविस्त्रउपकारी १३ दोहा सुनिश्रुति
वचनवनीतअसद्रुपतसुतामृदुपूत आजहुकलिभवमनुजमनहोतद
याद्रविभूत १ चौपई तवतोरह्योसिद्धापरछाया कसनभईतांकें
उरदाया १ एहभावीकरगौरवताई उपज्योद्वेषदुष्टमतिछाई २
भृकुटिवकरिसदृगनदिषाई वोल्योवदनसजोधनभाई ३ नहिअ
वकासउक्तअवमोहीं मैनीकेजानतहौंतोहीं ४ कहिकहिवदनतंअ
मृदुवागी तृयचरित्रकरिवांचिनलागी ५ जोनचलहुउठिआपुनिदानी
तोमैअववहिंगाहितकचपानी ६ लैजैहौंआगलधरितोही देषियकौन
निवारतमोही ७ क्रूरवचनअससुनतमहाना धर्मपतनिपतिव्रताप्र
धाना ८ सहिमिसकुचिमृगिजथामृगेसू भईमौनलषिविपुलकलेसू
९ गुनतमनाहिंमनआजहमारे पूर्वपुन्यसवभयेनिकारे १० दैवकव
नएहवन्योकुचाली विलपतविपुलसोचपंचाली ११ तोलोधायधरन
हितदारा हाथभ्रातकुरुनाथपसारा १२ भन्योद्रुपदिकरिनैनतरेरे रह

हुदूरिआवहुजनिनेरे १३ धनुगांडीवधरनधृतिधारी पारथविदतसु रासुरझारि: १४ भीमनकुलसहदेवअषंड। वलउदंडभुजदंडप्रचंडा १५ धर्मभूपसवसंस्त्रातिजाना मानतइंद्रवरुणजहिआना १६ दोहा तिनवोरनकरइछतजगअगपकरततुवमोहि महाविकटविक्रमिप्रतक्षलषनपरतचषतोहि १ चौपई सुनिअसउग्रवचनपंचाली भन्योवदनसासनकुलचाली १ नृपअजानजानेहमसोई वीरधीरतुवविक्रमिजोई २ उनकरअवभरोसजनिकीजै मृगतृसनाजलतृषानछीजै३ रेनिदानजान्योकछुनाहीं मैभाष्योपूरवतुवकाहीं ४ तोहिसमजसंपतिजुतहारी भयेगवनकाननअधिकारी ॥ ५ रेजढतिनकरकौनवडाई नृयहारतजहिंलाजनआई ६ असकहिकुतअरुनदृगकीने श्रीविभूतिआयुषकुललीने ७ पावकदहनद्रुपदिअपमाना जारतसकलअधमअगखाना ८ जायद्रुपदनंदनिकचगहेऊ मानहु कालपासवसभयऊ ९ हायहायदईराटितवानी लैगवन्योवरवसअभिमानी १० भयोअनर्थविपुलएहघोरा आरतसोरमच्योचहुंओरा ११ जुस्योसमाज सभासदजाहां लावापकरिदुष्टमति ताहां १२ अधोवदनतवनयननिवाई दुषितदीनद्रोपदिअकुलाई १३ ठाढीलजितमौनसकुचानी भावीदेवप्रवलजियजानी १४ तव कटुवचनसुजोधनराई वोल्योहरषि मंदमुसक्याई १५ नृपतिजुधिष्टिरद्यूतसमाहीं भामनिहारिगयेतुवकाहीं १६ दोहा अवतेंतुमहमरीभई तियताजितिनकरनेहु तोहिवनाउवदासिअववसहु सुषितमम

गेहु १ चौपई असकहिवदनसुजोधनराजा टोक्योउरुनिजमध्यसमाजा १ सकुचजाजियसकलविहाई वैठाहिंद्रुपदसुताइतआई २ लपि असअधमअनी तिकुचाली वोलीवदनवचनपंचाली ३ भूपसाचिंवसे वकजुतभ्राजा वैठयोइतसवदाऊ समाजा ४ कुलगुरुविप्रदेवरिषिराई नातिजातिसज्जनसमुदाई ५ असगूरुजनसदसभामझरा मोरकथन एहअनुचितभारा ६ परिहारि सकुचसोचकुलकानी लागीअभयभननमुपवानी ७ एहमेरोअपराधवसेषी क्षमहुनाथकुसमयजियलेषी ८ परवसदुषितदीनजगमाहीं कानकरतकछुसूझतनाहीं ९ असकहिवदनवहुरिमृदुवानी वोलीद्रुपदिनीति दरसानी १० मैतोपाचहुपौंडक भ्रातारहींपतनिसंस्रतिविक्षाता ११ हरयोएकधर्मसुतराई एहकैसेमोहिदेहुजनाई १२ जथाजोगनिजहृदयविचारी दीजेउत्रधर्मअनुसारी १३ ॥ नतविनुसम्मति पाचौभ्राता हाराहिंएकअसंभववाता १४ दोहा सुनतसभ्यसतजनसकल द्रुपदिनीतिरतवानी रहेमौनदुषपूरअतिकालकूरगतिजानी १ चौपई तवअनहितकटुवचनकराला वोल्योदुरजोधनमहिपाला २ रेद्रुपदीसुननिपटनिदानी कहकरतकसकलपतवानी ३ वाक्यजालसव वृथातुम्हाराकौनइछतहमतोहिउवारा ४ तोलोभन्योकरनअभिमानी महांवक्रकटुअनहितवानी ५ सुनहुदुसासनसुमतिप्रधाना मोरकथनसंततसुषदाना ६ वुधजन विदतनीतिमतगाया रिपुसनकरियकवहुंनाहिंदाया ७ तातेएहमसत्रुननारी प्रीतिवतीअतिप्राणनप्यारी ८ सासनभूपनमानातिधीरा

करहुचीरगतनगनसरीरा ९ असएहिकरदुरदसाधनेरी जरहिंदेषिद्द
गसनमुषवेरी १० करनकथनअससुनतदुसासन पततदुष्टदुरमतिकु
लनासन११ नीतिविरुद्धलाजगतजाके लग्योदकूलहरनद्रुपदीके
१२ दोहा अपतकरनपतद्रोपदीभयोउदितमतिमंद जहिसमाजवै
ठेसवेसुभटकुमदकुलचंद १ कवित्त धर्मधुरिपरमहिंदरधर्मसुतधीरके
धरनकोंधरनिमेनदूसरोत्यौंहिंगदाधारिभीमभुवनप्रसिद्धभूरिभारथग
रूरिगेरिवेरीनकोभूसरोपार्थकोदंडिदंडभुजनउदंडजासविक्रमअष
डचंडषंडिनरिपुसरो तैसेहिंनकूलओसहदेवधनुधारिध्रुवजाकोभा
रिभटभूमिभूषभानषूसरो १छंद धरनधनुर्धारजगहरनपरपीरतगभी
षमभटवीरनिधिधर्मगाये वेदधनुधरमचारजाविदतविस्वसवद्रोण द्रुम
कलमनुअवानिछाये कृपाचारजचिरंजीवधनधरमजगविदुरलगभक्त
भटसुजनराये महंरथीअतिरथीसिथलओरहुंसुभटरहेमनमोनसंपाति
हराये१दोहा अधोवदनदेषतलाजितवंकदृष्टिसववीर भयोनवारनकर
तकौंपंचालीकीपीर १लषिसनेहकोपरस्परवृथाविरोधविचारकाहुध
रमधारजगुनतरह्योमानिनिरधार २लषिभावीभगवनप्रवलसाधूसुज
नव्रतधारिदयाविवसआरतसकलदृगनविमोचितवारि३ सवैय्या दे
षिसभासदसूनतहांदवलागतज्योंवनव्याकुलऐनि छाडतआसनि
रासासिद्रोपदिलेतउसासदुषारतवैनी भीमभुजानकोविक्रमज्योंभव
क्योंनपरेअवदेषतनैनीपारथकेधनुधारनकोकिधांआजसमाजभुजा
सकुचैनी १ ओनजग्योजसकोपणप्राक्रमदेषिमहाअपदादुषमेरो

भालकेभागहरेहमरेअवको।उवारनहारनहेरो रक्षककोऊनतक्षककसे
सवपक्षकूपक्षप्रतक्षनवेरो पैएकदीनदयालकृपालहैंदेवकिलालसहा
यकमेरो २ कवित्त औरनासहैयादुषदीनको मटैयासषेसज्जनसगे
यामैंनश्रांषननिवापेहैं मानकेदवैयाज्ञानध्यानकेधनैया आजमोको
हायदैयादेषोहोतनसहायहैंचीरनारषैया नागहैयाहाथदीनहुंकोपी
रनाहरैयाकोऊनेकनमनायहैं काहकरुंमैयाहैनकालकोकटैयाको
ऊकाकिसरनैयामोकोंदेतनवतायहैं १ वादिभैसहैयाकोपैदोजिये
दुहैयादुषदीनताजनैयाकोनाटेरकोसुनैयाहैं विपतीछमैयाओघरै
यानागुसैयाकोंऊधोरनावठैयावोरहुंकोनातकैयाहै वडेओवडैया
वीरविक्रमीकहैयाधीरधर्मधरैयापीरकोनाउवरैयाहैं तातमातभैया
मेरेनेकनासहैयाएकद्वारिकावसैयाआजपैजकेरषैयाहैं २ दोहा द्रु
पदसुतापतजातलषियोंविलपतदुषिदीन घटतनीरलषिज्योंनकलले
तपलकपाठीन १ कवित्त एरिदईकैसीभई देवव्रतद्रोणकृपदेषैं
मौनसूनसारमेरीहोनहरको विदुरविकरनलोभीषमउदारआजको
ऊनआधारहोतमोऊनिराधारको जोधनकोत्रासलवसंकितनलेतसा
स कैसेंकेअजासदैवदीजियोविचारको पतकेअपतहोतपतिहुंतक
तनसकतभयेआजसोउवारनिजदारको १ देवतादनुजदुजनागनम
नायनेकएकनसहायमेरेवन्योकुसमाजनाथ कौनकीसरनआसिवस
नविनासिमैतोरावरेकीदासिआजराखरोहिं लाजहाथ अवलौंनिहा
रद्वारदूसरोनहेमुरारमान्योसारएकाहितुह्मारमहाराजसाथ जानके

अनाथआतनाथकुरुहाथहुतेंराषोपतमेरादीननाथकीटआजमाथ २
संकटगरासीहायलोगनकीहारीकैसद्वारिकाविलासीमेरीसुधिक्यों
नलयोहै गिरिगईगदाकिधोंभारथधनुषषोयोषरगषरानिकिधोंचक्र
चूकिगयोहैकिधोंगरुडासनकोगरुडागिरायोकिधोंदयाद्रुमदेवहुंको
दायानउदैयोहै किधोंआजकरुणानिधानकोविरदवानजाननापरत
हानहासिहेतभयोहै ३ जानकिकोसंकटविचारकरुणाअगार वार
धअपाररामबांधिपारपायोहैं रावणकोमारपरिवारसोप्रचारजारलं
कसीतेसोकटारलोकजसछायोहै ग्राहकोग्रसतभारआरतपुकारसु
निवारनउवारवेकोवारनालगायोहैंरुकमनिवारलाजराषिदरवारसा
रभूपनगरवगारद्वारिकातेंधायोहैं ४ दीनहितकारिऐसेदीनदुं
षहारिसदादीननउवारिगिरधारि दीनद्यालदेवसेवककोसांकरो
निवारि सोकगारि सारि आरतविदारिप्रभदेवाकिकेलाल
देव कबहुंसहारिनानिहारि भतभारभारिवानहैते हारिसोधि
सारिकयोंकृपालदेव कौनअपराधवारिआजमैंविचारिजातें नाथ
नाउवारिधारिकरुनाविसालदेव ५ दीननाथदीनवंधुसहजनेसहा
सिंधुकरुणामयंदुकरुणाकरनभारिये करुणासुजानकरुणाअनुप्रमा
नआजकरुणानिधानकरुणाकोनवसारिये विरदकीलाजमहाराज
सुरराजराषिराजवृजप्रणआजआपनोनहारिये जानकैअनाथनाथ
कोजियेसनाथमोकोवूडतदेहाथजदुनाथजूडवारिये ६ जानातिहुंनी
केकुरूवंसकोविध्वंसहोवधरमनरेसकोप्रसंसाजगछायगो माधवज

रूरचक्रक्रूरचंडचूरगहिंगजनगरूररिपद्वारिकातेंधायगो पांडसुत
सासनप्रकासनकरेगोभूमिपूरनप्रमो दमूरिभौननभरायगो थानोका
जहोहिंआजएकाहिंअकाजदीननाथगईहाथमोकोलाज हुनआय
गो ७ दोहा जमिप्रानननतेंवितनपृथतामिपतनेंनहिंप्राण देनपरेंअ
वप्राणप्रभजातिजगतपतजान १ हरिगीतछंद नतरप्रणतउवारगि
रधरगरवगंजनग्वालजू मोहिक्रूरकालतेंराखिलेजियनंदलालकृपाल
जू १ अपनेविरानवनेअहोसवहानपतमेरीचहैं पटभगनहोताविन
गनतकिअववदनवचकछुनाकहैं २ द्रवहोदयानिधवेगनतपुन
कालहाथनआयगो पाछेअवसिपछतानपतजुतप्रानप्यानसुहायगो
३ भईटेरटेरतवेरवहुअवसेरघनिअवलोकरी आयेनटाटारिअंट
डारनघंटगजरणागिरिधरी ४ कहुंगरवगाढनभटसनघनस्यामभव
भारतपगे पणप्रणतहरनसुमणंताजिउद्वणंजनस्वारथरगे ५ जहिविर
दवानवखानवेदपुराणप्रणतारतहरनताहिराजबृजनिजकसवि सारयो
आजप्रणअसरनसरन ६ दोहा दुखितदीनद्रुपदीविलपिजवअस
कीनपुकार जातहुतेतवसाल्वसनकृष्णकरनरणारार १ सारितपती
तटहरनपटनटनागरकेकान परीटेरद्रुपदीचकितचौंकिउठेभगवा
न२ कवित्त देषिकैदुसहदुषद्रोपदीकोदीननाथदीनकोगहनहाथवि
रदाचितारयोहै ऐसोहिंसदाहैवानसेवककोअपमानकवहुंनकरुणा
निधानजूसहारयोहैद्रोपदीकोचीरतैसोथाहकोनबीरजैसोऐसोजदु
वीरपणप्रकटउचारयोहै प्रभुकोप्रभाववाकसासनानिवारथ।कअंवर

विवाकपैनहोततांकहास्योहि १रावणसमाजरघुराजकोप्रसाद ज्योंहिं वालिपूतपादनटस्योंहैसूरवीरतें त्योंहिंजदुवीरआजजोधनसमाज चीनहोतनवहीनचीरद्रोपदिसरीरतें वारवारटारनविचारतकलंकभा गिलागिगयोश्रवरपहारभारभीरतें सज्जनसयानविसमानभगवानक्त तकौतकमहानदेषिद्रोपदीकेचीरतें २तवदुरजोधनदुसासनकरनसठ सकुनिसमेतचारिवंसकोंविनासकार मंतकोविचारकोसश्रवरश्रवार राषेदेवकिकुमारकोपपावकप्रकासभार कीन्योंशारकोसदीन्योजार कैपरोससवकाढैं लोकरोसदैकुनीतनकोदोससार श्रायगयेतोलो जदुकमलदनेसमनमानसमहेंसहंसदीननकलेसहार ३ नैननिहा रिदुषदीनकोदुसहभारिमाधवमुरारिवृतधारिदीनद्यालजू माषेमातु दहनदिवागिदनुजारिदेवदूषननिवारिसारिदेवकीकेवालजू देषेतृ पद्रुपदकुमारिश्रायवनवारिआरतविदारिगारिगरवक्रपालजू पाहि पाहिमुषरउचारि भरिवारिदृगआजमोहिसरनतिहारिनंदलालजू ४ दोहा लहिसनेहसुषपीणद्रुतदोपजगाहिंजिमिश्राय अरुचात्रि कजिमिजरतजियलोहिंस्वांतिसुषपाय १ चौपई तिमिद्रुपदीदेषे जदुवीरा पस्योजीवमनुमृतकसरीरा १ भनतप्रणतमोचिनसुरना यक भलेश्रायप्रभुदीनसहायक २ हरनत्रासजनदीनउवारा र सोकहांसऊविरदतुम्हारा ३ अवजोंश्रायप्रभुश्रसरनसरना पूरव कहांरहीतुवकरुना ४ गजगुहारसुनिएकहिंवारा गरुडछांढिक सलियोउवारा ५ मैतोवारवारखगगामी रहीसुमणंकरततुवस्वा

मी ६ जान्योनिजनैननभगवाना देखनहुतोमोरअपमाना ७
असकहिविथतपरमदुषपागी आरतस्वरहिंरुदनकरिलागी ८ ता
सुरुदिनअसदेषिदुषारी सुजनसोचिदृगढारतवारी ९ दीननाथ
नयननिजदेषी जनकलेसदुषदुसहवसेषी १० कंपिउठेनहिंस
केसहारी भयेकोपवसगरवप्रहारी ११ कौरवकुलसंघारनहेतू
भेउग्रयुगदासिंधुभवसेतू १२ दोहा निजपुनीतपटप्रीतिजुतपीतहर
नभवभीत पंचालीपैंदीनद्रुतपालिविरदनिजरीत १ चौपई भने
वचनपुनिदीनसनेहू एहहमारपीतांवरजेहू १ अवहमरेदेषतसठ
जोई वारनकरहिंविवसहठहोई २ आजहिंहतहुंतासुजुत
वंसा सत्यमोरप्रणनाहिंनसंसा ३ तवयहप्रकटकौरवनजाना
कोपेंकृष्णदेवभगवाना ४ भीषमादिसवसुघरसयाने वोले
वचननीतिदरसाने ५ हठपरिणामभलोनहिंभाई द्रुपदिटेकरा
षीजदुराई ६ अवसासनकवहुं कितुमएहा हस्योपीतपटदीनसने
हा ७ तोनिजतजहुं जियनजगआसा जानहुं सकलवंसनिजना
सा ८ मिल्योविपुलपटलाभमनाये कोसभूतनपेंतुमहुंपठाये ९
कृष्णकोपवसजस्योसवाहीं अजहुंनचेतपस्योतुवकाहीं १० वीरवृ
द्धअसनीतिवषानी रहेमौनअवसरअनुमानी ११ कृष्णकोपतव
हृदयविचारी सोहुंनवृत्यभयोहंकारी १२ दोहा द्रुपनंदनिकहलेततुव
पौंडकधरमप्रधान कृष्णकमलपदवंदिद्रुतकाननाकियेपयान १ चौपई
असप्रकारप्रभुत्रिभुवनधन्या गतिअविलोकिद्रुपदनृपकंन्या १

१ नानानिकरकौरवनवंसा कीनसकलभगवानविध्वंसा ॥ २ ॥ दीननाथएहचरितसुहावा मैसंज्ञप्तकछुकमुषगावा ३ वतसलभक्त जासु स्तुतिवरना हरनकलेसधेनुदुजधरना ४ सर्वगुनतमय गुननव होते कठिनकालप्रभुसुमरनकीने ५ करतसहाय आपुनिजजनकी विदतजासुगतिआरतमनकी ॥ ६ ॥ देषहुदुषितदीनअतिभारी परार्धाननृपद्रुपदकुमारी ॥ ७ ॥ सेवततुलभता सुभेस्वामी प्रणत पालप्रभु जनअनुगामी ॥ ८ ॥ अलकरुणाम्रतसिंधुअसाधे भक्ति प्रेमजुतअंत्रअराधे ॥ ९ ॥ रक्षाकराहिंभक्त निजआई दीनवंधुप्रभु दीनसहाई ॥ १० ॥ भक्तनहेतुप्रकट संसारा हरिनिजधराहिं रुचिर अवतारा ॥ ११ ॥ दोहा भक्तसुषदजाहिविरदजग भक्तसकलप्रद काम केवलभक्तनप्रेमवसधराहिंवपुषअभिराम ॥१॥ इतिश्रीद्रौपदी चरितंनामसर्गः ५ ॥

अथशुकदेवचरितं दोहा ॥ जैश्रीपतिजै जगतपतिजैजदुपतिघन स्याम अभयदानपदवान जहिंवरनतवेदपुरान १ जैतिभक्तभवकलप द्रुमजैतिपतितउद्धार जैतिसुधामरनाथजैजैतिमुकुंदमुरार २ जैजैअस रनसरनजग जैमाधवभगवानजैजैकृपा निधानजैसंतसरोजनभान ३ जैजैगणपतिगजवदनविघनकदनप्रदकाम जैतिसदनसुषरदन इकसुवनमदनरिपुभाम ४ जैतिगिरावरदायनीजैकविकुलआधार संतसुजसगुनकथनकहंदीजियसुमतिविचार ५ श्रीसुकदेवपुनीत जगचरितचारुमनरंज वरनहुंवदनअनंतकछुसुमरिसंतपदकंज ६ विरचिजासश्रीभागवतभवसागरकरसेतू पारउतारेजीवजनुवूडतकृपा नकेतू ७ चौपई एकसमयसंकरगिरिराजे उमासहितकैलासविराजे १ तहांकृष्णसुमरनमनलीना धारेसुभगकंधकलवीना २ आयगय नारदरिषिराई वैठेदंपतिपदासिरनाई ३ तवसइजाहिंमुनिनाथउचारा मातुरह्योकछुमर्महमारा ४ जोनसुनहिंकवहुंकिवृषनायक तोकछुकरहुंकथनतुवलायक ५ भन्योविहसिअसवदनभवानी सोतुवकवनमर्ममुनिज्ञानी ६ असकहिमुनिकहंसंगालिवाई वैठी कछुकदूरउतजाई ७ तवमुनीसमुषगिरावषानी मोसोंकह्योनजाय भवानी ८ मैनीकेनिजगुन्योप्रसंगा राषतकपटसंभुतोहिसंगा ९ आपनमर्मतत्वागिरिराई तोसोंकरतनप्रकटकदाई १० प्रतिदिनउरधारतससिभाला उमातोरकलरुंडनमाला ११ यामैजोकछुहोहिं संदेहू तोतुमजायपूछिकिनालेहू १२ दोहा सुनिनारदमुषकथन

असांरपुमनमथनस्त्रीय आयवैठिचिततिषतमुनिसिषतनिकटनिज पीय १ चौपई वंदिचरनमुषविनयउचारी नाथमोहिसंसययक भारी १ करिदायातुवदीनसनेहू हरहुमोरमानससंदेहू २ धारहुरुं डमालउरकाकी करहुकथनमोहिप्रकटपिनाकी ३ लषिनारदक तहरमुसकयाने सुनहुउमाअसवचनवषाने ४ मोरेतुमप्रीयप्राणवि साला तवधारहुंतुवरुंडिनमाला ५ जवजवतुमहुंतज्योतनरामा मैतवतवतुवसीसालिलामा ६ धारतरह्योवछनिजनेहीं राष्योनिज संदारिपणएही ७ संभुकथनसुनिस्रवनभवानी मुनिकियविनयजु कजुगपानी ८ दीननाथदायानिजकरिये आवागवनमोरअसहरिये ९ गौरिगिरासुनिसंकरस्वामी भनेवदनअससुनहुभवानी १० राम तत्वउपदेससुहावा मैतोरेकरिमानसभावा ११ आवागवनदुसह दुषतोरा हरहुअवसिगिरजेपणमोरा १२ असकहिसिवासंगनि जलीने महांअरंन्यगवनहरकीने १३ तहांजायमानसअनुरागे संकरडमरुवजावनलागे ॥ १४ ॥ दोहा डमरुघोषभ्यावनसु नतषगमृगकाननचारि भागिगयेसवभीतवसजनुतनदसाविसारि १ ॥ चौपई ॥ जहितरुतरसंकरमनभायो हरनकिलषजग डमरुवजायो ॥ १ ॥ तासनिकटकोजीवनाआवादूराहिं दूरसुनत धुनिधावा ॥ २ ॥ पैइकरह्योतासतरुमाहीं कोटरज ठिरवासखगकाहीं ॥ ३ ॥ तामधसुकसावकइकचारू रह्योअप क्षसुजसआधिकारू ४ तहितरुतरहरदीनदयाला वैठिललितआस

नमृगछाला ॥ ५ सैलसुताकहंमनअनुरागे रामतत्वउपदेसनलागे ६ ॥ तत्वविचारसुनत सुषकारी लागीसिवादेनहुंकारी ॥ ७ ॥ हरिगुनकथन होतसुभजाहां सदाप्रवलएहवैरनिताहां ॥ ८ ॥ दियोकालकिंचितहुंकारी भईनींदवसपुनिहरनारी ॥ ९ ॥ रामतत्वसंकरउच्चरना परिगोसुकसावककलकरना ॥ १० ॥ भयोजदपितहिज्ञानअषंडा तदपिनतृपतिलेतमनमंडा ॥ ११ ॥ इकाथितलग्योदेनहुंकारी सुनिसुतिज्ञानकथन तृपुरारी ॥ १२ ॥ कछुककालमहंहरवरदानी सैलसुताहिंनीदवसजानी ॥ १३ ॥ वेगजगायभन्योविधुधारी तुमतोसोयरहीइतप्यारी १४ दोहा कोहुंकारीदेतमोहिरह्योप्रकटसुनभाम तवगिरजेभाष्योवचनमोहिनमरमकछुवाम १ चौपई संकरसुनतकोपवसहोई वाजनलगेउमरुनिजसोई ॥ १ तासुसुनतसापषसुषपाई सुकसावकद्रुतचल्योउडाई ॥ २ ॥ महादेवपाछिलतहिलागे भनतजातअसअमरषपागे ॥ ३ रामतत्वसुनिसुकजढजाती अवजैहैंकहंअधमअराती ॥ ४ ॥ जहंजहंचल्योजातसुकधावा विनुसंकरथलकाहुनपावा ॥ ५ ॥ तवदेष्योइकसरवरभारू विकसेपदमप्रांतचहुंचारू ॥ ६ ॥ तहिसरविमलव्यासवरभामा रहीकरतमज्जनअभिरामा ॥ ७ ॥ आईतासुतहांजमुहाई प्रवस्योउदरतासुसुकजाई ॥ ८ ॥ पाछेआयागिरीसउचारा दुस्योउदरतुवचोरहमारा ॥ ९ ॥ भयवसव्यासपतानिअकुलानी पतिसुमरयोकछुभन्योनवानी ॥ १० आयव्यासवहुविनय

वषानी तजिगेसंभुभाविअनुमानी ॥ ११ ॥ तहांव्यासत्रियगर्भ तिवासा द्वादसवर्षकियेसुकतासा ॥ १२ ॥ हरिमायातेंसंकित होई निकसतउदरवाहिरनहिंसोई ॥ १३ ॥ व्यासत्रियेअसकष्टनि हारी भयेकृपावसभक्तउवारी ॥ १४ ॥ सदावानजदुनंदनकेरी भक्तदुसहदुषसकहिंनहेरी ॥ १५ ॥ दीननाथसुककहंद्रुतजाई भन्योवुझायवचनसुषदाई ॥ १६ ॥ दोहा तजिविलंबअव गर्भसुततजियदुषिततुवमात तवरोदनकरिगर्भतेंभनेवदनसुकवात ॥ १ ॥ चौपई अतिअरिष्टतुवसंस्रतिमाया मोपेंजो नकरहिंनिजछाया ॥ १॥ तोमैवेगगर्भतजिमाता औहोंजगत भक्तसुषदाता ॥ २ ॥ नारायणसुनिसुककरवानी परमभक्ति परमारथसानी ३ कह्योअनन्यदासतुवमोरे मायाकरहिंस्पर्शन तोरे ४ तवसुकलेतअभयवरदाना तज्योगर्भजननिसुषमाना ५ पैपितुमातुहिंनैननदेषी भागिचल्योभयमानिवसेषी ६ पाछेसुत सनेहसरसाते व्यासदेवगुहरावतजाते ७ कहांजातहमकहंसुत त्यागी जनमतहिंकसभयेविरागी ८ फिरहुफिरहुसुतप्रानपयारे कवनहेतद्रुतजातसिधारे ९ तजतनव्यासदेवसुकजाने पृवासि गयेगनद्रुमनमहाने १० भयेद्रुमुनतेंतवअसवानी जाहुसदनम मआसतयागी ११ दोहा गिराद्रुमनसुनिस्रवनानिजव्यासदेवमु निज्ञानि फिरेभवनसोंचितसुमतिअतिअचरजजियजानि १ चौ पई सुकहुंनिकसिउतआगलधाये हरिमायामानसभयछाये १

मिलेजातपथसुरगुरुतासा दय। युक्तमुषवचनप्रकासा ॥२॥ सुनहुव्या
ससुतसुमातिप्रधाना मोरकथनसंततसुषदाना ॥ ३ ॥ जद्यपितुमहुंमु
चितसंसारू अनुपमज्ञानभक्तिरतचारू।४।तद्यपिगुरुदीक्षाविनुताता
वृथाविचारवेदविक्षाता ५ तातेवेगविलंवविहाइं करहुआराधनगु
रुवरजाइं ६सोहितकरनसरनगुनिदाया करहिंउद्धनेहरनभयमाया७
सुरगुरुवचनसुनतसुषदाइं वोल्योसुकचरननसिरनाइं ८ दीनना
थअसकोजगत्यागी कोअनन्यश्रीपतिपदरागी ९ कहिस्पर्श
मायानहिकीनो कोजगविषयविकारवहीनो १० कांकेउरदुषसुषनहिं
जाग्यो हानलाभकांकेसमलाग्यो॥११अपजससुजसमानअपमाना
जियनमरनजाहिएकसमाना ॥१२॥ दोहा कोसमदरसिविरक्तअसभ
क्तनिपुणभगवान निजपदसेवकराषिमोंहिभाषियकृपानिधान१ ॥
चौपई सुनिकलकीरवचनमनभाये गीरवानगुरुगिराअलाये
१ ॥ सुकप्रवीनतुवसदसवानी हैंजगजनकभूपविज्ञानी ॥२॥ धारहु
जायअवसिगुरुतोई फुरतुम्हारमनवांछितहोई ॥३ ॥ कारअषंडउ
पदेसप्रकारा जनममरनदुषहरहिंतुम्हारा ॥ ४ ॥ हैसवविधि
उपदेसनजोगू हरनकलेसभीतभ्रमसोगू ॥ ५ ॥ सुरगुरुवच
नसुनताहितकारे नायमीससुकदेवसिधारे ॥ ६ ॥ विगतपंथमुनि
वरअतुराइं पहुंचेजनकनगिरजवआइं ॥ ७ ॥ करिनिवरणश्रम
डगरवसेसा पृथमद्वारतवकियेप्रवेसा ॥ ८ ॥ तहांवचित्रचरितइक
न्यारा मुनिनायकानिजद्दगनानिहारा ॥ ९ ॥ सुक्षमअंगमानरति

हरनी पटअभरनभूषितइकतरनी १० तासुपुरषद्वैताडतठाढे निरदयभरिअमर्षउरगाढे ११ तिनकरदेषिकह्योमुनिराया तियकहं कतताडततजिदाया १२ दोहा तवपुरषनकहसुनहुमुनिएहवृतांत समुदाय पूछहुजनकनरेसतेंसानकूलरुचिजाय १ चौपई तव आगलसुकदेवसिधारे पृवसतहींद्रुतदूसरद्वारे १ देषेतहांपुरषतस दोई निरदयपरमरोषवसहोई २ करतविलापत्रियेइककोरी ताडत देतदंडनहिथोरी ३ पूछयोजवमुनीसकछुकारन तिनहुंकीनअस प्रगटउचारन ४ पूछहुजनकभूपतेंजाई निजसंसयउरलेहुमिटाई ५ तिनकरकथनसुनतमुनिनाथा धुनतसीसमीजतनिजहाथा ६ मानिगिलानिविपुलपछतायो पूरितपापनगरिकतआयो ७ अस प्रकारजवतीसरद्वारा कियेगवनसुकदेवउदारा ८ देष्योदगनचरित असताहीं द्वैभटभूपपुरषइककाहीं ९ रिसवसकसाघाततनदेहीं उरनदयानैसुकनिजलैहीं १० ठाढविलोकतलोकसवाहीं पूछयो व्याससुवनतिनपाहीं ११ तुवजनरोषविवसगतदाया कतताडत सुंदरनरकाया १२ दोहा तिनभाष्योमुनिनाथकहेएहिकरकथानिद नपूछहुजायनरेसतेंसोसबकरहिंबषान १ चौपई चलेसुनतसुकदेव प्रवीना नृपपेंआयसोचमनलीना १ देषिजनकसहिसाउठिधाये वारवारचरननसिरनाये २ सादिरभक्तिभावजुतल्याई कनकासन आसीनकराई ३ विधिजुतपूजनकरतवहोरी पूछीकुसलजुगल करजोरी ४ धनधनआजमोरजगभागा प्रभुपदरजजहिनयनन

लागा ५ जहिकारनमुनिनाथकृपाला धरिचरननलिनममआला ६
जोगजानिकहियेसोइहेतू आपनजनगुनिकृपानकेतू ७ तवमुनि
सअसवचनउचारयो बहुअचरजतुवद्दारनिहारयो ८ सोअनर्थ
नरनायकजानी मोरेउरअतिभईगिलानी ९ असकहिदीन्योसकल
सुनाई जसदेष्योदृगननमुनिराई १० जनकभूपसुनिजोरितपानी
लागेउत्रभननमृदुवानी ११ देष्योजौनप्रथमतुवनारी सोत्रिसना
जगवंचिनहारी १२ भ्रमतजीवताकेवसहोई पावैममपुरताडन
सोई १३ जोदेष्योमुनिनायकआना त्रियसरूपमायासबजाना १४
वंधनपायपरीममद्वारा ताकोइतैनकछुसंचारा १५ तृतीयपुरषवि
लोक्योजोई लेतदंडपीडतवपुहोई १६ जानहुप्रवलमदनमुनि राई
सकलजगतजीवनदुषदाई १७ सुनतमुनीसभूपअसवैना संततसर
वलोकसुषदैना १८ जान्योसत्यजनकवृतधारी कृपापात्रदृढभक्त
मुरारी १९ पुनिमिथलेसनंअसिरनाई पानिजुक्तजुगविनयअलाई
२० नाथनिकटवाटिकासुहावन तहांनिवासकरियानिजपावन २१
जनकविनंतिसुनतहितचारी चलेमुदितमुनिनाथसिधारी २२ दो०
ललितनवलद्रुमभवनसुभसुमनसालिलसुषदाई मनहुंअमरथललषि
विमलवसेव्यासुतआई १ चौपई तहिरजनीनरनायकतरनी
मुनिपैपठीमनहुंमनहरनी १ बहुरिअमोलरतनगणकंचिन मुनिपै
पठेभूपहितवंचिन २ मषसंभारअनेकप्रकारा जोगविधाननरिंद्र
उदारा ३ साधनइमतविरागसुहाये मुनिढिगजनकनरेसपठाये ४

जाननहितअनुरागप्रवीना। एहकौतुकनरनायककीना ५ प्रथमजाम जुवतीनपठायो दुतियेरत्नअमोलसुहायो ६ तृतीयेजग्यजोगसुविधाना चतुरेविरतिपठयोसनमाना ७ अर्थधर्मकामादिसुहाये चारिपदारथसंस्त्रतिगाये ८ इनकहंकीननसुकसूइकारा निसप्रेह अवचलव्यासकुमारा ९ आयेप्रातजनकवडभागे मुनिवरदसादेषि अनुरागे १० हरिसरूपलषिनृपातिप्रवीना वारवाँरपदवंदनकीना ११ विनययुक्तपुनवचनउचारे मैनलिषावनजोगतुह्मारें १२ सोरठा तवसुकदेववषान मोहिदीजैउपदेसअब एहिकारनममध्यान तुह्मरेदेसनरेसमणि १ चौपई हरषतभनेभूपतववागी तुवतोश्रीपतिपदअनुरागी १ सदारामरससुषदसुहावन तुवमतिकियेंपानजग पावन २ मोरेकरियेआपउपदेसू हरियनाथअमभीतिकलेसू ३ तुम समरथजदुनाथपयारे तुह्मरीसासनसीसहमारे ४ पुलकिकह्योतव व्यासकसोरा तुवहरिभक्तवंससिरमोरा ५ भन्योअमरगुरुजथावसेषा संकुलसिद्धिनिपुणतोहिदेषा ६ असकहिसानकूलमुनिराई चलेअनतद्रुतहोताबिदाई ७ धेनुदुहनसमसमयविचारी निसिवास रमहंमुनिवृतधारी ८ भिक्षाटिनस्त्रमकरतसदाहीं द्वैविरक्तविचरत जगमाहीं ९ निरतनिरंतरविरागा हरिपदपदमप्रेममनलागा १० दोहा इकथितवृतीअषंडजुतजगतसुमतिसुतव्यास रहतनलिनजिमिउदकनितकछुस्पर्शनाहिंतास १ जिमिमानतनहिंहरषचिततातिमि वेषादगतहोय विचराहिंसंस्त्रतिसंतजनाविषयमलनतनधोय २

चौपई सोप्रतक्षसुनहोसुकरंभा वक्षमाणसंवादप्रसंगा १
जथासंतजनविषयनरूषे हरिपदपदमप्रेमरसभूषे ॥ २ तथाव
दनसंक्षप्तअभेवा करहुंप्रभावकथनसुकदेवा ॥ ३ ॥ प्रीक्षाले
नसुवनानिजकेरी पठीव्यासरंभाद्रुतप्रेरी ॥ ४ ॥ सोकैसीमनमो
हानिनारी नषसिषमनहुरूपरतिमारी ॥ ५ मृदुअंगीमृगसावकनैनी
गजगामनिकामनिपिकवैनी ६ दियेसीससुभसिंधुररोली धरेउतंग
उरजजुगचोली ७ घुंगटपटविभुवदनदुराई कियेभावनेकनचतु
राई ८ मुखमुसक्यानतवलकछुल्याये जोगिजननमनलेतचुराये९
वेनिमुक्तमंडिनपेंछाई परीचरनजावकअरुन्याई १० मानकपुंज
जममनुसोभा लागेदेंनरसिकमनलोभा ११ दैकपोलकलकाजर
विंदु लियेसंगअनीमदनमहिंदु १२ मानहुविजैकरतजगकाहीं
आईरमनिव्याससुतपाहीं १३ बोलीवदनमंदमुसक्याई कियेभाव
भामनिचतुराई १४ कंचिनकुंभउरोजनसोभा मलयलिपतअंगनम
नलोभा १५ चंद्रमुषीदृगखंजनिवामा निजछविहरनमानरति
रामा १६ दोहा अधरसुधारसमधुरजहिमुषमुसक्यानमिठाई वृथा
जनममुनिजासअसललिनाउरनलगाई १ चौ॰ रंभाउक्तरसिकसुष
दाई अटपटिप्रेमयुक्तमनभाई १ श्रीशुकदेवसुनतमुसक्याने भनेवच
नपरमारथसाने २ जासकृपातेंदुरमतिदंभा करतस्परसकदापिन
रंभा ३ जगपोषनारिरजनजाहिहाथा सदाएकरसात्रिभुवननाथा ४
रूपअनूपअचिंतप्रभाऊ जीवचराचरकेसुषदाऊ ५ जहिप्रसादली

न्योजगपावा सुंदरिनसौंदर्जसुहावा ६ दोहा भज्योमूढचितजोन असिसरवसुषदभगवान वृथागवायोंजनमतहिसुनरंभादेकान १ चौपई गिरागूढमुनिसुनतसुहाई भनीवदनरंभामुसक्याई १ मोदमूरतीमदनमवासिनि अंगअंगकलभावप्रकासिनि २ सोनजुहीकोलता सिसुहाई केतकिमनहुसुवासभराई ३ मधुरहासिअंमृतरसवारी रसिकमृतकजगजीवनकारी ४ दोहा असललिनासुषमूरतीमनरंजनिसुतव्यास उरनलगायोजासनिजवृथाजनमजगतास १ चौपई जवरंभाअसाकियेउचारन वचनवदनमनुमदनउवारन १ जदुपति पदसरोजउरआनी श्रीशुकदेवभनेमृदुवानी २ नलिजलधदुतिस्याम लगाता नैनविसालनवलजलजाता ३ भृगुटिवंकसुकानिदरतनासा मलयतिलककलभालप्रकासा ४ कुंडलकरनमतसक्तसोभाकचकलअवलिअलिनमनलोभा ५ वरहक्रीटमणिमंडितचारू गुंथितवीचसुमनमनहारू ६ दाडमदसनकुंदकलिलाजा अरुनअधरछविविंवाविराजा ७ चितवनिचारुमुनिनाचितचोरी वसनपीतदुतिदामनिषोरी ८ उरविसालविलसतवनमाला खचितकनककौस्तुभमणिजाला ९ अंगदादिआभरनसुहावन जग्युपवीतपीतमनभावन १० दरचक्रादिचिन्हचतुचारू चारिभुजनभवभीतिनिवारू ११ स्यामलचरनपीठपदअरुना उज्जलविसदनषनदुतिवरना १२ दोहा मनहुत्रिवधअसमिलिचलीभक्तसंतसुषदानि सुरसारिसारिदरविसुताश्रीपतिचरनत्रिवेनि १ असवचित्रमुनिमनहरनवरनस्याम

घनध्यान रंभेजासनधस्योउरवृथाकस्योजगप्यान २ चौपई श्रीशु
कदेवसुनतअसवानी संततभक्तिप्रेमरससानी १ रंभेनवलउक्तम
नल्याई लागिभननकपटसरसाई २ भागरेषजहिभालसुहाई
आनंदभेषवसेषसदाई ३ भरीनवलजोवनमृदुअंगी सुरतिकलाक
लनिपुणत्रिभंगी ४ आननहाससुवाससुधारासि सोभितकलित
कपोलनआरसि ५ दिपतिमानमनुमूरतिनेहू रूपसुभावहावगुन
गेहू ६ दोहा चंद्रमुषीअसवालसोंजाससुनहुसुतव्यास आलव
नचुंवननकियेवृथाजनमजगतास १ चौपई सुनिशुकदेवतासच
तुराई गिरागूढमृदुवदनअलाई १ वयकसोरनितजासविहारी
छविकरोरमनुमनमथवारी २ दृगनढीठप्रेरतजितओरी अभय
होतजगजीवकरोरी ३ रहतसदाजाहिजाचितदाया सिववीरं
चिसुरसंतनिकाया ४ चुंवतचारुचरनरजजामा सहजहिंसमन
होतभवत्रासा ५ जेसरवांगस्याममृदुलोने भक्तजननमनुमानस
टोने ६ दोहा सोअसमोहिनमदनसोंजासनकीन्योनेहु वालेहा
स्योतासनिजवृथाजनमजगएहु १ चौपई श्रीशुकदेवकथनसुनि
चारू भनीवचनरंभेरससारू १ मधुरवैनकलवोलनहारी नव
लकमलमुषजोतिउज्यारी २ नीलांवरसुवरनतनकैसे लियेओ
टघनदाननिजैसे ३ उभैवीचकुचकंचिनवामा लसतस्यामपूत
रिअभिरामा ४ मुनिदेषियकससोधनकीना दैकसोटिकलका
मप्रवीना ५ फवनहरनमनकंचुकिन्यारी भूषितसुमनसुगंधिनव्यारी ६

दोहा ॥ कोकिकलापररमनि अस रम्योनजहिंसंसार वृथा जनमदियतास विधि सुनहोंव्यासकुमार ॥ १ ॥ चौपई ॥ जे प्रभुअभयवरदश्रुतिगाये दयादेवद्रुमसंस्रतिछाये १ करिसाधिनहठकठिनप्रयासा धरतध्यानजोगीस्वरजासा २ हार नहृदयजननदुरताई ललितस्याममूरतिसुषदाई ३ सदादरसअभिलाषतहोई राषतासिववारिंचिउरगोई ४ दो० सरवकलासामथंअसत्रिभुवननायय जोयतापदप्रेमन जासकियवृथाजनमादिषोय १ चोपई कानफूलकाननकलसोभा सजेसुगंधिसुमनभनलोभा १ मुषमयंकपरदहुनादिसारी छुटीअलकजुगनागिनकारी २ अमलअभनंअलंकृतचारू अंगरागअंगनमनहारू ३ मदनप्रमोदनिमूरतिरामा रससंगारवेलिमनुवामा ४ दोहा तापेंलुभतनजोभयो रसिकभ्रमरकीरीति तासजनमसुतव्याससुनगयोवृथाजगबीति १ चौपई जाससफरिंकृतकुंडिलकाना मलयालिपतअंगनसुविधाना १ वंसीवटतटवंसिवजैया मनमोहनवनधेनुचरैया २ अलकस्यामसासिआननछूटी चलीअमियमनुनागिनिलूटी ३ नटप्रवीनकलकुंजाविहारी नषसिषमाधुरिमूरतिसारी ४ दोहा अस सुद्रामनहरनहरिधरीनउरानिजजास सुनरंभेनिसफलगयोवीतिजनमजगतास १ चौपई सीलस्वभावभावभरिप्यारि तपतमैनमनुसीतलकारी १ अंजनरंजितषंजननैनी मृदुलनवलनागरिपिकवैनी २ दो० जहिअसरतिवातिरमनिाचेतरितहिमंतसुतव्यास उरनलगा

योप्रेमसोंतृथाजनमजगतास १ चौपई सदासीलहठजासउदंडा समनत्रिविधतपतपतप्रचंडा १ दिव्यअनेकगुनानिप्रकासिक भक्त भीतिभगवनभवनासिक २ देवनदेवदेवनगधारी भक्तहेतमेंदनिअव तारी ३ आदिअनंतअनादिअषंडा अलषअक्षअव्यक्तअमंडा ४ अमलअरूपअजातिअनामा अनभवअगुनअमरअभिरामा ५ अ भयअभंगअसंगसदाहीं अनघअसाधअगाधअथाहीं ६ निर्गुण सगुनरूपधरिजासा कियेकोटिब्रह्मंडप्रकासा ७ सुरमुनिधरनि धेनुदुजकाहीं जवजवपस्योभीरभवमाहीं ८ तवतवधरीसरूपनिज नाना तिनकरहस्योत्रासभगवाना ९ सदादेवदीननहितकारी अस रनसरनभक्तभयहारी १० दोहा असकरुणामृतसिंधुकहंभज्योन संस्रतिजास सुनरंभेंधिगधिगज्जनमकुमतिअधमअगतास १ चौ० काहभयोजोधनीकहायो भूपतिभयोसुजसजगछायो १ भयोदे वजुतविभूवडाई देवराजगौरवपदपाई २ काहभयोजोविधिप दपावा माननीयसंसारकहावा ३ भयोमहेससेसपदलीनो सक लचराचरनिजवसकीनो ४ दोहा जोनभयोरतदारसोंतोसुनव्यास कुमार तासभोगसंपतिविभूवृथासकलसंसार १ चौपाई भूपसक लसुषभूपननाहुदेवनदेवराजउतसाहु १ सेसदनेसवरिंचिवडाई स कललोकसंपतिप्रभुताई २ दोहा जाहिंजदुनंदनपदमपदकिये मधुपइवनेहु तासतुच्छरंभेसकलविभुसंपतिसुषएहु १ चौपई को मलकुसमसेजमनभाई रम्योनकवहुंललितसुषदाई १ अवअर

मलआभरनअंगा सजेनउरउतसादउमंगा २ चंदनमृगमदसुम
नसुवासा भयेनरक्तभक्तसुतव्यासा ३ कियेसेनमेदनिमृगछाला
जुक्तजोगजानतसवकाला ४ दोहा जसतोहिप्रीतिविरागअतित
सहममहरातिहोय तोजीवनसुषपैहुनतवृथाजनमजगषोय १ चौपई
ककाहत्रियेअसकरतवडाई अधममंदकविकोत्रिदगाई १ कर
किंकनकहंआरासिकाहा याकरकौनवातउतसाहा २ अमषअस्थि
चरमादिककाया रुधरपीपमलउदरभराया ३ मंगलकीनअमंगलसा
री मनहुविस्वविषवेलरिनारी ४ यासंसर्गविसषफलषाई लेतअसा
धमनुजरुजपाई ५ प्रमुदाप्रीतिअहिनिजिमिपाली डंसितदैविस्वा
सकुचाली ६ दोहा असदुषदायकदारसोकियोनेहनरजास तहि
रंचिकसुषलोभलगिलीन्योनरकनिवास १ चौपई जग्यदानतपती
रथचारुधर्मसुकर्मअनेकप्रकारू १ अहैस्वर्गतिनकरफलताईलोक
हुंविदतवेदमुषगाई २ पूरनताइनविनुतृयताहां कोअसजोगिजग
तमुनिनाहां ३ नारीनेहनजौनविकायो तियसुषसारमनहुंमाहिआयो
४ दो० सदाजनमजगजासतेंअसनिंदनमुषतास देतनकछुसोभातु
हैसुनहोनंदनव्यास १ चौपई जोफलरूपस्वर्गतुमजाना सोहुंस्वर्ग
असनर्कसमाना १ निद्राछुधात्रिषादिसमेता जरासोकचिंतादुषजेता
२ भोरेहुंनिकटनआवतजाहां सोअसहरिपदपंकजमाहां ३ सदा
लुभतचितमधुपहमारा जहांनकछुमायासंचारा ४ दोहा रंभेएह
हठवृथातुवनारिनेहसरसान तांतेपरिहरिदंभसवभजहुकृष्णभग

वान १ चौपई सुनिशुकदेवगिरामनभाई भनीवदनरंभेहरषाईं १ जोत्रियकरतुवसुमतिप्रधाना भस्त्रोउदरदुरगंधिवषाना २ सोमुनोसमनमृषाविचारी लेहुविदतनिजनयननिहारी ॥ ३ ॥ मोरचरितउरअचरजदाई असकहिसुरसुंदरिअतुराई ॥ ४ ॥ कियेप्रकटकौतुकमनहारी दियेउदरानिजनषनाविदारी ५ सप्ततानयोजन चहुंपासा फैलिगईसुभसुषदसुवासा ६ मनहुवसंतविमलमन भाई वसुमतिपेंसोभासरसाई ७ लषिकौतुकअसतासनवीना विहसिमुदितमुनिनाथप्रवीना ८ विविधप्रसंसिवदनअसकाहा सुषेमोहिनमर्मकछुराहा ९ अवलोंश्रवणदर्शनहिंआवा एहअद्भुततुमजवनदिषावा १० वृथाकियेनिदरनजगमाहीं वेदपुरानवरगतृयकाहीं ११ अवसौरभअसअमलसुहावन देषिउदररंभेतुवपावन १२ दोहा मोरेजियजनुलालिसाउपजपरीअसआयकरिनिवाससुभउदरपुनिलेहुंजनमानिजपाय १ चौपई सुनिशुकदेवउक्तअसन्यारी भईमूकसुरसुंदरिहारी १ उरपछतातविपुलाविसमानि वारवारजुगजोरितपानी २ करतविविधसुभसुजसवडाई सुरपुरगवनिचरनासिरनाई ३ श्रीशुकदेवप्रभावअपारा कौनकथ्यनसमरथसंसारा ४ षोडसवरषवैसवपुस्यामा हरिपृयभक्तनिपुणगुणधामा ५ विमलहंससरनामिकजाईं वैठयोअनसनवृतसरसाई ६ भैसापितजवप्रीक्षतराई सुरारिषिब्रह्मऋषसिमुदाई ७ औरहुंभक्तसंतदुजराए अवसरजानिभूपपेंआए ८ नृपसभाक्तिवंदनपद

कीने सादिरसवनवरासनदीने९ मुनिसमाजसंसयजगहारू लाग्यो सरितदेवतटचारू १० व्यासपरासरआदिकजोगी वैठेवहुविराग केभोगी ११ तहांसमाजमुनिनकरजोरी कियेप्रसननृपविनयअथोरी १२ दोहा सप्तदिवसमहंमरनजहिकोक्रतव्यमुनितास वनि परिहैंमोहिकृपाजुतकीजियवदनप्रकास१ चौपई मुनिसमाजसुनि भूपतिवानी वोलेनिजनिजमतिअनुमानी१ कोऊविधानजोगमुषवरता कौविरागअनुरागउचरना२ कोऊदानमषव्रतमुषराषा कोऊ धर्मतीरथसुभभाषा ३ जद्यपिमुनिनअनेकनकहेऊ पैसंसयनृपसम ननभयऊ ४ तहिअवसरततकालसुहाये श्रीशुकदेवतहांप्रकटाये ५ नरनायककहंकृष्णसमाना देषिपरेमुनिकृपानिधाना ६ चलि आयेजवमद्धसमाजू उठेमुनिंद्रसकलजुतराजू ७ काहिकाहिवदनव चनसतकारा वंदेसवनमुनीसउदारा ८ कहिनिजनामभूपकरजो री लाग्योचरनवहोरिवहोरी९ कनकासनद्रुतलीनमगाये तापरमु निआसीनकराये १० करिपूजनजुतभक्तिविधाना नृपति नम्रमुषविनयवषाना ११ जनकरदसाविदतप्रभुतोही कहिये जथाउचितअवमोही १२ दोहा तवशुकदेवप्रसन्नमनभन्यो वदनमु सक्याय सतादिवसलग अवहिंतुव अवधिसेषमहिराय १ चौपई तजहु सोचनरनाथउदारा सफलमनोरथहोहिंतुम्हारा १ रह्योएक रिषिराजसुहावा जहिखट्वांगनामजगगावा२ सुरहितलागिमही पसुजाना असुरनविजयहेतुकियप्याना ३ समरप्रचारि असुरसंघा

र्‌यो हराषिसुरनतव वदनउचार्‌यो ॥ ४ तुवहितकीनहमारसुहावा
अवनृपमांगजोनमनभावा ५ वोल्योसुरनवचन सुनिराया जोमो
पैंतुम्हरिसुरदाया ६ मरनमोरतव देहुवताई सुनतसुरन असगिराअला
ई ७ घाटिकाजुगल सेषतुवमरना तवकरजोरिकह्योपतिधरना
८ देवदेहुमोहिभवनपुचाई एहतुम्हारकरुणा अधिकाई ९ तवदेव
नतहिसदनपठायो नृपअनंन्यहरिध्यानजुडायो १० द्वैघटिकाध
रिसूनसमाधी लोकप्रलोक लियेनिजसाधी ११ भयोमुक्तषट्‌वांग
नरेसा अहैअवधितुवसप्तदनेसा १२ दोहा असकहिमुनिशुकदेवत
हंभूपपरिक्षितकाहिं श्रीसपताहसुनायद्रुतपठयोहरिपुरमाहिं १
चौपई देषहु संतसंगसुषदाना सप्तदिवसमहं भूपसुजाना १ तस्यो
विमलसंगति फलपाई गयो विकुंठनिसानवजाई २ असनितसंत
संगसुषदाया जननउधरन वेदवुधगाया ३ समयएकचढिजानसुहा
ये कृष्णदेवउर आनंदछाये ४ लियेसमाजसंगनिजनाना जनक
नगरकहंकियेपयाना ५ तवमारगसुक देवनिहारे ज्ञानध्यानमनुभू
रतिधारे ६ जानिअनंन्य भक्तमुनिराई लियेकृष्णनिजजानचढाई
७ मुनिनायककछु हरषनमाना जद्यपिकृष्णकियेसनमाना ८
जहिअपमानमान समदोई हरषविषादगुनहिंकिमिसोई ९
सदाएकरससुषदुषमाहीं हानिलाभसपनेहुं कछुनाहीं १० कौसुक
देवसरसजगआना भक्तप्रधान प्रीयेभगवाना ११ जहिंअवुधभव
जीवनहेतू वांध्योसुगमभागवतसेतू १२ दोहा तहिमगजीवअनंत

अथ भयेजतनविनुपार धनधनसंस्रतिअवतरे श्रीशुकदेवउदार १प तितउधारयो कोटिजगसकल लोकहितकीन कोनभयोशुकदेवस मपरउपकारप्रवीन ॥ २ ॥ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजंबूकाश्मी राद्यनेक देशाधिपति प्रभुवरश्रीरणवीरासिंहाज्ञप्तकाविमीयांसिंहकृत भाषाशुकदेवचरितंसर्गः ॥ ६

अथभीषमदेवचरितम्

दोहा श्रीजदुनंदनपदमपदप्रदप्रमोदकल्यान उरधरिगुनगनसंतज
नभनहुंबदनशुभदान १ सुमतिप्रवरधनहरनअगकरनकुमतिसवनास
संतसुजसादिनमानदुतिदमनतिमरभ्रमत्रास २ भीष्मदेवकरचरित
सुभसुनतश्रवनसुषदाई वरनहुंसादिरप्रीतिजुतसंतचरनासिरनाई ३
चौपई जथाजनमभीषमजगलीन्यो भारथकथनब्यासबकीन्यो १
इहांकछुकसंक्षपतप्रसंगा रटहुंरुचिरमनमोदउमंगा २ सिसुपनतें
संतनासिवकाई कियेअर्चनतासुषदाई ३ संततधर्मनिरतदिनराती
सज्जनप्रजासुषदसबभाती४ एकसमयनरनाथप्रवीना मुनिपुलस्तप
आवनकीना ५ धर्मसास्त्रविधिजाननहेतू करिकरिप्रसनभूपमति
सेतू ६ सुरगुरुतेंसीष्योनिरधारा अर्थसास्त्रसुभजथाप्रकारा ७ रह्यो
वचित्रवीर्यअसनामा अग्रजभ्रातभूपमतिधामा ८ गुनप्रवीनरतसी
लसनेहू कियेनतासदारपरिग्रेहू९कासिराजनिजसुतामहाना रच्यो
स्वयंवरवेदविधाना१०देसदेसकरनृपनृपराजू आयेनिजनिजसाजि
समाजू ११ असमुविपायभीष्मभटभाना संषवजयचल्योचढि
जाना १२ नृपतेपूरवतहांसुहावा निजनिजवरकुवरिनमनभावा
१३ जाच्योललितसुयंवरमाहीं आयगयेभीषमनृपताहीं १४ तहां
स्वयंवरदेषिनरेसा अरुननयनरिसाकियेवलेसा १५ वदनप्रचारि
भन्योभटिवाना निदरिहमहिंअसकोनमहाना १६ जोनृपकुवारि
नऊहलैंजाई मैदेषहुंतहिसमरवढाई १७ असकहिभीष्मदेवमन

मंडा कियेधनुषटंकारप्रचंडा १८ दोहा उततैंवीरविसालबहुसमर सुभटमहिपाल सकेसहारिनभीष्मरिसउठेलरनततकाल १ चौपई लाग्योहोनप्रस्परजुद्धा वीरधीररणमेदनिक्रुद्धा १ दहुनओरतेंसायक आते फुंकरतव्यालबिसषमनुजाते २ छुटेविषमसरभीषमताहां मूर्छतगिरेविपुलनरनाहां ३ वहुघायलरणपरेप्रवीरा भयेहननबहु विकलअधीरा ४ दोहा असप्रकारनृपसकलतहंजीतिभीष्मभटताज नृपकुवारिनकहंजानधरिफिरेसुमरिजदुराज १ चौपई विजय सुजसजगपायमहाना आयभवननिजसुमतिप्रधाना १ अंबा लिकासुतानृपजोई दोन्योज्येष्टभ्रातकहंसोई २ ॥ अंबअंबा वकादीनसिधारैं हरिविदेवव्रतदूसरवारैं ३ तहांअंबकेवचन अलाई मैंलीन्योस्वंवरवरपाई ४ अवदूसरएहकाहअनीती असतहिगिरासु नततवप्रीती ५ भीष्मदेवनाहिसकेसहारी जान्योअहैअधमविभचारी ६ तजिदीन्योकारिकारित्रिसकारा जाहुजाहुजितवरय तुम्हारा ७ जद्यपिनिजअनुचित कहंतासा क्षमहुनाथवहु वदनप्रकासा ॥ ८ तद्यपिभीष्मदेवनहिसाने विपुलकहेपरविपुलरिसाने ९ तवनिरा सभामनिअकुलाई निजपितुमातु भवनचलिआई १० राषीतिनहुं नआपनगेहू आईवहुरिभीषमपेंतेहू ११ नंम्रतजोरिजुगलकरदी ना आरतविनय वदनानिजकीना १२ दोहा राष्योमोहिनमातपितु नाथछिनकनिजगेहु आईनिरासवहुरि मै तुमपेंदीनसनेह ॥१॥ चौपई तमरेहेतुजनकगृहमाहीं रहनदियोमोरेप्रभुनाहीं २ दियोनि

कारिकहांअवजाऊं कांकोनिजदुषदुसहसुनाऊं३ तुवसंतनुसुतपरम उदारा अवमोहिकरिय नाथसूइकारा४ नतरजोकियो मोरअपमा ना तोदेऊंगीतोहि अपजससनाना ॥ ५ ॥ भीषमसुनतकथन अस तासा कछुकरोषवस वचनप्रकासा ॥ ६ ॥ पानिग्रहणातियमोंहि नमाना तुवकतवृथारारमुषठाना ॥ ७ ॥ जगनिसत्रीकरहन प्रण मोरा एहनिसफलभामनिहठतोग ॥ ८ तवहुंअंवक विपुलवषा न्यो भीष्मदेवकछुएकनमान्यो ॥ ९ ह्वैनिरासतवविकलअचेतू काननगवनिन्रियेतपहेतू ॥ १० परसरामसनतहां सुहेला भयोता सुकलकाननमेला ११ करिप्रणाम जुगपाननजोरि भृगुनंदनि सनभूपाकिसोरी १२ वरन्योविनयवृतांतनिज कारिरोदन समुदाय रोमरोमदायाविवस भयेसुनतमुनिराय ॥ १ ॥ चौपई हरिसरूप मुनिनाथउदारा परसरामविसस्रुतसंसारा ॥ १ ॥ जहंलग अस्त्रस स्त्रजगमाहीं मुनिसप्रीतिसवभीषमकाहीं ॥ २ ॥ पूर्वसिषायसक लसविधाना तातेंअसमुनीसजियजाना ॥ ३ ॥ रह्योमोरभषिमसि षसुद्दा सोनहोहिंममवचनविरुद्धा ॥ ४ ॥ असमुनीसनिज हृदय विचारितासुकह्योसुनराजकुमारी ॥ ५ ॥ तुम्हरे ग्रहणाकरन हितज्जाइं हमभीषमसोंकहववुझाइं ॥ ६ ॥ सोहमारसासनवस अहीं तुमकहंअवासिगृहनकरिलैहीं ॥ ७ ॥ कवहुकिमन्यो नवचनहमारे तोमैदेषतअवहिंतुम्हारे ॥ ८ ॥ जदपिरह्योसिषमो रवीरारी तदपितासुप्रतिकूलविचारी ॥ ९ ॥ हतऊंप्रचारिसमरसर

श्रीकोसमरथसासनजगमेरी १० जोनसीसधरिलेहिंअषंडा परस रामममनामउदंडा ११ जासकुठारधारनिधवारी विंसिकवारक्षत्रक्ष तसारी ॥ १२ ॥ बूडेवहेपारकछुनाहीं तासवचननिसफलकि मिजाहीं ॥ १३ ॥ असकहिकुपतअरुनदृगकीने चलेपरसुकां धरधरिलीने ॥ १४ दोहा आयगयेकुरुक्षेत्रमहंभृगुनंदननृपक्रूर चलेसुनतभीषमधरनसीसचरनमुनिधूर १ चौपई अयलेनअगवा पनराई सनमुषहोतलुकटइवजाई कहिकहिधन्यभागप्रभुमेरे गहेच रनभृगुनंदनकेरे २ पूछिकुसलसुभआसनदीनोविनयवडाइविवि धविधिकीनो ३ भन्योवहुरिजुगजोरितपानी धास्योचरनकवनहित स्वामी ४ कहियेदीननाथअनुसासा मैमनवचनकरमप्रभुदासा ५ तवमुनिनाथकह्योअसवानी एहनृपसुताअंवकास्यानी ६ हित जुतमोरवचनअनुसारी करहुग्टहणकल्यानतुह्मारी ७ तवभीषम करजोरिवषाना याहितमैभगवनप्रणठाना ८ कवहुंनकरहुंगृहणतुव काहीं जोलोअहैंप्राणतनमाहीं ९ सुनतरामअसभीषमवानीभने वचनमानसरिसमानी १० जोइहउत्र दीनतुवमोही परेसमरसूझव नृपतोही ॥ ११ ॥ मोरअषंडवचनजगटरना अहोअवसिभीषम तुवमरना १२ मैदुरगमजानतसंसारा जसनिक्षत्रवीसयकवारा १३ कियेभूमिनिजभुजवलभारी कोपितपरसुप्रचंडप्रहारी १४ तवभी षमकहजुगकरजोरी सुनहुविनयभृगुनंदनमोरी १५ छत्रीजीतिसम रनाहिंडरई डरैतोअवासिनरकमहंपरई १६ वरमाधर्मजुद्धरणकरना

रिपुजझायकैत्र्प्रापुजझरना १७ कियेनिज्ञत्र्प्रराममहिजवहींरह्यो ना जगभीषमभटतवहीं १८ दो० त्र्प्रहैएकडरसापतुवसोनदिहेहुमुनिराय करहुजुद्धभावतजथासमरसुभटइवत्र्प्राय १ चौपई विप्रवचनवल विदतमहाना देषहुंविप्रभुजनकसत्राना १ जनसनमुषभृगुनंदनत्र्प्रा जूकरियसमरनिजगरवदराजू २ राषियत्र्प्रवननाथकछुपाछे हनियसम रसरतीक्षणत्र्प्राछे ३ परसरामसुनिभीषमवैना उठेतुरंतपूरिरिसनयना ४ धरयोधनुषसरविषमकराला जासुदेषिकंपतमहिपाला ५ उतसं तनुसुतसुभटप्रधाना धरेतूणकटिकरधनुवाना ६ उभैवीरसमसमरक रुद्धा उठेप्रचारिकरनकलजुद्धा ७ देतदुजनधनविविधप्रकारा चढयो जानगांगेयउदारा ८ रामचढयोरथवेदतुरंगा त्र्प्रकृतव्रनसारथीत्र्प्रभं गा ९ हन्योपृथमभीषमपदरामा तानिधनुषसर सुभगप्रणामा १० दियोत्र्प्रसीरवादभृगुनाथै हनिनराचभटभीषममाथै ११ तापरसंत नुसुतकरजोरी कीन्योविनयवहोरिवहोरी १२ मैसेवकतुवस्वामिस नेहू तजियनाथहठ त्र्प्रापनएहू १३ कियेनपरसरामतूइकारा तव भीषमत्र्प्रसविनयउचारा १४ दोहा मैत्र्प्रदोषभृगुनाथत्र्प्रवकरियवर निरणगर तवत्र्प्रमरषभरपरसुधरसरधनुकियेप्रहार १ चौपई उत संतनुसुतमनत्र्प्रनषाये लागेहननवानत्र्प्रतुराये १ गुरुसिषजुगलपर स्परठाढे करहिंसमरत्र्प्रायुधरिसगाढे २ बीरप्रधानसवलभुजजोरैं छाडतविसषवानदुहुंत्र्प्रोरैं ३ सरसनिरससमसुभटउदारा हरिउता रउतवसुत्र्प्रवतारा ४ षेलतफवनफागजिमिहोरी लालगुलालउडत

दहुंओरि ५ वीरनवीररंगतिमिराते सरअवीररणधीरउडाते ॥६ ॥ सुरगणसमरसूरलषिलोभा चढिविवानभेदषतसोभा ७ भीमसुभटभीषमरणरारी तैसाहिपरसरामधनुधारी ८ तिनहुंकीनजसजुद्धअपारा तासविपुलभारत विसतारा ९ तातेकछुसंक्षपतकथोरा तेईसदिवसभयोरणघोरा १० रामसुभटवर भीषमकाहीं जीतिसक्योरणमेदानिनाहीं ११ तवकहपरसुधरनउरहारी सुनहुअवकेभूपकुमारी १२ दोहा जीत्योजायनमोहितेंभीषमसुभटसिरताज जसभावततसकरहुतुमतजिभरोसममआज १ चोपई असकहिरामसमरतजिगवना भीषमआयलौटिनिजभवना १ विजयवाजवहुवाजनहेतू दीन्योसासनसुमातिनकेतू २ लग्योहोनपुरमंगलनाना मोदप्रमोदनजायवषाना ३ पुनिजवकौरवपांडवकेरो भयोविरोधअनरथघनेरो ॥ ४ ॥ धर्मसुवनकहंद्यूतखिलाई जीत्योसकुनिकपटसरसाई ॥ ५ ॥ जुगदसवरषदियोतिनकाहीं राजनिरासवासवनमाहीं ॥ ६ ॥ वीत्योवरषचारदसजवहीं सजतकटककुरुनायकतवहीं ७ ॥ चल्योलरनअमरषसरसाये आनिअनंतकछुधरानिनजाये ॥ ८ ॥ तवभीषमवहुनीतिवषानी समुझायोकुरुपतिअभिमानी ९ पैनमन्योमानसहंकारी भयेमौनतवभीषमहारी १० भटिकूपद्रोणदेवव्रतजेते वैठेसभासुजोधनतेते ११ निजनिजउरतिनसोचनथोरा होहिंअवसिअवभारतघोरा १२ तवभीषमनिजसुजसविचारी वोल्योवदनवचनव्रतधारी १३ पूरितमहांमोद

मनधीरा कटचोकंठकलागिरागभीरा १४ सुनहुसभासदजोधन राई मोरवचनप्रणहृदयलगाई १५ जोमैसुवनभगीरथीकेरो तो यहसभामद्धहठमेरो १६ दोहा कौरवपांडवदहुनदलवीचहरषस रसाय करहुंसविधिवीरनविदतजदुपतिपूजनजाय १ चौपई स्रो णितकनकलदेतसनाना रणरजवसनसजहुंसनमाना १ पांडवसु भटसेनसंघारीअगरकोपदेऊंतिलकालिलारी २ विविधवरनकोसु मनतरंगा पहिराऊंउरमालउमंगा ३ सनमुषअरिदलइमतउडाऊं हरिकहंकीरातिसुरभिसुघाऊं ४ वहुरित्रिविक्रमकहंनिरधारू विक्रम दीपदिशावहुंचारू ५ पारथसषेसमीपसिधाऊं रुचिरप्राणनैवेदल गाऊं ६ अचिप्रीतिसंस्रतिसमुदाई देहुंनाथकहंवीरिषवाई ७ विजचप्रदानवानश्रीपीकें मैचलवायसमरमहिनीके ८ जयप्रदक्षना जोनदिवाऊंतोहरिजनजगजननकहाऊं ९ हरिरथस्रोंरथवहुरिमि लाई धुजचांवरकलकरनचलाई १० नषासिषनिरषिस्यामछवि सोहन सुरनरसकलचराचरमोहन ११ आजललितलोचनफल पाऊं दीननाथकहंसमररिझाऊं १२ दोहा करिकरिवारंवारधु निधनुषप्रत्यंचनघोर वजिहुंवाजरणसुभटप्रदहरषकरषचहुंवोर १ रथमंडिलकरिदेतप्रदक्षन उरउपजाऊंप्रमोदविचच्छन १ आजना थजदुहाथनतेहू चक्रप्रसादअवसिमैपैहू २ अरजुनसरपंजरस हिसोहान्हिजंजररणपरहुंअमोहा ३ एहिविधिकरिपूजनजदुनाथा त्रिभुवनसुजसलेहंनिजहाथा ४ कृपाप्रसादकृष्णकलपाई वरव

सवसहुंकृष्णपुरजाईं ५ मैंएहसुन्योकरनकुरुनायक श्रीजदुनं दनदीनसहायक ६ तुमसोंअससंततहठठाना हमनधरवभार तधनुवाना ७ तातेसुनहुसभासमुदाई निजपणभनहुं प्रकटगो हराईं ८ ॥ समरमचायघोरघमसाना छाडिप्रचंडदलनदलवाना ९ रोमरोमरिसविसहुंचढाईं हरिहिंदेहुंधनुवानधराईं १० जद्यपिप्रणपालकभगवाना तद्यपिनिजदासनकोमाना ११ दी ननाथदीननसुषदाये दीनदयानिधिराषतआये १२ दोहा मेरीवारविसारिकसविरदवाननिजनाथ लैहैंअपजसजगतमहंगिरे गहनजनहाथ १ चौपई चलहुवेगअववेरनकीजे सनमुष समरसुजसजगलीजे १ हगअभिलाषदिवसवहुकेरी पूजिहैंअव सिआजसवमेरी २ पीतवसनवनमालविराजतमुकुटमयूषमाथछ विछाजत ३ एकपानिताजनयकवागा गहिवाजिनपारथवडभागा ४ चहुंदिसिचपलचलावतजाना असलषिभक्तहेतभगवाना ५ धुनिधुनिवानरंगमहिभूरी धनधनहोहुंसुजसजगपूरी ६ असकहि कुरुपतिसंजुतवीरा आयोकुरूक्षेत्ररणधीरा ७ उरअभिलाषलाष सरसातो सनमुषसमरवीरमधमातो ८ ठाडयोअभयपांडवनआईं धुनितसंषघटचापचढाईं ९ देषिसषाजुतश्रीजदुनाथैं नावतमोद मगनमहिमाथैं १० गुनतआजजगसुकृतमेरे एकएककरलाषन हेरे ११ जोअसभूरिभवनकरनायक होतसमरनिजसषेसहायक १२ दोहा सेवकवाजिनवागगहिवनिसारथिचढिजान अहैभान

भगवानमोहिसनमुषकृपानिधान १ चोपई तबनिजसारथिसों असबानी भनेवदनभीषमसुषसानी १ असअवसरमुनहौहितकारे मिलिहैंकवहुंनजतनविचारे २ कृतउपकारदानसनमाना मैंजहिलग तुमसुनाकियनाना ३ जौंतुमतेंवनिपराहिंकदाऊ सवतेंउरिनआजव्है जाऊ ४ ममरथवाजिनचपलचलाई हरिसमीपद्रुतदेहुपुचाई ५ अपनोओहमरोसंसारा करहुअनुपमसुजसविसतारा ६ एकओर जदुवीरविराजाहिं एकओरतुवरथछविछाजाहिं ७ यासुषतेसुपअ धिकनगावा धनधनजगतजासजनपावा ८ स्याममनोहरमूरतिचारू माधुरिहरनकोटिछविमारू९ दरसतजनमसफलकारिलैहौ जोगिन अगमपरमपदपैहौ १० सारथिआवतपांडुकुमारा जहिआगेप्रभु भक्तउचारा ११ गहिवाजिनकरवागसुहाई वैठेरथसोभासर साई १२ दोहा चपलतुरगचमकायकैधगनेधवावतजान धूरपूरगहरोगगनभगनअरिनअभिमान १ चौपई ॥ पारथहनत हजारनसायक काटतवीरवालिकमिलायक १ कोभटविनु संतनु सुतआजू सनमुषहोहिंसमरजदुराजू२ कोननाथकहं आजुरिझाई हनिहनिविसषवानअतुराई ३ साराथिवाजिनचपलचलाये जिमि चपलाचलजानुथवाये ४ लैचलहौंमोहिसनमुषताहां जियआधार स्यामघनजाहां५ उतदलदुंददेषिभगवाना मनेमोदमनमंजुमहाना ६ श्रीमुषमंदमंदमुसक्याई लोगभननभक्तसुषदाई७ मैपारथनीकें जियजाना पहभीषमजगसुभटमहाना८ मोपरभस्योअनषरणढाढा

परहिंआजसंगरवडगाढा ९ जानिपरतमोहिकठिनमहानापैपार
थतुवसुभटप्रधाना १० निजविक्रमभुजवलअधिकाई जानिराषहु
कलुसमरदुराई ११ अवलोंभयोनसंस्रतिकेहू भीषमभुजवलजल
निधिजेहू १२ पैरिअगाधलियोपाहिपारा ओजगतुमहुंसमरनिध
वारा १३ मथिअनंतवलभुजनमहाना कोन्योविजयसुधारसपाना
१४ दोहा मोरेउररुचिलषनतुव विक्रमसमरसुजान कोसमरथवर
दहुनमहंवरिधाकधनुवान १ चौपई लषहुसवदलजलनिधिभारी
पूरितविमलवीररसवारी १ गाढगरवगजग्राहाविसाला घोरक
ठोरकुमठठटढाला २ धनुषमीनअसिमकरकरोरा भटिगणसिंह
नादवहुसोरा ३ सरतरंगचहुंवोरनतेहीं उठहिंभांतिवहभनितनपे
हीं ४ वीररतनवहुरतनविराजे चमरहिलोरचारूछाविछाजैं ५
थनचक्रचयआव्रतनानासवलजुगलदलकूलमहाना ६ धर्मसुवन
दुरजोधनराजूउभैवानिकसाजिसकलसमाजू ७ तुवभीषमभुजवलदृढ
भारी पायजहाजसुभगसुषकारी ८ चढतचहतउतरनउतपारासोदु
रगममोहिफुरतविचारा ९ पैहेंपारगुनतचितमोराह्योहिंजासनाविव
क्रवरजोरा १०इतजदुपतिअसकरहिंविचारा उतरणमच्योकुला
हलभारा ११ भइंदेवव्रतवाननसंगाविथतसैनपांडविमहिंरगा १२
तवजदुपतिलेपारथकाहीं आयअभयसनमुषरणमाहीं १३ वीरप्रधान
जुगलमनमाषेसुभटाभिरनभारतअभिलाषे १४दोहा॥इतैसमरअंध्या
रचहुंदिसनभरतभटभारी॥ धरतदरतदलभटिनरणपारथप्रवलअरारी

१ चौपई उतैभीमभीषमभटभाना ज्वलतजनहुं ग्रीषमउदताना १ कोपप्रचंडदहनदलजासा महांविकटभटसमरप्रकासा २ दहुनश्रोरतैसायकटूटे मानहुडसनउरगगणछूटे ३ मुरछितागिरैविपुलभटधरनी कहिनजायकछुवीरनकरनी ४ उभैसूरसंग्रामसुहाते प्रगटतदुरतवेगदरसाते ५ इतैसषाअरजुनअभिरामा उतैभक्तभीषमवलधामा ६ नाथदहुंनकोअघटतप्रीती तुलाविचारधरततुलिलीती ७ संतनुसुतकछुदीनदयालैं चढयोसरसाचित निजप्रणपालैं८ अरजुनतनतकिरूपानकेतूमुखमुसक्यायरहेलषिहेतू ॥ ९ ॥ गुनतमनाहिंमनत्रिभुवनराजू ममप्रणरहै किभीषमआजू ॥ १० ॥ बहुरिविरदनिजहृदयाचितारी सिद्धकीन अस दीन उवारी ११भक्तहेतसति अवसिहमारा ह्वैवोअसतिउचितसंसारा १२ दोहा ममप्रणव्रतकृतजौनयहजोजगजायतोजाय पैनजायप्रणजगतमम भक्तभरोसविहाय १ ॥ चौपई जिमिचपलाचमकतचहुंवोरा तिमिभीषम सुरसमरकरोरा ॥ १॥ फरफरातचहुंवोर लसाते वीरनहृदय धीरविलगाते ॥ २ ॥ झरेंझुंडसूरनसरलागे परेरुंडरणप्राणतयागे ॥ ३ ॥ विकलसिथलदलचेतविहायो मनहुंप्रलैअंतक प्रकटायो ॥ ४ ॥ उक्तयुक्तकछुसूझतनाहीं चितवतजथापंगुगिरिकाहीं ५ हनतनसत्रसूरासिथलाने कढतनकोपकंपिकदराने ॥ ६ ॥ निजनिजमीचगुनतसवकोई विथतसैंनअस पांडविहोई ॥ ७ ॥ पदचरतरगजानगजगाढे परेसमरघायलदुषवाढे ॥ ८ ॥ छिदभिंदाकियवाननअंगा

भरेकुंडस्रोणित महिरंगा ॥ ९ ॥ लगिषंजरजंजरतनभयऊ यमनृप दलपंजरसरपयऊ १० सूझतपथनहिंदिसादिसाईं भादवनिसामनहु महिछाई ११ ब्रह्मलोकलौंवीरसुकरनी छयोप्रकास विदतजिमि तरनी १२ दोहा वीरधीरतजिपीरलहि होतजीतरनटूक भागिगये मनुकीरतकितीरभीरअनरूक १ चौपई भीमनकुलसहदेवप्रवांरा द्रुपदभूपसुतद्रुपदसुधीरा १ नृपविराटलौंभटिवरआना कोउनगहि ससनमुषधनुबाना २ रोषवहीनदीनसवठाढे लगेसिरोमरोमसरगाढे३ विछलअधीरधरमसुतहारी चहतगवनकाननताजिरारी४ जदपि भटिनकहं धरमप्रचार्‍यो वीरविरदवहु वदनउचार्‍यो ५ तदपिनरु केसुभट कदरानेडारिसमरधनुविकलपलाने६ झिलेंसकलकौरववल पाइं हनतकुपतआजुधअधिकाई ७ चटकिचपलचपलाचुटपरहीं झटकतपठकिभटिनफटकरहीं८ षरभरमच्योसमरचहुंवोरा नादतसु भटसिंहरवघोरा ९ कहांप्रवलपारथएहीकाला कहांसुभटसातकि जदुपाला १० असअमरषवसवीरप्रधाना तरजतगराजिसमरमहि नाना ११ तवसात्याकिफिरिसनमुषठाडा गहितविजयस्यंध्वनर एआडा १२ दोहा सुमरतानिजकुलविरदमनवारवारगोहराय कहतसमरमरवोभलोफिरहुफिरहुसमुदाय १ चौपई वीरनपी ठसमरमहिदेना विदतलोकअपकीरतिलेना २ वांधिविरदजग सूरकहाना अहैनसुगमअगमएहवाना ३ तापसजोगिसिद्धमुनि ज्ञानी करतजानहठअनकअमानी ४ जोपदपैहिंविपुलश्रमकी

ने लेहिंवीररणजतनवहींने५ उनहुंसौचसाधनवहुभाती इनहुंसमर जूझनधरिछाती ६ तातेवीरवीरकृतकरिकै लेहुपरमपदसनमुष मरिकै ७ होहिंनवीरप्राणकेलोभा तजनप्राणरणवीरनसोभा ८ विमुषसमरनरपातितअभागी लेहिंनरकग्रहिप्राणतयागी ९ अ सजियज.निसुभटधारिधीरा जूझहुसमरसुमारिजदुवीरा १० प्रभुके देषतप्राणविहाई प्रभुपुरजाहुनिसानवजाई ११ जद्यपिसात्यकि विविधवषाना तद्यापिभीमभीष्मभटवाना १२ तिनाहिंनलेनदेतआ स्वासू वीराविकलकंपतवसत्रासू १३ अंगअंगमहिरंगउमंगा विक्र मिविकटसुभटसुतगंगा १४ दोहा करिविदलनदलपांडवीप्रले पारिमनुदीन सषेस्यामजुतअसुनरणछायसरनरथलीन १ अरुको दंडमंडलकरतदिसनसंचारतचारि सिंहघोषसारोषसुपभरतधरतधृ तिरारि २ मनहुविजतरणअभयभटठाडच्योसनमुषआय हरिपद सुमरततकतातिरछोहंमंदमुसक्याय ३ चौपई विसषवानभीषमध नुधारीलगेसुभटपारथतनकारी १ लषिडरषीरनिराचनगाढीन्हिगो विकलासिथलधृतित्यागी २ धनषधरनकरसुरतिनकाहूथाक्योसमर विगतउतसाहू ३ भ्रमतउडानिवीरअरुन्याईसूषेअधरवदनापियराई ४ परिभीषमसरपंजरमाहीं विसरिदियोनिजविक्रमकाहीं ५ रथपें अचलहाराहियम.नी वैठिरह्योमनुमूरातिहानी ६ निकसिनवचनकं पतनवाढा षोलिनसकतनैनदुषगाढा ७ कियेसिनिजप्रणपूरवजोई भूल्योभनितनचेतनकोई ८ विजयलाभदुरलभजियलेषी मान्यो

हानिगिलानिवसेषी ९ अवआधारलषहुइकमनकेगिरधरदेवसमर अरजुनके १० भीषमसरछिनाछिनअधिकाते विसषव्यालमनु फुंकरतज्ञाते ११ मूंद्योपारथसारथिकाहीं रथजुततुरगनदरसत ताहीं १२ दोहा दावतवलजुतसमरहारिवारवाररथकाहिं तवहुं उडयोजनुजातकछुहोतासिथिरक्षतनाहिं १ चौपई वाजिविविध तनताजनषाते पेनवेगनेसुकदरसाते १ गहनवागवाजिनहरिकाहीं रहिसंभारकरनकछुनाहीं २ भयेअचेतसकलजगचेतू नहिफहरातू कलितकपिकेतू ३ उभैचक्ररक्षकसरलागे मुरछितपरेसमरसुधि त्यागे ४ दीननाथदीननहितकारी जनप्रणपालनहृदयविचारी ५ करिनसकतकछुवनततनताहां तवकौरवजुतकौरवनाहां ६ प्रभुगति देषिवदनमुसक्याने मनहुमूढनिजविज्ञयजताने ७ जदुपतिफिरि फिरिपानिपसारे वारवारअरजुनैहलारे ८ मरिगेधौजीवततुवऐहौ षोलिचषनटुकवचनभनैहौ ९ कहतरहेतुवसभागरूरा मैगांडीव धरनधनुपूरा १० द्वैकुदंडमहंकुरदलसारी डारिहौंअवसिमहिसमर संघारी ११ सोप्रणअवकृतदीनविसारयो व्हैरणदीनसरासन डारयो १२ दोहा उठहुउठहुअववेगजनकरहुचेततनमाहीं तुह्मरी वहुवडवारिजगज्जनताविदतसवकाहीं १ चौपई अजमप्रजातपांडु कुलकेरी तुवआधीनगुनतमातिमेरी १ तुववलधरमसुवनचढिआये रणप्रचारिदुंदभिवजाये २ तुह्मरेहोतासिथलरणमाहीं कहोकौनधीर जातिनकाहीं ३ कादरसरसरसकतगततोही रणलषिलाजलजावत

मोही ४ कसतुह्मरीअसविक्रमसंगा चलहिंसुजगकीरतीअभंगा ५ सषासाचमनकोरुचिजोऊ कहहुविचारिप्रकटअवसोऊ ६ हैअभिलाषविजयधोंनाहीं धोंकछुहारिगयेमनमांहीं ७ जामैतुह्मरीजीतसुहाती सोमतिहमाहिंसषेसुनभाती ८ तुवसमानमेरोजगमाहीं मीतसुहृदयसज्जनपृयनाहीं ९ इतप्रभुसषेहिंकरतसवधाना उतअतिविषमदेवव्रतवाना १० कियविदलनपांडविदलसारा त्राहित्राहिदेवकिकुमारा ११ रटतसकलअसजदुपतिदेषी कठिनकुसमयसमरप्रभुलेषी १२ भरेभूरिअमरषभगवाना तजिरथगहितचक्ररथपाना १३ मनहुसुदरसनसहसधारी असछविउदयहोतमनहारी १४ नलनिनालमनुभानुविराजा चलेधायसनमुषजदुराजा १५ ॥ वाजानिमृदुमंजीरचरनकी छविअनुपमपटपीतवरनकी १६ रुचिरसमररजरंजितनीकी विथुरनिअलकवदनपृयजीकी १७ स्रमकनकलितविराजतचारू रिसवसनयननलनिअरुन्यारू १८ कियेऊर्धगतभुजनविसाला भ्रमनचक्रलषिडरषतकाला १९ मरन्योमस्योभीषमअभिमानी दोउदलकउतकुलाहलवानी २० दोहा तानिरहेनिजनिजधनुषइकाथेतटाडप्रवीर तजतनसरथरथरसडरकंपतसकलअधीर १ चौपई रंगभूमिरिसभरेमुरारी चलेचक्रआजुधकरधारी १ मनहुराजगजपरमृगराजू चल्योजातकरिगरवदराजू २ देषहुदुतियकौनसंसारू दीनवंधुदीननाहितकारू ३ जोजनहिततजिनिजप्रणद्यालू जनप्रणपालतपरमकृपालू ४ सदाआनभगवान

सुहाई निजलघुतानिजजननवडाई५ कूरमकोलमतसइत्यादीधरे रूपभगवानअनादी ६ भक्तनहितकरुणायअगाराकानकीनिविस्तु तसंसारा ७ निजव्रतअसतभक्तसातिहेतू कीनकृपानकेतवृषकेतू ८ आयधायसनमुषमहिरंगा दीननाथभवभीतविभंगा ९ लषिसच भीषमप्रभुआये रोमरोमतनहरषअघाये १० डारिधनुषमेदनि अनुरागा जैजैजैतिभननमुषलागा ११ दीननाथतवगिरावषानी हमनगह्योंआयुधनिजपानी १२ दोहा नाथकथनसांचोंअहैकह भीषमासिरनाय पैहौंधनहौंधनभयोआजसघनसुषपाय १ प्रभुसुम रियनिजनामकहंसकललोकविक्षातचक्रपानिरथचक्रअवधरयोना थनिजहात १ चौपई कृपासिंधुहितकीननथोरा निजप्रणहारि रष्योप्रणमोरा १ आवहुआवहुदेवकिछेयाअवनरुकियजनदीनस हैया२ मारहुचक्रचारुघटमोहीतजहुंप्रानानिरषतरटतोही३ वरषसत्त सतजगतावितंवा असऔसरनहिमिल्योकदंवा ४ भलगुनचलन चक्रप्रभुहाथा समरमरनपुनिसनमुषनाथा ५ अहोभागममसरसन दूजो जहिअसमनवांछितप्रभुपूजो ६ सुरमुनितपासिजोागि जतिजेते कहिकाहिठेकठिनहठकेते ॥ ७ ॥ पायेसोनति नहुंअनुपायन जोममहननहेतुअतुरायन ८ चक्रचारुगहिधावत धरनी धनधनउदय भागममधरनी ॥ ९ ॥ आजप्रसादपरमप्रभु पाई देषतसवननिसानवजाई ॥ १० ॥ जैहुवैकुंठभस्योसुषभूरी रमानिवासआसममपूरी ११ वीरासिरोमाणयहतुवरामा मूरतिहरन

कोटिछविकामा १२ वसहिंसदामोरेउरगेहा दीनवंधुप्रभुदीनसनेहा १३ जैपारथसारथिजदुराजू जनप्रणपूरकवानाविराजू १४ मोसमअधमदीनजनकाहीं कोऊउधर्नआनअसनाहीं १५ ह्वैसारथिकरुणानिधिनीरा सहेघातसरदुसहसरीरा १६ ॥ दोहा निजप्रणतजिपूर्योविदतमोरदीनप्रणपाल असससुभावसोभिततुम्हैतृभुवनदेवकिलाल १ चौपई कृष्णसुनत संतनुसुतवानी प्रीतिप्रवीतिभक्तिरससानी १ करिहगतकृततनकतिरछाने श्रीमुषमंदमंदमुसक्याने २ वोलेवदनदीनदुषहारी सुनहुवचन भीषमहितकारी ३ एहिरणकरकारननहिआना जानिपरेमोहितुमाहिं सुजाना ४ ॥ जोपृथमहिंकुरुनायककाहीं लेतेहुवरजिगुनतमनमाहीं ॥५ तोनहोतयहकुलकरघाता सुनतवचन भीषमजगत्राता ६ जुगकरजोरिगिरामृदुभाषीममअनुचितकछुघटघटसाषी ७ कंसराजकहंकुलकरकेहूराष्योवरजिनदीनसनेहू ८ कृष्णकह्योतवजदुकुलमाहीं असवरवीरह्योकोनाहीं ९ जैसेतुमत्रिभुवनधनुधारी धर्मनिरतपरहितउपकारी ॥ १० तवभीषमकहदीनकृपाला जोनहोतयहसमरविसाला ११ ॥ तोकसमोहिअधमाहिंवसुछय्या औतेहुकरनधरनिधनदय्या १२ दोहा असभाषत मुषपरस्परजसजसहरिनियरात तसतसभीषमभक्तमन घनप्रमोदसरसात ॥ १ ॥ चौपई भक्तप्रेमवस श्रीभगवाना चलेदौरिसनमुषतजिजाना ॥ १ ॥ पारथहूंतजिरथसगिलानी दोस्योद्रुतलषिनिज जसहानी ॥ २ ॥ प्रभुभुजभुजन

गहिसवरजोरि कहतसोछविसकुचितमतिमोरि ॥ ३ ॥
मिलिमनहुंमारुतवसहोई गगनमंजुनवनीरददोई ॥ ४ ॥
पुनिगहिचरनकंजभगवाना कियेसरसरसवीरमहाना ॥ ५ ॥
प्रभुहिरोकि असविनय उचारी कृपानकेतभक्त हितकारी
६ भीषमप्रणपूरयोजननेही टारयोनिजप्रणआयुधगेही ७
दीनानाथभक्तसतिहेतू कियेअसतिनिजकृपानकेतू ८ लौटिचलि
यअवस्यंदनस्वामी राषियमोरमजादनिमामी ९ तुवप्रसाददुर्लभ
कछुनाहीं कौतुकनाथसमरमहिमाहीं १० करिप्रहारवानन अतु
राई अरिदलदलहुंसमरसमुदाई ११ वृथारोषजनिभगवनकीजै
विक्रममोरसमरलषिलीजै १२ दोहा सखावचनसुनिकृपायतन
वदनमंदमुसक्याय निजस्यंदनजदुनंदगतिमंदमंदजुतआय १ पक
रयोकरनसरोजकलचपलतुरंगनवागि कियोसुजसभाजनसमरप्रभु
पारथवडभागि २ चौपई भयोअंतभारतजवताहां तबप्रसन्नपूर्वक
जदुनाहां १ भाइनजुतसमाजसवजोरि मंगलमोदप्रमोदनथोरी २
विधिवतहरषिधर्मसुतकाहीं बैठायोनृपआसनमाहीं ३ जयजय
सवदभयोचहुंपासा सवकरहृदयप्रमोदप्रकासा ४ तवतहिरजनि
भूपसुषपाये कियोसैननिजभवनसुहाये ५ सेषनिसालषिभूपति
जाग्यो श्रीजदुपतिपदसुमरनलाग्यो ६ पुनिविचारकियमानस
माहीं यहिछिनहरिदरसनहितजाहीं ७ असमोचितनृपचल्यो
यकाकी कियेसैनजहंपृथेपिनाकी ८ रह्योद्वारसात्यकिथिरचीने

उठिभूपतिपदवंदनकीने ९ पूछोराऊकहांभगवाना तवसात्यकि करजोरिवषाना १० वैठायोद्वारेप्रभुमोही काहकरैंकछुमरमन सोई ११ मंदमंदतवचलेमहीसा रहेजहांजदुकमलदनीसा १२ दोहा तहिअवसरभगवानतहं उठिसुठिसेजसुहाहिं वैठेपदमासन कियेध्यानलीनमनमाहिं १ चौपाई देषिदसाअसभगवनकेरी रह्योचकितसंकितनृपहेरी १ ठाढ्योउभैघरीनृपताहां रह्योतकत कौतुकसुरनाहां २ तोलोभक्तसंतसुषदैना षोल्योअमलकमलदल नैना ३ नृपहिंदेषिजदुपतिअनुरागे उठिभरायभुजभेटनलागे ४ पुनिसप्रीतिभगवानमहीपै वैठारयोनिजसेजसमीपैं ५ तव विसमितसंदिगदनथोरी भनतभूपअसजुगकरजोरी ६ प्रभुउपजो संसयजियमोरे निवरनचाहुंकृपाकरितोरे ७ जगतचराचरजीवस वैहीं धरतध्यानतुह्मरोप्रभुअैहीं ८ तुवनिजधरहुध्यानकहिकेरो हरियनाथसंसययहमेरो ९ सुनिअसभूपकथनजदुराई बोले मधुरमंदमुसक्याई १० सुनहुधर्मनृपसुमतिनिधाना मोर वचन यहसत्यप्रमाना ११ जीवचराचरसंसृतिजेते निसिवासरध्याव तमोहितेते १२ ॥ दोहा मैसंततनिजजननकर धरहुंध्यानमनमा हिंमोहिजगजनतजिआनकौंध्यानपृयेअसनाहिं ॥ १ ॥ चौपई प र्योसेजसरअवसरएही मोरभक्तभवपरमसनेही ॥ १ ॥ भीषमसुभ टकमलकुलभाना अग्रगण्यधनुधरनप्रधाना ॥ २ ॥ तासध्यान यहिअवसरकरहीं लषिअनंन्यजनछिननविसरहीं ॥ ३ ॥ होतउ

नरायनरविधीरा ममपदसुमरितजाहिंसरीरा ॥ ४ ॥ हैसंकाउपज तमनमाहिं चहतकलंकलग्योमोहिकाहिं ॥ ५ ॥ निजनिजकहहिं लोगसमुदाई नृपपैंरूपाकीनजदुगाई ॥ ६ ॥ पैनसिषायेधरमभुवाल कछुसुभकरमधरमजगपालैं ॥ ७ ॥ धर्मकर्मजपयोगविरागाज्ञानध्यानविज्ञानाविभागा ॥ ८ ॥ चारुअचारविचारसुरीती अर्थकामनरनायकनीती ॥ ९ ॥ विमलविवेकमहातमनामा साधनजोंगअकामसकामा ॥ १० ॥ विधिनिषेधजाहिलगजगमाहीं रह्योविदत सवभीषमकाहीं ॥ ११ ॥ तासतजततनयहसमुदाई होहिंअस्तसंसयनहिंराई ॥ १२ ॥ नृपतिधर्मजसाविदतप्रकारा कोपुनितुमाहिं सषावनहारा ॥ १३ ॥ ओमोहिंतेंतुमजैाननरेसा चाहुसुननसुंदरउपदेसा ॥ १४ तोमैंकहहुंसत्यनृपधरमा तुमसोनहिंनमोरकछुमरमा ॥ १५ ॥ जितोजनतभीषमजगमाहीं तितोअपरकोनाहिनकहहीं ॥ १६ ॥दोहा तातेंतुमभाइनसहतचलहुसकलमिलिताहं मैंहुंचलतुवसंगद्रुतताजिविलंबनरनाहं ॥ १ ॥ चौपई तुमजसजसपूछवनरराई तसतसभीषमदेहिंवताई ॥ १ ॥ तुम्हरेसंगमैंहुंसुनिलैंहपिनिकवहुंनअसअवसरपैहं ॥ २ ॥ प्रभुमुखसुनिप्रभावअभिरामहंधनधनगुन्योनरिंद्रापितामहं २ चलहुंभूपभाष्योकरजोरी असअभिलाषअहैप्रभुमोरी ४ असकहिभाइनभूपवुलाई रथमांतगतुरंगसजाई ५ इकरथअर्जनस्यामविराजे यकरथधर्मभूपछविाछजे ६ चलेजातसंजतसहदेवा सात्यकिनकुलकरतप्रभुसेवा ७ भनतकथाम

गअनकसुहाई पहुंचेकुरूक्षेत्रमहंजाई ८ सरनसेजजहंपरयोमधीरा भीषमसुभटासिरोमणिवीरा ९ वंदिचरनछितपतअभिरामा वैठ्यो सीससमीपपितामाह १० सन्मुखकृष्णप्रीतवियभाई वैठेउरप्रमोदसरसाई ११ सुननहेतभीषमउपदेसू आयेमुनिवरवृंदवसेसू १२ दोहा तवभीषमपूछ्योकुसलसादिरप्रीतिसमेत कह्योसवनतुम्हरीकृपासवविधिकुसलानिकेत १ चौपई श्रीजदुपतितवचरननवोरा टाढभयेउरहरषनथोरा १ भीषमनिरषिस्यामघनकाहीं मानिमहांनमोदमनमाहीं २ कियोप्रणाम जोरिजुगपानी जैजैजतिवदन वरवानी ३ दीननाथ मोसेअगकाहीं धनधनधनककोनजगमाहीं ४ जोयहिअवसरदरसनदीना कृपानकेतकृतार्थकीना ५ तवमृदुवचन कह्योभगवाना सुनहुपितामहंनीतिनिधाना ६ आयेधर्मभूप तुवपासामानसप्रसनकरनकछुआसा ७ सोवालकगानितुवगुनगेहू इतजुतसुभगसिषावनदेहू ८ नृपतिनीतितुवचतुरसियाने अपरधर्मतुम्हरेसवजाने ९ इनहिंसिषायसकल सुविधाना लेहुविदत जगसुजसमहाना १० जनप्रमोदप्रदसुनिप्रभुवानी भनेवदनभीषमसुषमानी ११ दीनानाथविरदतुवएहू राषहुसदादीनपरनेहू १२ पैसंसयमोहि कृपाअगारा हरियहरनहरिमेदनिभारा १३ तुम्हरेइछतभीतभवभंगा मोहिपूछनकरकवनप्रसंगा १४ जाकेंसवाविधि तुवजनत्राता अहैभरो चरनजलजाता १५ भीषमवचनसुनतमुसुक्याई सवनसुनायकह्योजदुराई १६ तुमसमतुमहुं प्रवीनपितामहं वयोनकोऊक्षात गुनग्रामहं १७॥

जथाअलापसाक्तिवरतोरी तयातातसामर्थनमोरी १८तुवमुषसुननस
रुचिसंसारू विमलधर्मसुभमर्मप्रकारू १९ हमइतजुतसमाजकिय
आवन अभिलाषततुव सुमतिसिषावन २० दोहा सुनिअसकथन
कृपायतनमनप्रमोदसरसाय भनेवदनभीषमवचन रचनरुचिराचितल्या
य १ नाथरीततुम्हरीसदा अहै विदतसंसार देहुसुजसनिजजननक
हंजसतसमिसहंमुरार २ चौपई अवमुकुंदकरिदयाघनेरी देषिदसा
स्रमसंजुतमेरी १ परमतपदमपानिममसीसा कथनसाक्ति सतधर्मरमी
सा २ देहुंदयानिधिजननिजकाहीं होहिंसहजसाहसमनमाहीं३
सरसंघाघाततनपीडा प्रभुढिगकहत होतअतिव्रीडा ४ सुनतदेव
व्रतवचनरसाला धर्योमाथतहिहाथकृपाला ५वहुरिभन्योअसवदन
मुरारी सुनहुभक्तभीषम व्रतधारी ६ सकुचनकरत भासरविकोरी धर्म
कथततितितुमहिंनषोरी ७ पायसपरसपानिभगवाना मिटयोघाऊ
स्रमसरनमहाना ८ विगतषेदउपज्यो सुषदेहा उमग्योहरिपद
पदमसनेहा ९ भन्योपरसिपुनिचरनमुरारी नृपपूछिये रुचिजथा
तुम्हारी १० धर्मसुत्रननत्र प्रसनउचारा राजधर्मकरकहहुप्रका
रा ११ आनविधानवेदमतगायन करियकथनसंदेहपलायन १२
दोहा तवभीषमउरसुमरिपदजदुपतिकृपाअगारसानकूलवरननाकि
येराजधर्मविसतार १ चौपई वहुरिअनेकआनमनभाये सहितअंग
इतिहासअलाये १ विधिनिषेधपुनिवहुविधिभाष्यो अर्थसास्त्रकछु
मर्मनराष्यो २ कइेसकलसाधनअनुरागा स्वर्गदनर्कदकरमाविभागा

३ आपदधर्मअनेकप्रकारा जनमजगतसतअस्ताविचारा ४ जोगवि
रागज्ञानाविज्ञाना मोक्षधर्मपुनिकियेवषाना ५ विलगिविलगिमन
हर्षप्रलीना विमलभक्तिपथगायनकीना ६ वरन्योपरमधर्मसुषदाना
दानधर्मपुनिविविधवषाना ७ निर्गुणसगुणउपासनचारू लक्ष
णसाधुअनेकप्रकारू ८ तीर्थसंतमहातमजोई कीनविसदगायन
मुषसोई ९ जसजसपूछयोभूपनभूपा तसतसभीषमकियोनरूपा
१० रह्योनकाहुसेषतहिकाला पूछयोजोनधर्ममहिपाला ११
पूछयोवहुरिभविक्षतगाथा वरन्योसोहुंसकलकुरुनाथा १२ सो
रठा किमिपावहिंविस्रामभीषमभनितसपष्टसुभ व्यासादिकअभिरा
मजहंबेठेस्रोतासकल १ चौपई पुनिसवकहंजुगभुजाउठाई क
ह्योपितामहंअसगोहराई १ हैसिद्धांतसास्त्रसबएहू राषैसदासंतप
दनेहू २ परउपकारानिरतधरिकाया होयअनंन्यदासजदुराय। ३
सीलसुभावसदानिजराषै माषैमननविषैरसचाषै ४ राषैसवजी
वनपरदाया रंगैरंगमोहमदमाया ५ सत्यधर्मरतरहैसदाहीं
कपटद्वेषराषैकछुनाहीं ६ धारैव्रतपरहितपरप्रीती राषैअटलवच
नमनजीती ७ तजैब्रजादवंसानिजनाहीं हेरैहारिमयसवजगकाहीं
८ हैयहसारधर्मसमुदाई सुवनधर्मउरधरहुसदाई ९ मुषहरिनाम
दयामनजांके मायाकराहिंसपरसनतांके १० असप्रवोधकरिविविध
प्रकारे वदनदेवव्रतपांडकुमारे ११ लीन्योवहुरिमौनव्रतधारी तवमु
कुंदज्ञुतमुनिगणसारी १२ दोहा लगेसराहनवदनवहुवारवारहर

पाय आहिंनभयोनहोहिंजगधनधनभीषमभाय १ चौपई भईगगन तवगिरासुहाई रह्योउत्तरायनअवछाई १ सुनिभीषमजुगजोरितपानी जदुपतिसोंअसविनयवषानी २ दीननाथदीननसुषदाई चल्यो जातअवसमयाविहाई ३ होहुनाथममनैननआगे करनपयानप्रानय हलागे ४ प्रभुसनमुषदेषतदृगतोही मायामोहनव्यापहिंमोही ५ तवमु कुंदउठिसानंदरागे भयेठाढ़द्रुतभीषमआगे ६ चरनवोरमुषसनमुषहेरैं मनहुंभीतिभवभक्तनवेरैं ७ सुररिषिब्रह्मऋषीऋषराई गंधर्वजक्षसिद्धस मुदाई ८ चारनचारुचतुरनरनाहां ठाढविलोकहिंकौतुकताहां ९ वार वारअसकहतसवाहीं अहोभागभीषमजगमाहीं १० स्यामजलधत ननैनविसाला विलसतहृदयविमलवनमाला ११ वसनपीतदुति दामानिलाजे हरनकोटिछविमदनाविराजे १२ चारिभजानखलन मदगंजन सुरदुजधरनिधेनुमनरंजन १३ मुकुटमयूरपूरछविनीकी चितवनिचारुमुनिनष्टयजीकी १४ कुंडलकरनवदनविधुनिंदा कचकलकुटिलमधुपमनुवृंदा १५ दोहा असमूरतिमृदुमाधुरी लषिसनमुषभरिनैन चितवतअनमिषेदवव्रतसरनसेजकृतसैन १ चौपई सोमूरतिनैनमनपथल्याई भीषमउरनिजलीनवसाई १ रह्यो तहांसवमुनिनसमाजा कौसिकव्यासदेवभरद्वाजा २ नारदपरसराम जगसेवा औपरवतकस्यपसुकदेवा ३ देषिप्रेमवसजदुपतिकाहीं तेसवकहतपरस्परताहीं ४ आजकौनभीषमसमआना जहिरझाव असकृपानिधाना ५ अंतकालसनमुषगतठाढे अतुलतकृपादृष्टि

निजवाढे ६ आजभागयहिभागननाहू एकवदनकिमिजाहिं सराहू ७ हैसेवककरयहसिवकाई धौंकृपालकरकृपासुहाई ८ जासप्रभावनामसिवकासी जीवनमुक्तिदेतअवनासी ९ जासनाम रटिजनजगमाहीं आवतवहुरिजनमफिरिनाहीं १० मरनकाल हरिसुमिरतजेहू नासतकोटिजनमअगतेहू ११ सोकृपालभीषम पदमाहीं ठाढेअभयकरनजनकाहीं १२ दोहा धनधनभाजन सुजसजगभक्तदेवव्रतआजु मुक्तिदानजाहिदेनहितठाढेत्रिभुवन राजु १ चौपई देषिदेषिप्रभुदीनसनेहा सुंदरस्यामतामरसदेहा १ श्रीलालितपदपंकजमाहीं कियेनिबासमधुपमनकाहीं २ करि यकाग्रइंद्रैयकध्याना पुलककायजलदृगनढुराना ३ पानिजुक्तजुग विनयअलाइं सुनहुभक्तवत्सलजदुराइं ४ वितेसप्तसतसंवतमोरे जगकारजनहिंकवहुंविछोरे ५ सकलजनमअपकरमनमाहीं षोयो दीननाथजगमाहीं ६ सपनेहुंभलोकरमनहिंकीना दुराचाररतरह्यो मलीना ७ यहकृपालकछुनाहिनजाना कहिसुकृतरीझ्योभगवाना ८ जान्योप्रभुकरविरदनयारो जनअवगुनसवगुनाहिंविचारो ९ अव सवमुनिनचरनपरमोरी दंडप्रणामजुगलकरजोरी १० एहिअवसर इननैननमोही देषतएकस्यामघनसोहीं ११ मननवदनअननीषम वानी आनंदमगनजोरिजुगपानी १२ दोहा जेमूरतिमुनिमनवस्यो हृदयराषीनिजसोय लाग्योअसतुतिकरनप्रभुसावधानमनहोय १ चौपई जैजैप्रजापालजदुनायकजैजैभक्तसंतसुषदायक ॥ १ ॥

जैजैवृंदारकगणमंडा जैजैषंडिनदनुजप्रचंडा जैजैआनंदकंदमुरारी जैजैजैतिकतुउरगारि जैजैकुंजनकरनविहारा जैजैधरनअनकअव तारा ४ जैजैकृपासिंधुजनरंजनजैजैभक्तभीतभवभंजन जैजगधीस रमीसअनामा जैजै जनमनपूरनकामा ६ जैजैनवतमालतनसोभाजै मुषअलकजालमनलोभा ७ जैविसालभुजवनतअनूठी मूरतिमदन कोटिछविमूठी ८ जैजैउरवनमालाविराजे पीतवसनदुतिदामनिला जे ९ जैवारजलोचनघनस्यामा जैकलंकिकिरीटछविरामा १० जैउडपालवदनदुतिदेवा जैअजचंद्रभालसुरसेवा ११ जैपारथसा रथिजदुनाथा जैरथचक्रधरनरणहाथा १२ जैजैमोरसरनस्रमपाई कनकलस्वेदवदन उभराई १३ जैजैरणरजरंजितअंगा विचविच स्रोणतावेंदुसुरंगा १४ जैकरिटेरसुनतद्रुतधावन सकुनिअंटगज घंटदुरावन १५ जैजैनषनगधरनकृपाला वृजउवरनप्रभुदीनदयाला १६ जैजैसत्यासिंधुभगवाना जैजैपतित उधारनवाना १७ जैजैदीन नाथरणदेषी धर्मभूपचमुविकलवसेषी १८ कृपासिंधुदासिनहितला गीतृणइवनिजप्रणदीनतयागी १९ पूरवहेतुमोरप्रणस्वामी धर्यो चक्रकरकमलनिमामी २० दोहा अहोनाथसमकौनअसकरनदी नपरहेत जोजनसताहितअस्तभेभगवनकृपानकेत १ चौपई निजह ठतजतदीनसुषदाई राष्योममहठभक्तसहाई १ कियोआजधनिरं कनरंका तास्योतिनलोकदेडंका २ असकहिअनमिषनयननहोई सो ईरूपसनमुषप्रभुजोई ३ देषतभयोअचलाचिततताहां गह्योमौनमान

सकुरुनाहां ४ जोगकलाकरिभक्तप्रधान सुमगतकृष्णभक्त वरदाना ५ विनुअजाससनमु षसुषकंदू तजतप्रानकौ तुककरुचंदू ६ भयोलीनजदुनंदनजोती देषिभक्तभ गवानमिलौती ७ वाजीगगनदुंदुभीनाना हरषिप्रसूनसुर नवरषाना ८ दमोदिसनजैजैधुनिछाई धंन्यधराधनभीषमभाई ९ मुनिसमाजसवउठ्येपुकारी अहोभागभीषमव्रतधारी १० जासरि झायसमरहरिकाहीं लियोवजायमुक्तिजगमाहीं ११ करतभक्तिव लसन्मुषठाढे देषतदीनयालसुषवाढे १२ दोहा कृष्णकृष्णसुमिर ततहजभक्तप्रानतजिदीन कृष्णकृपातेंकृष्णजनभयोकृष्णमहंलीन ॥ १ ॥ चौपई तवभीषमकरश्रीजदुनाथा परस्योकालितकंजकर माथा १ लेतसपरसतुरतजदुवीरा जरोवसनसमभयोसरीरा २ मृ तककरमपांडवसवकीन्यो जदुपतिताहितिलांजलिदीन्यो ३ तव भीषमकहंसुमरतसारी आयभवनसंजुतगिरधारी ४ कृपासिंधुतव सभासजाई वोलिधर्मनृपकह्योवुझाई ५ जोजोतुमकहंभीषमभा वा मतिमहांनउपदेससुनावा ६ सोनसुन्योदेष्योकहुंनाहीं भाषहुंस त्यभूपतुवकाहीं ७ अतनोमोहिनमरमनरराई जदपिविदतजगमो रवडाई ८ जोवसकरनमोहितुवकामा तोभीषमउपदेसलिलामा ९ स्रुतिपुरानासिद्धांतविचारी करहुअचर्णसदासुषकारी १० भीष मभनितसरसजगमाहीं मोहिअसआनपृयेकोउनाहीं ११ अरुसमा नभीषमसंसारा अहैनमोहिभक्तभवप्पारा १२ दोहा असप्रकार

नृपधर्मकहंबहुविधिनीतिवषान आपुसुमरिहरद्वारिकाकियोगवन भगवान १ एहअदभुतमनहरनभवभीषमचरितपुनीत मैकीन्योसंक्षप्त कछुकथनहरनभ्रमभीत २ कुमतिविनासनसुषकरनजरनतृविधतपसूलज्ञानध्यानदायनविमलसकलसुमंगलमूल ३ कृष्णकमलपदप्रीतिनितदेनसुजससंसार दुरितदोषदारदसमनदमनमोहमदमार ४ इतिश्रीमन्महाराजाधिराजजंबूकाश्मीराद्यनेकदेशाधिपतिश्रीरणवीरसिंहाज्ञप्तभगवद्भक्तिसारमीयांसिंहकृतभाषाभीषमचरितंसर्गः ७

अथगोदाअंवाचरितं दोहा जासुकृपातेंवद्रश्रुतिसुनाहिज्ञानसुखदा नेंअंधअमलकलजोनिहग लेहिंविदतजगजान १ अरुजहिकृपा कटाक्षितेंहोहिंमूकवाचाल पंगुचढहिंगिरिवरगहनपायप्रसादकृपा ल २ असकरुणामृतसिंधुकेसुमरिचरणजलजात संतसुजसगुण विमलकछु करहुंकथनअवदात ३ चौपई विष्णुचित्तकंन्याइ कगाई गोदाअंवानामसुहाई १ तासकथाअदभुत सुषदानी इहां भननकछुकरहुं सुवानी २ विष्णुचित्तइकनवललिलामा विरचित रस्योतुलसिआरामा ३ सींचततासुदिवसइकताहीं मिलीएक्कन्या मुनिकाहीं ४ देषिसीलनिधिरूपकुमारी लागिदयानहिंसकेसहारी ५ सुताजानिअतिप्रीति समेता ल्यायहरषिताहिरुचिरनकेता ६ ॥ लगेतासुपालनमुनिराई तवनिसिस्वपनदीनजदुराई ७ जवहमको लवपुषधरिलीना धराउद्धारविदतजगकीना ८ तवपूछयोमेदनिअ समोही कौनपृयेपूजाप्रभुतोही ९ रीझहुकौनजननासिवकाईं तव मैकह्योतासुसमुझाई १० पूजासुमनमोहिपृयलागै असअसेवनसज्ज नअनुरागै ११ कीर्तननाममोरसंसारा कराहिंअनंन्यजौनानिरधारा १२ तापरमनअनुरागनथोरा लेहिंवजायमुक्तिवरजोरा १३ ताते ममउपदेससुहावा हहयराषिमेदनिमनभावा १४ भईकन्यकारूप निधानी तुम्हरेभवनवास रुचिमानी १५ जोराहिहौसेवतएहिका हीं तोतुम्हरे कछुदुर्लभनाहीं १६ दोहा असरजनीदेष्योस्वपनवि ष्णुचित्तमतिधीर उठेप्रातगुनिभागवड वदन रटतजदुवीर ॥ १ ॥

चौपई जातकरमकंन्याकरकीन्यो महांमोददंपतिमनलीन्यो १ समयपायकंन्याजवसोई जुवावैसकहंप्रापतहोई २ कृष्णकमल पदप्रेमजुडानी कृष्णकृष्णनिसवासरवानी ३ सुमनमालहरिहेतर चावै हरिगुनाविमलसुजसमुषगावै ४ सुमनमालवनमालसुहाव न तासप्रेमरचितमनभावन ५ विष्णुचित्तनितदासनरीती रंग नाथकलभवनसप्रीति ६ जायअनुपमहर्षसरसाई देतरुचिरानि जकरनचढाई ७ एकसमयगोदामनभाई ललितकरनानिजमालर चाई ८ सोलीन्योआपनउरधारी पुनिकरगहितमुकुरसुकुमारी ९ निजसजधजकलदेषनलागी आयगयेतवपितुवडभागी १० लषिउछष्टवनमालकुमारी नूतनविरचिललितमनहारी ११ रंग भवनद्रुतजायप्रवीना प्रभुहिंकरन पहरावनकीना १२ दोहा रंगना थभगवानतव देषिनवलस्त्रजनयन विष्णुचित्तकहंविहसिमुषभनेल लितमृदुवैन १ चौपई गोदाकरजूठी स्त्रजजोई पहिरावहु मोरेतु वसोई १ जदपिललितएहमालतुम्हारी पैमोहिंगोदाकरअतिप्पा री २ तुवनवीनसुचितेंअधिकाई सोजूठिमोरेमनभाई ३ विष्णुचित्तसुनिभगवनवाचा अपनेउर अतिआनंदराचा ४ सुतासहितवन मालहिंलीन्यो रंगनाथकहंअरपनकीन्यो ५ तवभगवनगोदाकहंदेषी भनेवचनजुतकृपाविसेषी ६ राषहुसुताहिंभवनानिजज्ञानी हमव्याहवएहिस्वंवरठा नी ७ विष्णुचित्तसासनप्रभुलीन्यो सुतासमेतगवनगृहकीन्यो ८

एकसमयगोदासुकुमारी हराषिपितुहिंअसवचनउचारी ९ तातवि
दतव्रह्मंडमझारा केतेदिव्यधामनिरधारा १० सुनिपुनीतगोदामुष
वानी विष्णुचित्तमानससुषमानी ११ जेतेदिव्यधामहरिपावन ल
गोहर्षिनिजसुताहिंसुनावन १२ दोहा सुनगोदेमेराकथनसावधा
ननिरधार श्रीविकुंठनिवसैंसदाश्रीवसुदेवकुमार १ चौपई पुनिआमो
दलोकजहिनामानिवसतवनसंकरवलरामा १ लोकप्रमोदप्रद्युम्नसुहाये
कराहिंनिवासहर्षसरसाये २ अरुसामोदलोकछविछाजे सानकूलअ
निरुद्धाविराजे ३ सेतदीपमहंमंडिनसंता वसैछीरसाईंभगवंता ४ वदरी
धामनामजाहिगावा नरनारायणकेमनभावा ५ वसैंजोगपतिहरिप्रद
कामा नेमषारतीरथअभिरामा ६ मुक्तिनाथमहंमुदितविराजेसालिग्रा
मइमतछविछाजे ७ वसैअवधसियसानुजरामा जदुनंदनमथुरा
कियधामा ८ निवसतविश्वनाथकलकासी तारकमंत्रदेतअवना
सी ९ अभयकरतजगजीवनकाहीं सिवसमकोउदारवियनाहीं १०
अवनीनाथविदितजिननामा कियअंतिअमलनिजधामा ११
द्वारवतीजदुकुमदमयंकू सरनागतसवहरनकलंकू १२ जेंनंदनंदन
नामकहाने निवसतनंदग्रामवरसाने १३ वृंदावनकलकुंजबिहा
रू केलिपुंजनितनवलसवारू १४ कालीहृदगोविंदसुहाये गोवरध
नगिरधरछविछाये १५ गिरिगोमंतसौरिभगवाना हरीद्वारजदुप
तिमनमाना १६ दो० निवसहिंसंतसमाजजतुगयागदाधरदेव वेनी
माधवरमरहेप्रागराजजगसेव १ चौपईगंगासागरकपलकृपाला

नंदीग्रामभरतसुषशाला १ जानकिलषनसहितरघुनायकनिवस
तचित्रकूटसुषदायक २ विश्वरूपप्रभुज्ञेत्रप्रभासा कूर्मक्षेत्रकूरमहरि
वासा ३ जंगनाथनीलाचलवसहीं जुतवलभद्रसुभद्राविलसहीं ४
सिंहसैलनरसिंहवसैया गदानाथतुलसीवनछैया ५ स्वेताचलम
हंनरहरिस्वामी कराहिंवासनिजजनअनुगामी ६ क्षेत्रपुरातमदोष
विनासा तहंसषीनारायणवासा ॥ ७ ॥ गोदावरिकेतीरसुहाई
धर्मपुरीसुभसंस्त्रातिगाई ॥ ८ ॥ तहांहरनसवसंतनपीरा जोगा
नंदवसैजदुवीरा ॥ ९ ॥ कृष्णावेनीतीरसुहंता वसैअंध्रनायक
भगवंता १० धामअहोवलसुपरनरगरहीं श्रीनरसिंहवासतहं
करहीं ११ वरदराजकांचीसुषमाना पंडरपुरविठ्ठलभगवाना १२
दोहा सेसाचलमहंधामकियेंव्यंकटनाथसदाहिं नारायणनिवसै
मुदितश्रीजादवगिरिमाहिं १ चौपई नारसिंहघटिकागिरिराजें
कांचीवहुरिरुचिरछविछाजे १ पारथसारथिपूरनकामा पुनिज
थोक्तकारीअसनामा २ तहांरमापतिधामसुहावन तहिनगरीदक्षण
दिसपावन ३ निवसहिंभक्तसंतसुषदाता नरहरिनामजासवि
क्षाता ४ पश्चमदिसातृविक्रमधालू करहिंवाससरणागतपालू ५
गृद्धसरोवरतीरसुहाये वसहिंविजैराघवरघुराये ६ वीक्षारम्यक्षेत्र
मनभावन वसैवीरराघवजगपावन ७ त्रोतादरीहरनदुषदीना रंग
सैनप्रभुआश्रमकीना ८ गजनगरीगजसोकनिवारन श्रीहरिवस
हिंजननभवतारन ९ करहिंवासवलिपुरअभिरामा श्रीवलरामनाम

छविधामा १० क्षीरवतीकरतीरसुहावन पुरिगोपाललतिमन
भावन ११ श्रीगोपालविराजततांहीं अभयकरतजगजीवन
काहीं १२ जेश्रीमुष्णक्षेत्रछितिभ्राज्यो कोलरूपहरितहांविराज्यो
१३ तूरानगरसुदक्षणमाहां वसैंकमललोचनप्रभूताहां १४ कावेरी
मधतहांसुहावा दीपएकभासतमनभावा १५ रंगनाथभगवान
सुहाये निवसाहिंतहांजननसुषदाये १६ दक्षणरामक्षेत्रयकजाहां
वसहिंरामजुतजानकिताहां १७ श्रीनिवासकलक्षत्रविसाला तहं
पूरनभगवानकृपाला १८ सुवरननगरएकछविरासा सुवरनमुष
प्रभुतहांनिवासा १९ पुरीव्याघ्रनामिकअसजेहू तामधमहांवाहु
प्रभुगेहू २० दोहा व्योमनगरमहंचित्रहरिकरहिंवाससवकाल क्षेत्र
उत्पलावरतमैनिवसतश्रीजदुपाल चौपई १ मनिकोटीमहंदीनदया
ल. वसहिंमहांप्रभुआनंदशाला १ सागरतीरकृष्णपुरमाहीं निवसैं
महांकृष्णप्रभुताहीं २ विष्णुक्षेत्रयकसंस्रातिगायन वसहिंअनंत
भक्तिकरदायन ३ कृष्णक्षेत्रजुतसंतविकासा तहांलषमिनारायण
वासा ४ स्वेतसैलयकनिगमवषाना वसैसांतमूरतिभगवाना ५ अग
निहोत्रपुरविदतअनूपा तहांवसाहिंबावनसुरभूपा ६ भार्गवक्षेत्र
जवनमाहिछावा तहांनिवासपरसुधरगावा ७ अहैविकुंठनगरयक
रामा वसहितहांमाधवछविधामा ८ विदतगरिष्ठक्षेत्रजग
पावन सषाभक्ततहंवसाहिंसुहावन ९ करसुदर्शनप्रभुदुति
रासा चक्रतीर्थमहंरुचिरनिवासा १० कुंभकोनपुरिभूत

मझारा सारंगपानिदहुनपगधारा ११ तीर्थकलुषहरनयकनामी वसहिंगजेंद्रमोक्षप्रदस्वामी १२ दोहा दक्षणदेसप्रसिद्धयकचित्रकूटअसनाम तहांवसहिगोंविंद प्रभु जननकलपद्रुमकाम १ चौपई पुरीउत्तमाजिजगलसहीं तामधईसअनुतमवसहीं १ स्वेतसैलमहंक्रियेनिवासू पद्मविलोचनविश्वप्रकासू २ पारब्रह्मपारथपुरमाहीं करहिंसफलजगजीवनकाहीं ३ वृद्धपुरीवृषआस्रयस्वामी सानंदवसहिंजननअनुगामी ४ सरतपुरीसरन्यसुषकारी संगमनगरिअसंगमुरारी ५ धनुषक्षेत्रजगदीस्वरगाये कालमेघमुगदरपुरछाये ६ दक्षणमहंमथुरासुभधामा तहंसुंदरप्रभु वसहिंलिलामा ७ परवराजनामकप्रभुजोई निवसहिंवृषपरवतमहंसोई ८ वरगुनक्षेत्रपुन्यथलभ्राजा नाथनामप्रभुतहांविराजा ९ रमापतीकुरकापुरिलसहीं गोष्ठिनाथगोष्टीपुरवसहीं १० दर्भसैनमहंसिंधुकिनारे भूमिसैनरघुनंदुपधारे ११ धन्वीमंगलनगरउजागर निवसहिंकान्हकुवरतहंनागर १२ दोहा भुवंरक्षेत्रमहंविदत अस निगमनिरूपनकीन वलसाली भगवानतंह वसहिंहरन दुषदीन १ चौपई नगरकुरंगएकछविरासी। तहंपूरणप्रभुअहैंहनिवासी १ तटिथलनगर रुचिरमनभावनवसहिंविष्णुवपुतहांसुहावन २ छुद्रसरिततटपरमरसाला अच्युतनामविदतजगपाला ३ भद्रपुरीमहंसंस्रातिगाये नामअनंतसैनप्रभुछाये ४ एहिविधिविपुलपुंन्यथलमाहीं विग्रहदिव्यवसेषसुहाहीं ५ जेतिनकरसेवनमनराचे चारिपदारथलेहिंसुतांचे ६ दिव्यरूपजे

सकलवषाना तिनकरचरणा मृतकियपाना ७ होतमुचितदूषनसमु दाई लेहिंसहजजगसदगतिपाई ८ हरिमूरतिसनजहिंअनुरागा कियोनतेऊपततहतभागा ९ पितुमुषसुनिप्रबोधअसनीके गोदेभ ईमगनसुषजीके १० हरिमूरतिसवसत्यविचारी वारवारउरवंदिकु मारी ११ दीन्होतजिभरोससवकेहू कीन्योरंगनाथपदनेहू १२ दोहा विरचिललतवनमाल नितनवलपठहिंप्रभुकाहिं रंगनाथसोव तजगतदीसतनयननमाहिं १ चौपई इकसतअष्टदिव्यहरिधामा भारतषंडविदत अभिरामा १ ॥ सुनिप्रभावतिनकरमनभावन रंग नाथपदपंकजापावन २ भईनिरतगोदेदिनराती प्रीति प्रतीइनहृदयसमाती ॥ ३ ॥ देषिजनकअसप्रेमनवी ना रंगदेवचरननमनलीना ॥ ४ ॥ रंगनाथकीकथाअनूपन लगेकरनसानंदनरूपन ५ सुनगोदेसादिरमनलाई रंगनाथकर गाथसुहाई ६ एकसमयतपकियेविधाता प्रकटेदेषिभक्तसुषदा ता ७ सुंदरस्यामतामरसकाया चारुचतुरभुजरूपसुहाया ८ निदरतवदनकोटिविधुसोभा बालतिलकचंदनमनलोभा ९ अं गदादिभूषितवनमाला वसनपीतउपवीतरसाला १० मकराकृ तकुंडलकलकना पुंडरीकलोचनछविषाना ११ दोहा मोर मुकुटमाथेवनेभनेवचनभगवान मागहुंभवतचतुवदनमोहिप्रसंन्य जियजान १ चौपई तववारिंचिअसविनयवषाना हमरेएहलालस

भगवाना १ तोहिपूजवकरिकैमषभारी सोपूरनकीजैगिरिधारी २ करहुजग्यविधिकहसुरनाहां पुन्यक्षेत्रकुसमतिवनजाहां ३ असकहिभयेलुपतसुरत्राता विधिजुतरच्योजग्यतवधाता ४ तहां मुनीसअसुरसुरचारन आयेविधिमुपदेषनकारन ५ इक्ष्वाकूमहारा जसुहाये निजसमाजसंजुततहंआये ६ पूजतरहेवारिंचितहांहीं रंग नाथमूरातिमषमाहीं ७ सोअनंतछविकौनवषाने नृपइक्ष्वाकुविलो किलुभाने ८ करिदरसननरनायकपावन भूरिभागनिजगुनतसुहा वन ९ विधिसोकहतजोरिजुगपानी मोरविनंतिदीनवरदानी १० रंगदेवमूरतिछविपागी एहिपूजनममतिअनुरागी ११ जोमोपें करुणाप्रभुतोरी तोफुरकरहुआसएहमोरी १२ मूरतिरंगनाथभग वाना मोहिकीजिपूजनाहितदाना १३ सुनतवरिंचिभन्योअसवागी करहभूपतपमूरतिलागी १४ तोतुवएहिपूजनअधिकारी व्हैहोंअ वसिभूपउपकारी १५ सिरधरिहितकवचनविधिराई कीन्योतपस रजूतटजाई १६ तवनृपदेषिउग्रतपभारी सानकूलविधिअवधासि धारी १७ दीन्योरंगनाथभगवाना महांप्रमोदभूपमनमाना १८ तवतेंरघुकुलकेनरपाले रंगनाथप्रभुदीनदयाले १९ मान्योनिजकु लदेवसुहावन जवरघुनाथपतितजगपावन २० दोहा कारिरणरार प्रकारवहुमारिअसुरदसकंध सियेलषनजुतअवधपगधास्योकृपाप्रबं ध १ चौपई तवरघुपतिसनरावनभ्राता आयोअवधपूरिमदगाता १ सोविदायजवहोवनलागा जोरिजुगलकरमनअनुरागा २ रघु

पतिसोअसविनयउचारी प्रभुविजोगनहिंसकहुंसहारी ३ तासप्री
तिदृढदेषिरसाला रंगनाथतहिदीनकृपाला ४ दनुजनाथअसभगवन
पाई गुनतभागानिजाविपुलवडाई ५ वारवारपदवंदि
षरारी चल्योलंककहंवेगसिधारी ६ जवकावेरितीरकियआना त
हांसुनेमतासकछुठाना ७ सोजवभयोसमापततहीं लाग्योचलनदे
सनिजकाहीं ८ रंगनाथकहंवहुरिउठावन भाउद्युगददनुजकुलभाव
न ९ जदपिजतनवलकियोमहाना तदपिनउठेरंगभगवाना १० त
वअधीरव्याकुलदुषपागा व्हैनिरासचितरोवनलाग ११ भईगगनत
वगिरासुहाई करहुनसोचनिसाचरराई १२ तिहरेसंगअवनहमजाइ
एहिथलवसवरुचिरसुषपाई १३ यहभूमीभावतिप्रियमोही कहहुंस
त्यमानसरुचितोही १४ जोतुमरेमनममअनुरागा तोनितदिवस
भक्तवडभागा १५ लंकातेंप्रतिदिवससिधाई करहुमोरपूजनइतआ
ई १६ दोहा जवसुमरौंतुवमोरजिय करहुभक्तव्रतधारि होवप्रकट
मैतुरततवपुरवहुंआसतुम्हारि १ चौपई रंगनाथसासनसुषदाई सिर
धरिवंदिचरनदनुराई १ गयोलंककहंवेगसिधारी सुमरतहृदयभक्तभ
यहारी २ तवतेंनित्यप्रीतिजुतआई करिपूजनप्रभुजाहिंपराई ३ वसि
कावेरिरंगभगवंतातस्थापततजगजीवअनंता ४ जहिमंदिरभगवान
निवासा विसकरमानिजकरनप्रकासा ५ ललितदिव्यदिपसपतप्र
कारा तहांवसैहरिभक्तउदारा ६ सुनिकलकथारंगभगवाना परममो
दगोदेमनमाना ७ इकसतअष्टरूपहरिजाने सवतेंअधिकरंगप्रभू

माने ८ कह्योजनकसनवचनवहोरी मोहिकबामिलाहिंभक्तचितचोरी ९ रंगनाथभगवनजगपावन मुनिऋषिसंतसुरनमनभावन १० विष्णचित्तगोदेसुनिवानी भनेवचनताहिप्रीतिपछानी ११ पुत्रीमागसीर्षव्रतकीजै तबपदसरनरंगप्रभुलीजै १२ वृंदावनगोपिनजुतप्रीती धार्‌योएहव्रतविमलसुरीती १३ तवतेभईसकलसुषपानी पायेनंदनंदनवरदानी १४ जनककथनअससुनतनवीन्यो गोदेमागसीर्षव्रतकीन्यो १५ पदनप्रवंधविरचिमनभायन व्रतकरिमधुरकरहिंकलगायन १६ मगनप्रेमतनकरसुधित्यागी रंगनाथदरसनअनुरागी १७ एकदिवसानिसिस्वपनलिलामा मिलिगेतासुरंगघनस्यामा १८ सोरठा चौंकिउठीततकाल लागीचितवनचहुंनदिस सोमूरतिनंदलाललषिनपरतव्याकुलभई १ चौपई तवतेंवैठतविचरतजाहीं सोवतजागतगावतमाहीं १ रंगनाथमृदुमूरतिनीकी देषतरहतसदापृयजीकी २ दिनदिनरंगप्रेममदमाती लेतनविरहतपततनसाती ३ चंदनवागगईइककाला जग्योविजोगदुगननंदलाला ४ विप्रसुताइकतासुसहेली सुंदरनागरिरूपनवेली ५ देषितासदुषपूछनलागी कौनसोचवसतुवधूतित्यागी ६ भईमलीनवदनसषिप्यारी करहुप्रकटमोहिमर्मउचारी ७ तवगोदेकहिगिरालिलामा मोहिसपनेछलिगेघनस्यामा ८ दैदरसनभेलुपतमुरारी तवतेंकलनपरतकछुप्यारी ९ कहदुजसुतावदनमुसक्याये विविधरूपभगवानसुहाये १० कवनरूपसषि

रावारिप्रीती लिषहुचित्रमोहिहोहिंप्रतीती ११ तवगोदेमानसअनु रागी हरिकेचित्रउतारनलागी १२ जवतहिंरंगनाथमनभावा चित्रचारुउरवस्योसुहावा १३ लिषततासुमानससकुचानी नमतन यनकरकपिललजानी १४वोलीमंदमंद मुसक्याती एहछलियासुप नेमोहिराती १५ मिल्योअलीदुरिगोततकाला तवतेंजरहुंविरहंन लवला १६ वोलीविप्रसुताहितकारी सुनगोदेममप्रानपयारी१७ जोतोसेंमिरोसातिनेहू तोमैरंगनाथप्रभुएहू १८ देहुंमिलायसषीप्रण मोरा होहिंमनोरथपूरनतोरा १९ तवगोदेवोलीकरजोरी अवजी वनगतितुवकरमोरी २० रंगभवनद्रुतजायसनेही पियसनकहहुद साममएही२१ गोदेवचनसुनतसषिप्यारी रंगभवनद्रुतचलीसिधा री २२ दोहा पृथममनोहरवागमहंजहंवसंतछविछाई गईनवल नागरिसषीउरप्रमोदसरसाई १ चौपई तहंदेष्योइककौतुकतासा मृदुलसेजकलकूसमाविकासा १ तहांविरहंकुलश्रीपतिहोई लोट तकलनलेतपलसोई २विप्रसुतातवनिकटासिधारी हरिपूछेमृदुगिरा उचारी ३ अहोकौनतुमकोहितलागीलोटनअवनिविकलसुधित्या गी४तवभगवानकह्योअसटेरी गोदाविरहंविकलमतिमेरी ५ कह हकौनतुमकारनकेही मोहिपूछयोअसवचनसनेही मैतोरंगनाथअ लिऔहों तुवकारनअगमननिजकैहों७तवनागरिसाविमुषमुसक्याई सफलकाजनिजगुनतअलाई ८ मोहिगोदेप्रभुदानपठाई तासुदस वरननइतआई९प्रियाकोनामसुनतभगवाना वोलेवचनजोरिजुगपा

ना १० जासविरहंव्याकुलमतिमेरी तुवताहिनामकह्योमुषटेरी ११ श्रवताहिकहहुकुसलकलमोही पठयोकौनहेतइततोही १२ दोहा कह्योतबीजोइमाउफलमालहिउरपहिराने सौंइतुवप्रीतमहितपठयोपृथगोदेरीतसानी १ चौपई लीजियललितमालचितचोरी भने तासकछुवचननिहोरी १ मोहिसुपनेमिलिनंदकसोरी दैदरसनलैगयेचितचोरी २ मेलिअपांगदुंदहगटोने दुरेतुरतमृदुश्यामसलोने ३ तवतेविरहंअनलमोहिदहती जुलकतजियनपरतकलसांती ४ औसोकौनकरतकोऊकांही वांहपकरित्यागतप्रभुनांही ५ मनोवदनगोदेजसवानी दीननाथसोंसकलवषानी ६ काहकहूंताहिदसाउचारीनाथविरहंदारुनदुषभारी ७ प्रभुविजोगतेंदिनदिनकाया होतजातदूवरिसुरराया ८ षानपानसबदियोविसारी प्रभुदरसनअभिलाषतयारी ९ चारुचौकमुकतानसवारत नाथामिलनसुभसगुनविचारत १० विकलतवहीनमानिजिमिवारि तिमितरफतुवविरहंमुरारी ११ वारवारकाकरहुंवषाना मिलहुंवेगनतत्यागतप्राना १२ जानकिहेतुसंतपतिवांधा हन्योप्रचारिसमरदसकांधा १३ सिसुपालादिगरवनृपगारी ल्यायेरुकमानिजीतिमुरारी १४ दोहा मेरीवारउदारतुवकाहगहीनिठुराई दीनदयाद्रुमकलपकसदीनदयाविसराई १ चौपई द्रुपदसुताजगनाथउवारी गरुडछाडगजकीरषवारी १ वृजगोपीगौतममुनिवाला प्रभुसुमरतसवकीनानिहाला २ मैंहुंनाथपदपदमअलीनी मोपेंकसनदयाप्रभुकीनी ३ कौनचूकमेरीभगवाना होयतोछिमियभक्तवरदाना ४ जानिअनंन्यचरनानिजदासी क

रियगृहहणलाषिदरसनआसी ५ सुनिसषिवचनरंगभगवाना प्रेमनेम गोदेहढजाना ६ भनेनेहपूरितमृदुवानी सुनहुसत्यसहचरी सयानी ७ जवगोदासुधिआवतजाके तवमोहिकछुनसुहावतनाके ८ चितचकोरचंदाजिमिराती चात्रिकचहतरहताजिमिस्वाती ९ तिमिगोदेसुमरणहमठाना छूटतसषीपलकनहिंध्याना १० गोदेविरहंविकलमतिमेरी तुवमुषसुनिसंदेससषिएरी ११ आजभरोसकछुकजियआवा तुवनेहानिकछुधीरवंधावा १२ दोहा रंगनाथअसभनतमुषपाठितमालनिजप्यारि सषितेसादरलेतकलकंठलीनद्रुतधारि १ चौपई सुनहुसषीतुवमालनदीना मानहुप्राणदानमोहि कीना १ जोहमआजमालनहिंपावत तौतनतेजियरोकढिजावत २ असकहिकमलमालगिरधारी करसुंदारिजुतजुगलउतारी ६ सषिकरदीनहराषिभगवाना वहुरीवदनमृदुवचनवषाना ४ जायदेहुसाषिपूयकरपानी पठीमोरयहजुगलनिसानी ५ कहहुवहरिअसवचनसुहावा कुरकानगररुचिरमनभावा ६ हमरोसुभगस्वयंवरछावाहिं तहंअवतारसकलममआवहिं ७ सुररिषिदेवमहारिषिसारी जुरिहेंसुजनभक्तममझारी ८ तहंतुवकरनमालसुषदाई परिहेंअवसिअविममआई ९ तवतुह्मारमनवांछितकामा होहिंरुचिरफुरसंस्रातिरामा १० हरिमुखसुनतगिरासुखदैनी लष्योमुचितदुषभईविरहिनी ११ करिप्रणामपदपदममुरारी लैविदायद्रुतचलीसि

धारी १२ दोहा गोदेपैंअलिआयतवहरषपूरिमनमाहिं कमल
मालमुद्रादईनईनागारिकाहिं १ चौपाई पुनिप्रीतमसंदेसवषा
ना सुनतपायगोदेमनुप्राना १ वारबारमानसअनुरागी हरषिता
सपदवंदनलागी २ सषितुवसमनआनहितकारिजहिवूडतदुषली
नउवारी ३ वीरकीनउपकारनथोरा एहनिवर्णांकिमिहोंहिंनिहोरा
४ गुनतसनेहरंगभगवाना पांचसातजवदिवससराना ५ वि
ष्णुचित्ततवसमयाविचारिलियेसंगदुहितासकुमारी ६ कुरकापुरि
कहंचल्योासिधाई वल्लभदेवनामतहंराई ७ सोहुंसजायसैनचतुरं
गा गवन्योविष्णुचित्तकरसंगा ८ आयेकुरकापुरसुषछाये तहां
स्वामिसठकोपहुंआये ९ औरहुंमुनिरिषिविप्रनारिंदा आयेविदुष
अचारजवृंदा १० विष्णचित्ततवउरहरषाई लीयेनिकटसठको
पवुलाई ११ सकलमर्मताकेसमुझावा तवसठकोपनरेसवुलावा
१२ दोहा वल्लभदेवनरेसकहंअसनदेसमुषदीन सुमतिमधुरक
विराजज्ञुततुवाछितराजप्रवीन १ सजहुस्वयंवरकररुचिरसकल
समाजअनूप सुनिलागोविरचनजथाउचितभूपकविभूप २ चौ
पाई रचेउतंगमंचवहुकंचिन षचितमाणिनमनुमानससवंचिन १
तनेवतानचारुचहुंवोरा फवंसिुफरसझरसाचितचोरा २ विछेवि
छौनछेजछविछाने जरकसिदुगधफेननिदराने ३ आसनदिव्यदि
पतसंघासन आयअवनिमनुइंद्रसुषासन ४ चारुचौकचौहटमटमा
री माणिवचित्रकृतचित्रतसारी ५ वनविनतवराविविधवजारू रच

नारुचिररम्यमनहारू ६ विरचिकुसमकलसिंचितवारी सरलवंक चतुकोनकयारी ७ सुभ्रतकदलिकलितबहुपांती देषिदेषिचित लेतनसांती ॥ ८ ॥ करतकदंववीचमनुटोना चारिषंभसोभितच हुंकोना ॥ ९ ॥ तहांदेवरिषिमिहारिषीसा आयेसुरनसहि तसुरईसा ॥ १० ॥ भूपभूमिमंडिलसमुदाई जस्योजमात जगतजनुआई ॥ ११ ॥ वैठेजथाजोगसवकाहू मुनिसुरसंत विप्रनरनाहू १२ कीन्हपरस्परसादरप्रीती जथाउचितवंदनसुभ रीती १३ आचारजनिजानिजकृतरूरी लगेप्रवंधगानसुषपूरी १४ दोहा तहांअष्टअरुएकसतदिव्यरूपभगवंत सफलस्वयंवरकरन हितआयेवपात्रनंत १ चौपई यकयकमंचनपरसववैठे गोदा छविपयोधिमहंपैठे १ पाछेरंगनाथप्रभुआई ऊचमंचसोभासर साई २ भेआसीनभक्तसुषदाता नैननलनिस्यामलमृदुगाता ३ उरविसालवनमालविराजी मूरतिकोटिमदनछविलाजी ४ चंदन तिलकमाथमनहरना मुकटमंजुछविजायनवरना ५ निदरतवदन विमलविधुसोभा अलकस्यामसुनिमानसलोभा ६ कचमेचकमनु मधुपसमाजू वसनपीतदुतिदामनिलाजू ७ अससरूपभगवान अनूपा देषिदेषिसुरनरमुनिभूपा ८ अहोभागनिजगुनतसवाहीं हमसमधन्यजगतवियनाहीं ९ कियेअनकहठदुर्लभजोई देषे सुलभनैनभरिसोई १० तहिअवसरसठकोपप्रवीना विष्णुचित्तसन भाषनकीना ११ अवगोदाहिंवोलियसनमाना होयस्वयंवरवेद

विधाना १२ दोहा विष्णुचित्तअससुनतद्रुतगोदाहिंलीनबुलाय सषिल्याईपटआभरननषसिषसकलसजाय १ चौपई गोदेरूप सीलगुनषानी तीनलोकनायकमनमानी १ रतिरंभेउरवासिवि धुनारी जासरूपछविचितवनहारी २ वरनिनजायतासकछुसो भा देषिसकलसुरनरमुनिलोभा ३ तवपितुभन्योप्रीतिजुतवानी जापैंतुह्मरीमतिहुलसानी ४ ताकेउरवनमालसुहाई देहुस्वयंवर सुतामिलाई ५ सषीनामजाकोअनुग्राहा तहिसठकोपवचनअस काहा ६ इकसतअष्टरूपसुषदाये रंगनाथभगवानसुहाये ७ तुव गोदाकेसंगसिधारी कहहुतिनहुंगुननामउचारी ८ तवसषिगहित करनकरगोदा लैगवनीउरपूरिप्रमोदा ९ हरिकेरूपदिषावनलागी कहिगुणनामठामअनुरागी १० जांकेमंजुमंचाढिगजाती तहि प्रभाववरनतसुषमाती ११ दोहा असप्रकारदरसातगुनकथनसवन सुभवानि रंगनाथकेनिकटजवलैआईसषिस्यानि १ चौपई सव रूपनतेंसरसवसेषे रंगनाथगोदेदृगलेषे १ पुलक्योतनमनमोद उमंगा छक्योछवीमानसप्रभुरंगा २ करतमनहिंमनदंडप्रणामा सोवनमालकरनमृदुरामा ३ रंगनायकलकंठसुहाई सानकूल द्रुतदीनमिलाई ४ जनजमातिअसदेषिसवाहीं जैजैमुषरकराहिंचहुं घाहीं ५ नभतेंसुरनसुमनझरिलाई हर्षिदीहदुंदभीवजाई ६ सुर नरमुनिमननमोदअपारा पूरिरह्योमंगलसंसारा ७ देषिदिव्यवपुभ गवननकि भेविसमतसुरनरनृपजीके ८ तहिाछिनआयकमलभवता

हांलागीसुरनसभासदजाहीं ९ भयेरंगप्रभुगरुडसवारारावेसासिचारु चमरकरधारा १० मारुतकरतविजनसिवकाईं करकुवेरकलछत्रझुलाईं ११ संभुइंद्रउरमोदप्रकासा धारेकरनकमलकलत्र्रासा १२ सुरकिन्नरगंधर्वनाना साजेनिजानिजरुचिरविमाना १३ कुरकानगरतहांमनलोभा श्रीवैकुंठदेतमनुसोभा १४ दोहा विष्णुचित्तकहंधन्यधंनकहतधन्यसबकोय जाहिप्रसादहमत्र्राजजगसकलकृतार्थहोय १ चौपई पुनिकरजोरिरंगप्रभुत्र्रागे विनयकरननमृतगातिंलागे १ श्रीसठकोपभवनउतसाहू नाथसुतासनकरहुविवाहू २ एवमस्तुभगवानउचारे विष्णुचित्ततहंपूर्वसिधारे ३ रच्योविवाहसकलसुषदाता सोनजायकछुवरननवाता ४ देवऋषीमहंऋषीत्र्रचारज त्र्रायेतहंप्रधानमतत्र्रारज ५ सजेसाजसवरुचिरविवाहू भवनभवनमंगलउतसाहू ६ लागेहोनत्र्रनेकप्रकारासाजिसुभगवरवंदनिवारा ७ गृहगृहध्वजापताकसुहाये कलितकलसकंचनछविछाये ८ विसकर्मांकहंभयोरजाईं रचननगररमयतासुहाईं ९ तासनदेसपायभगवाना सज्योनगरवैकुंठसमाना १० वापितडागकूपमनभाये चौकवजारचारुविरचाये ११ मंजुनवलवाटिकात्र्रारामा मणिनषचितकलकंचनधामा १२ दोहा तालतमालकदंवकलकलपजंववविरचाय त्र्रंवषंवकदलीकियेमनहुंथंवथिरल्याय १ चौपई रचिसुमनवाटिकान्यारीत्र्रौरहुंवरनवरनफलवारी १ वेलिवितानभानचहुंपासा जुनसमाजारितुराज

विकासा २ कूजनषगनद्रुमनवहुरूपा गुंजतअलिकलसुमनअनूपा ३ जहंतहंविमलवारिवरपावन वहतसमीरतृवधमनभावन ४ कसनहोयरम्यव्रपुरन्यारी जहांभवननाथकपगधारी ५ आयेसुजनाविवाहअनूपा लियेसंगसुरमुनिसुरभूपा ६ असप्रकारजवपुरछविराता रंगनाथतवचढीवराता ७ हरवरिंचिमातुलसमुदाई वरुनकुवेरमेरजमराई ८ दिसनपालमहिपालप्रधाना दक्षजक्षाकिन्नरसुरनाना ९ गीरवानगुरुगंध्रवचारन निजनिजचढिविमानमनहारन ॥ १० ॥ वनिवरातिइंद्रापतिसंगा चलेजातउरहरषउमंगा ॥ ११ ॥ अपसरादिगंध्रवकलगाना करतजातमगतानतराना ॥ १२ ॥ छविजुतछत्रसीसप्रभुसोहा चलतचारुचांमरमनमोहा ॥ १३ ॥ अगनिजंत्रछूटतनभकाहीं चिकरतनागवाजिहैताहीं ॥ १४ ॥ धूमधामजुतचलीवराता करतकालितकौतुकमगजाता ॥ १५ ॥ मागदसूतवंदीजननाना करतजातविरदावलिगाना ॥ १६ ॥ पठतवेदब्रह्माचलिआगे संखनिसानवजनबहुलागे ॥ १७ ॥ मंदमंदतहंचलीवराता पुरवासिनउरसुषनसमाता ॥ १८ ॥ दोहा धायेदेखननारिनरनगरसगरचहुंवोर प्रभुमूरतिछाकेसकलतकितकितलितनठौर १ चौपाई कहतपरस्परपुरकरनारी अलिअनूपछविदुलहनिहारी १ ललतस्याममृदुमूरतिनीकी सषिसोहानिमनुमोहानिजीकी २ असप्रकारजवद्वारासिधारे रंगनाथछविअतलुतवारे ३ मोरमुकटमाथेअभिरामा दिव्यपुनीत

पीतपटजामा ४ उरविसालसुरपालकृपाला दिपतकालितकौस्तभम
णिमाला ५ अंगदादिभूषनभुजभाये वनेनाथजसजाहिंनगाये ६
कुंडललोलकरनमृदुवैना सुभगसीसचंद्रकसुखदैना ७ भालतिल
कश्रीखंडविराजा अधरविंवनासिकसुकलाजा ८ वदनमयंकसर
दछविनिंदा कुटिलाचिकरसेचकअलिवृंदा ९ लोचननलनिन
वलमूयवांकी निदरतकोटिचंद्ररविझांकी १० वृषभकंधवलष
लदलषंडा नागसुंडभुजदंडउदंडा ११ अंकसकुलसकंजध्वज
धारी उदरसुभ्रवररेषमुरारी १२ दोहा सारदूलकटिकृपायतनवरन
स्यामघनस्याम अरुनचरनजलजातलषिरीझिनिकरपुरभाम १ चौ
पाई तहंमुकतानचौकमनभाता पूरयोरिषिनपूरिमुदगाता १ महरि
षीब्रह्मरिषीहरषाई लागेपठनवेदसमुदाई २ तहांरंगभगवानकृपा
ला सुरसमाजजुतदीनदयाला ३ बैठेउरप्रमोदसरसाई सोअनंद
छविवरनिनजाई ४ तहंब्रह्माअतिसेअनुरागे द्वारचारकरवावन
लागे ५ करहिंगानकलमंगलनारी मुरकरसकललिलितछवि
वारि ६ हंसगमनिमृगसावकनैनी नागरिनबलमृदुलापिकवैनी ७
समयसरससुभवदनउचारी देतिरंगनायकहंगारी ८ मणिगणदे
वसमूहलुटावै सुरतरुकुसमनकीझरिलावै ९ रंगनाथसोभाछवि
नीकी पुरनरनारिदेषिपृयजीकी १० रहीचित्रबतचषननिहारी
प्रेममगनतनदसाविसारी ११ द्वारचारह्वैगोजवताहां गईवरात
वासजनजाहां १२ अमियपाकपावनसं

भारू विंजनदिव्यअनेकप्रकारू १३ षडरसचारुवरनिकिमिजा
ई विष्णचित्ततहंदीनपठाई १४ जसरुचिरहीजौनसुरकाहीं गो
देजनककीनफुरताहीं १५ रिद्धासिद्दनवनिद्धसुहाईंविष्णुचित्तगृह
सर्वंसछाई १६ दोहा जनजमातिसवजगतकीसुरगणतेतिस
कोटि षानपानपहरानकीलष्योनकौनिटोटि १ चौपई भयीतो
षसवकरमनभावा सुरनरमुनिजनसकलअघावा १ निजनिज
सवनमनोर्थपायो महांसुजसमहिमंडलछायो २ तवविधिविष्णुचि
त्तगृहआईं भनेवदनवरगिरासुहाईं ३ लगनविवाहरंगभगवाना ए
हिअवसरसवसुनहुसुजाना ४ तातेकरहुहरषिसवकाहूमंगलनवल अ
मलउतसाहू ५ सवसठकोपअादिमुनिराई गवनेजनवासहिं
अतुराई ६ रंगनाथसनजायवषानी नंम्रतविनयजुक्तजुगपानी ७
तवकृपालजुतसुरनसमाजा चलिआयेलषिसमयसुकाजा ८ विष्णु
चित्तगृहजवपगधारयो सनकादिकसवस्वसतिउचारयो ९ मंड
परचनरुचिरचतुराई काहिनजायकछुलाबनताई १० खच
तषंभकदलीकलपावन पदमरागकृतसुमनसुहावन ११ दिव्यसिल
पकृतअंडनसोभा सुरसमाजलषिअदभुतलोभा १२ दोहा दि
पतदीपमणिझालरैंझलकरतनचहुंवोर पात्रपुरटमणिजटतकलज्व
लतजनहुचितचोर १ चौपई कंचिनरत्नषचितअनडीठीमंडित
मंजुजुगलकलपीठी १ विष्णाचितकरहराषिमुरारी निजकरकमलग
हितसुषभारी २ संजुतसुरसमाजसमुदाईं कियप्रवेससुभमंडपआ

ई ३ तहंसुरब्रह्मऋषीअनुरागे विधिजुतवेदपठनसवलागे ४ लग्योअचारहोनसुभरीती विष्णुचित्ततवसादरप्रीती ५ प्रभुकहंरतनपीठवैढायो महांमोदसवकरमनछायो ६ दक्षणदिासिगोदेआसीना आनंदउदधिमनहुंमनलीना ७ ताहांवृहस्पतिअवसरजानी धस्योकुसागोदेपितुपानी ८ विष्णुचित्तअंजलिजलधारी पकरिकलितकरकमलकुमारी ९ रहाहिंरंगपतिमंगलमूला तोपेंसदापुत्रिअनकूला १० मोहिनिजचरनकमलकलदासा गुनतरहाहिंनितविस्वप्रकासा ११ अससंकल्पपठतहुलसाना गाहिकरकंजरंगभगवाना १२ दोहा गोदाकरकरनाथकेकरिविनंतिधरिदीन चल्योजातजलचषनपथप्रेमविकलमतिकीन १ चौपई पानिगृहणजवभयोमुरारी महांप्रमोदछयोछितसारी १ स्वास्तिस्वास्तितहिछिनसुषभीन्यो वदनरंगनायककहिदीन्यो २ तहिछिनधरनिव्योमचहुंघाहीं मच्योसोरदुंदभीमहाहीं ३ चौदसभवनजैतिध्वनिछाई सुभ्रप्रसूनसुरन झरिलाई ४ विष्णचित्तजगधनधनमूला सुरनरसकल भनतअनकूला ५ नेतिनेतिजाहिनिगमनरूपा धरिप्रतक्षनिजअदभुतरूपा ६ रंगनाथभगवान सुहायेतासुसदनसुभव्याहनआये ७ सिवव्रह्मादिइंद्रसुरताहीं रंगदेवछविछकेसवाहीं ८ तवगोदेकररंगगहाई दियोसपतभावरिहरषाई ९ अनलहोमकीन्यो भगवाना विष्णुचित्ततवविनयवषाना १० ॥ दीननाथममसर्वसजेता लीजैदाइजकृपानकेता ॥ ११ ॥

मोकंहंचरनकमल निजकीजै अनुचरभ्रमररीतिरतिदीजै १२ ॥
एवमस्तुकहिदीनदयाला कोहवरगये जुरीजहंवाला ॥ १३ ॥
भामनितहांगारिअनुरागी देननिसंगरंगकहंलागी ॥ १४ ॥ अैच
तिकोउपटपीतमुरीरी हसिहसिकरत कूटकोउप्पारी ॥ १५ ॥
कोउकरचुमकदेतकरतारी त्रियविलासपरिहासउचारी ॥ १६ ॥
कोउकहतसषिदुलहनकारे पैसुसीलगुणनिपुणनिहारे ॥ १७ ॥
गोदेरंगनाथमुषभावन मेलतिहैलहकौरसुहावन ॥ १८ ॥ रंगदेव
गोदेमुषनीकी मेलहिंकौरसुषदमनुजीकी ॥ १९ ॥ सोप्रमोदअ
नमितसुषसोई बरनहिंएकवदनकिमिकोई ॥ २० ॥ भामनिवा
लवृद्धतरनैयां वारवारसबलैतवलैयां ॥ २१॥ दोहा रंगदेवकरभयो
असभवनमोदप्रदव्याहु गयेवहुरिजनवासकहंहरषिभवनसदनाहु
१ ॥ चौपई उदयअरुनसठकोपप्रवीना जथाउचितमनहरषप्रली
ना ॥ १ विनयवडाईभनतरतसांती कियेप्रतोषसुरनवहुभांती २
पायदेवसतकारमहाना लागेभननसुजसमुषनाना ॥३ ॥ सानंदवहु
रिरंगप्रभुकाहीं ल्यायेललितभवननिजमाहीं ॥ ४ ॥ विरचिवि
विधव्यंजनमनभाये पाकपुनीतआनअधिकाये ॥ ५ ॥ नानाकंद
मूलफलमेवा प्रभुहिंजिवायकीनसुचिसेवा ॥ ६ ॥ जेवनाराविरच्यो
पुनिआना भोजनभूरिदिव्यपकवाना ॥ ७ ॥ षटरसरुचिरसुषद
सवभांती तहंमुनिंद्रवृंदारकपांती ॥ ८ ॥ वैठिलग्योजेवन जिवना
रा कियेजासरुचिजौनअहारा ॥ ९ ॥ सुरनकीनजवभोजनपाई

लागिगई तवसभासुहाई ॥ १० ॥ दियेसबनकरपाननवीर। उम
ध्योमनहुंमोदनिधनीरा ॥ ११ ॥ सुरमुनिविप्रवृंदछितराजे निज
निजसजधजसाजिविराजे ॥ १२ ॥ तवसठकोप विष्णचितताहां
औरहुं वृद्धआचारजनाहां ॥ १३ दिव्यआभरनवसनमंगाये सवक
हंजथाउचितपहिराये ॥ १४ ॥ दोहा सनमाने सुरविप्रमु
निकरिप्रतोषसवभांति छयोसकलकरुचिरउ अतिप्रमो
दसुषसांति १ चौपई करहिंसकलधनधनमुषगाई विष्णु
चित्तकरविमलवडाई १ औहिनभयोहोहिंसंसारा असकोभाज
नसुजसउदारा२ विथरिसभापुनिविविधसराहती हरषिगयेजनवा
सवराती३ चौथेदिवसरंगपातिपावन निजसुसरालकोनकलआवन
४ तवतहंउचितजथाविधिरहेउचौथीचारचारुसबभयेउ ५ ताहिनि
सिरंगनाथआभिरामा निवसेविष्णुचित्तकलधामा ६ गोदेसहितह
रषमनलीने हासविलासरासरसभीने ७ तवनिसिसेषडंडचतुपाई
सठकोपादिप्रवरमुनिराई ८ आचारजजनजुरिसमुदाये आयेभव
नद्वारसुषछाये ९जगतनाथजोगनहितनीके छंदप्रवंधललितपयजी
के १० रचिराचिनवलमधुरपदपावन गायमधुरस्वरलगेजगावन
११तवगोदेजुतप्रभुसुषपागे प्रातकालगायनसुनिजागे १२ दोहा
करिसनानपटआभरनसजतसकलउतसाहु भवनगवनकहउदितद्रु
तभयेभवनसदनाहु १ चौपई सठकोपादिविष्णचितजेते गवनभव
ननायकलषितेते १ लगेविदायकरनसबत्यारी कंचिनरतनरुचिर

कृतकारी २ सजीसुभ्रसिवकासुषपालर विद्रुमाविमलादिपतकल झालर ३ छयोउछाडछोरजरकारी मंजुमालमणिवीचसवारी ४ निदरतमनहुअहूतविमाना ल्यायेअजरसाजिसनमाना५ विष्णुचित्त दंपतिवडभागी रंगनाथचरननअनुरागी ६ गोदेसंजुतदीनदयालैं दीनविठायसुभगसुषपालैं ७ करिपरिछनआरतीउतारी प्रेमवारद गलेतनवारी ८ गोदेमातुचरनभगवाना गहितकरनमुषविनेवषाना ९ दीननाथगोदेसकुमारी रहीमोहियहप्रानप्यारी १० पुरकर सारिनारिनरसाषी मैंनिजहगपूतरिइवराषी ११ साधुसरलाचितसी लसदाहीं आतिनदानजानतकछुनाहीं १२ मोहिपातिजुतपदपंक जआपन लषिअलअलनिसमनसंतापन १३ एहिकहंगुनिनिज चरननचेरी दीननाथनिजदयाघनेरी १४ राषतरहहुसदाएहिहा ला वारवारएहविनयकृपाला १५ विष्णुचित्तपुनिजुगकरजोरि वि नयवदनकछुकीननथोरी १६ तवासिवकाप्रभुसुरनउठाई जनवास हिंद्रुतचलेलिवाई १७ गोदेमातुदेषिअकुलानी कढतविरहंवसरा दनवानी १८ पुरकरनारिसषीसमुदाई रोतिविथतउराधिरबिन्हाई १९ गोदेंविरहंमनहुंनिधिनीरा वह्योजाततजिलोचनतीरा२०दोहा सठकोपादिकाविष्णुचितआनलोकपरवासु विलपतसवकरुणाव्य वसरारोभरतउसासु १ चौपई उतगोदेजुतरंगउदारा गरुडजाननि जभयेसवारा १ गैंहगैंहगगनदुंदुभीवाजी चौदसभवनजैतिध्वनि छाजी २ विधिमरालसिवनंदिसावारू चढेसक्रऐरापतिचारू ३

सिषीस्वामिकार्तिकसुषमीने वरुनसुषासनश्रासनकीने ४ पहुपवि
मानधनदछाविछाये चढेमहिषजमराजसुहाये ५ श्रौरहुंसकलदेव
गणनाना ह्वैश्ररूढनिजरुचिरविमाना ६ रंगनाथप्रभुसंगसुहाये
प्रमुदितरंगनगरकहंश्राये ७ श्रानभक्तसतजनश्रनरागी लियेछत्र
चामरवडभागी ८ करतजातसेवनजगत्राता श्रससोहतपथनाथव
राता९ तवगोदेकहंदनिदयालू वनउपवनगिरिग्रामरसालू १०पाव
नसुभ्रसारितसरजोंई चलेजातदिषरावतसोंई ११ देषिप्रकालभक्त
थैलपावन भनेवचनगोदेमनभावन१२एहिथलवसहिंभक्तममप्यारा
जसप्रकालनामनिरधारा १३चौरजबृतसंतनाहितजासा श्रापुनहि
ननेसुकधनश्रासा १४ एकवारश्रायेग्टहसाधू श्रतिक्षुध्यतममनाम
श्राधू१५रह्योनभक्तश्रन्नकछुगेहू भयोदुषितभामनिजुततेहू१६मोर
सुमर्णंकरतवनमाहीं गयोपथकजनलूटनकाहीं १७ कटयोनपथक
पंथतहिकोई भूषेसंतसदनलषिसोई १८ लग्योरुदनकरनश्रकुलाई
तवमैवन्योपथकश्रतुराई १९ लूटयोमोहिलेतावितगवना मुदित
जिवायसंतसुभभवना २० दोहा श्रसप्रकारत्रिभुवनपतीगोदेरतिम
तिकाहिं दिषरावतपथललितथलगहेरंगपुरमाहिं १ चौपई तहंसुर
गणमुनीससमुदाई करिप्रणामपदलेतविदाई १ वारवारजैजैतिउ
चारी स्यामसरोजचरनउरधारी २ निजनिजगयेहरषसरसाते इत
भगवानभक्तसुषदाते३रंगनाथवहुरंगरंगीले हरनकोटिछविमदनछ
वीले ४ गोदेसहितसुषदसुभपावन करिविहारषटारितुमनभावन५

निवासिरंगरपुदीनउवारी तरेअनंतजीवसंसारी ६ तवकछुसमयपा यअभिरामा गोदेरूपसीलछविधामाकरतरंगनायक ७ सिवकाई गईरंगपतिअंगसमाई ८ असप्रकारएहचरितनवीना मैसंक्षप्तक थनकछुकीना ९ गोदेसरिसभक्तसंसारा भयोनवयोरंगपति प्यारा १० जाहिहितदीननाथकालिकाला धरिप्रतक्षनिज रूपरसाला ११ सुरसमाजजुतभक्तसनेहू धास्योचरणविष्णु चितगेहू १२ लोकरीतिजुतकीनाविवाहू देषेविदतदेवसवका हू १३ जनिअचरजकछुलषहुनभाई भक्तनहेतुभक्तसुषदाई १४ कानकराहिंकौतुकसंसारा दीननाथकहंभक्तपयारा १५ भक्तहेतजानतजगसारी सारदूलनरवनेमुरारी १६ धास्योमच्छ कच्छवाराहू भक्तहेतवपुसुरनरनाहू १७ वामनरामकृष्णसंसा रा भक्तनहेतलीनअवतारा १८ नरसिभक्ताहितस्यामलसाहू वनेनाथजानतसवकाहू १९ तुलसिदासहितवालकनीको ली न्योचित्रकूटकलटीको २० होतकूपचुतसूरनिवारेनानावपुषनाथ निजधारे २१ सदनाहेतविस्ववहुरंगा रहेसितुलतअमुषकरसं गा २२ भक्तप्रकालहेतभगवाना वनेपथकसरवस्वलुटाना २३ मीरांकेवनिगिरधरनागर कीनतासुत्रभवनउजागर २४ दोहा असप्रकारकरुणायतनभक्तहेतसंसार धरहिसुभेषवसेषकलकराहिअ नेकविहार १ इतिश्रीगोदाअवाचरितंनामसर्गः ॥ ८ ॥

अथघंटाकरनपिसाचचरितम्

दोहा घंटाकरनापिसाचकीकथाश्रवणमनरंज वरनहुंयदकिचत मतीसुमरिकृष्णपदकंज १ चौपई एकसमयद्वारावतिचारू जहां कृष्णदीननदुषहारू १ रुकमनिसंजुतसदानिवासा करहिंविनोद प्रमोदप्रकासा २ तवरुकमनिप्रभुपदसिरनाई पानिजुक्तजुगविनयअलाई ३ दीननाथमोरेमनआसा सोफुरकरहुसमनभवत्रासा ४ देहुपुत्रयककृपानिधाना होहिंरुचिरजदुवंसप्रधाना ५ गुणप्रवीनसवलोगउजागर सस्त्रशास्त्रविद्यावलसागर ६ गिरागूढसुनिरुक्मनिरागा मुषमुसक्यायभनेघनस्यामा ७ मोरसमानसुवनतुवगेहा उपजहिंअवसिनकछुसंदेहा ८ मोहितेअधिकगुननमतिधामा होहिंविदतसवलोकललिामा ९ जाहुंसुवनाहितमैंअवप्यारी वसाहिं जहांकैलासपुरारी १० तहांकरहुंतपसहिताविधाना उनाहिंप्रयलेहुंवरदाना ११ तोरदेहुंवहुरिसुतआई निजसदृससुंदरसुषदाई १२ दोहा असकहिकीन्योसैनहरभवनसेजमृदुसेत रहीएकजवजामानिसिजागेकृपानकेत १ चौपई हरहरहरराटतमुषवानी सौचस्नानकीनसुषमानी १ करिविधिजुतपुनिपूजनभावा तरहसहसरधेनुमंगावा २ कियेदानसवदुजगणकाहीं आयेवहुरिसभासदमाहीं ३ हृदयहरषपूरितजदुरायेउद्धव सात्यकिलीनवुलाये ४ आयेवहुरिसकलपुरवासी कृष्णकमलमुषदरसनआसी ५ दंडप्रणामधरानिधरसीसा करहिंरटतजैजै

तिरमीसा ६ तहांकोटिसासिसहसआये सभामद्धवलरामसुहाये ७ उठेसभ्यछबिनिरषतरामा भरेप्रमोदमोदघनस्यामा ८ कनकासनवलरामबिठाये दक्षणदिसिजदुनाथसुहाये ९ कृतवरमासात्यकिअभिरामा आयेसभामद्धगुनधामा १० कृष्णकमलपदवंदिसुहाये वैठेउरप्रमोदसरसाये ११ तहिअवसरमागदअनुरागी पटनवदनविरदावलिलागे १२ कियेनकीवनसांरअपारा सभाद्वारचहुंबीरअपारा १३ उग्रसैनमहोराजउदारा आयइंद्रछविहरनहजारा १४ उठेमहानसुभटजनसारे सादरसवननरेसजुहारे १५ नृपवंदेवसुदेवकुमारा पुनितसलागिगयोदरवारा १६ दक्षणरामवामजदुवीरा वीचविराजतभूपमधीरा १७ आयेपुनिउद्धवताहिठामै वैठेकरिप्रणामघनस्यामै १८ सुमतिप्रधाननीतिमतनागर डरतदेववलजासउजागर १९ असुरमनुजसवभेदनराई मानतजाहिसासनासिरनाई २० दोहा असउद्धवमातिधीरकहंजदुकुलकुमदमयंकु सवजादवनपुनायमुषमन्योवचनअनसंकु १ चौपई मैतपहितकैलाससिधारहुं करिप्रसन्यहरदरसनिहारहु १ औरहुंकछुकारजमोहिआसा तुवजदुवीरसकलवलरासा २ मैं जौलौंआवहुफिरिनांही तौलौतुमधरिधीरसवांही ३ राषहुसजुगनगरसंभारी जथाउचितमातिजतनविचारी ४ केसीकंसमल्लसंसारा मैवहायसंगरअसिधारा ५ उग्रसैनकहंतिलकसवारयो औरहुंविदतअसुरसंघारयो ६ जिनजिनवैरकियामोहिसंगातेप्र

चारिमासथ्योमहिरंगा ७ पौंड्रादिकअजहुंनृपक्रोधी अहैंमोर सठअधमविरोधी ८ विनुममसूननगरअनिहारी आवहींअवसीं मूढहितरारी ९ तातेसावधानतुमव्हैके रहहुदिवसनिसिआजुध गहिकै १० राषेहुषुलोएकदरवाजा रहहिंचारिदिसिवीरसमा जा ११ विनाचक्रअंकितपुरमाहिं आवागमनकरैकौनाहीं १२ जनिकोजोरुचिविपुनअहेरै राषिउचमूनगरचौफेरै १३ वहुरि कह्योसात्यकिसननाथा श्रीमुषसुभ्रसिषावनगाथा १४ दोहा वीरधीरविक्रमिविदततुवगुननीतिनिधान षडगधनुषधरिपाहिरोक लकवचकुंडदसतान ॥ १ ॥ कीजोरैननसैनभटीरह हुसजगनिजद्वार करहुजथासासनभनैअग्रजसुमतिविचार २ चो पई सुनिनदेसजदुपतिहितसानी भनेवचनसात्यकिसुषमानी १ तुवप्रसादभगवनमोहिकाहीं त्रिभुवनभटिनभीतकछुनाहीं २ कवहुंकिइंद्रवरुनजमराजा विधिकुवेरसंकरदलसाजा ३ आवहिं कोपचषकरणपीवत दुरलभलषननगरममजीवत ४ छूटतमोरवा नधनुगाढे जाहिंसोसरणमेदानिछाडे ५ छितकेभूपकौनाकितलेषे तु वप्रतापसवसुगमपरेषे ६ सोइकरिहोंमैदीनदयाला भनाहिंवदनज सरामकृपाला ७ तववलकहंप्रभुकह्योउचारी सुनहुमोरअग्रअहि तकारी ८ द्वारावतिमहंसवसुषछावा एहतुह्मारजदुवंससुहावा ९ इनकररक्षणजतनविचारी करिहुजथामतिफुराहिंतुह्मारी १० असमुनिभनेरामसुषगाथा याकरकवनसोचजदुनाथा ११ ऐसो

कौनवीरजगमाहीं मोरअछतआवहिंपुरमाहीं १२ दोहा जांके पृथनहिंप्राननिजनहिनकामधनराज सोआवहिंपुरलषनममरिपुवतसाजिसमाज १ चौपई उग्रसैनकहंवहुरिरसाला दीननदेसवदननंदलाला १ पुरकरहहुसदारषवारे तुवसामर्थसुभटसरदारे २ तजहुंभवनजनिसासनमोरी तुह्मरेविदतअधमरिपुघोरी ३ पुनिजदुवंसिनकहंजदुराई श्रीमुखसासनदीनसुनाई ४ रहहुसकल अग्रजअनुसारी करहुसजगपुरकररषबारी ५ असप्रकारकरिसवनसिषावन आयभवनकमलामनभावन ६ वैनतीयद्रुतलीनवुलाई परेचरनषगजैतिअलाई ७ तासुमरमसववदनउचारी दीननाथद्रुतकीनसवारी ८ चलेधनददिसिकहंजदुनंदू सुमरतसुषदभालकलचंदू ९ सुरसमाजप्रभुसंगसवाहीं असत्वतिकरतगगनपथजाहीं १० वदरीवनकहंकमलविलोचन आयेभक्तसंतदुषमोचन ११ वहतीजहांकलुषकलिभंगे सीतलाविमलवारिवरगंगे १२ दोहा तहांवासबहुकालकरिवृत्तबधनअघभारि करिअषंडतपदीनसवदीनदयानिधिजारि १ चौपई जहांमारिरावनरणमाहां कीनउग्रतपरघुकुलनाहां १ सुररिषिसिद्धसंतमुनिनाना करहिमहांतपाहितकल्याना २ सोवदरीवनअमलअनूपा पहुंचेजवतहंजदुकुलभूपा ३ ताहिवनकेमुनिवृंदानिवासी कृष्णकमलपददरसनआसी ४ आयलेनसादरअगवाना भनतवदनजैजैभगवाना ५ दंडप्रणामकरतअनुरागे वारवारप्रभुचरननलागे ६

पहुँचेसांझसमयजदुराजा करिआवरनलियमुनिनसमाजा ॥ ७ सकलमुनिनकहंकृष्णजुहास्यो आसिषबचनमुनिनउसचास्यो ८ गहितविजनचामररुचिहाथैं सेवनलगेमुदितजदुनाथैं ९ लषिअसप्रीतिमुनिनसमुदाई उतरेभूमितज्योषगराई १० चलत चरनपंकजभगवाना लागेकुसकंटकक्षतनाना ११ तहिवदरी काननकलपावन जहंजहंआस्त्रममुनिनसहावन १२ देषिमुनिन जुतकृपानिधाना हरषिकरहिंवंदनसनमाना १३ मुनिसप्रीतिआ स्त्रमलैजाई अर्घपाद्यआचमनकराई १४ कंदमूलफलभोजन चारू प्रभुहिंकरावतअमियअहारू १५ असकरिगृहणमुनिनस तकारा चलेजातवसुदेवकुमारा १६ अत्रिअगस्तवासिष्टसुहाये भरद्वाजगौतममुनिराये १७ व्यासदेवनारदवलमीका औरहुंस वहरिदासअलीका १८ जैजैरटतचहुंनदिसिजाहीं जथानिरषि नभनीरदकाहीं १९ करतकैकिकलमंजुलवानी महाप्रमोदमो दमनमानी २० दोहा कछुकदूरतवजायकैनिरषिस्वथलघन स्याम वैठिगयेउरसुमरिहरभक्तकलपद्रुमकाम १ चौपई मुनिस माजचहुंवोरविराजा फवेवीचजदुकुलमहराजा १ चितवहिं सवइकटकदृगकीने मानहुमोदमहोदधिलीने २ सादिरकलि तकुसासनआनी प्रभुकहंदीनमुनिनसुषमानी ३ नमृतवहुरिजु गलकरजोरी लागेकरनाविनंतिअथोरी ४ नाथसदाहमकानन वासी तुमपरागपदपंकजआसी ५ काकरिहोंसेवनउपचारी

हमरोसरवसुनाथतिहारो ६ तवमुसक्यायभनेगिरधारी सुनहमु नीसमहांतपधारी ७ मैकरुणातुवजाचनहारा अहुंसदामुनिदासतुम्हारा ८ सिवतपकरनहेतुतुवदेसा मैकीन्योइवँविपुननवेसा जहिविधिहोहिंप्रसन्नउमीसा कहियेअवसोइजतनमुनीसा १० सुनिमुनिंद्रअसभगवनवानी वोलेवचनजुक्तजगपानी ११ दीनवंधुदीननहितकारी तुवमहंसमानससंचारी १२ दोहा चहहुजा सुभगवानतुवदिहहुवडाईतास प्रभुतुम्हरेमानसपूर्येभक्तसंतजनदास १ चौपई तवभगवानभनेमृदुवागी मैअवसंभुरिझावनलागी १ एहिथलानिवासिकरहुंतपचंडा सुंदरसाधिसमाधिअषंडा २ तुमनिजनिजअवजाहुसिधारी मोहिमानसअनकूलविचारी ३ तवमुनिवंदिचरनभगवाना निजनिजआस्रमकायेपयाना ४ इतउत्तरसुरसरितटमाहां वैठेकरिआसनजदुनाहां ५ गरुडजानानिजवोलिमुरारी दीनरजायसवदनउचारी ६ सुमिरताफिरिकीजोइतआवन करहुगवनअवभवनसुहावन ७ करिप्रणामतवषगपातिधाये इतभगवानभक्तसुषदाये ८ वैठेसाधिसमाधिअषंडाप्रेरयोप्रानध्यानब्रह्मंडा ९ मूदेनैनवांधिगतिमनकी हूवैगईदसाचेतगततनकी १० असप्रकारजदुपातितपपागेसंकरदेवअराधनलागे ११ सुरमुनिदेषिउग्रतपनाथा विसमितभनतपरस्परगाथा १२ दोहा सकलजगतकेईसयहजदुकुलकमलदनेस इनकहंधरनसमाधिकहिजानिनपरहिउदेस १ चौपई इतमुनीसअसकरहिंविचारा उतसमाधिपथ कृष्णउदारा १

दीपसिषासमजवकरिलीना चारुअचलचितध्यानप्रलीना २ तवकौतुकअसदेषिसुहावा विहसेसंभुमानससुषपावा ३ जवसंकरअसमुषमुसकाने हरगणनिरषिसकलाविसमाने ४ तिनमैंरह्योएकमतिनागर घंटाकरनपिसाचउजागर ५ विनुसंकरगतिआननजांके सिवसिवरटनदिवसानिसितांके ६ घंटावांधेकाननमाहीं सिवतजिनामसुनेस्रुतिनाहीं ७ जोतहिवंचिसुनावहिआना काटिसीसतहितुरतकृपाना ८ करहिघोषघंटाहरषाई शिवशिवशिवसुभसवदअलाई ९ विहसेसंभुविनकारनजानी सोवोल्योजोरितजुगपानी १०कहहुंनाथकछुअनुचितवागी तुवक्रपालसेवकअनुरागी ११एहढिठाइलषिमोरमहाना छिमियअनाथनाथभगवाना १२नाथविहसनवदनविनुहेतू मोहिउपज्योसंसयवृषकेतू १३जोमोपेंभगवनतुवनेहूतोएहहरियनाथसंदेहू १४ दोहा सुनिपिसाचकेवचनअससंकरक्रपानकेत लागेंभननप्रसन्नमनसोविहसनानिजहेत १ चौपई दीनदयालभक्तअनुगामी वदरीवनआयेममस्वामी १ मोरहेतसुरनरमुनिमुंडावैठेसाधिसमाधिअषंडा २ लषिनपरतअचरजएहगाथा करतकौनकौतुकजदुनाथा ३ प्रभुमनकीगतिअगमअगाधीजायनकोटिजतनमतिसाधी ४ हमउनकरपदपंकजकेरे सदाअनन्यमधुपइवचेरे ५ सोसाहिवस्वामीजदुनंदू करतध्यानहमरोसुषकंदू६ असविचारिमैंहस्योतुराई रह्योनहेतआनकछुभाई ७ तवपिसाचजुगजोरितपानी नायसीसवोल्योमृदुवानी ८ तुमतेंअधिककौनजगईसातुमहुंईससामर्थग

रासा ९ संभुकह्योंनहिजानसिमूढा ममप्रभुतत्वगूढतेंगूढा
१० याकेअहुनतुमअधिकारी तातेहमनहिंकहतउचारी ११
तवपिसाचअसविनयअलाई मैंवहुदिवसनाथसिवकाई १२
करिलीनीभरिमोदमहाना अवकरुणाकरिकृपानिधाना॥ १३
जानिचरनअनुचरअपनाई देहमुक्तिमोहिसहजसुहाई १४ भनेव
दनसंकरतववागी जोमोहिभजहिंसुजनअनुरागी १५ देहुंपदा
रथसवतहिंकाहीं मुक्तिदानमोहिसमरथनाहीं १६ दोहा मुक्तिप
दारथदेनकहंसमरथदानिदयाल इष्टदेवममकृपायतनश्रीवरश्रीजदु
पाल १ चौपई सकलजगतकेअंतरजामी भक्तसंतसज्जनअनु
गामी १ कहपिशाचकरजोरिनिमामी मोहिवतायदीजैनिज
स्वामी २ कहिविधिहोयसरनउनकेरी फुरहिआसप्रभुमनकरमेरी
३ देहुवतायजतनसुषअैना प्रभुतुमारदेषहुंभारिनयना ४ कहिथल
वसाहिंगरीविनिवाजा सुरसुरराजराजजदुराजा ५ सुनिपिशाचमृदु
गिरासुहाई वोलेवदनहरषिगिरिराई ६ तुवकीन्योममप्रभुपद
रागा यातेंमोहिमानसपृयलागा ७ तुमपेंमोरभईअतिप्रीति लषि
जदुपतिपदपंदमप्रतीती ८ मिलनसहजअवजतनमुरारी मोहितें
सुनहुभक्तव्रतधारी ९ हरनभारमेदनिअवतारा लीन्योजदुकुलप्रक
टउदारा १० दैनसुजसमोंहिश्रीजदुराये सुतजाचनवदरीवन
आये ११ वैठेसाधिसमाधिअषंडा जहिसुमरतछूटहिभवदंडा
१२ दो० जोतुम्हरेमनकामजनमुक्तिपदारथलैन तोवदरीवनजाय

कैभजहुकृष्णदिनरैन १ चौपई दुराराधजद्यपिभगवाना मिल हिंनकियेजतनहठनाना १ पैजहंसरलकपटगतहोई सुमरहिंदी नद्यालकहुंकोई २ अवरिलभक्तिप्रेमलषितासा होतप्रकटद्रुतरमा निवासा ३ पूजाहिंतासमनोरथसारी सदाकृपालभक्तहितकारी ४ तातेतुववदरीवनजाई जननिसकपटभजहुजदुराई ५ देषिअ नंन्यप्रेमभगवाना रीझहिंतुरतदीनवरदाना ६ प्रभुकहंकेवलप्रेम पयारा गुनहिंनऊचनीचसंसारा ७ सुनिसंकरमुषगिरासुहाई घंटा करनचरनासिरनाई ८ गवन्योवेगहरषसरसाता जैजदुपतिजैज दुपतिगाता ॥ ९ ॥ लियेसंगवहुरंगघनेरी विविधजमात पिसाचनकेरी ॥ १० ॥ जहिथलकृष्णसमा धिजुडाना तहिथलकहंकीन्योतिनप्पाना ॥ ११ ॥ स्वानसहस्रसंगनि जलीने सूकरसारदूलवनचीने ॥ १२ ॥ दोहा रटिजैजैहरि कूकरनदेतमृगनपरप्रेरि नादवादनानाकरतधरहु धायधुनिटेरि १ चौपंइ गहितजीवकाननसमुदाइं हनतवदनजैजैहरिगाई १ ॥ करतभीरुरवकाननचारी षगमृगजीवनिकरधृतिहारी ॥ २ ॥ भागे जातचहुनदिसत्रासे दुषितदीननिजप्राणनिरासे ॥ ३ ॥ मच्यो सोरकानन अतिघोरा करीकिहरिचिकरतचहुंवोरा ॥ ४ ॥ करि पिशाचघायलवहुजीवैं षावैंअमुषरुधरवहुपीवैं ॥ ५ ॥ वारवारजैं जैतिवषानैं हमहिंअहारदीनभगवाने ॥ ६ ॥ तिनमहंअसकोप स्योनजानी जहिजजैहरिरट्योनवानी ॥ ७ ॥ रामकृष्णगोविंदउ

चारै जैजैजैकाहिजीवनमारै ८ षगमृगडरपतजातपलाई लागे जातापिसाचपिछाई ॥ ९ ॥ षरभरमच्योविपुनचहुंघाहीं जहंतहं फिरतपिशाचदिषाहीं ॥ १० ॥ घंटाकरनकहतअसवागी हमआ येइतजदुपतिलागी ॥ ११ ॥ तातेदेषहुकाननभाई कहिथलअहैभ कसुषदाई ॥ १२ ॥ मृषानकथनसंभुभगवाना षोजहुकानन कृपानिधाना ॥ १३ ॥ करिदरसन दुर्लभजदुराई लेहुजनमफल संसृतिपाई ॥ १४ ॥ दोहा घंटाकरनवषानअस सुनिपिसाचस मुदाय जहंतहषोजनलागवन रामकृष्णमुषगाय ॥ १ ॥ चौपई षेलनमिसअषेदवनमाहीं तेहेरतसवजदुपतिकाहीं १ जहंलगरहे जीववनचारी भागेजातदुषितदिसिचारी २ तिनकरआरतसोरम हाना परिगोश्रवणरंधर भगवाना ३ लागेसोचनसोचविनासा कौनउपद्रवविपुनप्रकासा ४ जहिहितषगमृगकाननवासीभगेजा तनिजप्राणनिरासी ५ कोआयोइनकरदुषदाता लेतनाबिकलजी वथिरगाता ६ स्वानसोरइकवोरमहाना तिमिपिसाचधावतवनना ना ७ वीचवीचजैजैध्वनिकरहीं मोरनामअभिरामउचरहीं ८ ॥ तोलोंविपुनजीवनियराये करतसोरआरतअतुराये ९ लषिजीवन दारुनदुषव्याधीसहिनसके प्रभुछुटयोसमाधी१० नैनउघारिचितयो भगवाना परेदृष्टिधावतगणस्वाना ११ तिनपाछेपिसाचसुमुदाई धावतविपुन जीवदुषदाई१२दोहा आवतअसगोहरातसवकरतसो रकछुभयन देषहुकहिथलआहिंकल कृष्णकमल दलनयन१चौपई

कैभजहुकृष्णादिनरैन १ चौपई दुराराधजद्यपिभगवाना मिल हिंनकियेजतनहठनाना १ पैजहंसरलकपटगतहोई सुमराहिंदी नद्यालकहंकोई २ अवरिलभक्तिप्रेमलषितासा होतप्रकटद्रुतरमा निवासा ३ पूजाहिंतासमनोरथहारी सदाकृपालभक्तहितकारी ४ तातेतुववदरीवनजाई जननिसकपटभजहुजदुराई ५ देषिअ नंन्यप्रेमभगवाना रीझहिंतुरतदीनवरदाना ६ प्रभुकहंकेवलप्रेम पयारा गुनहिंनऊचनीचसंसारा ७ सुनिसंकरमुषगिरासुहाई धंटा करनचरनासिरनाई ८ गवन्योवेगहरषसरसाता जैजदुपतिजैज दुपतिगाता ॥ ९ ॥ लियेसंगवहुरंगघनेरी विविधजमात पिसाचनकेरी ॥ १० ॥ जहिथलकृष्णसमाधिजुदाना तहिथलकहंकीन्योतिनप्पाना ॥ ११ ॥ स्वानसहस्रसंगति जलीने सूकरसारदूलवनचीने ॥ १२ ॥ दोहा रटिजैजैहरि कूकरनदेतमृगनपरप्रेरि नादवादनानाकरतधरहु धायधुनिटेरि १ चौपई गहितजीवकाननसमुदाई हनतवदनजैजैहरिगाई १ ॥ करतभीरुरवकाननचारी षगमृगजीवनिकरधृतिहारी ॥ २ ॥ भागे जातचहुनदिसत्रासे दुषितदीननिजप्राणनिरासे ॥ ३ ॥ मच्यो सोरकानन अतिघोरा करीकिहरिचिकरतचहुंवोरा ॥ ४ ॥ करि पिशाचघायलवहुजीवैं षावैंअमुषरुधरवहुपीवैं ॥ ५ ॥ वारवारजै जैतिवषानै हमहिंअहारदीनभगवाने ॥ ६ ॥ तिनमहंत्रसकोप स्योनजानी जहिजैजैहरिरटयोनवानी ॥ ७ ॥ रामकृष्णगोविंदउ

चारै जैजैजैकाहिजीवनमारे ८ षगमृगडरपतजातपलाई लागे जातापिसाचपिछाई ॥ ९ ॥ षरभरमच्योविपुनचहुंघाहीं जहंतहं फिरतपिशाचदिषाहीं ॥ १० ॥ घंटाकरनकहतअसवागी हमआ येइतजदुपतिलागी ॥ ११ ॥ ताते देषहुकाननभाई कहिथलअहैभ रुसुषदाई ॥ १२ ॥ मृषानकथनसंभुभगवाना षोजहुकानन कृपानिधाना ॥ १३ ॥ करिदरसन दुर्लभजदुराई लेहुजनमफल संसृतिपाई ॥ १४ ॥ दोहा घंटाकरनवषानअस सुनिपिसाचस मुदाय जहंतहषोजनलागवन रामकृष्णमुषगाय ॥ १ ॥ चौपई फेलनामिसअषेदवनमाहीं तेहेरतसवजदुपतिकाहीं १ जहंलगरहे जीववनचारी भागेजातदुषितदिसिचारी २ तिनकरआरतसोरम हाना परिगोश्रवणरंधर भगवाना ३ लागेसोचरसोचविनासा कौंनउपद्रवविपुनप्रकासा ४ जहिहितषगमृगकाननवासीभगेजा तनिजप्राणनिरासी ५ कोआयोइनकरदुषदाता लेतनाबिकलजी वथिरगाता ६ स्वानसोरइकवोरमहाना तिमिपिसाचधावतवनना ना ७ वीचवीचजेजेध्वनिकरहीं मोरनामअभिरामउचरहीं ८ ॥ तोलोंविपुनजीवनियराये करतसोरआरतअतुराये ९ लषिजीवन दारुनदुषव्याधीसहिनसके प्रभुछुटयोसमाधी१० नैनउघारिचित्यो भगवाना परेदृष्टिधावतगणस्वाना ११ तिनपाछेपिसाचसमुदाई धावतविपुन जीवदुषदाई १२ दोहा आवतअसगोहरातसव करतसो रकछुभयन देषहुकहिथलआहिंकल कृष्णकमल दलनयन १ चौपई

भक्षतअसुषरुधरकरिपाना आवतकरतकोलाहलनाना १ जैजै जैभगवानउचारैं धायधायकाननमृगचारैं २ करतअटनअसप्रेत निकाया आयगयेसन्मुखजदुराया ३ तितपाछेवहुंकाननमाहीं देषिपरयोप्रकासचहुंघाहीं ४ मानहुउद्दयविपुनतमहारी महा प्रकासछयोदिसचारी ५ इमतपिसाचनिरूषकराला लहतलंव कचदसनविसाला ६ करतअटनकाननचहुंपासा महांविकटकटु वचनप्रकासा ७ दोहा धरेउछंगनवालनिजकिलकलातमुषवाय हसतरुदतपटरहतरतदुरितदूवरीकाय १ चौपई रुदनकरतवोधत असवालैं भेटवआजअवसिनंदलालैं १ तासप्रेततियमंडिलमाहीं लष्योकृष्णजुगप्रेतनकाहीं २ सोचतमनमहंरूपानकेतू अधम पिसाचनाममसलेतू ३ कोयहपापपुंन्यवडदोऊ जिमिविषषाय अमियपियकोऊ ४ मोरनामसुमरतदुषध्वंसू मुक्तिजोगएहजोग प्रसंसू ५ याविधभनतनाथकेवाचा चलिआयेद्रुतनिकटपिसाचा ६ वदनकरालतलंववपुधारे पीतलोमलोचनअरुन्यारे ७ दीह दसननासिकअतिभ्यावन अतसेअमंगलरूपअपावन ८ तीन तालतलगदूवरदेहा हाहाहीहिविचनअनेहा ९ भक्षतमनुजअसुषक रलीने मनुजआंततनआव्रतकीने १० मानुषरुधरपीयतवहुवारा मृतकमनुजजुगकंधनधारा ११ वदतअनेकभांतिमुषवागी आव तचलयोसकुचाचितत्यागी १२ दोहा हसतवकतवहुवदनअतजंघ वेगवलपाय तरुटूटतकंपतधरनउभयतरुनदनुराय १ चौपई घंटा

करनभनतअसवानी कवदेषवहमसारंगपानी १ निवसतकहांवद रिव्रननाथा गिरगरीवगहनगुनिहाथा २ माधुरिस्याममृदुलवर मूरति संभुभनतनहिहृदयविसूरति ३ कहांहोहिराजितअघमोचू साधिसमाधिहरनभवसोचू ४ कौनपापपूरवहमाकियऊ जहितेंजो निप्रेतजगालियऊ ५ पैहमसहसआजनकोई परमपुन्यभाजनभव होई ६ जांकेदरसादिव्यभगवाना होहिसुरनदुरलभसुषदाना ७ असप्रकारसोचितमनमाहीं घंटाकरनअनुजजुतताहीं ८ हेरतविष्नविपुलस्रमपाई आयगयोसनमुषजदुराई ९ प्रभुकहंप्रेतमनुजमनुलेषी वोलिउठयोमुषवचनकुभेषी १० अहोकौनद्दतकहिहितलागी वैठेध्यानलीनवडभागी ११ इहांसमूहविसाचकराला अटनकरतकाननसवकाला ॥ १२ ॥ दोहा स्वानसिकारीइमतइतफिरतवदनवहुवाय तुमनडरतनिरजनविपुनवैठे ध्यानलगाय १ चौपई अतिसुकुमारअंगमृदुलोने चितवतचितचुरातमनुटोने १ कलितकमलदलनैननवीने रूपरासिमनसिजछविछीने २ ललितनीलअंवुजजनुकाया अतसेवचित्रचित्रमनभाया ३ इंद्रकुवेरवरुणाकिधोंकोऊ कैगंधर्वकिंनरसुरहोऊ ४ जानिनजायतुम्हारप्रभाऊ मनुजप्रकटकहिसत्यजनाऊ ५ महाविकटकटुमनुजअराती तुमनडरतलषिप्रेतजमाती ६ घंटाकरनकथनसुनिकाना मुषमुसकायभनेभगवाना ७ हमक्षत्रीजदुवंसमझारा भक्तहेतलीन्योअवतारा ८ संभुसरनकैलाससिधाये लषि

जामनिइतविपुनवसाये ९ तुमहोकौनकहोहमकाहीं कहिहित फिरहुवदरिवनमाहीं १० धौंसेवकभूतसंकरकोऊ अभयाफिरहु काननकलदोऊ ११ मुनिनवासवदरीवनमाहीं कौनवतायदियो तुमकाहीं १२ परद्रोहीनास्तिकसठप्रानी आवतईंहांनअगअभिमानी १३ सेवतसुररिषसिद्धसदाहीं अभयहोतश्रीजुतभवमाहीं १४ परद्रोहीपापीसठपोचू ईहांहोतसंकुलदुषमोचू १५ तातेतुमपिसाचजुगभाई अवनजाहुआगलवनधाई १६ वैठेमुनिनिवृंदतपहेतू करहुनइतमृज्ञानतप्रेतू १७ अपरजीवएहिकाननकेरे होतविकलतुवस्वाननहेरे १८ कवहुंकिसासननिदरिहमारी तुमप्रेवनस्वानसिकारी १९ तोहममुनिसेवकसवभाती तुमहिहनववाननषरिछाती २० दोहा हमरक्षकवदरीविपुनमुनिजीवनसुषदान कौनइछतहमरेइन्हैंदुषदायकरिपप्रान १ चौपई तातेंअसविचारउरधरिकै वैठिजाहुइतआसनकरिकै १ प्रेततुम्हारवृतांतनवीना हमजाननसवचहतप्रवीना २ प्रेतभननभगवनसुनिनीके वैठिगयोअचरजगुनिजीके ३ इहमानुषकसजानिनजाई सानिसनेहजनुंगिराअलाई ४ ममप्रभुकरयहषोंजवतैहैं तहंपुनिउदयादिवसहमजैहैं ५ असकहिप्रेतहरषजुतहोई लगेवृतांतभननिजदोई ६ सुनहुमनुजअवमरमहमारा जैजैजैजगसिरजनहारा ७ हमपिसाचरतदुरितमहाना घंटाकरननामअभिमाना ८ सेवकसंभुवचनमनकाया इहममसैनस्वानसमुदाया ९मैवांध्योघंटास्रुतिमाहींजहितसु

न्योनामहहरिनाहीं १० करिसेवासुचिसंभुअथोरी मांग्योमुक्तिजुग
लकरजोरी ११ तवजसभन्योसंभुभगवाना सोवृतांततुवसुनहुसु
जाना १२ दोहा असकहिघंटाकरनउरसुमरिचरनभगवंत जैजै
जैजदुनाथकहिलाग्योभननवृतंत १ चौपई घंटाकरननामअसमो
रा दुरितदंभदूषनरतचोरा १ अमिषअहारसदादिनराती दुषदाय
कजीवनजगघाती २ निरदयकुटिलकूरकटुवाचा परद्रोहीनिंदक
अगराचा ३ तिमिइइअनुजेमोररतदोषू चमुपिसाचसवआमिष
दोषू ४ मैंसवविधरतदूषनभारी वषसनजोगकपालमुरारी ५ अस
उरसुमरिकृष्णभगवाना प्रेतकृष्णसनवचनवषाना ६ मैंसिवतेंजव
विनयअथोरी जाच्योमुक्तिजुगलकरजोरी ७ तवभाष्योसंकरमोहि
वाता हैइककृष्णमुक्तिकरदाता ८ तवमैंनंत्रजुक्तजुगपानी वृषभ
नाथपैंविनयवषानी ९ सोहरिजलधस्यामसुचिगाता किमिसुधिक
रहिंमोरजगत्राता १० मैवांध्योघंटास्तुतिमाहीं हरिकोनामसुनहुंज
हिनाहीं ११ विष्णुदेवनिंदकसवकाला काहिसेवाप्रभुदीनदयाला
१२ दोहा मोपेरीझहिंकृपायतनकृष्णकमलदलनयन गुनिसिवकप
ददीनलषिदेहिंमुक्तिसुषदयन १ चौपई तवसंकरअसमोहिवषाना
कृपानिधानकृष्णभगवाना १ जौताजिकपटभजहुहरिकाहीं तोअ
सावतुम्हरेकछुनाहीं २ फेरिहेंअवसिदीनदुषहारी दयादृष्टिनिजजन
गनषधारी ३ तवमैविनयकीनकरजोरी संभुवसहिंकहनंदाकिसोरी
४ कहसंकरवदरीवनमाहीं वसहींहरनजनत्राससबाहीं ५ मैंकह

कौनजतननंदलालैं देषहुंदृगभरिदीनदयालैं६ हरभगवानकह्योत वमोही गवनपंथस्रमवेरनकोही ७ तवमैनामरूपग्रैहलागी पूछो सिवसौंनम्रतवागी ८ हरकहअजअनादिअनधामा अच्युतअनग अनंतअनामा ९ गुनअतीतअवगतअवनासी सरवरहितसवघट नप्रकासी १० हरनहेतभवमेदनिभारा जदुकुलकृष्णलीनअवतारा ११ सिंधुतीरद्वारावतिमाहीं इष्टदेवममवसहिंतहाहीं १२ दोहा सुनिसिवमुषउपदेसअसवारवारपगलागि आयोवदरीविपुनकहं कुमतिकपटछलत्यागि १ चौपईअवषोजतइतफिरहुविहालासौन पैहुंप्रभुदीनदयाला १वृथानहोहिंकथनात्रिपुरारी मोरेजियभरोसयह भारी२ जामनिजानिवसहुंयहिठौरैं षोजहुंउदयहोतपुनिभोरैं३जोन मिलहिंइतकृपानिधाना तोद्वारावतिकरहुपियाना४सवैया सूरसरन्य ब्रह्मन्यसो श्रीपतिपैनिधिवासकरन्यसुहायेकरताहरताभरताजगको धरनीधरतासुभसेजपौढाये आनंदकंदअमंदस्वछंदछिमाकरवंदानि वाजकहाये देषवआजसोऊभरिकैदृगहौंहरिमूरतिमैनलजाये १ से वतसंवतवीतिगयेवहुसंकरपादसरोजनकाहीं भोगतभोगलग्योतन रोगलष्योनहिंजोगअजोगतदाहीं जातकढेनितआयुषरोजाहिंसुकृ तषोजमिल्योकहुंनाहीं आजदयाकरिदीनविचारिदियोउपदेसमहे समहांहीं २ जायअभयद्रुतदेषवदौरिकैगौरिकेनाथकोनाथकृपालैं कोमलकंजसोरंजपदंगरिभंगरिभीतभवैसवकालैं दीनकेईठहैंदीन पैडीठसिषीकलकीटविराजतभालैंभागउदयलषिहौंअसलोचनसो

चविमोचनदेवकिलालैं ३ दोहा मैंअतिपतितपिसाचषलकुमतिदुष्ट
दुरचारि आजजायपदपरसिहौंश्रीपतिअधमउधारि १ चौपई कह
हुमनुजकहुंतुमहुंनिहारे सोघनस्यामललितछविवारे १ जोंदेषेकरि
कैउपकारू देहुतायहरननहिभारू २ तोमैंदौरिचरनप्रभुलागोदरसत
होहुंविस्ववडभागी ३ प्रेतकथनसुनिकृपानिधाना प्रेमनेमलघितास
महाना ४ जानिअनन्यचरननिजदासा रीझिगयेप्रभुरमानिवासा ५
तवपिशाचकहिंगिरालिलामा जाहुमनुजतुवदूसरठामा ६ हमइत
नित्यनेमानिजकरना भयेभोरपुनिअनतासिधरना ७ घंटाकरनकहत
असवानी भयोमगनकरिस्त्रोणतपानी ८ अमुषषायगहिआंतनमा
ला धारिवच्छनिजरूपकराला ९ करिसनानसुरसारिसुषपावा वैठि
कुसासनध्यानजुडावा १० माहिअभिमंत्रिगंगवरनीरा तजिदीन्यो
सवस्वाननभीरा ११ कृष्णसुमर्णध्यानमनलीना जोडिसमाधिअ
चलाचितकीना १२ दोहा नाथमिलनअभिलाषउरलाषलाषसरसाय
प्रेममगनभाषतवचनवारिविलोचनछाय १ चौपई जैतिजैतिजैकृ
पानिधाना जैजैवासुदेवभगवाना १ जैजैसंषचक्रकरधारी जैमु
कुंदजैजैतिमुरारी २ जैजैअधमउधारनदेवा जैजैमुनिसंकरसुरसेवा
३ जैजैजदुकूलकमलनत्राता जैजैजैतिविस्वसुषदाता ४ जैअनंतजै
संतसहैया जैरक्षकमेदनिदुजगैया॥ ५ ॥ जैअधारनिरधारनकेरे
जैतिहरनदुष दीनघनेरे ॥ ६ ॥ करिसुमरणतुह्लरोगिरधारी
छूटतकोटिजनमअगभारी ७ मोहिअनाथलषिआपनदासा क

रियनाथनिजजनउरवासा ८ जरामरनदुस्सहदुखभारी हरियक
पाकरिमोरमुरारी ९ कोटिकलपतरुसदससस्वामीतुमहुंअर्थप्रदज
नअनुगामी १० वारवारविनवोंनंदलाला देहुजोनिमोहिजीन
कृपाला ११ तहांनतुवसुमरणविसराई रहैप्रीतितुवचरनकन्हाई
१२ दोहा मैजहंजहंनिजकर्मवसभ्रमहुंनाथसंसार रहुंभ्रमरइव
लुभतनिततुवपदपदममुरार १ चौपई मरनकालमोहिदेवकिला
लाविसरहुतुमनदीनप्रतिपाला १ अधमपिसाचपतितलषिमोहू
दीनदयालानिजताजियनछोहू २ परपीडनसुभावममानो कृपा
सिंधुसरणागतजानो ३ जनअपराधछिमाकरवेको तुवसामर्थना
थजगयेको ४ परयोसरनद्वारिकाविलासी तुमहिंलाजअवहो
यनहासी ५ जसजानियतसकृपानकेतू राषिलहुभवसागरसेतू
६ असकहिमनुजआंतउरधारी सुमरतजदुपतिदीनउवारी ७
साधिसमाधिध्यानमनलीन्यो नासाअग्रअचलदृगकीन्यो ८ दी
नमंत्रपावनहरिजोई लाग्योजपनप्रेतपतिसोई ९ इकथितअच
लआनगतित्यागी श्रीपतिचरनकमललवलागी १० मानहुंभ
योप्रेतपाषाना छलवलकपटकूटाविसराना १२ प्रेतनाथअसदसा
निहारी भरेपाथदृगकमलमुरारी ११ दोहा भेअचरजवसस्या
मघनमनअनंदसरसाय एहिकीन्योदृढभाक्तिममदुरमतिद्वेषविहाय
१ चौ- मोरनामनिसवासरमाहींकरतसुमर्णआनगतिनाहीं १
मेरोईमिलनध्यानउराषै मेरोंइअमियनामरसचाषै २ जोंजन

मात्रपायइनकीन्यी सहजहींजपतनामसवछोन्यो ३ अंतहकरन
विमलव्हैगयऊ मोरप्रेमअवचलउरछयऊ ४ अवनिजरूपअनूप
सुहावा एहिकेंउचितदिषावनआवा ५ काहूकेकछुनाहिंननिहो
रा अधमउधरननामजगमोरा ६ असकहिदीनवंधुजदुराई कौतु
कप्रेतपतितउरआई ७ निजअनुरूपरूपमनहारू दीनदिषायदी
नद्दगचारू ८ सुंदरस्यामतामरसतनकी सोभाअपरस्याममनुघ
नकी ९ संषचक्रवनमालविराजी गदापद्मपदनूपुरवाजी १०
पीतवसनदुतिदामिनिनिंदा कचकलकुटिलमनहुअलिवृंदा ११
कंभुकंठलोचनजलजाता भृकुटिवंकछविधनुषनिपाता १२ अ
धरविंवसुकनिंदरतनासा भालतिलकश्रीषंडप्रकासा १३ वरहकी
टकंचनमणिमंडित भुजाअजानमानषलषंडित ॥ १४ ॥
उरविसालछविजायनवरनी चितवनिचारुमुनिनमनहरनी १५
वदनप्रसंनगरुडआरूढा किमिउपकारहुंकथनमतिमूढा १६
भृकुटिविलासजाससंसारा जीवचराचरकेआधारा ॥ १७
असअनूपहरिरूपनिहारयो प्रेतसफलनिजजनमविचारयो १८
इकथितअचलसमाधिजुडाना तज्योनहरिपदपंकजध्याना
२१ दोहा जवतेमोहिउपदेसाकियसंकरकृपाअगार तवतेमै
कीन्येविवधजतनअनेकप्रकार १ चौपई असससरूपनाहिंप
रयोनिहारी जथाविलोक्योआजमुरारी १ अवनकवहुंदृगपटि
लउघारूं सदारूपहरिहृदयनिहारूं २ यातेअधिकआनसुषनाहीं

देषिअदेषपरेहियमाहीं ३ प्रेमपयोधिप्रेतमनलीना मनुमोहनहरि मूरतिकीना ४ हरषमगनरोमांचितगाता वारवारदृगवारिवहाता ५ निरषिनिरषिछविजदुकुलचंदू उरनसमातपिसाचअनंदू ६ निरत निरंतरध्यानभगवाना असप्रकारजवजामसराना ७ मोदमगननहि नैनउघारा दीननाथतवहृदयविचारा ८ जवलगममसरूपउरतांके तवलगनैनउघारनकांके ९ तांतेअवनिजरूपदुरैयै यांकेअचलसमा धिजुडैयै १० असविचारिउरदीनदयालैं निजवपुलोपिलियोतत कालैं ११ सोसरूपप्रभुआनंददाई उरनलष्योजवप्रेतनराई १२ चौ किउठयोजुगनैनउघारी चहुंकितचकृतलग्योनिहारी १३ मानहुंस्व पनभयोभ्रमभारू कहिनसकतदुषवन्योअपारू १४ वारवारअस करतविचारू कहांगयेममहृदयाविहारू १५ लाग्योविकलविलो कनताहां लष्योवैठसनमुषजदुनाहां १६ दोहा जथालष्योहियमा हिंघनस्यामरूपसुखदान तथाप्रतषभोदृगनपथप्रेतनाथकेभान १ चौपई जानिलियेजदुनायकएहू दीनवतायवृषभिध्वजजेहू १ मो दमगनतनदसाभुलानी कढतनप्रेमविकलमुषवानी २ जुगलदंड असमोनरहाना सुधिसंभारिपुनिवदनअलाना ३ जैजैजैतित्रिविक्र मदेवा जैजैसुरसमाजमुनिसेवा ४ जैजैअषिललोकविस्रामा जै जैजनमनपूरनकामा ५ जैममुक्तिदातजदुनायक जैजैभक्तसंत सुषदायक ६ अहोभागममदीनसुहाये पायपायप्रभुमैनिजपाये ७ असकहिनाचिनलग्योपिसाचा हरिगुनगानध्यानमनराचा ८ देत

प्रदक्षणवाराहिंवारा अंबकचलतअंबुकीधारा ९ उर
नसमातअनंतअनंदू देषिदेषिछविजदुकुलचंदू १० मि
टिगईजन्मजन्मकीपीरा विस्ववैदसनमुषजदुवीरा ११ बहुरि
प्रमोदलीनमनकीने श्रीपतिचरनचारुचितदीने १२ दोहा लाग्यो
असतुतिकरनकलकृष्णाहरनदुषदीन जैकूरमजैनरहरीजैवराहेज
मीन १ जैधरनीधरसैनकरवरदायकभगवान जैमुकुंदजदुकुमदकु
लचंदचारुसुषदान २ जैउदंडभुजदंडवलचंडषलनदलक्षीन जै
ब्रह्मंडमंडननिषलजैप्रमोदप्रददीन ३ जैतिचराचरनाथजैजैजगासि
रजनहार जैहरमानसविमलवरविहरनाविदतमरार ४ जैजैविष्णु
साहिष्णुहारिविष्णुसषासुररंज जैतिविमोचनभारभूजैतिविलोचन
कंज ५ जैतिगुपालकृपालजैदेवाकिलाललिलाम जैतिचक्रधरषड
गधरजैतिधनुषधरराम ६ जैतिसुरथरमनजैभमनभूरिकेनाथ जै
तिसुधारनकरनसर जैतिधरनकटिभाथ ७ जैकर्ताभर्ताजगतजैह
रताजनत्रात जैतिकामतरुभक्तजनजैतिस्यामघनगात ८ जैतिउधा
रनपतितजैवारनविपातिगाजिंद जैतारनमुनित्रियविदतभेहारनसुर
बृंद ९ जैपावनवावनछलनदलनद्वंद्वदुषदीन जैश्रीभावनसमरजैरा
वनदलवलक्षनि १० जैहरिनरजैपरसुधरजैधरनगषगगामि जैह
रभंजनधनुषपरजैजगजनकानिमामि ११ जैजैरघुकुलकमलकलउ
दयअवधमनुभान जैदसरथजीवनजगतजैजैजानकिप्रान १२
जैमयंकजदुकुलकुमदजैगोकलअवतारि जैजैपतितपुनीतपयपिय

नतातपूतारि १३ जैभूषनजदुवंसवरजनदूषनदमनीय जैविलासवृज
वासजैरचनरासरमनीय १४ जैजैजोगिनवृंद उरअरविंदपदध्यान
जैविहरनवृंदाविपुनजैवृजवधुसुषदान १५ जैअघवगदारनदनुज
चारनधेनुप्रवीन जैतिमल्लषलकंसवलधरषिप्राणहतकीन १६ जैजै
पांडुसुहृदसुषदमुरमदमथनमहान जैजैराषनद्रुपदिपतहोतद्रुपतजग
जान १७ जैतिअजामलपातितसेसवजगजानतत्रैन तुवतारेकरु
णायतनसुजनसंतसुषदैन १८मैइतुरमातिरतदुरितआतिअगतिमूढमद
मत्य चारविचारनहिताहितचितयनसत्यअसत्य १९ परद्रोहींपाषं
डपरकपटदंभकरमूल कौनपुन्यवस प्रकटतुवभयेनाथअनकूल २०
चौपई प्रेतजातिकहं अधमउधारी जोदरसनतुवदीनमुरारी ॥ १ ॥
कियोधंन्यधन संसृतिमोही अधमउधारनलायकतोही ॥ २ ॥ मो
हितेसरहिंकौनसिवकाई काहकरूंअरपनजदुराई ॥ ३ ॥ दारि
द्रीअतिदीनमलीना प्रभुदाया अनुचरलषिकीना ॥ ४ ॥ भाज
नसुजसाकियो जगमोही वंदहुंवारवार प्रभुतोही ॥ ५ ॥ असकहिं
नाचिनलग्योपिसाचा कृष्णसरोजचरनमनराचा ॥ ६ ॥ मनहुंनि
मगनमोदनिधवारी प्रेमवारिदुगलेतनवारी ॥ ७ ॥ भनतआजम
मसैरिसनदूजा जहिप्रभुकीनदृगनपथपूजा ८ काहधरहु नैवेद
कृपालैं कसरिझाहुं अवदीनदयालैं ९ दियोनाथमोहिजोनिपिसा
ची मोरीतुष्टिआमिषमहंसाची १० प्रेतनआमिषरुधिरविधात
रच्योअहारपूर्व बिक्षाता ११ होतअहारजौनकरजेहू निजस्वामिन

कहंअरपततिहू १२ दोहा तातेमोरे उचितअवनिजप्रभुसनमुषस्याय अरपहुंआमिषभक्तिजुतचरनकंजसिरनाय १ चौपई असविचारि सोप्रेतप्रवीना हरिअरपनहितजतनप्रलीना १ वैदिकदुज आमिषद्रुतल्याई धोयविमलजलसुरसरिजाई २ मूलमंत्रअभिमंत्रितकइकै पात्रपुनीतप्रीतजुतधइकै ३ लैगवन्योप्रभुसनमुषसोई मानसचारविचारनकोई ४ जुगकरजोरिविनयमनराचा यहतुमरच्योअहारपिसाचा ५ अतिपुनीतयहकृपानिधाना वैदिकविप्रआमिषमैआना ६ तुमसम प्रभुकेलायकचीना तापरमैअभिमंत्रितकीना ७ अवदिवच्योप्राचीननएहू करियग्रहणतुवदीनसनेहू ८ सेवकअरपनवस्तुसदाहीं करिवोग्रहणउचितप्रभुकाहीं ९ असकहिप्रेतनहरषअघाता दृगपथप्रेमनीरद्रुतजाता १० ठाढ्योप्रभुसनमुषसुषमनीं लियेविप्रआमिषजुगपानी ११ तासुसरिलगतकपटनिहारी भेप्रसंन्यअतिदीनउवारी १२ दोहा लषिअनन्यताहिप्रेमअसप्रेमविवसजदुराय सजलनैन मुदअैनमुष भनेवचनसुषदाय १ चौपई मैनिश्चयमानसलषिपाया तुममम भक्तवचनमनकाया १ सत्यप्रेमकीन्योमोहिमाहीं तुवसमानप्रियदूसरनाहीं २ विप्रअमिषनाहिभोगनजोगू पूजनीयजानतसवलोगू ३ यामैकछुनाहिंदोषतुह्मारा आमिषपिसाचभोगसंसारा ४ तुवतनुपापपरैनहिपेषा जप्योमोरमुषनामवसेषा ५ कियोकपटगतममपदनेहू साधुनरीतिनिरंतरएहू ६ लषिअनंन्यतुवप्रेमनवीना मैनिजजियतुम

रेवसकीना ७ तुह्मरीप्रीतिप्रतीतिनिहारी पृयसेवकानिजलियोविचारी ८ प्रीतिविनयकृतप्रेतभुवालैं जानिमुक्तिहेतकनंदलालैं ९ सहिनस केउठिग्याकुलधाईं भेंटिलियोद्वुनभुजाभराईं १० लिपटिगयेकछु भेदनजाना कोकृपालजदुनाथसमान। ११ दीनबंधुदीननहितकारी दीनदयानिधदीनउवारी १२ दोहा प्रभुतनपरसतप्रेतकोमंदअपावन रूप कोटिनिसाकरदिपतमनुदिपतकोटिदिनभूप १ चौपई ललि तवदनअंवकजलजाता भुजआजानस्यामघनगाता १ कचकुंचित मनुभृंगसमाजू उरविसालवनमालविराजू २ पगमंजरिपीततनची रा माथमुकटमंडितमणिहीरा ३ सोभितचारिचिन्हमनलोभा कहि नजायकछुअतुलितसोभा ४ वारवारमिलिताहिमुरारी वैठआसिन वहुरिसुषारी ५ ज्ञानवानविज्ञानसुजाना भक्तिवानरतिवानमहाना ६ रूपवानसवसास्त्रप्रवीना कृपानकेतप्रेतकहंकीना ७ जोगिसिद्ध तापसमुनिज्ञानी करहिंजतनहठअनकअमानी ८ तेअधिकारलेत नहिअैसो दीन्योकृष्णप्रेतकहंजैसो ९ कोदूसरअसदीनदयाला प्रीतिकरतकरिदेतनिहाला १० आनउदारकौनअसअैहीं सरन भवतसंसारछुडैहीं ११ विदतभनतमुषवेदपुराना इनहींकरतारन अगवाना १२ दोहा इहधरनी सुरधेनुसुरधर निहरनदुषभार इह धारनगिरवरसनषवारनविपतिनिवार १ चौपई प्रेतपारषदरूपधराये ठाढभयोसनमुषजदुराये १ तवमुसकयायभन्योभगवाना सुनहुवचन ममसुमतिनिधाना २ जोलौवसहिनाकसुरराई तोलौतहिसमान

तुवजाई ३ सुरपुरवसहुविलासनसंगा होहिंनतुवसमाजसुषभंगा४
जवयहमरहिंश्रमरनृपताहां होहुतुमहुंसवश्रमरननाहां५ भोगिश्रनं
तभोगसुषभारे पुनिऐहौंतुवलोकहमारे ६ निवसहिजहांमोर
पृषदासा भमश्रनरूपसरूपप्रकासा ७ तहांवैकुंठधामतुवसंगासदामो
र संसर्गश्रभंगा ८ मांगऊश्रौरजोनमनमाहीं तोहिश्रदेवकछुसज्ज
ननाहीं ९ घंटाकरनसुनतप्रभुवानी श्रतिसनेहदायारससानी १०
ह्वैप्रसन्नमनपाननजोरीनायसीसमहिविनयश्रथोरी ११ वोल्योदीन
नाथभगवाना श्रवबाकीकछुरह्योनश्राना १२ मांगवजोनपदमपद
दासा प्रभुदरसनसवपूरनश्रासा १३ पैमोपैंजोभगवननेहू तापुनिपु
निमागहुंवरएहू १४ दीननाथतुवभक्तिसुहाई ममउररैहिंनिरंतर छा
ई १५ छुटहिंनचरनकंजकलप्रीती वाढहींनितनवविमलप्रतीती
१६ श्रानविनयदीननाहितकारी जोयहकथाहमारतुम्हारी १७ प
ठैसुनैस्त्रद्धासरसाई तहिनिजाविमलभाक्तिजदुराई १८ दीजैदीननाथ
दुषछीजै निजपदपदमभ्रमरकरिलीजै १९ रहैनकलिमलतासतरी
रा छूटहिंजनममरनसवपीरा २० दोहा सुनितांकरश्रसकथनकल
कृपासिंधुभगवानएवमस्तुनिजवदनभानिभयेप्रसन्नमहान १ चौपाई
सोदुजवधितप्रेतकरताहां द्रुतजिश्रायकौतुकजदुनाहां १ दैश्रपनो
प्रभुरुपसुहावा परमधामनिजदीनभठावा २ सुरमुनिसकलचारितश्रस
देषी मानतभयेप्रमोदवसेषो ३ जैमकुंदजैजैजदुराई कहिनभसुरनसु
मनझरिलाई ४ सवकरदेषतसोमतिधामा घंटाकरनगूरिउरकामा ५

चढिविमानसुमरतजदुराई गयोमुदितसुरलोकसिधाई ६ तहां अनंतभोगसुषभोगी वहुरिपायगतिदुरलभजोगी ७ हरिसमीपवैकुंठ अगारा वस्योंजायदुरमातिदुरचारा ८ दोहा देषहुदीनदयालजग कौनसरिसजदुरायजहिअसपतितापिसाचकहंदीन्योमुक्तिवजाय १ असयहघंटाकरनकीकथास्रवणसुषदान पठैसुनैजोप्रीतिजुतपावहिं पदनिरवान ॥ २ ॥ इतिश्रीमनूमहाराजाधिराजजंबूकाश्मीराद्यनेकदेशाधिपतिप्रभुवरश्रीरणवीरसिंहाज्ञप्तकविमायासिंह विरचितायांभगवद्भक्तिमहात्म्येघंटाकरनचरितकथनंनामसर्गः १ शुभम्भूयात्

अथतत्वाजीवचरितवर्णनम् ॥ दोहा जहिप्रभावजगसुषकद्रुम हर
हरातसाक्षात होतसुभक्तिविलासकल करहुंकथनअवदात १ हर
णसकलभ्रमसुखकरन कृष्णचरणरतिदान नरनतरनभववरणनिध
उदतअरनविज्ञान २ चौपई दक्षिणदेसरुचिरविख्याता तत्वाजीव
सुभगजुगभ्राता क्षत्रोविमलवंसउपजाने अतथिसाधुसेवनरतिमा
१ आनकरमजगसकलाविहाई संततनिरतसंतासिवकाई दुरगमतर
णउदधिसंसारा करतरहतनिजहृदयविचारा२ हरनतिमरमानससुष
दाई हमहुंमिलवककवगुरुवरभाई असआवततकिसंतउमंगा करत
कथनगुरुमिलनप्रसंगा ३ गयोकछुकजबकालविहाई करतअत
थिसंतनासिवकाई आयाएकदिवसइकसाधू रामनामनिजहृदयअ
राधू ४ करिसवतासअतथिसतकारा तत्वाजीववचनउसचारा ह
मरेमिलबककवनकवआई गुरुवरहृदयहरनदुरताई ५ साधुसुनतति
नकरअसवानी बोल्योवदनवचनहितसानी पीपरसुषकद्वारतुवएहु
पावनपरसिचरणजलजेहू ६ साखापररोहणजवहोई असतुमार
जनसदगुरुसोई सुमतसंतमुषवचनसुहावा तत्वाजीवचरणनासिर
नावा ७ तबतेंकरिनिसचयदृढएहा आवतअतथिसंतनिजगेहा
खानपानसनमानकराई चरनअंभपुनिपीपरज.ई ८ गुरुवरमि
लनसुमरिवडभागे सिंचनकरतभक्तिजुतरागे ॥ दोहा ॥
असअजासतिनकरकरत बीतिगयोकछुकाल सोनभयो
साषानजुत तरुवरसुषकविसाल १ ॥ चौपाई तवचिंता

वेष्टत मनमारे ॥ जुगलपरसपर वचनउचारे ॥ फुर अभिष्टकबहोहिंहमारा ॥ हारयोवृथाजनमसंसारा १ अस१ कार मुखवचन अलाई ॥ करते रहेसंत सिवकाई ॥ तवादिसां त्रकलभ्रमतसुहाये ॥ भक्तकवीर सदनातिनआये २ सुन्यो नामदरसन नहिपायो ॥ सो प्रतक्ष अवसनमुखआयो ॥ दोखि दर सदृगकीनजुहारा ॥ संजुतभक्ति अतथि सतकारा ३ कारिसनमानहरषिअनुरागे ॥ बहुरिचरन प्रक्षालनलागे ॥ पादोदक सिंचन तरुकाना ॥ तदपसचात भक्तिमनलीना ४ प्रीतिपूरवकपाक जिवाई ॥ दीनसदनातिजसेनकराई ॥ भएआपुरत सुपत सुभागे भोरहिरटतरामजवजागे ५ तरुहिंजायसंजुत अभिलाषा ॥ देख्योजवहिंनवलकलसाखा ॥ हरषतजनकवीरपॆआए ॥ कहिप्रसंगचरननसिरनाए ६ तवकवीरमानससुखपाई ॥ गिरागमनजव वदनअलाई ॥ तत्वाजीवनंम्र मुखवानी ॥ बोले जुगल जुकनि जपानी ७ प्रभुवासि आज जनन करधामा ॥ करहुं सफल मनवांछित कामा ॥ प्रातहोत प्रभुजाहुंसिधारी ॥ तब कीवर अस गिरा उचारी ८ को तुमार मनवांछित भाई ॥ कसन देहुमोहिवेग जनाई ॥ तोंकर जथा उत्र कछुहोई ॥ अवाहें देहुं जन वेरनमोही ९ तत्वा जीव सुनत अनुरागे निजअभिष्ठबरणनमुख लागे ॥ नाथ अगम भववारधजोई ॥ गुरु वरकरण धार विनुकोई १० तास तरण सामरथ नदेषा ॥ वूड्योजात सकलजग

लेखा ॥ तासत्रासानेजहृदयविचारी ॥ लेहु नाथ अवसरण तुमारी ११ रामनाम भवहरण कलेसू ॥ कीजेहमहुं मंत्र उपदेसू ॥ सुनि कवीर तिनकर असवानी ॥ बोले वदन वचन हितसानो १२ १२ दोहा तुम क्षत्री हम अधम लघु ॥ जाति सकल जगजान ॥ इहउपदेसन ज्ञान तुव ॥ उचित नहमहुं सुजान १ चोपाईं गुरु कठाक्ष सुनिस्रवण सुहावा ॥ तत्वा जीवचरन सिरनावा ॥ नंमृत कहिस वचन करजोरी ॥ हमहुं नजाते वंस कछु खोरी१ लोक लाज निजमानस त्यागी ॥ अव प्रभुचरन कंजलवलागी॥ तुमहुं उदार यालगुरुदेवा ॥ मैनिसचयजीयकीन अभेवा २ ॥ सुनिकवीर यद्यापि हठकोना ॥ तेनतजत मन भक्तिप्रलीना तबकवीर निसचय दृढपाई ॥ तारक मंत्र राम सुखदाई३करि उपदेस वदनसमुझायो ॥ तुवजनजाति लोक समुदायो ॥ कराहिं द्वेष दुखदेहिं वसेषी ॥ अस कलेस तुवमानस लेखी ४ कासीनगर रुचिर मोहिपासा ॥ तुवआगमन निज करहु अजासा ॥ मै प्रयतन तहिहृदयाविचारी ॥ हरि प्रसाद सुत लेहुं निवारी ५ असकहि चले भक्त वड भागे ॥ तत्वाजीव भक्ति अनुरागे ॥ सुमरत राम नाम सुखदाता ॥ आए सदनभक्तजुग भ्राता ६ कछुक दिवस बीते जब गेहू ॥ तब बांधव जन जाति सनेहू ॥ जानि कवीर भक्त शिखहोए ॥ लागेद्वेष करन सबकोए ७ बने मलेछ अधम सिषचीने ॥ निदरि बाहिर निज पंकातिकीने ॥ इककर सुत कं

न्या इककेरी ॥ बांधवजाति तजन असहेरी ८ भाषत अतिक
लेस वसताहू ॥ अब इनकर कस होहिंविवाहू ॥ अस प्रकार चिं
ताकुल होई ॥ कीन स्मरण वचन गुरुसोई ९ दोहा
तब अति दुखत मलीन मन तजत सदन अकुलाय गुरुथें सासि
धर रुचिर पुरि करत गमन जुग आय १ चौपई दीनकष्ट बांध
व जन जेहू गुरु सन कीन कथन सबतेहू नाथ कलेस एक
जीय भारी इह कन्या सुत जवन हमारी १ इन करपानि ग्रहण
कस होई परत नजानि जतन प्रभुकोई बांधव जाति सकल तजि
गययौ अब भरोस भगवन तुव रहयो २ तिन कर कथन सुन
त असवानी कहिस कवीर परम हितसानी करहु परस पर
इन कर जाई पाणि ग्रहण सुंदर सुखदाई ३ मीत लोक बांध
व जननाती रामप्रसाद सुगम इहिभाती तुम पें क्षमा करत समु
दाई लेहि ललित निज पांति मिलाई ४ गुरुन देस सुनिश्रवण
सुहाई वार वार चरणन सिरनाई तत्वा जीव भवन निज आए
दीन विवाह रुचिर विरचाए ५ जाति लोक देखित समुदाई
कहत वदन अस वचन अलाई इह कुकरम निंदत संसारा तुव
कस हृदयकीन सूझ कारा ६ तिन कर सुनत कथन अस काना
जुगम भ्रात मुख वचन वखाना पस्यो नजतन आन कछु चीना
तुमहुं बहिरत निज पंकति कीना ७ हम मलेछ सेवकजग वा
जे तब अस करमकीन गत लाजे ज्ञाती लोक सुनत समुदाई

बोले हमहुं सदन निजजाई ८करि सम्मति ठाकर मिलि सारे देहु उत्र जिमि उचित तुमारे अस प्रकार बांधव परिवारा लगे करन निज हृदय विचारा ९ वने मलेछ अधमसिष एहू अव पंकति निज मिलन संदेहू अस सोचित सब करत विचारा भए सैन रत रैन अगारा १० तव स्वपने रघुनंदनदूता हनुमत वीर प्रभंजन पूता ज्ञाती जन कहंरुचिर प्रबोधू लागे करन द्वेष अविरोधू ११ राम चंद्र दृढ भक्त कवीरा इह सिष वने तास जुग वीरा तुमहुं दीन निजपंकति त्यागे रघुपति भक्त जुगल वड भागे १२ दोहा अब तुव प्रातनकेत इन गहित मोर अनुसास सादिर कीनन पाक सठ करहुं वंस जुतनास १ चौपई तेअस देखि स्वपन निसिकाहीं निज निज सकल गुनत मनमाहीं कहत पर सपर आज महाना हमपें कीन कोप हनुमाना १ जौन चलहुं अबतिन करगेहा तास वधन कर कवन संदेहा अस विचारि बांधव समुदाई तत्वा जीव सदन सुभ आई २ द्वेषभाव मानस तजिदीने बोले वचन नम्र रस भीने निंदत करम निवारण एहू तात विरचहु पाक निज गेहू ३ बैठि सकल बांधव परिवारू मे ल लेहिं निज पंकति चारू तव अदोष सब दोष हमारे विनु अपराध कीन जोइ न्यारे ४ अनुचित क्षमहु तात अस जानी राम भक्त तुव जुगल अमानी तिनकर वचन सुनत हित सानी तत्वा जीव परमसुख मानी ५ वोले तुमहुं योग्य सब

भांती मेलन तजिन रुचिर निजपांती हम आज्ञा पालक अनुसारे कृपा दृष्टि तुव देखन हारे ६ अस कहि ललित पाक विरचाई दीन सकल जन जाति जिवाई तब प्रसन्न जुत बांधव सारी बोले वदन वचन हित कारी ७ दोहा अब कन्या निज सुवन कर करहुं सोच जनिकाहु जथा उचि तहम करब कल इनकर मुदित विवाहु १ चौपाई जब बांधव अस वचन अलाए ॥ तत्वा जीव सुनत सुख पाए ॥ बोले नम्र जुगल कर जोरी ॥ इन कर तात तुमहुं सब खोरी १ इह नदान जुग बाल तुमारे ॥ अस प्रकार बांधव सुनि सारे ॥ समय पाय संजुत उत साहू ॥ बालि बाल कर रुचिर विवाहू २ यथा उचित कुलदीन कराई ॥ अस इह चारु चरित सुखदाई ॥ मै कछु कीन कथन साधारन ॥ मंजुल राम भक्ति विसतारन ३ दोहा तत्वा जीव प्रसिद्ध जग ॥ निपुण भक्त भगवान ॥ जोलो रहे सजियनजग ॥ राम चरण रति मान १ अतथि संत सेवत मुदित ॥ अंत तजत निजकाय सुमरत राम कृपायतन ॥ लीन परम पदपाय२ इतिश्री भक्तविनोदग्रंथेभगवद्भक्तिमाहात्म्ये तत्वाजीव चरितकथनं नामसर्गः ॥ १० ॥

॥ अथ माधव चरित वर्णनम् ॥ दोहा जहि सेवत सुख उपजी भव ॥ होत दुरत दुष नास ॥ भक्ति महातम कलपतर करहुं सो प्रकट प्रकास १ चौपई अतसे मनोरम कथा सुहाई ॥ हारन हृदय सजन दुरताई ॥ उत कल देस दिजन कुलमाहीं ॥ माधो विप्र नाम इकताहीं १ वासिहें विगत भ्रात सुतदारा ॥ पैविरक्त कछु धरम अचारा ॥ असप्रकार बहुकाल सराना भयो सेविप्रजठर गत ज्ञाना २ समय एक तजि सदन सुहावा नगर वहिर कारजवस धावा ॥ मारग अतपघामस्रमपाया देखि सघन तरुवर इक छाया ३ वैठ्यो विप्र व्यथत चित हारा अकसमात तहि उदरमझारा उपज्योसूल कठिन दुखदाई ॥ मुरछित पर्यो धरण अकुलाई ४ अस अचेत मुरछित क्षततासा गयो जुगल जब डंड वितासा तदपश्चात तास सुधिआई ॥ लाग्यो विविध हृदय पछताई ५ तात मात बांधव सुत भइया ॥ इहांकवन अब मोर सहय्या ॥ देख्यो सकल विस्व बहुरंगी ॥ मरण कालको होहीं नसंगी ६ अवलों वृथा दिवस सब खोयो काहुनधरम करम सुभ होयो ॥ पूरव जथा करम कछु कीना ॥ इहां विपाक वपुष धरि लीना ७ अब आगल कछु सर्यो नकाजा ॥ भयो वपुष जीरण गत लाजा ॥ जानि जठर बांधव परिवारा ॥ तजाहिं सकल सेवन सतकारा ८ अजहुं समय कछु चेतन केरा निबल सिथल नतवपुष घनेरा ॥ होहिंनजोग्य करम कछु काहीं ॥ अस

विचारि निज मानस माहीं ९ दोहा कहत तजहु सुख गृहसथ सुत ॥ सदन दार परिवार ॥ भजहुं विपन वसि विमल मन ॥कृष्णनाम निरधार १ चौपई असकहि विप्र सदन निज आवा करि सनान कछु भोजन पावा ॥ पुत्र पतनि बांधव परिवारा बोलि प्रकट अस वदन उचारा१ मै तुमार हित धरम अधरमा कीनसुभासुभ संसृतिकरमा ॥ पाल्योतुमहिंजथावनिआयो ॥ नाना वपुष खेदस्रम पायो २ सो अस कहत विदत बुध लोगू॥ पुरुष करम कृतभोगन जोगू ॥ ताते मोहि अवश्य फल होई ॥ तुवहित कौन सुभासुभ जोई ३ अहो तुमहुं निज निज सुखरागी होहुन अंतकाल कर भागी ॥ जयित प्रसपर सबउपकारा ॥ मरण काल पलचत निहारा ४ मैं तुमार तुम नाहिन मोरे ॥ममता स्वत्त जियत सब भोरे॥अस विचारि बांधव समुद,या ॥ अव इह जानि जठर जडकाया ५कृपा सहित मोहि तजहु प्रवीना कानन गवहुंभक्ति मन लीना ॥ करि सरोज पद कृष्ण अराधन ॥ करहुंप्रलोक लोक पथ साधन ६ तुमहुं वसहु निज सदन सुखारी चल्यो विप्रअस भाषि सिधारी ॥ तासु देखि अस बंधु विरागी चले सकल पाछिल तहिलागी ७ रोदन करत जात मन मारे करि प्रवोध तबजठिर निवारे ॥ एकल चल्यो आपु वन काहीं इत सब आयसदन निज माहीं ८ गिरि विसाल नीलाचलनामा आवातहां विप्र अभिरामा ॥ मानस विगत मार मद मोहा ॥

देखि एकागिरिवर कलगोहा१दोहा भयो सथित ब्रतधारि दिज॥ खान पान तजिदीन ॥ जगननाथ सुमरण करत ॥ बीति गए दिन तीन १ चौपाई भए प्रसन्न भक्त अनु गामी ॥ तापर जगननाथ प्रभुस्वामी ॥ चतुरथ दिवस जवहीं निसिमाहीं ॥ पूजक देत सैन हारिकाहीं १ करि सिवकाइ जथाविधि सारी ॥ तब नइवेद रुचिर इकथारी ॥ संजुतभक्ति राखि प्रभु आगे ॥ मूदतकलकवार अनुरागे २ निज निज भवन सैन रत आई ॥ भएनिपुणपूजक समुदाई ॥ तब कमलासन भक्त उवारें ॥ कृपा युक्त असवचन उचारे ३ माधव नाम विप्रवर जोई ॥ मनवच करमभक्त मम सोई ॥ नीलाचलाविचित्र गिरि गोहा ॥ करत निवास विगत मद मोहा ४ मोर स्मरण निरत गुण रासा ॥ बीत्यो तीन दिवसउपवासा ॥ इह प्रसाद मोदक सुखदाई ॥ मै ताहि देहुं भक्त निजजाई ५ कमला सुनत वचन अनुरागी ॥ प्रभुहिं वदन अस भाषन लागी मै प्रभुजाहुंभक्त तुव पासा ॥ तुवनकरहुंस्त्रमदेव अजासा ६ अस कहि लेत ललित करथारी ॥ त्रीय सामान रूप निज धारी चली सयल नीलाचल कांही ॥ भक्त सृष्ठ माधव दिज जाहिं ७ देखे जाय भक्तगुण खाना ॥बैठे ध्यान लीन भगवाना ॥ कमला कहिस विप्र पतिमोही ॥ पठयो देन भोजन हित तोहीं ८ अस कहिराखि अग्र दिजथारी ॥ चली आपुनिज भवन सिधारी ॥ माधव हृदय लीन निजजाना ॥ सरव विस्व पालक भगवाना

१ पठ्यो मोहिभोजन निजदाया ॥ लीन मुदित मोदिक दिज पाया सुमरत जगननाथ भगवाना ॥ भयो नरेंद्र निरत नित ध्याना १० दोहा इत पूजकजन जजनहित ॥ प्रात भवन नगधारि ॥ आय विलोकिनदृगननिज ॥ सुचि प्रसाद प्रभुथारि १ चौपाई विसमय व्यवस परसपर बोले ॥ निज कर कल कवारहम खोले ॥ इहिकर बन्यो कवनअभिमानी ॥ अगम वात कछुजायन जानी १ अस प्रकार चिंततसमुदाई ॥ नृपमन कहिस मरम सब आई ॥ सुनत भूप मानसविसमाए ॥ चारि ओर भृत दीन पठाए २ खोजन चतुर चौर जनकाहीं ॥ धावन धाय वेग जहं ताहीं ॥ गिरिकंद्रा कानन पुरग्रामा ॥ लगेप्रमन भृत भूरि अरामा ३ अस प्रकार खोजततहि काहीं आय कछुक नीला चलमाहीं ॥ देरख्योतहां लुपतागिरिगोहा ॥ तिनहुंसंत धृत भेषअमोहा ४ राखि अग्र निज मोदकथारी ॥ एहु चोरभृत लीन विचारी ॥ वांधि लीन मोदक जुत थारा ॥ मोरग भृतन विविध विधिमारा ५ बहुरि लाय सनमुख नृप कीना नृपनदेस ताडन हितदीना ॥ भयो तासु जबवेत्र प्रहारा ॥ टूट्या तुचा अमुख वपुसारा ६ देखि कलेस भक्त असभारी ॥ कहत दैवगति हृदय विचारी ॥ मोरपूरव करएहू ॥ लीन सो आज प्रकट फलतेहू ७ रह्यो सोचि असमोन सुधीरा ॥ सह्यो करम दुख दारुण पीरा ॥ एकपुरुष तबवदन अलाया ॥ उपजी हृदय तास

कछुदाया ९ अब नकरहु जनताडन एहा अस भृत सुनत वचन मुखतेहा ॥ तजत तासु निजनिज सब धाए ॥ उत भगवान भवन सुभआए १० पूजक सांझ काल कलपाई ॥ भएनयुक्त दैव सिवकाई ॥ तब पूरव सृंगार उतारन ॥ लागेसैन वसन जब धारन ११ देखी परम दैव कलकाए ॥ त्वचा सोथ वेत्रन छत छाए ॥ अस विसमय दृग देखि पुजारी ॥ परिहरि रजनि अन्न वर वारि १२ बैठे देव भवन मन मारे ॥ करत विचार परस पर सारे ॥ अहो नजानि जाय कछु एहा ॥ दीनद्याल पीडत अति देहा १३ दोहा अस चिंतत निद्रा निरत ॥ देखिस स्वपन पुजारि ॥ तुवन करहु कछु सोचउर ॥ गिरधर गिरा उचारि १ इह माधव मम भक्त दृढ ॥ वसत नील गिरि गोहू ॥ मोर भजन सुमरण निरत ॥ विगत मारमद मोहू २ मै क्षुध्यत अति व्यथत तकि सुचि प्रसाद पठि दीन ॥ सो अनुचित भव भक्त असतुव ताडन जनकीन ३ देखि कठिन दुखभक्त प्रीय ॥ मोहि उपज्यो दुखपीर ॥ तबप्रकटे त्वच भेदिछत ॥ वेत्रन विदत सरीर ४ ॥ चौपाई उठे देखि अस स्वपन पुजारी ॥ वारवार निज प्रभु हिंजुहारी अहोसत्य तुवदेत्र सुहाए ॥ वत सल भक्त वेद स्तुतिगए १ अस प्रकार मुख विनय अलाई ॥ माधव भक्त बहुरि हरषाई ॥ सादिर बोलि प्रीति जुत रागे ॥ विनय प्रणाम करन सबलागे २ हमअजान जान्यो नहि काहू भक्तसृष्टअ सतोर प्रभा ॥ भयो विपुल

अनुचित अपराधू कृपा नकेत क्षमहु तुवसाधू ३ असक हिचारु विमल जलसंगा ॥ दय सनान करि पावन अंगा ॥ सादिर नवल वसन पहि राई ॥ दीन रुचिर अस तिणं विछाई ४ बैठारे संजुत उतसाहा ॥ जे उपचार वेत्र छतराहा ॥ सो सबकीन जथा विधसारी भए स्वसथ चित भक्त सुखारी ५ तब प्रसन्न मानस अनुरागे ॥ जगत नाथ पुरि विरचन लागे ॥ अवसर एक भक्त निसि काहीं ॥ आए भवन भवन पतिमाहीं ६ पूजन देखि दैव मन भावा ॥ भक्त प्रधान परम सुखपावा बहुरि इकांत विप्र रतज्ञाना बैठ्यो ध्यान लीन भगवाना ७ करत दैव सुभ जजन पुजारी ॥ दय कवार निज चले सिधारी ॥ तास मरम कछु नाहिन जाना माधव रहे भवन रतध्याना ८ दोहा भयो तजत दिज ध्यान जब तव सं लगन कवार ॥ दृगन विलोकत आव फिरि करि निज हृदय विचार १ भयो सयन रतधरन तल कल कट करन विछाय व्यथत अरध निसि सीत वस ॥ थरथर कंपिसकाय २ चौपाई कृपा नकेत तासु अस देखा ॥ धरत ललित निज वैष्णव भेषा ॥ आपन पट परि धान उतारी जनतन कीन अछादनसारी १ प्रभुकर बसन उसन जब लययौ ॥ भक्त गाढ निद्रा रत भययौ ॥ आय प्रात पूजक अनु रोग खोलि कवार किलो किन लागे २ परयो काहु भगवन पट धारी तासु सजग करि कहत पुजारी कोतुव इहां

भवन कल पैढचो श्रीपति विमल वसन कस ओढचो ३ माध
व विनय वदन करि काहा मैइत भवन बैठि निसि राहा भग
वन ललित ध्यान मनलीना तुम सब उतकवार कल दीना
४ निज निज सदन कीन जब गवना मैइत सक्त सयन भयो
भवना तब निसि अरध सीत मोहि लागा काहु सुधरम पुरुष
वडभागा ५ देखि विथत कंपत मम काया दया युक्त पट दीन
उढाया तहि प्रसाद निद्रा सुख पायो आयतुमहुं अबलीन
जगायो ६ तब पूजक जन लीनसि जाना माधव सोऊ भक्त
भगवाना दीननाथ करुणा निज कीना इहि कहं आपु रुचिर
पट दीना ७ लाग करन तब विनय सवाहीं अनु चित क्षमहुं
भक्त हमकाहीं नहि असाधतुमेरे कछु भाई दैव प्रसाद सुलभ
सुखदाई ८ अस प्रसंसि संजुत सनमाना लगे करन पूजन भग
वाना माधव बाहिर भवन प्रभु आए भक्ति प्रमोद प्रेम सर साए
९ दोहा आए विचरत एक दिन भक्तवार निधकूल दैव योग
करे उदर तहि पस्यो प्रबल तरसूल१ चौपई रेचक वमन विवि
धदुख पावा तरफत विथत धरन मुरछावा भयो सिथल निरब
ल दिज काया वीत्यो दिवस तिमर निसिछाया १ कछुक चेति
दृग पटल उघारे कृष्ण कृष्ण अस वदन उचारे अबतो चलत
चहत जड प्राना अस विचारि जीय भक्त सुजाना २ सुमरण
लाग चरा चर त्राता हरन कलेस जनन सुखदाता जानि भक्त

दुखदीन उवारी ललितसरूपावि प्रनिजधारी ३ लेत विमलवरवारि
सुहावा सादिर सौच सनान करावा पुनिकौतकभोजनाविर
चाई दीन नाथ तहि दीन जिवाई ४ भवन निकट पहु चावन
हेतू हृदय जतन सोचत भव सेतू निज उर भक्त सृष्ट तव जाना
इह तो कृपा सिंधु भगवाना ५ विनय कीन मन मोद उमंगा
दैव मोरपरि सोधन अंगा कीन जवन निज कृपा अथाहा दीन
दयाल कहं उचित नराहा ६ सुनत दैव अस वचने अलाया आ
तम मोर भक्त निज काया तांते मैं निज विप्र प्रवीना जानि काय
कल सोधन कीना ७ माधौ कहिस जोरि जुगपाना जो अस
दीन नाथ तुम जाना तो अस अकृतव्य कस कीना देहु कलेस
कवन हित दीना ८ दोहा सुनि बोले करुणा यतन जन अब
लोतुव देहु उपज्यो जवन कलेस कछु पूर्व करम कर एहु १
अब आगल तुव मुचत दुख मोर वचन निरधारि चलहुं भवन
मोंहि संगलगि भक्त सृष्ट सुभचारि २ दीन दयानिधकू पातैं भक्त
स्वस्थ चितहोइ प्रभुसन आवा भवन प्रभु ॥ वपु कलेस
सव खोइ ३ चौपाई लग्यो निवास करन करताहां
सुमरत हृदय असुर सुर नाहां विपुल काल पल सहस तासा
निरत भक्ति भगवान वितासा १ केऊ वरष नइवेद सुहावा भक्त
भवन भगवन सुचि पावा बहुरि तजत भिक्षाटन काहीं गवन्यो
एक दिवस पुरमाहीं २ देखी एक धनक धनरामा देत ललि

परिहरिकलह क्रोध दुरताई ॥ उपजाहिं ज्ञान दिपति सुखदाई ॥
दानदयादि संतद्विजदेवा ॥ संजुतभक्ति होहिंरतसेवा ३ तव सं
ध्या अवसर जल लीने ॥ दिज पदकर प्रक्षालनकीने ॥ दैव भव
न चहुं ओर सुहावन ॥ कीन प्रज्वलत दीपमन भावन ४ इत सुदी
प जब भवन प्रकास्या ॥ उत अज्ञान तिमर तहीनास्या ॥ भाषत
वृथा सकल भ्रममोरा ॥ इह वित सदन कवन हितजोरा ५ अ
वलोकछु नाहिनवनआई ॥ अतथी विप्रसंत सिवकाई ॥ मैं दुर
मति वित लालच लागी ॥ रही सुधर्म कर्म सुभ त्यागी
६ मरण काल वित संगनजाई ॥ होहिं धरम परलोक स
हाई ॥ अहो आज सुभसंत सुहावा ॥ मोरे सदन अतथि
वतआवा ७ कुमति तासुदुर वचन उचारी ॥ बहिर सदन नि
जदीन निकारी ॥ मोहिसम कवन भाग गत मारा ॥ जहि
असकीन संत तृसकारा ८ अस प्रकाराचिंता कुल काहीं
भई रैन निद्रा कछु नाहीं ॥ प्रात होत उठिसदन प्रवीना
लेपन ललित मारजनकीना ९ दोहा जहं लगवित भूषण
वसन ॥ धन निजसदन निकारि ॥ लगीदेन संतन दिजन
निरधन दीनानिहारि १ चौपाई बहुरी करत चिंतन मनमा
हीं ॥ सो कब मिलाहिं संत मोहि काहीं ॥ कुमति चोर
रिसवस जाहिमारा ॥ इहधन देउआजतहि सारा १ असप्र
कार मानस पछताई ढाडि स द्वार बाहिर निज आई ॥ उ

त उप लेपन धामा कलह क्रोध कर मूरति देवी अतथि संत
दिज भक्त असेवी २ जद्यपि द्रव्य विपुलतहि गेहा तद्यपि कृपन
भोग गत तेहा दान दयादि स्वपन कछु नाहीं ॥ सोअस देखि
द्वारादे जकाहीं ३ क्रूरदृष्टि देखत रिसछाई मुखभरोरि नख घ्राण
चढाईतब मांगिन भिक्षा दिजधीरा रहीमोन जउकृपन सरीरा४
वारवार दिज कह्यो अलाई ॥ कसन देहु भिक्षा तुवभाई ॥तब
रिसात उपलेपनचोरा ॥करत वदन दुरवादअधीरा ५कंपत हनन
हेतादिजधाई॥विप्रत्रास वसचल्यो पराई ॥ पाछिल परम कोपवस
होई ॥ धरत चीर उप लेपन सोई ६ कीन प्रहार विप्र वरकाहीं
आई बहुरि सदन निज माहीं॥ दिज वर सोऊचीरगहिलीना॥
उरविचार दाया वसकीना ७ अहोसदनइहिसंपति छाई ॥ पैअ
तिकृपन धरम गतमाई ॥ अताथि संत सेवन रतिनाहीं कैवल क
लहक्रोध मनमाहीं ८ इहि कल्यान देवकसहोई ॥ अस उप
कार गुनत दिजसोई ॥ तहि प्रहार कृतचिर कुटचीरा ॥ आए
लेत सरितपतितीरा ९ दोहा करी प्रक्षालन करनतहो ॥ कलित
स्वेत करी लीन ॥ सुषक करत कलवरतिका॥ बिप्रजतनजुतकीन
१ चौपाई अन्न दीप रचि हृदय उमंगा ते सब करत मथन घृत
संगा ॥ सजत दीप हरिभवन सुहावा ॥ अससंकलप धारी दिज
आवा १ दीनानाथ भक्तहितकारी ॥ इहवरविप्र धनक जोइना
री ॥ अंध नरंत्र तिमर अज्ञाना ॥ इहि प्रसादकलदीपनदाना २

उत आए माधव बड भागी ॥ दीप प्रभावविलोकन लागी२ ॥
भयो किनाहिं विमल मतिदारा ॥ अस जब आय निकट
तहिंद्वारा ॥ भामन देषि तुरतदिज चीना ॥ धावत सपदि
चरण गहिलीना ३ नंमृतकहिसजोरिजुगपानी ॥ पूरव दि
वस कुमति कटुवानी ॥ दीननाथ तुव सनमुख
कीनी सो मोहि क्षमहु अधम मति चीनी ॥ ४ ॥
अवदाया वस दीन सनेहू ॥ पावनकरहु मोर चलि गेहू ॥ अस
कहि पकरि विप्र वरपाना ॥ आई लेत सदन सनमाना ५ अस
हाचि भक्ति प्रीति तहि देषी ॥ हृदय गुनत दिज हरषिवसेषी ॥दी
पदान कर बिदत सुहावा ॥ अहो प्रभावरुचिरइहपावा ६ तब
भामन अस विनय उचारा ॥ इह वितसदननाथतुव सारा ॥ क
रिदाया सूइकार करीजे ॥ सेवक जानि सुजस मोहि
दीजै ॥ ७ ॥ माधव कहिस बचन सुखदाता ॥ इ
ह तुव सदन मोर सब माता ॥ तुमहीं होवकल्याण सुहाई ॥अबतें
विप्रसंत सिवकाई ८ करहु प्रलोक लोक सुख दाइन ॥ होहु
भक्ति कुल कृष्ण परायण ॥ विनु प्रयास भव वारध पारा ॥ होत
करहुकुल सकल उधारा ९ अस कहि कीन भक्त वर गवना ॥
सोपि प्रसन्न वदन निज भवना ॥ भगवनभक्ति निरत अनुरागी
अताथि संत दिज सेवन लागी १० दोहा माधो भक्त प्रसादतें॥
करत संत सिवकाइ ॥ दिज त्रीय परि हरि अंतवपु॥ लीनपरम

पदपाइ १ तब विचरत पुरविपुन कल ॥ माधवभक्त सुजान आ
एसासिधर रुचिर पुरि ॥ करि प्रमुदित निजप्यान २ चौपई दिज
विधान जुतहृदय हुलासी यात्रा कीन सकलफल कासी ॥ सुमरत
हरन त्रास उरदीना ॥ तहां निवास भक्त निज कीना १ आवा
एकदिवस पुरताहू ॥ दरप मत्त पंडित जनकाहू ॥ मै दिगविजय
धरणासमुदाई ॥ कहत कीन विद्या बलपाई २ आवा विजय करन
अव कासी ॥ अस प्रकार मुख वचन प्रकासी ॥ बुधजन सभा
मध्यचलि आवा ॥ तहां गरब वस वचन अलावा ३ जीते सक
ल धरण विदवाना ॥ अब तुमार जीतन रुचिमाना ॥ जोमानस
तुव होहिं उमंगा ॥ तोसंवाद करहु मुहि संगा ४ निज कर
देहु नतर लिखि सारे ॥ तुव प्रधान जीते हमहारे ॥ बुधजन सुन
त दरप अस तासा ॥ बोले वदन वचन परिहासा ५ बिंदूमाधव
सनमुख कासी ॥ वसाहिं सिद्ध इक ज्ञान प्रकासी वेद तत्व सब
जाननहारा ॥ माधव नाम विदत संसारा ६ तहिपैं जाय निपुण
मन भावा ॥ करहु वदन संवाद सुहावा ॥ जो तुव तासु पराज
य कीना ॥ हमहुं जीति संसय विनु लीना ७ तिनकर कथन सुन
त असकाना ॥ माधव निकट आव अभिमाना ॥ कहिस प्रकट
अस वदन प्रचारी मैंक्षत विजय कीन जनसारी ८ कउ विदग्ध
सनमुख नहिं आयो ॥ कासी तुमहुं एकसुनि पायो ॥ तातें कर
हु आज मुहि संगा ॥ शासत्रारथ मन मोद उमंगा ९ जोसमरथ

कछु होहिं नतोहीं तो लिखि देहुं पराजय मोहीं ॥ सो तुववदन प्रसंसक काहीं ॥ गवहुं दिखाय सदन निजमाहीं ७
दोहा भक्त सृष्ट माधव सुनत ॥ श्रवण कथन असताउ ॥ मुहिजीत्यो इन दीन लिखि ॥ गुरमुख सरल सभाउ १ चौपाई
सोअसपत्र लेत हंकारी ॥ आवाबुधजन सभा प्रचारी ॥ तहि प्रवीन कोविध तुवमानी ॥ इह लिख दीन पत्र निज पानी ॥१ बुधजन लेत तासुजबवांचा ॥ भयो तुरतरत दरप असांचा ॥ माधव जीतकरत कलहासी ॥ पटुन तासु जबवदनप्रकासी २ सोविलोकि असपरम लजाना ॥ मुहि वंच्यो कसकपटि महाना ॥ असकाहिलेत पत्रपुनिआवा ॥ कंपतरोम रोम रिस छावा ३ करि तृसकार कथन असकीना ॥ मुहि कसबांचि कपट लिखिदीना ॥ जान्यो दंड योग्यतुव साधू ॥ अवपणराखि करहु संवादू ४ जाहिनिज वचन पराजयहोई ॥ गरदभ रूढहोहिं जनसोई माधव सत्यवचन तहिमानी ॥ बोल्यो नंम्र वदन असवानी ५ करि सनान चरचादि सुहाई तोहिसनकरहुं निपुण कछुआई ॥ अस कहि जाय देवसरि तीरा ॥ सुमरत दैवहरन जन पीरा ६ जगत नाथभगवान सुहाए विप्र नंम्र मुख वचन अलाए ॥ इह पटु विदत सकल जगमाहीं मै अजात जानत कछुनाहीं ७ जहि देखत कंपत सब अंगा ॥ कस संवाद दैव तहि संगा ॥ इत माधव जीयकरत विचारा उत कृपाल प्र

भु भक्त उवाग ८ माधव सिप धरिरूप सुहाए ॥ करन संवाद भक्त हितआए ॥ तब मध्यस्थ आन विद्वाना ॥ जिनहिं मरम सब वेद पुराणा ९ वैठे प्रकट होन तव लागा ॥ सिसु सन प्रश्न उत्र कलवागा ॥ गरदभ रूढ वीच पण सोई ॥ अत प्रकार च रचा जबहोई १० प्रबल वचन बालिक तत्र पाए ॥ लोक त्रि लोकि सकल विसमाए ॥ जानिन सके देव चतुरय्या ॥ सिसु सरूप निज मरम दुरय्या ११ कहतसकल सिष एहुअजाना ॥ अहो करत संवाद महाना ॥ अगम उक्त कछु युक्त नयारी ॥ रु की नरुकजठर मति मारी १२ तब अशक्त पंडित मुखवानी ॥ बोल्यो विलखि पराजय मानी ॥ तुव वचनन कुंठित मति मोरी ॥ अहो बाल कछु कीनन थोरी १३ अवन होत संवाद उचारी ॥ मोर पराजय विजय तुमारी ॥ तब आरोहण गरदभतासा ॥ हरषि लागजब करन अजासा १४दोहा तोलो मज्जन करत कल ॥ विमलदेवसरिवारि ॥ आए माधव सुकचजुत ॥ भक्तसृष्टव्रतधारि १ चौपाई सो वृतांत सब सुनत अजासा ॥ गरदभ करन अरोहण तासा ॥ कीए भक्त दाया जुत वारन ॥ सिषहिं करत तृसकार उचारन १ कहिसविदगध जठर विद्वाना ॥ एहि कस गुन्यो योग अपमाना ॥ अस प्रकारतृसकारततेहा ॥ सिष सरूप भगवन जननेहा २ परि हरि सभा बहिर चलिआए ॥ सिसु सरूप निजलीन दुराए ॥ रहा भवन माधव सिष जोई ॥

चलिआयो तहि अवसर सोईं ३ आन विपुलको विदजनआए सिषसंवाद सुनत हरषाए ॥ लगे करनसव तास वडाईं तुवइहि विजय कवन विधिपाईं४ वेत्तावेदपरम विहाना तुवजीत्यो अस चरज महाना ॥ सिष तिन कथन सुनतइहि भांती ॥उपज्यो तु मइं कहत कस भ्रांती ५ मैंतो सकल जनममतिहीना ॥ वरण मात्र उश्चार न कीना ॥ इह महानपंडितगुण सागर॥ किमिजी त्यो सब लोग उजागर ६ अहो नजाय वात कछु जानी ॥ मृषा कहतसबअनुचितवानी ॥ वुधजनसुनत कहत समुदाईं ॥ इहि कर कथन सत्य सबभाईं ७ किमिसामरथअकोविदएही ॥ विजय करन गौरव पटु तेही॥ हम जान्यो माधव गुण खाना॥ मनवच करमभक्त भगवाना ८ सिष सरूप धृत दैव सुहाए ॥ करन विवादभक्त हित आए दीन जनहि निज रुचिरवठाईं ॥ कृपा नकेत कीन चतुराईं ९ तिनकरसुनतकथनकलएहू ॥ भयो प्रसन्न वदन पटु तेहू ॥ जोरि जुगल करचरणन दीना॥ करिप्र णाम सुखअसतुति कीना १० कहत धन्य तुवभक्त प्रधाना ॥ जाहि हित कृपा सिंधुभगवाना ॥ तब सिष रुचिर रूप निज धारे ॥ मोहि जीत्यो प्रभु गरब निवारे ११ तुव उपकार अवधगत लेख्यो ॥ कृपा सिंधु नयननभरि देख्यों तुव तो तरेभक्त मोहि तारा अहो धन्य जग जनम तुमारा १२ अस प्रकार मुख असतु ति गाईं॥ वार वार चरनन

सिर नाई ॥ हरषत अति प्रसन्न मनमाहीं ॥ कोविद कौन गवन गृहकाहीं १३ दोहा इत माधव हरिभक्ति दृढ ॥ निज आस्रम सुखपाय ॥ लागे करन निवासकल ॥ भक्ति प्रेम स रसाय ॥ १ अस पावन तहि भक्तिवस ॥ पुरुषोत्तम भग वान ॥ सपतवरष करबाल कल धृत सरूप सुखदान २ नील जल धवत नलितन ॥ नील कमल कल नयन ॥ अस मद मोचन मैनतहि ॥ रहत संग दिन रैन ३ भक्त नजानत मर म पै होतन सन मुख भान ॥ वड भागी जनआन कहं॥ दे त दरस भगवान ४ चौपाई समय एकमा धव मति धीरा॥ तजि कासि निज रुचिर कुटीरा मथरा कहं दिज कीन पयाना ॥ मारग पाय अतप स्रमघामा १ देखि सघन कल तरु वर छाया ॥ बैठ भक्त सृष्ट सुख पाया ॥ तहां एक त्रीय जठर सयानी ॥भक्ति मान दाया रतिसानी २ पथिकन पान करावत वारी ॥ चरवण चारु देत हितकारी ॥ देखि भक्त जुत क्षुध्यतबाला ॥ स्याम वरण मृदुरूप रसाला ३ देत विमल जल चरवणचारू ॥लागी करण शोक व्रत धारू॥ कवन जननि दुर भागनदेहा ॥ किन बिजुगत बाल मृदु एहा ४ सोकस जीयत वज्र उर धरनी ॥ जव असागिग शोक त्रीय वरनी ॥ तव माधव अस वचन अलावा ॥ वृद्धे कवनशो क तोहि छावा ५ बोली जाठिर जास सुत एहा ॥ तुव लावा

प्रेरत कल गेहा ॥ तासअभाग निकर मोहि काहीं ॥ भये विलोकि शोक जीयमाहीं ६ माधव सुनत वचन तहि भाषा ॥ वृथा करत कछुहृदय नराषा ॥ निज सनमुख इक आसन चारू दीन विछाय भक्त वृधारू७ तहि परमानसि दैव सुहाए माधव संजुत भक्ति बिठाए ॥ करपद प्रक्षालन प्रभु किन्यो ॥चरवण सोऊ जठर त्रीय दीन्यो ८ भाजन राखि विमल जलधरयो ॥ खान पान भगवन तवकरयो ॥ बहुरि भक्त कछु शेषरहावा ॥पाछे आपु भक्ति जुतपावा ९ भामन देखि जठर अस सेवा ॥ वालरूप प्रभु देवन देवा ॥ सादिर अति प्रसन्न अनुरागी॥ वदन वचन मृदु भाषन लागी १० मैजान्यो तुव संत उदारा ॥सि सुहिं दीन जहि प्रथम अहारा ॥ तबहुंभक्त असहृदय नराषा ॥ वृद्धे मरम वचन जोइ भाषा ११ दोहा दीन दया निधकौतुकी॥ करि कोतुक निज चारु ॥ कितहुं प्रकटाकितहुं दुरत ॥ मुहुतन रन संसारु १ चौपाई तबमाधव हरि भक्त सुज्ञाना ॥ आगल चले सुमारि भगवाना ॥ मारग देखि वारि वरछाया ॥ वैठे तहां विप्र सुख पाया १ करि सनान भोजन मन भावा ॥ हरिहिं रुचि र नइवेद लगावा ॥ आपु करत कछु चरवणचारू ॥ चल्यो भक्त वर पंथ सचारू २ तव इक मिल्यो वैस मगमाहीं ॥ संत रूपताकि माधव काहीं ॥ बोल्यो नाथ अमुक ममगेहा ॥ तहां चलहु तुव दीन सनेहा ३मोहि कारज लागाहिं कछु वेरो॥आ

यकरहुं सेवन प्रभु तेरा ॥ माधव सुनत कथन असतेहा ॥ दे
खिस आय वैस वरगेहा ४ भामनि तास संतगृहआयो ॥ दे
खि नंम्र चरणन सिरनायो ॥ आगलर ह्यो संत इक
थामा तहिपे लाय भक्त जुत भामा ५ इहि कहं देहु
निकट निज वासा त्रीए तासु अस वचन प्रकासा बोल्यो
सो असंत विधिवामा इहां नवयो वसन करठामा ६ भाखिस
त्रीय रिसातवारि जोरा तुव इत वसहु सदन प्रभु मोरा खान
पान रुचि जथा तुमारी करहुं कृपाल संतव्रतधारी ७ माधव
सुनत वचन असकाहा सुभ्रे अवन असन रुचिराहा तब त्रीय
वैस निपुन वडभागी संत सरोज चरण अनुरागी ८ संजुत
भक्ति दुगध कल दीवा सो प्रसन्न मन माधव पीवा आसिष
दीन रुचिर हरषाई तोरे सदन होहिंसुत माई ९ चारु वंस वर
विमल वढावन भगवन भक्त निपुन जगपावन बहुरि नाम निज
तासु सुनाई भक्त सृष्ट मगचले सधाई १० दोहा तव आयो
निज सदन सुभ भक्त वैस हुलसाय पूछतसंत अगमन कल
त्रीय सनवदन अलाय ११ चौपाई कौन गमन जिमि भक्त प्रवी
ना प्रमुदा कथन सकलामिति कीना वैस सुनत पाछिल तव
धायो जावत भक्त सृष्ट पथपायो १ करि प्रणाम जद्यपि हठकी
ना तद्यापि आयन भक्त प्रवीना कहिस वैस तुम सदन सुहावन
जब उपजव सुत सुजसवढावन २ तब आगमन सदन तुवमाहीं

करहुं भक्त संसय कछुनाहीं अस कहि कीन भक्त वरगवना आत्रा सोपि वैस निज भवना ३ गयो कछुक जब काल विहा ई विप्र असीर वाद फल पाई बंध्या जनम वैस वर भामा जन मत भई पुत्र अभिमाना ४ राम भक्त विद्या गुण नागर करन कलित निज वंस उजागर उत माधव मथुरा पुरि आए रंमय रुचिर देखि सुख पाए ५ जमुना तीर जात मति धीरा कीन सनान विमल वर नीरा हरन त्रास सज्जन मन भावा श्रीभगवान दरस कल पावा ६ कालिंद्री तट बहुरि प्रवीना भक्त सृष्ट आस्र मनिज कीना तत्र कौवैस भक्त भगवाना अतथी संत देखि सन माना ७ चरवण चनक देत सबकाईं आवा भक्ति प्रेम मन माहीं माधव कहं दीने कछु सोई लीने भक्त प्रीति रत होई ८ भानु सुता तट जात म धीरा करि प्रक्षालन पद कर नीरा सुचि सौपान बैठि सनमाना करि पूरव अरपण भगवाना ९ पाछे आपुहरष उरछाए भक्त सृष्ट कछु लीनासि पाए नाहि समय हरि भवन सुहाए पूजक महा भोग बिरचाए १० दोहा सनमुख रुपानकेत कर धरत रुचिर वरथार चलि आए तव बहिर सब करि सं लगन कवार १ चौपाई बहुरि सकल मानस अनुरागे पूवासि भवन जब देखन लागे सोऊ चणक माधव जोइ दीने पाए जगन नाथ तिन चीने १ परे कछुक भगवन वरथारा महा भोग परि पूरण सारा पायो सोन भक्त भयहारे भए चकत चि

त देखि पुजारे २ अति चिंता कुल करत वखाना जायन मर
म दैव कछुजाना अस प्रकार पूजक मन मारे तजि हरिभ
वन अन्न जल सारे ३ परे व्यथत निद्रा जब आई तब
भगवान भक्त सुखदाई स्वपने कीन प्रबोध सुहावा तुव अस
हृदय क्षोभ निज पावा ४ नीलाचल गिरि गोह विहारू माध
वनाम भक्त मम चारू तासभक्ति जुत मोहि सुहावा चणक
चारुनइ वेद लगावा ५ निज प्रीय भक्त सम र पत
सोई ॥ पावा मैं प्रसन्न मनहोई ॥ तुव चिंता जनि कर
हु सुजाना ॥ माधव भक्त मोर प्रिय प्राणा ६ उठे देखि अस
स्वपन पुजारी ॥ माधव भक्ति जानि जीय न्यारी ॥ वदनप्रसंसि
विविध सनमाना ॥ पूजक आए भवन भगवाना ७ तव तें
अतसे प्रीति अनुरागे ॥ नित नइवेद देन ताहिलागे ॥ पुरकर
आन लोक समुदाई ॥ लागे करन तास सिवकाई ८ अ
स प्रकार कछु समय बितासा ॥ एक दिवस माधव गुण रासा
सुठि भांडेर नाम वन काहीं ॥ गवन्यो भक्ति प्रीति मन माहीं ९त
हा एक क्षेमा असनामा ॥ रहा प्रसिद्ध सिद्ध अभिरामा ॥ तहि
पें जाय भक्त मन भावा ॥ कीन कथन कछु ज्ञान सुहावा १० दो
हा देख्यो माधव दृगन तव ॥ रच्यो पदारथकाहु ॥ कस्यो अछाद
न वसन सन ॥ धरयो खनत क्षत ताहु १ चौपाई माधव तासु दे
खि असकाहा ॥ इह कस संतपदारथ राहा ॥ सो बोल्यो अस

कपट प्रवीना ॥ दीननाथइह संतन दिना १ दीन कहं रुचीमोर कछु नाहीं ॥ करहुं अहारनाथ निसि काहीं काहुलुपत अस भाखि सुनायो ॥ महाराज सठ कपट अलायो २ उत्तम सरस आपु ज ठपाई ॥ विपन रूख कछु देहि जिवाई ॥ याते सठ निसि करहिं अहारा अस प्रकार जब तास उचारा ३ तब माधव भाष्यो तहि काहीं ॥ उचितन करन पाकनिसि माहीं अवहि दिवस मोहि सनमुख भाई ॥ लेहुं संत तुव भोजन पाई ४ सेष विभक्त करहु कछु आना ॥ नतर तुरंत लुपततकिभाना कृाम जुत होहिं अन्न सब तोरा ॥ संत निरंत्र वचन इह मोरा ५ तोलो भास करन लुपताना ॥ तास करत उद घाटन पाना ॥ सो निज चारु पदारथ देखा ॥ कृमी सकल परि पूरण लेखा ६ खेमा देखि चरित विसमाना ॥ लाग्यो चरण जोरि जुगपाना तें कु करन निज निदरत सोई ॥ संतत कृष्ण भक्ति रत होई ७ बैठि समाज संतजन माहीं ॥ लग्यो करन भोजन दिनकाहीं ॥ परिहारि सकल द्वेष दुरताई ॥ ततपर भयो संत सिवकाई ८ माधव भक्ति प्रसाद सुहावन ॥ भयो असंत संतजगपावन ॥ भक्ति प्रसाद सुलभ संसारहीं ॥ तर्यो आपु लोकन पुनितारहीं ९ दोहा ॥ तब माधव यात्रा अखिल ॥ करत कृष्ण पुरिमाहिं ॥ आवा विचरत विपुनपुर ॥ गिर नीलाचलकाहिं १ चौपई॥ मारग तास वैस करगेहू ॥ आसिष दीन सुवन हित जेहू ॥

आवा हृदय हरष निजमानी ॥ ते दंपति जुग जोरत पानी १ सुवन सहित पावन पगलागे ॥ संजुत प्रीति भक्ति अनुरागे॥ तिन कहुं कृत्य कृत्य जग कीने ॥ कृष्ण सरोज चरण मनलीने २ विहरत जगननाथ पुरिआए ॥ तेप्रभुअखिल लोक सुख दाए ॥ करि प्रणाम नयनन भरि देखे ॥ उदय भाग निज संसृति लेखे ३ दोहा जो लों रहे सजियत जग ॥ माधव भक्त प्रवीन ॥ जगननाथ सुमरन भजन ॥ रहे दिवस निसिलीन १ अंत तजत कल वपुष निज ॥ सुर दुरलभ गतिचारू ॥ लीनसि भक्ति प्रसादतें ॥ भक्त सृष्ट व्रत धारू २ इतिश्री भक्त विनोद ग्रंथे भगवद्भक्ति माहात्म्ये माधव चरित कथनं नाम सर्गः ॥ ११ ॥

अथ रघुनाथ चरित वर्णनम् ॥ दोहा कृष्ण भक्ति कल क
रन दृढ ॥ दमन दुरत दुख भारू भक्तिमहातम आनअव
करहुं कथन मनहारू १ चौपाई उतकल देस धरम गुण
धामा ॥ वसिईं एक भूप अभिरामा ॥ तास पुत्र हरि
भक्त प्रवीना ॥ विप्रसंतसेवन मन लीना १ पितुसप्रीति
संजुत अभिलाषा ॥ सुचि रघुनाथ नाम तहिराखा ॥ सोजबभयो
तरुण वडभागा ॥ नृप जुव राज देन पदलागा २ तेविचारि बंध
न मनमाहीं ॥ लाग करन बोधन पितु काहीं ॥ मिथ्या तात
सकल जग देखा ॥ मोहितराज कछु काज अपेक्षा ३ तुव जुव
राज आन सुत काहीं ॥ देहु जनक मोहि लालस नाहीं ॥अस
कहि धाम भाम सुख त्यागी ॥ चल्यो भजन भगवन हित लागी
४ जगन नाथ सामीप सुहावा ॥ सुंदरसिंध द्वार मन भावा ॥
तहां निवास करनानिजलागा ॥ देवसरोज चरण अनुरागा ५
चारुअजाचित व्रतमनलीना ॥ माघमास इकसमय प्रवीना ॥सो
यो अवनि अरध निसिछाई ॥ कंपनलाग सीत दुख पाई ६
तव भगवान भक्त रखवारे ॥ वैष्णव रुचिर रूपनिजधारे ॥ सीत
त्राण पटदीन उढायो ॥ भक्तनिपुन निद्रा सुखपायो ७ पूजक
आय प्रात जब देखा ॥ ओढततासुदेव पटलेखा ॥ पूछनलाग
सकल विसमाई ॥ कहितुवदीन देवपटभाई ८ दोहा तवबो
ल्यो रघुनाथअस ॥ मोहिन मरमजनकेहू ॥ सीत कंपत किअ

रघनिसि ॥ दीनदयावसएहू १ चौपाई तबइह मरम पूजकनजा
ना ॥ इहिपटदीन आपुभगवाना ॥ दीननाथविनु कवन उदारा
जनपेंकरन हारउपकारा १ तास भक्ति अस देखि सुहाई ॥ लगे
करन असतुति समुदाई ॥ जानिप्रधान भक्त भगवाना ॥ वंदि
त लगे करण सनमाना २ तब सुभक्त कछु अवसरपाई ॥ करत
गवन मथुरापुरिआई ॥ राधा कुंडवैठि सनमाना ॥ सुचिपूजन
मानासि भगवाना ३ लाग्यो करनभक्तिसरसावा ॥ घनो दुगध
नइवेदलगावा ॥ पूरववत संतननहि दीना ॥ एकल आपुपान
सवकीना ४ ताहि दिवस तहि उदरमझारा ॥ उपज्योसूल
प्रवल दुखभारा ॥ वैद्यबुलायधमनि दिखरावा ॥ तासप्रकट
असदीन जणावा ५ दुगधपान कीन्यो तुवगाढा ॥ तहिंतेउ
दरअजीरणवाढा सोंवोल्यो निसि दिवससुहावा ॥ मैनउदरक
छु भोजनपावा ६ इहकसभयोवैद प्रतिकूला ॥ मोरे उदरअ
जीरणसूला ॥ अवहिं दिखाहुं प्रकट करितोहीं ॥ भेषजदेन
विलम कछुमोहीं ७ असकहिवैद निपुन दुखचीने ॥ अतिप्रचं
ड औषधि कछुदीने ॥ भयोतासु तीक्षण ततकाला ॥ तहिप्रभाव
वलवमन उछाला ८ दोहा निकसिपरयोआति सघनतव ॥ उदर
दुगध सबतास ॥ लोकविलोकितचकतभे भवत सूलदुखनास १
चौपाई वैद विचित्र कीन चतुराई ॥ पूछत तासुमरम समुदा
ई ॥ तब वोल्योरघुनाथ सुजाना ॥ मैनइवेद दुगध भगवाना १

लागा मानासि ध्यान जुडाई ॥ एकल बहुरि लीनसब पाई ॥
आनन नाहिं विभगत कछुकीना ॥ सोपरिपाक प्रकट अबलीना
१ सुनतलोक मानस विसमाए ॥ साधुसाधु सबवदन अलाए ॥
असप्रकार रघुनाथ सुजाना ॥ भा अति सृष्टभक्तभगवाना २ तास
भक्ति करि विविधसुहावन ॥ अन्यमहातम मानस भावन ॥ इहां
एक संक्षपत उचारयो ॥ मैकछुअलपयथामतिवारयो ४ दोहा
जियत रह्यो इह भक्तवर ॥ निरत भक्ति निसकाम ॥ पायो मृत
पसचात कल ॥ कृष्ण धाम अभिराम १ ॥ इति श्रीभक्त विनो
द ग्रंथे भगवद् भक्ति माहात्म्ये रघुनाथ चरित कथनं नाम सर्गः
१२ ॥ अथ नित्यानन्द चरित वर्णनम् ॥ दोहा ॥ अब विचित्र
जगविदत व ॥ भक्ति महातम आन ॥ करहुं कथन जाहिं सुनत
स्रुति वढहिं सुमति सुभज्ञान १ चौपाई गौड देस इकविप्र सुहा
वा ॥ नित्यानंदनाम सुठि गावा ॥ अति प्रवीन दिज धरम अचा
रा ॥ वेद तत्व सब जाननहारा १ वसि निज सदन विप्रवर सो
ई ॥ संतत कृष्ण भक्ति रतहोई ॥ वेदाध्यापनलोकनकाहीं ॥ स
दाकरावत हितमन माहीं २ दिवस एकसुंदर सुखसारू ॥ देख्यो
तास भागवत चारू ॥ पूरव पुन्य प्रसाद प्रभाऊ ॥ तामधन वल
प्रीति रुचिताऊ ३ दिन दिन उपजि अधिक सुखदाई ॥ कृष्ण
सरोज चरण मनलाई ॥ तासु इकांत रटन परभयो ॥ तव तहि
दिव्य ज्ञान उरछय यो ४ सरब विस्व भगवन मयजानी ॥ ब्रह्मा

नंद मगन भयोज्ञानी ॥ इष्ट अनिष्ट मीतरि पुतासा॥ जनम मर
ण क्षुध्यादि पिपासा५ सीत उसन गुण अगुण समाना ॥ हरष
विषाद मान अपमाना ॥ कृष्ण रूप सब जानि जगत्ता ॥ भयो
छकत जिमि वारुणि मत्ता६ दोहा एक दिवस पुर वहिर दिज॥
नित्यानंद प्रवीन ॥ तकि समूह तृण सुषक सुठि ॥ दृग आसन
निजकीन १ तव मारुत बल वेंगगहि ॥ अनल चंड सरसाय ॥
तहि समूह तृण सुषक कहं ॥ अक समात लगि आय २ जिमि
जिमि निज बल वेगतें ॥ मारत मरुत चकोर ॥ तिमि तिमि
होत प्रचंड अति ॥ ज्वलत ज्वाल चहुं ओर ३ चौपाई नित्या
नंद भक्त भगवाना ॥ देखि अनल अस प्रबल महाना ॥ रिंचक
हृदय धीर नहि त्यागा॥ कृष्ण सरोज चरण मन लागा १ रह्यो
प्रलीन ध्यान निजमाहीं ॥ पावक प्रबल त्रास कछु नाहीं
यद्यपि लोक नाविविध वखाना ॥ उठयो नतदपि भक्त भगवा
ना २ तव पावक चहुं ओरन जारी भई आपुनि रावपन
हारी ॥ देखहु भक्ति प्रभाव सुहावा ॥ जहि स्पर्स तृण अंग
न पावा ३ जरेन सोऊ भक्त कस जरना अहो प्रभाव भक्त
मन हरना अस प्रकार इह चरित सुहावा ॥ नित्यानंद विप्र
मै गावा ४ दोहा भाजोगीजन भक्तवर ॥ जग जढ भरथ समा
न॥जहिहरि भक्ति प्रसादतें पावापद निरबाण१ इतिश्रीभक्तविनोद
ग्रंथे भगवद् भक्तिमाहात्म्ये नित्यानंद चरितकथनं नाम सर्गः१२

॥ अथ कृष्ण चैतन्य चरित वर्णनम् ॥ दोहा ॥ अब उत्तम अस चरज प्रद ॥ भक्ति महातम चारू ॥ वरणन करहुं जथा मती ॥ अति पावन मनहारू १ ॥ चौपाई वंगदेस इकदिज वरमन्या पावन गौडवंस उतपन्या ॥ कृष्ण चितन्न नाम अस जासा ॥ भक्त सृष्टसकुल गुणरासा १ सास्वत जास भक्ति भग वाना ॥ कीन प्रसिद्ध विस्वसनमाना ॥ वेदान्तई निरत अभ्या सू ॥ गृहस्थ निपुन वरधरम विकासू २ दातापरम प्रतिष्ठतमा नी ॥ लोग उजागर नागर वानी ॥ दैव जजन संतन अनु रागी ॥ विषय विकार मारमध त्यागी ३ तृयन जूथ जुत ल लित रसीला ॥ प्रति दिन करत कृष्ण कल लीला ॥ सरता तीरकुंज विरचाई ॥ करत गान कल वंसिबजाई ॥ ४ ॥ कृष्ण रूप धृत चारु सुहावन ॥ लीला करत भक्त मनभावन ॥ अस तहि भक्ति निरत भगवाना ॥ गयो विपुल जबका लसराना ५ तब मलीनमति दुरजनकाहू ॥ भूरि प्रभाव देखिअ सताहू हृदय करत निज चिंतन सोई ॥ इह वितादि अवलंवन कोई ६ पुन कसकरत स्वसथ चितवारा ॥ हास विलासविमल व्यवहारा ॥ निसचय करहु जतन जड केरा ॥ जस इह होहिंप राहिं तस हेरा ७ साधु सृष्ट तवदोष नकोंइ ॥ कवहुं किंदंभ निर त सठहोइं ॥ तोछित पतते दंड घनेरा ॥ अवहिं दिलाउं सत्य प्रणमेरा ८ दोहा अस कहि गौन्यो भूप ढिग ॥ विनय कीनक

रजोर ॥ छित पत धूरत नगर तुव वसत दंभ रत घोर १ सो
मिथ्या उपदेसकरि ॥ प्रेरत पुर करनारि ॥ नृत्यकरावत नित्य
वित ॥ देत लोभ दुर चारि २ तहि कीने सवलोकवस ॥ निज
कछु कपट दिखाय ॥ नाम कृष्ण चैतन्य भनि वन्यो कृष्ण जनु
आय३ ॥ चौपाई ताते दंभ निरत जड़ काहीं ॥ करहु साधिसा
धननरसाईं ॥ नतरभूपसव प्रजातुमारी॥ होइहैंमोह व्यवसदुरचारी
१ अस सुनि छितपत वचन उचारा ॥ मैंइह सुन्यो भक्त सुभचा
रा ॥ चेतनकृष्णनाम पुरमाहीं ॥ जान्यो दुराचाररतनाहीं २ तुव
मुख आज स्रवण सुनिएहू ॥ उपज्यो हृदयमोर संदेहू ॥ तातें
आज रजनि तोहि संगा ॥ निज परि छिन्न वपुष करि अंगा३
तास चरित निजरूप दुराए ॥ जन साक्षात विलोकहुं जाए ॥
आनुग्रह निग्रह अधिकारी ॥ तासुदगन निजलेहुं निहारी ४अ
सकहि कर धूरत कर संगा ॥ चल्यो भूपमन मोदउमंगा
॥ दूर हिंलुपत आय जव देखा ॥ अदभुत चरित
दगन तव लेखा ५ भक्ति प्रसादनवल कछु सोभा
॥ देखिस भूप परम मन लोभा ॥ धूरत कहं प्रति कूल दिसाए॥
अरन नयन कछु भृकुटि चढाए ६ दरचक्रादि चिह्नभुजचारी
॥ तेविचित्र अस रूप निहारी ॥ मोहव्यवसभाषतअगगेहू ॥ द्वैभु
जभयो चतुरभुजएहू ७ प्रकट्यो कपाटिमहाप्रभुआजू ॥ जोरिस
रित तट त्रीयनसमाजू ॥ जवदुरमति अस वदन वखानी ॥ क
रन नष्टनिज अनु चितवानी ८ तव सनमुख नरनाइकरवंडा ॥

भयो सफुटत दुष्ट ब्रहमंडा ॥ मृतवसभयो तुरत विथताना ॥ त
वसंदिगधभूप विसमाना ९ चेतन कृष्णललितछबि सोहन ॥ दे
खनलागमुनिन मन मोहन ॥ द्वैभुज पुंडरीक वरलोचन ॥ स्याम
वरणमदमदन विमोचन १० वदन प्रसन्ननादत वंसी ॥ आवृत
रमनिरुचिर गतहंसी ॥ दौभुज मनुज रूपछव भाती ॥ असदेख
नरनाथपदाती ११ प्रेमभक्ति मानससरसाई करतप्रणामदंडवतराई
॥ तेमृतधूरतकरततकाला ॥ चले लिवाय नगर महि पाला १२
दोहा आपुआय निजभवन जब क्षित पत परम सुजान कल
नपस्योअसचरजवस ॥ सोचतरयनसरान ॥ १ ॥ चौपाई
महिषी कहंसब कथासुनाई भोरहिं बहिर भवन नृप आई
॥ पंडित सचव वृद्धसमुदाई ॥ भृतपठायसब लीन बुलाई १ चे
तनकृष्णनिकट जिमिजाना ॥ कृष्णरूपकलदरसनपाना ॥ धूरत
वाक्यमरन जिमितासा ॥ नृत्य गीत त्रीय प्रीति विलासा २ म
नुज रूप भुजजुगलपदाती ॥ इत्यादिक सबदेखनराती ॥ तिनस
नकथनसकलनृप कीना ॥ भएसुनतविसमयसब लीना ३ जा
नि कृष्ण कहं कृष्ण समाना लागे वदन प्रसंस न नाना तब
बोल्यो नरनाथ विचारी जो संमति अस होहिं तुमारी ४ तो सि
प वनहिं सकल हमतासा अस प्रकार जब भूप प्रकासा करिसू
इकार सकल चलि आए कृष्ण स्वामि कलभवन सुहाए ५
भक्ति प्रमोद प्रेम सरसाई प्रथम चरन नंमृत सिरनाई पाछे भूप

जुक्त जुग करना सादिर सों वृतांत सब वरना ६ बहुरि कीन असविनय सुहाई हम अजान मूरख समुदाई तुव उदार जन उधरन हारे क्षमहु देव अपराध हमारे ७ आए सदन तोर अब स्वामी हमहुं जानि चरनन अनुगामी श्रीमुख कछु उप देस सुहाई हृदय हमार हरन दुरताई ८ भव पयोधि अति विकट महान्यो हम ताहि देखि दैव कदरान्यो गुरु कृपाल अब तुमहुं अधारा करहु जानि निज सेवक पारा ९ नारि सदन सुतसं पति मोरे दीन नाथ सब अरपण तोरे अस निज विनय वदन सब कीने चेतन कृष्ण चरण गहि लीने १० दोहा भाषित भक्त प्रधान तब वासतव भेद न कोय गुरु सिष भ्रम संसार मध कथन मात्र सब होय १ चौपाई तद्यपि हित तुमार अवि लोकू तुम कहं करहुं भक्त गत सोकू अस कहि कृष्ण मंत्र जग पावन तिनहिं कीन उपदेस सुहावन १ पाय भूप संजुत अस सोई रहे सि कृत्य कृत्य सब होई कृष्ण स्वामि तवनीति उचारी सुनहु नरे स भक्त वृत धारी २ धरम पतनि जुत राज सुजाना करहु दंभ वरजत अभिमाना प्रजासंत सज्जन अनुसरहों दान दयादि करम सुभकरहों ३ अरपण मोर जवन वितकीना इह सब देहु अतथि जन दीना आन भरोस सकल परिहरहीं एक कृष्ण कल सुमरण करहीं ४ गुरुन देस अस सुखद सुहाई भयो नरेस कृतारथ पाई वार वार चरणन सिरनाए चल्यो भवन सुभ आसिष पाए ५ इत चैतन्य कृष्ण अभिरामा सेवित दान भूप सनमाना कीन

विभगत संतु जन काहीं आपु विरक्त भक्त मन माहीं ६ कृष्ण चरित गुण गान रसीला भयो निरंत्र निरत कल लीला ब्रह्मा नंद मगन दिन राती भक्त प्रधान भक्ति इहि भाती ७ करि प्रसिद्ध कल मानस भावन कीन्यो वंग देस सबपावन अजहु जास परासिष सिष जोंई करत कृतारथ लोगन सोंई ८ दोहा अस इह कृष्ण चयतन्य जग भक्त कृष्ण भगवान जोलो रहे सधरण तल सकल लोक हित मान १ करत रहे उपकारसुभ अंत तजत निज काय कृष्ण कृपातें कृष्ण भए देंस दिसन जस पाय २ इति श्री भक्त विनोद ग्रंथे भगवद् भक्ति माहात्म्ये कृष्ण चैतन्य चरित कथनं नाम सर्गः ॥ १४ ॥

॥ अथ सूरदास चरितम् ॥

दोहा करन विमल मन हरण तम दमन त्रिवध दुख दोष भक्ति महातम करहुं कल कथन ललित प्रदमोष १ नासन कुमति कृतंत भय भासन भानु प्रबोध सुमति विकासन भक्त जन दलन मदन मद क्रोध २ चौपाई कृष्ण देव जब जनन उवारा मथुरा लीन ललित अवतारा कीए कृपाल चरित जसचारू सो मन हरन विदत संसारू १ तब जादव इक भक्त प्रवीना कृष्ण सरोज चरण मन लीना सूर सयन वर वंस उजागर उपज्यो भक्त सृष्ट गुण सागर २ सखा पुनीत मीत ब्रत धारी मन वच करम कृष्ण हितकारी ॥ जब मथुरा तजि करत प याना ॥ द्वारावती आय भगवाना ३ ते किमि चंचरीक वड भागी ॥ सकहिं सरोज चरन प्रभु त्यागी ॥ भक्ति प्रेमकलनव ल उमंगा ॥ आयो दीन दयाल कर संगा ४ जद्यपि आनंद भवन प्रसादू ॥ तांके तहां सुलभ सब साधू ॥ पैनिवास वृंदाव न चारू ॥ विहरन कुंज गालिन मनहारू ५ कृष्ण संग नित नबल विलासा ॥ सो न पलक कल विसरत तासा ॥ तन म थुरावृंदावन मनुआं ॥ लग्यो रहत निसि दिवस अननुआं ६ कारि स्मरणकल कुंजनसोभा ॥ होत प्रबल जीयजादव क्षोभा प्रभुसन वारवार असवरनी ॥ नंम्रत विनय दिवस निसि करनी ७ कृपा नकेत जनन सुखदाई ॥ तुवसन कवन दिवस सुभजा ई ॥ सुचि भंडीर विपन मन हरना ॥ रविजा कुंज सन ख

नग धरना ८ आन ललित लावण्य तनीके ॥ देहुं दैव परम प्रीय जीके जब लग जीयन नाथ संसारा ॥ सो प्रमोद किमिविसरन हारा ९ अस प्रकारउत कंठित रहना ॥ वृंदाविपुन आहिर निस कहना ॥ काल पाय तब भक्त उवारा लिए संग जादव परिवारा १० दोहा करिकौतुक करुणा यतन निज विकुंठ कलधाम ॥ गएगमन करि भमनमुद ॥ रमा रमन अभिराम १॥ चौपाई तेजादवहरि भक्त सुजाना तहांपि जोरि जुगल निज पाना ॥ वृंदावन दरसन नुरागा ॥ नंम्रत विनय करन असलागा १ चलन होहिं तुव दीन सनेहू ॥ कब कृपाल वृंदावन तेहू ॥ सो प्ररण्य कल कुंज सुहाए ॥ दीन नाथ मोरेमनभाए २ विसरत सोन भक्त सुखदाई ॥ एक वार प्रभु देहु दिखाई ॥ तासुकथन सुनि त्रिभुवनराई ॥ बोले वदनबचन मुसकाई ३ सुनहुं मीत पूरव वतताहीं ॥ मोरगवन वृंदावन माहीं ॥ अवन होहिं पय भक्त सुजाना मैपरिवार सहित निजनाना ४ कुंज कुंज राधा जुत चारू ॥ तहां निवास करहुं मन हारू ॥ तेमथुरा वृंदावन जोई ॥ जन वैकुंठअधिक पृय मोही ५ जबतें तज्यो मनोहर नगरी ॥ कलितकुंज लीला निज सगरी ॥ तबतें जद्यपि मोरसुहावा ॥ इह वैकुंठ अखिल सुख छावा ६ तद्यपि ताहि समान सुभदाई ॥ उपज्यो नहिन तनक सुखभाई ॥ जिमि वारा निसिसंकर का

हीं ॥ विदत विस्वप्रीय मानस माहीं ७ तजत नतासु दैवत्रिपु रारी ॥ तिमि मथुरामोहिप्राणनप्यारी॥ अजहुं स्मरणहोत मन भाई ॥ ललित बाल लीला सुखदाई ८ दोहा मृतका भक्षण ॥ पूतना ॥ शकट विभंजन मित्र ॥ अरजुन जयमल मदहरन ॥ अघवक वदनचरित्र १ काली मद क्षय करन पुन ॥ मोहनल नभवदेन ॥ वृंदावन वंसिवजन चरन चारु वरधेन २ धयनक वधन प्रलंभ पुन ॥ त्रिणा वरत वस काल ॥ वृंदावन रक्षा करन ॥ नगनख धरण रसाल ३ रचन रास लीलादि पुनि वचन सखन सखि संग ॥ केसि विध्वंसन नंद फल ॥ त्रातनह दय उमंग ४ दावा नल कर समन पुन ॥ ग्वालन सन मनच उ वनवन विहरन सजन सुन ॥ हनन कंसारिपुराउ ५ जननि जनक बंधन मुकत ॥ चरित चारुइत्यादि ॥ जबजब होतस्मरण इह उपजत हृदय दुखादि ६ चौपाई सदा रहत मानस उतकंठा ॥ तजि निजरु चिर धाम वैकुंठा ॥ पुनि कववपुख पूरव वतधारी ॥ अदभुत करहुं चरित मनहारी १ जेजन भक्ति निरत वडभागे ॥ मोरप्रेम पावन रस पागे ॥ हृदय कुतरक कपट सब खोई ॥ मोररुचिर लीलाकृतजोई २ जथाविधान रास विरचाई॥ गायनस्त्रवण कर हिंमनलाई ॥ सोसाक्षात विस्वसुभचारी ॥ मोरसरूपभक्तव्रत धारी ३ मथुरा धारि जनमत्रीय जोई ॥ मोरलालित उतसब परहो ई ॥ सोमोहिजसुमतमातुसमाना ॥ सुनहुआन अवभक्त सुजाना४

जैनरमोरजनम दिनलेखी ॥ धारिहचिर वृतभक्तिवसेषी ॥ बालरू
पमम पूजन करहीं ॥ आवागमन सहज स्रमहरहीं ५ कारि प्रवेस
मथुरापुरि माहीं ॥ जोजनकराहिंरटनमोहिकाहीं ॥ भक्तिमोर सूइप्रा
णनप्यारू ॥ तांकरतरण सुगम संसारू ६ अबतोहि जोपि भक्त
वडभागा ॥ मथुरागवन प्रीति अनुरागा ॥ तोअब सुनहुकथनक
लमोरा ॥ संततभक्त सृष्ट हिततोरा ७ जहितें तहांसजन तुवजाईं
सोऊलेहु सुखकी रतिपाई ॥ असकहि कृष्णदेवभगवाना ॥ लागे
तासुप्रबोधनज्ञाना ८ कलीकाल संध्या अबसाना॥ मथुराप्रांत भ
क्तगुण खाना ॥ सुभ्रत विप्रवंसउपजाई ॥ मथुरामोर ललित पु
रि आई ९ मोरजनम लीला गतपारू ॥ करत करत गायनब्र
तधारू ॥ सोउअखंड सुजससुख जोई ॥ होहिं भक्तजनप्राप
त तोही १० बहुरि मोरलीलामन भाइन ॥ प्राकृतपदन सफुट
जबगायन ॥ कीनतुमहुं संगीतप्रकारू ॥ सुभ्रतललित प्रेमरससा
रू ११ सुनतलोक कलिकाल मझारा ॥ हुइहैं भक्तिनिरतसंसा
रा ॥ वढहिं मोर चरणन अनुरागा ॥ उधराहिं तुवप्रसाद वड
भागा १२ पैतुवजनमअंध दृगहीना जननिजनकअसदेखिप्रवीना
दोहा पालहिंजनसामानकछु ॥ सुनसनेह वसतोहि आनसक
बांधवसुहृद ॥ सोनकराहिं हित कोइ १ चौपाई केवल जन
निकराहिंतुव सेवा ॥ असकहि वदनभक्तद्रुमदेवा ॥ भए विरामकृ
ष्ण घनवरना ॥ तवप्रणामकरि जादवचरणा १ कलिसंध्याकर

अतप्रवीना ॥ सोचन लग्यो भक्तिमन लीना ॥ सोजबसमय आव
निय राना ॥ तजिविकुंठ जादवगुणखाना २ मथुराप्रांत विप्र
वरगेहा ॥ भाउतपन्नभक्त हरिनेहा ॥ जनम अंधदृगज्योतिवहीना
जननी जनक कछुहरखन कीना ३ रहेमोनबांधवसमुदाई ॥
कराहिं प्रीतिकेवलइकमाई ॥ अष्टवरषकरजानि सुहावा ॥ ज
ज्ञोपवीत जनकतबपावा ४ भयोप्रसिद्ध नगरअभिरामा ॥ सूरदा
सतांकर असनामा ॥ अवसरएक मातुपितुसंगा ॥ आनलोकपु
रप्रेमउमंगा ५ कृष्णजनम पुरि दरसनलागी ॥ आएसकल
सदन निजत्यागी करिजात्रा विधिवत अनुरागे ॥ जबनिजस
दन चलनसबलागे ६ सूरदासतव कहतउचारी ॥ मैंअवइहां
सदननगधारी ॥ कछुदिनकरहुं ललित निजवासा ॥ कृष्णप्रसाद
विगतस्रमत्रासा ७ तुवनिजगवहुं सदन सुभकाहीं ॥ चितामोर
करहु कछुनाहीं ॥ सुनिअसजननि जनकताहिवानी ॥
सुत सनेह निज मानसमानी ८ रुदनकरत असवदन
उचारे ॥ वतस अंधदृगजुगल तुमारे ॥ कराहि कवन
भोजनपटदाना ॥ सिसुनिदान तुवदेस विराना ॥ ९
कस ताजि जाहिसुवन पितुमाता ॥ काहुनदेखि परत तुवत्राता ॥
सुनि अस जननि जनक मुखबानी ॥ कृष्णभरोस सूरजीय मानी
१० दोहा बोल्यो अभय प्रसन्न मन ॥ वदन वचन सुखदान ॥
तुव जिय करहुंन सोचकछु ॥ मोहिव देसअस जान १ चौपाई

मोरे कृष्ण देवभगवाना ॥ करन हार कलपालन त्राना ॥ अंध
दीन बलहीनन कोहीं ॥ पोषण करत दैव प्रभुसोहीं १ सरन च
रण दुखहरन करीके । परे कोटि असमोर सरीके ॥दीनबंधुज
न दीननपाला ॥ दीनन।थ प्रभु दीनदयाला २ दीनहरन भयदीन
उवारन ॥ दीनसुखद दुख दीन निवारन ॥ अस प्रकार जब दी
न सहाए ॥ विदृत पुराण वेद स्रुति गाए३ मोरेकसन होहिंतब
मय्याजानि दीनदृग हीनसहय्या॥ तब अस सुनत वचन वरताहू
साधुजठिर दाया वसकाहू ४ बोल्योसूर मातु पितुकाहीं ॥ तुव
नकरहुचिंता जीयमाहीं ॥ हरषिजाहु सुभ्रत निजगेहू ॥ तुवदृग
हीनबालवरएहू ५ मोरेवसहि सदब सुखमानी ॥असकहि गहत
संत सुभपानी ॥ चल्यो प्रसन्न लेतकुलभवने ॥ उत पितु मातु सद
ननिज गवने ६ साधुसनेहप्रीति अविलोकी ॥ भई प्रसन्न मातुग
त सोकी ॥ सूरदास मानस अनुरागा ॥ प्रमुदितवसन संतग्रहला
गा ७ पूरवचरित कृष्ण कल गायन ॥ रह्यो सुनत सादिर मनभा
यन ॥ आपु प्रेम जुतभक्ति उमंगा ॥ वैष्णव संतजनन करसंगा ८
नृत्य गीत गायन करि चारू ॥ कृष्णचारित्र विमलमनहारू ॥ प्रभु
अदभुतलीला जिमि कीनी ॥ आदउपांत स्रवण करिलीनी ९ ता
सुप्रसाद कृष्ण भगवाना ॥ सो पूरवसंचित निजज्ञाना॥ अनुभव
भयो विदित सबभास्यो ॥ दैबचरितलीलाादि विलास्यो१० दोहा
भयो छकत उनमत्तवत॥ प्रेमासुवकरि पान ॥ कृष्णचरित पदनव

लनितनिज विरचत रुचिमान १ चौपाई अस प्रकारकृतनवल सु
हाई भक्तसृष्ठकल कुंजनजाई ॥ करिप्रति दिवस मधुरस्वरगायन॥
भयोकृष्ण पदभक्तिपरायण १ मथुरा निवासि सुजससुख लययौसूरवि
दतसब देसनभययौ ॥ निरमत तासललित पदपावन॥ संस्मृतिगाय
लोकमनभावन २ वैष्णव भए भक्ति रतनागर॥ भक्तप्रधान सुजस
वणसागर ॥ सूरदास हरि गुणगणगाते ॥ जहं जहं फिरहिं भक्ति
मदमाते ३ तहं तहं भक्ति व्यवस अनुरागे ॥ पाछे फिरहिं तास
प्रभुलागे ॥सूरचरित पाछिलभगवाना ॥ ग्वाल केलि बन धेनुचरा
ना ४ निजअनुभव इत्यादि सुहाए ॥ देखत रहत भक्ति सरसाए॥
ब्रह्मानंद मगन दिनराती ॥ प्रेमभक्ति कछुकहीनजाती ५ दोहा ए
क दिवस मारग चलत ॥ विधुनकूपकलकोय॥ दृगवहीनचीन्यो
नकछु लग्यो भक्तच्युतहोय १ चौपाई तवभगवान भक्तरखवारे ॥
अद्भुतगोप वैस निजधारे ॥ गाहितकरन करतुरत मुरारी भक्तकूप
चुतलीन निवारी १ करिकरहरण त्रासकरकेरा सूरसपरसलेतजीयहेरा
इह कर जानिपरत नरनाहीं ॥करि विचार करुणा निध काहीं
२ करते लीन पकरिकरसंगा ॥ कहिस वचन मन मोद उमंगा
अवन तजहुं विनु सांच वखाने ॥ तव भगवान बदन मुसकाने
३ सूर करन कर करिवर जोरा ॥ चले छुडाय भक्तचित चोरा ॥
अस जीय जानि दैव चतुराई ॥ ब्रह्मानंद सूर सुखपाई ४ मा
नत भयो भूरि निजभागा ॥ करसों करकृपाल जवलागा गद

गद गिरा प्रेम दृग बारी ॥ बोल्यो वदन वचन मन हारी ५
वंदहुं बार बार प्रभु तोही ॥ जोअसानिबल जानिजीय मोहीं ॥
केसी कंस असुर मद गंजा ॥ लीन छुडाय सबल कर कंजा ६
दोहा काह भयो करतें छुटे ॥ करन धार भवसिंधु ॥मनतैं छूट
न कठिन जन ॥ भक्त कुमुद उर इंदु १ अब तो बल कर तोरि
कर ॥ चले निबल कर मोहि ॥ पै मनतें टूटों नजब ॥ तब दे
खों प्रभुतोहि २ चौपाई सुनि कटाक्ष मय वचन सुहाए ॥ सूर
दास कर प्रभु मन माए ॥हरषे दीन दयाल भगवाना ॥ कीन
स्परस दृगनताहि पाना १ ततक्षण अंध नयन जुगतासा॥ अम
ल विमल कल जोति प्रकासा ॥ पाय दिप्ति अस सूरसुजाना ॥
सनमुख कृपा सिंधु भगबाना २ कलित कंज लोचन घनवरना
आनन हृदय भक्त तम हरना ॥ चारु लिलाट खोर श्रीखंडन ॥
माल जयंति जनन मन मंडन ३ जज्ञोपवीत पीत पटराजा ॥
निज छवि कोटि मदन मद लाजा ॥ चितवनि चारुमुनिनमन
मोहन ॥ धृत गोपाल वेसवन सोंहन ४ मूरति विमल बाल ब
ल भय्या ॥ निरत प्रवर परचारन गय्या॥ सूरविलोकि रूपमन ह
रना ॥ पस्यो दंडवत चरनन धरना ५ सुमरि कृष्ण जब सीस उ
ठाया ॥ कीन तुरंत मुगध प्रभुमाया ॥ जानत भयो सूरमन मा
हीं ॥ गोप बाल नद नंदन काहीं ६ लग्यो वहुरि अस वदन
उचारन ॥ तुमहुं कूप चुत कीन निवारन॥ भयो सहायअंधत कि

मोरा ॥ अहो कीन उपकार नथोरा ७ वंदहुं वारवार अव तोही कोन्यो कूप त्रास गतमोहीं ॥ अव वृंतात निज देहु सुनावा ॥ कहिते आव कवन कितजावा ८ मोह व्यवस्स अस तासु निहारी बोले गोप वेस गिरधारी ॥ मथुरा वसहुं गोपसुत भय्या॥ आवा विपुन चरन हितगय्या ९ तोरे देखि भक्त दृग हीना॥ उहां नि वरण कूप च्युतकीना अव तुम जाहु सदन सुखमाना ॥मै इतक रहुं विपन निजप्याना १० दोहा अस कहिबतसलभक्तप्रभु ॥कृष्ण दलन दुख कूर ॥ द्रुमन ओट करुणायतन॥ गए कछुक जवदूर १ चौपाई तव दरसन हित सूरसुजान॥ पाछिल चल्यो वेगअ कुलाना ॥ गवन्यो कहां वाल मृदुअंगा ॥हरण ललित छविको टि अनंगा १ इत उत फिर हिं विथत मन माहीं ॥ आवत दृष्टि वाल प्रभु नाहीं ॥ अतिसि कलेस सूर तव पावा ॥ पूछत पथक देखिजितआवा २ को अस वरन स्याम मृदुचारू ॥ वेत्रपानि ग य्यन चरवारू ॥ कामर कंध माल वन सोहा ॥ देखातुमहु बाल मनभोहा ३ सुनि ताहि कथन पथिक इहि भांती ॥ इह कसक हत कवन तोहि भ्रांती ॥ इहां नकाउ धेन वनचारी॥ जाहु सज न निज सदन सिधारी ४ सूर सुनत अस पथक वखाना ॥ आग लचल्यो विपन विसमाना॥ खोजत नील जलधवत वरना ॥ गो पवाल कानन मनहरना ५ भ्रमत भ्रमत दारुण स्रमपाया ॥ बै ठयो अंत विथत द्रुमछाया ॥ तोलोदुरयो सूर निसि छायो ॥ भक्त

सूरव्याकुल उठिधायो ६ जहं तहं लग्यो भ्रमन वनमाहीं ॥ खो
जतगोप बालमृदु काहीं ॥ गति अनन्न अस भक्तजुडाना ॥ भात
दरूप कृष्णभगवाना ७ पावन भक्ति प्रीति मनमाहीं ॥ ताजि नजा
हि कानन पुरकाहीं ॥ तवनिसि स्वपन रूप मृदु सोई ॥ देखे दि
वस गोपसुत जोई ८ मंदहासजुत भक्त सहय्या ॥ वोले वदन व
चन सुखदय्या ॥ इहांनभक्त गोपसुत कोई ॥ मैहुं कीन कौतुक
कलसोई ९ कीन्यो तुमहिं कूप चुतवारन ॥ वनतगोप वन गय्य
नचारन ॥ ज्योति विमल तुवदृगनप्रकासा ॥ भक्त सृष्ठसव मोरावि
लासा १० तुव नयनन इन लीन निहारी ॥ मोर सरूप भक्त व्रत
धारी ॥ तुव हित देन दरसमनहारू ॥ इह मैकीन चेष्ट निजचा
रू ११ दोहा अव मथुरा तुवगवनकारि मोरचरित गुणगान
करि गायनभव पूर्ववत विचरहु अभय सुजान १ चौपाई सुनि
प्रभुवचन सुखद अभिरामा ॥ सूर दंड वत करत प्रणामा ॥ बो
ल्यो आज धन्य जगदीना ॥ जहि इनदृगन दरस प्रभु कीना १
मुनि जोगिनसुर दुरलभ जोई ॥ मोरे सुलभ आज जगसोई ॥अ
बनदेव कछु संसृति कामा ॥ एकस्मरण तोरअभिरामा २ ॥
मोरे हृदय लालसा छाई ॥ विसरहिं सोन भक्त सुखदाई ॥ अ
रु तुमार माया बलवाना ॥ करहिंन मोहि सुगध भगवाना ३ हेकृ
पाल कल कमल विलोचन ॥ हृदय भक्त जन सोच विमोचन
जिननयनन अस रूप तुमारा ॥ मै प्रतक्ष प्रभु लीन निहारा ॥ ४

तिनसन जगत विलोकन काहीं ॥ दीन दयाल मोरे रुचिनाहीं ॥
ताते करहु पूर्व वत मोरे ॥ दृग वहीन वंदहुं प्रभु तोरे ५ तुव स
रूप नित दीन सनेहू ॥ देखत रैहुं दिवस निसि एहू ॥ करि अस
बिनय वदन अनुरागा ॥ भयो विराम सूर वड भागा ६ वोले
कृष्ण भक्त चित चोरा ॥ सूर कथन सब संतत तोरा होहिं सत्य
संसय कछु नाहीं ॥ भाषि वदन अस त्रिभुवन साईं ७ भये लुपत
प्रभु भक्त उवास्यो ॥ उठे सूर जन स्वपन विचास्यो ॥ जुगल
अंध लोचन निजपायो ॥ प्रभुपद सीस मनहिं मननायो ८ निज
कलपत पदपावन चारू ॥ लग्यो करन गायन मनहारू ॥ उदय
अरन तजि विपन सधाए जमना तीर भक्त बर आए ९ करि स
नान गुणगण प्रभुगाते ॥ मथुरा आय भक्ति मदमाते ॥ भजन प्र
भाव देखि अधि काई ॥ सादिर करहिं लोक सिवकाई ॥ १०
दोहा सबकर हितजीय मानि निज ॥ दिज विरक्त संसारु ॥ रट
नकृष्ण गुणगण निरत॥ सूरभक्त व्रत धारु १ चौपाई अव सरएक
मलेछ सुहावा ॥ विदत दलीस लोक सब गावा ॥ संजुत भक्ति
प्रीति हरषाए ॥ ताससूर जन लीन बुलाए १ आवत देखि
भक्त अभिरामा साह कीन उठि दंडप्रणामा सादिर सुचि आसन
बैठारे भक्ति पूरवक वचन उचारे २ तुव जादव प्रभु लोगन गाए
भक्त कृष्ण भगवान सुहाए ॥ मोर प्रश्न कर दीनसनेहू देहु
उत्र उरहरहु संदेहू ३ सदन मोर प्रभु अगनितभामा एकतें

एक सरस अभिरामा ॥ तिनहुं मध्य जादव कुलवारी ॥ ऐहिं कोऊ किन भक्त मुरारी ४ सुनि दलीस अस कथन सुहावा ॥ सूर बदन अस वचन अलावा ॥ सुनहु धरण नाइक वड भागी करहुं कथन कछु तुव हित लागी ५ जिहिंतें तोर मनोरथ एहा ॥ अबहिं होहिं फुर विगतसंदेहा ॥ इह तुमार संकुल वर नारी ॥ तुमहिं देखि पुनि मोहिं निहारी ६ क्रमतेंएक एक अस आई ॥ करहिंगमनइत मारगराई ॥ तिनहुंमध्य तव कर त्रि, य जोई ॥ सो निजमकुच लाज सब खोई ७ मोहिसनकरहिं रुचिर संभाषा ॥ होहिं तुरंत बहुरिमृत तासा ॥ साहसुनत अस दीनरजाई ॥ महिषी सुनत सकल चलिआई ८ एक एक करि नंम्र प्रणामा ॥ चली जात भामन निज धामा ॥ आई एक सवनतेंपाछे ॥ पति प्रिय रूप ललित गुण आछे ९ दोहा निरखतसनमुखहरषवस ॥ कहिसवदन मुसकाय ॥ काहितें कीन अगमनतुव ॥ मोरमरमकछुपाय १ चौपाई देखतकहिस सूर तहि ओरा ॥ सुखे मोहि मरम सब तोरा ॥ भामन सुनत चरन गहि लीने ॥ देखत सबन प्राण तजिदीने १ महिषी आन देखिअसतासा ॥ लागी रुदन करन संभाषा ॥ साहुबिथत मानस बिसमायो ॥ धरत धीर पुनि वदन अलायो २ वंदहुं वार वार अव तोही ॥ भगवन करहुं कथन सब मोही कोइहरहीभवन मम भामा जहि अस तज्यो वपुषनिस कामा ३ तब पूरवतहि कथा

सुहायन ॥ लागे सूरदास मुखगायन इह मथुरा पुरिवसाहिं सुहाई ॥ वारवधूसबलोगन गाई ४ हाव भावकल निरत परायण॥ कलाप्रवीन परम कटु गायन ॥ सभा महिंद्र धनकजनजाई॥ निज प्रभाव गुण लेत रहाई ५ काहुधनडचकाल सुभ पायो॥ पानिग्रहण निज भुवन रचायो ॥ इहि कहं पठयो बोलि सनमाना लाग्यो होन नृत्य कलगाना ६ करि निज कला ललित चतुराई ॥ मूर्छित सभा कीन समुदाई ॥ तव कोऊआन देसकरराई इहि नृतगीत देखिचतुराई ७ निज पुर गयो लेत हरषाना ॥ पावा तहां विविध सनमाना ॥ एक दिवस रत नृत्य अगारा ॥ देखिसरुचिरधरनपति दारा ८ सजि स्रंगार आभरन सोहन॥ ठाडी मनहुमान रति मोहन ॥ चारि ओर परिवारतदासी ॥ सेवइ सुखद रूपगुण रासी ९ असप्रभाव दग देखि सुहावा ॥ तहि करहृदय मनोरथ छावा ॥ हमहुं होवइहि समकसरानी असविचारि मानस सकुचानी १० इन कर भूप पुण्य संसारा ॥ हमहुं अधम धिगजनम हमारा ॥ पुनिदेखिस छित पत पटरानी ॥ देत दान दीनन रतिमानी ११ दोहा धन भूषण पट भक्ति जुत ॥ करत सकल सिवकाई ॥ अतिथि संत आवत सदन ॥ भोजन देहुं जिवाई १ हमहुं करव यदिपुण्य अस ॥ कहत गुणत जियमाहिं ॥ तो पावहुं संशय नहीं ॥ भूप पतनिपद काहिं २ चौपाई अस प्रकार पावनसुभ तासा ॥ ललित दान

रुचिर हृदय प्रकासा ॥ तब तहिं दैव योग कर आई ॥ ज्वररुज उपज प्रवल दुखदाई १ पुनि पंचत्यभाव कहंसोई ॥ प्रापतभ ई व्याधि सब खोई ॥ धरमदूत रौरवतहि डारयो ॥ तहांभोग निज कृत अगसारयो २ सुरपुर गवनि बहुरि हरखाती ॥ अपसर नृत्य गीत कलराती ॥ मथुरा भवन भवन भगवाना ॥ जोनृत गीत ललित पुणगाना ३ कीनासि भक्ति प्रेम सर साए ॥ तहि परि धाम अमर पुरपाए ॥ अरु उपकार देखि नृपरानी ॥ जोतहिहृदय दान रुचि मानी ४ ताहि प्रसादभवनतुव आई ॥ भोगे विविध भोग सुखपाई ॥ आ जविदत देखत तुवएहा ॥ मृतवसभई तुरत तजिदेहा ५ पै जा दव वंसी त्रीय जेहू ॥ रहीसोदैवरूपसबतेहू॥ कौतककरनदैवपुर त्यागी आई धरणिकृष्ण अनुरागी६गवनीबहुरिअमर पुरकाहीं रही सोमनुजरूपकछु नाहीं ॥ अस कहि सूरदास हरषाते ॥ मां गि विदाय भक्ति मदमाते ७ तब दलीस सादिरधनदीना ॥ भक्त सृष्टपूइकारन कीना ॥ हमरे नाहिनद्रब्यकछुकामा ॥ तबदली सवरणन अभिरामा ८ धरयो सीस नंमृत करजोरी ॥ विनय वद न कछु कीननथोरी ॥ चले सूर तबहोत विदाए ॥ हरषतकृष्ण ललित पुरआए ९ अगनित विमलभक्ति सरसावन ॥ विरचत कृष्णचरित पदपावन ॥ रहेकरतगायन संसारा ॥ सकल लोक हित हृदय विचारा १० पदन प्रबंधसूर जन नागर ॥ बाध्यो

जनहुं सेतु भव सागर ॥ विनु प्रयास कलिकाल मझारा ॥ तहि प्रसाद उतरत सबपारा ११ दोहा सूरसूरसमविदतजग सकलक विन सिरमोर ॥ सूरस्यामजहि भक्ति वस ॥ भएभक्त चितचोर १ जोलों विचरें धरणातल ॥ पलन विसारेस्याम ॥ भए अंतअलचर नकल ॥ कंजकष्णअभिराम २ इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथेभगवद्भक्तिमाहात्म्ये सूरदास चरित कथनंनामसर्गः ॥ १५ ॥

अथ हरिव्यासचरितवर्णनम् ॥ दोहा ॥ भक्ति महातम ललि
ततर करहुँ कथन अवखान जास सुनत मिट जातसव ॥ मो
ह मदन मदमान १ चौपाई विदत व्यास हरिनाम सुहाए ॥
भक्ति प्रवीनभक्त हरिगाए ॥ तीरथचारुनगर पुरग्रामा ॥ करत
प्रजटन भक्त अभिरामा १ चिंतावलीनाम थलकाहू ॥ सिष
समेत मानस उतसाहू ॥ आएतहां भक्त गुणधामा ॥ देखि एक
कल सुभ्रअरामा २ कसलय द्रुमन सरद घनछाया ॥ तहांविस्रा
म भक्त वरपाया ॥ विमल तडागसलिल कलकंजा ॥ चलत
चारुवरतृवध प्रभंजा ३ सुमनसुगंधि उमाघिचहुँओरा ॥ अलिग
णकयक कीर कल सोरा ॥ भक्त प्रवीन देखि अससोभा ॥ मनहुं
वचित्र अमरमन सोभा ४ सिषसनकहतवदनमृदुवानी ॥ तुवइत
रचहु पाकसुखमानी ॥ मैपुनीतवरवारिअनाई ॥ करहुंदेवपूजनसु
खदाई ५ असकहिवाम ओरजबदेखा ॥ भगवति भवन ललित
सुभलेखा छाग मेख बालिदेत लुकाई ॥ अस अविलोकि भक्त
जदुराई ६ अति दायारत विथत दुखमानी ॥बोले वदननम्रवत
वानी ॥ अहो मधुरहव्यादिसुहावन ॥व्यंजन दिव्यपाककलपावन
७ परिहारिदेत अमुखकसदेवी ॥ जेसब भूतचराचर सेवी ॥
करिहिंसाजीवन अगधामा ॥ चाहतरुचिर विस्व फुरकामा ८
अनहित तेहित लेहि अभागी ॥ अस कुकरम करि भगवतिला
गी ॥ पाय सादि बलि ललित सुहाई ॥ कहत भक्त कसदहुने

भाई १ जब अस कथन कीन हरिव्यासा ॥ लागेअधमकरन परिहासा ॥ सनमुख भक्त गहित आसि करना ॥ डास्यो काटि सीस अज धरना ॥ १० दोहा अस देखन द्दग व्यास हरि ॥ कीनसि हाहाकार ॥ भए दुखित दाया व्यवस हरि हरि बदन उचार १ चौपाई क्रोध विथत अस सिषहि व खाना ॥ अवन उचित भोजन जलपाना ॥ जग जननी कहं आ अरझाई ॥ बदन विवध विधि असतुति गाई १ निस अपराध जीव इनमारन ॥ तात विदत करि रुचिर निवारन ॥ पाछेपाक करन कछु होई ॥ अस कहि बदन भक्त वरसोई २ दीन जीव हित हृदय विचारी ॥ असस्तुति लग्यो करन मनहारी ॥ हेसुर असुर नाग नरसेवी ॥ हे जग जननिजनन सुखदेवी ३ दोहा महिषासुर मद हरनि भव ॥ चंड मुंड क्षय कारि ॥ सुंभ विध्वं सनि समरस्त्री ॥ शक्तिचक्र कर धारि १ गहव्याछंद ब्रह्मचारि निसयल पुत्री गौरिवज्जर धारिणी ॥ लक्ष्मी पदमा सुरी कोमा रि दूख निवारणी ॥ खडग धारिणि वाहनि मृग भैरवी अग भंज नी॥ कालका छत्रे सुरी ॥ अष्टादसी खल गंजनी १ सिंहवाह नि भगवती ॥ भवने सुरी मातंगिनी ॥ विध्यवासिनि नारसिं ही ॥ भारती भव भंजनी ॥ स्त्रीधरी साकंबरी ॥ मूले स्वरी ललि ता उमा पापनासनि मुक्त केसी॥क्षेचरी रकता रमा २ दोहा अ बतें भक्त प्रमोदनी पायसादि बलिमात ॥ लेहु कृपा करि रुचिर

तित ॥ दीन जीव तजिघात १ चौपाई जो तुव असन कीनज न पाली ॥ तो मैं काटि सीस निज काली ॥ देहुं मात तुव सनै मुखडारी ॥ अस प्रकार निज वदन उचारी १ सिष समेत परि हरि गति आना रह्यो करत सुमरण भगवाना ॥ तीनजाम जब रयन विहायो ॥ चतुरथ जाम जवहिं नियराया २ तब निज भ वन बहिर हरषाती ॥ निकसी अभय भक्त वरदाती ॥ मानहु प्रभा कोटि उदतानी ॥ बोली वदन मधुर मृदुवानी ३ अबतें भक्त भ वन वरमोरे ॥ होहिं नजीव हननाहित तोरे ॥ मैपुर कर सब लो गन काहीं ॥ करहुं प्रबोध स्वपन निसि माहीं ४ अस कहि रुचिर दिव्य पटधारी ॥ अवला भेष सुभ्र मनहारी ॥ रजनी स्वपन सवन कहं दीना ॥ वदन नदेस कथन अस कीना ॥ ५ अबतें नगर लोक समुदाई ॥ पायसादि बलि रुचिर सुहाई ॥ मोरे देहुं मुदित हरषाई ॥ ते अजादिपसु वधन विहाई ॥ ६ ॥ तहितें निसचय होहिं तुमारा ॥ संस्रति सिद्ध मनोरथ सारा॥ जो न देस फुरकीन न मोरी ॥ तो तुव देहुं वंस सब बोरी ७ दोहा इह वैष्णव हरि व्यास प्रीय ॥ भक्त मोर गुण गेहु ॥ अवन होहिं हिंसादि इहि ॥ नगर दीन वर एहु १ चौपाई स्वपन विलोकि लोक समुदाई ॥ उठे प्रात निज निज विसमाई ॥ बैठि इकत्र पर सपरवरना आएबहुरि व्यास हरि सरणा १ करिप्रणाम सबवि नयउचारे ॥ अबनहोहिं प्रभुनगरहमारे ॥ दुराचार

हिंसादिक करमा ॥ तोरम्रजाद बद्ध कृत धरमा २ रहिहैं सदा अ टिल महिमाहीं ॥ दीन दयाल संसय कछु नाहीं ॥ सुनि अस भ क्त सृष्ट हरषाना ॥ भगवन कथन सत्त जीय जाना ३ नंमृत सीस मनाहिं मननाई ॥ कीन सनान विमल जल जाई ॥ भोजन करत बहुरि हरषाते ॥ सिष जुत चले भक्ति मदमाते ४ तबतें तहां न गर सुभताहू ॥ भया करम हिंसादि न काहू ॥ पावन हृदय भक्ति सरसाई ॥ भए लोक वैष्णव समुदाई ॥ ५ दोहा अस प्रकार इह चरित मैं ॥ कीन कथन हरि व्यास ॥ सुनत जासहरि भक्तिजु त ॥ होहिं मुचत भव पास ६ इति श्री भक्त विनोग्रंथे हरिव्या स चारित कथनं नाम सर्गः १६

॥ अथ श्रीमत त्रिपुर दास चरित वर्णनम् ॥

॥ दोहा ॥ जाहि सेवत नर सुगम तर ॥ तरहिं अगम संसार ॥ जिमि आस्त्रय जल जान जन ॥ जात जलद ह्वैपार १ चौपाई सो अस भक्ति महातम चारू ॥ करहुं कथन अब मान सहारू ॥ पूरव विदत वल्लभा चारज ॥ करन प्रविरत संप्रदा आरज १ तिनकर तनैं सुभ्र अभिरामा इंद्रिय जीत निपुण गुणधामा महा भागवत लोक उजागर ॥ विद्या वेद धरम धृति नागर २ जास विदत कालि काल मझारा ॥ द्वापर कीन प्रकट संसारा ॥ सोविट्ठल अस नाम सुजाना ॥ मन वच करम भक्त भगवाना ३ पाय न देस कृष्ण गुणगेहा ॥ भयो सोनिरत दार परिग्रेहा ॥ सपत पुत्र तांकर उपजाए ॥ तिन कहं करहुं प्रकट अबगाए ४ दोहा स्रीमत गोकुल नाथ कल ॥ बाल कृष्णघन स्याम ॥ गिरधर स्री गोविंद जदु ॥ नाथ सुभ्र अभिराम १ चौपाई इह वैष्णव उत्तम समुदाई ॥ चारु जनक अनु सासन पाई ॥ पृथक पृथक तिन निज स्वसथाना ॥ विरचेसानकूल सनमाना १ भगवन वज्र नाथ करचारू ॥ मूरति राखि सपत मनहारू ॥ पूजन करहिं प्रेम सरसाते ॥ निजनिज हृदय भक्ति मदमाते २ दोहा गिरधर गोविंद देव श्री नाथ चतुरभुजसेब ॥ स्रीमतवैष्णव देवमुनि ॥ वांसिदेब हरिदेव १ मूरति सपत प्रसिद्धयह ॥ भिन्न भिन्न धारिनाम॥ कीनप्रचारप्रचलत

जग ॥ सुचि वैष्णव अभिराम २ चौपाई अवलो विदतध रन तलनामा ॥ सेवतभक्तजनन प्रदकामा ॥ ताहिविठ्ठलकरएक सुजाना ॥ सुचि सिष रह्यो भक्त भगवाना १ तास कथा अ दभुत सुखदाई ॥ सोअब करहुं प्रकट कछुगाई ॥ पश्चिमदे स ललित पुरिकाहू नाथ द्वार संज्ञा असताहू २ तहां वस हिं वैष्णव समुदाई ॥ भगवन भक्ति प्रीति सरसाई सोश्रीना थ देव जोइगाये स्थापततहां भक्त सुखदाये ३ भक्ति मुक्ति प्रद दीन उवारन ॥ दीनदोष दुख त्रास निवारन ॥ श्रीमत त्रिपुर दास इकनामा ॥ सेवक भूप भक्त अभिरामा ४ गुण प्रवीनक लकायथ जाती ॥ नित संत सेवन दिन राती ॥ तेश्रीनाथहि भक्तिबढाई ॥ वसन मृदूल वरषप्रति आई ५ समय समयकर देत सुहावा ॥ असप्रकार कछु काल विहावा ॥ विपुल उदा र त्रिपुरव्रतधारू ॥ भयो अंत निरधन संसारू ६ सो निज सुमरि वाराषिक करनी ॥ चिंता लीन खनत नख धरनी ॥ दैव उपाय करहुं अवकाहा ॥ सो सामरथ नहिन कछु राहा ७ अस चिंतित करि जतन अधीरा कछु सामान बन्योजसचीरा आयभवन श्रीनाथहिं दीना ॥ रोदन करत कथन असकीता ८ एहसथुल पट देवन जोगू ॥ निदरहिं देखि सकल मोहिलोगू ॥ तव आएहरि भवन पुजारी ॥तेंसथूल पटद्रिगन निहारी ९ कहत कवन इहकीन ढिठाई ॥ प्रभुहिं दीन अस चैल उठाई ॥ ध

धरयो उतारि उसनपट आना॥ प्रभुहिं उढाय दीन सनमाना १०
अतितुषार निसि सीत अपारयो ॥ कंपतविथत लोक पुसारयो
तब भगवन निज पूजक काहीं भाष्यो वचन स्वप्न निसि माहीं
११ दोहा अति आरत मैसीत वस ॥ थरथर कंपहुं गात ॥ तुव
पटते पूजिक नमोहि ॥ भयो तृपति कछुरात १ ॥ चौपाई
त्रिपुरचैल मोरे मनभाए ॥ ताहि ते लेहुं तृपतिसुख पाए ॥ अब
तेदेहुं सकुच तजि सोई ॥ मोरे दीन भक्तपटजोई १ पूजकदे
खि स्वपनइहि भाती ॥ सोचित रह्यो भीतत्रसराती ॥ उदयअर
न हरिभवनासिधारा ॥ सोआपन पटलीन उतारा २ त्रिपुर चैल
कल दीनउढायो ॥ अद्भुत देखि परम विसमायो ॥ अहोदेव
तमभक्तसनेहू ॥ तीन लोक लखिपरहिंनकेहू ३ असकहि त्रिपु
रदासकरनाना ॥ संजुतभक्ति कीनसनमाना ॥ सकल लोक सुनि
अद्भुतचारू ॥ लगेप्रसंसन विविध प्रकारू ४ दोहा हरिजनह
रि करुणायतें ॥ परि हरिविषय विकारू ॥ लेंहि सुभक्ति प्रसाद
तें ॥ निज अभिमत फलचारू १ इतिश्री भक्त विनोदग्रंथे भग
वद्भक्ति माहात्म्ये त्रिपुर दास चरित कथनंनामसर्गः १७ ॥

अथ कृष्ण दास चरित वर्णनं ॥ दोहा मोह विनासनकरन सुख हृदय हरण दुरताइ ॥ भक्ति महातम आन अव करहुप्रगट कछु गाइ १ चौपाई सुभ्रत कृष्ण दास इकनामा ॥ मथुरा वसहिंभक्त अभिरामा ॥ कृष्ण जजन सेवन रतिजासा भक्ति प्रीति निसनवल विकासा १ जो प्रीयवसतु होहिं निजगेहू ॥ प्रभुकहं कराहिं समरपणतेहू॥ समयएकवृंदावनचारू ॥ चल्यो करन दरसनमनहारू २ तवमारग पांडव पुरि आई ॥ तहांनवलद्दगदेखि सुहाई ॥ कुंड लिका कल विरचतचारू ॥ सोअस लेतमोल व्रतधारू ॥ ३ सरता करिसनानमनभावा ॥ हरिहिं रुचिरनइवेद लगावा ॥ ताहि समय पूजक जननाना ॥ मथुरालायभोगभगवाना ४ आय बहिर कलदेत कवारा ॥ बहुरिजाय जबभवननिहारा सोकुंडलिका भगवनथारू॥ देखि लाग सब करन विचारू ५ जानि तिनहिं चिंता कुलभारी ॥ दीन स्वपन निसि भक्त उवारी ॥ तुव चिंता कसमानस कीना ॥ रहामोरप्रीय भक्त प्रवीना ६ कृष्णदास असनामसुहावा ॥ तास भक्ति संजुत मोहि लावा ॥ इह नइवेद मधुरसुखदाई ॥ भयो सोतृपतआज मैपाई ७ दोखि स्वपनअसपूजक ऐना ॥ भयो मुदितउतफुल्लतनयना ॥ दूसरादिवस कृष्णजनआए ॥ भवनदेवनंमृतासिरनाए ८ तवपूजकपूछन असलागे ॥ कहितेंआय भक्त वडभागे ॥ कहांकवनथल हरिहिंसुहावा ॥ कानइवेद भक्त तुवलावा ९ तब वोल्योहरिभक्त प्रवीना

॥ मैकुंडलिका कालिनवीना ॥ पांडवपुरनइवेदलगावा ॥ पाछे आपुसेषकछुपावा १० दोहा सुनि पूजकजनसकलअत ॥ अति प्रसन्नसुखपाय ॥ कहिसस्वपन निज सुनततब भक्त सृष्टहरषाय १ चौपाई इहप्रभाव मंजुलमनभावा मैकछुभक्तिकृष्णजनगावा एक दिवसहरि भक्त प्रवीना ॥ दिल्लीनगरगवन निज कीना १ देखिसतहां मनोहर कोई ॥ वेस्यानृत्य गीतरत होई ॥ भाषत श्रीमत कुंज विहारी ॥ जोइहभवनभामसुभचारी २ गवनिकरहिंकल नृत्यअलायन ॥ तोमोहि लोककरहिं कसगायन ॥ असकहिजाय निकट बधुबारी ॥ भक्त नंम्रमुख गिराउचारी ३ जोसुभेतुवमोदउमंगा मथुराकरहुंगवन मोहिसंगा तोप्रभु रसिकसिरोमणिमोरे देखहिं नृत्य गीत कल तोरे ४ मनवांछित फुरहोहिं तुमारा ॥ अस प्रकार जब भक्त उचारा ॥ ते सूइकार करत चलि आई ॥ मथुरा देखि लोक समुदाई ५ निदरन लाग वदन कहिनाना ॥ हृदय न भक्त सृष्ट कछु आना ॥ भाषत तासु भक्त प्रीय जीके ॥ सुभे होहुं अलं कृत नीके ६ करहु दैव सन मुख मन भायन ॥ निरतत नवल गीत गुणगायन ॥ भक्तन देस लेत अनुरागी ॥ अद भुत नृत्य करन कल लागी ७ दोहा सब कर देखत बारबधु ॥ निरतत भवन गुपाल ॥ गायन मति रति प्रेम अति ॥ भई तुरत बस काल १ अस अद भुत ताकि लोक सब ॥ लगे प्रसंसन तास ॥ प्रभु सनमुख अति प्रेमवस ॥ तजे प्राण निज जास

२ कृष्ण दास अस भक्त घर ॥ करि उद्धार वधुवारि ॥ लागे वि
चरन अभय मही ॥ कृष्ण चरण उरधारि ३ इति श्री भक्त विनो
द ग्रंथे कृष्ण दास चरित कथनं नाम सर्गः १८

॥ अथ विठ्ठल चरित वर्णनम् ॥ दोहा ॥ आन महातम सुखद जाहि ॥ सुनत उदधि संसार ॥ धेनु चरण वत होहिंनर ॥ सुगम जतन विनुपार १ ॥ चौपाई चारु वल्लभा चारज केरे ॥ गंगल वरद पान जुग चेरे ॥ सुभ्र भागवत रटन सुसीला ॥ निरत नंद कृष्ण कल लीला १ । वैष्णव सृष्ट विमल मति वारे ॥ दाया युक्त दीन हित ऊरे ॥ सब कहं सुचि उपदेस सुहावा ॥ कराहिं प्रीति हित संजुत भावा २ सफल करत सब लोगन काहीं ॥ निरत जुगल नित परहित माहीं ॥ हरिगुणगान विमल कल गाते ॥ साधुन संग भक्ति मदमाते ३ विचरत रहेज्ञान गुणसागर ॥ विद्या वेद मरम सब नागर ॥ क्षेमानाम एक अभिरामा ॥ संततराम भक्तनिसकामा ४ कृपा पात्र हनुमान सुहावा ॥ बिठ्ठल नाम आन इक गावा मथुरा वसाहि भक्ति रतहोईं ॥ पितु पितरन्ध तास अस दोईं ५ रहे भूप अपरोहित तहू ॥ सो करि कलहु परसपर गेहू ॥ मृत वसभए एक कर सीला ॥ बिठ्ठल नाम निपुण हरि लीला ६ पुत्र प्रवीन वाद वर वादन ॥ अति रमणीक मधुर स्वर नादन ॥ करहिं ललित जब नृत्य प्रवीना ॥ नारायण पद पंकज लीना ७ एक दिवस अपरोहित राजा ॥ कीन स्मरण जानि कछु काजा ॥ तब तहि मरण भृतन जब वरना ॥ बोल्यो सुवन तास पति धरना ८सुनि न देस बिठ्ठल नरराए ॥ आए हृदय प्रीति सरसाए ॥ राऊ विलोकि कीन सनमाना ॥ वसि तहं कछु

कँदिवस सुखमाना १ दोहा तब एकादसि दिबस कर ॥ धरत नाथ ब्रत धारि ॥ नृत्य गीत गुणि जन सभा ॥ विराचि ललित मन हारि १ चोपाई द्वेषीजन विठ्ठल द्विज केरे ॥ नृप सन प्रकट वदन अस टेरे ॥ पृथिव नाथ नृत गीत सुहावन ॥ इह सौंदरय विप्र मन भावन १ सुनहुं आज इहि दीन दयालू ॥ तबन देस दीन्यो महि पालू ॥ विठ्ठल सुनत कीन सूइकारा ॥ दुष्ट जनन करि हृदय विचारा २ तब सनमुख हरि भबन अखारा ॥ रच्यो विलोकि उत्तंग अगारा भूप सचव जुत सज्जन जाती ॥ आए सकल बिलोकन राती ३ साधु निकर परि बारत सोई ॥ विठ्ठल आए सकुच गतहोई ॥ लाग्यो होन नृत्य कल गाना ॥ मधुर मधुर सुर रसक्रम हाना ४ भूप विलोकि ललित रस सोहन ॥ मुरछत भयो जनहुं वस मोहन ॥ सभा समष्ट एकटक लागी ॥ प्रेम प्रवाह वार दृग त्यागी ५ विठ्ठल निजा नंद उतमानी ॥ निरतत सुधि सरीर विसरानी ॥ संतत ध्यान लीन भगवाना ॥ ब्रह्मा नंद जनहुं सुखमाना ६ प्रेम मत्त चुत होत अगारू ॥ उरभी पर्यो भक्त ब्रत धारू ॥ भूप देखि मान सत्रकु लावा ॥ हाहाकार करत उठिधावा ७ साधु संत सब लोक सयाने ॥ निज निज हृदय दुखित पछताने ॥ मनहुं प्राण गत लीन उठाई ॥ निज मुख दुष्ट जनन कहंराई ८ इहां मूढ कत रच्यो अखारा ॥ कहि दुरबचन कीन तृसकारा ॥

तब अचेत विठ्ठल दिज काहीं ॥ लाए साधु नगर गृहमाहीं ९
तब भृत संजुत विविध प्रकारा ॥ कीन्यो तास जतन परिचारा॥
तृतीये दिबस दिजहिं सुधि आई ॥ जननि दीन सब कथा सुना
ई १० भक्त सृष्ट कछु वदन नकाहा ॥ सुमरत कृष्ण मोन जीय
राहा ॥ वासर एक सदन निसि काहीं ॥ लग्यो विचार करनमन
माहीं ११ दोहा इह प्रपंच मिथ्या सकल ॥ करि चिंतन जीय
सोइ ॥ ह्वे विरक्त मन अरध निसि ॥ चल्यो सदन सुख खोइ
१ चौपाई छिटी नाम मंजुल इक ग्रामा ॥ वसहिं निकर वैष्ण
व अभिरामा ॥ गरुड गुविंद देव करचारू ॥ तहां सुभ्र मूरति
मन हारू १ विप्र निवास कीन निज ताहां ॥ सुमरत हृदय च
राचर नाहां ॥ सोजब आय सदन निज त्यागी ॥ पतनि मातु
ताहिं विरहं विरागी २ दुखित तास अन्वेषण हेतू ॥ चली जुग
ल तजि रुचिर नकेतू ॥ उत धावन नृप दीन पठाई ॥ मातु सु
नखा दुखित इत आई ३ खोजत विथत सकल थल काहीं ॥
प्रापत भई ग्राम छिटि माहीं ॥ सुत कहं देखि भरत दृग वारी
॥ दुखित दीन बत वदन उचारी ४ इहबल हीन जठर तुव अं
बा ॥ अब सुत तजहु कवन अव लंबा ॥ करहु सदन चलि पा
लन मोरा ॥ हमहुं भरोस तात बलि तोरा ५ रह्यो मोन सुनि
भक्त प्रवीना ॥ तहां निवास जननि त्रीय कीना ॥ सुख दुख हान
लाभ संसारा ॥ भक्त सृष्ट सम हृदय विचारा ६ चारु अजा च

त वृत मन लीना ॥ मातु पतनि उत अन्न वहीना ॥ भईं दुखित अति कृश्यसरीरा ॥ तव भगवान हरण जनपीरा ७ दिज कहं दीन वपन निसि माहीं ॥ अब तुम भक्त सृष्ट इन काहीं ॥ जाहु लेत निज सदन सुहाइन ॥ करहुं नरंत्र मोर गुण गायन ८ बारवार जब दैव अलावा ॥ तब निज सदन भक्त वर आवा ॥ देखि दीन बांधव जन त्यागी ॥ रह्योसि एक मात अनुरागी९ हित जुत तास कीन सन माना ॥ लग्यो वसन तहि सदन सुजाना ॥ एक दिवस त्रीय तास सुभागी ॥ पद नख खनन धरण जब लागी १० कलस निधान देखि तब पावा पति हिं जाय त्रीय मरम जणावा ॥ विठ्ठल देखि वदन अस काहा ॥ इहइभार कछु खच नराहा ११ दोहा सदन स्वामि कहं बोलि अस ॥ भक्त सृष्ट समुझाय ॥ इह सज्जन वित स्वत्त तुव ॥ राखहुं जतन दुराय १ चौपाई तास सुनत अस गिरा अलाई इहकाकीन कथन तुव भाई ॥ सुत वित सदन मोर परि वारा सुनहु तात सब ऐंहिं तुमारा १ सज्जन लेहु कलस निधि एहू ॥ स्वारथ होहुं निरत रुचि गेहू ॥ तब विठ्ठल सादिर हरपाईं ॥ खोल्यो कलित कलस जब आई २ निकसी वीच दैव सुख दाई ॥ मूरतिं वित संजुत मन भाईं ॥ सोसादिर कल भवन रचाई ॥ स्थापत कीन भक्ति सरसाईं ३ अरु वित अक्ष दीन जन लेखी ॥ अतथी संत भक्त हरि देखी ॥ लग्यो विभगत करन सनमाना

॥ सब कहं जथा जोग्य जिमिजाना ४ भयो विदत दाता उप
कारी ॥ विभू देखि बांधव अस सारा ॥ लागे करन रुचिर स
तकारा ॥ सो कुतरक सब हृदय विसारा ५ रंगीलाल विदत
अस नामा ॥ तांकर भयो पुत्र अभिरामा कुसल नृत्य गायनव
डभागी कृष्ण सरोज चरण अनुरागी ६ गयो कछुक अस स
मय विहाई ॥ तब इकनटी निपुण कलआई ॥ दैवभवन तहि
नृत्य सुहावा ॥ भक्त सृष्ट जुत भक्ति करावा ७ ललित भाव रस
तात निहारी साधु साधु सब लगे उचारी जब तहि देन वसन
वित लागे ॥ भक्त सृट हरषत अनुरागे८ नटी कहिस प्रीय वस
तु सुहाई ॥ सो मोहि देहु भक्त मन भाई ॥ कवन देहुं तोहि भ
क्त उचारा ॥ ॥ लेहुं एक प्रीय पुत्र हमारा ९ अस कहि दीन भ
क्त सुत तासा ॥ चलीं लेत मन वांछित आसा ॥ तब विदगध
नरनाइक रानी ॥ तांकर नृत्य गीत रुचि मानी १० बोलि तासु
जब नृत्य करावा ॥ देखि सो ललित बाल मन भावा ॥ हरषत
पुत्र भाव जीय आनी ॥ बोली वदन वचन अस रानी ११ दो
हा इह कहिते तुव लीन नटि ॥ बाल ललित मृदुगात ॥ मोहि
देखत प्रीय लाग अति ॥ सुत सनेह जिमि मात १ चौपाई ॥
भगवन भवन नृत्य कल गाना ॥ रही करत वेस्या सनमाना ॥
चतुर विचारि मनोरथ रानी ॥ बोली वदन मधुर मृदुबानी १ ॥
तुमहिं देहु महिषी सुत एहू ॥ अस कहि नटी निपुण गुण गेहू

॥ सिसुहिं कहिस अस वदनउचारी ॥ करहुं नृत्य सुत भवनमु
रारी २ लाग्योकरन नृत्य कलसोई ॥ तब प्रसन्नमानस नटि हो
ई ॥ सिसुहिं अंक निज लेत प्रवीना ॥ विस्वनाथ कर सनमुख
कीना ३ महिषी सन अस वचन वखाना ॥ इह अरपण कीन्यो
भगवाना ॥ प्रभुतें लेहु मांगि तुव रानी ॥ अस जब कीन कथन
नटि वानी ४ तब प्रसन्न मन हरषत रागी ॥ प्रभुतें लेन सिसुहिंज
बलागी ॥ सुफुटवचनतब रंगि अलाया ॥ करहुं सपरस मोर ज
निकाया ५ मैं अब भयोकृष्णजनमाता ॥ असकहि बदनवचनसु
खदाता ॥ निरततुरत वपुषतजिदीना ॥ भयोनरंत्र ज्योतिहरि ली
ना ६ असमाथुरहरि भक्तमहाना ॥ विठ्ठलनामसकलजगजाना ॥
जाहिंसंसरग वारविधुरानी ॥ भइ निरवेद निरत सुखमानी ७ दोहा
राटतआननआपुरटि ॥ नटिनागरभगवान ॥ कटिवंधनभवभक्तभ
टि ॥ भगवनभयोसमान १ ॥ इतिश्रीभक्तविनोद ग्रंथे भगवद् भ
क्ति माहात्म्ये विठ्ठलचरित कथनं नामसर्गः १९ ॥

॥ अथ हरि राम चरित वर्णनम् ॥ दोहा ॥ अब संकुल संसय हरन ॥ करन विमल मन चारु ॥ भक्ति महातम करहुं मैं ॥ कथन विदत संसारु १ ॥ चौपाई भक्त सृष्ट हरिराम सुहाए ॥ इंद्रय जीत विदत सब गाए ॥ नृप सन सख्य भाव गुण सागर ॥ विद्या वेद धरम पथनागर १ रह्योति एक आनतहं साधू ॥ राम नाम निज हृदय अराधू ॥ तहि वृति भूमि दान कृतराऊ ॥ भिक्षू आन देखि सठ काहू ॥ २ ॥ मिथ्या कीनपि सुनता तेही ॥ पृथिव नाथ बृति नाहिन एही ॥ अनु चित भयो मूढ अधिकारी असप्रकार सठ कपट उचारी ३ दीन्यो हृदय प्रेर नर राई ॥ तास दीन बृति भूमि छुडाई ॥ देखि अनरथ साधु अकुलाना ॥ रोदन करत सरण हरि रामा४ आवत विथा सकल निज वरनी ॥ दीन सुनाय दुष्ट सब करनी ॥तव हरिराम दया रसपागे ॥ तासु बदन अस भाषन लागे ५ नृपपें जाय जथा वन आई देहु संत तुब विथा सुनाई ॥ अस कहि भक्त सृष्ट हरि रामा ॥ आए भूप भवन तजि धामा ६ पाछिल साधु खत्त अधि कारि आवाहृदय दुखित निज भारी ॥अजहुंव दन हरि रामन भाख्यो ॥ तहि निज विनय प्रथम करि राख्यो ७ राऊ सुनत करि क्रोध अपारा ॥ कीन्यो विविध साधु तृसकारा तब हरि राम कीन संभाषण ॥ का अब करहुं भूप इहि शासन ८ सुनत नरिंद्र मोन धरि राहा ॥ नम्रत वदन वहरि

असकाहा ॥ महा राज भिक्षू मोंहि वरना ॥ सोइहि कर नाहिन वृति धरना ९ तब हरि राम सुफुट मुख वानी ॥ सुनहु भूप अस वदन नखानी ॥ भिक्षू कहत सत्य सब तोरे पैआवहि अब सन मुख मोरे १० दोहा जो मिथ्या अस कथन तहि ॥ तोन वदन कछु गाथ निकसहिं देखत सवन अब ॥ देखि लेंहु नरनाथ१ चैापाई जोतहि सत्य कथन कछु कीना॥ तो वो लब प्रण मोर प्रवीना ॥ राधा कृष्ण चरित इह चारू ॥ देखहुं भूप विदत म नहारू१जहि प्रहलाद कीन रखवारी खंभ फोर हरनाक समारी ॥ सोन होंहिं कस संत सहथ्या ॥ अस कहि हृदय भक्तसुखद य्या२कृपा सिंधु भगवान चितारन लाग्यो गनक द्रुपत जातारन॥ मैप्रण कीन दीन दुख गंजन ॥ दिजजन धरण धेनु सुर रंज न ३ तब नरेस निजहृदय हुलासी ॥ बेग वुलाय लीन सन्या सी ॥ बैठयोआय मोन मन मारे ॥ नाहिनसक्कत कछु बचन उ चारे ४ वार वार तब भूप अलावा सोवृत्तांत अब देहु सुनावा ॥ यद्यपि रसिकि भूप वर काहा ॥ तद्यपिच कत मोन धारि राहा ५ करन सयन करि कहत बुझाई ॥ मोरेनाहि सामरथ कछु राई॥ देखि भूप अदभुत बिसमाना ॥करत प्रणाम चरण हरिरामा ६ सो बृतिदीन संत तहिकाही ॥ चल्यो सुहर षि भव ननिज माही ॥ भक्त सृष्ट हरिराम सुहाए ॥ सादर नृपतैं होत बिदाए ७ आय ललित आस्रम निजराजे ॥ सुमरत

भक्त करण तव काजे ॥ भिक्षु सोऊ निकट नर नाहां ॥ रह्यो सिवैाठि मोन धरि ताहां ८ एकल देखि धरण पति वरना ॥ भाषहुं सत्य कवन कर धरना ॥ तव बोल्यो अस प्रकट उचारी ॥ मैप्रभुहृदय द्वेष निज धारी ९ इह अनु चित कछु वदन अलावा ॥ तहि परिणाम प्रकट अव पावा मुनि अस धरण नाथ निजकाहीं ॥ निदरन लग्यो विविध मनपाहीं १० दोहा अस इह चरित वचित्र वर मैगायो हरिराम ॥ जास सुनत जगभक्ति जुत ॥ होहिं सकल फुर काम १ इति श्रीभक्त विनोदे हरि राम चरित कथनं नामसर्गः २० ॥

अथ मालाकार चरित वर्णनम् दोहा करहुं कथन संक्षपत श्रुति ॥ ललित महातमएहु ॥ उपज पराहिं जाहिसुनत स्रुति हरि पदनलिनसनेहु १ कमलाकर असनामइक भक्तविदत संसार जहि माधव सिद्धांत मत ॥ कीन प्रकट संचार २ वेद विसारद धरमरत ॥ गुण विज्ञान प्रवीन ॥ जहि रटि श्री मत भागवत ॥ सुर दुरलभ गति लीन ३ इति श्री भक्त विनोद ग्रंथे कमला कार चरित कथनं नाम सर्गः २१ ॥ छं ॥

अथनारायण भट्टचारितवर्णनम् ॥ दोहा ॥ अवनारायणभट्टकर ॥ भक्ति महातमगाइ ॥ करहुं प्रकट संक्षपत कछु हरन दुरत दुरता इ १ चौपाई मथुरा वसाहिं भक्त वरसोई कृष्ण सरोज चरण रत होंई ॥ विदत पुराण स्थान सुहाए ॥ जेजे रहे लुपत मन भाए १ तिन सब कहं निज अनुभवद्वारा ॥ लग्योप्रकासकरनसंसारा ॥ जहां ताहिकछु होतसंदेहू ॥ सोनिसिस्वपतकृष्ण जननेहू २ निजकरुणा करिदेतजणायो ॥ असप्रकारकछुसमय विहायो ॥ एकादिवसउरहरषिवसेषी ॥ माघमास सुंदरऋतुलेखी ३ लोकस कलमानसअनुरागे ॥ चारुप्रयागचलनजबलागे ॥ भक्त सृष्टसन कहतउचारी ॥ हमसन तुमहुंचलहुं व्रतधारी ४ सुचिप्रयाग तीरथ दरसाई ॥ आवहु बहुरि सदन सुख पाई ॥ तब बोल्यो हरि भक्त प्रवीना ॥ इहका कथन तुमहुं जनकीना ५ इहां प्रयाग छेत्र मन भावा ॥ देहुं ललित तुव दृगन दिखावा ॥ खोजहु नगर कांक्ष सिसु दीन्यो ॥ कामति तुमहुं वौरि कहि कीन्यो ६ जो प्रतीत कछु तुमहिं नभाई ॥ चलहुं वेग अब देहुं दिखाई ॥ अस कहि नगर बाहिर जब आवा ॥ देखि उतंग सिखिर मन भावा ७ तहिपें जाय सुफुट अस वानी ॥ भक्त सृष्ठ निज वदन वखानी ॥ इह देखहुं उज्जल सुख देनी ॥ बह्यो जात अति ललित त्रिवेनी ८ देखि लोक मानस विससाए ॥ सलिल प्रवाह वरनि किमि जाए ॥ वार वार हरषत अनुरागे ॥ नारायण पद वंदन

लागे १ दोहा अस इह भक्त प्रधान भये ॥ निपुण भक्ति जदुरा य ॥ जहि मथुरा निज भक्ति बल ॥ दीन प्रयाग दिखाय १ ॥ इति श्री भक्त विनोद ग्रंथे नारायण भट्ट चरित कथनं नाम संग: २२ ॥

॥ अथ रूप सनातन चरित वर्णनम् ॥ दोहा ॥ अब अदभुत अस चरज प्रद ॥ हृदय हरण संदेहू ॥ भक्ति महातम करन कल कृष्ण कमल पदनेहू १ करहुं जथामति कथन कछु ॥ रूप सनातन नाम ॥ गौड देस जुग भ्रातइह ॥ भए विदत गुण धाम २ ॥ चौपाई अव सर एक जुगल अनुरागे ॥ सो निज देस सदन सुखत्यागे ॥ कृष्ण कमल पद प्रीति वढाए ॥ वृंदावन उत कंठित आए १ गोपेस्वर भगवान समीपा ॥ लागे वसन भक्त कुल दीपा ॥ चारु अजा चत ब्रत कहं धार्‍यो ॥ जथा लाभ संतुष्ट विचार्‍यो २ विचरत तहां कृष्ण भगवाना ॥ लीला अमिय करत नितपाना ॥ कृष्ण विमल कल गुण गणगाते ॥ वृंदा विपण भक्ति मदमाते ३ निवसत भए विप्रवरदोई ॥ अजा चित वृती विदत सबहोई ॥ अव सर एक रूप गुण भवना ॥ नंदीग्राम कीन कल गमना ४ रह्यो सनातन प्रीति वढाए ॥ वृंदा विपुन ललित सुखपाए ॥ एक दिवस भेटन निज वीरा ॥ नंदीग्राम गवन धनि धीरा ५ आवत देखि रूप अनुरागा ॥ हृदय विचार करन तिज लागा ॥ कवहुं कि आज दुगध मै पावहुं ॥ प्रभुहिं प्रथम

नईवेद लगावहुं ६ पाछे सानुकूल हरखाई ॥ देहु रुचिर निज
वीर जिवाई ॥ हृदयं सफुरन भक्तजन कामा ॥ राधे रमारूपअभि
रामा ७ जनुगूजारि कललटकचट कीया ॥ धरतसीस सुभ
दुगधमटकीया ॥ तंडुल सितसुगंधिमनहारू ॥ लीने सुभ्र शर
कराचारू ८ आवत कहिसवचन रसबोरे ॥ लेहुंभक्तइहअ
रपणतोरे ॥ मैप्रतिस्रुत कीनोसुभएहू ॥ होहिं प्रसूतधेनुजबगेहू
९ पाइससिद्धि हेतुतुवलाई ॥ देहुंदुगध तंडुलहरषाई ॥ हि
तजुतरूपसुनत असवानी ॥ लीन्यो दुगधपरम सुखमानी १०
पैद्दगदेखि अलोकिकसोभा ॥ रूपअनूपमान रतिक्षोभा इकट
करह्योचकत जीयभारा ॥ वदनसनातन बचनउचारा ११ कहि
तेकीन अगमनसुहाता ॥ माताकवननाम तुवताता ॥ मैपुत्री
वृषभान सुहाई ।' कीनगमन असवदनअलाई १२ वेगपाक
तवरूपरचायो ॥ बंधुजिवाय आपुपुनिपायो ॥ भाषिसवहुरि
वचनसुखदाता ॥ मैआगमन देखितुवभ्राता १३ दुगधअहार
करावनकोरि ॥ तोरेभई रुचिररुचिमोरी ॥ अकसमातइहगो
पिसुहाई ॥ तातमोरमनवांछितल्याई १४ दोहा सुनतसनात
नवचनताहि ॥ कहिसवदन मृदुवानि ॥ तीरथ वासिनिसंत
कहं ॥ करनलोभवडहानि १ यातेंतपकृतभाक्ति जुत ॥ हो
तनष्टसबवीर ॥ इहराधाप्रीय कृष्णकल॥तुवगुनिसुताअहीर २ ॥
चौपाई हमकहं जानिपुत्रतजिगेहू ॥ ल्याई दुगधमातुकरिनेहू

॥ रूपसुनतमानस विसमाना ॥ बंधुवचन निसचय नाहिजाना १ नंदीग्राम कीनतवथ्याना ॥ खोजत जुगल सदन वृषभाना ॥ तबलोगन असप्रकटउचारा ॥ अवनकाहु वृखभान अगार २ पूरवभयो विदत जगगावा ॥ जवलोगन अस वदन अलावा ॥ तबहुं सनातन कह्यो उचारी ॥ तावतुमार लोभव सभारी ३ पावाक्षोभजनन सुखदाती ॥ अगलअवन करहुंइहि भाती ॥ असभाषत वृंदावनकाहीं॥ चल्योकृष्ण सुमरतमनमाहीं ४ एक दिवससुंदरथलकाहू लीलारास कृष्णउतसाहू ॥ देख्यो होत नृत्यकलगाना ॥ रह्योभक्तवर वैठि जुडाना ५ प्रेममत्य मृतवतजनुभययो ॥ करनपूरइक पूजकरहयो ॥ मृतलखितास चेतहितचीन्यो ॥ अगुरि घ्राणरुधरतहि दीन्यो ६ तबसपरसक रितेजकृसाना ॥ भयोतासुजनुदाहकभाना ॥ देखिसबहिर तुरत निषकासी ॥ पावकदगधस्याम सबभासी ७ जीयतजानि मानस बिसमाना ॥ भक्ति प्रभावविदत प्रकटाना ॥ उततहिभ्रातरूपवर काहीं ॥ अदभुतभयोस्वपन निसिमाहीं ८ कृपानाथ भगवन गोविंदू ॥ बोलेभक्तकुमदमन इंदू ॥ मूरति मोरबाहिरवलग्रामा॥ ९ ताकरलेहु खनित तुवधरनी करहु प्रकट संसृति सुख करनी ताहि पूजनकरि रुचिर सुहावा ॥ लेहिं लोकमन वांछितपावा ॥ १० दोहा बैठहिं गय्यनजूथजहं ॥ अमुकलालित थलसोय ॥ मंदमंद तहिंपं झरत ॥ धेनुदुगध चुतहोय १ चौपाई देखि स्वपन अस रूपसुजाना ॥ सो वचित्र मूरति भगवाना ॥ धेनु

झरत दृगदुग्ध निहारी ॥ तुरत खनत क्षतछी न निकारी १ सज्जन साधु चरित असदेखी ॥ भए चकित चित हृदय वसेषी ॥ करि पूजन विधिवत समुदाई ॥ रूपभाक्ति मानस सरसाई २ कीन स्थापन सुचि सनमाना॥सो अवलो मूरतिभग वाना जयपुर जय हरि भूपति नामा तासाविरचत भवनअभिरामा ३ भुक्ति मुक्ति लोकन सुखदाई॥ ऐहिं स्थापन भवन कराई अस इक दिवस सनातन भावा ॥ नंदीग्राम रूप पँधावा४ मार गजटा मुकट सिर जोई ॥ फस्यो विपुन कंटिक द्रुम सोई ॥ इहां रैहिं आइस भगवाना ॥ सोअस भक्त स्रष्ठ जीय जाना५ अस प्रकार है दिवस विहाए ॥ तब गोपाल भक्त सुखदाए ॥ तृतीये दिवस दुगध सुचि लीने ॥जट' मुचित द्रुम कंटक कीने ६ सो सादर पय पान करावा ॥ देखि दिव्य वर रूप सुहा वा ॥ पूछत कवन वसहुं कहि ग्रामा केते तोर बंधु अभिरामा७ सुनि बोले अस भक्त उवारी ॥ मैगोपाल भ्रात मोहिचारी ॥ नंदीग्राम वास निजमाना ॥ अस कहि भए लुपत भगवाना ८ तब विसमय अति मानस छावा ॥ नंदीग्राम सनातनआवा ॥ खोजन लग्यो सकल थल नीके ॥ सोगोपाल भक्त प्रीय जीके९ देखे जवन जनन सुखदाना ॥ तव निसचय कीने भगवाना ॥रो दन करत विविध पछतावा ॥ आय रूप कहंमरम सुनावा १० दोहा तवइक अवसर रूपवर॥ राधा वेनि सुहान ॥ लाग्यो वर

एन वदन निज ॥ लखिन परहिं उपमान १ चौपाई तब असक
थन सनातन कीना ॥ इहन उचित तोहि बंधुप्रवीना ॥जोकछुह
दय तोर रुचि एहू ॥ तोविरचहुं कछुकाव्य सनेहू १ रूप सुनत
अस वचन हुलासा ॥ उपजाकाव्य रचनरुचितासा ॥ आयोतटप्र
याग अनुरागा ॥ सुमरत कृष्ण भक्त वडभागा २ तरु कदंब साखा
कल भावन ॥ लागे तहां चरण जुग पावन ॥ देखे रूप ललित
मन हरना ॥ इह कस चकृत वदन अस वरना३ कहिस सना
तन वचन सुहाता ॥ इहजग जननि चरण सुख दाता॥ वरनन
वेनि उचित जननाहीं ॥ करहुं कथन इन चरणन कांहीं ४ दोहा
बंधु वचन सुनि रूप अस ॥ अति अनंद सरसात ॥ जनु पंक
ज लखि मधुपवत ॥ भयो लीनपदमात १ गौड देस अस विप्र
कल भक्त सृष्ट जुग एहू ॥ जिनकर कथा प्रसिद्ध जग ॥ अन
क अलोक करेहू २ इतिश्री भक्तविनोद ग्रंथे भगवद्भक्ति मा
हात्म्ये रूपसनातन चरित कथनं नाम सर्गः २३

अथ हरिवंसचरित वर्णनम् दोहा भ्रम विदलन असचरज प्रद भक्तिमहातमएहू करहुं कथन सुभदेन कल कृष्ण कमल पदनेहू १ चौपाई विदत नाम हरि वंस सुहाए॥ गोस्वामिवर भक्तकहाए कृष्ण रटन पर परम प्रवीना ॥ संतत कृष्ण जज्ञन मन लीना १ कृष्ण सरोज चरन मन लाए ॥ सदा रहत प्रभु ध्यान जुडाए॥ धरयो अजाचित ब्रत मनमाहीं ॥ भक्ति मत्य कछु चेतन नाहीं २ विधि निषेध गत भक्त अकामा॥ वरजित गृहस्थ धरम अभिरामा॥ अवसर एक सेख निसि माहीं॥ ताहि नगर इक दिजवर काहीं ३ कृष्ण प्रबोध स्वपन असकीना ॥ मोर भक्त हरि वंस प्रवीना ॥ पानि ग्रहण निजसुता सुहावा ॥ ताहि सन करहु विप्र मन भावा ४ देखि स्वपन अस विप्र सुजाना॥ संभ्रम हृदय गुणत विसमाना ॥ त्रिय सन कीन कथन सवजाई ॥ते सुसील अस सुनत अलाई ५ पतिवर वचन महाजन केरा ॥ धरहिं सीस कछु जाहिंन फेरा ॥ इहतो परम दैव भगवाना॥ दीन नदेस तोर हित जाना ६ धरहुं सीस भगवान रजाई ॥ देहु तासु निज सुता विवाही ॥ उपज हिं तास वंस गुण सागर सिद्ध भक्त सद जगत उजागर ७ अस त्रीय वचन सुनत दिज ताहू ॥ दीन तासु निज सुता विवाहू ॥ तांके वंस निपुण गुण खाना ॥ उपजे परम भागवत नाना ८ दोहा अस प्रकार करुणा यतन ॥ भक्त काज जिय जानि ॥ दीन बंधुकरते रहे ॥ स

दा भक्त हित मानि १ इतिश्री मन्महाराजाधिराज जंबू काश्मी राद्यनेक देशाधि पति प्रभुवर श्रीरणवीरसिंहा ज्ञप्त कविमीहां सिंह वि रचिते भक्त विनोदग्रंथे भगवद् भक्ति माहात्म्ये हरिवं स चरित कथनं नाम सर्गः २४ ॥ छ ॥

अथ हरिदास चरित वर्णनम् ॥ दोहा ॥ गूरजर देस प्रसिद्ध इ
क ॥ विप्र असाधरनाम ॥ तास पुत्र हरिदास जग ॥ विदतसक
ल गुणधाम १ ॥ चौपाई सो अति रसक भक्त भगवाना ॥ सेवत
भूप विबध सनमाना ॥ खान पान फल वसतु सुहाई ॥ देहीं जे न
गर लोक समुदाई १ हरिहिंरुचिर नइवेद लगाना ॥ पाछे भ
क्ति प्रेम मुदमाना ॥ मृग विहंग वन चर पसुकाहीं ॥ कृष्ण सरूप
जानि जीय माहीं २ करहीं विभक्त भक्त उपकारी ॥ एक दिवस
छित पत हितकारी ॥ जमुना तीरदासहरिपाहीं ॥ आवा भक्तिभा
व मन माहीं ३ करी प्रणाम मुख असतुति कीना ॥ सुभ्र सुगंधि
तैल फल दाना ॥ सादिर भक्त सृष्ट कर लीने ॥ राधाकृष्ण चरण
चित दीने ४ रवितनया कर वारि मझारा ॥ भक्त प्रधान दीन
तवडारा ॥ सो अस देखि भूप हितकारी ॥ मानत भयो क्षोभ
जीय भारी ५ वित दैलीन तैलवर तेहू ॥ खोयो वृथा आज कस
एहू ॥ तास गिलानि विपुल पछताना ॥ भक्त सृष्ट जीय लीनसि
जाना ६ सिष कहं वदन बोलि समुझायो अब इहि देवभवन
मनभायो ॥ तुव लैजाऊ सहित सनमाना॥ करि हे दिव्य दरस
भगवाना ७ ततक्षण गुरु न देस असपाई ॥ चल्यो तासु सिष
भवन लिवाई ॥ सो विलोकि फल भगवन सोभा ॥ दंड प्रणाम
करत मनलोभा ८ सुभ्र सुगंधि तैल निजछाई ॥ भवन देव
परी पूरण पाई ॥ कृष्ण चंद्रकर अंगन लागा ॥ देखि चकत

अस भाषत बागा ९ डारदीन जमनाजल एहीं ॥ अब कस सज्यो कृष्ण कल देहीं ॥ जान्यो भक्ति प्रभाव सुहावा ॥ ताजि हरि भवन हरष सब आवा १० भक्त चरन नंम्रत सिरनाई ॥ निज अनुचित सब क्षमा कराई ॥ चल्यो स दन निजलेत विदाई ॥ नृपसन कीन कथन सब आई ११ दोहा इह अदभुत सुनि धरण पति ॥ सचव महां जन सारि ॥ साधु साधु लागे करन ॥ भक्ति प्रभाव निहारि १ चोपाई तब इक दिवस आन जनकाहू ॥ करत अटिन कल तीरथ ताहू ॥ जमुना तीर दास हरि पासा ॥ आवा हृदय हु लास विकासा १ मंजुल माणि स्परस तहि पाहीं ॥ दीनी तास दास हरि काहीं ॥ भक्त सृष्ट कल लेत सुहाई ॥ करि सुमरण मानस जदुराई २ अभु अगम अति भानु कुमारी ॥ दीनसि तास विलोकत डारी जानि अमोल दिव्य मन हरनी ॥ ते दुखात्र कछु सक हिं न वरनी ३ भक्त विलोकितास मनमार्यो ॥ करि प्रवेस जमुना वर वार्यो ॥ अंजुलि भरत शरकरा चारी तांकर सनमुख दीन सिडारी ४ अब तुम निज मंजुल मणिजानी ॥ लेहु वदन मृदु भाषिसवानी॥ ते अदभुत निज सदस सारी ॥ देखत दिव्य ललित मनहारी ५ जुगकर जोरि चरण गहि लीने ॥ नंम्रत विनय वदन निजकीने सेवक वन्यो करम मन वानी ॥ गुरुहिं कृष्ण सदसजीयजानी ६ दोहा करि निवास कछुकाल तहं ॥ लग्यो करन सिवकाइ

॥ गुरु सेवत गुरु कृपालते ॥ लीन परम पदपाइ १ इति श्री भक्त विनोद ग्रंथे भगवद् भक्ति माहात्म्ये हरिदास चरित कथनं नाम सर्गः २५ अथ हरव्यास चरित वर्णनम् दोहा अब पावन मन हरन कल ॥ करहु कथन सुख दान ॥ भक्ति महातम सुनत जहि ॥ बडहि सुमति सुभज्ञान १ चौपाई दिज उच्छोड ग्राम अभिरामा ॥संस्रति विदत व्यास हरनामा ॥ विषय विरक्त ग्रहस्थ रत नागर ॥ त्रीय जुत समयएक गुणसागर २ वृंदा वन कहं चल्यो सधारी ॥ यद्यपि राऊ रुचि र हितकारी ॥ राख्वन हेतुजतन बहु कीना ॥ तद्यपि रह्योन विप्र प्रवीना ३ सानु कूल वृंदावन आवा तहां ललित थल देखि सुहावा ॥ गिरधर चरन चारु रतहोई ॥ लग्यो निवास करन दिज सोई ४ एक दिवस हरि भवन सुसीला ॥ लागी होन रास वरलीला ॥ राधा चरण भक्त मनलूटी ॥ तहां कलत किंकणि रज टूटी ५ सहिसा व्यास दृगन अस चीने ॥ निज उपवीत प्रति जुत लीने ॥ तुरत करन ग्रंथन कारि दीन्यो ॥ हरषत वदन कथन अस कीन्यो ६ धारयो विपुल दिवस कर रेहा ॥ भयोसि आज सफल जगएहा अस वखानि निज वदन प्रवीना ॥ धारण सूत्र नवल कलकीना ७ दोहा लोक विलोकन लाग जब ॥ व्यास कंध तव पाय ॥ बैठे कृष्ण कृपायतन ॥ सकलदेखि विसमाय

१ चौपाई अदभुत चरित लोक अस लेखी ॥ भाक्ति प्रभाव जानि अषसेषी ॥ निज निज वदन प्रसंसन लागे ॥ तवइक दिवस भक्त वडभागे १ पावन भाक्ति प्रेम उर भरिया ॥ संतत निरत देव पर चरिया ॥ निरमत पीत प्रवर मन हारू ॥ वेष्ठन स्वर्ण सूत्र कल चारू २ मौलि कृष्ण मूरति अनुरागे ॥ भक्त सृष्ट पहिरावन लागे ॥ खसकत पेचक सक जबहोई चिकन सीस थिर रहत न रोई ३ बांधत वार वार हरषाई ॥ धुवन होत प्रभु पागसुहाई ॥ तब अति प्रेम कोप रस पागे वेष्टन ललित धरत प्रभु आगे ४ आपु करन निज लेहु सवारी ॥ अस कहि आय बहिर ब्रत धारी ॥ ताली आनंदे स करकाहू ॥ आवा भक्त निरतउत साहू ५ निदरि कोप नि जाविध प्रकारा ॥ तासु लेत हरि भवन सधारा ॥ अदभुत ललित देखिमनहारी ॥ सजी सीस वर पागमुरारी ६ अस्रू पात हरष दृगछाए ॥ गद गद वचन भनत मुसकाए ॥ मोहि तें अस प्रीय भावन जीके ॥ कब वनि परतनाथ छबनीके७ तबहुंदेत प्रभु बांधन नाहीं ॥ जानिपरयो मोहि त्रिभुवन साईं आन भक्त अस सुनत प्रसंगा ॥ पुलकगात मन मोद उमंगा८ दोहा साधुसाधु कहिवदन निज ॥ कृष्णाचरण सिरनाय ॥ रटित व्यास गुण गण विमल ॥ चल्यो सदन निज धाय १ चौपाई तद नंतर इक दिवस प्रवीना ॥ साधु समाज

प्रेम मन लीना ॥ भोजन लग्यो करन निज गेहा ॥ ला
गि परोसन भामनि तेहा १ दुगध बिभगत करतसब काहीं ॥
पतिकहं प्रीतिभक्ति मनमाहीं ॥ दुगधमंड दीन्योहरषाई ॥ सोअ
सदेखिय्यास दुचिताई २ सारभूतकयवलमोहिदीना ॥ द्वेषआन
संतनसनकीना ॥ परमरोखजुतभाषिस बानी॥ तुवमोहि अधमप्री
तिपतिजानी ३ सार दीन सठ पंकति भेदा ॥ सोमैं सुन्यो संत
मुखवेदा ॥ प्रबल पाप इह रौरवदाई ॥ अबन मंद तोहि होहि
भलाई ४ इह तोविदतसकलजगजाना ॥ एकल बैठिपाकजहि
पाना ॥ अरु विभगत अवसर जहि कीना ॥ पंकति भेद नरक
जगलीना ५ अब तोहि अधम निरत दुरताई ॥ नाहिन उचित
संत सिवकाई ॥ मोरे द्दगन ओट हत भागी ॥ दुरमति होहुवे
गगृह त्यागी ६ पति तृसकार लेत ततकाला ॥ परि हरि सदन
गवनि तबबाला सामाजक जन भवन प्रवीना ॥ बैठी जाय सो
चमनलीना ७निसअपराधि जानि निज काहीं वार अहार कीन
कछु नाहीं ॥ अस प्रकार जुगदिवस विहायो ॥ तृतीयेदिवसस्व
पन निसि आयो ८ कमल नयन वैष्णव इकचारू ॥ भाषत बद
न वचन मनहारू ॥ त्रीय अपराध नहिन कछु कीना ॥ दुगधसा
र तोहि कपट वहीना ९ दीन्यो सरल भाव निज जीके ॥ अब
तुम जानि विप्रवर नीके ॥ करि प्रसन्न संजुत सतकारा ॥ बोलि
लेहु निज ललित अगारा १० जोन करहु तांकर सत कारो ॥

तोनिसचय अस बचन हमारो ॥ अबतें सदन तोर सनमाना ॥ कराहँ नसंत अन्नजल पाना ११ दोहा देखि व्यास वर स्वपन अस ॥ निज पतनी पें आय भाषिस तोहिन दोष कछु ॥ प्रीय तुवसरलसुभाय ॥ १ जानबूझकछुनाकरी ॥ परीसूझ मोहिआन ॥ अबचलहौं निजसदनसुभ ॥ सेवहु संतसुजान २ होहिंअनि च्छनपापजे ॥ उचित निवारनतास ॥ सुनिपति मुखत्रीयवचनअ स ॥ हरषिचली निजवास ३ चौपाई हृदयप्रसन्न पूर्वतलागी ॥ सेवनअताथि संतअनुरागी ॥ तबइकदिवसकालमध्याना ॥ तां करसदनसंतभगवाना १ क्षुध्याव्ययतजूथमालिआपो ॥ व्यासदेखि मानसहरषायो ॥ तासरजानिनिज सदन रचावा ॥ पानिग्रहणनिज सुतासुहावा २ जेंपकवानवरातन हेतू ॥ रहेललितनिरमाण नकेतू तेसंतन कहं दीन जिवाईं ॥ तब वरात दुलहा जुत आईं ३ संतन देखि परम दुखमाना ॥ अब कसवनहिं देव पकवाना ॥ जानिसंत जनचिंतनसोई ॥ बोल्योव्यास हरषवतहोई ४ महारा जअब सोचनकीजे ॥ इह जोइ सेष सदन कछु दीजे ॥ कृष्ण कृपाल पेज रखवारे ॥ अस प्रकार जब व्यास उचारे ५ तब पक वान वरातन काहीं ॥ लागेदेन सकलजहंताहीं ॥ कृष्ण प्रसादपा रनहिपायो ॥ सादिर सकल वरात जिवायो ६ दोहा अस अदभु तहगदेखि निज ॥ सकल लोक विसमाय साधुसाधु असरट मु ख ॥ साधुसदन निजधाय १ चौपाईं समयएक तब व्यास नकेतू

आवा अन्य संतसुखदेंतू ॥ सो अनभिज्ञ लोकव्यवहारू ॥ संतत कृष्ण भक्ति उरधारू १ द्वेदिनरह्योव्यासवरभवना ॥ तीसरादिवस कीनजवगवना ॥ राख्यो व्यासजतनसनमाना ॥ आजनजाहु संतभगवाना २ अस जग भानु लुपत निसिछाई ॥ तव करि यतन ब्यास हरषाई ॥ सालिग्राम सिला तहिझोली ॥ सपदि लीन कल संपट खोली ३ ॥ अति विचित्र प्रभु मूरति जोई ॥ कोनसि लुपत व्यास वर सोई ॥ खग इक धरयो ता स मध्यान्हा ॥ राखि दीन संपट सनमाना ४ उदय अरु ण तव संत सुभागा ॥ प्रमुदित चलन पंथ निज लागा ॥ व्यास दीन कछु भोजन आनी ॥ भाषिस वदन ललित मृदु वानी ५ ऐहिं अभुकथल सलिल सुहंता ॥ चारुचंद्र जोजन पर जंता ॥ तहां सनान करत मन भावा ॥ लेहु भक्त वर भो जन पावा ६ संत सुनत मानस हरषाई ॥ चल्यो करत कल विनय बडाई ॥ तहां जाय संकेतक ठामा ॥ देख्यो जाय द गन अभिरामा ७ करि सनान पावन तन होई ॥ सुंदर नवल कमल दल खोई ॥ राषि पाक नइ वेद सुहावा ॥ भा उद्युग द हरि हि जव लावा ८ तव खोल्यो संपट सनमाना ॥ उ ड्यो विहंग देखि विसमाना ॥ जान्यो सदन व्यास प्रभुधाए ॥ तांकर भक्ति विलोकि लुभाए ९ खान पान तजि धावत आ वा ॥ तासुदीन सब मरम सुनावा ॥ व्यास सुनत मानस हुल

सान्यो ॥ निज कृत कपट देखि मुसकान्यो १० भाखिस जाहु
भवन हरिभाई ॥ देखिलेहुं निज मूरति पाई ॥ ते सुनि भवन देव
जब आयो ॥ सोऊ ललित निज मूरति पायो ११ भाषत
तुमहु देव भगवाना ॥ इहां निवास रुचिर रुचि माना ॥ बो
ले व्यास वदन तववानी ॥ अब तुम इहां वसहुं सुखमानी १२
इह दुसकर भगवान सुहाए ॥ चाहत इहां बसन सुखदाए ॥
ताते वसहुं सदन मोहि माहीं ॥ तब जावो जब भगवन जा
हीं १३ साधु सुनत अस वचन वयासा ॥ तहां कीन निजरु
चिर निवासा ॥ एक दिवस ग्टहतास सुहावा ॥ प्रीक्षाकरन सं
त इक आवा १४ दोहा सब कहं भाषत वचन अस ॥ व्यास
हिं देहु सुनाय ॥ मैंआवा तुवसदन तकि अतिक्षुध्यत अकुलाय
१ चौपाई जो मोहि करहिं तृपत जन व्यासू ॥ कालकलेसन
व्यापहिं तासू॥असजब सुन्यो व्यास ततकाला ॥ गवन्यो लेत
तासु निजआला १ दीन्यों सुचि भोजन सुखदाता ॥ अतथि
कछुक पाय हरषाता ॥ उठ्यों बदन अस गिरा उचारी ॥ उप
ज्यो उदर सूल मोहि भारी २ तब उच्छिष्ठ भोजन जोइतासा
लीन उठाय करन निजव्यासा॥ सो विलोकि मानस विसमा
ना ॥ सादर गहित पानि निजपाना३बोल्यों हरषि वचन अभि

रामा ॥ रहीन मोहिपाक कछुकामा ॥ सुनि संतन मुख सुजस सुहाबा ॥ प्रीक्षा करन भक्त तुवआवा ४ आजसो भयो विदत मोहि भाना ॥ सपनेहुं तोहिन भक्त अभिमाना ॥ मिथ्या उदरसूल मिसकीना ॥ भक्ति प्रभाव रुचिर तुवचीना ५ असप्रकार मुखसंत उचारयो करि प्रणाम निज भव सधारयो इत निज व्यास जाठिरवपुचीन्यो ॥ लीनवुलाय पुत्रवर तीन्यो६तीनभाग निज संपतिसारी ॥ कीनी व्यास भक्त व्रत धारी ॥ एकओर हरिमूरति चारू एक ओर भूक्षण धनसारू ७ संजमंज इक ओरसुहाए ॥ राखि दीन पुत्रन हरषाए ॥ सोअस करि प्रणाम तिन तीन्यो ॥ सादिरभक्ति भाव जुत लीन्यो ८ दोहा असइह भक्त धनडचजग ॥ विदित व्यास हरिनाम ॥ संतन सेवत सुजस जहि ॥ रह्यो पूरि सबधाम १ भक्त सिरोमणि अंत निज ॥ ताजित सुगम कलकाय ॥ मुनि सुर दुरलभ ललित गति ॥ लीन जतन विनुपाय २ इति श्री भक्त विनोद ग्रंथे भगवद् भक्तिमाहात्म्ये हरव्यास चरित्र कथनं नाम सर्गः २६॥

॥ अथ जीव गुसाईं चरित वर्णनम् ॥ दोहा ॥ जो पूरव मै भा
गवत ॥ भने रूप गुणरास ॥ गोस्वामी संज्ञाविदत ॥ जीवना
म सिषतास १ चौपाई राधाकृष्ण रटन मनलीना ॥ करा
मलकवते वदप्रवीना ॥ तत्वज्ञानि कल कीरति गेहू ॥ हारन
हृदय सकल संदेहू १ अवसर एक पाक सुचि काहू
दीन्यो भाक्ति भाव जुत ताहू ॥ भक्त लेत रावि नंदानिवारी
सुमरिकृष्ण उरदानसिडारी २ सिषइक तास देखि असवानी
॥ बोल्यो वदन प्रीति रस सानी ॥ राखिय रहा सेष जोइदे
वा ॥ तुव प्रसाद कछु संतन सेवा ३ इहि सन करहु रुचिर हि
त मानी ॥ गुरुकृपाल बोले तब बानी ॥ तुमरे योग्य संत सिव
काईं॥ हमहुंनजानि परत कै भाई ४ अस सुनि वदन बचन
गुरु देवा ॥ तेसिष भयो संत रत सेवा ॥ हित जुत गुरु कृपाल
तब वानी ॥ सिषहिं रुचिर अस वदन वखानी ५ दोहा ॥ की
जीय गरव न वत्स कछु ॥ भक्त संत सिव काइ ॥ दुरगम सेव
न संतजग ॥ विदत वदन बुध गाइ १ इति भक्त विनोद
ग्रंथे जीवगुसाईं चरित कथनं नाम सर्गः २७ ॥
अथ भगवान चरित वर्णनम् ॥ दोहा ॥ राधा कृष्ण सरोज
पद निरत भक्त गोपाल ॥ सर्व भूत सुहृद रोख गत ॥ सक
ल ललित गुण आल १ भक्त प्रधान सुजान इक ॥ विदत ना
म भगवान ॥ जाहि गुरु भक्ति प्रसाद सिय ॥ राम चरण रति

मान २ चौपाई राम सरूप भक्त उर धारी ॥मथुरा कीन गव न सुभ चारी ॥ राधा कृष्ण दरस तहं देखी ॥ आपन जनम सफल जग लेखी १ अदभुत परम नवल कछु सोभा॥सुर मुनि भक्त संत मन लोभा ॥ सोऊ सरूप भक्त उर धारन ॥ कीन सकल भ्रम त्रास निवारन २ गीत नृत्य रुचि रास रसीला ॥ प्रति दिन करहि कृष्ण कल लीला ॥ एक दिवस तांकर गुरु आवा ॥ तासु विलोकि परम विस मावा ३ राधा कृष्ण उपासिक एहू ॥ बन्यो कीन गुरु हृदय संदेहू तास अंत्र गति गुरु वर पायो ॥ लिए ललित वृंदावन आयो ४ करि प्रणाम जुग जोरत पानी ॥ वदन मधुर मृदुगिरा वखानी ॥ दीन दयाल करुणा सब तोरी ॥ जो अस भई विमल मति मोरी ५ तब गुरु वर अस वदन उचारयो तुव जोइ हृदय भक्त निज धारयो राधा कृष्ण रूप निस कामा ॥ इन कहं जानि ललित सिय रामा ६ ते सरूप निज हृदय जुडाई ॥ भजहुं अभिष्ठ रुचिर फल पाई ॥ हित मय गुरु नदेस अस मानी ॥ राम सरूप कृष्ण कहं जानो ७ दोहा लाग्यो रटन निरंत्र तब ॥ सानु कूले हर षाय ॥ गुरुवर गवने भवन निज सिषते होत विदाय १ इति श्री भक्त विनोद ग्रंथे भगवान चरित कथनं नाम सर्गः २८ ॥ अन्य विठ्ठल चरित वर्णनम् ॥ दोहा ॥ विठ्ठल विपुल

प्रसिद्ध जग ॥ आन भक्त भगवान ॥ दिज वर ज्ञान सुजान ज हि ॥ गुरु सेवन रति मान १ चौपाई कृष्ण सरूप जानि गुरु देवा ॥ मन वच करम करहिं नित सेवा ॥ दैव योग करि गुरु वर तासा ॥ मृत वस भए जीयन तजि आसा १ तेअसदेखि मरण गुरुवारयो ॥शोकअलानजनहु पगधारयो॥ निवसनलागसदन दिनराती ॥ दाहत विरहकठिनगुरुछाती २ लोकतासअपनोदनकारन ॥कृष्णरास लीलामनहारन ॥गएलेतसादिरहरपाई॥ तहांललित लीलासुखदाई ३ दोहा देखिनृत्यकलगीतसुभ ॥ कृष्णविमलगुनगान ॥ गयोकृष्णकलललोककहं ॥ तजि लीलानिजप्राण १ इतिश्री भक्त विनोदग्रंथे अन्य बिठ्ठलचरितकथनं नामसर्गः २९ ॥

॥ अथ चेतनकृष्णचरित वर्णनम् ॥ दोहा ॥ सिषइकचेतनकृष्ण कर ॥ लोकनाथजगनाम ॥ रटतकृष्ण गुणलीनजहि ॥ कृष्णधामअभिराम १॥ इतिचेतनकृष्णचरित कथनंनामसर्गः ३० ॥

अथ मधुस्वामीचरित वर्णनम् ॥ दोहा ॥ अबकछुकरहुं संक्षपत कल कथनमहातमचारु ॥ जाससुनतनरहोहिंजग ॥ मुचितभीत अवभारु १ चौपाई मधुस्वामीअसनामसुहाए ॥भक्त विलक्षणलीगनगाए ॥ मथुरावसाहिंज्ञानगुणधामा ॥ ततपरकृष्ण भक्ति अभिरामी १ तास कथांत्र मध्य सुनिपायो ॥ मथुरा कृष्ण भक्त सुखदायो ॥ सदा करत निज रुचिर निवासा ॥ तव सुभक्त अस कीन

अंजासा २ वनवन कुंजकुंज अनुरागा ॥ कालिंदी हृद सरित तडागा॥ जहंतहं भ्रमतप्रेममनलीना॥ अनवार खोजततजिदीना ३ जुगलदिवसअसतासुविहाया॥ तृतियेदिवसनिश्चलअतिकाया ॥ जमुना तीर वंसिवट काहीं ॥ चल्यो जात चिंता मनमाहीं४ तबमारग मृदुस्याम अनूपा ॥ बालगुपाल रुचिर धृतरूपा ॥नयन नवल जनु कंजन सोभा ॥ भृकुटी कुटिल इंद्र धनु लोभा५ अधर अरुण शुकघ्राण सुहावन॥ कुंडल करन ललित मन भावन ॥ कुंचित कलित चिकुर कचचारू॥ खोर लिलाट पीत पट धारू ६ छविलावन्य मदनमद हारन॥ देखि भक्त असपतत उधारन ॥ प्रेमाकुल मानस हरषाई॥ लीन तुरत निज अंक बिठाई ७ तबभगवान प्रेरि निजमाया॥ मुहृत कीन मानस भ्रमछाया ॥ बोले वदन भक्त सुखदायो ॥कवन हेतु मोहि पकरि विठायो८ कोकर हृदय उपजभ्रम तोही ॥ संतत करहु कथन अवमोही ॥ दोहा तब बोले मधुस्वामि अस ॥ जानि कृष्णजीय माहिं ॥ मैं पकस्या पै अव ऊख्यो गोप बाल तुव काहिं १ चौपाई असकहि दीन तुरत तजि तासा ॥ भए लुपत प्रभु भवन प्रकासा ॥ आगल चल्यो भक्त हरषाई ॥ खोजत विपन भक्त सुखदाई १ तबनिसि समय तासु भगवाना ॥ दीन स्वपन अस वचन वखाना ॥ अब खोजत कानन कसमोही मै गोपाल बाल वनि तोही २ दरसन दीन जवन मनहारी ॥ सोऊ सरूप मोर व्रजधारी ॥ तुव निज

हृदय राखि अभिरामा ॥ बसहीं जाय भक्त ममधामा २ दोहा ॥ देखि स्वपन अस भक्त वर ॥ निज अभिष्ट फल लेत ॥ मथुरा नित्रसत त्रपुषताजि ॥ गवन्यों कृष्णनकेत १ इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे मधुस्वामी चरितकथनंनामसर्गः ३१ ॥

अथ अन्यकृष्णदास चरितवर्णनम् ॥ दोहा ब्रह्मचरयरतरूपसिष कृष्णदासअसनाम ॥ गुरुप्रसादसुमरतकृष्ण ॥ गवनकृष्ण फलधाम इति कृष्णदास चरित कथनं नाम सर्गः ३२ ॥

अथ अन्य नारायण भट्ट चरित वर्णनम् ॥ दोहा ॥ नारायण भट नाम अस ॥ तास रूप सिष चारू ॥ जहि निज भक्ति प्रभा वगति ॥ लीन ललित मनहारू १ ॥ इति नारायण भट्ट कथनं नाम सर्गः ३३

दोहा ॥ कृष्णदास इक आन जग ॥ भए भक्त अभिराम ॥ जहिं निज भक्ति प्रतापतें ॥ लीन कृष्ण कल धाम ॥ इति कृष्णदास चरित कथनं नाम सर्गः ३४ ॥

दोहा ॥ विदत भक्त भूगरभ अस ॥ खानपान तजि जेहू ॥ सुमरि दैव गोविंद जग ॥ सुर दुरलभ गति लेहू १ इति भूगरभ चरित कथनं नाम सर्गः ३५ ॥

अथ मुरारी चरित वर्णनम् ॥ दोहा अति अदभुत असचरज प्रद परम हरष उरदैन ॥ भक्ति महातम ऐनमुद करहुं वदन अबगैन १ चौपाई भक्त सृष्टजगनाम मुरारी विदत रसक सब कहत उचारी ॥ बिरचितास कल कुंड सुहावन भक्त संत चरणोदिक पावनै १ तहां राखि प्रतिदिवस प्रवीना ॥ पानसनान भक्ति मनलीना आनसकल कृत द्वेष विहाई ॥ तहिसन करत भक्त जदुराई २ ॥ अस दुरलभ ब्रततासनवीना ॥ हृदय भक्ति जुत धारण कीना ॥ समय एक तहि सदन सुहावा ॥ गुरु क्षहदिवस रुचिरजब आवा ३ सादिर संत निमंत्रन कीने ॥ आए सकल हरष मनलीने एकसंत अस हृदय विचारी ॥ मै प्रीक्षा अब लेहुं मुरारी ४ तव असंत इक हृदय उमंगा ॥ लावा कपट भाव जुत संगा ॥ तिलकमाल मुंद्रापहिरावा ॥ वैष्णव भेख वसेखबनावा ५ पै तहि गलित राजरुजि देहा ॥ अस सब आयभक्त वरगेहा ॥ सबकहं कीन प्रणाम मुरारी ॥ सिषहि कहिस अस वदन उचारी ६ करि प्रक्षालन संतन चरणा ॥ चरणोदिक पावन दुख हरणा डारहुं कुंड सेष कछुलाई ॥ सिंचन करहुं सीस मोहि आई ७ सिष नदेस गुरु वर असलीने ॥ संत चरण प्रक्षालन कीने ॥ सो पदवार साधु समुदाई ॥ गुरुपै भक्ति पूरवक लाई ८ सीस वपुष सबसिंचन कीना ॥ सादर सेषकुंड धरि दीना ॥ मिथ्या साधु गलित रुज जोई ॥ तहितै अति संकित चितहोई ९ ॥ दोहा कीन नतास सपरससिष ॥ जिय निजमानि गिलानि ॥तब

अस देखि कृपालगुरु ॥ कहिस वदन मृदुवानि १ चौपाई तिल
क मालमुद्रा जहिकाहीं ॥ ते वैष्णव संसय सुतनाहीं ॥ अस वि
चारि संदेह विहाई ॥ तहिकर लाहु चरण जलजाई १ यद्यपि
गुरु कृपाल अस वरना ॥ सिष्य संदेह नहि भयो निवरना ॥ बो
लि लीन तव तासु मुरारी ॥ भक्ति प्रीति संजुत हितकारी २ क
हि कहि वदन वचन मृदु लालन ॥ कीने तास चरण प्रक्षालन
॥ तेपदवार सीस निजधारा ॥ पायस्परस गलित रुजवारा ३ भ
यो विमल कंचन वतकाया ॥ विसमय देखि संत समुदाया ॥ भ
क्त सृष्टकर वदन वडाई ॥ लागेसाधुसाधु मुखगाई ४ असप्रकार
द्वादस दिनताहीं ॥ रह्यो देत भोजन तिनकाहीं ॥ वसहिं संतज
हं वीचआरामा ॥ गवन्यो तहां भक्त अभिरामा ५ करतरह्यो इक
संत सुहावा ॥ धूम पान आश्रम ह षावा ॥ आवत भक्त सृष्ट
कहंपाइं ॥ धूमयंत्र निज लीन दुराई ६ देखिमुरार सोच अस
कीना ॥ इह निज अधम करम जिय चीना ॥ हारन हृदय ता
स संदेहू भक्त कीनकल कौतकएहू ७ मिथ्याउदर सूलमिसलाई
मांग्यो धूम जंत्र अकुलाई ॥ अस जाय जानि साधु दुख
तासा ॥ धूम जंत्र निज दीन हुलासा ८ सादिर भक्त सृ
ष्ट मुख लाई ॥ चलयो तास संदेह बिहाई ॥ अस ज
व कछुक दिवस निकराने ॥ आन संत क्षुध्यत विय ता
ने ९ आय सदन वर भक्त मुरारी ॥ तिनाहिं देखि जाय क्षुध्यत

भारी ॥ बिरचि ललित भोजन सनमाना ॥ बैठारे सब संत सुजाना १० दोहा लाग्यो करन बिभक्त तव ॥ सुचि सिष भक्त मुरारि ॥ बैठ्यो इक पंक्रति रुचिर ॥ साधु दंड कर धारि १ सो भाषत उप करण जुन ॥ प्रथम पाक कल एहु ॥ मोरे दंड हिं देत जन ॥ तव पाछे मोहि देहु २ चौपाइ मै न दंड विनु भोजन करना ॥ अस जव संत वदन निज बरना ॥ तव सिष दीन पाक सव काहीं ॥ संजुत भक्ति हरषि मन माहीं १ ते दुरवाद संत करजानी ॥ दंड हि दीन न भोजन पानी ॥ नाहिंन तास कथन जव माना ॥ तव रिसक्यो जिय साधु महाना २ ते उछिष्ट निज पत्र उठाई ॥ अधर सफुर द ग भृकुटि चढाई ॥ भक्त मुरार सीस सनजाई ॥ हन्यो प्रचं ड कोप अकुलाई ३ धीर धुरिंद्र भक्त भगवाना ॥ ते मुरार मानस मुसकाना ॥ धन्य भाग्य मम आज सुहाए ॥ सादर सीस दगन निजलाए ४ धरत उच्छिष्ट पत्र महिरागा ॥ वहुरि मरम तहि पूछन लागा ॥ तहि वृतांत सब वदन उचारा ॥ सि ष कर कीन विबिध तृसकारा ५ दंड हि तुवन मूढ कस दीना ॥ अस कहि आपु भक्त मनलीना ॥ क्षमा कराय दंड जुत चारू ॥ भोजन दीन भक्त ब्रत धारू ६ संत विलोकि तास अस करनी ॥ निज निज साधु साधु सब वरनी ॥ होत विदाय चले निज भवना ॥ लाजत सोपि संग तिन

गवना ७ अस प्रकार कछुदिवस विहाए॥ गुरु वर तास विदित जोइ गाए ॥ स्यामानंद नाम अभिरामा ॥ तिन कर रह्यो एक वृति ग्रामा ८ सो मलेछ नृप लीन छुडाई ॥ तहि कलेस मानस निज पाई ॥ लेखि पत्र कल बोलि पठाए ॥ ते मुरार सेवक सुष दाए ९ करि भोजन जब सदन प्रवीना ॥ अजहुं वदन शोधन नहि कीना ॥ दूत पत्र तहि अवसर दीनी ॥ चले तुरंत सीस धरि लीनी १० दोहा गुरुपें आए भक्त वर जोरी करन गति दीन ॥ करि प्रणाम पद दंड वत ॥ विनय वदन निज कीन १ चौपाई कवन काज प्रभु जनहिं बुलावा ॥ गुरु वृतांत सव दीन सुनावा ॥ पावा खेद सुनत जीय भारी ॥ आय यमन पुर तुरत मुरारी १ रहे भक्त वर सेवक ताहां ॥ मृत अधिकारि यमन नर नाहां ॥ गुरु हिं देखि मानस अनुरागे ॥ वार वार पग वंदन लागे २ कवन काज भगवन इत आए ॥ कृपा नाथ अब देहु सुनाए ॥ कीन कथन तव वदन मुरारी ॥ सुनि बोले सेवक हित कारी ३ तुव न जाहुं प्रभु सनमुख राजा ॥ हम सव करिहुं नाथ तुव काजा ॥ बोले जनन हरन संतापू ॥ मै जावहुं नृप सनमुख आपू ४ अस सुनि सेवक चले सुधारी ॥ तब मलेछ नृप गिरा उचारी ॥ तुव जन आज वेर कतलावा भृतन

वदन तव विनय अलावा५ आए गुरु हमार नरसाईं तब इह भई वेर हम काहीं ॥ तिन गुरु कर कछु वृतो प्रचारी छीनलीन प्रभु तुव अधिकारी६ सुनि मलेछनृप तिन करवानी बोल्यो हृदय हरष निज मानी वेग लाहु मोहि सनमुखजाऊ मै देखहुं कछु तास प्रभाऊ ७ तिन सुनि लीनतुरत गुरु बोळा ॥ लाए करि अरूढ कल दोला ॥ तव नृप प्रबल मत्य गज चीना ॥ भक्त विट्ठलन द्वारथिर कीना८ आपु उतंग भवन अनुरागा वैठिचरितकलदेखनलागा जब आए हरिभक्त मुरारी॥ अरुन नयन गज परयो चिकारी९ दोला वाह त्रास बसभागे॥ एकल रहे भक्तवडभागे रह्योकृष्ण हरिवदन सुनाता तबासिंधुर आयो मद माता १० सादिरभक्त चरणगत मारवा ॥ नम्रदीन मस्तक निज राखा तास कीन तब भक्त प्रवीना ॥ अमर मंत्र उपदेहन कीना ११ डार्योग्रीव ललित वनमाला धरयो नाम तहि दास गुपाला ॥ भूप देखि मानस विसमायो ॥ साधु साधु सब लोक अला यो १२ निजअनुचित नृप क्षमाकराई ॥ वंदि चरन क रीविनयबडाई ॥ सोवृति देत दीन धनरूरा सादिर करि अभिष्ट सबपूरा १३ द ह. हरषत कीन विदायनृप॥ नं मृ चरण सिरनाइ ॥ हतराजजन गोपालरत ॥ भयोसंत सिषकाइ १ चौपाई वनि वाहन संतन अनुरागा ॥ अस प्रकार पुर विच रणलागा ॥ भूपकाज सब दीनासि त्यागे

सुमरन कृष्ण कृष्ण वड भागे १ धावत वनक टूटट पुर आई ॥ अन्नादिक असलेत उठाई ॥ अताथि संत कहं देत निहारी ॥ नगर वनक सब भए दुखारी २ भक्तमुरार सदन जवआए ताहि कलेस मव दीनसुनाए ॥ भक्त प्रबोध कीन अस आई॥इह कस कीनग्रहण दुरताई ३ रविनु मांगे अस लेननजोगू ॥ करहि तात अपजस सबलोगू ॥ सुनिगोपाल दास गुरुवागा सोकुकरम निज दीन सित्यागा४ इह अदभुत जबसुन्यो दलीसा पठयो बोलितव भक्त गजीसा भृतन वदन अस विनय वखाना ॥ तास अगम संतन विनुआना ५ तव दिल्लीपत साधु पठाये ॥ तेअजास विनुतासु लयाये ॥ देखत साह कीन सतकारा ॥ मधुर भोज्य धरिविविध प्रकारा ६ तास ग्रहण कछु नाहिन कीना ॥अस प्रकार वीतेदीनतीना ॥ क्षुधित देखि साह दुखमाना ॥ गंगवार इहिदेहुंसना ना ७ तव अवश्य कछु करहि अहारा ॥ अस दलीस जब वदन उचारा ॥ साधु अरूढ होन तहि काहीं॥लाएविमल देवस.रि माहीं ८ तहां सनान भक्ति जुतरागा ॥ लाग्यो करण भक्त वड भागा ॥ वहुरि कूलअनुकूल विचारी ॥ चलि आयो वरभक्त मुरारी ९ ॥ दोहा सुमरत कृष्ण कृपायतन ॥ सब करदेखततेहु ॥ गयो कृष्ण कलधामकहं ॥ बिनु प्रयास ताजि देहु १ सुनि दलीस अदभुत

नवल ॥ अतिसेचकत मनमाहिं ॥ लग्यो प्रशंसन विविध विधि ॥ भक्तिमहातम काहिं २ असप्रकार मथुरा भए॥ विपुल भक्त भगवान ॥ जंहनिज भक्त प्रभाव बल ॥ पायोपद निरवाण ३ इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथे भगवद् भक्तिमाहात्म्येमुरारी चरितकथनंनामसर्गः ३५ ॥

अथत्रिलोचन तथा आसादर तथा देवराज चरितवर्णनम्
दोहा भये त्रिलोचन भक्त इक ॥ ससिधर पुरीउदार
आसादर भे बिदत पुनि ॥ देवराज सुखसार १ वैष्ण
वउत्तम भक्तजे ॥ इत्यादिक समुदाइ जांकर कीर्तनसुनत
नर ॥ लेहिं भक्तजदुराइ २॥ इतिश्रीभक्तविनोदग्रंथेत्रिलोच
न तथा आसादर तथा देवराज चरित कथनं नाम स
र्गः ३६ अथ सदना चरित वर्णनम् ॥ दोहा
अति विचित्र मानस हरन ॥ दलन सकल भ्रम भीत ॥भक्ति
महातम करहुं अब ॥ कथन भक्ति जुत प्रीत १ चौपाई भयो
मलेछ वंस उतपन्या ॥ सदना नाम भक्त जग मन्या ॥ पूर्व जन्म
दिज कुल उपजाया ॥ वरजित धरम करम गत माया १ पयपूज
न इक सालिगरामा ॥ व्रत जुत करहिं भक्त अभिरामा ॥ धन
वृद्धो कर लोभ विचारी ॥ महा मलेछ काहू अनिहारी २
रहा सदैव अमुख विकेई ॥ दीन्यो विप्र विविध धन तेही ॥
विपुल वरष अस तासु विहायो ॥ तहि तें वितन विप्र वर पा
यो ३ करत स्मरण अंत धन तेहू ॥ मृत वसभयो, अंत तजि
देहू ॥ होत करम बंधन वस जाई॥ तांकर सदन यमन देहपाई
४ सो अस धनी मांस विक्रेई ॥ मंजुल रूप वंत सुत लेई ॥
दिन दिन करत नेह नव लालन ॥ लाग्यो प्रीति पूर वक पा
लन ५ सदना धर्यो नाम सुभ तवहीं॥ भयो वरष द्वादस कर

जवहीं ॥ पूर्व जनम कर पूजन सेवा ॥ उदय होत भयो देवन देवा ६ सालिग्राम सिला मन भाई ॥ अकसमात पथ कानन पाई ॥ शटक प्रमाण ललित जीय जानी ॥ लावा सदन हरषि सुखमानी ७ तुला धरत इक ओर उमंगा ॥ विक्रह करत अमख तहिसंगा ॥ अधिक न्यून सन एक समाना ॥ तास प्रभाव विदत असजाना ८ आपुकरमाहिंसादि बितासा ॥ भृतनग्रीव दोनसि पासा ॥ जननिजनक बांधव समुदाई ॥ मृतवस भए कालगतिपाई ९ तवस्वतंत्र सवकर वितलीना ॥ वारुणिमत्य जनहुं मदकीना ॥ तहिपेंजगन नाथ दरसाए ॥ अवसर एकवैष्णव आए १० दोहा भिक्षाटनहितएकतव भ्रमत सदन तहि आव ॥ अमख तुलाधृत सिला कल ॥ देषि हृगन पछताव १ चौपाई अति दुखात्र मति संत उचास्यो ॥ इहन उचित कछु काज तुमास्यो ॥ कवहुं कि कृपा सहित मोहि देहौ ॥ आसिष सुखद ललित सुभ लेहौ १ अस जब संत कथन मुख कीन्यो ॥ सदना सिला तुरत तहि दीन्यो ॥ मानहुं सकल भवन वित पाई ॥ लावा निज समाज हरषाई २ पचगव्यादि सनान सुहावा ॥ देत कीन भोजन मन भावा ॥ सुचि नइवेद भक्ति जुत लाई ॥ बहुरि आपु भोजन सवपाई ३ भए निरतानिद्रा समुदाई ॥ तव भगवान भक्त सुखदाई ॥ धरि सरूप वैष्णव निसि माहीं ॥ दीन्यो स्वपन संत जन काहीं

४ रिसकि कठिन मुख वचन अलावा ॥ अरे मूढ जहिं तें मोहि लाबा ॥ तहां देंहुं जडवंग पुचाई ॥ देखहुं नतर प्रात समुदाई ५ होहिं विदत गति कवन तुमारी॥ तुवसमाज सवदेहुं संघारी ॥ अस प्रकार जब भगवन भाखा ॥ स्वपन जानि कछु हृदय नराखा ६ दीननाथ तव बहुरि वखाना ॥ उठ्यो संत मानस अकुलाना ॥ सिष कहं बोलिवदन समुझावा ॥ रहा अमुक जोई सदन सुहावा ॥ ७ तहां जाय संजुत सनमाना ॥ इह तुव सिला देहु भगवाना ॥ततक्षण गुरु न देस सिष पाई ॥ चल्यो लेत प्रभु सिला सुहाई ८ तिन सन जायकथन सब कीना ॥गुरु कहं जथा स्वपन निसि दीना ॥ इह हमार पूजन सइ कारा ॥ करतन देव हरण महिमारा ९ इन कहं अमुखतुला नव जोह॥ लागी अति प्रेयमानस सोई ॥ कूहन ताऊ देव मन माना ॥ इन कर एहु सनातन वाना १० जब जब राम कृष्ण भे छय्या ॥ तब तब रही झुलावति मय्या ॥ सोऊदेवसुखमानि सुहाए ॥ इहांआयतुवतुला झुहाए ११ अस प्रकारसिषवदनउचारी॥ दीनसिसिला ललितमनहारी॥ जबअस सुन्योकथनसिषवदना ॥ उठ्योजागसोवततव सदना १२ ज्ञात भान जनु हृदय प्रकास्यो ॥ मतसर कुमति उलक तम नास्यो ॥ भूषण वसन सदन विनजेहू ॥ लग्यो विभगत करन सबतेहू १३

दोहा दीन जनन कहंदेत सब ॥ आपु दीनवत होय ॥ तिन सं

तन सन लागि अस ॥ चल्यो सदन सुख खोय १ चोपाई अ
सप्रकारसंतनवतभययै॥ मारगचलतकाहुथलगययो ॥ तहां भक्त
भिक्षाटनहेतू ॥ गयेग्रामइक धनीनकेतू १ राधाकृष्णसुनतअसवा
नी ॥ जुवतीएकमानरतिहानी ॥ तासबिलोकि रूपअनुरागी ॥ वं
दनवचनमृदुभाषनलागी २ अहोसंतमुद्रातुवनीके॥ लागीअतिसे
मोरप्रीयजीके ॥ अवनजाहुतजिमोरअगारा ॥ इहांरुचिरहितहो
हितुमारा ३ भूरिद्रव्यतुवभोगनजोगू ॥ होहुंप्रसन्नविगतदुखसोगू
करमवचनमनमैत्रीयतोरी ॥ इहतुवकरहुंकामफुरमोरी ४ सदनासु
नतवचनअसतासा ॥ विदतदेनजनुनरकनिवासा ॥ बोल्योइहग
रहितकसवानी ॥ मातुसुंफुटतुववदनवखानी५ सुखसमूहसंपतिध
नधामा ॥ मोरेहृदयनहिनकछुकामा ॥ तुव निज पंति संजुत अ
नु रागी ॥ वसहु सदन अस दुरमति त्यागी ६ हित मय सुन
त वचन अस तेहा ॥ भईविरामनहिनअगगेहा ॥ तबसदनासुख
कृष्णउचारी ॥ बहिरसदनतहिचल्योसधारी ७ कीन्योतबचितनजी
यभामा ॥ राखहुंकवनजतनइहिधामा ॥ पतिभयप्रबलसकुचजिय
एही ॥ तांतेहननउचितअबतेही ८ असविचारिपापनिहतभागी
॥ तृणवतपतनिधरमजीयत्यागी ॥ खडगलेतकरसोवतजाई ॥ रि
समतिकाटिसीसपतिलाई ९ तासुदिखायवदनअसवरनी ॥ देख
हुरसकमोरकलकरनी ॥ मैतुमाराहितमानसमानी ॥ डारघोकाटिसी
सपतिपानी १० निरभयवसहुसदनदुखखोई ॥ अवतुमारमनवांछ

तहोई ॥ सदनासुनतदुखतअकुलाई ॥हाहाकारिमुखचल्योपराई
११ दोहा जोअधमनिअपराधबिनु ॥ हन्योप्राणपतिएहू ॥ तोनि
सचयमहिवधनकर ॥ पापनिकवनसंदेहू १ चौपाई असकहिच
ल्योभीतवसभागी ॥ देखिअधमतहिपाछिललागी ॥ स्वरमयकर
तरुदनरिसकाई ॥ सामाजिकजनलीनबुलाई १ सबकरकहिसवद
नअसवरनी ॥ देखहुविदतदुष्टकरकरनी ॥ सोवतसदनचौरपतिमा
रा ॥ असप्रकारजबतासउचारा २ लोगनपकरिकीनतृसकारयो॥
पदकरबांधिविविधविधिमास्यो ॥ नृपपैंलायकरमदुरतासा ॥धनक
वधनसबवदनप्रकासा ३ हन्योनभूपसाधुजीयजानी ॥ दीननदेस
छिदनपगपानी॥ तवचांडालजुगलकरतासा ॥ छेदितुरतपुरबहिर
निकासा ४ पूर्वकरमफलहृदयविचारी ॥ तिनसंतनसनचल्योल
धारी ॥ यद्यपिकरहिविविधतृसकारा ॥ तद्यपिरहैंमौननिज
धारा ५ छिन्नहसतभिक्षाटनकरमा ॥ करतकरतअस
भक्तसुधरमा ॥ सुमरतदेवजननसुखदायो ॥ मंजुलजगनना
थ पुरि आयो ६ तव निसिस्वपन पुजारिन काहीं ॥ अस
दीन्यो प्रभु त्रिभुवन साईं ॥ छिन्न हसत इकसंत सुहावा
॥ संत नसन मोरे पुरआवा ७ तांकर दोलारूढ कराई ॥ इ
हां लाहु मोहि सनमुखजाई ॥ पूजक स्वपन देखि हरषाए
खोजत छिन्न हसत पैं आए ८ प्रभु नदेस सबदीन सुनाई
दोलारूढ होहुतुवभाई ॥ सदना विनय बदनतब कीना ॥

नहिन योग्य इहि बाहन दीना ९ दरसन हेतुदैव सुखदाइं पाइक चलहुं सीसबलभाई ॥ तव पूजिक हठ कीन अपा रा ॥ भनत अंत सदना अनहारा १० जोरि जुगल निज दंड सुहाए ॥ बारबार चरनन सिरनाए ॥ मोहि अनुचित अब क्षमहु सुभागी ॥ इह लघुता निज सकहुं नत्यागी ११ दोहा अस प्रकार जब दंड जुग ॥ जोरि बिनय तहि कीन ॥ तव उपजेइरि कृपातें ॥ करवर जुगल नवीन १ भक्ति प्रभाव विलोकि अस ॥ लोक सकल विसमाय ॥ तवसद ना सादिर सदन ॥ जगननाथ प्रभु आय २ तहां निबासि कछु दिवसजन ॥ गवनि धरण वृज चारू ॥ लाग्यो सुमर ण दिवस निसि ॥ कृष्ण भक्त ब्रतधारू ३ विनु प्रयास तजि अंत वपु ॥ भक्ति प्रसाद प्रवीन ॥ मुनि सुर दुरलभ ललि त गति ॥ कृष्ण कृपातें लीन ४ ॥ इति श्री भक्तबिनोद ग्रं थे भगवद् भक्ति माहात्म्ये सदना चरित वर्णनं नाम सर्गः १७

अथआन भक्त चरितं कथ्यते ॥ रोडाछंद दयाराम अरुराम दासजातिराम सुहाए॥ नामदास अरुस्यामदास बिमला नंदगाए ॥ अह्लहाद जनपदम दासहरि भक्त प्रवीना ॥ दासमनोरथ आदिसकल भगवन पदलीना १ दोहा इहसब भक्त प्रसिद्ध जग ॥ जाहिं निजभक्ति प्रभाव ॥ अतिअगाध भवसिंधुइह ॥ दीन्यो चरवकनाव १ इति पूर्वोक्त भक्तचरितं नाम सर्गः ३८ ॥

अथखोजी चरितं ॥ दोहा मोदभरन मंगलकरन ॥ भक्तिमहातम एहू ॥ करहु जथामति कथनकछु ॥ हृदयहरणसंदेहू १ चौपाई रहाभक्तसयम अभिरामा ॥ खोजीनाम विदत गुणधामा ॥ सद्दस कृष्ण जानिगुरुदेवा ॥ मनवच करम करहिं नितसेवा १ गुरुकृपाल असलोगनगाए ॥ पारगामि आगम समुदाए तृवधकालगति जाननहारे ॥ सरवभूत सज्जन हितकारे २ अवसरएक तिनहं मनभावा ॥ अतिउतंगकल घंट बंधावा ॥ सबकहं दीनवदन समुझावा ॥ अवप्रसथान समयनियरावा ३ जोमोहि मृतपाछिल जन आए॥ कृष्ण दूत लैजाहिं सुहाए तोइह अकसमात सवजानो ॥ करहिं घंट कलसब्द महानो ॥ ४ ॥ जोरव भयो घंटअसनाहीं ॥ तौमैजाहुं आनथलकाहीं ॥ असप्रण सनत लोकअनुरागे ॥ तासमरन अवसेरनलागे ५ तवखोजी निज सेवककाहीं ॥ गुरुवर वहिरग्रामइकमाहीं ॥ कछुकारज हितदीनपठावा ॥ आपुचले परलोकसुहावा ६ आम्र विटपतर

सिषगण आई ॥ तबमंडलि अंडनविरचाइ ॥ लेपनदेत कुसादि विछाए॥गुरुकहं अंतकालतहं लाए ७ उर्ध्वदृष्टिदेखतगुरुदेवा॥ सहजहिं तजेप्राणमृत लेवा॥घंटानाद विलोकहिं लोगू॥सोनभयो तब मानि अजोगू ८ गुरुकहं दीन सिषन तबदाहा॥दूसरदिवस खोजिउतसाहा ॥ गुरुमृतसुनतधीर उरत्यागा ॥ रुदनकरन दीरघ स्वरलागा ९ तबलोगन करिवदन प्रबोधू ॥ कीन्यो शोकप्रवाह निरोधू ॥ घंटनादबूझत अभिलाषा॥ सोनभयो सब लोगन भाषा १० दोहा तेपूछत मृतकाल तुव ॥ गुरुकितथल पौढाय ॥ अधो आम्रद्रुमअजर निज ॥ सिषगण दीनसुनाय१विगत अछादनऊ धोमुख ॥ ॥ कुसुम कुसादि विछाय ॥ तबसहजाहिं गुरुदेवनिज ॥ विनुअजास तजिकाय २ चौपाई सुनि खोजी तिनकरअसवानी ॥ अतिविसमय मानस निजमानी ॥ जहि सथान गुरुवर मृत पाई ॥ पौढयो उधोबदन तहंजाई १ साखासिखर आम्रतरकोरी ॥ देखनलग्यो दृष्टिदृगजोरी तहां पक्कफलआम्र निहारा ॥ उठयो करत निज हृदयविचारा २ तहिपें चढयोजाय वृतधारी ॥ लेततासुजबतुचाउतारी ॥ अलपमध्यतहि कीटरसाला ॥ देखतभयोलुपत ततकाला ३ घंटसबदतव भयोप्रचंडा ॥ मानहुं सकल लोकमनभंडा ॥ पूछत लोकसुनत समुदाई ॥ इहगुरुमृतकसकलिविहाई ४ वाज्यो आजनरमहमकाहीं ॥ सज्जनजानि परतकछुनाहीं ॥ तवखोजी निज हृदय सचेतू ॥ लाग्यो कथनकरनस

बहेतू ५ गुरुमनलग्यो आम्रफलएही ॥ भयो सिकोट जीववरते
ही ॥ भोग्यो तासुआज निकसाना ॥ तबसानिद्धताइ भगवाना
६ लीनसि तासजीव गुरुदेवा ॥ घंटसवद असभयो अभेवा ॥
जांकाहोत अंतमतजोई ॥ संततलेतसंत गतसोई ७ ज्ञाननिधान
सृष्टगुरुदेवा ॥ देखहुंकवन कीटगति लेवा ॥ आगमनिगमकह
त समुदाई ॥ संसृति प्रवल वासनाभाई ८ तातेइहसबविषय वि
कारा ॥ जीतन जोग्यऐहि संसारा ॥ जहिनिजहृदय मोक्षरुचि
माना ॥ तिन कहं एहु उचित निसि भाना ९ आन ओर सबवृ
ती विसारी ॥ लागे रहैं चरण गिरधारी ॥ सुनत लोग असमा
नस रागे ॥ साधुसाधु सबभाषनलागे १० दोहा असप्रकार करि
परसपर ॥ वचनअलाप सुहाय ॥ तवसुमरत उरकृष्णसब ॥ निज
निजसदनसधाय १ इतिश्री भक्तविनोद ग्रंथे भगवद्भक्तिमाहात्म्ये
खोजी चरित वर्णनं नाम सर्गः ३१ ॥

॥ अथरंकावंका चरितं ॥ दोहा अबमंजुलमन हरनकल ॥ कथा स्रवणसुखदान ज्ञानप्रकासन करहुंकछु ॥ कथनदलिन अभिमान १ चौपाई पुंडरीकपुरविदत सुहावा ॥ रंकानामसूद्रइकगावा ॥ वंकातासपतनि मनभाई ॥ अग्रगन्य पति देवतगाई १ तिनकरपू वंपुण्यउदताना ॥ उपजीहृदय भक्तिभगवाना ॥ जथालाभ संतुष्ट विचारी॥ काननजाय जुगलव्रतधारी २ इंधनसुषकलेतपुरआई॥ विक्रहकरत भक्तिसरसाई ॥ ताकरमिलाहिं अन्नकछुजोई ॥ पावत करिविभगत जनसोई ३ असप्रकारव्रतधारण कीना॥ विट्ठलदेवर टनमनलीना ॥ सेवतअतिथि संतगतसंका॥ रंकाअनुगामनि कल वंका ४ असतिनकरव्रत रुचिरसुहावा ॥ नामदेवकरमानस भावा ॥ नंमृत जोरिकरन अनुरागे ॥ विनयकीन असभगवनआगे ५ रंकावंकाजन निजकाहीं ॥ देहुविपुलधन त्रिभुवन साईं ॥ तवस्व पने प्रभु भक्त उवारे नामदेवकहंसुफुटउचारे६जबइहप्रातजाहिं वन काहीं ॥ मिलिहैं तहां द्रव्य इनकाहीं ॥ तुम काहू वैष्णव सनजाइं ॥ इत कहं करहु विलोकन भाई ७ दोहा नाम देव भगवान अस ॥ सुनिन देस सुखदाय ॥ तिन तें पूरव जाय वन ॥ रह्योसि द्रुमन दुराय १ चौपाई मिल्यो एक वैष्णव वन काहू ॥ नामदेव सन भाषिस ताहू ॥ देखहु तुमहुं भक्त भगवाना ॥ रंक बंक इह जुगल सुजाना १ मै इन कहं वित देबन लागी॥ आवा इहां सदन निज त्यागी ॥ सनमुख देन उचित पै नाहीं

॥ अस बिचारि निज मानस माहीं २ हमतुम रैहुं लुपत इत ठाहीं ॥ इनहित राखि द्रव्यमग माहीं ॥ इह निज कराहिं कव न चतुराई ॥ दंपति उभय बिपन इत आई ३ अस कहि रा खि द्रव्यमग सोई॥ वैठै मौन लुपत गति होई ॥ तब पूरव रंका वन आवा ॥ मारग देखि द्रव्य बिसमावा ४ तृणसमान लखि आगल धावा ॥ करि विचार पुनिपाछिल आवा ॥ लाग्यो क रन अछादन धूली ॥ तब वंका मानसमुद फूली ५ आई पति हिं देखि अनुरागी ॥ काह करहु इहपूछन लागी ॥ तब रंका अस वदन उचारा ॥ इहां विपुन वित पस्यो अपारा ६ इहि कहं देखि विपुल दुखदाई ॥ उपजत हृदय लोभ अधिकाई ॥ अस विचारि मानस निज नेहा ॥ करहुं अछादन मेदनि एहा ७ तब वंका अस वदन वखाना ॥ इहिते अरथ सिद्ध पति प्रा नो ॥ होहिं कवन संसार सुहावा॥ सुनि रंका अस प्रकट अला वा ॥८शोक मोह मुदकोह महाना ॥ इहि विततें उपजत फल नाना ॥ पिता पुत्र पतनी पति जोई ॥ भ्राता भ्रात परसपर दोई ९ इह सब कहं संस्रति दुखदाई ॥ काटि काटि मरहिं क लह सरसाई ॥ भामनि सत्य नहिन संदेहू ॥ विदत भक्ति मग कंटक एहू १० वंका सुनत वेग अकुलानी ॥ पति कर गहित पान निज पानी ॥ चली सिंघ जिमि त्रासमनाइन ॥ करनिवि थत वनहीहिं पलायन ११ दोहा तब वैष्णव जुत देखि अस ॥

नामदेव विसमाय ॥ वदन प्रसंसत विविध विधी ॥ विपन अग्र पथआय १ सुशकभार इंदन विराचे ॥ धरिस पंथ लुपतेहू ॥ विनुस्रम कबहुं किलीनइन ॥ विपुल महातम एहू २ ॥ चौपाई जब रंका वंका अवसेषा ॥ पस्यो भार इंधन मगलेखा ॥ काहु जतन जुत संचित कीना ॥ परिस्रम हृदय गुनत नहि लीना १ आपन लेत चले पुरधाई ॥ सुमरत हृदय जुगल जदुराई ॥ वैष्णव नामदेव तवनोके॥ करि करि विपुल सोच निज जो कें २ वित वर वसतु वसन गृहमाहीं ॥ सादिर आयदेन तिन काहीं ॥ वंका देखि क्रोध भरिनयना ॥ बोली वदन कठिन अस वयना ३ लेहु उठाय वसन वितकाहीं॥ इह कत धरयो सद न मोहि माहीं ॥ नतर अबहिं दुरवाद उचारी ॥करहुं आन कछु दसा तुमारी ४ लगेसो करन नम्र मनुहारा ॥ तब वंका निज पतिहिं उचारा ॥ दीना इनहुं नाथ दुखआई ॥ हमहुं चलव अब सदन विहाई ५ अस कहि पतिहि लेत रिसपागी ॥ आई सदन बहिर वडभागी ॥ नामदेव जुत जतन अपारा॥ राखे कर अनेक मनुहारा ६ तिन कर देखि विवध हठकीना ॥ रंका एक अलपपट लीना ॥ आन वसन पटदीनसि फेरी ॥ नामदेव अस अदभुतहेरी ७ तिनकरभाक्ति अलौकिक रागा ॥ वारवार मुख वरणन लागा ॥ ललित रूप वर वैष्णव धारी ॥ कृपासिंधु प्रभुभक्त उवारी ८ देखिभक्त निज भक्ति सुहंता ॥ भएप्रसंन वदन भग

वंता ॥ मोर भक्त कर लक्षणएहू ॥ कहत वदन असदीन सनेहू ॥ ९ ॥ अस प्रकार इह चरित सुहावा ॥रंक वंक दंपति मन भावा ॥ जो लो रहे जियत संसारा ॥ रहे भक्त वर विगत विकारा ॥ १० ॥ सोरठा अंत तजत निजकाय ॥ सुमरत विठ्ठल दैव प्रभु ॥ लीर्ह परमपद पाय ॥ भक्ति प्रसाद अजास विनु ॥ १ ॥ इति श्रीभक्तविनोदग्रंथे भगवद् भक्ति माहात्म्ये रंका वंका चरितं वर्णनं नाम सर्गः ॥ ४० ॥

अथ लक्ष्मण चरितं दोहा लखमनदास प्रसिद्ध इक ॥ निपुण भक्त भगवान ॥ जाहि देख्यो निज भक्ति वल ॥ जग कर वदर समान ॥ १ ॥ इति सर्गः । ४१ ॥

अथ लड्डू भक्त चरितम् । दोहा लड्डू भक्त विचित्र इक । भक्त सिरोमणि गाय तिन कर अति पावन कथा ॥ सुनहुं श्रवण सूखदाय ॥ १ ॥ चौपाई भ्रमत भ्रमत तीरथ थलचारू ॥ आवा एक नगर मनहारू ॥ ते पुरकर नृपजे अविलंवा॥इष्ट देव ता कर जग दंवा ॥ १ ॥ तहां नदेस पायनरराई ॥ प्रतिदिन दोहिं मनुज बालि आई ॥ जहि गृह आय भक्त व्रतधारी ॥ तहि दिन रही तास बलिबारी ॥ २ ॥ ते सठ साधु सरल चित जानी ॥ पकरत भक्त स्त्रष्ट कर पानी ॥ गयो लेत सनमुख नरराई ॥ भाषिस महाराज बलि आई ॥३ ॥ तव नरेस मानस अभिलाषा ॥ बलिकहं देखि वदन अस भाषा॥ वेग जाय अब करहु तयारी ॥ चले सो लेत तुरत अधिकारी ॥ ४॥ दोसनान पावनतन कीना ॥ बाधक बहुरि खडक कर लीना ॥ सन्मुखभवन हरषि मननाहीं ॥ लागे वधन भक्त हरि काहीं ॥ ५ ॥ कृष्ण दासतव हृदय विचारयो ॥ जो इक मोर वधकतें सारयो॥ आनजीब कर होहिं भलाई ॥ तो अब वधन विलम कत लाई ॥ ६ ॥ अस कहि भक्त मोन अनुरागा ॥ कृष्ण सुमरण करन उर लागा॥ तब भगवति मूरति मध्याह्ना ॥ उपाजि एक कल मूरति आना ॥ ७ ॥ गहित तुरंत वधक असि पानी ॥ अरुननयन दारुणरिसवानी ॥ बोलि वदन धरि खडग प्रहारयो ॥ काटत बधक सीस महि डारयो ॥ ८ ॥ भूप समेत लोक समुदाई ॥ विकल

आस बस चले पलाई ॥ भक्त सृष्ट मानस थिर होई ॥ सनमुख देखि युक्त कर दोई ॥ ९ ॥ वदन वर्नीत मधुर मृदुवागा ॥ लग्यों करन असतुति अनुरागा ॥ तव प्रसन्न मन मातु भवानी ॥ बोली जनन सुखद मृदुवानी ॥ १० ॥ दोहा मांग मांग अब भक्तवर ॥ नहि अदेव कछु तोही ॥ तव बोल्यो मोदक भगत ॥ तुव प्रसाद सब मोही ॥ १ ॥ पै इक करहु विनंति अब ॥ कृपा नकेतनि मातु ॥ इह नर बलि ताजि लेहु नित ॥ पायसादि सुखदातु ॥ २ ॥ एव मस्तु अस मातु कहि ॥ पुनि भाषित कछु आन ॥ मांगहु वर मोहि भक्त तुव ॥ अति प्रसन्न जीयजानं ॥ ३ ॥ जे प्रसन्न अस जननि तुव ॥ तौ वर दूसर एहू ॥ उपजहि अवरिल भक्ति जुत ॥ कृष्ण चरन मोहिनेहू ॥ ४ ॥ सत्यसत्य अस वदन कहि ॥ भगवति भक्त उवारि ॥ होत अंत्र गत सुखद जन ॥ निजवर भवन सधारि ॥ ५ ॥ चौपाई भक्त सृष्ट तहं विचरन लागे ॥ कृष्ण चंद्र चरणन अनुरागे तव सुर असुर सकल जग सेवी ॥ नृप कहं दीन स्वपन असदेवी ॥ १ ॥ अब तें तजहु मनुज बलिराई ॥ पायसादि मोहि देहु सुहाई ॥ देखि स्वपन अस भूप प्रवीना ॥ भोरहिं गवन भक्त पें कीना २ जुग कर जोरि चरन सिरनाए । सेवक बन्यो भक्ति सरसाए ॥ तबतें जानि मनुज वध हानी ॥ पाय सादि बलि देहि भवानी ३ दोहा देखहुं भक्ति प्रभावतें ॥

निपुण भक्त जदु राइ ॥ करि प्रसन्न जग जननि कहं ॥ नर वध दीन छुडाइ १ इति श्री भक्त विनोद ग्रंथे भगवद्भक्ति माहात्म्ये लडू चरित वर्णनं नाम सर्गः ४२ ॥

अथ संत राम चरितम् दोहा संत राम इक विदत जग॥ भक्त निपुणभगवान ॥ जाहि सेवत संतन दिवस ॥ रजनि रुचिर हितमान १ ॥ चौपाई भिक्षाटन करि धरम सुहावा ॥ करहि तोष संतन मन भावा ॥ जांके अस रुचि रुचिर सनेहा ॥ जाहिं संत जनि क्षुध्यत गेहा १ समय एक ग्रां मंत्र सुभागी ॥ कीन गवन भिक्षाटन लागी ॥ पाछल क्षुध्यत विथत सरीरा ॥ आवा सदन संत मति धीरा २ ताहि भामनि कहं पूछन लागा ॥ गवन्यो कहां भक्त बड भागा ॥ ते सुनि परम कोप वस होई ॥ निष्ठुर वचन कहत जनु रोई ३ गयो चुल्ह अस भक्त तुमारा ॥ अस प्रकार जब भाम उचारा ॥ चित उद विगन वचन अस तासा ॥ चल्यो सुनत फिरि संत निरासा ४ आवत मिल्यो तास त्रीयनाहां ॥ क्षुध्यत देखि संत मग माहां ॥ करि प्रणाम अस विनय उचारा ॥ चलहु सदन करुणाय अगारा ५ सु संतत करहुं संत सुखदाई ॥ जथा वनाहिं पूजन सिवकाई ॥ सुनत संत अस वदन बखाना अब तुव सदन उचित नहि जाना

६ त्रीय तुमार अस बदन अलाई ॥ चुल्ह मरम सब दीन सुनाई ॥ कारनि कलह करकसा भारी । संतराम तव गिरा उचारी ७ ताकर कथन सत्य सब साधू । तुमहिं भयो कछु हृदय प्रमादू । निसचय चुल्ह सिद्धि करकारण ॥ मै इह कीन विपुल श्रम धारण८तांते चलहुं संतममगेहा ॥ परिहरिहृदयसकलसंदेहा ॥ असप्रकारमुखवचनअलाना ॥ लावाभक्तसदनसनमाना ९ यथा उचित जुत प्रीति सुहावा ॥ खान पान सब दीन करावा त्रीय जुत करि प्रणाम हरषाए॥ बहुरि संतवर कीन विदाए१०दोहा तबते संत प्रसाद सुभ ॥ संतराम सुचिधाम ॥ भयो नखय अन्नादि कछु ॥ धनि समान अभिराम ९ इति श्रीभक्तविनोद ग्रंथे भगवद् भक्ति माहात्म्ये संतराम चरित कथनं नाम सर्गः ४३ ॥

अथत्रिलोक चरितम् ॥ दोहा रामचरणरति रैनसुभ ॥ संसयतिमिरविनासि ॥ करहुंमहातमकथनअव ॥ निजमतिजथाप्रकासि १ चोपाई स्वर्ण कार इक विदत महाना ॥ नाम त्रिलोक भक्त भगवाना ॥ घटतअलंकाराहिसुहाए ॥ जथालेतबेतनकछुपाए १ करतसंतसज्जनसिवकाई ॥ भोजनादिअसदेताजिवाई ॥ संतसरोजचरणानितनेहू ॥ विषयविरक्तभक्तवरतेहू २ समयएकतहिपूरकरराऊ ॥ भयोरचतनिजसुताविवाहू ॥ घटनआभरनहेतुसुहावा ॥ स्वरणकारतिरलोकबुलावा ३ हेमरतनसुभ्रतकलनाना ॥ देततासुनृपवदनवखाना ॥ सीध्रघटहुभूषणासुभभाई ॥ लेतसदननिजचल्योस

धाई ४ धरिमंजूखललितउतसाहा ॥ आपुसंतसेवनरतराहा॥ घटनआभरनहृदयभुलाना ॥ जुगलदिवसजबसेषरहाना ५ तबनरेस तहि बोलिपठावा ॥ जानिअकाजत्रासवसआवा ॥ देहु आभरन भूप उचारा ॥ तब त्रिलोक करि हृदय विचारा ६ भाषिस रहत सेष कछु राई ॥ तृतीए जामदेहुं सबलाई ॥ अस कहि सदन भीतवस आयो ॥ गुनत सेष जुग दिवस रहायो ॥ ७ अब कसबनाहिं आभरननीके ॥ करि करि सोचभक्त निजजीके ॥ परि हरि सदन विपुन थलजाई ॥ रह्यो उरपि निज वपुष दुराई ॥ ८ ॥ सुमरत हृदय भक्तभयहारे॥ कृपा नकेत जनन रखवारे ॥ शोक विमोचन सोच वसेषी ॥ दैव त्रिलोक भक्त निज देखी ॥ ९ ॥ स्वर्न कार तहि रूपधराए ॥ नृपकहं देन आभरन आए ॥ मणि गण जटित विभूषण नाना ॥ राखे अग्र भूप सनमाना ॥ १० दोहा अलंकार दृग देखि नृप ॥ अदभुत नवल प्रकारू ॥ जटन घटन लाग्यो करन ॥ कथन वदन मनहारू ॥ १ ॥ चौपाई वार वार अस भूप सिहाई ॥ पारि तोष कललीन मंगाई ॥ देत त्रिलोक रूप कर ताहां ॥ कीन विदाय मुदित नरनाहां ॥ १ ॥ छितपत दीन द्रव्य कल जोई ॥ आए लेत भक्त गृह सोई ॥ साधू अतिथि दीन जनजानी ॥ कीनविभगत भक्त हितमानी ॥ २ ॥ बोलि संत सज्जन जन जाती ॥ व्यंजन विरंचि पाक वहु भाती ॥ सादिर सवकहं दीन जिवाए

उतसव रह्यो भक्त गृहछाए ॥ ३ तब जान्यो जीयभक्त उधारी ॥ क्षुध्यत विपन भक्तममभारी ॥ जास हेत सब कौतुक कीना ॥ अस कहि चले हरन दुखदीना ॥ ४ ॥ साधु रूप धृत कानन आए ॥ तासु वदन अस वचन अलाए ॥ तुवकस इहां लुपत जनराहा ॥ सदन तुमार रुचिर उतसाहा ५ जेवत साधु संत स मुदाई ॥ मोदप्रमोद कहिन कछु जाई ॥ मेहुं लीन भोजन कछु एहा ॥ होत विभगत रुचिर तुवगेहा ६ तुम क्षुध्यत मोहि जानि पराए ॥ ताते लेहु भक्तकछु पाए ॥ बहुरि जायनिज सदन सुहावन ॥ देखि लेहु उतसव मनभावन ७ अस सुनि लेतपाक हरषाई ॥ पावा कृष्ण चरण सिरनाई ॥ डरपत बहुरि सदन निज आवा ॥ देखि ललित उतसव विसमावा ८ पूछिस निज भामनि सनएहा ॥ भयो कवन कल मंगल गेहा ॥ त्रीए सुनत मानस विसमानी ॥ बोली वदन आत्र वतवानी ९ कामति अतपघाम वौरान्यो ॥ जोपति हृदयभ्रांति अस ठान्यो ॥ नृपतें पारि तोष तुव लावा ॥ आपु वैठे सबपाक रचावा १० अतथि संत दिज जानि जिवायो ॥ दैवित वसन सुजस सुभपायो । तब त्रिलोक मानस निज जाना । इह सब कृपा कीन भगवाना ११ दोहा तबतें दिन दिन अधिक नित ॥ कृष्ण कमल पदनेहू ॥ लग्यो करण दृढ भक्ति जुत ॥ परि हरि हृदय संदेहू १ देखहु दीनन दयाल प्रभु ॥ कान करहिं संसार ॥ भक्त हेत लीन्यों रुचिर ॥ स्व

रणकार वपु धार ॥ २ ॥ इति भक्त विनोद ग्रंथे भगवद् भक्ति माहात्म्ये त्रिलोक चरितं नाम सर्गः । ४९ ।

॥ अथ वक्ष्यमाणभक्त चरितम् ॥ दोहा ॥ अस प्रकार संस्रति विदत ॥ आन भक्त भगवान ॥ नाम मात्र तिन कर कथन ॥ क रहुं स्रवण सुखदान १ रोडाछंद सोमदास अरुदास भीम देवानं द नामा ॥ भक्तात्रिविक्रम दास रूप दामोदर रामा ॥ नर हरि भ क्त मुकुंद दास रघुनाथ सुजाना ॥ नंददास अरुनंद छेत्र उद्धव गु णखाना १ दासमुकुंद गुपालदास श्रीरंगसुहाए ॥ वृद्धव्यास हरि दासदुदभोलाजगन्नाए ॥ जगनविठ्ठलाचारिबाल्मी की अभिरा मा ॥ भक्त द्वारका दास दास माधव गुण धामा २ लाक्षा भक्त गणेश नर हरी मंडिन चारू ॥ भक्त कपूरी विष्णुदास श्रौतम ब्रत धारू ॥ संतराम लोहांग दास भगवान सुहावन केशो केशव भद्रनाथ गजपति जग पावन ३ भीमा क्षेमा

ब्रह्मचारि जड भरत उदारू ॥ बाल कृष्ण गोविंद कृष्ण चेतन प्रभु चारू ॥ बाल कंध्र गोपाल भक्त भगवान प्रवीना ॥ क्षेमा भक्त प्रयाग भागवत संस्रति चीना ४ दोहा गोपिनाथ पाचिक विदत निपुण भक्त जदु राय ॥ दास मुकुंदा जास जग ॥ र ह्यो सुजस सुभ छाय १ इति भक्तविनोद ग्रंथे भगवद् भक्ति माहात्म्ये पूर्वोक्त भक्त चरितं नाम सर्गः ॥ ४५ ॥ ॥ अथ भक्त चरितं ॥ दोहा ॥ रुद्र प्रताप प्रसिद्ध इक ॥ नीलाच ल कर राय ॥ तांकर कृष्ण चिंतन प्रभु ॥ गुरु वर संस्रति गा य १ चोपाई एक दिवस नर नाथ सुजाना ॥ गुरुपें गवन हरष जिय माना ॥ हैगैवाहन सकल समाजा ॥ आयो लेत ललित निज राजा १ गुरु विलोकि अस हगन रिसाए ॥ स फुट वदन निज वचन अलाए ॥ होहुं नमोहि सनमुख हत भा गी ॥ अबतें दीन दरस तुव त्यागी २ यद्यापि काहिस नृप ति जन भूला ॥ तद्यापि गुरुन भए अनु कूला ॥ तब नरेस दारुण दुख माना ॥ कीन वेग निज भवन पयाना ३ करि चिं तन निज हृदय प्रवीना ॥ सुत कहं चारु राज्यपद दीना ॥ वें ष्णव भक्त रूप निज धारे ॥ आवा जगननाथ मन मारे ४ रथ यात्रा कर दिवस सुहावन ॥ प्रभु रथ अग्ररुचिर मन भाव न ॥ लाग्यो करण नृत्य नरराए ॥ गुरु कृपाल तहं देखिस आए ५ अति प्रसंन मानस सुख पाई ॥ तुरत लीन निज

हृदय जुडाई ॥ बोले हरषि वदन मृदु वानी ॥ अब नृप भयो तोर मदहानी ६ मन वच करम आज सिष मोरा ॥ मिट्यो संदेह सकल अव तोरा ॥ मे वर दोन हरषि मन माहीं ॥ अवरिल भक्ति होहिं तुव काहीं ७ सुनत भूप मानस अनुरागा ॥ वार बार पग बंदन लागा ॥ जीवन मुक्त जानि निज काहीं ॥ विचरन लग्यो धरणि तल माहीं ८ दोहा अस प्रकार संस्रति भए ॥ आन भक्त भगवान ॥ नाम मात्र तिन करकथन ॥ करहुं वदन सनमान १ रोडाछंद इक पूरण इक वल्लदास इक दास विहारी ॥ चतुर दास इक दास लाल गोविंद व्रत धारी॥गंगाराम सुभक्तदास प्रीय तिलक सुजाना जाहि प्रीय रसक विचित्र ग्रंथ संस्रति प्रकटाना १ दोहा केशव दास इत्यादिइह ॥ भए भक्त अभिराम ॥ जाकर भक्ति प्रभावतें ॥ चल्यो जात जगनाम १ इति भक्तविनोदग्रंथे पूर्वोक्त भक्त कथनं नाम सर्गः ४६

अथ गोविंद चरित वर्णनम् ॥ दोहा ॥ जास सुनत दुख दोष सब ॥ नासहिं सकल विकार ॥ सो अस भक्ति विचेष्ट कछु ॥ करहुं कथन सुखसार १ चौपाई श्रीमथुरा हरि भवन पुजारी ॥ तास पुत्र सुभ भक्त मुरारी ॥ जननि जनक मानस अभिलाषा ॥ गोविंद रुचिर नाम तहि राखा १ सिसु पनतें नित पितु सनजाई ॥ देखहिं देव भवन सिवकाई ॥ हरि मूरति मृदु मंजु सुहाई ॥ बालन सम ताहि मानस भाई २ आन बाल सम तहि सन क्रीडा ॥ चाहत करन बाल गत ब्रीडा ॥ सो किमि करहि भक्त सुखदाई ॥ पै बालक नित रहत लुभाई ॥ ३ ॥ निज मन तें अनुराग बढाए ॥ सदा रहत हरि भवन सुहाए ॥ जानि बाल मूरति भगवाना ॥ तास विलास करन रुचि माना ४ अस प्रकार हरि मूरति संगा ॥ खेलत रहत वाल मृदु अंगा ॥ ग ए कछुक जब दिवस बिहाई ॥ ते मूरति बालक सुखदाई ५ लगी करन क्रीडा मन हरनी ॥ बालक संग मोद मन भरनी ॥ देखहिं एक बाल कलताहू ॥ दृष्टि नपरहिं आन दृगकाहू ६ एक दिवस बालक हरषाई ॥ ठाडचो निकट भवन हरि जाई ॥ बाल केलि रुचि मानि सुभागा ॥ प्रभु कहं बहिर बुलावन लागा • भक्त वतस भगवान कृपाला ॥ आए अल प प धरि बाला ॥ दंड खंड कर धरो रसाला ॥ लगे करन

क्रीडा कलबाला ८ पण आरूढ परसपर राखी ॥ भये कालि
रत घट घट साखी ॥ हरि गुविंद कहैं गोबिंद वाला ॥ जीति
गयो सिसु केलि रसाला ९ अजय अजय जाहि विदत वखाना
॥ कवि को विद बुध वेद पुराना ॥ बाल भक्त निज भक्ति प्रभा
ऊ ॥ सो जीते चर अचरनराऊ १० कस्सपु हरण लंक पत
कंसा ॥ खर दूखण तृसरादि विध्वंसा ॥ आन प्रचारि समर
बलवाना ॥ जीते अजित जास भगवाना ११ सो अस दैन
प्रबल रिपु भीते ॥ विन भक्तन काहुन जग जीते ॥ दंड खंड
तव लैत पराए ॥ कुंज विहारि भवन निज आए १२ पाछिल
बाल गहन प्रभु लागी ॥ धावत आव धीर जनु त्यागी ॥ तै
ब पूजक जन लीन निबारा ॥ टाड भयो बालक मट द्वारा १३
दोहा करि रोदन ससकत वदन ॥ लाग्यो गालि प्रदान ॥ क
बहु तु निकसोगे बहिर ॥ तव देखहुं तुवत्राण १ चौपाई मैहै
न खनत रोख वस होई ॥ गयो नसदन बाल वर सोई ॥ त
व जननी हठ करत अपारा ॥ गई लैत निज रुचिर अगारा १
करि सुमरण बालक रिस सोई ॥ करत न पाक वितथ चित
होई ॥ यद्यपि जननि विविध समुझाना ॥ तदपि नकीन पाक
जलपाना २ तव भगवन निज पूजक काहीं ॥ कीन प्रबोध
स्वपन निसिमाहीं ॥ इह गोविंद बाल वर तोरा ॥ सखा सुहृद
सज्जन हितु मोरा ३ मोर द्वेष निज मानस माना ॥ तबहुं न

कीन अन्न जल पाना ॥ तहि कलेस कर मैहुं नपावा ॥ इहां भवन नइ वेद सुहावा ४ अवतें तुम हुं भक्त हरषाई ॥ मोर न देस रुचिर हित पाई ॥ प्रथम पाक इहि सिसुहिं कराना ॥ मुहि पाछिल नइ वेद लगाना ५ देखि स्वपन पूजक हरषावा ॥ उठयो प्रात भोजन विरचावा ॥ सिसुहिं जिवाय प्रथम सन माना ॥ हरि हिं बहुरि नइ वेद लगाना ६ तव भगवान भक्त हितकारी ॥ सोऊ स्वरूप बाल निज धारी ॥ बाल केलि रत कृपा निधाना ॥ लगे विलास करन प्रभु नाना ७ एक दिवस तजि भवन प्रवीना ॥ बालक गवन बहिर पुर कीना ॥ पाछे वाल रूप भगवाना ॥ लीने अरक वृक्ष फल पाना ८ गोविंद कहं प्रभु ताडन लागे ॥ कृपा सनेह हरष रसपागे॥ तेऊ लेत फल अरक सुहावन ॥ लग्यो प्रभु हिं निज करन चलावन ९ दोहा अस प्रकार सेवक प्रभू ॥ वार वार सुभवार ॥ करन अरक फल परसपर ॥ खेलत जुगल कहार १ चौपाई तब जननी गोविंद सुहाई ॥ पकरि लेत निज सदन स धाई ॥ दुगध पान भोजन हरषाई ॥ लगी मातु जुत प्रीति जिवाई ॥ १ ॥ भोजन जेवत गोविंद काहीं ॥ सोचसु मरणभयोमनमाहीं ॥ जबप्रभुअरक वृक्षफलमास्यो ॥ मैस्परसजल दीनाविसास्यो २ अबविनुसौचपाकमैपावा ॥ दीनजननिकहंकथा सुनावा इहअसचरज सुनतमहतारी कहिनसकतकछुवदनउचारी

३ सिसुहिसौचजल देतकरायो ॥ अतिस प्रीतिजुतपाकजिनावायो ॥ दूसरदिवस प्रातमनभावा ॥ रचिपूजक नइवेदसुहावा ४ ॥ जबगवन्यो हरिभवनलगावन ॥ तबकीन्यो बालिक मगछावन ॥ मुहिपूरवनइवेदकराई पाछेप्रभुहिं लगावहुजाई ५ जोपूरव प्रभुपावतऐहीं ॥ तोमुहिअन्वेषणावनपैहीं ॥ एकल भागि जातविनुदोई ॥ नाहिन अवसेरतमुहि सोई ६ सुनिपूजकसिसुकाहिं निवारा ॥ तेन टरहिं ताकर असटारा ॥ अंतहारिपूजकजन जाई ॥ तासजनकसनकथा सुनाई ७ अबतेंहमनजावहरि भवना ॥ इह तुमारबालक मगगवना ॥ पूरवहीं नइवेदअलाए ॥ मांगतविनुभगवान दिखाए ८ सुनिअनुचित असबालअचारा ॥ बोलिजनक कोन्यो तृसकारा ॥ तबसिसुअभयजनक सनबानी ॥ भाषिस वदनरुदनकछुठानी ९ इहपूरवभोजन असपाई ॥ चलेजातमुहिसंग विहाई ॥ पुनिखोजतपथ मिलतनसोई ॥ मोरेभ्रमत विपुलदुखहोई १० जनकसुनत असगिराअलाई ॥ अबनजाहितोहि सुवन विहाई ॥ बहिरभवन अवबौठि सुहावन ॥ तुवनिजकरहु पाक सुतपावन ११ दोहा भीत्रभवनभगवान निज ॥ लेहिंसुभोग लगाय ॥ तदपसचात प्रसन्नमन ॥ विचरहुं जितरुचिजाय १ चौपाई यद्यपिजनक विविध समुझावा ॥ तद्यपि बालपाकनहिपावा ॥ एकलजात मोहितजिएहू ॥ करतबालअसहृदयसंदेहू १ ताते मै भोजन नहि पावहुं ॥ इनसन बाल केलि हित जावहुं

अस कहि बाल वेग उठि धावा॥जनक देखि मानस विसमावा
२ कछुउनमत्तजानिजिय तासा ॥ करतपरसपर अस संभासा ॥
तबभगवान स्वपन निसिदीना ॥ तुवपूरब इहिबाल प्रवीना
॥ ३ ॥ देत प्रथम भोजन सनमाना ॥ पुनिमोरे नइवेद लगाना
॥ पूजकस्वपनदेव असपाई ॥ सिसुहिं प्रथम भोजन हरषाई ४
रहेदेतसंजुतअनुरागा ॥ असगोविंद भक्तबडभागा ॥ बालरूपतें
जठिरप्रचंता ॥ रह्योसि भक्तिनिरत भगवंता ५ गृहसथ धरमसेवत
सनमाना ॥ करतसप्रीति जजनभगवाना ॥ भोगतअखिलकाम
संसारू भक्तिप्रसाद भक्त ब्रतधारू ६ दोहा सुमरत कृष्णकृपायतन
अंततजतनिजकाय ॥ मुनिसुरदुरलभ ललितगति ॥ लीनजतन
बिनुपाय १ इतिभक्तविनोद ग्रंथेगोविंद चरित वर्णनं नाम सर्गः
४७ ॥ दोहा अन्यभक्तरघुनाथजन ॥ गोपीनाथप्रवीन ॥ रामभ
द्र वैष्णब भए ॥ विदत भक्त पथ लीन १ इति सर्गः ४८
॥ अथ गुंजा माल चरितम् ॥ दोहा गुंजा माली भक्त इ
क ॥ पसचम देस सुहाय ॥ विदत लहा डरग्राम कल ॥
उपजे संस्रति आय १ ॥ चौपाई अति धनडच रत धरम
प्रवीना ॥ कृष्ण सरोज चरण मन लीना ॥ सुत द्रुम तास
एक हित कारी ॥ अक समात मृत लीन उपारी १ पुत्र
शोक दारुण दुखमानी ॥ मिथ्यासदनदार वित जानी ॥ भयो

विरक्त भक्ति अनुरागा ॥ कीन सकल संपति जुगभागा २ ए
क भाग निजत्रियकर कीना ॥ दूसर पुत्र पतनि कहं दीना ॥
भाषिसइह तुवलेहु सुजाना मैमथुरा निज करहुं पियाना ३ पुत्र
पतनि तब वचन उचारा इह वित जनक देन दुखभारा॥ चाह
तभोगविवध अभिरामा ॥ ताकर मुहिनतातकछुकामा ४ प्राण
नाथ विनु धूलिसमाना ॥ मुहि इह होत जनक धनमाना ॥ अ
स विचारिसंकुलसुख भंगा ॥ चलहुतात मथुरा तुव संगा ५
सेवहुं जठिर जानि पितुतोही ॥ इहन अनुचित तात कछुमो
ही ॥ अससुनि त्रीयहि सकलावितदीना पुत्रपतनि जुतभक्त प्रवी
ना ६ सानुकूल मथुरापुरि आवा देखिभवन इक जठिर सुहा
वा ॥ ताहि समीपरुचिरुचिर कुटीरा ॥ लग्यो निवास करनमति
धीरा ७ तास भवन कल मूरति जोई ॥ पूजन लग्यो भक्तिजुत
सोई ॥ सुमतिसुनखा तास वडभागी ॥ पितु समान सेवन अ
नुरागी ८ ब्रह्म चरज पर धरम प्रवीना ॥ मूरति दैवजजन मन
लीना ॥ जब जब प्रभुहिं भवन सुभजाई ॥ सादिर सुचि नइवेद
लगाई ९ वाहिर होहि कलदेत कवारन ॥ जात बहारि जब
भवननिहारन ॥ तब नइवेद न्यून कछुदेखहिं ॥ असप्रकार
नित अदभुत लेखाहिं ॥ १० ॥ दोहा देखहुं भक्ति प्रभाव
इह ॥ तिनकर भोजन दान ॥ नितआवत असभवन निज
कृपासिंधु भगवान १ चौपाई एकदिवस सिसु निकर सुहाए ॥

तहां बालक्रीडाहित आए ॥ खेलत सकल परसपरराग ॥ भरिभरि धूलिउडावनलागे १ मूरति देव अछूर्यादिन होई ॥ धूसर देखि हगन जोयसोई ॥ कस्यो नृमत सन बालनता सा ॥ भागेबालमानि जयि त्रासा २ तब नइवेद लाय भगवाना ठाडिस आपु बहिर मातिमाना ॥ बहुरिभवनजब देखन धायो तेप्रसाद परि पूरण पायो ३ तब गुंजासन जात अलावा ॥ आज भोग भगवन नाहि पावा ॥ तास सुनत चिंता जीयकी न्यो ॥ तब नइवेद बहुरि धरि दीन्यो ४ सो नहि पाव जवहिं भगवाना ॥ तव गुंजा अस तासु वखाना ॥ पुत्रलिहु पाक तुव पाई ॥ मैतब करहुं जतन हरषाई ५ इह पावहिं करुणानिधि आपू ॥ हारन हृदय भक्त संतापू ॥ तेसुसील सुनि वचन अलावा तुवन पाव भगवान नपावा ६ पितु मै अधम लेहुं कसपाई ॥ अस प्रकार क्षुद्धित निसि छाई ॥ सो नइवेदरहा प्रभु आगे ॥ तब भगवान भक्त अनु रागे ७ तिन कर दीन स्वपन निसि माहीं ॥ तुव खेलत बालक जन काहीं ॥ कालि करत तृस कार निवारे ॥ सो बालक भावत मुहि प्यारे ८ तेन करहिं जब लग इत आई ॥ भवन मोर निज्ज केलि सुहाई ॥ तोलो मै न पाक कछु करना ॥ अस प्रकार जब भगवन वरना ९ गुंजा उठ्यो परम हरषाई ॥ सादिर भवन देव निज आई ॥ विनय लीन अस कहत उचारी ॥ प्रात बाल इत भक्त उवारी १०

आय करहिं प्रभु मानस भाई ॥ धूलि केल निज रुचिर सुहाई
अब इह लेहुं पाक प्रभु पाई ॥ दूषत धूलि भक्त सुखदाई ११
विनय सुनत अस भक्त रसाला ॥ दीन बंधु प्रभु दीन कृपाला ॥
जथा नित्य निज भोग सुहावा ॥ कृपा सिंधु तब लीनसि पावा
१२ दोहा हरषे देखत भक्त जुग ॥ निज भगवन असनेहू ॥ ला
गे गुणगणरटन मुख ॥ निरतत प्रेमरतेहू १ इति भक्तविनोद ग्रं
थे गुंजा माल चरितं नाम सर्गः ४१ ॥

अथवक्षमाण भक्त चरितं कथ्यते ॥ दोहा आनहुं अस संसृति भए ॥ भगवन भक्ति प्रलीन ॥ महाराष्ट्रकल जाति जिमि ॥ विठ्ठल भक्त प्रवीन १ रोडाछंद ॥ सूरति दास प्रसिद्ध दास रघुनाथ उजागर ॥ जदुनंदन हरिदास चतुर भुज जन गुणसागर ॥ दास मुकुंद सुभक्त विष्णु जन कीरति माना ॥ केशव दास प्रसिद्ध करन कल दंड प्रणामा १ अब जेजे हरिभाक्ति निरत जग नागर नारी ॥ तिन कर सुभ अभि राम नाम मुख करहुं उचारी ॥ इक कन्या धानीक पुरुष सीता अस नामा ॥ गौरी उमा प्रसिद्ध भक्ति भगवन रत रामा २ दोहा गंगा गोपालि विदत सुमरि कृष्ण जिन नाम ॥ लीन्यो भक्ति प्रसादतें ॥ कृष्ण धाम अभिराम १ इति भक्त विनोदग्रंथे पूर्वोक्त भक्त चरितं नाम सर्गः ॥ ५० ॥ दोहा ॥ अब गणेस देवी विदत ॥ भक्त भूप इक रानी ॥ भक्ति महातम तास कछु ॥ करहुं कथन सुभवानी ॥ १ ॥ चौपाई देखि संत वैष्णव सनमाना॥ सेवत जानि भक्त भगवाना ॥ एक दिवस दुष्टातम काहू ॥ वैष्णवकपट भेषधृतताहू ॥ १ ॥ आयनगरतहिभक्तमहाना ॥ बन्योनकाहु मरम सठजाना ॥ भयो भूप सनमुख सनमानी ॥ करत नरंत्र कपट रतवानी २ साधु सरल चित नृप गुण रासू ॥ ताहि परभयो करत विस्वासू ॥ अंतह पुर प्रवेश पुनि दीना ॥ महीषी प्रीति भक्ति मन लीना ३ लागी करन

रुचिर सिवकाई ॥ दिन दिन अति प्रतीत सर साई ॥ एकादि वस महिषी कर गेहा ॥ कीन गवन सठ धूरत तेहा ४ रही इकाकि भवन निज रानी ॥ अधम सुपच भल अवसर जानी छुरिका लेत क्रूर बत जाई ॥ दीन वदारि जंघत्रीय राई ५ कहां कहत वित भूषण तोरे ॥ देहु दिखाय वेग जढ मोरे॥तब अति रुधिर जंघ नृप रानी ॥ चल्यो विहाय वेग जिमि पानी ६ देखि अधम अति त्रासत भागा ॥ अवनवचहुं उर धीरज त्यागा ॥ तब महिषी प्रक्षालन कीना ॥ घाउस जतन बांधी पट दीना ७ तोलो आय भूप वड भागे ॥ सिज्जा रूढ होन जब लागे ॥ श्रोणत देखि उपज संदेहू ॥ पूछत हेतु कवन प्री य एहू ८ सुमति प्रवीन धरण पति रानी ॥ कहिस वचन अस मरम दुरानी ॥ पति वर मुकत केशि मुहि जानी ॥ करहु सपर स आज जानि पानी ९ भूप सुनत अस चल्यो सधारी॥ चतुरथ दिवस मदन वश भारी ॥ आवा सदन तास सुख मानी ॥ जंघ घाउ वश पीडत रानी १० तासु देखि अस पूछत राई ॥ तब महिषी सब कथा सुनाई ॥ सोपति महा भागवत संता ॥ इत विलोकि मुहि सदन अकंता ११ छुरिका हनत घाउ असकीन्यो ॥ चल्यो भागि जव श्रोणत चीन्यो ॥ कसन कह्यो तुवभूपतिकाहा ॥ सठहिंदत धरि पावक दाहा १२ दोहा साधुजानि तहि प्राणपति ॥ घोर दंड तुवचीन॥ तज्यो दीन दुख लीनवपु

महिषि कथन अस कीन १ देखिभक्ति असमुनत नृप ॥ वचन दया रस पागे साधु साधु कहि वदन निज ॥ विविध सराहन लागे २ जेनर अनहित देखि अस ॥ कराहि रुचिर हित आथते संसृति नर धन्य तिन ॥ धन्य सुजस जगछाय ३ अस निसकंटि कराजनिज॥भोगतदंपति दोय॥भगवनभक्ति प्रसादतेजियत मुक्तजगहोय४इति भक्तबिनोद ग्रंथे पूर्वोक्त भक्तचरितं नामसर्गः५१ सोरठा अस प्रकार त्रीय आन ॥ कृष्ण भक्ति रतजे भई ॥ नाम मात्र सनमान ॥ करहुं कथन तिन कहं वदन १ दोहा कोली विदत कलाल खह ॥ सतभामाअभिराम ॥ मानवती देवामृगा ॥ कमलादी गुणधाम१जमना हीरा देवकी ॥इहत्रीय भक्ति प्रसाद तरीजतन विनुजनहुंजग जलनिधअगमअगाध २इति सर्गः ५२ दोहा ॥ अबनरवाहन भक्तकर ॥ भक्ति महातम चारू ॥ करहूं कथन सादर वदन ॥ श्रोतन जनमनहारू १ चौपाई अंतर वेधि देसजुइ गावा ॥ कान कुबजसामीप सुहावा ॥ रमय तहां रुचिर इकग्रामा॥ भूमिनाम विदत अभिरामा १ तहां वसहिं इकभक्त प्रवीना ॥ कृष्ण सरोज चरण मनलीना ॥ अतथि संतसेवन अनुरागी ॥ विषय विकार मारमदत्यागी २ संज्ञा वनक विपुल धनवारा ॥ वोहत वाहनिरत व्यापारा ॥ समय एक लुंठिक बलवाना ॥ बलातकार तास जलजाना ३ सामग्री परि पूरत भारी ॥ हस्योलीन असवदनप्रचारी ॥ नरवाहन करचरण बधाई ॥ च

ह्यो लेतजड लुंठिक राई ४ निजगति देखिभक्तवडभागा ॥ कृ
ष्ण कृष्णअससुमरन लागा ॥ क्षुधिततहां विथतअसतासा ॥ ग
यो जुगलजब दिवस बितासा ५ तवलुंठिक इकदासि रहाया ॥
उपजी हृदय तासकछुदाया ॥ अन्नदेनहित लुपत सुहाई ॥ तहि
पं करतसुकचजीय आई ६ साधुदेखि मंजुलअसवानी ॥ तासु
कृपावति बदनवखानी ॥ इह लुंठिक सेवक हितकारू ॥ एहिंसं
तहरिवंस उदारू ७ ताते तुवदोरघस्वर संगा ॥ श्रीराधावल्लभ दु
ख भंगा ॥ बारवारअसकेहु अलाई ॥ तो इह केहिं कवन तुव
भाई ८ तवतुमकहहु निडरकरन्याई ॥ मै सेवक हरिबंस गुसाई॥
तेसुनि करहिं विविध सतकारा ॥ देंहि तुमार गृहित धनसारा९
दोहा तबनरवाहन समय लखि ॥ कीनउचारण सोइ ॥ जबपू
छयोहरि बंससिष ॥ कहिस सचुकसब खोइ १ चोपाई तुरत ता
स चरणन सिरनावा ॥ निज अनुचित सवक्षमाकरावा ।पूछत
भक्ति प्रीति जुतनामा॥ सोवित दीन विविध सनमाना १ प्रकट
न करहु काहु सनजाई ॥ बारवारअस विनय अलाई ॥ तब न
रवाहन विवध प्रकारा ॥ तासु प्रबोधहरण दुरचारा २ करि करि
महाभगवत कीना॥ दुरमति हरत सुमति सुभदीना ॥ होतविदाय
चले निजगेहा ॥ अस प्रकार नरवाहन एहा ३ दोहा परहित से
बत संतजन ॥ लुंठकादिजगतार सुमरत कृष्णकृपायतन भयोजल
ध भवपार१इति भक्त विनोद ग्रंथे नरवाहन चरितं नामसर्गः५३

रोडा छंद ॥भए भक्त भगवान आन गुण मान सुहाए ॥ श्री गोबिंद प्रबीन विद्दत दामोदर गाए ॥ ईस्वर माया नंद गुठल तुळसी जन नामा ॥ गौरी दास प्रसिद्ध वैस वंदी अभिरामा१ भक्त भगवती रामदास मोहन जनचारू ॥ मारबाढ जगधीस विदत लखमन व्रतधारू ॥ भावदास रतिदास भक्तकुल विद त सुधीरा ॥ लखन पूर गोपालदास गुण कीरति खीरा २ दोहा ॥ भए दास भगवान अस ॥ नाम सोम पथ ग्राम ॥ भक्त जनार्दन कृष्ण पद ॥ प्रीति निरत अभि राम १

इतिभक्तविनोद ग्रंथे पूर्वोक्त भक्त चरितं नाम सर्गः ५४

अथ गोपाल दास चरित कथ्यते ॥ दोहा ॥जो बनेर पुर विद त इक ॥ भक्त दास गोपाल ॥ भक्ति महातम तास अब ॥ वर नहुं वदन रसाल१ चोपाई गृहस्थ्य धरम रत सद्गुण क्षीरा ॥ पैविरक्त वत भक्त मधीरा ॥ पूरब तास वंस वरकोई ॥ कानन कृष्ण भजन रतहोई १ बिचरत रह्यो भक्ति मन लीना ॥ तब अस विपन श्रवण तहि कीना ॥ वंस मोरगोपाल सुहावा ॥ काहु विरकत भक्त उप जावा २ प्रीक्षा करन हेतु अनुरागा ॥ जावा द्वार तास वडभागा ॥ निजबांधव गोपाल नजाना ॥ क छु सामान कीन सनमाना ३ कहिस बहुरि निज वदन उचारे

चलहु जाठिर अब सदन हमारे ॥ देखहुं त्रीयन बदन व्रत मोरे ॥ चलहुं सभक्त सदन कस तोरे ४ तवगोपाल कहिस कर जोरयो ॥ त्रीयसबऐहिलुपतइकओरयो ॥ असकहितासुसदननि जलावा ॥ अकसमातत्रीयदरसनपावा ५ भामनवदनदेखिजबलीना ॥ दारुणकोपजठरजीयकीना ॥ धरतचपेटवदनतहिमारा ॥ मूढकीनव्रतभंगहमारा ६ तवगोपालहरषउरमानी ॥ बोल्योवदन मनोहरवानी ॥ इहिकपोलकरभागमहाना ॥ जोप्रभुकरहुंसफल अवआना ७ तोतुवदासनहिनसंदेहू ॥ होहिंकृतारथसंसृतिएहू॥ अरुप्रभुकहंजहिवदनादिखाना तासुदंडअवदेहुमहाना ८असनिरदं भवचन सुनि तासा ॥ जठर संत निज हृदय हुलासा ॥ बोल्यो त्रीय कहंदंडन जोगू ॥ अपजस करहिं सुनत सब लोगू९ दोहा तुमहुं अदोषन दोष कछु ॥ मै श्रवणन जस कीन ॥ तसदेखा तुहिभक्तवर ॥ कृष्णभक्तदढलीन १ चौपाई प्रीक्षाकरनहेतुतुवआवा ॥ अवसंदेहसबहृदयबिहावा ॥ जीत्योजासक्रोधसंसारा ॥ विजयकीनतहिसकलविकारा १ दोहा इहभक्तीमारगविघन ॥ जिमिकंटकदुखदाइ ॥ असभाषतमुखसीसजुग ॥ चलेपरसपरनाइ १ इतिभक्तविनोदग्रंथे भगवद्भक्तिमाहात्म्ये गोपालदासचरितंनामसर्गः ५५

अथलाखाभक्तचरितम् ॥ दोहा लाखाभक्तप्रसिद्धइक ॥मरूदेससु भगाय तिनकरकथापूनीतमै ॥ करहुंकथनसुखदाय १ ॥ चौपाई भिक्षाटनकरिसंतनसेवा ॥ करतरहतजुतभक्तिअभेवा ॥ असप्रका रव्रततासधरावा ॥ तबदुर्भिक्षकालजगछावा १ सदनअन्नकछुज बनरहान ॥ सोसंतनकहंदीनजिवाना ॥ आगलभिक्षामिलाहिंन काहू ॥ असप्रकाराचिंताकुलताहू २ त्रीयसनभाषतवदनउचारी॥ अवब्रतनिवहिंकवनविधिप्यारी भामनसुनहुमोरप्रणएहा ॥ छूछेजा हिंसंतजबगेहा३ तहिदिनअनलदेतनिजधामा॥ मरहुंबचिजरिजत नलिलामा ॥ भामनकहिससुनहुपतिप्राना ॥ मैनिजहृदयएहुप्रण ठांना४ कैदिशांत्रपतिचलहुंपराई ॥ जारननतरसदनवपुआई ॥ असप्रकाराचिंतनजबकीना ॥ तवभगवानस्वपननिसिदीना ५ तु बनकरहुचिंताजीयमाहीं ॥ तोरधरमराषनहितकाहीं ॥ ग्रामाधीस प्राततुवगेहा ॥ आवहिंभक्ताविगतसंदेहा ६ एकप्रसूतमहिषमनभा वा ॥ पंचासतमणअन्नसुहावा ॥ तुमहिदेवमानसहरषाई ॥ सोतुवभक्तसृष्टअसषाई ॥ ७ ॥ राखिसजतनकोष्टकलदेना ॥ लेहुअधोमुखजव जवलेना ॥ पैअतलुतकछुतौलनकरना ॥ महिषीदुगध लेतमनहरना ॥ ८ ॥ तहिसन अतथिसंत समुदाई ॥ तुवसादरजनदेहु जिवाई ॥ इह दुर भिक्षदेखि जनिडरहौ मानसमृताविचार जनिकरहौ ९ दोहा भक्त प्रात अस स्वपननिजत्रीयसन दीनसुनाय॥ आवाग्रामा धक्षउत॥ लीयेलोक

समुदाय १ महिषीसंजुतदीनतहि ॥ अन्नभक्ति सरसाय ॥ सोदं पतिनिजसदनसुभ॥ राख्योजतनदुराय २ चौपाई जथाप्रबोधकीन भगवाना ॥ तथाभक्तसंजुतसनमाना ॥ कृष्णसरोजचरणमनलाई ॥ लाग्योकरनसंतसिवकाई ॥ १ असप्रकारदुरसमय विहान्यो ॥ तवश्रीजगननाथ दरसान्यो ॥ चल्यो करतअष्टांगप्रणामा संजुत पतनि भक्त अभिरामा २ अष्टादस वर नाल सुहावन ॥ भक्तप्रथा नकीन तहं आवन ॥ तव भगवन पूजक जनकाहीं ॥ कीनसिक थन स्वपन निसिमाहीं ३ कृष्ण भक्त पुरमोर सुहावा ॥ संजुत रुचिर पतनि निज आवा ॥ करि अरूढ सिवका सुखदाई ॥ वेग लाहु मोहि सनमुखजाई ४ तव पूजक सादिर हरषाए ॥ करिसतकार भवन हरि लाए ॥ भक्त देखि दरसन भगवाना दंड प्रणाम करत सुखमाना ५ जानि सकल निज जनम सुभागा ॥ तहां निवास करन निज लागा ॥ पाछे सदन भक्त व्रतधारी ॥ रहीं ललित मृदुसील कुमारी ६ भई सुपानि ग्रहण करजोगू ॥ अपजस करहि देखि सबलोगू ॥ तबकृपाल प्रभु भक्त सहाया ॥ रजनी स्वपन पूजकन दइया ७ लाखा भक्त मोहि अति प्यारा ॥ संपति कोस मोरधन सारा इहि कहं देहु विलम ताजि आजू हुइहें सिद्ध भक्त ममकाजू ८ पूजकजवन देसअसपावा ॥ लगेतासु धनदेन सुहावा ॥ लाखा वदन नम्रअसकाहा ॥ मोहि लालसदरसनप्रभुराहा ९ नहिन बि

तादिमोर मनकामा ॥ असप्रभुदरस पायअभिरामा ॥ तेनतजहिं हठदेवपुजारी ॥ चल्योभक्त तवलुपतजुहारी १० नृपकहं दीनरव पनभगवाना ॥ रोक्यो तासु जतन सनमाना ॥ संजुत प्रीति देन भनलागा ॥ सोकिमि लेहिं भक्त वडभागा ११ दोहा वारवारज बकाहिस नृप ॥ हार्यो भक्तप्रवीन ॥ छितपतकर हठदेख अति ॥ अंतकछुकगाहि लीन १ चौपाई आवासदन भक्तउत्साहू ॥ प्रथम दीन निज सुताविवाहू ॥ पाछे रह्योजवन धनगेहा ॥देखि स अतथिसंत जननेहा १ लग्योविभक्त करनहरषाई ॥ भोजनादिसु चिदेहिं जिवाई ॥ असप्रकार सुभ संतन सेवा ॥ करत करत ह रि भक्त अभेवा २ दोहा जठिर भयो तव सदिन तकि ॥ विनु अजास तजिकाय ॥ सुमरत कृष्णाकृपायतन ॥ लीन परम पद पाय १ इतिभक्तबिनोद ग्रंथे लाखा भक्त चरितं नाम सर्गः ५६

॥ अथ नरसी भक्त चरितम् ॥ दोहा अब संकुल सुखकर न वल ॥ हरन मोहभ्रम सूल ॥ भक्ति महातम करहु क छु॥ कथन मंगलनमूल १ भक्ति दृढावन प्रेम प्रद ॥ मनभावन मुददात॥जास सुनत भवनरन दुख दोष दुरत दुरजात २ चौपाई गुरजर देसाविदत अभिरामा॥तहिंमेंअजा नाम इक ग्रामा ॥ नागर

जाति द्विजन कुलचारू ॥ भएभक्त नरसी व्रतधारू १ ते पूर
व जनमांत्र सुहाए ॥ सुभ सुराष्ट्र देसन उपजाए ॥ अति सुभ्र
त द्वारा बति तेही ॥ षष्टजुगलजोजनइकएही २ रेवतसैलप्रांतम
नहारू ॥ पूनानामविदतपुरचारू ॥ तहांनरंत्रकोननिजवासा ॥
वरजतजननिजनकगुणरासा ३ ज्येष्टभ्रातजुतभामनिसोहा ॥ आ
पुभक्तानिसत्रीकअमोहा ॥ एकादिवससेबकजदुराई ॥ ग्रामप्रजटन
करतग्टहआई ४ कहिसप्रजावतिसममुहिपानी ॥ देवहुवेगतृषा
रतजानी ॥ तेनयुक्तकारजारिसछाई ॥ अतिसकटुकमुखवचनअला
ई ५ मूढकबनअलकाजसवास्यो॥ मांगतवारवारमुखवास्यो ॥ आ
वाजनहुंशकटकरि क्रीडा ॥ अहोअधम नहिआवत ब्रीडा ६
खानपान अवसर तकि आवत ॥ बहुरि नमंद वदन दरवावत ॥
दीनेदैवचरणकरतोही ॥ आपुनलेतदेतश्रममोही ७ तजहुजाहुअ
वदारदासू ॥ मोरेनाहिनअधमअवकासू ॥ तासबचनसुनिवज्रस
माना ॥ नरसीहृदयमरणरुचिमाना ८ दोहा हालाहलतेंअधिकइ
ह ॥ दसगुणवचनकठोर ॥ ते मारतइहज्वाल वत ॥ जारत जी
यनिसभोर १ शक्ति खडग सर सूलनर ॥ करहठलेत सहारि ॥
पै इहसस्यो नजातजग ॥ वचन बानदुखभारि २ चौपाई अस
चिंतत जीयभक्त सुजाना ॥ चल्यो धीरगत दुखित महाना ॥
तीनकोस पुरबहिर सुहाए ॥ गोपनाथ जगदीस्वर गाए १ अभ
यवरद दीनन हितकारी ॥ आयो तहांभक्त ब्रतधारी ॥ करि प्र

साम आसन दृढलीना ॥ तजहुं प्राण मानस प्रण कीना २ स
पतदिवसआसतामुसराना ॥ कस्योनभक्तअन्नजलपाना ॥ मस्योन
जबाहिंजतनतबकीना ॥ गौरवशिलाकरनगहिलीना ३ सिवपैरा
खिसीसदिजनीके ॥ भोजीभननसुमरिनिजजीके ॥ लग्योसीसज
बशिलाप्रहारन ॥ महादैवतवभक्तउवारन ४ विप्ररूपधृतरुचिरन
वीना ॥ तासुनिवारिप्रबोधनकीना ॥ आतमघातकरहुकसमूढा॥
इहतोविदतपापजगगूढा ५ मुहिप्रसन्नजायजानिअभेवा अववर
मांगमांगमहिदेवा ॥ नरसीसुनतअलोकिकरचना ॥ विप्रसरूपवृ
षभ ध्वज वचना ६ अति प्रसन्न मानस अनुरागा ॥ नंम्र वचन
मुख भाषण लागा ॥ जो प्रसन्न तुव जन अनु गामी ॥ मोरे
देन चाहुवर स्वामी ७ तोनिज प्रीये वस्तु मनमाना ॥ करहु दा
न मुहिकृपा निधाना ॥ तव शंकर निज हृदय विचारा ॥ अस
प्रीय वस्तु कवन संसारा ८ जो इहि देत वचन निज काहीं
करहु रुचिर फुर संस्रति माहीं सवतें आधिक विश्व मुहिप्यारे
कृष्ण देव सज्जन हितकारे ९ सोअस देहुं कवन विधि एहीं
॥ हृदय गुनत हरदीन सनेहीं ॥ बोले वदन वचन दुख मोचन
॥ मूदहु वेग भक्त जुगलोचन १० मैवर देहुंउचित जसतोस्यो
नरसीसुनतपलकदृगजोस्यो ॥ तबकौतकमथुराहरल्याए ॥ करिवि
लासजनुस्वपनसुहाए ११ तहांशंभु प्रीयकृष्णरसीला ॥ निरत
रासमंडिलकललीला ॥ देखिकहतहरभक्तसनेही ॥ त्रीयसमा

ज प्रीयसन कन एही १२ दोहा अस विचारि तहि वृषभ ध्वज ॥ प्रमुदा भेषवनाय ॥ कौतक कलित प्रदीपका ॥ करदै चले लिवाय १ चौपाई तहां जाय हर संजुत दाया ॥ सुनहु भक्त अस वचन अलाया ॥ इह राधा इह कृष्णमुरारी ॥ भक्त हेत संसृति अवतारी १ इनहि छाडि मुहि मानस प्यारा ॥ आन न सुनहुं भक्त संसारा ॥ राधा कृष्ण मंत्र जग पावन ॥ करहुं नरंत्र रटन मन भावन २ सरत्रकाम प्रद मंगल मूला ॥ हरान दुरत दोषदुख सूला ॥ सुनि अस शंभु कथन जदुराई ॥ वोले वदन वचन मुसकाई ३ शंकर दीपधरातुव एहू ॥ कवन करहु मोहि कथन सनेहू ॥ तव गरीस अस वदन उचारा ॥ दीन नाथ इह भक्त तुमारा ४ मै लावा प्रभु शरण तुमारी ॥ कारि निज कृपा दृष्टि गिरि धारी ॥ संसृति करहु कृतारथ एही ॥ सदादैव तुव भक्त सनेही ५ शंकर कथन सुनत भगवाना ॥ वोले मधुर वचन हित साना ॥ शंभु तुमार भक्त प्रीय मोरा ॥ मोर भक्त जन निंदक तोरा ६ सो द्वेषी माहि शत्रु समाना भोगत घोर नरक सठना ना ॥ विष्टाक्रमी होत पुन ताहू ॥ होईहैं अंत ग्राम वाराहू ७ क्षुधित तृषत दुःखित जगसोई ॥ भ्रमत रहत दारद रतहोईं याते संसृति भक्त तुमारा ॥ तुवसमान मुहिमानसप्यारा८ बत श्रीकृष्ण दैव हरषाए ॥ दीपधरनि कल रूप वनाए ॥ नरसि भक्त कहं संजुत दाया ॥ दीन नाथ अस वचन अलाया ९ भक्त सरूप मो

रसुभभेखा ॥ इह तुवजवन दृगन भरि देखा ॥ लेहु नरंत्र अत्र निजधारी ॥ मोर नृत्यगुण गीत उचारी १० विचरहु अभय भक्त संसारा ॥ तुमहि सुजस सुख सरव प्रकारा ॥ लोक प्रलोक सिद्ध सव तोरा ॥ संतत वचन भक्त वर मोरा ११ अरुजव वतहिं काज कछु तोरे ॥ करि सुमरण सज्जन तव मोरे ॥ मै भेषांत्र सिद्ध सब तोरा ॥ कारजकरहु भक्त प्रणमोरा १२ दोहा सुनि नरसी असवचन कल ॥ कृष्ण दैव सुखदान ॥ खुले नैन भयो निकट थिर ॥ गोप नाथ भगवान ॥ १ ॥ सुमरत राधा कृष्ण मन ॥ शंभु चरण सिरनाय ॥ चल्यो भक्त ग्रामांत्र कहं ॥ भक्ति प्रीति सरसाय २ चौपाई मारग मिल्यौ नाति जनकाहू ॥ सो विलोकि संजुत उतसाहू ॥ प्रेरत कृष्ण दैव भगवाना ॥ नरसी सृष्ट भक्त जीय जाना १ अस विचार करि मानस ताही ॥ तासु दीन निज सुता विवाही ॥ तव हरि भक्त दार रत सोई ॥ लग्यो नकेत वसन दुख खोई २ अस प्रकार तांकर मन हारू ॥ उपजे सदन सुता सुत चारू ॥ भक्त कुटुंव निरत तव भयो ॥ दिन दिन अधिक अधिक सुख लयो ३ सेवन अतथि संत अनु रागा ॥कृष्ण सरोज चरण मन लागा ॥ किंकरादि कलवाद वजाई ॥ निरतत कृष्ण विमल गुणगाई ४ देषि जाति जन द्वेष प्रकासा ॥ कीन वहिर निज पंकति तासा ॥ यद्यपि दीन अधम अस दोसू ॥ तद्यपि न कीन भक्त कछु रोसू ५ कृष्ण सुमर

ण भजन इहि भांती ॥ ततपर रहत भक्तरतशांती ॥ दुष्ट लोक न
हि आवत नेरे ॥ सोऊ नजात सदन तिनकेरे ६ अस प्रकार क
छु समय विहावा तबइक गृस्थिहरष उरछावा चलन लागद्वारा
वति काहीं आवा भ्रमत ग्राम तहिंमाहीं ७ लोगन सन
अस तास वखाना ॥ मैचाहूं द्वारावति जाना ॥ मोपै रह्यो द्र
व्य अधिकाई ॥ सुन्योपरत लुंठिक मगभाई ८ काहु तुमार न
गर धनिसाहू ॥ इह वित देहुं सकल निजताहू ॥ तहितें पाय
पत्र सुखदाई ॥ द्वारा वती लेहुं धनजाई ९ दोहा तेधूरत सु
नि कथन ताहि ॥ कपट कूट सरसात ॥ बोले नरसी भक्त इक
इहांधनक अव दात १। चौपाई जाहु पथक तांकर तुव धामा
सो फुर करहिं तोर सब कामा ॥ तें पूछत अस चल्यो स
धारी ॥ आवा सदन भक्त व्रतधारी २ करत भेट अस वदन
उचारा ॥ इह धन लेहुं भक्त तुव सारा ॥ द्वारावति पें धनक
सुहाई ॥ मोरे देहु पत्र लिखिभाई ३ तहां विलंव विगत मैं जा
ई ॥ लेहुं रुचिर धन आपन पाई ॥ नरसी सुनत कथन अस
तासा ॥ लख्योकीन दुरजन कछुहासा ४ अब इहि करफल
पावन जोगू ॥ जो इह कीन कपट दुरलोगू॥ यद्यपि अगम
असंभव जाना ॥ तद्यपि सुमरि कृष्ण भगवाना ५ करहुं जतन
कछु हृदय बिचारी ॥ काहिस तासु अस वदन उचारी ॥ केतक
वित तुव देहुं दिखाई ॥ मै अब लिखहुं पत्र सुखदाई ६ ॥

तब तहि गनत सपत सत दीन्यो ॥ मुद्रा चारु भक्त वर लीन्यो ॥ स्यामल साह ओर हरषाई भक्त सृष्ट पत्रक सुखदाई ७ निज कर यथा उचित लिख दीनी । मै स्यामल मुद्रा इत लीनी ॥ त्रिभुवन धनी पत्र जोइ मोरी ॥ इहि कर तुमहिं आज जग खोरी ८ मोरे करन लेख अनु सरहीं ॥ तुमहिं अवश्य देन अब परहीं ॥ इह सूक्षम पत्रक व्यवहारू ॥ जोन भरहु अपजस संसारू ९ मोर तोर कछु होहिं नथोरा ॥ अस प्रकार जन वदन निहोरा ॥ पत्रक दीन पथक कर तासा ॥ जात लेहु स्यामलधनिपासा १० चल्यो सुलेत पत्र हरषाता ॥ इत हरि भक्त भक्ति मदमाता ॥ सोवित अताथि संत दिजकाहीं ॥ कीन विभगत सदन निजमाहीं ११ उहां बनक द्वारावति जाई ॥ पूछत फिरत विपल स्रमपाई ॥ इहां कवन पुर स्यामल साहू ॥ तव भाख्यो लोगन अस ाहू १२ स्यामल नाम ग्राम इहिमाहीं ॥ अव लो सुन्यो वनक हमनाहीं ॥ तवनिरास चिंताकुलभारी ॥ बहिर नगर फिरि चल्यो सधारी १३ मोहिसन भक्तकपट करिभारा ॥ अ ो दीन स्रमवृथाअपारा ॥ असप्रकार जव चिंतन कीना ॥ तब इकयान मनोरमचीना १४ चपल चारु सित तुरग सुहाबन ॥ तहि पेंस्याम वरनमन भावन ॥ पीत वसन सुभृत्त मृदु अंगा ॥ हरण कोटि छविललित अनंगा १५ पूछन तासु वदन हंकारे ॥ ॥ तुव स्यामल

पनि कितहुं निहारे ॥ तासु वचन सुनि भगवन काहा ॥ मै
हुं पथिक स्यामल धनिराहा १६ तुव अभि लषत कवन मु
हिसंगा ॥ करहु कथन निजवदन उमंगा ॥ भक्त सुनत अस
वचन उचारा ॥ मै पूछ्यो लागनपुरसारा १७ दोहा सवन क
थन असकीन मुख ॥ इहां नस्यामल कोय ॥ तब चिंता कुछ
बहिर पुर ॥ चल्यो आस जीयखोय १ चौपाई नरसि भक्त
मोहि हराखि बसेखी । पत्रक दीन नाम तुव लेखी ॥ मोरे देहुं ध
नक हरषाई ॥ वेंगतपत सत मुद्र सुहाई १ ॥ तवस्यामल पत्रक
सुखदाई ॥ सादिर लेतहगन निजलाई ॥ अति प्रसन्न मुख वच
न उचारा ॥ पथक धन्यजगजनमतुमारा ॥ २ जोअसदीनआज
मुहिल्याई ॥ तुव इहपथकरुचिर सुखदाई ॥ मोरे प्रीयजीय
पत्रक ताहू ॥ अस नदीन मोहि अबलगकाहू ३ ॥
असकहि हरण भक्त उरत्रासा ॥ मुद्रादीन सपतसत तासा ॥ नि
ज करपत्र लेखि भगवाना ॥ देत तासु अस वदन वखाना ४
इहदीजो नरसो कहंजाई ॥ असप्रकार मुखवचन अलाई ॥ मु
हि कहंसदापत्र अस्प्यारी ॥ लिखते रैहुं भक्त व्रतधारी ५ भरन
जोंग मै पत्र तुमारे करतेरहहु सफल मुहि प्यारे ॥ पथक सुनत
असवचन सुहाए ॥ चल्यो हरषि धनपत्रकपाए ६ अंतरध्यान स्या
मल धनिभेयौ ॥ पथक प्रथम द्वारवति गेयौ ॥ करि अनेक जात्रा
मनभावा ॥ गवनकरत नरसीपेंआवा ७ दुरजनदेखि पथकअस

आवन ॥ लगेपरस्परहास अलावन ॥ अबदुरदसा होहिँ कसए
हीं ॥ देखहिं आयसकल अगगेहा ८ तबताहि पथकभक्त पदआ
ई ॥ करिप्रणाम अस विनय अलाई ॥ तुमहुंधन्यसंसृति ब्रतधा
री ॥ जाकरअस देवक अनुसारो ९ द्वारावती बसहिँ सुखदाता
॥ मंजुलस्याम वरणमृदुगाता ॥ अतिसरवांग ललित मानहरन ॥
वसन पीतलोचनजलजारन १० कुंडिल करणआभरनन साजा ॥
मानहुं कृष्णमदन मदलाजा ॥ सोसरूप अबबिसरत नाहीं ॥ पृ
वासि रह्यो मोर मनमाहीं ११ देखतलेख तुरतावितदीना ॥ जस
सतकारमोर तहिकीना ॥ वरनहुं एकवदन किमिसोई ॥ आवाज
नहुं कृतारथहोई १२ अस कहिदीनपत्र भगवाना ॥ सादिरलेत
नरसि हरषाना ॥ वारवारधरि सीसप्रणामा॥ लाग्योकरन भक्त
अभिरामा १३ अश्रूपातहरष दृगछाए ॥ कहिनसकत कछु प्रेम
अघाए दुरजनदेखि परमविसमाने ॥ चलेसकल निजहृदयल
जाने १४ नरसितासु संजुत अभिलाषा ॥ तीन दिवस अस्रम नि
ज राखा ॥ दोहा चतुरथ दिवस प्रसन्नमन ॥ सादिरकीन विदाय
॥ चल्योपथक तव सदन निज ॥ हरषिचरण सिरनाय १ चोपाई
गयोकछुक जबकाल विहाई ॥ करतसंत सज्जनासिबकाई ॥ अ
सतहिसुता सीलनिधजोई ॥ अवसरपायगरभ वतिहोई १ बीतेस
पत मासजवतासू ॥ भई दुखात्र देखितव सासू ॥ रहीसुनखागर
भवति जोई ॥ कुलरीत कछुनाहिनहोई २ पितुगृहतें कारजसब

एहू ॥ होहिं रीत असातिनकरगेहू ॥ भोजन वसनद्रव्य आभरना ॥ इहसबज्ञनकतास वयकरना ३ भाषत सास वदनअसताहू ॥ मोरे नहिन भाग्य उतसाहू ॥ पितु तुमार निरलज्ज महाना ॥ चारविचारतास नहिजाना ४ मांगत फिरतभीष सनसाधू ॥ निरतत निडरलेत करवाहू करतकूटानित बांधवसारे ॥ संसकारगत देखि तुमारे ५ सुनि असतास वदन कटुवानी ॥ पितुकहं लिख्यो पत्र दुखमानी ॥ इहांमोर बांधव जनजाती ॥ पावक वचन दहतनित छाती ६ जोतुवइत संजुत वितआई ॥ इनकरवंसरीति समुदाई ॥ करतजाहु निजभवन सधारी ॥ तोमें होहु मुचित दुखभारी ७ वाचिपत्रनिज दुखितकुमारी ॥ उठयोसि मानिखदजीयभारी॥ वृद्धवृषभरथ जीरणगेहा ॥ गवन्यो लेतभक्तवरतेहा ८ राधा कृष्ण विमल गुणगाता ॥ आवा भक्त सदन जामाता॥ साधु दरस जी रणरथतासा ॥ देखत लगेकरन सवहासा ९ दोहा सुताविलोकतकहत अस॥ पितुकसभेषकरा ल ॥ तुवधारतनिजलाजगतआव मोर सुसराल १ चौपाई पूरव जाति नाति जन वृंदा ॥ तुव पितु करत सकल मुख निंदा ॥ अव प्रतक्ष नयनन निज देखी ॥ करहि वदन परि हास वसेखी १ अब वित जोन जनक तुव पाहीं ॥ तो फिरि जाहु सदन निज माहीं ॥ सुता कथन सुनि भक्त सुजाना ॥ अति प्रसन्न मुख बचन वखाना २ पुत्रिन करहु सोच कछु एहू ॥ कृष्ण देव प्रभुदीन सनेहू ॥ पु

रवाहिं तोर मनोरथ आसू ॥ अब तुम जाइ निकट निजसासू ३ जो जो उचित वस्तु समुदाईं ॥ पूछि देहु मुहिं वेग जनाईं ॥ पितु मुख सुनत रुचिर असवानी ॥ जाय सास सन सकल वषानी ४ ते अस सुनत वदन मुसकानी ॥ मोरे नहिन परत कछु जानी ॥ अब सुमरण मुहि रहा नकाहू ॥ वारवार अस भक्त सुताहू ५ पितुपै जाय सास ढिग आई ॥ पूछत उचित बसतु समुदाई ॥ तव कटु वचन वदन निजसासू ॥ बोली क्रोध निरत असतासू ६ हमहिं उचित प्रसतर अबदोई ॥ पितु तें लेहु जाय किन सोई ॥ उकत सास निज पितु सनजाई ॥ तास वदन अस दीनि सुनाई ७ भक्त सुनत मान सहरषाई ॥ उठ्यो सुमरण करत जदु राई ॥ लिए वाद मंजुल निज पानी ॥ जरीण एक भवन हरि जानी ८ तहांजाय संजुत अनुरागा ॥ कृष्ण विमल गुण गायन लागा ॥ अस प्रकार जुग जाम विहाए ॥ तव भगवान भक्त सुख दाए ९ ललित रूप वैष्णव धरिलीने ॥ सकल वसतु संपादन कीने ॥ भए तुरंत अंत्र गत देवा ॥ भगवन भूत चराचर सेवा १० भक्त देखि प्रभु चरित सुहावा ॥ वार वार चरणन सिरनावा॥ सकल समाज लेत हरषाता ॥ आवा वेग सदन जामाता ११ ॥ उन कर बोलि नाति जन जाती॥ सव कहं जथाउचित जहि भाती । भोजन वसन आभरण चारू ॥ देत सवन संजुत

सतकारू १२ दोहा कंचन प्रसतर दक्षणा ॥ जुग जुग दीन प्र
वीनें ॥ विनय करत मुख विविध विधी ॥ हरषि विसरजनकी
न १ चौपाइं दुरजन सकल सास जुत देखी ॥ विसमय भए
लजित अवसेषी ॥ बिविध प्रसंसि लोक समुदाए ॥ निज नि
ज सदन हरष वसधाए १ ब्रह्मणि जठिर ग्राम इकताहू ॥ ता
सु सुमरण कीन नहि काहू दुहिता निकट आय अस वरनी ॥
मुहि बिसरयो कस मंगल करनी २ तव निज भूषण वसन उ
तारी ॥ तासु दीन हरि भक्त कुमारी ॥ पुत्रि दान अस देखि सु
हावा ॥ नरसी हृदय हरषिसुखपावा ३ पुनि प्रभु कहं सुमर
ण तसलागा ॥ करि करि नृत्यगीत गुणरागा ॥ तव करुणा जु
त भक्त सहय्या ॥ विविध वसन भूषण बित दय्या ॥ ४ ॥ सु
ता हेतु मन हरष प्रलीने ॥ तिन कर सदन स्थापन कीने ॥ हो
तविदाय भवन निज आवा ॥ कृष्ण सरोज चरण मनलावा ५॥
संसृांते विषय सुखादिक जोई ॥ तृण वत भक्त सृष्ट जीय खोई
॥ ह्वै विरक्त महि विचरण लागा । रटत कृष्ण गुण गाति अनु
रागा ६ तासु सुता कर सुतवडभागीं ॥ दुगध पान जव दीनसि
त्यागी ॥ सासहिं देत आपु हरषाती ॥ पितु पें आय भक्ति मद
माती ७ अति विरक्त वत मानस रागे ॥ जनक सुता हरिमूरति
आगे ॥ लोकलाज कुल लाज विहाई ॥ निरतत बिमल कृष्ण
गुण गाई ८ समय पाय वेस्या इक ताहां ॥ आईं

वसहिं भक्त वर जाहां । नृत्य गीत कल कला प्रवी
ना ॥ लोगन तासु कथन अस कीना ९ इहां नरसि
नामक गुण सागर ॥ सुभ संगीत मरमअति नागर ॥ वाद ना
द परिपूरण लीला ॥ ताकर भवन जाहु तुवसीला १० करहिं
अभिष्ठ तोरफुरसोई ॥ वेस्या सुनत हरष वसहोई ॥ आई वेग
भक्त वरधामा ॥ लागी नृत्य करन अभिरामा ११ मूरति देखि
दैव सुखदाई ॥ अरु संसरग भक्त वरपाई ॥ निरतत तास बि
मलमति होई ॥ निंदत करम सकल निजखोई १२ दोहा
वार वधू निजभाग्य वस ॥ जान भक्ति सरसाय ॥ तहां लागि
विचरण अभय ॥ कृष्ण विमल गुणगाय १ चोपाई नरसि भ
क्त कर मातुल जोई ॥ रहा मंत्रि मेदन पति सोई ॥ अवस
र एकभूप सनतासा ॥ मिथ्याजायकीन संभासा १ महाराज न
रसी जडएहू ॥ उपज्योकुल कलंक हमगेहू ॥ वार वधू कन्या जु
त वाहू ॥ करत नृत्य गायन उतसाहू २ अधम मूढ निर लज्ज
गवारा ॥ बांधवजाति नाति तृसकारा ॥ दीन नाथ तहि देह
निकारी ॥ तजहिं ग्राम निंदत जडभारी ३ सुनि नृप सचिव
कथन इहि भाती ॥ पठे चतुर निजचारिपदाती ॥ तेआए दारु
ण रिसछाए ॥ कहत चलहु बोलत नरराए ४ तब वेस्या क
न्या जुतआवा ॥ करत भक्त नृत गीत सुहावा ॥ दरसन देखि
कहिस नरराजू ॥ जान्यो इह विरक्त कुललाजू ५ मूढ करम

कस धारन कीना ॥ निज कुलजाति धरम नहिं चीना ॥ सुनत भक्त अस सुफुटउचारा ॥ जाति धरम कुल चार बिचारा ६ करम अकरम लाभअरुहाना ॥ राग द्वेष जग मान अमाना ॥ सुख दुख जस अप जस तुम काहीं ॥ हमरे हृदय भूप कछु नाहीं ७ इनतें हम विरकत संसारा ॥ नहिन जाति कुल धरम हमारा ॥ मोरे इनहुं दीन जवत्यागी ॥ मैंहुं भयो इनतें वेरागी ८ तो संबंध कवन अब पाछे ॥ देखहु करि विचार नृप आच्छे ॥इम दुरजन कर कपट कहानी । अहो धरन पति मानसमानी ९ मोरे लग्यो निवारण ग्रामा ॥ तुवशासत्रज्ञ निपुणगुणधामा ॥ जाहि संगत संसरगनकाहू ॥ त्याग रूप जानतस बताहू १० दोहा पौराणकतन देखि तव ॥ कहिस भूप कसएहू पंडत भाषिस भक्तसब ॥ कथ्यन विगत संदेहू१ चौपाई इह अदोष हरिभक्त सुजाना ॥ विगत विकारमान अपमाना ॥ भूप सुनत मानस हरषावा ॥ नरसी चरण नम्र सिरनावा १ अबतें अभय भक्त व्रतधारी ॥ विचरहुसकच सोच सवहारी ॥ अस प्रकार जब भूपअलावा ॥ भक्तप्रधान सदन निज आवा २ इह संसार असार विचारी ॥ जानि सारजग भक्ति मुरारी सावधान मानस अनुरागा ॥ भयोसि निरत भक्ति बडभागा ३ एक दिवस तहि सदन सुहाए ॥ संत सहस्र भ्रमत चलि आए क्षुधेत तृषत विथत जियभारी ॥ नरसि भक्त अस तिनहिं निहा

री ४ छूच्छो सदन अन्न बिनु आजू ॥ अहो दैव कसबन्यो अ काजू ॥ इन कहं देंहु अन्न अब काहा ॥ अस प्रकार चिंता कुलराहा ५ करि विचार तवनगिर सिधारा ॥ ठाड्यो जाय वनक इक द्वारा आरत दीन वदन तहिवानी । भक्त सृष्ट अस विलखिवखानी ६ राग किदार परम प्रीय मोरे । सो मैंधरहुं सदन सुभ तोरे ॥ सहस मुद्र मुहि देहु सुडाई ॥ आए संत सदन समुदाई ७ तिनहिं देन भोजन मुहि जोगू ॥ न तर करहिं अपजस सब लोगू ॥ जोलोंमैन देहुं धन तोरा ॥ तो लो रह्यो बनक प्रण मोरा ८ दोहा मैन करहुं गाइन वदन ॥ इह किदार कल राग ॥ भक्त बचन सुनि बनक वर ॥ उठ्यो जनहुं जीय जाग १ दीनसि मुद्र सहस्रकल ॥ लीनासि पत्र लिखाय ॥ हरष्यो भक्त प्रवीन जीय ॥ निज अभिष्ट फल पाय २ चौपाई तब ताहि वनक युगल वरनारी ॥ रही एक लौकिक व्यवहारी ॥ दूसर भक्ति निरत भगवाना ॥ तास वदन अस बचन वखाना १ जो मोहि कृष्ण दरस सुखदाई ॥ भक्तसृष्ट तुव देहु कराई ॥ तोइह सहस सुद्र जोइदीना ॥ मैं न लेहुं पुनभक्त प्रवीना २ नरसी सुनत तास असवानी ॥ सत्य वचन निज वदन वषानी ॥ आवा सदन हरष उरछावा ॥ विरंचिपाकनइवेद लगावा ३ बहुरिसंत सज्जन समुदाई ॥ प्रीति भक्ति जुत दीन जिवाई ॥ तबतेतज्यो भक्त वड भागा ॥

गायन तहि किदार कलरागा ४ रह्यो नियम असतास सुहावा जब जब रुचिर राग इह गावा ॥ तब तब कृपा सिंधु भगवाना ॥ जानि तासु निज भक्त प्रधाना ५ सुमन माल निज सुजस प्रदारी ॥ ताकर देत ग्रीव प्रभु डारी ॥ पै तहिदृष्टि अगोचरहोई ॥ करहि देव अस कौतक सोई ६ श्रवन करहिं निज वदन सुहायन ॥ भक्त कदार रागकलगायन ॥ होत प्रसन्नन त्रिभुवन राई ॥ परतन माल ग्रीव तहि आई७ दुरजन पाय मरमअसतासा ॥ जाय भूप सन द्वेष प्रकासा ॥ नरसीग्रीव प्रसूनन माला ॥ परत जवननृप दीन दयाला ८ काचेसूत्र रचित जड भारी ॥ देत ग्रीवहारे मूरति डारी ॥ ते अस भार प्रसूनन पाई टूटत परहि ग्रीव तहिआई ९ आज कपट सठ विदत प्रकासा ॥ प्रीक्षा लेहु भूप अवतासा ॥ जोपूरव सम टूटत आई ॥ परहिं माल तहि ग्रीव सुहाई १० ताकर भक्ति सत्य तबजानो ॥ नतर अनरथ कपट प्रभु मानो ॥ तबनरेस तहि लीन बुलावा ॥ अस प्रकार मुख दीन सुनावा ११ मोर देव मूरति करआगे करहुनृत्यगायन अनुरागे जो स्रज परहिं ग्रीवतुव आई ॥ तो तुम भक्त सृष्टजदुराई १२ दोहा नतर नगर सब लोक इह विदत दंभ तुवमानि मोहि सनभाषत वदन निज आन आन कछुवानि १ चौपाई नरसी सुनत भूप अस वानी ॥ वीना ललित लेत निज पानी ॥ बैठ्यो कृष्ण भव

न कल जाई ॥ भक्त सृष्ट आसन दृढ लाई १ दुरजन प्रथम पुषप चुनिल्याए ॥ पाट सूत्र दृढ माल बनाए ॥ डारि गए ह रि मूरति ग्रीवा ॥ जड मतिमंद अधम अगसीवा २ तब नर सी सुमरत भगवाना ॥ वीन ननादि मधुरमुख गाना ॥ लाग्यो करन मनोरमनाना ॥ जुगल दंड जब तासु सराना ३ परीन माल टूटि तहिग्रीवा ॥ हरषे देखि सकल अगसीवा ॥ तब न रसी निज हृदय लजाना ॥ सुमरणलग्यो कृष्ण भगवाना ४ सदा रहे प्रभु पैजरखय्या ॥ अब कसहानि देवमुहि दय्या ॥ पूरवकरनि मोर सब काजू ॥ भई कृपाल विडंभन आजू ५ भ लो सकल दुरजन मुख नाना ॥ करिहैं आज मोर अपमाना ॥ जब नरसी अपमान उचारा ॥ सहिन सकेतव भक्त उवारा ६ इह तो सदा रीत गिरधारी ॥ जन लघुता इन सकहिं सहारी ॥ नरसी भेष तुरत धरि लीना ॥ धनि कर भवन गवन प्रभुकीना ७ रही सदन ताकरत्रीयसोई ॥ हरि सरूप अभि लाषत जोई ॥ नरसि रूप भगवान सुहाए तासु वदन अस वचन अलाए ८ सुभ्रे इह मुद्रा निजलेहो ॥ सोअब मोर पत्र कलदेहो ॥ तासलेत मुद्रा हरषाई ॥ दीना प त्र करण जदुराई ९ दोहा तेसरूप प्रभु देखि दृग ॥ संभ्रम क हत उचारि ॥ इह कउ आनन जान मुहि ॥ परत नरसि बपु धारि१ चौपाई जब पति तास सदन निजआवा ॥सकल मरम

तहि दीनसुनावा ॥ वनक सुनत मानस विसमाना इतजनहर न त्रास भगवाना १ सनमुख भक्त पक्षधारिदीना ॥ नरसि बिचार देखि असकीना ॥ पूर्वहोत जिमिदेव सहाया ॥ अबहुं कीनभगवन तिमिदाया २ करतमनहिंमन दंड प्रणामा॥लग्यो करनगायन अभिरामा ॥ ते किदार कलराग सुहावा भक्त मधुर स्वर वदन अलावा ३ जनहुं शांतिरस पूरण भेयौ ॥ इकटक लोक मौन वत रहयौ ॥ संजुत नृपति सकल विसमाने ॥ मुरछित सुधि सरीर विसराने ४ मानहुं विदत मोहन मन लूटयो तत्र हरि सुमन माल कलटूटयो ॥ भक्त सृष्ट करकंठ सुहाई ॥ देखत सबन तुरतपरिआई ५ साधु साधु तव भूपउचारा ॥ कीनविविध दुरजन तृसकारा ॥ जुगकर जोरि चरण सिरनाई ॥ विनय नंम्र अस वदन अलाई ६ मोहिते भयोविपल अपराधू सदाकृपाय रूप तुव साधू॥ मैंअजान कछु सक्यो न जाना ॥ अनुचित क्षामहु भक्तभगवाना ७ अरु इहकरहु कथन मुहिकीहीं ॥ टूटत माल कंठतुवमाहीं ॥ कहि विध परीभक्त व्रतधारी ॥ तबनरसी सबकथा उचारी ८ भूपसुनत मानस विसमाना ॥ लग्यो देन संपतिसनमाना ॥ लीन्यो सोन भक्त बड भागा ॥ चल्यो भवन मानस अनुरागा ९ दोहा निरतत नृत्यअनेक कल ॥ गीततान सु वगाय॥ लग्यो बसन निज सदन सुभ ॥ हृदय सुमरि जदुराय १ चौपाई

समय पाय इक धनक सुजाना ॥ काहुनगर कररह्योमहाना॥ ताहि कन्या वर देखन हेतू ॥ अपरोहित निज बोलिनके तू १ तासु विविध विधि वदन सिखावा ॥ वरसंपति जुतहो हि सुहावा ॥ अरुकुलीन विद्याचतुराई ॥ सकलसुसील मा तुपितुभाई २ अस प्रकार वरदेखिसुहावन ॥ तुवानिजकरहु सप दिइत आवन ॥ धनिनदेसअपरोहित पाई आवानगर भक्त जदुराई३लोगन सनअसपूछन लागा ॥ कोइतनगरधनकवड भागा ॥ तवदुरजनसंजुत सनमाना ॥ दीन्चो नरसि नके त पठाना ४ तेधनडच सुंदरसुतवारा ॥ आवा विप्रसुनत तहिद्वा रा ॥ तासु विलोकि भक्त हरषाना ॥ यथा योग्य कीन्यो सनमा ना ५ करिसभभोजनादि सिवकाई॥ कहिस भक्त असवदन अ लाई इहां अगमन कवन हित कीना ॥ तव बोल्यो अस वि प्र प्रवीना ६ कन्या रुचिर अमुक धनिगेहा ॥ तहिहित बस्यो वाल तुब एहा ॥ तवनरसी करजोरि वखाना ॥इहन उचित मोरे सनमाना ७ मै दारद रतदीन इकागर ॥ तेधनडच सव लोग उजागर॥ इह न उचित संवंध सुजाना ॥ देखहु जाय धनक जगआना ८ लागन मेरचरण लघुराई ॥ तीनै काल अस वनाहिं न भाई ॥ विप्रसुनत हठजुतवारि जोरा ॥ दीन्योरुचि रमाथ सिसुखोरा ९ सकुन नारिकेलादि सुहावन ॥ दैवित व सन आभरणनभावन ॥ होतविदायनगर निज आवा ॥ ते

बृतांतसबधनाहिं सुनावा १०नरसी सुवन योग्यवर राहा ॥ ता
कर दीन तिलक उतसाहा ॥ असप्रकार जबविप्र उचारा ॥
धनी सुनत कीन्यो तृसकारा ११ दोहा अरे मूढ दिज कीनतुव
इह अयोग्यकस आज ॥ तैंभिक्षक सकलंक जग ॥मै प्रसिद्ध
धनिराज १चौपाई निह कलंक कहं कर्यो कलंकू आज मूढजि
मि बिदत मयंकू यद्यपि वार वार समुझान्यो तद्यपि अधम सक
लविसरान्यो १अबतें तजहु मूढ जड तोही जो सकलंककीन
जगमोहीं। सुनि असकठिन धनक दिज वानी ॥ बोल्यो हृद
य रोष निज ठानी २ इह अंगुष्ट तिलक जहि संगा ॥ मै दी
न्यो वरमाथ उमंगा ॥ सो तुव छोदि लेहु अवमेरी ॥ लावहु जा
यसकुन मै फेरी ३ धनी सुनत अस मोनरहाना ॥ बांधव जाति
जनन समुझाना ॥ जानिभाग्य निज सुता सुधावा ॥ देखि स
दिन वरलगन सुहावा ४ अपरोहित पें दीन पठाई ॥ लगन
पत्र सादिर हरषाई ॥ नरसि देखि चिंतन जीयकीना ॥ लगन
पत्र कर लेत प्रवीना ५ धर्यो जाय हरि मूरति आगे ॥ विनय
वदन मानस अनुरागे ॥ लाग्यो करण धरण धरसीसा ॥ दैव अ
दैव दैवं जग दीसा ६ मै बल हीन दीन सब भाती ॥ समधी
पठयो लगन वर पाती ॥ मुहि सामरथ दैव कछु नाहीं ॥ तुम
हिं करहु सब त्रिभुवन साईं ७ समधी नाति सकल अब तोरे
॥ इन कर जीय अभाव प्रभु मोरे ॥ अस कहि लग्यो निना

दन वीना ॥ कीन ललित गायन मन लीना ८ दोहा तब द्वारा वति तें चले ॥ जदुपति भक्त उदारु ॥ आनि समाज जुत विबिध विधि ॥ लिए सकल संभारु १ चौपाई पूछित लोग देखि मग सोभा ॥ इह कित कवन जात मन लोभा ॥ तब्र भृत कहत वदन अस वरनी ॥ सेवक नरसि अमुक पति घरनी १ रच्यो भवन निज पुत्र विवाहू ॥ आए कीए निमंत्रन ताहू ॥ तब भगवान सदन तहिजाई ॥ जाति नाति सब लीन बुलाई २ तीन दिबस पूरब भगवाना ॥ निज कौतक करुणाय निधाना ॥ व्यंजन बिविध भांति विरचाए ॥ यथा योग्य सब्र दीनजिवाए ३ देव राज दुरलभ संभारू ॥ लाय संग निज बिबिध प्रकारू ॥ भूषण चारु चैल वितनाना ॥ सब कहं यथा उचित सनमाना ४ सज्जन नाति जाति जन जेते ॥ कीने कृष्ण कृतारथ तेते ॥ तत पसचात बरात सजाई ॥ सो अनंत छवि वरनिनजाई ५ तब निज भक्त प्रीये सनकाहा ॥ तुम कहं उचित गवन अवराहा ॥ तव नरसी कर जोरि उचारा ॥ दीन नाथ इहपुत्रतुमारा ६ संबंधी नाती सवतोरे ॥ तुमहि उचितअवभगवनमोरे ॥ सुनि अस कथन भक्त हित कारी ॥ लीनसि नरसि रूप प्रभु धारी ७ दफ पन्नव बाजत सैनाई ॥ भेरन फीर घोरधुन छाई ॥ वाहन विविध वाजि गजमात्यो ॥ वरन वरन वानि चली वरात्यो ८ चंचल चपल तुरंत न रूढे ॥ वीरधीर

साजुद छब गूढे ॥ चिकरत नाग वाज हैनाहीं ॥ उठी धूलि नभमारगकाहीं ॥ ९ ॥ समधी नगर प्रांत जब आए ॥ चकितलोक अविलोकनधाए ॥ उततहि धनक समधि अभिमाना ॥ अपरोहत कह बोलिवखाना १० देखहु जायसाध तव होई ॥ आवा होहिं बहिरपुरसोई ॥ जो समधी तुवमोहि मिलाना ॥ चल्यो सुनतअसविप्र सुजाना ११ पुरतेंबहिर आयजबदेखा ॥ धूमधाम कछुजायन लेखा ॥ खरभरपस्यो वरातमहाना ॥ संखघोरधुनि हन्योनिसाना १२ वाहनिमनहुं साजि चतुरंगा ॥ आवा इंद्रजनहुं महिरंगा ॥ दोहा धरणधूरपरिपूरभो ॥व्योमलपत दिनमान ॥ निजपरसूज नपराहिं कछु ॥ मनहुं दिनाहिं निसिभान १ चौपाई देखि वरात विप्र विसमावा ॥ धनिपें आयवदन अस गावा ॥ आवा समधि वरातसजाई ॥ देखहुकसन बहिरपुजाइं १ दीनसाधुजहि वदन उचारत ॥ वारवारमोरे तृसकारत॥ देखिले हु अब साधु सधंगी ॥ लाबाजनहुं साजि चतुरंगी२ धनी सुनत अपरोहित वैना ॥ निकस्यो बहिर तजत जब ऐना ॥ तब वरात देखिस गत पारा ॥ गजरथ वाहन विविध प्रकारा ३ लीनेसुरस माज सुरराजू ॥ आवा जनहुं धरण तलआजू ॥ अपरोहत सन वदन उचारा सोधूरत दिज दीन विचारा ४ इह आवा सुभसजत समाजू ॥ महाराज राजन सिर ताजू ॥ तोलो नगर निकटजब आए ॥ रथारूढनरसी तवपाए ५ उठ्यो कंपितन धनक महा

ना ॥ बोलिन सकत वदन बिसमाना ॥ मै लखि तासु साधनिर धारू जोस्यो कछुनसदन संभारू ६ बांधव जनसन कहा अलाई ॥ करहुं उपाय कवन अबभाई॥ निज संपति जुत पुर कर सारू ॥ जो मै लेहुं द्रव्यसंभारू ७ तोपिएक भोजनइन केरो ॥ वनहिं नजानि परत जिय मेरो ॥ अस विचारि अपरोहित काही ॥ दी न पठाय वेगतिनपाहीं ८ कहियो वदन विप्र अस जाई ॥ मेरन सकहिं सीस धरराई ॥ मै निरधन अति दीन विचारा ॥ करिन सकहुं सतकार तुमारा ९ इहछुछे कछुदान कूमारी ॥ मोहितेसर हिं भक्त व्रतधारी ॥ बिप्र सुनत असवदन उचारा ॥ अबतुवकहां सुजस वितसारा १० लाज व्यवस कछु उत्रनदीना ॥ तब दिज चल्यो हरष मन लीना ॥ नरसि रूप भगवन पै आई ॥ विप्र वदन अस गिरा अलाई ११ दोहा तुव समधी करुणा यतन ॥ कहत जुगल करजोरि ॥ जिमि संसृति तुव विपलता ॥ तिमि लघुता जगमोरि १ विंदु बरोबरि सिंधु किमि ॥ कराहिं अगम संसार ॥ अरु चीटी दुर गम भवत ॥ जथा प्रबल गजभार २ चोपाई ॥ तिमि मोहि अगम तोर सनमाना ॥ अस विचारि करुणाय निधाना ॥ जन कर यथा शकत अनु सारा ॥ करहु नाथपूजनसुइकारा १ विनय वचन जब विप्र वखाना ॥ बोले नरसि रूप भगवाना ॥ अव रिल भक्ति प्रेम जुत चारू ॥ जोदिज होहिं अलपसत कारू २ ॥

मेरु तुल्य संसय कछु नाहीं ॥ अस विचारि निज मानस माहीं ॥ जथा उचित अवसर अनुसारू ॥ विप्र हमार करहु सतकारू ३ भगवन बचन सुनत अनुरागा ॥ हरपत चल्योबि प्रवड भागा ॥ धनिसनजाय मरमसबकाहा ॥ तासप्रीति संजुत उतसाहा ४ पानिग्रहण निजसुतासुहावा ॥ विधिविधान जुत दिनकरावा ॥ भईपरसपर विनयवडाई ॥ कीनीयथाउचित सिवकाई ५ नरासिरूपभगवान महाना ॥ तहां विभगत की नधननाना ॥ बहुरिसुजस जुत होत विदाए ॥ हरषतभक्तभवन प्रभुआए ६ दोहा इतउतदेखतचकतसब ॥ सैनादिकसंभारू ॥ लखिनसकहिं कछु मरमअस ॥ प्रभुमायामनहारू १ ती नदिवसकरुणायतन वसेभक्तनिजधाम ॥ करिसबकरसंतोष प्रभु ॥ जथाउचित अभिराम २ पुनिगवने निजभवनकल ॥ कृष्ण भक्तचितचोर ॥ असनरसीजन जगताजित ॥ भएभक्तसिरमोर ३ सुरदुरलभसुख भोगिजग ॥ तजत अंतनिजकाय ॥ कृष्ण कृपातेंकृष्णभे ॥ भक्तकृष्णगुणगाय ४ इतिभक्तविनोदग्रंथेनर सीचरितंनाम सर्गः ॥ ५७ ॥ दोहा देवदासकुलविदतइक ॥ सदनाभक्तप्रवीन ॥ नंददासभैपदमपुर ॥ विष्णु भक्तिनितलीन १ दासगुपालप्रसिद्धइक ॥ भक्तदेसबंगाल ॥ जहिवसिनरहरि ग्रामकल ॥ सुमरेकृष्णकृपाल २ गढानगरवक्षातइक ॥ मा धोभक्तसुहाय ॥ जहिनृतगीतपुनीतनिज ॥ नंदकशोररझाय ३

एकदिवसप्रासादतें ॥ निरततभक्तप्रवीन ॥ गिरिधरणिउनमत्तव त ॥ प्रेमभाक्तिमनलीन ४ इति भक्तविनोदग्रंथे पूर्वोक्तभक्तचरितंनामसर्गः ॥ ५८ ॥

अथअंगदचरितंकथ्यते ॥ दोहा अंगदनाम सुभक्तभे ॥ राज
नगर जसमान । तिनकर कथाविचित्रअव ॥ करहुं कथनसुख
दान १ चौपाई तहिपूरवकछुनाहिनजाना ॥ भगवनभक्तिप्रभा
व महाना ॥ पतनितासगुरुसेवन राती ॥ संततकृष्णभक्तिमद
माती १ एक दिबसगुरुवर अभिरामा ॥ आएहरषिरुचिर त
हिधामा ॥ वैठिपरसपर ज्ञान अलापा ॥ लागेकरनहरन सं
तापा २ तव आवामूरखपतितासा ॥ देखिइकांतकरत संभा
सा ॥ परमरोषमानसनिजठाना ॥ वदनकटुकदुरबाद अलाना
३ आबाकवनकाज मुहिगेहा ॥ होत आनकछुहृदयसंदेहा ॥
गुरुअससुनततासदुरवानी ॥ गवनेजीयकलेसानिजमानी ४ ते
ऊसुशीलविकलमनमारे ॥ जायदुखित तव वैठि किनारे ॥ तव
मध्यान्ह कालपतिधामा ॥ आवाकरन हेतु विस्रामा ५ तासु
दोखि दृगदुखितमलीना ॥ अतिस प्रीतिजुतपूछन कीना ॥ उ
पज्योकवन शोक तोहिप्यारी ॥ करहु प्रगट निजबदनउचारी ६
मै प्रतिकार करहुं तहिभामा ॥ जहितें मिटाहिं खेदतुवरामा ॥
तव भामन अस वदन उचारा ॥ गुरुअपमान कीन तुव भारा ७
पितु समान मुहि सो गुरु देवा ॥ मन वच करम करहुं नितसे
वा ॥ तुम कीन्यों ताकर परिबादू ॥ रहेसुदैव सरल चित सा
धू ॥ ८ ॥ तिन कर जानि बिपुल अस हानी ॥ मै निजपती
मरण रुचि मानी ॥ अस प्रीय बचन सुनत दुखमाना
॥ वारवार मानस पछताना ९ कहत नकरहु शोकजीयभारी ।

गुरु कृपाल जिमि होहिं सुखारी ॥ अवते करहुं जतन मै सोई ॥ सब कर सदा रुचिरहितहोई १० तवभामन मानस हरषाई॥ पतिहि वदन निजबचन अलाई ॥ इह जो तुव सुत बित मनलावा ॥ पतीजनमनिज वृथागुवावा ११ तेन होहि परलोक सहाई ॥ ताते लेहुशरण जदुराई ॥ लोकप्रलोकसुजस सुखदय्या ॥ काठिनकाल प्रभुहोहिसहय्या १२ जो पतिमोर प्रीतिरुचितोरे ॥ तोअबवेग बोलिगुरुमोरे ॥ कृष्णमंत्रपावनजगजोई ॥ गुरुमुखकरहु श्रवणअबसोई १३ हेविरक्ततुवभक्त समाना ॥ विचरहु अभयचरण पतिप्राना ॥ हितमयवचन सुनत निजबाला ॥ उठयोजाग अंगदततकाला १४ दोहा गुरुकहंसादिर बोलिनिज ॥ सदनभक्ति सरसाय ॥ भयोकृतारथ रूप जग ॥ कृष्णमंत्र सुभपाय १ चौपाई नृप प्रसादसब दुरमतिखोई विचरनलग्यो भक्तिरतहोई ॥ तासएक भ्रातव्य सुजाना ॥ सोतासाचिव भूपगुण खाना ॥ १ समयएक रिपुजीतन हेतू ॥ सदिनलोधि ताजि चल्योनकेतू ॥ अंगदकहं निजसंग प्रवीना ॥ गयोलेत मनहरष प्रलीना २ अरिविलोकि दारुणअतिभारी ॥ चलेत्रासबश सदनविसारी ॥ तिनकरनगर लूटिसमुदाई ॥ नृपपैंसचवहरष जुतआई ३ अंगद कहंताहिलूट मझारा ॥ मिल्योएक आभरण अपारा ॥ खचतहेम मणिदिव्य सुहावत ॥ वीचअमोल वज्रसरसावत ४ देखिभक्ति निसचय करिलीना ॥ जगननाथ

अरपणइहकीना ॥ कंचनरतन आनधनजेइा ॥ अंगदलाय लूटि निजगेहा ५ तेविभगतसंतन करिदीना ॥ हरिआभरण राखिइक लीना॥ तवदुरजन छितपत सनजाई॥ तासमरम सव दीन जनाई ६ नाथ अमोल आभरण भावा ॥ तहिराख्यो निजसदनदुरावा ॥ मांग्योभूप सुनतबहुबारा ॥ पैन कीन अंगद सूइकारा७ जगननाथ प्रभुअरपणकीना ॥ तातेंसकहुं नछितपतदीना ॥ तव तहिभ्रात सचवसन राई ॥ भाष्योतुमहुं जतन जुतभाई ८ इह आभरणदेहू मुहिआनी ॥ सचवसुनत नरनाइकवानी ॥ कीन्योय द्यपि यतन अपारा ॥ तदपिन कीन तासूइकारा ९ दोहा तव नेरसतहि भगानिकहं । देवितलोभ अलाय ॥ करिमुरछित विष दततहि । देहु आभरणल्याय १ चौपाई एक त्रीएअति जडमति हीना ॥ दूसरभूप लोभावित दीना ॥ अधमपाय वित लालसलोई ॥ वाचनउदित वीरनिजहोई १ कारिमिस्रत भोजन विषल्याए॥ जबलागी निजवीरजिवाए ॥ तहिपूरबवत हरिहिसुहावा ॥ प्रथमरुचिर नैवेद लगावा २ पाछे लग्योआपुजब पावन॥ तबनिजभागनीय मनभावन ॥ बोलनलग्यो हरषसरसाई ॥ रही सोनिरतकेलिलरकाई ३ कहिसकुमति करिकपटसनेहा ॥ पाबहुवीर पाकतुवएहा ॥ गबानिदूर बालन सनबाला ॥ तवअंगद मुखवचनरसाला४ भगनी मोररुचिर प्रणएहा ॥ तहिसनकरहुं पाकनितगेहा ॥ सुनत तासचिंता जीयमन्यां॥ इहिसनकराहिं पानविष

कन्यां ५ अस विचारि रोदन करिलागी ।' तबबोल्यो अंगद वडभागी ॥ तुवभगनी रोदनकसठाना ॥ कुमतिवदन तबवच नअलाना ६ भूपउक्तबितलालसपाई मोहितेंभयो पापवडभाई॥ तुव भोजन मिस्रत विषकीना ॥ सो न करहुं अब पाक प्रवीना ७ अंगद सुनत कीन तृसकारा ॥ कस्योकपट असबहुरिउचारा ॥ मै नइवेद लाय भगवाना ॥ जो नहिपाऊं होतअपमाना ८ असकहि लीन भक्त वरपाया ॥ प्रभु नइवेद जानिसुखदाया ॥ हरिप्रसाद विषविकटमहाना॥ भयोसु खदतहि सुधासमाना ९ अंगअंगकलक्रांति सुहाई ॥ तांकर ज नहुं अचित विषआई ॥ इह वृतांत छित पत सुनि पायो ॥ तुरत सबल भृतदोन पठायो १० संजुत तहि आभरन अजा सा ॥ पकरत लाहु वेग मुहि पासा भृत न देस नर नाइकपा ए ॥ पकरन हेतु भक्त हरिआए ११ दोहा तव अंगद आभ रण जुत ॥ चल्यो लुपत तजिगेहू ॥ पाछिल लागे जात भृत चरण चिन्ह लखि तेहू १ चौपाई रहे भूप भृत वाजि सवा र ॥ तिनहुं रोकि अस वदन उचारा ॥ अरे मूढ आभरन सुहावा देहु वेग छित पत मन भावा १ नतर होहिं सठ मरण तुमारा ॥ तव अंगद सुनि वचन उचारा ॥ इह तडाग जो इ सनमुख तोरे ॥ देहु सनान करन इत मोरे २ पाछे लेहु आ भरन भाई ॥ अस कहि वारिसरोवरजाई करिसनान मुख

कृष्ण उचरना ॥ लीन्यो बहुरि करन आभरना ३ प्रकट वद
न अस वचन अलावा ॥ इह भूषण भगवान सुहावा ॥ अस
कहि वारि तडाग मझारा देखत सबन दीन ताहि डारा ४
तब भृत भूप लोक समुदाई ॥ लगे तासु अन्वेषण आई
आवा भूप सुनत ततकाला ॥ डार्यो अनक यतन जुत जाला
५ यद्यपि सलिल सशोषण कीना तद्यपि सोन आभरन चीना
तव निसि दीन स्वपन भगवाना। तुबकस कीन यतन नृपनाना
६ अरपण कीन भक्त इह मोरे होहिं भूप कस प्रापत तोरे प
च पच वृथा मरहु कतराई ॥ कसन जाहु निज सदन परा
ई ७ देखि स्वपन अस भूप सुजाना उठ्यो प्रात मानस
हरषाना लिये समाज सकल निज गवना आवासुमरि कृष्ण
निज भवना ८ बोलि सचव निज भाषण लागा तो लो अन्न
वार मै त्यागा जोलो अंगद भक्त प्रवीना इहांभवन आगमनन
कीना ९ सचवसुनतअसदीनपठाए॥अनुचर चतुर भक्तहितल्या
ए ॥ तिनहुजायसंजुत सनमाना ॥ करिकरि विनय नंम्रमुखना
ना १० अभय देतछितपत पैल्याए ॥ उठ्यो प्रणामकीन नरराए
॥निज अनुचित सबक्षमा कराई ॥ बन्यो तास सिषसेवकराई
११दोहा असप्रकार अंगदभए ॥ भक्त निपुणभगवान ॥ जहिनि
सचयअसदेखिदृढ ॥ रीझेकृपानिधान १ इतिभक्तविनोदग्रंथे अं
गदचरितं नामसर्गः ५९ ॥

अथचतुरभुज भूपचरितंकथ्यते ॥ दोहा विदतकरोली ग्रामइक॥ भूपचतुरभुजनाम ॥ भक्ति महातमतासकछु ॥ करहुकथनअभिराम १ चौपाई अतिसमनोरम कथासुहावन ॥ पावन भक्ति प्रीतिसर सावन ॥ होतविरक्त भक्त भगवाना ॥ सेवतअतथिसंतसनमाना१ चारिउोरनिजग्राम सुहाए ॥ नियतकीनभृतवदनसिखाये ॥ आवहिअतथिसंतइतकाहू ॥ तुरजनमोरभेटविनुताहू २ जानिनदेहु भूपप्रणकीना ॥ असप्रकारभक्तीमनलीना ॥ संजुतपतनिहरषउर छाए ॥ पूजतसंतदेव सुखपाए ३ भोजनवसन वितादिसुहाई ॥ करहिंनरंत्र भूपसिवकाई ॥ तब दिसांत्रकर भूपतिकाहू ॥ सुन्यों श्रवणअस कीरतिताहू ४ पौराणक सन बदनउचारा ॥ धरमाधरमाबिवेकाविचारा ॥ पात्रअपात्र न सूझतजाहां ॥ जातिनजात ज्ञातकछुताहां ५ तबवोल्यो पंडित वरज्ञानी ॥ असनउचित भाषणनृपवानी ॥ तेनरेसहरि भक्तसुहावा ॥ साधुदंभगत लोगनगावा ६ करहिंअनन्य भक्तिभगवाना ॥ सेवतअतिथि संतसनमाना पात्रअपात्र भक्तिपथमाहीं ॥ भक्तजननकहं सूझतनाहीं ७ कृष्णरूपसब जानिअभेवा ॥ करहींनरंत्र भक्तिरत सेवा ॥ तब नरेस निजमागदकाहीं ॥ प्रक्षालेनतास नरसाईं ८ पठयोवदन सव भांतिसिषावा ॥ तहिवैष्णव निजभेष बनावा ॥ मालामुद्र तिलक कलधारा ॥ आवातास धरणपत द्वारा ९ तवद्वारप नृप भवन नजाई ॥ दन्यिोतासअगमन सुनाई ॥ भूप सुनतमहिषी जुत

आवा ॥ करिपूजन सनमानसुहावा १० दीनअनेक वसनधन दाना ॥ चतुरभूपतहिमरमलखाना ॥ पीक्षाकरन मोरइहआया॥ असविचारिनिज मानसराया ११ दोहा कानबराटि कलेतइक॥ संपटधरतसुजान ॥ वेष्टतकांचनसूत्रसुभ ॥ पाठपटनलपटान १ कपटसंतकहंदेननृप ॥ सादिरकीन विदाय ॥ सोप्रसन्नमनलेततत हि ॥ आवनिकटनिजराय २ चौपाई धरनपाल सुंदरसतकारा॥ तासवदननिजाविविधउचारा ॥ तेतपटसादिरहरषाई ॥ धरयोबहु रि सनमुख नरराई १ भूप चकत मानस अनुरागा ॥ खोलि तासु जब देखन लागा कान वराटक जबहिं निहारी पौराण क सन कहत उचारी २ पटु इहि कर कारण अबकाहा तब बोल्यो पंडित उतसाहा सुनहु नरेस तास चतुराई जो मांग द तुव दीन पठाई ३ तास माल मुद्रादिसजावा ॥ वैष्णव भेषवशेष वनावा ॥ वास्तव वंदि रूप निजकाहीं ॥ लीनदुराय वैषणवमाहीं ४ अब नृप तोर जणावन हेतू । कीन जतन अ स सुनाति नकेतू ॥ संपट कान वराटक दीना ॥ तुव पे पठयो न रेस प्रवीना ५ तुव बिलोकि कछु हृदयन आन्यो ॥ वास्तव कान वराटक जान्यो ॥ उत वैष्णवकल भेषदुरय्या ॥ वास्त व वंदिजानि नृपलय्या ६ साधुभेष सतकार कराए ॥ परमचतु रनृप कीन विदाए । सुनत नरेस पुरानक वानी ॥ अति प्रमोद मानस निजमानी ७ कहिस तुमहुं पंडित अबताहां ॥ जाहु

घसाहिं छित पत असजाहां ॥ तव सतकार कराहिं कससोई ॥ पंडित चल्यो हरष वसहोई ८ जब नरेस सनमुख दिज आ वा ॥ तव सनमान विविध विधिपावा ॥ होत बिदाय चलनज वलागा ॥ तव अस कहिस वचन अनुरागा ९ भूप जुगलशु क शारक तोरे ॥ एक देहु दाया करि मोरे ॥ तव नरेस हरष तशुकदीना ॥ चल्यो लेत दिज सुष्टप्रवीना १० दोहा नृप पें सादिर आयदिज ॥ ते नृपशुक वितदान॥ राख्यो सनमुखविवि ध विधी ॥ कीन कथन सनमान १ चोपाई शुकहिंवि लोकिभूप असकाहा॥ सुनहौ सकुन कवन तवराहा ॥ कीर कहत मुखवचन वखाना॥कौतुमको हम भूप सुजाना १ इहिअसमअस्यो सकलजग लेखा ॥ मै तो सरब कृष्णमय देखा ॥ अस बिचारि मानसनि जराई ॥ भजहु कृष्ण संकुल सुखदाई २ सुनत भूप विसमय वसहोई ॥ भाषत धन्य धन्य जग सोई ॥ जांकर असखग ज्ञा न प्रवीना ॥ कृष्ण सरोज चरण मन लीना ३ दोहा अस प्र कार छित नाथ नित ॥ शुक मुख वचन विलास ॥ सुनत सु नत भयो अमर वत ॥ कट्यो अगम भव पास ॥ १ ॥

इतिभक्त विनोद ग्रंथे चतुरभुज भूप चरितं नाम सर्गः ६०

अथ मीरां चरितं कथ्यते ॥ दोहा हरण दोष भ्रम करन कल ॥
गिरधर चरण सनेहु ॥ करहु कथन सादिर वदन ॥ भक्ति महा
तम एहु १ चौपाई मारवाड वर देस सुहावा ॥ जैमल नाम
भूप तहं गावा ॥ उपजी तास सदन सुभ कंन्या ॥ मीरां वाइरू
पगुणधन्या १ गिरधर देव जनन सुखदाई मूरति रुचिर सद
न नरराई ॥ तासु भक्ति संजुत सतकारा ॥ पूजहिं सकल भूप
परिवारा २ मीरां पितुहिं देखि हरषाती ॥ गिरधर भक्ति प्रेम
मदमाती ॥ जाहिं लुपत हरिभवन सुहाई ॥ करहिं नृत्य क
ल गीत अलाई ३ जब जब चलहिं प्रसंग विवाहू ॥ तब त
य होहिं विगत उतसाहू ॥ गिरधर स्वामि प्राणपति जानी ॥
हृदय प्रसन्न रहत सुखमानी ४ कहि कहि जननि जनक बहु
वारा ॥ तासु कराय अंत सुइकारा ॥ देखि सदिन संजुत उत
साहू ॥ जनक रुचिर करि दीन विवाहू ५ दायज दीन अने
क प्रकारा ॥ चल्यो लेत तब राज कुमारा ॥ मीरां देखिभयो
प्रसथाना ॥ अति कलेस मानस निजमाना ६ गिरधर बिरह
सुमारि अकुलाई ॥ परी अचेत धरण मुरछाई ॥ तब दासि
न तहि छीन संभारी ॥ सिंचि वदन वर सीतल वारी ७ मद
दन विजन करत सुधि आनी ॥ पूछत जनक वदन मृदुवानी
पुत्री कवन सोच जीयतोरे ॥ करहु सुकथन संकगत मोरे ८
मैं फुर करहुं मनोरथ तोरा ॥ मोहि दुखभयो देखिदुख तोरा

तब मीरां रोदन मुखठानी ॥ भाषित जननि जनक कहंवानी ९ मूरति गिरधर दीन सनेहू ॥ मोरेदेहु जनक तुवएहू ॥ अन्न वसन भूषण वितकाहू ॥ मोरे नहिन जनक उतसाहू १० गिर धर दैव एक सुखदाए ॥ मोरेप्राणनाथ मनभाए ॥ मीरां वचन सुनत पितुमाता ॥ ते मूरति गिरधर सुखदाता ११ दोहा त हिदीनी अति प्रीति जुत ॥ लीनी मीरांवाइ ॥ कीनी सिवका रूढरुचि ॥ प्रेम नवीनी नाइ १ चौपाई अस प्रकार मीरा हरषाती ॥ गिरधर भक्ति प्रेमअनुराती ॥ जनक जननिते हो त विदाई॥सादि र गवन भवनपति आई १ सुत सुतभामानिसं जुतसासू ॥ अतिप्रसन्न मन मानिहुलासू । आन समाज नृप ज सबलेवा ॥ पूजन चली ग्राम कुलदेवा २ तहांजाय विधि वत सबकीना ॥ निजकुलरीति हरष मन लीना ॥ तब मीरांसन सास उचारा ॥ तुव पुत्री संजुत सतकारा ३ पावन इष्ट देव नि ज कोरी ॥ करहु प्रणाम जुगल करजोरी ॥ मीरां सुनत सास असवानी बोली अभय वचन हरषानी ४ मोरेविनु गिरधर भगवा ना मातुन इष्ट देव जगआना एकहिं देव दयानिध मोरे ॥ गिरधर उनहिं जुगल कर जोरे ५ दंड प्रणाम मोर ॥ उनकाहीं ॥ आनदेव मुहि सूजत नाहीं ॥ मीरां कथन सास सुनिकाहा इहेमे तुहिनदोष कछुराहा ६ इह कुल इष्टदेव भगवंता॥वाह

वृद्धि सौभाग्य करंती ॥ इहिकहं नम्रसीस तुवनाई ॥ सुतालेहु क
ल्याणसुहाई ७ असप्रकार जबतासबखाना तबमीरां सुमरत भग
वाना ॥ बोली वदनसुनहु तुबमाई ॥ मोहि सौभाग्यनित्य सुख
दाई ८ असजांकेगिरधर पतिनागर ॥ सदाअमर नई भवनउजा
गर ॥ जो सौभाग्यदात असलेवी ॥ मातुतुमार इष्टकुलदेवी ९
तोपुरकराविधवा कसनारी ॥ जबमीरां असवचन उचारी ॥ कंप
तअधर कोप वससासू ॥ चलीविकल जीयहोत नरासू १० दो
हा पतिपें जायवृतांत अस ॥ कीन कथन सबतास ॥ इहदुरम
तिकतलायतुव ॥ करनवंसानिजनास १ ॥ चौपाई अबहिं वकमु
खवचन उचारत ॥ मानहुं वज्रवान उरमारत ॥ पाछे कवन कर
हिं इह नीकी॥वनतनसास सुसर निजपीकी १ अवतेमैन सुभासु
भकाहू ॥ करहुंकथन पति दुरमतिताहू ॥ राणासुनत रोषरिसपा
गा ॥ भाषत इह कलंक कसलागा २ आयुधहनतवधहुं अवजो
ई ॥ तोत्रीयवध दारुण अगहोई ॥ इह कसमराहिं जतन अबका
हा ॥ अस विचारि चिंताकुल राहा ३ निजपतनी सनकहिस
उचारी ॥ अब इह रैहिं भवन निजन्यारी ॥ जिमिदासी सत
कारनहीना ॥ दुरमति वसहिं सदन निजदीना ४ अस प्रकार इ
कजीरण गेहा ॥ डारदीनिवंदीवत तेहा ॥ धरमी वृद्ध विविध स
मुदाई ॥ छाडे द्वारपाल तबराई ५ मीरां धरम पतिवृत माती ॥
श्रीगिरधर पूजन निशराती ॥ सादिर लेत ललित करवीना ॥

मधुरमधुर स्वरगायनलीना६ निरततनव लभाव कललाई॥ पाव
न भक्ति प्रीति सरसाई ॥ सासससुर दुरवचन उचारे ॥ मरुतवे
गवत जानि विसारे ७ सुखदुखरागद्वेष संसारा ॥ सदाएकरस
जिनाहिं विचारातिन कहंकवन मानअपमाना ॥ जगदुखवाद स्व
पन वतजाना ८ असप्रकार मीरां अनुरागी ॥ गिरधर चरण
कंजलवलागी ॥ प्रगटबैठिसुभसंत समाजू ॥ गायन करतत्य
गत जियलाजू९ चारबिचार विसारत सारी ॥मगनअनंदप्रेमनिध
वारी ॥ असआचारतास अनिहारी ॥ सासससुरदुखमानिसभा
री १० हमरी निसकसंककुलकाहीं॥ लाग्योइहकलंक जगमाहीं
॥ होहिं उपाय दैवअवकाहा ॥ मानत हृदयविपुल निजदाहा
११ दोहा तब मीरांकर दिवसइक ॥ कहतननद असआइ ॥ नि
हकलंकजुग कुलनकहं ॥ तुवकलंक कललाई १ चौपाई सुनहु
प्रजावलि परमसनेही ॥ नृपकुलीन कहंउचितन एही ॥ चारुअ
जादवंसच्युत होई ॥ साधुसमाज लाज सबखोई १ अभय नृत्यगा
यन अस करना ॥ होत सुसील देखि दृग मरना ॥ सासससुर
अस देखि तुमारे ॥ दुखित घोरानिजजीयन विसारे २ जयम
लजनक तोरजग माना ॥ करत होहिं सुख कवन वखाना ॥ ता
कर सुजस कीट संसार्यो ॥ भलों आजतुव करन उतार्यो ३ ॥
ननदन भनन वदन असवानी ॥ मीरां सुनत स्रवण मुसक्यानी
॥ अहो प्रेम कररीतिनयारी॥ जिमि जिमि करहिं प्रबोधन सा[illegible]

४ तिमि तिमि दिपालि लेत अधि काई सुनहु ननदि असबद न अलाई ॥ निसचय सत्य कथन सब तोरा ॥ मानत सास सुसर दुखमोरा ५ पति संजुत बांधव जन सारे ॥ निज निज दुखित सकल मन मारे ॥ मोरकुकरम देखि अति हानी ॥ उत जिय जनक जननि निजमानी ६ पुरकर आन लोकजनजेहू ॥ देखहिंत्यगत लाज मोहितेहू ॥ पै हित कर नि करहुं अबकाहा ॥ गिरधर प्रेम अलोकिक राहा ७ मोहि विक्षपत कीन जगतासा ॥ निजपर करहिं लोकसवहासा ॥ सास सुसरबांधव पितु माता ॥ इन कर ननदि कवन सुख वा ता ८ चौदस भवन चराचर जेहू ॥ मोरे नहि सूझत कछु तेहू ॥ केवल एक ललित पति प्राणा ॥ गिरधर दैव होत मुहि भाना ९ इह जिइराउनहीं हरलीना ॥ कोसामरथन सं सृति चीना ॥ जो अस प्राणनाथ तें मोरी ॥ लगी लगन अ स देहि बिछोरी १० दोहा प्रेममती अति रत रती ॥ गतम ति सील सुभाउ ॥ बिसरिगयो कुल लाज सब ॥ गिर धर चरनन चाउ १ चौपाई मीरां कर सुनि ननदनवाचा ॥ गिर धर चरण प्रेम दृढ साचा ॥ शोकारत दारुण रितलीना ॥ पितुपें आय कथन अस कीना १ गिरधरप्रेम विकल मतितासा ॥ कारे करि मैं अनेक संभासा ॥ कीन प्रबोधन बिवध प्रकारा ॥ पै नतास कछु मानस धारा २ साधु समाज लाज सब

त्यागी ॥ संतत नृत्य गीत अनुरागी ॥ सुनि निज सुता वच
न असराना ॥ अति कलेस मानस निजमाना ३ क्रोध निर
त विष लीन मंगावा ॥ भृतहिं वदन निज दीन सिखावा ॥
भाजन स्वरन निलावत वारी । चल्यो लैत भृत करन संभा
री ४ मीरां सदन जाय हुत भागा ॥ बदन अधम अस भा
षण लागा ॥ रानाकरि पूजन भगबाना ॥ संजुत भक्ति प्री
ति सनमाना ५ इह चरणोदक देव सुहाबा ॥ मीरे तुब
हित दीन पठावा ॥ संजुत प्रीति करहु अब पाना ॥ तेरे
करहिं देव कल्याना ६ अतिस चतुर मीरां व्रत धारी ॥ गिर
धर देव परम हितकारी ॥ तीन काल गति जाननहारी ॥ त
हिसन कीन कपट जडभारी ७ संत सभाव सदा असनीके ॥
अनहित कहं मानत हित जीके ॥ तापर आन बिचार विचा
रा ॥ इह यद्यपि भृत दुरमति भारा ८ पै कर लिए चरण ह
रि वारी ॥ मोहि भाषिस कल्यान उचारी ॥ सो हरि चरण प्र
भाव सुहावा ॥ मुनि त्रीय तरण बिदत सब गावा ९ यद्यपि
कपट सकल मै जाना । चरणोंदिक मिस गरल महाना ॥ त
द्यापि मैन गरल अब जानो ॥ चरन वार निज स्वामिन मा
नो १० श्रुति पुराण अस विदत अलावा ॥ सुनत नामभग
वान सुहावा ॥ दुरत दोष सब मिटहिं बिकारू ॥ उपजहि सु
मति ज्ञान रुचि चारू ११ तो इह चरणोदिक प्रभुहोई ॥

विष विकार कस देहिं नखोई । अस प्रकार चरणामृत जानी ॥ मीरां हृदय भक्ति सरसानी १२ दोहा सुमरत गिरधर दैव निज ॥ लेत चषक विष पानि ॥ अमिय जानि जनु लीनअ च । अतिस हरष उरमानि १ चौपाई दैव कृपा तें गरल प्रभा ऊ । जानि पस्यो कछु नाहिन ताहू । जिमि नर लेत बिग त रुज कांती । मीरां दिपति लीन तहिभांती १ दश गुण वदन ज्योति सरसान्यो । राना सुनि वृतांत बिसमान्यो ॥ हाला हल ते मरीन एहू ॥ अब कस मराहिं विपल संदेहू २ समय एक द्वारप जन आई ॥ राना सन असक ह्यो वुझाई ॥ महाराज मीरांसन करहीं ॥ भ.षणकाहु जाननहि परहीं ३ राउकह्यो मोहि अवसरपाई ॥ आयवेंगभृत देहुजाना ई॥ तबआवाभृत समय निहारी ॥ रानाचल्यो खडगकरधारी४ भवनभित्ति सन लागेदुरावा ॥ भाषण श्रवण करन मनलावा॥ तबदेख्यो मीरांउत साहू ॥ करतअलाप आनसनकाहू ५ सोरष ष्ट कछुजानिन पावा ॥ रिसकिप्रकट तहिवचन अलावा ॥ वेगकरहु उदघाटन द्वारा ॥ कोअसकरत अलाप विचारा ६ तबकवार मीरांहरषाई ॥ खोलिदीन कछुविलमनलाई ॥ देखि सुसरकहं जीयसकुचानी ॥ लाजत काहिनसकत कछुवानी ७ राउकाहिस इत कवनउमंगा ॥ तोहिसनकरत अलापप्रसंगा ॥ यद्यापिउचित नभाषणराहा ॥ तद्यपि करहिं यतन अब काहा ८

त्यगत लाज असअंत उचारी ॥ नाथभवनसब लेंहु निहारी ॥ देखन लग्यो भवन तबराना ॥ परयो नहगन दृष्टिजन आना ९ तब लाजत निज भवन सिधारयो ॥ निज प्रीयसन सबमरम उचारयो ॥ तेऊ सुनत मानस बिसमानी ॥ दंपतिकहिन सकतक छुबानी १० दोहा तबआवा इकसमय तहिं । सदनदुरातम काहू ॥ बैष्णव भेषबशेष निज । धरतकपटि उतसाहू १ चौपाई मीरांरूप देखि मुरछाना ॥ घायल विकल मदनजनुबाना ॥ कहत करहु भामन मुहिसंगा ॥ रतिबिलास तुवहृदय उमंगा १ सुनत अनुचित तास मुखबानी ॥ मीरांकहत हरष जीयमानी ॥ लेहुसंत अब भोजन पाई ॥ मदन बिलास करहुं निसि आई २ अस प्रकार भोजन विरचाव ॥ प्रथम हारीहिं नइवेद लगावा ॥ पाछे धरत दीनजिवाईं ॥ पुनिगिरधर कहं सयन कराईं ३ सनमुख सिज्या रुचिर सजाए ॥ बैठिसतहां भक्ति सरसाए ॥ तबधूरत कहं लीन बुलावा ॥ ते प्रसन्न मानस जबआवा ४ मीरां रूप जनानि निजलेषी ॥ भयो चकित चित अदभुत देखी तव कर जोरि जुगल बिलखावा ॥ वार वार चरनन सिरनावा ५ कहत क्षमहुं अनुचित अति मोरा ॥ मातु करम मन सेवक तोरा ॥ देखि चरित वैष्णव असआना ॥ लागेवदन प्रसंसननाना ६ दोहा भक्तिप्रभाव बिलोकिअस ॥ धूरत दुरमति खोइ ॥ भयोकृष्ण कल भक्तिरत ॥ रुचिर सुमति जुतहोइ १ चौपाई अवसर एक

दलीस सुहावा ॥ मीरांसुनत सुजस सुभभावा ॥ लिए समाज स
कल संभारू ॥ सयनासचिव भूरिभृतचारू १ करत प्रजटन विप
न पुरग्रामा ॥ आवा धरन पाल अभिरामा ॥ करिदरसन मीरां
हरषावा ॥ वारवार चरणन सिरनावा २ पुनि गिरधर लावन्यत
देखी ॥ हरण कोटि छवि मदन वसेषी ॥ उपज्यो हृदय तास
अनुरागा ॥ ललितध्यान प्रभु विरचनलागा ३ इहजबतें नंदनं
दन देवा ॥ सुरनरसकल चराचरसेवा ॥ मैंनिज जुगल नयन
भरिहेरे ॥ तबतेंसकल मनोरथमेरे ४ भएसफल संसार सुहाए ॥
मैंप्रभुविदत कलप द्रुमपाए ॥ सीसमुकुट चंद्रक जुतदेखे ॥ उद
यभाग निज संसृतिलेखे ५ केसरखोर लिलाट नवीना ॥
तीन लोक छवि मोहन कीना ॥ स्यामत्रिभंग अंग अति
लोना ॥ चित्त वनि चारु विदत जिमि ठोना ६ नयन
मीन खंजन मृगछोने ॥ अधर बिंब कच भृंग सलोने ॥
दाडमदसनदमक दुत दामन ॥ वरणनील वरवारद सा
वन ७ मंजुल मधुरमंद मुखहासी ॥ चरणत्रिबेनिविदत जनुभा
सी ॥ नूपर छुद्र घंटका केरो ॥ मुखरसुनत मन मोहत मेरो ८
दोहा अस प्रकार दिल्लीस वर ॥ करि कल भवन पयान ॥ ग
योध्यान अस धारिउर ॥ मीरांगिर धर प्राण १ चोपाई तव
मीरा मानस अनुरागी ॥ सुचि वृंदाबन दरसन लागी ॥ आ
ई हृदय रुचिर हरषाती ॥ कृष्ण कृपाल प्रेम मदमाती १ त

हां बसहिं स्वामी व्रत धारी ॥ सुचि गो जीव बाल ब्रह्म चारी ग्रीयदरसन वरजित बडभागा ॥ ततपर कृष्ण भक्ति अनुरागा २ मीरां सुनत सुजस असतासा ॥ आइ संतदरसन जीय आसा ॥ तत्रस्वामी आवत तहि देख्यो ॥ षोडश वरष बालव्रलेख्यो ३ सहिसा उठे प्रेमसरसाए ॥ जाय लीन निज हृदय जुडाए सादिर गाहित पानि निजपाना ॥ बैठाऱ्यो आसन सनमाना ४ जब जान्योमीरां त्रीय एहू ॥ लग्यो करन चिंतन जाय तेहू ॥ अवलो त्रीये वदन नहि हेरा ॥ आज सु भयो भंग व्रत मेरा ५ सुनि मीरां मानस पछताई ॥ गबनी स्वामि चरण सिरनाई ॥ द्वारावती हरष उरछाए सादिर भक्ति प्रेम जुत आए ६ करि प्रणाम हरि भवन सुहावन ॥ पाय कृष्ण दरसन मन भावन ॥ तहां निवास करन निजलागी ॥ गिरधर चरण चारु अनुरागी ७ प्रेस्यो हृदय दैव तव राना ॥ उपज्यो अकस मात जीयज्ञाना ॥ मीरांभक्ति प्रभावसुहावा ॥ ताकर हृदय प्रीति जुत आवा ८ वृद्धविप्र तहि बोलन काहीं ॥ पठे राऊद्वारावति माहीं दिजन आय संजुत सनमाना ॥ सुसर कथन सब वदन वखाना ९ मीरां सोन कीन सूइकारा ॥ बार वार तव दिजन उचारा अंत देखि अन मानि अस तासा ॥ बैठे विप्र जीयन ताजि आसा १० अन्न वार सब दीनाहि त्यागी अस विलोकि मीरां बडभागी अति दुख मानि भवन हरि आई ॥ करि प्रणाम

असवदन अलाईं ११ जो अनुसास देहिं भगवाना ॥ तोमैं क रहुं भवन निज प्याना ॥ असकहिदुखित दीनवतहोई ॥ लागी विनयकरनमुखसोई १२ हेकरुणायसिंधुभगवाना ॥ हेहरिहरण भक्त भयनाना ॥ हेसबभूतचराचरसेवा ॥ हेसुरसजनसंतसुखदेवा १३ मैं अवलंभलेततुवचरना ॥ बैठीइहांदैव दुखहरना ॥ अव सरअंत निकटअबमोरे ॥ प्रभुकृतजाहुं चरणतजितोरे १४ दोहा शवरीगनकागीदलो ॥ तुवप्रभुभवनप्रकास ॥ शरणचरणनिजदीनमुहि ॥ किंकरिकितोअजास १ चौपाई असजीयगुणत भक्त चितचोरे ॥ अवनतजहुंकरुणानिधमोरे ॥ करतविलापतासुअस चंडा ॥ भयोसुफुटिततुरतब्रह्मंडा १ निकसितेजहरिमूरतिजाई॥ सबकरदेखतगयोसमाई हाहाकरन विप्रतबलागे ॥ रुदनकरतद्वारावतित्यागे२ निजपुरिआय परमविसमाई रानासनसवकथासुनाइं ते सुनिधुनत सीसपछताना मीरांभक्ति प्रभावमहाना३ सत्यजाति परि हरि दुरताईं ॥ भयोसि निरत भक्ति जदुराई ॥ अस प्रकार इह चरित सुहावा ॥ मैं कछु वदन यथा मति गावा ४ दोहा भक्ति महातम ललित इह ॥ संमृति मीरांवाइ ॥ सुजस भरन मंगल करन ॥ हृदय हरन दुरताइ १ जे सादिर नर सुनहिं सुभ ॥ सुखद सुहावन एहू ॥ उपजहिं अवरिलि भक्ति जुत ॥ गिर धर चरन सनेहू २ चौपाई उत मीरांकर जनक सुहावा ॥ जयमल भूप विदत जग गावा ॥ ते जब भक्ति

प्रभाव अपारा ॥ सुन्यो श्रवण मीरां कर सारा १ भयो विरक्त ज्ञान उपजाना ॥ एक दिवस मानस हरषाना ॥ उधो भवन वेठयो नरराई ॥ अधो देव मूरति सुखदाई २ अस विचारि इक भवन उतंगा ॥ रच्योनरेस ललित बहु रंगा ॥ तहां दैव मूरति हरषाई ॥ सादिर कीन स्थापन राई ३ तहां निरंत्र करन सिवकाई ॥ लाग्यो भक्ति प्रीति सरसाई ॥ एक दिवस सिज्जा भगवाना ॥ करि बिधान संजुत सनमाना ४ राखि सकल उप करण प्रवीना ॥ हरषत गवन भवन निज कीना ॥ तब कछु कथन करन महरानी ॥ नृप पें चली हरष सरसानी ५ पृवसी भवन द्वारजबतेहू ॥ तब देख्यो अदभुत दृग एहू ॥ मूरति देव हरन जनपीरा ॥ करत पान मुखपानन वीरा ६ महिषी देखि चरित अस चारू ॥ अति बिचित्र अदभुत मनहारू ॥ नृप सन कथन कीन सब जाई । हरष्यो सुनत श्रवण असराई ७ दोहा कहिस धन्य तुव धन्य प्रीय । आज सकल सुखमूल ॥ जहि देखे दृग देव अस ॥ करत पान तंबूल १ इति भक्त विनोद ग्रंथ मीरां चरितं नाम सर्गः ६१

अथ कछ वाह चरितम् ॥ दोहा क्षत्र वंस वर विदत इक ॥ कछवाहनृप नाम ॥ कृष्ण भक्ति रत करहिं कल ॥ अमिर कोट विसराम १ चौपाई कृष्ण दास सिष भूप सुजाना ॥ संतत गुरु सेवन रति माना ॥ समय एक द्वाराबति काहीं ॥ गुरु वर चले हरष मन माहीं १ ते नरेस निज हृदय उमंगा ॥ पूरवजात रह्यो गुरु संगा ॥ अब करि सचव निवारिन कीना॥जनिद्वारावति जाहु प्रवीना २ पाछिल राज काज व्यवहारा ॥ वूड जाहिं नर नाथ तुमारा ॥ तब गुरु वर अवसर प्रसथाना ॥ बोलि नरेस विविध समुझाना ३ भूपन देश मोर तुव पाए ॥ इहां वसहु निज भवन सुहाए ॥ तव नृप कहिस जुगल कर जोरी ॥ प्रभु नदेश सुख दाइक मोरी ४ पै सनान प्रभु गोमति कीने ॥ संख चक्र मुद्रादिक लीने ॥ कृष्णदेव दरसन सुख दाई ॥ मैं कृपाल इन नयनन पाई ५ आवहुं देववहुरि निज गेहा॥इह निसचय मोरे मन रेहा ॥ तहि पर जस आइस प्रभु होई ॥ हित मय करहुं सीस धरि सोई ६ गुरु कृपाल तब वचन वखाना ॥ तुम कहंइहां सुलभ सनमाना ॥ प्रापत होहिं सकल नरराई ॥ सुनिन देश गुरुदेव सुहाई ७ वितअनेक भृत सेवकदीने ॥ गुरु वरभूप बिसरजन कीने ॥ आपुरह्यो निज भवन नशाए ॥ असप्रकार कछुदिवस बिहाए ८ तव नरेस संजुत निजरानी ॥ कानन कोनगवन सुखमानी ॥ देखे संत सथल समुदाई ॥ एकादिवस स्व

पने तवराई ९ द्वारावती गवन निज कीना ॥तबबोले गुरुदेव प्र
वीना ॥ इहतरेस द्वाराबतिभावा ॥ गोमति करहुं सनान
सुहावा १० नारायण मूरति दरसाए ॥ संखचक्र मुद्रादिक
पाए ॥ जाहुं भवन निज बेग सधारी ॥ उठ्यो
भूप अस स्वपन निहारी ११ तबनिज भुजन विलो
कन पाए ॥ संख चक्र कल चिह्न सुहाए ॥ गोमति वार
विपन छबछाए ॥ विमल सरित जनुजात वहाए १२ स्वपन
वृतांत भूपतब सारा ॥ निजपतनी सन प्रकट उचारा ॥ करिस
नान गोमति मनभावा ॥ भूपबहुरिधन लीन मंगावा १३ दोहा
रांचे विचित्र तहं भवन सुभ हरि मूरति अभिराम ॥ करत स
थापत भूपवर ॥ बहुरिगयो निजधाम १ चौपाइं तब इक अं
ध समय कछुपाए ॥ गवन्यो बैदनाथ दरसाए ॥ तासु भयो अ
स स्वपन नवीना ॥ नृपपें जाय वेग दृगहीना १ अंग परोषण
वसन सुहय्या ॥ जाचन करहु रुचिर सुखदय्या ॥ सोजब दे
हिं भूप गुण ऐना ॥ तुव निजकरहुं मारजन नयना २ होहि
विमल दृग ज्योति प्रकासा ॥ अंध देखिअस स्वपन हुलासा ॥
नृपपें आय वेगहरषाबा ॥ अंग परोषण वसन सुहावा ३ क
हिस भूप तुव विदत उदारा ॥ मोहि निज अंग परोषण वारा
करि दाया पटदेहु प्रवीना ॥ वैदनाथ मोहि आयस दीना ४
जब मै करहुं मारजन तेहा ॥ होहिं सज्योति अंधदृगएहा ॥

विहस्यो नरेस सुनत मनमाहीं ॥ इह कछु उकत वेद बुधनाहीं ५ पै भगवन निज वचन विचारा ॥ तासुदीन पट भूपउदारा ॥ लेत तुरंत अंधदृगलावा ॥ देख्यो जगत ज्योति उदताबा ६ दोहा लोक विलोकत चकतसब ॥ भक्ति प्रभाव अपार॥ साधु साधु मुख कथन करि निज निज चले सिधार १ को सामरथन कथन कहं ॥ भक्ति महातम एहु ॥ जास परोषण अंगपट ॥ अंध ज्योति दृग लेहु २ इति भक्तविनोद ग्रंथे कछुवाह चरितं नाम सर्गः ॥ ६२ ॥

अथ मधुकरचरिम् ॥ दोहा ॥ अभय राम भगवान पुन ॥ धर
म करम रतज्ञान ॥ कंध्रदाम अरु राजमल ॥ अभय राम ज
गआन १ इह सब मथुराप्रांतमे ॥ भगवन भक्त प्रधान ॥ जाहिं
जग कीर्तन नाम नर ॥ लेंहि भक्ति भगवान २ मधुकर नाम
प्रसिद्ध जग ॥ भक्ति सिरोमणि राऊ ॥ ज्ञान विवेक विचार रत
अति मति सील सुभाऊ ३ चौपाई दाया धरम करम सुभचा
रा ॥ दानमान जुत विवध प्रकारा ॥ अतथि संत जुइआ
बत द्वारा ॥ तांकर करहिं भूप सतकारा १ कृष्णरूप जीय
जानि अभेवा ॥ करहिं निरंत्र भूप वर सेवा ॥ सुनि अस
काहु दुष्ट जन आवा ॥ धूरत वैश्णव भेष वनाना २ लि
ए संग खरदभमति हीना ॥ तिलक माल कल भूषित की
ना ॥ कहत वदन सठ वैश्णव एहू ॥ आवा भूपसुनत ढिग
तेहू ३ करि प्रणाम गरदभ कहंराए ॥ कहतधन्य मम भाग्य
सुहाए ॥ जो इहि वैश्णव भेष वनाई ॥ दरसन दीन सदन
मुहि आई ४ अस कहि भक्ति प्रेममन लीन ॥ चरन तास प्र
क्षालन कीने ॥ भयो सपरस तासु जबराए ॥ सदश मनुज चर
ण प्रकटाए ५ दोहा स्याभ पीठतल अरुण कल ॥ अंगुरि मृ
दुल सुभकांति ॥ इह जल जारन चरन प्रभु ॥ लख्यो भूप इ
हि भांति १ चौपाई अस विचारि चरणोदिक लीना ॥ धूरत
देखि सकल मतिहीना ॥ चकत त्रास वस

चल्यो पराई ॥ साधुसाधु मुखसाधु भलाई ७ कहतमहातम भक्ति सुहावा ॥ कोअससकाहिं वदननिजगावा ॥ अवलोंसुन्योनननयनदेखा ॥ आजचरित जोइअदभुत लेखा२ दोहा तबगरदभकरस्वामिकहं ॥ भूतबितबिबिध प्रकार ॥ दय सेवन हितधरनपत ॥ राख्योजुतसतकार १इति भक्तविनोद ग्रंथे भगवद्भक्ति माहात्म्ये मधुकरचरितं नाम सर्गः६३ ॥

अथ रामराज चरितं कथ्यते ॥ दोहा रामराजह्रक विदतजग ॥ भएभक्तजदुराइ॥ दातादान सिरोमणी ॥ जाचकजन सुखदाइ १ चौपाई जोमांगत जसपावत तैसो ॥ भूपउदार विदत जगऐसो ॥ समयएकसंजुत उतसाहा ॥ रासबिलास निरत नृपराहा १ त बइक भेषवैषणव धारी ॥ कहतभूप सनबदन उचारी ॥ जोतुव दानि सिरोमणमन्या ॥ तोमुहिदेहु रुचिरनिज कन्या २ सुनि अस जाति वरगसमुदाई ॥ अरुणनयन करिउठेरिसाई ॥ सब कहंभूप निवारन कीना ॥ तासु रुचिरकंन्या निजदीना ३ दोहा दासीदास अनेकदै ॥ वितजुतसदन सजाइ ॥ करिदीन्यो सुख सुजसमय ॥ निजसमान जनुराइ ४ इतिभक्तविनोद ग्रंथे रामराज चरितं नाम सर्गः ६४ ॥

अथ रामराज अन्य चरितं कथ्यते ॥ दोहा ॥ भएसुजसरत भक्त जग ॥ रामराज इकआन ॥ तिनकर कथाविचित्र अब ॥ सुनहु श्रवण सुखदान १ चौपाई अवसर एकमहीप सुहाए ॥ दरसन कृष्णकरण पुरिआए ॥ संजुत पतनि मुहितजहं ताहां ॥ यात्राकीन सकल नरनाहां १ अतथीसंत दिजनकहंदाना ॥ दैदैनृपति बिविध सनमाना ॥ निजबित सोविभगत करिदीना धनिते उचित बहुरिरिण लीना २ महिषीसनतब कीनविचारू ॥ तासवाचित्रज टितमणिचारू ॥ निजकिंकन कलदानिउतारी ॥ धनिहिंदेहु अस वदनउचारी ३ वनहिं आनकिंकनपति प्राणा ॥ लेनसुनत अ...

भूपसुजाना ॥ नाभादासरहे जहिठामा ॥ आवातहां नृपति अभि
रामा ४ सोतिन कहंसादिरहरषाई ॥ संजुत भक्तिदीन पहिराई
॥ करिप्रणाम पुनिआश्रम आई ॥ महिषीसन सबकथासुनाई ५
तेप्रसन्न मानसअनुरागी ॥ प्राण पतीसनभाषण लागी ॥ धनिक
हंनाथ भवननिजजाई ॥ इहरिणकर धनदेहु पठाई ६ इतमहि
षी असवचन अलाई ॥ उतजादववर भक्तसहाई ॥ भूपसचब
निजरूपधराई धनिकहंदीननाथरिणजाई ७ प्रातभूपभृत पठितवखा
ना ॥ तुवअनुचर पुरमोरसुजाना॥पठहुदानरिणतोरपठाऊं ॥मैश्र
वधनीभवननिजजाऊं ८ तेअससुनत परमविसमावा ॥ नृपपेंबेग
भृतनजुतआवा ॥ करिप्रणाम असवदन अलायो ॥ मैछितपतआ
पन रिणपायो ९ सचिवतुमार सकल मुहिदीना ॥ इहसाखीसब
लोग प्रबीना ॥ तबमंत्रीनिज लीनबुलाई पूछन लागतासुनरराई
१० कहिस सचवअसवचन उचारे ॥ धनीस्वपन कछुभयो तुमा
रे ॥ कै उनमत्तभ्रांति मतितोही ॥ तुवदेख्यो पूरव कब मोही
११ जोन परस पर दरसन भेयौ ॥ तोरिण नृपति देन क
स गेयौ ॥ भूप सुनत मानस निजजाना इह तो चरित
कीन भगवाना १२ दोहा अस बिचारि नरनाथ जीय ॥
करिधनि कर सत कार॥ करत विसरजन गवन निज ॥ भवन
कृष्ण उरधार १ ॥ इति भक्त विनोद ग्रंथे राम राज चरितं
नाम सर्गः ६५ ॥

अथ क्षेमा चरितम् दोहा क्षेमासंतति आन इक ॥ भये भक्त भगवान जाहि कीनी निज बंस सुभ ॥ भगवन्त भाक्ति निधान १ चौपाई भक्त सृष्ट मृत समय सुहावा ॥ दीरघ स्वरजुत सुतन अलावा ॥ जल फल मूल फूल निज हाथा ॥ दीन्यो आज न त्रिभुवन नाथा १ नहिकीन्यो पूजन उत साहा॥ अस इह मोर मनोरथ राहा ॥ तब सुत कर सुत वदन उचारा तात करहुं कृत सफल तुमारा २ जस तुव रुचिर दैवासिवकाईं करते रहे भक्ति सरसाईं तस मै करहुं वचन मन करमा तातनिरंत्रनोरइह धरमा ३ जठिर पौत्र सुनि वचन सुहावा ॥ हरषि लीन निज हृदय जुडावा ॥ बोल्यो धन्य धन्य सुत तोही ॥ मों अस कीन सफल जगमोही ४ करहुं निरंत्र कपट तजिदेवा ॥ संजुत भक्ति पुत्र तुव सेवा ॥ विषय विरक्त जगत सनमाना ॥ भजहौं कृष्ण देव भगवाना ५ इहिते सुलभ सकल सुखतोरे ॥ उपजहिं तात वचन अस मोरे ॥ सुनिन देश अस वदन पितामहं ॥ संजुत भक्ति प्रीति निस कामहं ६ दोहा लाग्यो पूजन करन कल कृष्ण देव सुखदाइ अस क्षेमाहरिभक्ति निज ॥ बंस दिमल सरसाइ १ इति भक्त विनोद ग्रंथे क्षेमाचरितं नाम सर्गः ६६ ॥

अथ चतुर भुज चरितं कथ्यते ॥ दोहा सरव भूत सुहृद भक्त इक ॥ जाहि संज्ञा अभि राम ॥ गोस्वामीहरिवंससिष ॥ विदत चतुरभुज नाम १ चौपाई धरम भक्ति रत भक्त प्रवीना ॥ परहित पर स्वारथ नितलीना सो अस भ्रमत विपन थलनानाआए एक देस अभिराम।१देखिस तहांनागिर इक देवी रंजुतभतिलोक सबसेवी पैनित लेत जीवबालि सोई भक्त विलोकि दुखित चितहोई२आए भवन भगवति अनुरागा ॥ नंमृतविनय करत अस लागा ॥ अबतें तजहु अमख बालि माई ॥ पायसादि सुभ लेहु सुहाई ३ हे सब भूत चराचर सेवी ॥ होहु मातु वरदाइक देवी ॥ सुनत भक्त अस विनय अलाई ॥ भई तुरत कोमल जगमाई ४ सब कहं दीन स्वपन निसिमाहीं ॥ अबतें पाय सादि मुहि काहीं ॥ तुव बालि देहुं लोक समुदाई ॥ लेहु अभिष्ट रुचिर निज पाई ५ जे जन इहन करहिं सुइकारा ॥ तासु हतहुं संजुत परि वारा ॥ देखि स्वपन अस लोक हुलासा ॥ आए प्रात चतुर भुज पासा ६ दोहा सुनि प्रसंग सब वदन तहि ॥ निज निसि स्वपन सुनाइ ॥ ताजि हि सादि सुकरम रत ॥भए लोक समुदाइ १ चौपाई भक्त सृष्ट आपन मगलीना ॥ अस प्रकार कछु समय वतीना ॥ तव इक चौर वेस धन काहीं ॥ हरि लै चल्यो अरध निसि माहीं १ पकरत वेस जतन जुत तासा ॥ लावा वेग धरन पत पासा ॥ ते बोल्यो प्रभु मैन हरावा ॥ इहि मि

थ्या लांछिन मुहि लावा २ करहु दिव्य तब भूप उचारा ॥तस
कर कीन तुरत सुइकारा॥तृतीये दिवस करहुंमै आंइ॥तब गवने
भृत भूप लिवाई ३ सुन्यो ज्ञान मग चौर अभेवा जोजाहिं दिन
दीक्षागुरुलेवा ॥ तहि दिन तास जनम जगआना ॥ निजउर
गुनत चौर असज्ञाना ४ आबा भक्त चतुर भुज पासा ॥ लेत
ललित गुरु मंत्रहुलासा॥चौरकृतारथ संसृति भेयो॥तृतीये दिव
स भूपपेंगेयो ५ तब भृत अनु सासन नृपपाये ॥ भगवति भ
वन चौर कहं लाए ॥ तेगुरुचरन सुमरिअनुरागा ॥ करि प्रण
हृदय कथन असलागा ६जोदीज्ञा गुरुवर असपाए॥ तेजनमांत्र
सत्यबुधगाए ॥ तो मिथ्या मम बचन उचारा सत्यहोहिं नृपस
भामझारा ७अस जीय गुनत प्रकट मुखवानी ॥तहि तसकरगत
सकत वखानी ॥ मै जबतें इहजनमधराना ॥ वितन हर्यो नह
रन रुचिमाना ८ असकहि लोइ तपत करलीने ॥ देखत सब
न सपत पद दीने ॥ देखिलेहु अस वदन उचारी ॥ आय स
अरुण दीन महिडारी ९ संजुत भूप लोक विसमाए ॥ साधु सा
धु सब वदन अलाए ॥ तब नरेस करि रोष अपारा ॥ की
न्यो वैस विविध तृसकारा १० तुव मिथ्या लांछन जडलाए
दीन संत अपमान कराए ॥अस कहिहृदय भूपरिसकावा ॥ तासु
बंधनागार पठावा ११ आइ स वक्र सुनत असराया ॥

उपजी चौंर संत उरदाया ॥ कहि कहि नृपहिं वदन बहुबारा
तास दंड असलीन निबारा १२ सुनहु नरेस सीलगुन गेहू ॥
वनक सृष्ट धरमातम एहू ॥ नहिं असत्य कछु वदन उचारा ॥
मैंहुं नाथ धन हारन हारा १३ पैजिमिविजय कीन मैंएहू ॥ सो
अब करहुं कथन संदेहू ॥ अस प्रकार मुख सकल बखाना ॥ सु
न्यों कथांत्र प्रथम जिमि ज्ञाना १४ दोहा पुनि दीक्षा गुरु देव
जिमि ॥ जनम आन निजमान ॥ प्रण करि भाष्योबचनजस ॥
जरयो न आयसपान १ चौपाई सुनि नरेस मानस सुखमाना
नाना कीन तास सनमाना ॥ बहुरि चतुर भुज लीन बुलाए ॥
वार वार चरनन सिरनाए १ संजुत भक्ति कीन सिवकाई ॥
याविध वैसचौंर नरराई ॥ वैष्णवभए विगत अभिमाना ॥ संत
त निरत भजन भगवाना २ जब लग रहे जीयत संसारा ॥
कृष्ण नाम नहिहृदय विसारा ॥ अंत प्रलोक सिद्ध निज कीने ॥
गवने कृष्ण चरण मनलीने ३ उतवर भक्त चतुर भुजकेरा ॥ र
ह्यो क्षेत्रइक चणक घनेरा ॥ सो लूट्यो संतन मगआई ॥ ता
स खबर रखवार जनाई ४ ॥ धावत वेग भक्तवर आवा ॥ संत
जूथ दृग देखि सुहावा ॥ करि रछबार विधिध तृसकारा ॥ आ
पु चरण तिनकीन जुहारा ५ सादिर सदन भक्ति जुतलाए ॥ वि
रचि पाक सुचि दीन जिवाए ॥ बहुरि प्रीति जुतकीनबिदाए ॥
वार वार चरणन सिरनाए ६ दोहा यद्यपिलूट्यो संतजन ॥ क्षेत्र

भक्त भगवान ॥ चणक चारु तद्यपि अधिक ॥ दसगुण उपज सि आन १ इतिभक्त विनोद ग्रंथे चतुरभुज चरितं नाम सर्गः ॥ ६७ ॥

दोहा ॥ चालक नाम प्रसिद्धइक । भक्त निपुन जदुराय । जथा लाभ संतुष्ट नित ॥ सकल भूत सुखदाय ॥ १ ॥ इति सर्गः ॥ ६८ ॥

अथ विमला नंद चरितम् दोहा विमला नंद सभक्त वर ॥ अति विरक्त संसार ॥ कृष्ण भजन पर दिवस निसि ॥ परि हरि विषय विकार ॥ १ ॥ चौपाई अवसर एक सभक्त प्रवीना ॥ कृष्ण सरोज चरण मनलीना ॥ षट पंचासत हीचर प्रकारा ॥ मानसि विरचि पाक सुभ चारा ॥ १ ॥ जगननाथगहं सादिरभावा ॥ भक्तसृष्ट नइवेदलगावा ॥ तब तहि नगरधर नपतिकाहीं ॥ अदभुतभयो स्वपनानिसिमाहीं २ कोइकत्र.धिप तिविष्णबचारू ॥ आवानगरभूप व्रतधारू ॥ सादिरतासुनरेसप्रवीना ॥ संजुत भाक्ति निमंत्रनकीना ३ सो बोल्योमानसहरषाई ॥ मैसंजुतवैष्णव समुदाई ॥ बिमलानंद भक्त .गटहजाई ॥ भोजन

कीननृपति नृपपाई ४ असकहिगयो संत बडभागा ॥ इतनर नाथ प्रात जबजागा ॥ हृदय विचारि स्वपन नरराई ॥ विमला नंद भक्त गृह जाई ५ कहिस दैव कहं कालि सुहावा ॥ तुव नइ वेद कवन दिज लावा ॥ भक्त सृष्ट तव वदन उचारा ॥ षटपंचा सत चारु प्रकारा ६ मैंभोजन अरपणभगवाना ॥ कीन्यो भूप भक्ति सनमाना ॥ अस प्रकार जबभक्त अलावा ॥ हृदय भूपनि सचयदृढ छावा ७ जान्यो इह करुणाय निधाना ॥ कौतुकि भक्त सुखद भगवाना ॥ उदय भाग मोरे जग आजू ॥ जहि देखे अ स त्रिभुवन राजू ८ दोहा पुनि विमलानंद भक्त कहं ॥ वद न प्रसंसत राय ॥ हरषत गवने भवन निज हृदय भक्ति सर साय १ इति भक्तविनोद ग्रंथे विमलानंद चरितं नाम

सर्गः ६१

अथ सूरचरितम् ॥ दोहा मदन मुहन कर पुत्र इक विदत सूर जाहिनाम ॥ कृष्ण भजन पर भक्तिरत॥भक्त सृष्ट गुण धाम १ चौपाई सो दिल्ली पतकर अधिकारी॥राज काज ततपर व्रतधारी सनमुख साहतास सनमाना॥विविध प्रकार लोकसबजाना१ जहं लग प्रजा तास अनु सारी ॥ अति अनंद जुत सकलसुखारी तहितें लेत रुचिर करजोई देत कोशस्वामिननिजसोई२ वचाहिं सेष कछु संतन काहीं करहिं विभक्त भक्ति मनमाहिं ॥ स मय एक अति हृदय हुलासा ॥ सूरदास निचगुरुवरपासा३ शरकरादि मिसटान सुहावा ॥ दीन्यो संजुत भक्ति पठावा पूप विरचि नइ वेद लगाई ॥ संत समूह लेहि मुखपाई ४ सोगुरुपें निसिअवसरआवा ॥ स्वामिवदन निजवचनआला वा ॥ इहिकरप्रात पूपविरचाई ॥ हरिहिंप्रथमनइवेद लगाई ५ करहुंविभगत संतजनकाहीं ॥ असकहिभये सुपतनिसिमाहीं ॥ मोहनमदनदेव भगवाना ॥ तबासिषकहंअस स्वप्नवखाना ६ इ हिकरअवहि पूपविरचाई ॥ मुहिदेहौनइवेदलगाई ॥ स्वपनजा निसिखहृदयनराखा ॥ बहुरिबहुरिभगवन मुखभाखा७तबासिषउ ठयोपूपविरचाने ॥ प्रभुकहंसुचि नइवेदलगाने ॥ सबकहंदेतआ पुपुनिपाए ॥ भएसैनरतनिजनिजजाए ८ दोहा तवबासरइकसु रजन ॥ असपदविरचिअलाय ॥ संतत्राणपदसीसधर ॥ भवजल तरहुंअथाय १ चौपाई इहपदसुनत संत इकआवा ॥ प्रीक्षाकर

न भक्त हरषावा ॥ सूरदासनिजगुरुवरद्वारा ॥ तहिंअवसरथिरनि रखाविचारा १ साधुकहिसअसवचन सुहावन ॥मैतुवगुरुवरदरस नपावन ॥ जाहुंछाडितोहिंपैंपदत्राना ॥ अभयजाहुअससूरवषा ना२ चल्योसुहृदयकपटसरसाता लखनप्रभावसूरगुनज्ञाता ॥ गुरु पैंआयहरषि अनुरागा ॥ करिप्रणामअस भाषणलागा ३ सूरदास प्रभु कहां तुमारा ॥ सुनत वचन गुरुदै उदारा ॥ बोललीन सादिरहरषाई ॥ साधुत्राण पदसीससुहाई ४ धारिआय ततक्षण गुरुपासा ॥ सूरदास निजहृदय हुलासा ॥ गु रुहिंनंम्रमुख वचनवखाना ॥ आजप्रसाद तोरभगवाना ५ निज मन अरथ सिद्धसब देख्यो ॥ गायन ललित जवन पदलेख्यो ॥ थोरहि कालभयो फुरसोई ॥ दीननाथकरुणा तुवहोई६साधुदेखि मानस हरषावा ॥ वारवारचरणन सिरनावा ॥ निजअनुचितस व क्षमाकराई ॥ गयोभवन तबहोत विदाई ७ दोहा समय एकत बसूरकर॥ सदन द्रव्य संभार ॥ राख्योरहा दलीसकर ॥ साधुविर क्तविचार १ चौपाई सोदुरभिक्षसमय बलपाई ॥ संतनकहं सब दीन खिवाई ॥ इतदलीस भृतदीन पठोई ॥ लावहु जायवेग ध न सोई १ भृतनआय असवदन उचारा ॥ सोवितवेगदेहु अव सारा ॥ सूरसुनत चिंततगृहजाई ॥ अबनिघटकबहु लीनमंगाई २ प्रस्तर पूरित मुदृतकीन्यो॥ असप्रकार पत्रिकलिखिदीन्यो ॥ रहाइमत धनसाह तुमारा मै द्रुभिक्षइत समय विचारा ३ संतन

कहंसबदीनखवाए अबप्रस्तरघट पूरिपठाए॥ आपु त्रास बसगत उतसाहू भागि चल्यो घनकानन काहू ४ असप्रकार जवभृतजन आए ॥ घटप्रस्तर पूरित समुदाए ॥ साहपत्रजुत दृगन निहारी ॥ कहिस बदनअसबचन उचारी ५ जोवित संतनकहं सबदीना ॥ तोकत भक्त गवन वनकीना॥ वृथात्रास मानस निजमाना ॥ तव तोडिर मल दुष्ट दिवाना६ करिअनीतदिल्लीस सिषावा॥ सूर भक्तहरिलीन मंगावा ॥ दीन्यो कारागार पठाई ॥ गवनेसूरभक्त हरषाई७ तहांभक्ति संजुतअनुरागे गुणगण कथनकरन प्रभुलागे पावनभजन विमल पदनीके ॥ लगेविरचन भक्तप्रीयजीके ८ तवजन मनमोहन निसिमाही ॥ दीनस्वपन दिल्लीपतकाही ॥ जो तुवमोरभक्त व्रतधारू ॥ दीनपठाय बंधनागारू ९ अवजोइ उदय अरुणतुवसाहू ॥ बंधनमुक्तिकीन नहिंताहू ॥ तोदुरदशा होहिं तुवभारी ॥ असप्रकार निसिस्वपन निहारी १० छाडयोजाय प्रात सनमाना॥ करिकरि विनयवदन निजनाना ॥ पुनिअनुचित सबक्षमा कराए करिप्रणाम तवकीन विदाए ११ सुमरत कृष्ण जनन सुखदाए ॥ भक्तसृष्ट वृंदावनआए ॥ कृष्णपुनीत गीतपद चारू॥ विरचत अनक भक्तमनहारू १२ करहिंगैनजव सरसव नाई ॥ सुनहिं दिसांत्र लोगसमुदाई इहप्रभाव संस्रति वक्षाता ललित उकत सुरनर सुखदाता १३ दोहा ॥ भक्तशिरोमणि सूर अस ॥ विदत सकल संसार ॥ वृंदावनवासि भक्तिजुत ॥ सुमरत

कृष्णमुरार १ कोटनकहं तारत विदत ॥ आपुतरेमतिधीर ॥ जहि प्रसाद अजहूंतरे ॥ जातसजन जगखीर २ इतिश्री भक्तविनोद ग्रंथे भगवद् भक्तिमाहात्म्ये सूरचरितं नाम सर्गः ७०

॥ दोहा ॥ भयेदास कात्या यनी भक्तइष्ट जदुनंद ॥ जहि गाइन तें विदतजग ॥ भयेवृक्ष निसपंद १ इति कात्यायनी सर्गः ७१

अथ मुरारि चरितं कथ्यते ॥ दोहा भक्त मुरारी नाम इक ॥ बिप्रसुत सकल प्रवीन॥वसहिं बलंदीग्रामकल ॥ कृष्ण भक्ति नितलीन १ चौपाई कपट दंभगत भक्त सुजाना ॥ माननीय सवलोक महाना ॥ पूजत भूप वचन मन करमा ॥ सवकर सुखद रुचिर रत धरमा ॥ १ ॥ सम्मय एक वरवारि अनाए ॥ निज आश्रमकहं हरिजन आए ॥ तव इकभक्त भाक्ति सरसावा ॥ तुलसी द्रुम सामीप सुहावा २ करिपूजन भगवन गुहराए ॥ भाषत काहू भक्तजनआए ॥ पावन चरनोदिक भगवाना ॥ लेहिं भक्ति संयुत सनमाना ३ तास सवद अस सुनत मुरारी ॥ आएनिकट भक्तब्रत धारी । शालिग्राम शिला सुखदाई ॥ तुलसीद्रुम जुत देखिसुहाई ४ साधुसाधु मुखगिरा उचारी ॥ तहिजाने जव भक्त मुरारी ॥ भयवस विथत वदन असकाहा ॥ मैतो चरमकार प्रभु

राहा ५ अति दुरनीति भयो कछुभोरे ॥ क्षिमहौ दीन दयानिधि मोरे ॥ सुनि मुरार असमुख मुसकाई ॥ बोलेतुव नडरहुं जिय भाइं ६ वैष्णव निपुण भक्तभगवाना ॥ मै तोहि करम वचन मन जाना ॥ साधुसुशील धरमरत मानी ॥ विषय विरक्त भक्त वरज्ञा नी ७ वंदहुं वारवार अवतोही ॥ वेगदेहु चरनोदक मोंही ॥ यद्य पि तास सकुच बहुकीना ॥ तदपि तास हठ संजुतलीना ८ आए वहुरि हरष जुतभवना ॥ चरम कार निजमारग गवना ॥ दोहा ॥ तवयहि चरचा कर नगर॥ भयो सगर विस्थार ॥ तजिदी न्यो लोगन सकल ॥ जनहरिभक्त मुरार १ चौपाई सेवक रह्यो तासनर राई ॥ अबासुनि अपजस असधाई ॥ मैअस सुन्यो श्रवण निजनाथा ॥ लीन्यो चरमकार करहाथा १ तुव चरनो दिक वलातकारा ॥ कीननाथ अस कवन विचारा ॥ अस क हि चल्यो भूपजनुत्यागी ॥ भक्तसृष्ट इहहृदय विरागी २ तिनक रदेखि द्वेषतजि ग्रामा ॥ आनठौर कीन्यो विश्रामा ॥ वासर रामनौमि तव आवा ॥ सदाभूप उतसव मनभावा ३ करतरहे सु भ नवल नवीना ॥ रामसरोज चरण मनलीना ॥ तादिन अद भुत स्वपन अलोका ॥ असप्रकार नरनाथ विलोका ४ वैष्णव काहु प्रगट असवानी ॥ कहत सुनहुं नरनाइक मानी ॥ रामनौ मि कर उतसव भारी ॥ अचन करहु विनुभक्त मुरारी ५ जो अस कीन कवहुं तुवभोरे ॥ तो अवश्य कल्यानन तोरे ॥ उठ्योप्रात

अस स्वपन निहारी ॥ कह्यो सचवसन सकल विचारी ६ तब मंत्री अस बदन बखाना ॥ सोदृढभक्त कृष्ण भगवाना ॥ तासुबोलि उतसव मन भावन ॥ करहु भूप लीलादि रचावन • दोहा सचव कथन अससुनत नृप ॥ भक्तसृष्ट पेंजाय ॥ विनय कीन जुगजोरिकर ॥ नम्र चरन सिरनाय १ चौपाई ॥ सदा कृपाय काय तुवसाधू ॥ क्षमहो चूक जनन अपराधू ॥ अनुचित क्षमहु देव अवमोरा ॥ करम वचन मनसेवक तोरा १ कहिसकथन सुनिभूपमुरारी ॥वेमुख मुखदेषन दुखभारी ॥ भक्तिविमुख दरसन असदेखा ॥ जिमि गो गुरुघन पततवसेखा २ ताते मैन विलोकहुं तोही ॥ तजितुव भक्ति तज्यो जनमोही ॥ सुनिअस भूप रुदन मुखठानी ॥ पकरिलीन पग वरवस पानी ३ गुरु पितु मातु मोर तुवस्वामी मै प्रभुचरण कंज अनुगामी ॥ यद्यपि सुत भूलत वक्षाता ॥ तद्यपि क्षमायोग्य पितुमाता ४ सदाहोत बालक मतिहोना ॥ जोप्रभु तुवन सिखावन दीना ॥ तोहम सुमति लेवकस आई ॥ असविचारि दीनन सुखदाई ५ सुतसम जानि करहु तृस्कारा ॥ हरहु नाथ दुरमति दुरचारा ॥ सुनिअस परम चतुर नृपबानी ॥ हृदय मुरारि भक्त सुखमानी ६ सानकूलमानस हरषाए ॥ संजुत प्रीति नगर चलि आए ॥ रामनौमि वासर जब आवा ॥ सब कर हृदय हरष घन छावा ७ तब मुरारि संजुत अनुरागा ॥ रामायण कल

गायन लागा ॥ आननृत्य नव्र विविध प्रकारू ॥ उत सब ला
गहोन मन हारू ८ जव प्रसंग वन वास सुहावा ॥ भक्त सृ
ष्ट सादिर मुख गावा ॥ श्रीरघुवीर गवन बन करना ॥ सुन्यो
जवहि दशरथ पतिधरना ९ दोहा । विलपन लागे वदन ज
स तसहरि भक्त मुरारि ॥ लगे करन जनु बिरहरत ॥ तन मन
दशा विसारि १ सवैया ॥ हाप्रिय ज्ञात किहा लखना सु
ठि हारघुवीर सुधीर सरीरा ॥ पितु के चित चातृका हा प्रियहा
ज़िम प्रीतकी रीत धरैधरनीरा ॥ मुख राम सुधाम मुदाकहि ना
मतजो सवकामन रामाके पीरा ॥ गबना तन त्याग कस्यो भव
ना सुर सिंह घना विरहं रघुवीरा १ चौपाई ॥ अस प्रकार
हरि भक्त मुरारी ॥ तजें प्राण देखत नर नारी ॥ दशा भूप
कछु जायन बरनी ॥ देखत भक्त सृष्ट अस करनी ॥ १ रोदन
करत विथत विसमाना ॥ भए लोक सब दुखित महाना ॥ बु
धजन प्रेम अवद गत पाए साधु साधु सव बदन अलाए २ तव
नृप विधि विधान जुत तेहा ॥ कीन्यो संस्कार सवदेहा । अस
प्रकार इह चरित महाना ॥ में संक्षपत वदन कछु गाना ॥३
दोहा ॥ जस इह प्रेम पयूख जग पीवा भक्त मुरार ॥ भयो अ
मरतसआनजन होहिन होवन हार ॥ १ ॥ इति श्रीभक्तविनोद
ग्रंथे भगवद् भक्ति माहात्म्ये मुरारि चरितं नाम
सर्गः ॥ ६४

अथतुलसी चरितम् ॥ दोहा भक्त जननमन कुमद कल ॥ सिसि सदृस विकसान ॥ भक्ति महातम कथन अव ॥ करहुं श्रवण सुखदान १ श्रीरघुवीर सरोज पद प्रेम भक्ति प्रदचारु ॥ हारन दुरमति दोष दुख ॥ टारन विषय बिकारु २ चौपाई ॥ मद्ध सुता रवि सुरसरि सोहा ॥ अंतर बेधि देस मन मोहा ॥ पुण्य भूमि सब संसृति गाई ॥ सेवत मुनि गण संतसुहाई १ तुलसी शुकल युगल असनाना ॥ तहां निवास कराहिं अभिरामा ॥ जब तहि भयो दार परि ग्रेहा ॥ तव मृत भयो जनक तजि देहा २ जननी जियन आस जगखोई ॥ निज पति सन सह गामनि होई ॥ मनमत यथा निरंकुशनागू ॥ तामिसुतंत्र तुलसी बडभागू ॥ ३ पितुधनपाय मत्त मदहोई ॥ त्रियजुत सुकच लाज सव खोई ॥ लग्यो निवासकरन कलधामा ॥ निरत निरंत्र रमन निज भामा ४ अवसर पाय पुत्र उपजावा ॥ जनु निज हृदय मनोरथ पावा ॥ एकदिवस तांकर प्रियनारी ॥ मातृ भवन सामीप बिचारी ५ विनु पूछे तुलसी अभिरामा ॥ आईतहां तजत निजधामा । पाछे तुलसि सदन निज माहीं ॥ देख्यो आय प्राण प्रियनाहीं ६ मात्री भवन गवनि जिय जाना ॥ कीन न सदन अन्न जलपाना ॥ महत बेग जनु धारत धावा ॥ निजसुसराल हरष जुत आवा ७ त्रिय बिलोकि दारण रिसपागी ॥ वदन विविध तृस्कारन लागी ॥ मै इत कछुक काज वश

आई ॥ अवहिं जाहु निज भवन पराई ८ तुव विलंब कछु स
दनन कीना॥ आवा मोहि पाछिल मति हीना ॥ राहाकवन
काज असतोरे सो अब करहु प्रकट कछु मोरे ९ तव तुलसी
अस वदन उचारा ॥ तुव वियोग नहिं सकहुं सहारा ॥ मै ज
व प्रिये सदन निज आवा ॥ तुव दरसन दृगनाहिन पावा
१० सो अस सून सदन विनुतोरे ॥ भासन लग्यो बिपन
सममोरे ॥ तव कोमल अंगी मृगनयनी ॥ मै आवा
व्याकुल पिकवयनी ॥ ११ ॥ पति मुख सुनत भाम
अस वानी ॥ वोली वदन वचन रिससानी ॥ मूढ हिता हित
तुमहुं नजाना ॥ विषय अंध निज दशा भुलाना १२ कब
न मदन रिचक सुखलागी ॥ धृतिसंतोषदोन सवत्यागी ॥ जा
पे पति मोहित तुवरेहा ॥ सोतो हाड चाम कर देहा ॥ १३
भूल्यो बृथा कवन गुनलेखा ॥ सार असार बिचार न देखा ॥ अ
हो कीन जस वाम सनेहू ॥ तसपाति कवहुं रामपद नेहू १४
दोहा ॥ उपजाहि अवरिल भक्ति मय रुचिर प्रेम संसार ॥ तो
तुव धन्य प्रयास विनु॥ भवजल तरहु अपार १ चौपाई ॥
जव अस ज्ञानवान त्रियमारयो ॥ विषय विकारसार मृगधा
रयो ॥ तुलसी इकांत स्वस्थ चित होई । विषय उपाधि सक
ल जिय खोई १ मनहिं करत तहि दंड प्रणामा ॥ कानन च
ल्यो सुमरि सियरामा ॥ भए बिरक्त जानि त्रियजीके वोली

वदन बचन मृदुनीके २ जानि आहौ क्षुधित पति प्यारे ॥ च
लहुं संग मैं नाथ तुमारे ॥ मंद मंद तुलसी तव बरना । भा
मन अबन कथन कछु करना ३ कथा अलाप परस्परजो
ई ॥ ताकर अवधि आजमनु होई ॥ कोकर मात पिता
सुत दारा ॥ इह मिथ्या बांधव परिवारा ४ तुव प्रसाद सु
नहीं हितकारी ॥ मै अव भयो कृतारथप्यारी ॥ गुरुसमान
कीन्यो उद्धारा ॥ प्रिये मोर हित भलो विचारा ५ जान्यो आ
ज जनम जगमाहीं ॥ भयो सफल संसय कछु नाहीं ॥ हो हो
धन्य धन्य मुखवानी ॥ वार बार असवदन वखानी ६ च
ल्यो बेग कानन पथलीना देखि हगन असतृये प्रबीना ॥ अ
ति संदेह व्यवस अकुलाई ॥ रुदन करत पाछिलताहि धाई७
तव तुलसी सरजूबर तीरा ॥ देखिस मूरति सियरघुबीरा ॥
तहांकीन विस्रामनवीना ॥ मानसभयों सोचतवलीना ८ को
आधार भजहुं अवकाहा ॥ अस प्रकार चिंतत जियराहा ॥
तव सपने ताहि जनक सरूपा ॥ काहु बैष्णव भक्त अनूपा
९ लग्यो प्रवोध करन असताहू ॥ रामनाम सदृश सुतकाहू
॥ ताकर मंत्र आन जगनाहीं ॥ सुरकिंनर गंधर्व सबाहीं १०
॥ जास उचारणेते अग खोई ॥ मुकत होत संसय नहिं कोई ॥
जप तप यज्ञ दान व्रत धरमा ॥ तीरथ अटन अनक हठकरमा
११ सवकर सार भूत जगएहू ॥ रामराम मुखरटन सनेहू ॥ अ

स विचारि निज मानसताता ॥ सियवरभजहु सकल सुखदा
ता १२ दोहा ॥ जवलग जियन प्रजंत निज ॥ रटहु राम सि
यराम ॥ अंतलेहु निज वपुखताजि ॥ रामधाम अभि राम १
चौपाई ॥ उदय अरनतोरे मन भाई ॥ तुलसी माल ललित सु
खदाई ॥ काहु देहि संजुत सनमाना ॥ लेतसुकरहु भजनभ
गवाना १ तुलसी देखि स्वपन असजागा ॥ प्रातहरषि संजुत
अनुरागा ॥ राममंत्र तारक संसारा ॥ लीन्यो हृदय भक्ति यु
त धारा २ आवा सरजु तीर हरषावा ॥ करिसनान पूजन म
न भावा ॥ कीन ललित दरसन सियरामा ॥ तव आवा वैष्णव
अभिरामा ३ तुलसि माल कर लेत सुहाई॥ तुलसी दास क
हं दीनसजाई ॥ लेत माल निसि स्वपन विचारा लग्यो भजन
सिय राम उदारा ४ संजुत भक्ति भवन पुनि कीना ॥ शिव पु
रि आय हरष मन लीना ॥ आसि सरता तट हनुमत पासा ॥
विरचि कुटीर कीन निज वासा ५ ततपर राम भजन गुन गा
इन ॥ निसिदिन करहि श्रवण रामाइन ॥ यथालब्ध संतोष बि
चारी ॥ भोजन करहि भक्त व्रत धारी ६ कृपा प्रसाद धनख स
र पानी ॥ विरचित ललित संस्कृत वानी ॥ अति वचित्र
कलकाव्य सुहाए । तुलसिदास जग विदित वनाए ॥ ७ ॥
समय एक निसि स्वपन मझारा राम सरूप ध्यान उर धारा ॥
तव भगवान वदन असकाहा ॥ तुलसीमोर भक्त तुवराहा ॥ ८

मै प्रसन्न लोगन हित मानी ॥ तुम कहं करहु कथन असवा
नी ॥ मोर न देश भक्त वरपाई ॥ भाषा करि प्रबंध सुखदाई ९
रामायन कल काव्य रचावहु ॥ उधरहु आपु लोक उधराबहु
लघुमति लोक काल कलिमाहीं ॥ जानिन सकहिं संसकृत का
हीं ॥ १० इहि में होहिं लोक हितभारा ॥ रामायन कृत रुचि
र तुमारा ॥ पठहिं सुनहिं सादिर नर जोई ॥ पावन प्रीति भ
क्तिरत होई ११ सो मोरे प्रियप्राण समाना ॥ तिनहिं देहुं अ
भिमत जगनाना ॥ तुलसी देखि स्वपन निसि माहीं ॥ जान्यो
कृत्य कृत्य निजकाहीं १२ उठ्यो प्रात जुत भक्ति अभेवा ॥ वं
दित गणपता दि सवदेवा ॥ मंगल मूल मंगला चरणा ॥ सा
दिर प्रथम भक्ति जुत वरना १३ वहुरि अजास करत दिनराती
पूरणकीन ग्रंथ इहि भाती ॥ ससिइव उदित तासु वुधदेखी ॥
विकसे जनहुं कुमुद अवसेखी १४ अवलों देस दिसांतन
नाना ॥ पूजत लोक सकल सनमाना ॥ गायगाय भवजलध
अगाधू ॥ तरेजात जन तुलसि प्रसादू १५ दोहा ॥ तदनंतर अ
द्भुत चरित ॥ भयो जवन मनहारु सो सादिर अब करहुं कछु
कथन वदन निजचारु १ चौपाई तुलसीदास नियम असकीना
कासी करहिंन सोच प्रवीना ॥ असि सरता तट जात सवाहीं ॥
करि शौचादि भवन निजमाहीं १ आय करहिं नितकृत अनु

रागा ॥श्रीरघुवीर चरण मनलागा तहांसिष जल सौंच सदाहीं डारत भक्त आम्र द्रुममाहीं २ ताहि द्रुम वसहि प्रेत इकभारी ॥ करत सोपान सौंच नितवारी ॥ ताहितें अति प्रसन्न मनबानी ॥ तुलसि दास कहं तास वखानी ३ तुव प्रसाद मुहि भक्त म हाना ॥ अवलो रह्यो मिलत जलदाना ॥ इह उपकार तोरहि तकारे विसरहिं मुहिन जनम सतधारे ४ ताते मै प्रसन्न अवतो हीं ॥ देहुं रुचिर वरमांगहु मोही ॥ अस प्रकार जवप्रेत अला वा ॥ तुलसी सुनत हृदय विसमावा ५ कोतुव कवन यूनिअ सकाहा ॥ ईहां कलेश कवन हित साहा ॥ मोरे सौंच वार असपाई ॥ जोतुव लीन नृपति अधिकाई ६ कहिस प्रेत तु बभक्त उदारा ॥ मोरवृतांत सुनहु अवसारा ॥ पूरव जनम मोर दिज धामा ॥ विंध देस छित पत अभि रामा ७ मैतांकर अपरोहित मानी ॥ पैनिंदक दिजद्वेष प्रदानी ॥ परमलोभ र गत सतकरमा ॥ हृदयववेकन धरम अधरमा ८ छितपत रुचिर दान कृतचीने ॥ राखहुं सदन दिजन कछुदीने ॥ अतथी संत देखि हगजोरा ॥ संनपात इववकहुं नथोरा ९ निजकर काहु मानि रुचि झूठीं ॥ दीनन कवहुं अन्न भरि मूठी ॥ करम वच न मन कीननकाहू ॥ कछुउपकार प्रीति उतसाहू १० दोहा ॥ एक दिवस अति तृखत इक अतथि आव मोहिद्वार ॥ तासुक रावा पानमैं ॥ बार विविध तृसक.र ॥ १ ॥ तहि प्रभाव मै प्रेत

वपु असलीन्यो संसार ॥ अबलगरह्यो सुमिलतमुँहि ॥ सौचसे
ष तुरवार २ चौपाई तव पूछ्यो तुलसी असतासा
इहांआय तुव कवन अजासा ॥ प्रेत वदन असगि
रा प्रकासी अवसर एक मोर नृपकासी १ आए ससिधर दर
सन काहीं ॥ मुहिधन लोभ विपुल मनमाहीं ॥ नृपतें लेहुं दान
मनभावा ॥ अस निज हृदय गुनत जवआवा २ मारग डस्यो
भुजग भू परयो तरफत तुरत प्राण परिहरयो॥आएलेन धरम ज
वपाइक ॥ तवहर किंकर भीम विनायक ३ वोले इहन नर
क अधिकारी तव यमदूतन गिरा उचारी ॥ इहसठ आव लो
भ चितलागी हर दरसन कछु हृदयनलागी ४ सठकहुं हमस
न देहु पठाए तवहर किंकर वदन अलाए ॥ यद्यपि कथन स
त्य सवतोरा ॥ कासिप्रभाव तदपिवरजोरा ५ करहिं निवास
वहिर अवजाई ॥ दंडकाल भैरव वपुपाई ॥ रामभक्त करनित
सनमाना ॥ रहिहैं करत सौच जलपाना ६ तहि प्रभाव कासी
कलआई ॥ हुइहैं योग्य मुकत सुखदाई ॥ इह प्रसंग सज्जन
सवमोरा ॥ अववर मांग जवन रुचितोरा ७ मैतोहि मन धां
छित फलचारू ॥ देतलेहुं सदगति संसारू ८ सुनि अस प्रेत
वचन हरषाए ॥ वोले तुलसि मनहिं मुसकाए ॥ जोवर हृदय
देनरुचि तोरे ॥ तोपरिवार सहित अवमोरे ॥ सीयराम दरसन
सुखदाता ॥ देहुं कराय हरण अगगाता ९ प्रेतसुनत असवदन

उचारा ॥ इह सामरथ अगम संसारा ॥ भक्तसृष्ट पै सुनहु उपाए ॥ जहितें राम जनन सुखदाए १० आविर भूत प्रभुहोहिं तुमारे दीनानाथ भक्त हितकारे ॥ हनुमत भवन निकट सुखदायन ॥ पावन कथाहोत रामायन ११ तास श्रवण हित जठिर शरीरा ॥ गलतराज रुज जरिण चीरा ॥ आवत प्रथम लुकट गहिहाथा निवलकाय कंपत सब माथा १२ पाछिल जात दुखित अति दीना ॥ रामसरोज चरण मनलीना ॥ साधु भेष धृत लखाहिं न कोई हनुमत भक्त सृष्ट अससोई १३ दोहरा कथाश्रवणकरि जाहिंजब मंदमंद सुखमानि । तबपाछे लगिचरण तुव पकरि लेहु निजपानि १ चौपई ॥ यद्यपि करहिं भक्त हठनाना ॥ तद्यपि तुवन तजहु पगपाना ॥ तव प्रसन्न मन मरुत कुमारा ॥ देखि भक्त हित रुचिर तुमारा १ जो कछु करहिं कथन मुखवानी ॥ हितजुत लेहु सत्य सबजानी ॥ भक्तराज संकुल गुणधामा ॥ होहिंतुमहिं अवदंड प्रणामा २ प्रेतवदन असगिरा प्रकासी ॥ आवा अभय सकुच गतकासी ॥ तारक मंत्र लेत हरखाना ॥ कृपा प्रसाद शंभु भगवाना ३ कौतुक प्रेत वपुष निजखोई ॥ हरहर रटत भयो हरसोई ॥ तव तुलसी अनुराग वढाए ॥ करिसनान पूजन रघुराए ४ आए प्रथम भवन हनुमाना ॥ तहांसमाज संत जनना ना ॥ देखत करि प्रणाम अनुरागे ॥ कथा पुनीत श्रवण करिलागे ५ हनुमत जठिर रूप अति दीना ॥ तुलसि दास नयनन नि

जचीन।॥ कथा अतजव देखि सधारे ॥ निजनिज भक्ति प्रेम जुतसारे ६ पाछे संतवृद्द वलहीना ॥ तुलसी कथा श्रवण निज कीना ॥ कंपत तथा लुकट गहिपानी ॥ गवन्यों मंदमंद सुख मानी ७ तव तुलसी पाछिल तजिदीना ॥ सनमुख होत चरन गहिलीना ॥ हाहाहा अस जठर उचारा ॥ मै दूखत जानत संसारा ८ साधु स्पर्श करहु जनिमोरे ॥ शिक्षादीन कवन अ सतोरे ॥ कोकर भ्रम पकरयो जनमोही ॥ वंच्यो कवन कपटि असतोही ॥ ९ ॥ तव तुलसी असविनय उचारा ॥ आन कवन मोहि वंचिन हारा ॥ तुमहुं चहत अब वंचिनमोरे ॥ पैनतजहुं पदपावनतोरे ॥ १० ॥ तुवतोनिपुण भक्त सियरामा॥विदतसकल जगहनुमतनामा॥अवनदुराहुमरम निजस्वामी ॥ वतसल भक्त जननअनुगामी ११ करमवचन मनसेवकजोई ॥ तासुतजनप्रभु उचितनहोई॥होहुप्रसन्नरामासियप्यारे॥ असतुलसीजवविनयउचारे १२ हनुमतहरषिवदन तवकाहा ॥ तुलसी कहोकाजतुवकाहा ॥जवप्रसन्नमारुति असजाने ॥ तुलसीदासचरणलपटाने १३ दोहा वोलेकवकरुणायतन॥रामसहितपरिवार ॥ दृष्टी गोचर होहिं मुहि ॥ भगवन भक्त उवार १ सिय रघुवर दरसन तृषत ॥ विथततुलसि जनपाय ॥ हनुमत वारद सरद जनु वंदन वचन रसाय २ चौपई ॥ विजय दसमि करादिवस सुहाए ॥ चित्रकूट दरसन रघुराए ॥ तोर होहिं सहित परिवारा॥

अस हनुमत जब वचन उचारा १ तुलसिदास करिदंड प्रणामा भक्त सुखद सुमरत सियरामा ॥ ब्रह्मानंद वार जनु बूडे ॥ निरत नलग्यो प्रेम जुतगूडे २ इतहनुमान भक्त रघुराई ॥ भए अंत्रग त कथा सुनाई ॥ विजयदसमि कर दिवस सुभागे ॥ तुलसिदास अब सेरनलागे ३ श्रीरघुवीर विमल गुनगाते ॥ आए चित्रकूट हरषाते ॥ एकदिवस अटभुत असदेखा नगरलोग जुत हरषवि सेखा ॥ ४ ॥ लीलादसम करन कललागे ॥ निजनिज हृदय प्रेम रसपागे ॥ तो जिमि विजत कंध दसगूढे ॥ पुष्पक विमल विमान अरूढे ५ सीयेराम लक्ष्मण हनुमाना ॥ अंगद जुत सुग्रीव सुजाना ॥ रावन भ्रात जाम नल नीला ॥ आनसकल भूतं सेवक सीला ६ तजत गोह आश्रम सुखमानी ॥ चलेजात मंजुल रज धानी ॥ अस अनूप रघुवर छबदेखी ॥ कोटिकवि नमति लाजतलेखी ७ काहिन सकत कछुअद्भुत सोभा ॥ तुलसिदास देखत मनलोभा ॥ मोह व्यवस जियलख्यो सुहीला ॥ बिरचत नगर लोग इहलीला ८ यद्यपि हृदय जानि अनुकरणा तद्यपि राम रूप मनहरणा ॥ रह्योनिवसि तुलसी मनमाहीं छूटत जूटि दृष्टिदृगनाही ९ गयो दूर जवरामविवाना ॥ तुलसीदास मानस अकुलाना ॥ प्रेमाविवस तनदशा विसारी ॥ सो सरूप रघुवर उरधारी १० दोहा चले जात मारग विकल ॥ मिले मरुत सुतआय ॥ धस्यो वेस वैष्णव विमल तुलसि व

दन हरखाय १ काहिस अपूरब आजमें ॥ चित्रकूट मतिधीर ॥ जों लीला देषी दगन ॥ हृदय हरण रघुवीर २ देखहु तुमहुं न जायकस ॥ भक्तवतस हनुमान ॥ तबबोले असपवन सुत वदन मंदमुसकान ३ तुलसीमुहि बिसमय विपुल ॥ इहलीला भगवान ॥ कवहुं होत तुव सुन्यो जग आसुनमास सुजान ४ चोपई ॥ तुमकहं भयो भक्त भ्रमकाहू ॥ तुलसि वचन सुनि हनुमततताहू ॥ चित्रकूटकहंवहुरिसिधारा ॥ सोउतसव लीलादि प्रकारा १ देख्योभक्त दगनकछुनाही ॥ चिंताकुलपूछतसवकाहीं कहतसकलकछु हमहुंनभासा ॥ इहासंतलीलादि विलासा २ तुलसीसुनतकथन तिनकाना ॥ कीनसुमरणवचनहनुमाना ॥ अहोराममोहिकुटिलमलीना । दुरमतिदुराचारचितचीना ३ कीन्यो मुहत देव निजमाया ॥ भूल्यो हृदय कवन भ्रमछाया ॥ जो मुहि रघुवर भवन प्रकासू ॥ भास्यो लीला लोक विलासू ॥ ४ अस कहि दीरघसुर अधिकाई ॥ लग्योकरन रोदन अकुलाई ॥ सुनि लोगन विज्ञपत विचारा ॥ दीन्यो करितृसकार निकारा ५ तवतुलसी आश्रम निजमाहीं आय लग्यो निदरन निजकाहीं ॥ मोहित विथत अन्नजल त्यागी ॥ भयो निरत निद्रावडभागी ६ दोहा ॥ तवस्वपने तहि मरुतसुत ॥ अतिस प्रीति सरसाय ॥ लगे प्रवोधन वदन निज ॥ वारवार हरषाय १ चोपाई धन्यधन्य तुलसी वडभागे ॥ श्रीरघुवीर चरण अनुरागे ॥ सुरदुर्लभ दर्शन भगवाना ॥ देख्यो जाय दगन भरिनाना १ अबन करहु चिंता

जियभाई ॥ मनवचकरम भजहु रघुराई ॥ सिद्धसंत तापसमुनि नाना ॥ देखहिं ज्ञान दृष्टि भगवाना २ कोसामरथ नदेखनहारा ॥ अगम देवदरसन संसारा ॥ तोरे धंन्यभाग जगलेखे ॥ जोप्रत क्षइन नयननदेखे ३ अवतें बान सिरासनधारी ॥ सुभृत वदन वरन घनकारी ॥ वारज विमलनयन अरुन्यारे ॥ भृकुटी कुटिल घ्राण शुकवारे ४ दाडम दसन कुंदकालिलाजा ॥ जटाकीट कलसीस विराजा ॥ वलकल वसन भेषमुनिसोहा ॥ भालविसाल तिलक मनमोहा ५ भुजआजान मानखलमोचन ॥ आयत हृदय हरनजन सोचन॥अंगअनंग कोटिछवि हारन ॥ पावन अरुन चरन जलजारन ६ जानकि लखन सहित भगवाना ॥ सुग्रीवा दिवामपद पाना ॥ मरदत भक्ति प्रेमसुरसाए ॥ सोअनंद कछुवरनिनजाए ॥ ७ सनमुख चरण पादकाधारे ॥ ॥ भरत सनेह अवधिहितकारे ॥ हरषनीरनयनन चुत कीने॥जुगकर युक्त भक्तिमनलीने ८ हनुमत ओरदृष्टि दृगजोरे ॥ पूरित हृदय प्रेमनहिथोरे ॥ अग्रभाग लंकेस विभीषण ॥ देखन अबद काममन तीषण ॥ ९ अंगद जामनीलनल लोही ॥ दीननाथ परि वारत सोही ॥ गगन निकर सुररूढ विवाना ॥ वरषत सुमनजैति रवनाना १० अस उरधरहु ध्यानरघुराई ॥ तुलसीहोहु कृतारथभाई ॥ असहनुवचन पयूख समाना कीने तुलसिदास जवपाना ११ दोहा भ

यो अमरवत भक्ति जुत ॥ सोंऊ ध्यान रघुराय ॥ तुलसी उरधरिम रुतसुत ॥ चरन नंम्रसिरनाय १ चौपाई ॥ अभय लाग बिचरन संसारा रामनामउररारिव अधारा ॥ अवसर एकविप्र जनकाहू ॥ पडित वपुषराज रुजताहू ॥ १ निबल कृश्यदारद रत दीना ॥ अतिक्षुध्यत मनविकल मलीना ॥ मारगलेत विपुल विश्रामा ॥ आवा तुलसिदास कलधामा ॥ २ रविमध्यान गगन तवछावा ॥ रामराम अस वदन अलावा ॥ तुलसिदास कहं लग्यो पुकार न ॥ तेसुनिराम सवद भवतारन ३ आएनिकसिवहिर निजगेहा ॥ देख्यो गलित कुष्टादिजदेहा ॥ रामभक्त तुलसी रतदाया ॥ ता सुबदन अस वचन अलाया ४ जाहु सनान करहु द्विजगंगा ॥ इहतुव वपुखराज रुजभंगा ॥ ब्रह्महत्यादिपाप अवघोरे ॥ मिंट प्रसाद रामसवतोरे ५ विप्र देवसरि वेगअनाई ॥ भोजन करहु भवन मोहि आई सोद्विज सुनत तुलसि असवानी ॥ मज्जन च ल्यो गंगसुखमानी ६ प्रमुदित जायदेवसरि नीरा ॥ तास मगण जवकीन सरीरा ॥ तेसुरसरि जग किलष निवारण ॥ तापर भक्त वचन दुष हारण ७ उभय प्रसाद विप्रवर कापा ॥ मानहु आ ज नवल उपजाया ॥ विप्र विलोकि चरित विस माता ॥ आवा तुलसि भवन हरषाता ८ देखि तुलसि कंचिनवत का या ॥ अतिसप्रीति मुखवचन अलाया ॥ तीनवार अव विप्र सु जाना ॥ रटहु निरंत्र वदन सियरामा ९ दोहा ॥ तव तुलसी

मुख वचन सुनि ॥ विप्र मूदि जुग नयन ॥ तीन वार सियराम रव ॥ रटयो भक्त सुखदेन १ चौपई ॥ बांहंगाहित तुलसी त वल्याए । तासु सदन निज हरष वढाए ॥ सवकर देखत पंकति माहीं ॥ दीन जिवाय पाकतहिं काहीं १ तव सुनि विप्र लो क पुरसारे ॥ सकल परस्पर तासु उचारे ॥ ब्रह्महत्यादि पापज हि कीन्यो ॥ तासु अधम तुव पंकति दीन्यो २ अबनस्पर स करब हम तोरा ॥ इह तुव कीनपाप नहि थोरा ॥ तुल सी कहिस वदन मुसकाई ॥ चलहु शरण विश्वेश्वर भाई ३ तुव इहि कर परीक्षा करिलेहो ॥ बृथान सकल दोष मोहिदे हो ॥ विप्र वृद्ध अस सुनत अलाए ॥ हमहु करव परीक्षा अस जाए ४ होहिं मुच्चित संदेह हमारा ॥ अस प्रकारजन जाठिर उचारा ॥ जोइहि दिज दूषत करपाना ॥ सुरभी क राहिं ग्रास सनमाना ५ तो निरलेप पापगतराहा ॥ तुलसी सुनत हरषि असकाहा ॥ इह तो बचन सत्य सवतोरा ॥ पै अव कथन आन कछु मोरा ६ जव अस धनु ग्रासकरि लेहीं ॥ शैल रूप नंदी गण जेहीं ॥ मै तहि कहं भोजन हरषाई ॥ सवकर देखत देहुं जिवाई ७ तोनहोहिं कछु हृदय संदेहू ॥ राम प्रसाद सिद्ध दिज एहू ॥ लोक सुनत असमानि हुलासा ॥ आए विश्वनाथ प्रभुपासा ८ तुलसी तास विप्र कहं लीने ॥ आए रामचरण चितदीने ॥ पृथम ग्रास

दिजनाथ करावा ॥ सुरभी लीन प्रेम जुतपावा १ वहुरिपात्र धरि भोजन नीके ॥ देत विप्र कर प्रमुदित जीके ॥ कहा वृषव हर सनमुख जाई ॥ देहु भक्ति जुततासु जिवाई १० ॥ दोहा ॥ आपु सुमारि रघुवर चरन ॥ तुलसि वदन सनमान ॥ लागे अस तुति करन कल ॥ वृषव राज भगवान १ जो इह दीन दयाल निधि ॥ राम मुखर मुखगाय ॥ ब्रह्महतन दुख दोषतें ॥ मन्यो मोक्ष जग जाय २ तो तुव इहि कर करन कल ॥ धरनि शृंग धरभार ॥ सब कर देखत करहु अब ॥ बृषभ प्रवर आहार ३ चौपई॥ जब तुलसी अस विनय उचारे॥ तब प्रसन्न हरगण हुंकारे ॥ अद्भुत दिव्य रूप पाषाना ॥ भक्त हेत भोजन रुचि माना १ अधो वदन देखत समुदाए॥ लीन वृषव वर भोजन पाए ॥ निर्जे निज सकल लोक विसमाने ॥ वदन मुखर जयजयति अझाने २ विप्र बृंद पंडितस मुदाई ॥ तुलसि दास कर अस्तुतिगाई । दिजहि अदोष दुंद गत जाना ॥ धन्य धन्य सवरुचिर वखाना ३ रामनाम अस दोखि प्रभाहू ॥ भयो प्रवर वैष्णव दिजताहू ॥ निज कहं कृत्य कृत्य जग जानी ॥ राम सरोज चरण रति मानी ४ दोहा सादिर लेत विदाय तव तुलसि चरन सिरनाय ॥ विचरनलाग्यो अभय द्विज ॥ निज अभिष्ट फलपाय १ चौपई ॥ एक समय तुलसी कर धामा ॥ आवा चोर हरन धन कामा ॥ भेदन भि

त्ति करत अग गूढा ॥ पृवस्यो भवन भक्त तव मूढा १ देखत
दृग न ठाड रख वारे ॥कमल नयन धनु साइक धारे ॥ सुभृत
नाग सुंड भुज दंडा ॥ बीर धीर जनु प्रवल प्रचंडा २तस कर
त्रास व्यवस अकुलाना॥निकासि वहिर सठचल्यो पलाना॥करत
विचारवहुरि फिरआवा ॥ मोरे हृदय कवन भ्रमछावा३ जोअत
करि प्रवेश वित भवना ॥ छूछे अहोभागी कत गवना ॥ अस
विचारि पूरव पथद्वारा॥ चौर जाय जब दृगन निहारा ४ सोऊ
निखंग धनुष सरधारू ॥ ठाडयो सजग विप्र रछवारू ॥ सक्यो
न चोर जोर दृगभागा॥हृदय त्रास जानिपाछिल लागा५ असत
हि करत गतागत ताहां ॥गई रयन निकस्यो दिन नाहां ॥की
न्यो गवन अंत निजगेहा ॥ वीते तीन दिवस अस तेहा ॥ ६
चतुरथ दिवस वहुरि सठआवा॥ तवहुंन समय हरण वित पावा
जासुरटत सव भक्त उवारे ॥ सोऊ न केत तुलसि रखवारे॥ ७
हारयो चौर अंत असदेखी ॥ निजवल निवल चलत नहिलेखी
विसमत तुलसिदास पैं आवा ॥ निज वृतांत सवदीन सुनावा
८ तोरे भवन धनुष सरधारे ॥ लोचन जलज वरण घनकारे ॥
आकृति सिंह पीठ पट पीता ॥ कोटि कृतंत देखि जाहिभीता॥
९ महा भक्तजन भूषण चारू ॥ देखन चाहुं प्रकट मनहारू ॥
तुलसि सुनत मानस हरषाने ॥ तासु वदन असवचन अलाने॥
१० दोहा ॥ तुव देखे कव कमल दृग ॥ अस सुंदर छविवार ॥

धृत को दंडकर चंड सर । सदन मोर रखवार १ चौपई ॥ चौर वदन निज वचन अलावा ॥ भैनिसि अमुक सदन तुवआवा
हारन हृदय दरव्य रुचिमानी ॥ सोभट वान सरासन पानी १
ठाडे देखि सजग रखवारे ॥ त्रासत चल्योधरी उरहारे ॥ तृतिये
दिवस वहुरि जब आवा ॥ सोऊ मदन मोहन छवि छावा २
जापर थकित भवन सवसोभा ॥ देखत भक्तमोर मन लोभा अव
दायाकरि देहादिखाई॥ तुलसी जान लीह्न रघुराई ३ वोले तासु
वचन मृदुवानी॥ अहो चौर तुव धन्य अमानी॥जासवरस हित
कोटि उपाए॥ संत सिद्ध तापस रिषिराए ४ करत नअविरभूत
प्रभुहोहीं ॥तुवजन विदतनयनभरिसोहीं देखे अखिल भवनपति
रामा ॥ अवतुमभयो विगत सवकामा५निज उरधारि ध्यान प्रभु
सोई॥विचरहु अभयभक्त भ्रमखोई॥चौरसुनत तुलसी असवानी॥
निजकहं कृत्यकृत्य जगजानी ६ नायसीस निज भवन सिधारा ॥
राम स्वरूप लीन उरधारा ॥ इत विचार तुलसी जिय कीना ॥
अहो महान नीच वित चीना ७ जहिंहित हरण त्रास संसारे ॥
मोरे सदन भए रखवारे ॥ दीना नाथ विपुल श्रम लीना ॥
मै इह दुष्ट मीत कस कीना ८ अस विचारि संकुल धनधामा ॥
तुलसीदास मानस निसकामा ॥ कीन विभक्त संतजन दीना ॥
निर्भय आपुरामपद लीना ९ विचरनलग्यो धरनतल माहीं ॥
आन भरोस राम विनुनाहीं ॥ अवसर एक विप्रजन कोई ॥

संदर जुवा वैस जुतहाई १० दोहा ॥ काशीमृत बसभयोदिज ।
सहगामनि तृयतास ॥ होन चली पावक जरन । तजित जियन
जगआस १ चौपाई ॥ देखेमग तुलसी अभिरामा॥ तृयेजोरि क
रकीन प्रणामा ॥ लख्योन मरम भक्त बर काहू॥ हरषिदीन आ
सिष मुखताहू १ पुत्री होहुं पती मनभाई ॥ सुभ सौ भागवती
सुखपाई॥ अधो वदन त्रिय लगी विचारन ॥ मैगवनी पति सनव
पुजारन २ अवतुव भागन संतवनाई ॥ तव वोलेवांधव समुदाई
विधवा भई नाथ इहवाला ॥ तुवआसिख अवदीन कृपाला ३
सत्यवाक्यकसहोहितुमारा ॥ अहोसंतहितकरनउदारा ॥ अवलो
त्रिअवचनसंसार्यो ॥ मिथ्यानाहिननाथनिहार्यो ४ इहकसफल
दायकप्रभुहोना ॥ ऊखरधरनिबीजजिमिवोना ॥ तुलसीआवतहु
तोअनाए ॥ तिनकरकथनसुनताविसमाए ५ आएवहुरिदेवसरि
तोरा ॥ लेतबसनासितमृतकसरीरा ॥ सादिरकरतअछादनतासा
॥ वैठिनिकटतुलसीगुणरासा ६ पावनमंत्रवदनासियरामा ॥ ला
गेरटन भक्त प्रदकामा ॥ ललितसरूपरामउरआनी ॥ लागेबिवि
धप्रसंसनवानी ७ हेसुरधरनिधेनुदुखहारे ॥ हेहरिहृदय भक्त सुख
कारे ॥ हेप्रभुजलधनीलवतकाया ॥ सदाकरनजन दीननदाया ८
हेभुजदंडचंडखलहरने ॥ हेअखंडमांडिन सुरसरने ॥ हेगंगादिक
रनपदपावन ॥ सिवब्रह्मादिदेवमनभावन ९ हेहरिनेतिनिगमजगगा
ए ॥ हेप्रभुभक्तदेवद्रुमछाए ॥ हेजगचरनतरनमुनिनारी ॥ हेगजग्रा

हग्रस्तचुतकारी १० हेवपुसारदूलनरधारी॥ हेप्रह्लादकरनरखवारी ॥हेप्रभुद्रुपतसुतादि सहय्या॥हेकरुणामृतमृतकजवय्या ११ दोहा ॥ मैं करिचुक्योंकृपायतन ॥ यह्नवचननिजएहु ॥ करहुसजीव नदिजहिंअब ॥ प्रभुजनदीनसनेहु १ विप्रधगणिसुरसदासुख ॥ करनत्राणसंसार ॥ तातेंदिजकहं करहुप्रभु ॥ प्राणदानउपकार २ चौपई मोहि किंकर निज चरनन जानी ॥ द्रवहु देव धनुसाय कपानी ॥ जन कर वचन सफल प्रभु करहौ ॥ विप्र पतनिजि य शोकानिवरहौ १ जिमि पूरव मोरे रघुराई ॥ रहे होत तुव सदा सहाई ॥ तिमि अब देहु सुजस जग मोही ॥ वंदहुं वार वार प्रभुतोही २ अस प्रकार अस्तुति मनलीना ॥ इंदुजाम जव गयो बतीना ॥ तव प्रभुभक्त सुखद हित कारी ॥ राम चंद्र जनशोकनिवारी ३ तुरतजिवायविप्रवरदीना ॥ अदभुतचारुचरित प्रभुकीना ॥ राम राम अस उठ्यो उचारी ॥ ते समाज सव दृगन निहारी ४ बोल्यो इहां कवन हित आए ॥ आतमी य तव वदन अलाए ॥ तुवमृत भयो आज जगनेहू प्रानदा न दाइक पितुएहू ५ जो उपकार विदत इनकीना सो कि मिजाहि जनम सत दीना ॥ विप्रसुनत अस श्रवण प्रसंगा ॥ रोम रोम जनु हरष उमंगा ६ तुलसि चरण नम्रत सिरनाए लाग्यो सुजस विविध मुखगाए ॥ वहुरिसनान करत कल गंगे चले सकल मनमोद उमंगे ७ तुलसिदास उत आश्रम आए

असप्रकार कछु दिवस विहाए ॥ इहप्रभाव तुलसी अभिरामा ॥ छयो समग्र नगर पुरग्रामा ८ रुचिर प्रसाद भक्तिरघुराई॥ कीरति अतुल तुलसी जगछाई ॥ इहप्रभाव जब सुन्यो दलेसू ॥ उतकंठितनिजहृदयवसेसू ९ दरसनकरहुं भक्त वडभागी ॥ जोअसरामचरनअनुरागी ॥ असविचारि सुचिसेवकताहू ॥ पठतप्रीतिसजुतउतसाहू १० सादिरप्रेमभक्ति सरसाए तुलसिदास तवलीनवुलाए ॥ सथलसंस्कृतभवन सुहावन ॥ तहांनिवासदीन मनभावन ११ दोहा वैठ्योसनमुखसाहतव ॥ करिप्रणामहरषाय ॥ कहिसप्रसंसत विविधविधि ॥ वदनवचन सुखदाय १ भक्तराजसामर्थतुव ॥ सुन्योअलोकिककान ॥ मृतकसजीवनविदत जग ॥ जानतसकलसुजान २ अबकछुहमहुंमहांमते कलितकटाक्षदिखाय निजसेवककरि लेहुजग भक्त प्रवररघुराय ३ चौपई ॥ तव तुलसी असवदन उचारे ॥ नहिंकटाक्ष कछुमरम हमारे ॥ केवल रामचरन रतिमानी ॥ नटवतआनकेलि सवजानी १ आपनकछुसारथनदेखी ॥ घट घट राम कला सवलेखी॥साह सुनत दारुन रिसपागा॥ भृतन वदनअस भाखन लागा २ देहु भवन वंधन इहिंकाहीं ॥ जोलो निज प्रभाव कछु नाहीं ॥ हमहुं दिखाव मुक्त जनिकरना ॥ जव अस साह वदन निजवरना ३ करत तुरंत भृतनगहि लीना ॥ वंधन भवन भक्त हरि दीना ॥ तव तुलसी सुमरण सियरामा ॥ लाग्यो क

रन रोध उतधामा ४ अग्रगामि राघव वरकाहीं ॥ वहुरि सुम
रण लाग्यो मनमाहीं ॥ हे हनुमंत जगजित मतिमाना ॥ श्रीर
घुपत अतिरति रतजाना ५ हेमारुत सुतभक्त सनेहू ॥ अति
अतु लित वलवाल जतेहू ॥ अंजनि पूत दूत रघुवीरा ॥
जनमन हरन दोष दुखपीरा ६ हे विक्षेप करन लांगूला ॥
हरन प्रचंड दनज अगमूला ॥ हेहर उर प्रमोद प्रदरामा ॥ हे
अवतरणसपत चतुवामा ७ विपतकाल कल करन सहाई ॥
मुरछित देखि समर अहिराई॥ कौतक कालेत द्रौण गिरिलाए
लीन सुजस जगलखन जयाए ८ सोप्रभाब अव प्रकट करीजै
दीनानाथ दीन दुखछीजै ॥ कीन्यो लंक दगध वल जासा ॥
प्रवल चंड दस वदन विनासा ९ हेसुर दुर नरीक्ष जय करना
इहि दिखाहु वलभक्तउवरनाँ ॥ जिहि प्रभाव करि लंकप्रवेसू ॥
विदत मात सियहस्यो कलेसू १० धरिसरूप सूक्षम सुखदाए
जिमिदस वदन भवन हरआए ॥ अव प्रभु तास सुमति चतुरा
ई ॥ करहु मोर कपिराज सहाई ११ हेभवमुक्त मुचनदुखभा
री ॥ हेभुजदंडचंडवलधारी ॥ अग्रगन्य सेवक रघुराई ॥ संस्र
ति अभय भक्त वरदाई १२ दीन दयाल सरणागत लेखो ॥ हर
हु दीन दुख हृदय वसेखो ॥ दोहा ॥ इह विनंति भवतुलसि
जन अभिमत फल दातार ॥ हरण कष्ट वंधन मुकत नरन क
रन सुखचार १ असप्रकार सुमरण कस्यो ॥ अग्रगामि रघुराय॥

जे जगत उत प्रभाव वत ततक्षण होत सहाय २ हनुमत सुनत प्रसन्न जुत ॥ राम भक्त दुखहेर ॥ ततक्षण अगनित वलि मुख न लीन प्रवल अनिटेर ३ चौपाई ॥ अस प्रकार वानर जुत आए ॥ चले मारधर मार अलाए ॥ जव दलीस पुरकीन प्र वेसू ॥ तव मारुत सुत दानिन देसू १ संकुल लोक नगर जुत राई ॥ करहु विदल न पलन अवलाई ॥ करि कदर्थ मरदन सवकाहीं ॥ देहु प्रमोद तुलसि मनमाहीं २ वानर सुनत वचन हनुमाना ॥ प्रवसे इंद्र प्रस्थ पुरनामा॥ कट कटाय मुख भृकुटि चढाए ॥ प्रसतर धूलिकरन गहिधाए ३ द्रुमन उपारि विपुल रिसराते ॥ चले मनहु वारुणि मदमाते ॥ रदलांगूल मुष्टनख संगा ॥ क्रीडनलगे मनहु महिरंगा ४ अति दुरदशाकीन सवकाहू ॥ हाहाकार सवद सुनि साहू ॥ व्याकुल उठयोदेखि विसमावा ॥इहका भयो कवन रिपु आवा ५ भृतन कीन परि वारत साहू ॥ हननपरहि वानर जनि काहू॥तोलों कटकटात क रि आए ॥ वानर कटक कठिन रिसछाए॥ ६ ॥ धायधायधरि मारन लागे ॥ विथतन सकहिं कितहुं भृतभागे ॥ प्रेरिघहाय जमन जलकाहू ॥ हने काहु सनमुख ध रिसाहू ॥ ७ कीन सकल मृतवत भृतताहां ॥ त्रियजुत पकरि लीन नरनाहां ॥ गहिकच वदन प्रहारतपाना ॥ विहसि हासि निरत करावत नाना ८ मरणप्रजंत भयोतव साहू ॥ आन

लोक पीड़ित सवकाहू ॥ जोसियराम सवद असकैहीं ॥ जानिभ
क्त प्रभुता सुनगैहीं ९ सचव प्रवीन मरम असपाई गुपत साहस
नदीन जनाई ॥ रामराम सवकरहु उचरणा तोकलेशसव होहिँ
निवरणा १० दोहा ॥ तुव तुलसी अभिमुख रह्यो ॥ वेमुखभयो
वहोरि ॥ तोस्वामिन निजप्रजाजुत ॥ वपुदुख लीनन थोरि १ तें
त्रिभुवन धनिरामकर ॥ भक्त वचन मनकाय ॥ तुवकीन्यो अप
मानतहि ॥ वंधव भवन पठाय २ मैंसुनि राख्यो विप्रमुख सदारा
म अस वान ॥ संत्राति निजप्रिय भक्तकर ॥ सहिन सकहिअप
मान३चौपाई॥ याते राम दूत हनुमाना आवा लेत निकर अनि
नाना ॥ कीनविविध दुरदसा हमारी ॥ अस स्वामिन निजहृदय
विचारी १ जुगकर जोरिवदन सियरामा ॥ वारवार अस रटहु
लिलामा ॥ पदचर नगनपाद पुनिजाई ॥ त्राहि सवद असवदन
अलाई २ तुलसिदास चरनन सिरनावहू ॥ निजअनुचित सव
क्षमाकरावहू ॥ सुनिअस सचव कथन वहुवारा ॥ रामराम मुख
साह उचारा ३ वानर सुनत राममुख तासा ॥ तज्यो जानि जि
य रघुवर दासा ॥ संजुत पतनिसाह अकुलाई ॥ पदचर तुलसि
दास पें आई ४ पर्यो दंडवत चरणन आई ॥ त्राहि त्राहि अ
स वदन अलाई ॥ क्षमहुं क्षमहुं मुहि जानि अजाना ॥ तुलसी
भक्तराम भगवाना ५ हमहुं कुटिल दुरमति दुरचारा ॥ साधुस
रल तुव चूक निवारा ॥ कुमति कीन जसअनुचित तोरानाथ

तास फललीन नथोरा ६ तुलसी सुनत कथन अस ताहू ॥ बो
ले पुलकि वचन उतसाहू ॥ भाख्यो प्रथम सत्य सवतोही ॥ क
छु संसृति सामर्थ नमोही ७ सकल प्रभाव राम भगवाना ॥ सो
अव विदत लीन तुव जाना ॥ सुनत साह चरणन सिरनाए ॥
कोये प्रसन्न भक्त रघुराए ८ तव तुलसी दरसन हनुमाना ॥ पाय
सफल जीवन निजजाना ॥ करि पूजन संजुत अनुरागा ॥ की
न विदाय भक्त बडभागा ९ सुमरि राम वानर समुदाई ॥ निज
निज गये हरष सरसाई ॥ तव तुलसी उर आनंद छाए ॥ चले
भवन जव होत विदाए १० साहनम्र चरणन सिरनाई ॥ वितजु
त कीन विपुल सिवकाई ॥ भक्त सृष्ट सूइ कारन कीना ॥ तव द
लीस उर हर्ष प्रवीना ११ निज अनुचित सव क्षमा कराई ॥ वि
नय वहुरि अस वदन अलाई ॥ मोहि उपदेस कवन प्रभुराहा ॥
दयायुक्त तुलसी तव काहा १२ तुव निज सदन रचत सनमाना
॥ सुभृत भवन राम भगवाना ॥ आवत अतथि संत सतकारा ॥
करत रहहुहित होहिं तुमारा १३ दोहा ॥ अस उपदेसतवदम
ताहिं ॥ हृदय सुमरि भगवान तुलसी वृंदाविपुनकहं ॥ की
न हरषि निजप्यान १ चौपाई ॥ तहांआय मानस अनुरागे ॥ ना
भादास भक्तवडभागे ॥ देखत तुलसिदास हरखाए ॥ कीनप्रणा
म भक्ति सरसाए१ तवनाभा निजहृदय विचारा संतविरक्त विगत
हंकारा ॥ पावन भक्ति प्रीति मनमाहीं ॥ कीन प्रणाम तुलसि

जनकाहीं २ असप्रकार सादिर हरषाई ॥ करत परस्पर बिनयव
डाई ॥ तुलसी देखि ललित थलकाहू ॥ करि निबास संजुत उ
तसाहू ३ हृदय सुमरण लाग रघुराए ॥ साधु सुनत द
रसन कहं आए ॥ बोले इहां भक्त सुखदाए ॥ मुरलीधर भगवा
न सुहाए ४ उनकर अति बाचित्र मन भावन॥ करहु संतवर द
रसन पावन ॥ उठे सुनत तुलसी हरषाए ॥ कहां मोर भगवन
सुखदाए ५ सादरलेत संत सबगवने ॥ आए जबहिं निकट हरि
भवने ॥ बोल्यो एकसंत तिनमाहीं ॥ मै प्रभाव तुलसी जनकाहीं
६ करि प्रीक्षा अवलेहुं निहारी ॥ अस प्रकार निजवदन उचा
री ॥ तुलसिदास तनदेखि अलाबा ॥ जो निज इष्ट देवमन भा
वा ७ परिहरि करहि उपासन आना ॥ सो जनलेत लाघवत
हाना ॥ जिमि प्रमुदा विभचारनि क्रमहीं ॥ निजवर तजत अ
न वररमहीं ८ दोहा ॥ चारुचतुर रघुवीर पद ॥ पदम भ्रमरतुल
सीय ॥ तास वचन सुनि मरमजुत ॥ हृदय सुमरि सियपीय १
मूरति देखि गुपाल कल ॥ कहा करत जुगजोरि ॥ भले विराजे
नाथ छव ॥ मनमथ मथन करोरि २ ललित अलौकिक रूपवर
॥ करमुरलीधरआज ॥ मोहत सुरनर भक्तजन ॥ मनघन स्यामल
राज ३ पै तोलो जनतुलसि तुव ॥ नाथन नावहि माथ ॥ जो
लो परिहरि मुरलिवर ॥ धरहुन धनुसरहाथ ४ चौपाई ॥ तुलसि
दास असवचन सुहाए ॥ वतसलभक्त सुनत सुखदाए ॥ राघव

ष्णभये सियरामा ॥ परिहरि वंसिवेत्र अभिरामा १ धनुषवाण क
रधारि सुहाए ॥ लोक विलोकि चरित विसमाए ॥ निजनिज हृ
दय सकल अनुरागे ॥ साधुसाधुमुख भाषन लागे २ कीरति वि
मल तुलसि जन गावहिं ॥ वारवार चरणन सिरनावहिं ॥ एक
संत तव बदन उचारा ॥ कृष्ण देव पूरण अवतारा३रामचंद्र अं
सा अवतारी ॥ सुनि अस तुलसि भक्त व्रत धारी॥ अति प्रसन्न
मानसअनुरागे ॥ गाइन नृत्य करन कललागे ४ वहुरि वदनअ
स वचन अलाए ॥ अहोभाग्य जगमोर सुहाए ॥ जो अस प्रभु
पूरण अवतारा ॥ धरनि धेनु सुत्रास निवारा ५ सोभत करन भ
क्त भवदाया ॥ धन्य भाग्य जनदरसनपाया ॥ असदृढ भक्ति तु
लसि व्रतधारी ॥ वैष्णव गणनिज हृदय विचारी ६ विविध प्रसं
सि विमल गुणगाते ॥ निजनिज चले भक्ति मदमाते ॥ असइह
तुलसि भक्त वडभागी ॥ केबल लोक उधारण लागी ७ वाल
मीकि जनुआन उदारा ॥ महितल लीन रुचिर अवतारा ॥ रा
मचरित पूरव मुखगाए ॥ वालमीकि कछु तृपति नपाए ८ त
हितें अब तुलसी वपुधारी ॥ करि प्रवंध भाखा सुखकारी ॥ गा
यगाय तृपती जगलीना ॥ सो निज सफल मनोरथ कीना ९ या
तेंतहि सदृश जगआना ॥ मनवचकरम भक्त भगवाना॥ ऐहि न
भयो नहोवन हारा ॥ धन्यधन्य तुलसी संसारा १० वंदहुं तासु
युक्त करदोई मोपैं करहि कृपानिज सोई ॥ सदारैंहि अनकूल

सुहाए ॥ संस्त्रति सुजस सुमति सुखदाए ११ दोहा ॥ अस प्रकार
इह चरित में तुलसि दास सनमान ॥ कीन्योअल्प जथामती ॥ क
थनश्रवण सुखदान १ जैसादिर नरभक्ति जुत ॥ करहि रटन रु
चिएहू ॥ उपजहि सियरघुवीर पद ॥ पदम नवल नित नेहू
इति भक्तविनोदग्रंथे तुलसी चरितं नाम सर्गः ७३

दोहा मानदान इक भक्तजग ॥ जास चरित रघुराय ॥ करिगा
यन मुखभक्तिजुत लीनपरम पदपाय ॥ इति सर्गः ७४

अथ चरितम् ॥ दोहा ॥ गोकलनाथ प्रसिद्ध जग सुवन भल्लभा चारि ॥ ताकर कथा पुनीत जग ॥ करहुं कथन मनहारि १ ॥ चौपाई परम भागवत निपुण उदारा ॥ गोकल नाथ विदत संसारा ॥ पवन पावनी पुरि अभिरामा ॥ द्वारानाथ जासजगनामा १ तहांदैवश्रीनाथसुहाए ॥ वतसल भक्त विदत सवगाए ॥तासदेवपूजनसिवकाई ॥ करहिनिरंत्र भक्ति सरसाई२ तेमूरतिभगवनमनहारी विनुअजाससवलेहिंनिहारी ॥ रह्योवीचवि वधान नताहू ॥ वाझलेत दरसन सवकाहू ॥ ३ तहां एकम लसोध करंता कांधानाभभक्त भगवंता आरति होतप्रातजवचारू ॥ देखतवाडवहिर व्रतधारू ४ मुहतप्रेमपावतमनमाही ॥ निदर हिविविधलोकतहिकाही ॥ सोनतजहिअस भक्ति सुहाई ॥ सुम रत हृदय भक्त सुखदाई ॥ ५ करहि सकल कारज निजगेहा असप्रकार दरसन नित तेहा वीतिगए कल दिवस बसेखे तव इक तास वैषणव देखे ॥ ६ कहिस नाथ गोकुल सनआई इहां देहु कछु ओट वनाई ॥ देखत नतर अधम चांडाला ॥ तास वचन अस सुनत रसाला ॥ ७ ॥ तुरत ओट कल दीन वनाई ॥ ते चांडाल प्रात जव आई ॥ लग्यो करन दरसन भगवाना ॥ भक्ति ओटकछुभयोनभाना ॥ ८ ॥ भयोनि मगणशोकनिधवारी ॥ देखतवारवारव्रतधारी॥ अंतदुखितनिजस दनसधास्यो ॥ धामकाम नवदीनविसास्यो ९ व्याकुलत्रियविजोग

जिमिकामी ॥ अरुकिरपणजिमिधनअनुगामी॥ पुत्रविरहांजिमिपि
तादुखारी ॥ तिमिचिंतासोकारतभारी १० दोहा ॥ हरिमूरतिवि
श्लेशकर ॥ परिहरिभोजनवारि ॥ भयोसदननिद्रानिरत ॥ निज
परप्रीति विसारि १ तव सपने करुणायतन॥ भक्त वतस भगवा
न ॥ दीन्यो गोकल नाथ कहं ॥ सपन श्रवण सुखदान २
मोरे दरसन अग्रतुव इह कस ओट वनाय ॥ अवहिं निहार
ए करहुं जन ॥ गोकल मुहिन सुहाय ३ चौपई ॥ कांधा मो
र भक्त व्रतधारी ॥ मुहि दरसन अति विरह दुखारी ॥ जवतेंकी
न ओट तुव एहू ॥ तवतें भयोभंग व्रत तेहू ॥ १ ॥ वहुरि सपन
असदनासि जाई ॥ कांधाकहं प्रभुभक्त सहाई॥ प्रात करहु जन
दरसन मोरा ॥ अव फुर होहि मनोरथ तोरा २ उदय अरु
ए पूरब इत भवना ॥ भक्ति ओट दरसन मम जवना ॥ पूजक
जन सव दीन गिराई ॥ कांधारह्यो प्रथम उतआई ३ गोकल
नाथ भक्त पुनि आए ॥ कांधा कहं अस देखि अलाए ॥ को तुम
इहांकवन हित आवा ॥ तास मरम सव दीन सुनावा ४ तव प्र
सन्न गोकल हरषाई॥ वोले तासु वचन सुखदाई॥अव निज वंस
तजहुतुवकरमा ॥ होहुनिरंत्रनिरतसुभधरमा ५ इहांवसहुसंजुतसन
माना ॥ मार्जनकरहुभवनभगवाना भक्ति पूरवककरिसिवकाई ॥
संस्तुतिलेहुजनमफलपाई ६ दोहा ॥ कांधासुनतप्रसन्नमन॥ करि

प्रणामबहुवारु ॥ लाग्योकरननिवासनिज ॥ तहां भक्ति रतचारु १ इतिकांधाचरितं नामसर्गः ॥ ७५ ॥

रोडाछंद ॥ असप्रकार भेआनभक्तमौलीजगनामा नारायण अरु मिसरदासराघवअभिरामा सोराघवनिजगुरुहिंकृष्णावतसंसृतिजानी भजतंरहे सभक्ति करम काया मनवानी १ इति भक्त अन्य चरितं नामसर्गः ॥ ७६ ॥

दोहा ॥ जोगानंदकर विदत सिष वामन नाम सुहाय ॥ लाखा जंगल देस इक भक्त निपुण जदुराय १ भट्ट व्यास हरि आदि जग परसराम असनाम ॥ भए विदत इह भागवत ॥ रुचिर सुजस गुणधाम२ इति भक्त विनोद ग्रंथे अन्य भक्त चरितं नाम सर्गः ॥ ७७ ॥

दोहा ॥ परसराम इक आन अस ॥ भएभक्त भगवान ॥ तिन कर कथा संक्षप्त कछु ॥ करहुं कथन सुखदान १ चौपाई हृद य विरक्त वाझ सुखभोगी ॥ संतत भजन निरत जनजोगी ॥ एकदिवस धूरत जनकाहू ॥ प्रीक्षा करन संत वर ताहू १ आवा वैष्णव भेष वनाई ॥ परसराम कहभाखिसआई ॥ संत बिरक्त होत संसारा ॥ तुवकसभयो निरत व्यवहारा २ अव जंजाल आल तजिरागा ॥ मोहिसन चलहु वेग वड भागा ॥ तासक थन सुनि भक्त प्रवीना ॥ संपति सदन सकल तजिदीना ३ त हिसन लागि चल्यो हरखाई ॥ सिखगण हृदय दोखि अकुला ई ॥ गवने संग सकल मनमारे ॥ गुरुवरवस तवदीन निवारे ४ कछुक दूरजव गए सधारी ॥ तव धूरत इक सैल निहारी ॥ वै ठिगयो आसन दृढलावा ॥ तोलौ काहु धनक वर आवा ५ परसराम कहं करत प्रणामा ॥ स्रजवित वसन देत अभिरामा ॥ वोल्यो जोनदेश प्रभुपाउं ॥ तो अवनाथ भवन निज जाऊं ६ तव सुनि परसराम असकाहा ॥ मैंआधीन संतवरराहा ॥ इहआइस जस देहि तुमारे ॥ तसतुव करहुं धनकाहित कारे ७ परसराम कर वचन सुहाए ॥ सुनि धूरत चरणन सिरनाए ॥ निज अनु चित सवक्षमा कराई ॥ गवन्यो हृदय भक्ति सरसाई ८ दोहा ॥ इत सुंदर निज सदन सुभ ॥ परसराम सुखपाय धूरतकहुं करि

सफल जग आय सुमरि जदुराय १ इतिभक्तविनोद ग्रंथे परस राम चरितं नामसर्गः ॥ ७८ ॥

अथ गदाधर चरितं ॥ दोहा ॥ अबअद्भुत सुंदर सुखद ॥ जद किंचित मतिगाय ॥ भक्ति महातम करहुं मै । प्रगट श्रवण सुख दाय १चोपाई अवर देस विदत संसारा ॥ नाम गदाधर भक्त उदारा ।' भट्टहुं विदत नाम तहिआना ॥ द्विज तैलंग जाति उपजाना १ भक्त प्रधान सदन थिर होई ॥ राधाकृष्ण भजन पर सोई ॥ सदा भागवत रुचिर पुराना ॥ रटन इकांत जास रुचि माना २ समय एकतहि विमल सुहावा ॥ निजमति पदपावन विरचावा ॥ ताकर अरथ रुचिर असलागा ॥ मैं अति रक्त स्याम वरराग ३ सोपद मिल्यो काहु जनकाहीं गयो लेत बृंदावन माहीं ॥ तहां जीव गोस्वामि सुहाए तिनपैं कीन प्रकट तहिगाए ४ सुनिस्वामी अस वदन अलावा ॥ इहपद कलित कवन विरचावा ॥ तास वृतांत कथन सबकीना ॥ रच्योगदाधर भक्त प्रवीना ५ सुनत श्रवण स्वामी असकाहा ॥ मथुरा एक रुचिर थलराहा ॥ रंजन थालिनाम सुभमाना ॥ तहां आय विनु भक्त सुजाना ६ भाकस रक्त स्याम वर रागा ॥ अस भाखतस्वामी मुखवागा ॥ देतपत्र सिख जुगल पठाए ॥ ते जुग नगर गदाधर आए ७ पूछन लगेवदन हरषाईं ॥ सोकित ऐहि गदा

धर भाई ॥ रहासोउ असवचन उचारा ॥ कोतहि सन जनका ज तुमारा ८ तिनहुं युक्तकर वचन अलावा ॥ गोस्वामी इत हमहुं पठावा ॥ पत्रिक दीन गदा धरकाहीं ॥ तेऊसुनत मूराछित छितमाहीं ९ पस्यो अचेत चेत जवआवा ॥ लीनपत्रकल सीसचढावा ॥ करत वहोरिभक्तप्रस्थाना ॥ बृंदावन आवा सनमाना १० दोहा ॥ करिप्रणाम स्वामी चरण ॥ निजवृतांत सवगाय ॥ लाग्यो करननिवासतहं ॥ हृदय भक्ति सरसाय १ कथापुराण वचित्रबर सुनतश्रवण सनमान ॥ वीति गयो कछुकाल तहि ॥ भजत कृष्णभगवान २ चौपई समय एकधौहर कलग्रामा ॥ नृपकल्यान सिंह असनामा ॥ क्षत्रीसूरवी रवुधनागर ॥ कृष्णभक्त संकुल गुणसागर १ कथाश्रवण करबे करहेतू सोआवत नितस्वामि नकेतू ॥ तहिप्रभावतें छितपत सोई ॥ भयोबिरक्त सकल भ्रमखोई २ तहिपतनी पतिव्रता सुहाई ॥ तासरमन रुचिरह्यो नराई॥ सोपीडित अतिमदन लिलामा ॥ करि विचार निज मानसधामा ३ प्रमुदा वोलि गरव वति काहू ॥ सादरदेत वसन वितताहू ॥ अस प्रकार निजवदन सिखाई ॥ भामन स्वामि सदन तुवजाई ४ तहां गदाधर कथाप्रसंगा ॥ रटत होहि निज हृदय उमंगा ॥ त्यगत जाल असकरहु बखाना ॥ रहा गरभ मोहितोर सुजाना ५ अव इहि अंत भक्त नियरावा ॥ जनमहुं कहांकवन थलभावा ॥ अस प्रकार निज वदन

सिखाईं ॥ दीन पठाय वेग त्रिय राईं ६ दुर्मति लोभ व्यवस गत लाजा ॥ आइवेग जित संतसमाजा ॥ तहां गदाधर भक्त अकामा ॥ वाचित रहैं कथा अभि रामा ७ जहि प्रकार सिक्षा जढलीना ॥ तिमि सव कुमति कथन सुख कीना ॥ श्रोतासुनत मोन सवराहा ॥ चकत सकहि कछु वचनन काहा ॥ ८ भक्तगदाधर रोषन कीना ॥ रहेंप्रसन्न वदनमुदलीना ॥ वोले वहुरि वचन सुखदाता ॥ करहुतनक धीरजतुवमाता ९ वाचितवेगकथा अध्याए ॥ मैतोरे अवदेहुं वताए ॥ तववैष्णव तहिमारन काहीं ॥ उद्यत भये कोपिमनमाहीं १० वहुरि त्रियवध पापविचारी ॥ कहत सकल निज हृदय दुखारी ॥ गुरुअपमान कलंक हमारे ॥ मिटहि कवन विद वदनउचारे ११ दोहा ॥ तववैष्णव इक कोपजुत ॥ राधावल्लभ नाम ॥ तहितृस्कारत विविध विधि ॥ कहिससुनहु अगधाम १ करहु कथन अवसत्यसठ ॥ कोकरउकत अलाईं ॥ हतहुं अभागिनि भाखि अस ॥ लीनसि दंडउठाईं २ चौपईं तेउरपत अस वदन उचारी ॥ मुहिकल्यानसिंह नृपनारी ॥ वितदैदीन सिखावनएहू ॥ तोमै आइ संततुवगेहू १ हरषेसाधु सुनतसमुदाईं॥ तवकल्यानासिंह नरराईं॥ निज त्रियाजिय वधलीन विचारा ॥ सुनत गदाधर कीननिवारा २ इहनवधन भामनजग जोगू ॥ अपजस करहिंभूप सवलोगू ॥ मूरख करदुरवाद वखाना ॥ वुधजन करहिंन संसृति काना ३ हानलाभ अपजस जस

सारा ॥ संतजनन जगतुल्य विचारा ॥ जोअपमान भयो नहिमो
हिं तोकस क्षोभउपज जियतोहीं ४ करिप्रबोध असतासु निवारा
॥ दारुण क्रोधदीन सबटारा ॥ असप्रकार कछु दिवस विहायो
॥ तबइक संतवैषणव आयो ५ सिषगण परिवारत हरषाई ॥ वै
ठयो संत चरण सिरनाई ॥ कथा अलाप होनजब लागा॥ ला
ग्यो स्रबण करन अनुरागा ६ तव सप्रेम स्रोतन स
मुदाए ॥ आसू पात हरष दृगछाए ॥ तासु दृगन कछु छयो न
वारी ॥ भयो लजत तव मानस भारी ७ जन्यो आज मोहि क
हत अजोगू ॥ निग्दय भनाहिं वदन सव लोगू ८ तव मारच चू
रण तहि लीना ॥ दूसर दिवस गवन जव कीना ॥ तवहुं न
चल्यो तास दृगवारी ॥ लीन गोप्प चूरण तव डारी ९ जान्यो
मरम संत इक एहा ॥ कीन गवन जव वैष्णव तेहा ॥ पाछे
काहिस सवन सनतासा ॥ लागे करन संत सव हासा १० दे
खि गदाधर वदन उचारे ॥ इह न संतजन उचित तुमारे ॥ एहु
भक्त संसय कछु नाहीं ॥ जाकर प्रेम रुची मनमाहीं ११ ॥ इहि
लालस सदृश सुभतोरे ॥ प्रेम प्रवाह चलाहिं दृगमोरे ॥ १२
दोहा ॥ अस विचारि जिय संत जन ॥ कछुन कर हु परि हास
भए मौन वैष्णव सकल ॥ सुनत प्रबोधन तास १ चौपई ॥ अ
वसर एक गदाधर आला ॥ प्रवस्यो चौर अधम निसि काला ॥
ते वित वसन भार जव वांधे ॥ दुर्मति लग्यो उठावन कांधें १

सो न उठाहिं सठ कीन अजासा ॥ देखे तवहि गदाधर तासा ॥
कहिस करहु सज्जन उपकारा ॥ मोरे घरहु सीस इह भारा २
ऐहुं कवन पुनि पूछन लागा ॥ वोले भट्ट भक्त अनुरागा ॥ तु
महि कवन पूछन अस हेतू ॥ निजकारज करिलैहु सचेतू ३
अव जानि आय आन विनु मोहीं ॥ पकरहिं चौर जानि अस
तोहीं ॥ तव निज हृदय चौर अस लेख्यो ॥ इह तो विदत ग
दाधर देख्यो ॥ ४ अस जिय जानि तजत धन सोई ॥ लाग्यो
चरन भक्ति रत होई ॥ तवते चौरज करम प्रवीना ॥ अधम
जानि मानस तजि दीना ॥ ५ संतत कृष्ण भक्ति रतहोई ॥ क
रि प्रणाम गवन्यो निज सोई ॥ देखहु संतन सील सभाऊ ॥
निज अपराध जानि जियताऊ ६ सव विध क्षमा कीन तजि
दीना ॥ द्रव्यलोभ कछु हृदय नकीना ॥ तव इक समय धन
क जनकाहू । आवा सदन भक्त वर ताहू ७ सिषसन तास व
चन असकाहा ॥ तुव गुरु कवन काज रत राहा ॥ कहि स
जाय गुरुसन सिखताहू ॥ आवा महाराज धनि काहू ८ पूछ
त दनि घाल अस मोरे ॥ गुरुवर कवन काजरततोरे ॥ तहि अ
वसर हरि भवन सुहावन ॥ देतरहे उपलेपन पावन ९ वोले
जड तुव जानि न लेवा ॥ जिन कर दास करहुं तिन सेवा ॥
तोलो आय गए धनिताहीं ॥ देतरहे लेपन गुरु जाहीं १० दोहा
धनी देखि अस प्रीति दृढ ॥ दैवित कीन प्रणाम ॥ वोल्यावहूरि

सभक्ति जुत ॥ वदन वचन अभिराम १ चौपई ॥ तुमनदेहु उपलेपन स्वामी ॥ मैदेहों तुब जन अनुगामी । भक्त सृष्ट तव वदन उचारे ॥ जन उप लेपन देन तुमारे १ इह मम दास भावना चारू ॥ होहिं न सिद्ध धनक संसारू ॥ धनि अस सुनत चरन सिरनावा वारवार मुख अस्तुति गावा २ करिसिबकाइ हरष मनलीना ॥ होत विदाय गवन पुनि कीना ॥ भक्त गदाधर आनंद छाए ॥ दिन दिन भक्ति प्रीति सरसाए ३ दोहा ॥ तजत मान अपमान सब ॥ विगत कपट जगतेहू ॥ लागे निवसन भवन निज ॥ कृष्ण चरन रतनेहू इति भक्त विनोद ग्रंथे गदाधर चरितं नाम सर्गः ॥ ७१ ॥

अथ चतुर भुज भक्त चरितं ॥ दोहा भक्त चतुर भुज विद तजग पुनि करमा असनाम चंडदास जुत चंडजन कृष्णचरण अभिराम १ भए नंदवर भक्तजग ॥ जहिपूजनरुचि मान ॥ शालिग्राम सिलासुची ॥ कृपासिंधु भगवान २ चौपाई ॥ अतन फरत इकसमय सुहावा ॥ नंदभक्त वृंदावन आवा ॥ आसन कलतृपादुकासंगा ॥ नित राखत निजहृदय उमंगा १ बैठहि जहां भक्त व्रतधारू ॥ तहिपरकराहिं स्थापन चारू ॥ एकस्थलतें भक्त सधारी ॥ ते तृपादुका चले बिसारी २ जब बैठे दूसरथलजाई ॥ सोतृपादुका भक्तनपाई ॥ करिकरि सोचहृदय अवसेखी ॥ रही सो अमुक सथलमनलेखी ३ अस विचारि पाछिल पथजाना ॥ भक्तसृष्टजब संमति ठाना ॥ तास विपुल स्रमहृदय विचारे ॥ कृपानकेतभक्त हितकारे ४ दीन सुनंददास कहं ल्याई ॥दीनद्याल असवचन अलाई ॥ मैयद्यपि स्रमकीन अपारा तद्यपि भयो नभेट तुमारा ५ दोहा ॥ असजबदीन तृपादुका ॥ भक्तबतस भगवान ॥ लीननंद आनंदजुत हृदयहरष निजमान १ तवतहिं पैंअति भक्ति निज ॥ प्रभुउपबेस कराइ ॥ देखहुं दीनानाथ कसभक्तनहोत सहाइ २ इति भक्त विनोद ग्रंथे चतुर्भुज भक्ति माहात्म्यं नाम सर्गः ८०

अथ कुल्हरुल्ह चरितं दोहा॥ कुल्ह रुल्ह कायस्थ कुल पश्चम देश सुहाय ॥ जुगलभ्रात तिनकर चरित करहुं प्रकट अवगाय १ चौपाई ॥ कुल्ह जेष्टरत संतनसेवा। कृष्णदैव परभक्ति अभेवा ॥रुल्ह कनिष्ट मांसमदपाना ॥ करहिं रमनवेस्या रुचिमाना १ अवसर एककुल्ह हरषावा ॥ तजितसदन द्वारावति आवा॥रुल्हहुंतास प्रीति वसताहीं ॥ आवा सोपि द्वारिका माहीं २ तवरणछोड भवन अनुरागा ॥ कुल्हप्रसन्न वदनवडभागा ॥ निजकृतपदजुत भक्ति सुहायन ॥ लाग्यो मधुर मधुर सुरगायन ३ रुल्हहुं तासुदेखि हरषाए ॥ लाग्यो सोपि वदन कछुगाए ॥ पैनिज कृततांकर न रहाना ॥ इहिते सुकुचित हृदय लजाना ४ तव ताहिपरभगवान सुहाए ॥ भए प्रसन्नभक्त सुखदाए ॥ प्रेरत पवनकंठ कलतासा ॥ परीमाल प्रभु भवनप्रकासा ५ तेप्रणाम करि वदनउचारा ॥ जें ष्टबंधु प्रभु भक्ततुमारा ॥ मै अभक्त करुणानिधि राहा ॥ मुहित्र जदीन हेतु प्रभु काहा६कुल्हदेखि निज हृदय लजाना ॥ भयोमोर अपमान महाना ॥ दीनी माल्ल दुरतरत काहीं ॥ मै अव मरहुं वूडजलमाहीं ७ असकहि हृदय घोर रिसछावा ॥ व्याकुल तीरवार निध आवा ॥ मगण हेतु प्रवस्यो जलजाई ॥ जानुप्रजंत वारतवपाई ८ दोहा ॥ जिमिजिमि आगलजात तिमि ॥ तजत जानु जलनाहिं ॥ जान्यो मरननहोततव ॥ भयोदुखित मनमाहिं १ चौपाई ॥ तव भगवान वैषणव रूपा ॥ धारिआय मन हर

ए अनूपा ॥ करपकरत तहिलीन निकारयो ॥ कारिकारि वदन प्र
वोध निवारयो १ पुनिलागे तहिपाक करावन ॥ सन्मुख राखि
पत्रमन भावन ॥ देखत काहुकुल्ह कहं भाखा ॥ इह जनपत्र क
वन हित राखा २ वोल्यो वदन रुल्ह हित होई ॥ अस कहि
उठथो रिसाकि जिय सोई ॥ इहां करन पाक अव मोरे ॥
तव भगवान भक्त चितचोरे ३ वैष्णव भेख वसेख वनाए॥
तासु वदन अस वचन अलाए ॥ सुनहो कुल्ह रुल्ह सनकाहा
द्वेषन करन उचित तुहि राहा ॥ ४ ॥ इह पूरव सुत भूप
सुजाना ॥ मोर भजन हित विपुन महाना ॥ गवन्यो भक्त सदन
निज त्यागी ॥ मोर सुमरण करत वडभागी ॥ ५ ॥
कानन तहां प्राण तजि दीना ॥ रह्यो मोर इह भक्त प्रवीना ॥
इहि सन करहु द्वेष जनि मोरे ॥ कुल्हा सुनत जुगल कर जोरे ६
कीन प्रणाम चरन भगवाना ॥ तजो द्वेष मानस हरषाना ॥ श्री
मुख दीननाथ तव काहा ॥ अवतोहि कवन कुल्ह रुचि राहा ७
जाहुं न केतनाथ अभिलाखा ॥ मूदहु जुगल नयनप्रभु भाखा॥
जवतहि कीन नमीलन लोचन ॥ दींन पुचाय सदन दुख मोच
न ॥ ८ तव कुल्हा द्वारवति जाना ॥ मानस मनहुं स्वपन वत
माना ॥ पुनि निज रुल्ह बंधु वरकाहीं ॥ लग्यो सुमरण करन
मनमाहीं ९ आवा सोउ सदिन कछुपाए ॥ देखत दृगन कु
ल्ह हरषाए ॥ अस प्रकार कछु दिवस विहाने ॥ कुल्हा हृदय

भक्ति सरसाने १० दोहा ॥ तजत ग्रहस्त निज सदन सुभि ॥ बंधु वरग परिवार ॥ कानन गवन्यो भजन हित ॥ हृदय भक्ति निरधार ॥ १ इति भक्त विनोद ग्रंथे कुल्ह रूल्ह चरितं नाम सर्गः ८१

दोहा ॥ माधोदास प्रसिद्ध पुनि जीवानंद प्रवीन जहि निज भक्त प्रभावतें सुर दुरलभ गतिलीन १ इति सर्गः ८२

अथ नारायण भक्त चरितं ॥ दोहा ॥ नारायण इकनाम जहि पूरव कर्म प्रभाव ॥ नारायण पद पदम उर ॥ भक्ति रुचिर दृढ छाव ॥ १ चौपाई ॥ तांकर जेष्ट भ्रात जोइ नारी ॥ ते निज सदन करहिं कृतसारी ॥ नारायण कछु करहि न काजा ॥ सदा रहिं निजधाम विराजा १ ॥ भोजी तास निरादर कीना ॥ अन्न व्रजुखत दिवस इक दीन्हा ॥ तेनारायण नाहिन पावा॥ क्रोध युक्त अस वचन अलावा २ तपतो दन कत मोहि न दीना ॥ भामन कहि सरोख मनलीना ॥ अरे मलेछ सदन मन मारे ॥ वैठि रहत जिमि निडर नकारे ३ अधम काज सबगेह विसारी ॥ वीथन बृथा फिरहुं विभचारी ॥ परयो अन्न तुव सनमुख जेहू लेहु न लेहु अधम मति एहू ४ सदन का

ज तुव हेतु विहाई ॥ मै कस चरहुं नवल अवजाई ॥ भोजी
वचन सुनत रिस पागा ॥ मानहुंहृदय वज्र समलागा ॥ ५ ॥
जिय जाजुल्ल मान रिसछावा ॥ तजि न केत बृंदावन आवा॥
राधाकृष्ण मंत्र अनुरागा ॥ वैठि कुंज कल सुमरण लागा ६
अस प्रकार वहु दिवस विहाए ॥ तवराधा अवसर इकपाए
नूतन तप्ततोदन विरचाई ॥ लाई रस संजुत समुदाई ७ भे
सांतर उर हरष प्रलीना ॥ सादिर नारायण कहं दीना ॥ तेउर
सुमरि भक्त सुखदाए ॥ लीन्यो भक्ति पूरवकपाए ॥ ८ ॥दोहा
अस नारायण भक्तवर ॥ भाविरक्त संसार ॥ जहि सुमरत जदु
बंसवर ॥ लीन्यो जन्म सुधार १ इति भक्त विनोद ग्रंथे नारा
यण भक्तिमहात्म्यं नाम सर्गः ८३

अथ पृथवी राज चरितं दोहा ॥ वीकानेर प्रसिद्धथल ॥ मारवाड
वर देस ॥ जदुपति भक्ति प्रवीन तहं ॥ पृथवी राजनरेस १ चौ
पाई ॥ तास सदन हरि मूरति सोहा अतिसवचित्र भक्त मन
मोहा ॥ पूजन तास भक्ति जुत राया ॥ निस दिन करहि वचन
मन काया १ जब कहुं वहिर सदन तजिजाई ॥ मानसि कर
हितास सिवकाई ॥ अवसरएक तजत निजआला ॥ कीन दि
सांत्रगवन महिपाला ॥ २ तहांकरन पूजन जवलागा ॥ संजुत
भक्ति भूपवडभागा ॥ तवनहि होत हृदय गतसोई ॥ परमदेव
करमूरति जोई ३ भवनादिकसंघासिन चारू ॥परस्योनध्यानभूपव्र
तधारू॥तवमानस चिंतनकरिराए॥सुतपेंपाछिलदूतपठाए ४ तास
विलोकि जनक निजपाती ॥ निजकरालिख्योउत्र इहिभांती ॥ मैं
नूतन हरिभवन सुहावन ॥ दीननाथ लाग्यो बिरचावन ५ प्रभु मू
रति राख्योथल आना ॥ जवइह वनहि भवनभगवाना ॥ इहां
लाय तवकरहु सथापन ॥ नाथतजहु चिंता जियआपन ६ दूतन
दीनपत्र जवआई ॥ भयो प्रसन्न वाचिनरराई ॥ करि कारज मा
नस हरषावा ॥ संजुत भृतन भूपगृह आवा ७ समयएक दिल्ली
पन पासा ॥ कीन प्रतज्ञा भूपति तासा ॥ मैं मथुरा तजहुं निज
प्राणा ॥ अस जवते अवसर नायरानि ८ तब दलीस छितपत स
न काहा ॥ कावलजाहु वेग उतसाहा ॥रिपुकहं जीति रुचिरक
रल्याई ॥ लेहु भूप जग सुजस वडाई ९ दोहा ॥ राउसुनत

उद विगन चित ॥ सुमरत श्री जदुनंद ॥ कहत भयो प्रणभंग मोहि ॥ अवसर प्राण निकंद १ चौपाई॥ अस विचारि नरनाथ सुजाना सुमरि कृष्ण निज कीन पयाना ॥ तहां जाय संजुत वलराई रिपुकहं विजय करत करल्याई ॥१ पठवा इंद्र प्रस्थ पति काहीं ॥ देखो आपु स्वपन निसि माहीं ॥ भगवन कह्यो वेग नर राई ॥ उदे अरुन मथुरा तुव आई २ तहिथल देहु प्राण निजत्यागे ॥ देखि स्वपन अस छित पत जागे ॥ मथुरा आय प्राण परि हरयो ॥ सिद्ध प्रलोक भूप निज करयो ३ छित पत मरण साइ सुनिलीना ॥ पश्चाताप विपुल जिय कीना ॥ वारवार कीनी पुनि साहू ॥ असतुति धरननाथ उतसाहू ४ तास पुत्रइक भक्त महाना ॥ तहि प्रण हृदय रुचिर असठाना ॥ जो द्वारावति दरसन जाहीं ॥ सादिर देत द्रव्य तिनकाहीं ५ सव कर कराहिं रुचिर अस सेवा ॥ भूप पुत्र जुत भाक्ति अभेवा अव सर एक मलेछ महाना ॥ तुरक तुरक सव लोग वखाना ६ द्वारावति लूटन हित आवा ॥ अधम अनल पुरदीन लगावा ॥ भागे लोग त्रास वससारे ॥ त्राहि दैव अस वदन उचारे ७ तव भगवान कीन निज दाया ॥ अकसमात अनि प्रवल पठाया ॥ तास तुरक सव दीन वहारी ॥ करि कौतुक संवशांति दिवारी ८ भई लुपत सैना भगवाना ॥ मरम अलौकक काहुन जाना ॥ निज निज हृदय सकल बिसमाए ॥ इह अद

भुत कछु जानिनजाए ९ दोहा ॥ तव वोले अस जठर जन ॥ कृपा सिंधु भगवान ॥ हम पें करुणा कीन निज ॥ राखिलीन जन जान १ अहो न संसृति देव सम ॥ करन छोह जनकाहू विपत कठिन अस काल कल हृदय दीन उतसाहू २ ॥

इति भक्त विनोद ग्रंथे पृथिवी राज चरितं नाम सर्गः ८४॥

अथ रतनावलि चरितम् ॥ दोहा ॥ अव अदभुत मन हरण कल ॥ करहुं कथन कछु आन ॥ भक्ति महातम दमन भ्रम कृष्ण चरण रति दान ॥ १ ॥ चौपई ॥ वंधुक निष्ट मानसिंह राया ॥ माधोसिंह नाम जग गाया ॥ तास पतानि रत्नावलि नामा ॥ अग्रगन्य पतिव्रता ललामा १ ॥ प्रेमसिंह ताकर सुत चारू ॥ समर प्रचंड वीर व्रतधारू ॥ भक्त जितेंद्र धर्मरत तेहू ॥ सेवन अतिथि संत रुचि जेहू २ जननि तास रत्ना वलि जोई ॥ अत्र सर एक भवन निजसोई ॥ रजनि ललित सिज्जादि सजाए ॥ दासि चारु चापत जुगपाए ३ हेप्रभु श्रीमन नंद किसोरा ॥ राधा कृष्ण भक्त चित चोरा ॥ हेयदुपति केशव भगवाना ॥ हेनंद नंदन कृपानिधाना ४ असप्रकार चापत

पगरानी ॥ मंद मंद असवदन अलानी ॥ रानी सुनततास अस वानीं ॥ अति प्रमोद निजमानस मानी ५ भामानि मंद मंद धु निकाहा ॥ इह तुव वदन जवन असराहा ॥ कछुआनंद अहे तक देख्यो ॥ जनु विक्षपत कथन तुवलेख्यो ६ अभय सयनि जवदन उचारी मुहिसन करहु प्रकट अवप्यारी ॥ तेअसवचन सु नत अनुरागी ॥ वोली वदन विनय रसपागी ७ स्वामनि तुम हुं कवन अस सूझा । जो मोहि वारवार सुख बूझा । कातुमरे मानसहित लोगू ॥ रैहुं शकत आपन सुख भोगू ८ तव महि षी पुनि पुनि हरषाई पूछन लगी प्रीति सरसाई ॥ मुहिसन हे तु कथन तुवप्यारी ॥ करहु बेग निज सकुच निवारी ९ दासी देखि रुचिर रुचिरानी ॥ वोली वदन मधुर मृदु वानी ॥ सा धु वदन उपदेस सुहावन ॥ मै पायो महिषी जगपावन १० ॥ राधा कृष्ण मंत्र सुख दाइं ॥ हारन हृदय दुरत दुरताई ॥ र टहु निरंत्र कर्म मनवानी ॥ नाहिन आन हेत कछुरानी ११ हरषी तास वचन सुनिरागी ॥ अवतें तुमहुं सुनहु वडभा गी । अस न करहु मोरी सिवकाई ॥ तुवतो निरत भक्ति जदु राई १२ अस भाषत महिषी मनभावा ॥ लीन ललित उ पदेस सुहावा ॥ राधा कृष्ण मंत्र उरधारी ॥ भई सभक्ति नि रत नृपनारी १३ दोहा ॥ सेवन अतथी संतजन ॥ कथा की रतन गान॥ सादिर धर्म सुकर्मकुल॥करहि रुचिर रुचिमान १

॥ चौपई ॥ वहुरि हृदय अभि लाखत होई ॥ श्री मन्मद
न मुहन प्रभुजोई ॥ सो तिन कर दरसन मनहारू ॥ कब देख
हुं भरिनयनन चारू १ अस कहि वदन शैल मणि भावा ॥
तास कृष्ण मूरति बिरचावा ॥ अति विचित्र कछु वरनिनजाई
नख सिख ललित मनोहरताई २ तास दिवस निसि पूजन
सेवा ॥ लगी करन जुत भक्ति अभेवा ॥ सदृश कृष्ण संत जि
य जानी ॥ पूजन करत करम मनवानी ३ समय एक कोऊ सं
तमहाना ॥ आवा सदन तास करिप्याना ॥ सो हरि भवन भ
क्ति अनुरागा ॥ गायन नृत्यकरनकललागा ४ अतिस विरक्त
भक्त भगवाना ॥ जहि मृत कंचन एकसमाना ॥ तासु देखि म
हिखी हरषाई ॥ आई भक्ति प्रीति सरसाई ५ यद्यापि कीननि
वारण दासी ॥ तद्यापि मिटीन प्रेमपयासी ॥ होत निमगण भक्ति
निधवारी ॥ विरचि पाक पावन व्रतधारी ६ संतजनन कहं दा
न जिवाए ॥ पुनि तांबोल ललित अचवाए ॥ करि प्रणाम पुनि
भवन सिधारी ॥देखि सचिव नहिसक्यो सहारी७नृपकहं लिख्यो
पत्र अभिमानी॥धरन नाथ रत्नाबलि रानी॥ वंस मजाद सकल
निज खोई साधु समाज लाजगतहोई ८ करत नृत्य गायन अन
संकी वरजितमिटहिंन निडर कलंकी॥ भूप देखि दारुन रिसकी
नाप्रेमासिंह सुत तास प्रवीना ९ तोलो आय गए नृपपासा ॥तेप
त्रिक दीन्यो करतासा ॥ वहुरि रोख मुख वचन उचारे अधम॥

नि अपजस दीनहमारे १० वाचत प्रेमसिंह करि गवना ॥ आ
वा वेग हराषि निजभवना ॥ जननी कहं पत्रिक कललेखी ॥वी
चकथनकरि हरष वसेखी ११ दोहा ॥ मातु भक्ति तुव देखि
अस ॥ जोउपज्यो सुखमोहि ॥ हरष व्यवशभा सिथलकर ॥ ले
खिसकहुं किमितोहि १ चौपई धन्यधन्य जननी वडभागी ॥
जहि असदेव चरन लवलागी ॥ कृष्ण भक्ति संकुल सुखकारी॥
सोतुव हृदय जननि निजधारी १ ताते तुवसमान जगमाहीं ॥
सुकृति रूप आन जननाहीं ॥ सुनहु जननि कवहुं किनरराई ॥
तोपैं कोप दृष्टि निजपाई २ तोन तजहु आपन व्रतमाता ॥
लोक प्रलोक रुचिर सुखदाता ॥ अस प्रकार जव पत्र पठावा॥
मातु वाचि नयनन उरलावा ३ भाषत आज धन्य इहमाईं ॥
जहि अस पुत्र भक्त जदुराई ॥ असकहि पठयो पत्र सुतकाहीं
तात धन्य तुव संसृतिमाहीं ४ अस उपदेस जास मुहि दीना ॥
गुरु समजनहुं कृतारथ कीना ॥ नहिन तजहु सुतनिज व्रत धारा
करहिं जोपि पितु कोप तुमारा ५ तुमाहिं होव कल्यान सुहाई ॥
असनित रैंहि सुमति उरछाई ॥ राधाकृष्ण प्रसाद तुमारी ॥
होहिं तात जगकीरति भारी ६ प्रेमासिंह हरिभक्त सुहावा ॥
वाचत जननि पत्र हरषावा ॥ अति प्रमोद मंगल कलसाहू ॥
लाग्यो करन भवन उतसाहू ७ फैलिगई पुरकर चहुं ओरा ॥
धुनी महान निसानन घोरा ॥ राऊ सुनत अस शवद अपारा ॥

हृदय चकित असवचन उचारा ८ इहि अकांड मंगल कहि गेहा ॥ देखहु जाय वेग भृतएहा ॥ तव भृत प्रेमसिंहपैं आए ॥ पूछत कवन हेतु सुतराए ९ महारानि मोहि पत्र पठावा ॥ सो उतसाह कीन मनभावा ॥ भृतन आन वरन्यो कछुआई ॥ महारानि जनम्यो सुतराई १० प्रेमसिंह उतसव तबकीना ॥ मंगल मोद प्रमोद नबीना ॥ नृपहिं सुनत दारुण रिसछैना ॥ पठवा तास वधन हिनसैना ११ प्रेमसिंह देखत धरिधीरा ॥ उध्यत भयोकरण रणवीरा ॥ तव अस सचिव कह्यो समुझाई॥ पूरव कटयोनाक नरराई १२अव श्रोनत सन मार्जन देहौ ॥ वृथा कलंक लोक जनि लेहौ ॥ वोल्यो तब नरेस असवानी ॥ इह कस मराहिं सचिव अवरानी १३ दोहा ॥ तव वोल्यो मुख सचिव अस ॥ इहन काठिन कछुराय ॥ शारदूल इहि भवन अव ॥ प्रेरत देहु पठाय १ चौपई सो मृगराज करहिं वध एहू ॥ विनु अजास सब मिटाहिं संदेहू ॥ सुनत भूप निज वदन वखाना ॥ करहु जतन इह वेग सुजाना १ तव भृत वोलि सचिव स मुदाई ॥ महिषी भवन प्रवल मृगराई ॥ दीन्यो प्रेरि वधन हित तासा ॥ लगे विलोकन आपुतमासा २ रहीदेव पूजन रत रागी ॥ पावन भक्ति प्रेमरस पागी ॥ तवमृगराज भयंकरभारा ॥ मंदमंद तहि भवन सिधारा ३ आवत देखि दृगन निजरानी ॥ वोली वदन अलोकिक वानी ॥ अहोधन्य मुहिभाग्य सुहाए ॥

जहिँअस भवन आज प्रभु आए ४ पूज्यु पकरन लेत उठिधाइं सनमुख राखि प्रबल मृगराई॥ इह निश्चय मानस दृढधारा जास हरन कश्यपु जगमारा ॥ ५ जन प्रल्हाद कीन रखवारी तेऊ देव इह भक्तउवारी ॥ आए मोहि कृतारथ करना ॥ अस काहि प्रक्षालम करि चरणा ॥ ६ केसर चंदन तिलक सुहावा ॥ कंठ प्रसून माल कलपावा ॥ धूप दीप जुत आरति कीने ॥ मोदिक मंजु अर्चन हित दीने ॥ ७ भोजन भक्ति भाव सरसाए ॥ करि प्रणाम पद दीत जिवाए ॥ अंगीकार कीन सनमाना ॥ साधुसरल जनु दीन समाना ॥ ८ अनुचर सचिव भूप जुत देखी भए चकित सब हृदय वसेखी ॥ भूपत तिलक माल मृगराए आय बहिर जब होत विदाए ॥ ९ तब गरजे सावन घन निंदा अधम सचिव संजुत भृत वृंदा ॥ कीये बिदलन दसन नखमारे ॥ त्राहि त्राहि सब लोक पुकारे ॥ १० ॥ दोहा ॥ डरपत भाग्यो भूपतव ॥ महिखी सरण विचार ॥ आवा नंम्रत धरनतल ॥ धरत सीस वहुवार १ ॥ चौपाई तब दासी असवानि वखानी कराहिं प्रणाम भूप तुहि रानी महिखी सुनत तासु असकहयौ दासी तुमहुं कवन भ्रमभाययौ १ मै किंकरि चरनन अनुगामी ॥ मोरेभूप कृष्णवत स्वामी ॥ श्रीराधा जादव वरचरना ॥ नावत नंम्र सीस पति धरना २ भूप सुनत महिखी असवानी मनवच कर्म भक्ति दृढजानी ॥ विबिध प्रसंसि वदन नरराए आयभवन

निज होत त्रिहाए ३ एक दिवस हरषत जुगभाईं ॥ माधो सिं
हमान हरिराईं ॥ कालिंद्री सरता जलगूढे ॥ चले जात जुग
नाऊ अरूढे ॥४ अकसमात आव्रत आतिनीरा ॥ वूडन लगी तर
ति गतधीरा ॥ तब कैवरत उचारण लागे ॥ अव जाहिजहि तु
बभक्त सुभागे ५ हृदय सुमरण करहुं तिनकाहीं ॥ नतरनाऊ बू
डत अवचाहीं ॥ मानसिंह अस सुनत प्रवीना ॥ रत्नावलि सुम
रण उरकीना ६ ॥ अरध मगण तव नाऊ सुहाई ॥ लगी तुरत
सरता तटजाई ॥ मानसिंह आवा निज गेहू लग्यो करण अस्तु
ति त्रियतेहू ॥ ७ ॥ दोहा ॥ जथा उचित धन ग्राम तहि ॥ हेतु
संत सिवकाई दीन्यो मांदिर भक्ति जुत ॥ मान सिंह नरराईं १
अस रत्नावलि आजलो ॥ विदत सकल संसार कीन्यो सिद्ध
प्रलोक जहि ॥ कृष्णचरण उरधार २ इति भक्त विनोद
ग्रंथे रतनावलि भक्ति माहात्म्यं नाम सर्गः ८५

अथ मथुरा दास चरित्रं ॥ दोहा ॥ वरधमान कर रुचिर सिष राम दास गुन गेहू ॥ मथुरा दास प्रसिद्धहरि ॥ भक्त निपुण सुत तेहू १ ॥ चौपाई ॥ अवसर एक तास पुरआवा काहुसंत कल भेख वनावा ॥ इंद्रजाल विद्या वर माहीं ॥ करहि मुहत सवलोगन काहीं१ शालिग्राम शिला सुखदाई ॥ पूजत भक्ति प्रीति सरसाई वहुरि सिंघासन लेत विठावा तासुकरावत नृत्य सुहावा २ इह अदभुत सवलोग निहारी ॥ विसमत जानि सिद्ध तहि भारी ॥ करि असतुति मुख विविध प्रकारन धन्य धन्य सव लगे उचारन ३ मथुरा दास भक्त सिख काहू ॥ सुनत श्रवण अस कीरति ताहू आय तहां निज नयनन देखी ॥ भयो चकत निज हृदय वसेखी ४ गुरुसन कहिस जाय अस वानी ॥ महाराज इक संत अमानी ॥ शालिग्राम शिला कर चारू ॥ नृत्यकरावत बिविधप्रकारू ॥ ५ देखहुदीनद्याल चलिसोभा ॥ अद्भुत ललित चरित मनलोभा तब गुरुबर अस वचन उचारा ॥ साधु चरित सुत अगम अपारा ६ महिमा संत अनंत सुहाई ॥ कठिन तात कछु जानि न जाई ॥ यद्यपि विविध कह्यो सिख काहीं ॥ तद्यपि तज्यो तास हठनाहीं ७ अंत लेत निज संग सिधारा ॥ जव नयनन गुरु तासु निहारा ॥ भा प्रभाव धरषत सवताहू ॥ रह्यो नृत्य सामरथ न काहू ८ जन्यो इहि कर शकत न थोरी

॥ करहिस्थंवन विद्या मोरी ॥ पै कछु करहुं जतन अवए
हीं ॥ अस विचारि धूरत सठतेहा ९ मनहुं करत निज मृत्युब
छोना ॥ कीन्यो भक्त सृष्ट पें टोना ॥ पठयो सि अधम मंत्र ज
व सोईं॥उलटि पस्यो दुरमति पें सोईं१०मुरछित गिरयो धरण
हतभागी ॥ पस्यो अचेत वपुष सुधि त्यागी ॥ मथुरा दास सु
नत अस आए ॥ तासु लीन निज करन उठाए ११ वदन प
रोषत गिरा उचारी ॥ कीन प्रवोध तासु हितकारी ॥ अवतें क
रहुं न अस चतुराईं ॥ लोक प्रलोक तात दुखदाईं १२ ॥
दोहा ॥ सुनि अस वदन प्रवोधतहीं हृदय रुचिर हित मान ॥ क
रि प्रणाम गवन्यो भवन सुमरि कृष्ण भगवान १ इति भक्त वि
नोद ग्रंथे मथुरादास चरित्रं नाम सर्गः ८६

अथ नारायण भक्त चरितम् ॥ दोहा ॥ भए आन इक भक्त ज
ग ॥ नारायण अस नाम ॥ जाकर संतत हृदय दृढ ॥ कृष्ण भ
क्ति अभिराम १ चौपई ॥ नारायण सनमुख अनुरागा ॥
गायन नृत्य निरत वड भागा ॥ आश्रम वराजित भक्त सुजाना ॥
भ्रमन देसांत्र जास रुचि माना १ सिषगण जुत परिवारत हो
ई ॥ साधु समाज देखि इक सोई ॥ तहां नृत्य गायन करि रा
गा ॥ आगल चल्यो भक्त वडभागा २ अस कासीपथ जात
सुहावा ॥ देष्यो एक ग्राम मन भावा ॥ तहां मलेछ भूप सुनिपा
ए ॥ नारायण हरिभक्त सुहाए ३ गायन नृत्य विसारद लेखो ॥
पठे बोलि जुत भक्ति वसेखो ॥ तव लागे चिंतन जिय सोई ॥
शालि ग्राम मालवनजोई ४ राखहुं कहां जतन अव काहा ॥
इह मलेछ नरनाइक राहा ॥ अस विचारि थल देखि उतंगा ॥
तहां राखि निज हृदय उमंगा ५ आपु गयो जब सन मुख ता
सा ॥ उठयो देखि नृप हृदय हुलासा ॥ करि प्रणाम नंम्रत सि
रनाई ॥ नृत्यगीत हित विनय अलाई ६ भक्त सृष्ठ छित पत
रुचि मानी ॥ लगे करन गायन मृदुवानी ॥ नृत्य रीति कछु व
हुरि दिखाई ॥ गदगदभयो देखि नरराई ७ साधु साधु अस
अस वदन अलाई ॥ लग्यो करन वित जुत सिवकाई ॥ जाति
मलेछ द्रव्य मनमाहीं ॥ भयो कलेस भक्त वर काहीं ८ देवहर
ए दुख दीन दयाला लग्यो सुमरण धेनु द्विज पाला ॥ भक्त

सहाय कीन भगवाना ॥ लीन निवारिय मन वित दाना९ ॥ परयो अचेत धरन मुरछाई ॥ चले लेत सिष निकर उठाई ॥ जँवँ चेतन जुतभयो प्रवीना ॥ तव निज वदन कथन अस कीना १० अव मोरे तुवदेहु पुचाई ॥ वेग प्रयाग राज सुखदाइँ ॥ तव त्रिवेनि पावन अनुरागे ॥ गुरु हिं लाय सिखगण बढभागे ११ दोहा ॥ तहां निवसि कछु काल तहि ॥ सुमरे श्री भगवान ॥ तजत वपुरव निज कीनकल कृष्णभवनकहं प्यान इतिश्रीभक्तविनोद ग्रंथे नारायण भक्ति माहात्म्ये नाम सर्गः ८७

अथ विदुर चरितं रोडाछंद अस प्रकार जसवंत भक्त गोपालसुहाए वोहत उद्धव आदि रामरेणू जगगाए भक्त गदाधर कृष्ण जीव जय देवसुजाना॥कृष्णदास गंगादिदास गोपाल अमाना१दोहा श्रीमन माधो दास जुत परसराम असगाय ॥ जाहि करिकीर्तन नाम कलि ॥ तरहिं लोक समुदाय १ विदुर नाम अस बिदत जग जदुपति भक्ति प्रलीन ॥ संतन सेवन निरत नित काशकक में प्रवीन २ चोपाई ॥ यद्यपि निरधन दीन कहाना ॥ तद्यपि हृदय उदार महाना ॥ भयो एक अस समय वहीना ॥ इंद्रदेव वरषा नहिकीना १ अन्न सगर्भ शुशक सवभयो ॥ हृदय भक्त चिंता अतिछयायो ॥ अवकस होहिं संत सिव काई ॥ गवहुं आज निज सदन विहाई २ अस विचार जव मानस कीना ॥ तव भगवान स्वप्न निसि दीना ॥ तजहु भक्त चिंता निजजीके होहि अन्न तुव मेदनि नीके ३ उठ्यो प्रात अस स्वप्न निहारी ॥ भयो चित गत हृदय सुखारी ॥ अस प्रकार जव अवसर पावा कीन दमन निज अन्नसुहावा ४ यद्यपि हसहि लोक सवनाना तद्यपि तासकीन नहिकाना ॥ हरि प्रसाद अद्भुत कछुलेखा ॥ भयो अष्टगुन अन्न वसेखा ५ दोहा ॥ लोक विलोकत चकत सव ॥ सत्य भक्ति तहि जानि ॥ लगे प्रसंसन विविध विधि ॥ वदन ललित मृदुवानि ॥ इति भक्त बिनोद ग्रंथे विदुर चरितं नाम सर्गः ८८

दोहा ॥ मोहन परमानंद जुत दामोदर गुणधाम ॥ घालूदासप्र सिद्ध इह भए भक्त अभिराम इति सर्गः ८९

दोहा ॥ चतुर स्वामि इक भक्तवर है विरक्त संसार चलिआए वृंदा विपन कृष्ण चरण उरधार १ चौपाई ॥ प्रातजाय गोविं द भगवाना ॥ दरसन कराहिं भक्त सनमाना ॥ जात नंदनागार वहोरी ॥ केशव दरस भक्त चितचोरी १ करि सप्रीति पुनि ले हि अनाई राधा कुंड भक्ति सरसाई ॥ आय वहुरि आश्रम ह रषाता ॥ सुमराहिं कृष्ण भक्त सुखदाता २ तीन दिवस असतास बिहावा ॥ क्षुद्धित दुखित अन्ननहि पावा ॥ तव भगवन स्वपने असकाहा ॥ क्षुद्धितबृथा भक्त तुवराहा ३ राखत गोपि दुग्ध स व चोरी ॥ तुवकछु मांगिलिहु कछुचोरी ॥ सुनि स्वपने भगवन असवागा ॥ ॥ भक्त प्रधान करन तिमिलागा ४ तवतें भयो पयो व्रतिनामा ॥ अस इह चरित स्वामि अभिरामा दोहा॥ वृंदावन वसि दिवस निसि ॥ दधिदुध लूटत सोय ॥ सुमरत कृष्ण कृ पा यँतन गयो चतुर भुजहोय १ क्षेमा विठ्ठल चौधरी ॥ निपुन भक्त इहतीन ॥ अतथि संत सेवन निरत ॥ जदुपति भक्ति प्रली न ॥ इति सर्गः ९०

अथ कुंवादास चरितम् दोहा सेथर ग्राम सुदेसमरु कुंभकार ज गगाय ॥ कुववादास प्रसिद्ध इक निपुण भक्त यदुराय १ चौपाई सदामानि निज हृदय हुलासा ॥ अताथि संत सेवन रुचिजासा अन्नवसत्र इत्यादि अभेवा ॥ करिहैं यथा उचित तस सेवा १ अवसर एक सदन तहि आए ॥ वैष्णव संत निकर हरषाए ॥ अतसे प्रसन्न गुनत मनमाहीं ॥ अवका करहुं सदन कछुनाहीं २ अस विचारि निज हृदय प्रवीना ॥ ग्राम नरेस गवन गृहकीना नम्र वदन असगिरा अलाई जोकछु उचित काज तुवराई३ मुहितें अवकराय सवलेहौ पैंकछु प्रथम वेतनादेहौ तवनरेस अस वचन वखाना ॥ करहु खनन तुव कूपसुजाना४भक्तास्रिष्ट कीन्यो सूइकारौ ॥ तववित दीननरेस उदारा ॥ लेतप्रसन्न भवननिजआ ए ॥ राचि भोजन सुचिसंत जिवाए ५ करि प्रणाम पुनि कीन विदाए ॥ नृपपैं वहुरि भक्तवरआए ॥ कूपस्थल अवकवन सुहा वा ॥ देहुभूपमुहिवेग जनावा ६ तवनरेस भृत पठित दिखायो ॥ ललित कूपथल मानसभायो ॥ लाग्यो खनन भक्तवरपानी ॥ निकासि पस्योतव वाटकखानी ७ अस जवलग्यो खनन कछु दूरी॥ मृतकापरी टूटितव भूरी गयो भक्तवर वीचदवावा ॥ काहु नसके पारतहि पावा ८ तवमृतजानि तासु चलिआए ॥ अति से शोक मुखवचन अलाए ॥ पतनि विथत तांकर सुधिपाई ॥

लगीकरन रोदन सुरछाई ९ पुनि धीरज उरधरत प्रवीना ॥ विधिवत मृतककर्मसवकीना ॥ असप्रकार जवमास विहावा ॥ तवइक संतकूपथल आवा १० तहितें रामराम धुनिपायो ॥ साधु सुनत मानस विसमायो ॥ नृपसन मरम कह्यो सवआई ॥ राऊ सवल भृतदीन पठाई ११ तिनहूं जाय खनन जवकीना ॥ तव अद्भुतकौतुक असचीना ॥ भोजन वारपात्र जुगसंगा ॥ रह्यो अविघ्न भक्तदुखभंगा १२ तवसादिर भृततासु निकास्यो प्रमुदित नृपपें लेतसिधास्यो ॥ भूपविलोकि कीन सतकारा ॥ वार वार करि चरनजुहारा १३ सुनत लोक दरसन हितआए राखि उपायन अस्तुतिगाए ॥ सो संचित धनभयो महाना ॥ ताकर दैव भवन विरचाना ॥ १४ दोहा ॥ कृष्णदास सुभक्तवर तहांनिवासि सुखपाय लाग्यो गुणगण रटनप्रभु भक्तवत्स यदुराय १ चौपाई ॥ हृदय मनोरथ करत सुहावा ॥ इहां देवमूरति मनभावा ॥ होहिं स्थापन कवमुख करनी ॥ हृदय दुरत दारद सव हरनी १ तालो संतस्रष्टशुभदरसन ॥ चलेजात द्वारावति परसन ॥ लिए देवमूरति मनहरनी ॥ चारुनधाम द्वारका करनी २ तिनकहं कीन रुचिर विश्रामा ॥ कीन्यो भक्तविविध सनमाना ॥ पावन मधुरपाक अचवायो ॥ ते मूरति देखतहरषायो ३ भाखत होहिं भाग्य ममनीके ॥ इह वचित्र मूरति प्रियजीके ॥ जो इहि भवनस्थापन चारू ॥ होहिं पुनीत ललित मनहारू ४ पैइन

सनकौ कराहिं वषाना। अस विचार निज मानस ठाना ॥ प्रात संत हरषत मनमाहीं ॥ भेउद्यत द्वारावति काहीं ५ तबमूरति कहं मानसरागे ॥ सो जबसंत उठावनलागे ॥ उठहिंन हृदय भक्त सुखदाती ॥ यद्यपि यतन कीन वहुभाती ६ तववोले सवगत उतसाहा ॥ जानिन परहिं मरम इहकाहा ॥ भक्तास्त्रिष्ट तवकह्यो उचारी ॥ इहांचाहिं निवसन गि:धारी ७ तव संतन निज मानस जाना ॥ इहप्रियभक्तकृष्ण भगवाना ॥ दीनानाथ भक्ति वसए हा ॥ चाहतइहांवसन इहिगेहा ८ असकहि तहांछाडि सुखदाई ॥ मूरति दैब ललित मनभाई ॥ द्वारावति कहं कीन पयाना ॥ गयो कछुक जवकाल सिराना ९ चिन्हतहोन हरषि मन माहीं ॥ चल्यो भक्त द्वारवति काहीं ॥ साधु भेष तव भगवन आई कीन प्रबोध तासु सुखदाई १० दोहा ॥ तुव न जाहु द्वारावति ॥ निपुन भक्त यदुराय ॥ तोरे मिलहिं सजतन विनु ॥ सुलभ सदन सव आय १ चौपई सुनि अस भक्त साधु मुख वानी ॥ लाग्यो वसन सदन सुख मानी ॥ सुमरत कृष्ण भक्त वरदाना। दिन दिन भक्ति प्रीति रतिमाना १ एक दिवस स्वपने निसि माहीं ॥ गयो भक्त द्वारा वति काहीं ॥ तहां करत दरसन भगवाना। दरचक्रादि चिन्ह सनमाना २ भक्ति पूर्बक भक्त करायो ॥ उठ्यो प्रात देखत विसमायो । सादिर सवकहं दीनदिखाई । लोकाविलोकि चक्तिसमुदाई ३ अवसर एकली

गसनमाना । गोमति संगमकरन सनाना ॥ निजनिज हर षिचलन जवलागे । देखतभक्त सृष्टअनुरागे ४ निजमाला कलदीनउतारी । कहिसवदन असवचन उचारी ॥ इहिसना न सनमान कराई । मोरेदेहु सजनतुवलाई ५ जारूसुनत भक्तअसवानी ॥ चलेलतसादिर सजपानी ॥ तहांसनानतासुज वदीना ॥ गिरिप्रवेस वारानिजकीना ६ लगेकरन अन्वेषण तासा ॥ यद्यपि कीनविपुल आजासा ॥ तद्यपि सोनमिली मनहारी ॥ चलेनिरास दुखित जिय भारी ७ इत निज ग्राम जलास जाई ॥ भक्त निपुण जवलाग अनाई ॥ आई लालि तमाल निजपानी ॥ तव विसमय अति मानस मानी ८ मै इहमालदीन उनकाँहीं ॥ जान्यो जाय मरम कछु नाहीं ॥ तोलो जाअ लोक सवआए ॥ देखि माल मानस विसमाए ९ गिरि कहत इह संगमवारी ॥ तुव कसपाइ भक्त व्रतधारी ॥ तिन कर श्रवण सुनत अस वानी ॥ रह्योसि मोन मरम जियजानी १०

दोहा ॥ कुंवादास प्रसिद्ध अस ॥ भक्तसृष्ट जगगाय ॥ जहि कीरति अवलों विमल ॥ रही लोग सवछाय॥इति कुंवादास चरितं सर्गः ९१

अथ प्रयागदास चरितं रोडाछंद पावन भक्तप्रयागदास जंगीजन नामा ॥ भक्तविनोदी विदत भक्त पूरण अभिरामा ॥ वनमाली नरसिंह आन भगवान सुहाए ॥ उद्धवदास किशोर विदत क्षेमा जगगाए १ दोहा ॥ परमानंद सुभक्तवर ॥ जगननाथ व्रतधार ॥ क्षेमा टहिलादास जग ॥ भक्तदिवाकरचारु १ वियक्षेमालु हकार इह ॥ सत्यमभक्त कहाय ॥ होहिं भक्ति रतलोक इन ॥ नाम मात्र मुखगाय २ इति ० सर्गः १२

अथ कंध्रदास चरितं ॥ दोहा ॥ कंध्रदास भय मधु पुरी ॥ कृष्ण भक्त अवदात ॥ जहि संस्रति उतसव कलित ॥ करन नवल नित क्षात १ चौपई ॥ खान पान भगवन सिवकाई ॥ आपु निरंत्र कराहिं मन लाई ॥ मथुरा आय भक्त सनमाना ॥ दीन अतथि संतन धननाना १ पंडित कहं दीन्यो कछुनाहीं ॥ तब तिन कीन द्वेष मनमाहीं ॥ निज निज हृदय कोप करि चंडा तहि पें आय सकल मिलि झंडा २ देहु देहु सठवारहि वारन लगे बिविध दुरवाद उचारन तिन कर देखि भक्त हठ एहा जोचित वसन रहिस निज गेहा ३ तिन कहं देत वदन अस काहा एहु मोर सरवस अव राहा सो अरपण सवकीन तुमारे॥

बिप्रलेत धन वेग सधारे ४ तहांएकसमदरसि सुहाए ॥ संतनि रत उतसव जदुराए ॥ पंडनजायतासु धनदीना ॥ साधुलेत सुमरण हरिकीना ५ इहितें होहिंन उतसवकाहू ॥ तवभगवान भक्त सुखदाऊ ॥ तासु प्रवोध स्वपन असकीना ॥ संतनकरहु सोच मनलीना ६ पूरव वत उतसव सुभनाना ॥ तुव निजकरहुं भवन सनमाना ॥ हुइतें सफल मनोरथ तोरे ॥ उठ्यो विलोकि स्वपन असभोरे ७ मथुराकरसब लोग वुलाई ॥ अन्न बसन भोजन हरषाई ॥ कीनाविभगत भाक्तिसरसाई पूरवतें दसगुण अधिकाई ८ दोहा ॥ जिमिजिमिदीन्यो अधिक तिमि ॥ भई विभूति अगार॥द्रुपत सुताकर वसनजिमि॥ वढत नलइहै पार १ इति भक्तविनोद ग्रंथे कंधदास भक्ति माहात्म्यं नाम सर्गः १२

दोहा॥ जैमल वंस प्रसिद्ध इक॥भक्तिमान जसवंत॥जहिवृंदावन निवासिकल॥लीन शरण श्रीकंत१इतिजसवंत चरितम् १४

अथ हवीदास चरितम् दोहा॥हवीनाम इकभक्त जग॥कासि निकट निवासि वृंदावन जहिगुरुवसत ॥ सुजसज्ञान गुन रासि १ चौपई वैसजाति हविवर जगनामा ॥ अस प्रपतास कीन

अभिरामा॥तजहुंवज्रभूमीनिजप्राना ॥ अस जब समयतास निय राना ॥ २ भक्त सिषननिज आइसदीन्यो ॥ वृंदा बिपण चल हु मोहिलीन्यो ॥ चले लेत सिषपाय नदेसू ॥ रहा सुमंत्र नाट की वेसू३ भयो कालबस मारग आई ॥ गुरुकहं सावधान उत जाई ॥ कीन्योनम्रत दंडप्रणामा ॥ सव कहंमिल्यो भक्त अभि रामा ४ कालिंद्रीकह वहुरि सिधारा ॥ अगलजातनकाहुनिहा रा ॥जव सिषआय दुखित गुरुपासा ॥ तासमरण सवबदन प्र कासा ५ लोक सुनत मानस विसमाए ॥ कहत परस्पर वदन अलाए ॥ इहां विदत हम दृगननिहारा इनहुं मरण कस वदन उचारा ६ दोहा ॥ तवजान्यो अस सवन मन ॥ इह अश्वरज नकोय॥आवातहि जीवातमा ॥ गुरुश्रद्धावस होय१इतिभक्त वि नोद ग्रंथे हर्वादास चरितं नाम सर्गः ९५

अथ विष्णुदास चरितम् दोहा ॥ विष्णुदास गोपालजन॥जुगल भक्तयदुराय ॥ दक्षण देस प्रसिद्धइह ॥ विप्र वंसउपजाय १ चौपई ततपरजुगल साधु सिवकाई ॥ समय एक निज गुरुपें जाई॥ विनय कीन जुगजोरत पानी ॥ दीननाथ मंजुल हितमानी १ सुचि भोजन प्रभु विविध प्रकारू ॥ करहु निमंत्रन संतनचारू ॥ सामग्री हम भगवनलाई संचित करिहुं बेग समुदाई २ गुरुवर करिसूइकार वखाना ॥ करहु वेग उद्योग सुजाना ॥ सिषनदेस गुरुवर असपाई ॥ भएनयुक्त काज निज जाई ३ इतगुरुनिज अद्भुत असकीना ॥ पावन वारि पात्र करलीना ॥दिसाचारि आश्रम निज चारू ॥ सिंचन कीन वारव्रत धारू ४ मानहुंभयो निमंत्रण सोई जहं तहं संत हरषवस होई ॥ चलिआए आश्रम गुरुज्ञानी ॥ देषतकहिस सिखन कहंवानी ५ आए तात संत समुदाई ॥ जथाउचित अवदेहु जिवाई ॥ तव सिषगण सादर हरषाई ॥ तरपण किये संत समुदाई ६ राखे पंच दिवस असगेहा ॥ सादर प्रीतिभाक्ति जुत तेहा॥ भयो जुकछु अनुचितासिवकाई पानिजुगत जुगक्षमाकराई ७ वहुरिहरषजुत कीनविदाए लगेसंत सवगुण गण गाए ॥ गुरुकहं करत प्रदक्षण सारें॥करिप्रणाम निज भवन सिधारे ८ दोहा ॥ नाम देववर भक्तजुत ॥ भक्तवीर सुजान ॥ इहसुचिभाषण करि कये ॥ विदा सहित सनमान १ इति सर्गः ॥ १६ ॥

रोंरा छंद ॥ देव दामोदर भट्ट नाथ भट अद्भुतराए ॥ छत्रा जन अरुजुनदास लख्यांदि सुहाए ॥ नारायण इक जीव स्वामि सेवक व्रतधारे ॥ रसिकराय इहकौल सकल सिष जदुपति प्यारे ॥ १॥इति सर्गः ॥ १७ ॥

अथ परसराम तथा करमावती चरितम्॥दोहा॥ थल कडेल कर विदतइक ॥ सिक्षावति नृपनाम ॥ तहि अपरोहित चतुरवर परसराम अभिराम १ चौपई ॥ तहि कन्या इक रुचिर सुहाई॥ करमावती नाम जगगाई ॥ हरि भक्तारत धरम उजागर ॥ अतथि संत सेवन नितनागर १ जुवा वेस अन भिन्न विषेहू ॥ राधा कृष्ण चरन सुचि नेहू ॥ समय एक निज हृदय हुलासा॥ आवा सदन लेन पति तासा २ भई सुनत अति हृदय दुखारी ॥ अबलग जन्म सफल सुखकारी ॥ जनक मोर संसार विताना ॥ दारुण लग्यो गरत अवपाना ३ पति पितु मातु भ्रातु परि वार ॥ इह सवमरणाहार संसारा ॥ कृष्ण अमरपति संस्रति त्यागी ॥ अवकसजाहुं मृतक सनलागी ४ अस

विचार दृढ मानस कीना ॥ अरधरयनतजि सदन प्रवीना ॥
गवनी बहिर भोरजबभययौ ॥ अतिसत्रास मान सतवछययौ५ ॥
अव मुहि पकरिलैहिं जनकोई ॥ अस प्रकार चिंतन करि
सोई । मृत उशठर पिंजर इकपाई ॥ वैठीतहां लुपत गतिजाई६
यद्यपि अति दुर्गंध तहि मान्यो तद्यपि अधिक सदनतें जान्यो
उदय अरुण वांधव समुदाए ॥ तासु करन अनवेषण धाए ७ ॥
पिंजर निकट आय जवसोई ॥ अति दुरगंध व्यवश तव होई
॥ दूरहिं दूर जाहि सवहेरे ॥ पिंजर करनहिं आवतनेरे ८ जु
गल दिबस लगदेखि सबाहीं ॥ आए वहुरि सदन निजमाहीं ॥
सो पितजत पिंजर मति धीरा ॥ सुमरत कृष्ण देव सारंतिरा ९
करि सनान आभरण उतारें ॥ देत दिजन दीनन कहं सारे ॥
हरषि आपु वृंदावन आई ॥ गयो कछुक अव समय विहाई
१० काहु विप्र मथुरातें आयो ॥ परस राम सन मरम जनायो
॥ सुता तुमार भानुजा तीरा ॥ वसहिं सुमरण निरत जदुवीरा
११ दोहा ॥ परस राम तहि कथन सुनि ॥ आवदुखित श्रमपा
य ॥ करिरोदन भाखत वदन ॥ तासु विविध समुझाय १ चौपई
सुताकीन कस छेदन नासा ॥ करत लोक वांधव परिहासा ॥
जोतजि सदन निडर तुव होई ॥ आई इहां लाज कुल खोई १
अव निज चलहु ससुर गृहकाहीं ॥ इहां वधरू मृग कानन मा
हीं ॥ करमावती सुनत पितुबानी ॥ वोलिवचन भक्ति रससानी

२ नासा पुरुष तात जग माहीं ॥ कृष्ण भक्ति संसय कछुनाहीं ॥ सो जहि मे पितु नाहि न लेखा ॥ तेऊ घ्राण छिद संसृति लेखा ३ जो तुव कह्यो सुसरगृहजाना ॥ सो जव हृदयत्याग निजमाना ॥ तोजग सुसर सासकाहिकेरा ॥ हितुसंवंध मृखा सवहेरा ४ तुमहुं करहु जिय जनक विचारा ॥ कोतुमार संसृति परिवारा॥जवइहजीवजाय तजि काया॥कोन होहिं तव संगिसहाया ५ तुव कहि यें उनमत्य भुलाना ॥ सार असार बिचार नठाना पंचासतसंवतसरआए ॥ जनकतोरजगबृथाविहाए६ चरवणाकर चरवणतुवकीन्यो ॥ विषयभोगकछुतृपातिनलीन्यो ॥ अजहुंअचेतचेतअसजानी ॥ हितजुतसुनतसुताअसवानी ॥ ७ मानहुंसुपत उत्थबतहोई ॥ आवावेगसदननिजसोई॥ मूरतिकृष्णदेवकललीनि सादिरभवनस्थापनकीनी८ वंधन सकलभूपासिवकाई ॥ तजतकृष्णपदप्रीतिजुडाई ॥ एकादिवसअपरोहतकाहीं ॥ भूपसुमरणकर तमनमाहीं ९ पठ्योवेगभृतवोलनहेतू ॥ सोआवादिजसृष्टनकेतू कहिसचलहुतोहिभूपवुलावा ॥ परसरामसुनितासुअलावा१०दोहा ॥ नृपसनभाखहुजायभृत ॥ मैनतोरतुवमोर ॥ उदयभागमुहि मिलगये ॥ राजेश्वरासिरमोर १ चौपई अखिल भवन नायक प्रभुपाई ॥ आवहु तुमन हृदय कछुगाई ॥ यद्यपि लागहि नीकन तोहीं ॥ तद्यपि क्षमा करहु अवमोही २ भृत अस आय कथन सवकीना ॥ भयो विरकत जानि नृपलीना ॥ तव नरेस आवा

ताहिपासा ॥ सुता वृतांत तास सवभासा २ सुनत वदन भाख्यों अस राई ॥ मैलावहुं कन्या कर जाई ॥ असकहि नृप वृदावनं आवा ॥ जमुना तीर देखि हरषावा ॥ ३ अति जाज्ज्वमान दुतितासा ॥ भानु सरस जनु भक्ति प्रकाशा ॥ कामक्रोध मद विषय विकारा ॥ करत दरस सव जारन हारा ॥ ४ ॥ नृप साम रथ उकत नहिपायो ॥ दूरहिं करि प्रणाम सिरनायो ॥ कछुक धीर धरि कहा वहोरी॥ विनय ब्रह्मचारणि असमोरी ५तुव वियोगापितुजवनतुमारा ॥ भयोविरकततजतपरिवारा ॥ अवतोहिउचितचलननिजगेहा ॥ वोलीभूपवचनसुनिएहा ६ सुनहुनारेंद्रसकलजगमाहीं॥ विनुहरि भक्ति सारकछुनाहीं ॥ जनकप्रसादतोरनरराई ॥ भोगेविविधभोगसुखदाई ७ भयोविरकतआजसंसारा ॥ धन्यभागनिजजनमसुधारा ॥ हृदयविचारकरहुनरराजू ॥ द्रव्यकोशसवराजसमाजू ८ जहिहिंकवनसंगनृपतोरे॥ कहांआजतुवजठरजठेरे ॥ नदीप्रवाहवारजिमिजाईं ॥ मिलहिनवहुरिधरनपातिआईं ९ अरुफलपक्कविटपचुतहोई ॥ वहुरिनलगहिंसाखद्रुमसोई ॥ तिमि अनित्य इहसंसृतिकाया ॥ असविचारि मानसनिजराय। १० दैनिज राज काज सुतकाहीं ॥ वसहुं आय वृंदावनमाहीं ॥ भूपसुनतउपदेससुहावा ॥ वारवारचरणनासिरनावा ११ सुतकहं दीन राज गृह आई ॥ वस्यो आप वृंदावन जाई ॥ वितजुत अतिथि संत अनुरागा ॥ सेवन भूप भक्ति जुतलागा १२ ॥

दोहा ॥ अस सेवत नृप संतजन ॥ कृष्ण भक्ति रत होय ॥ हरि हरि रटत निरंत्र नित गयो भवन हरि सोय १ इति भक्त विनोद ग्रंथे परसराम तथा करमावती चरितं नाम सर्गः ॥ ९७ ॥

दोहा खड्ग सयन इक भक्त वर ॥ भए ग्वालेयर माहिं करत कृष्ण लीलाललित गए कृष्ण पुरकाहिं १ इति सर्गः ९८

दोहा ॥ गंगादास प्रसिद्ध जग ॥ भए भक्त भगवान अरु बृजबासी विदतवर ॥ दास गुपाल सुजान १ तजबृज वासहुलास जुत ॥ कीन बिपन निजवास ॥ भिक्षाभोजन करन कल ॥ हृदय धरन प्रणजास ॥ २ परम विसारद गीत नृत सुनि दलीस गुणतेहु ॥ मोहित वरबस भक्ति जुत ॥ चल्यो लेत निजगेहु ॥ ३ ॥ तहां भक्तवृज विरहंते ॥ तजन अन्न जल कीन ॥ तव दलीस कहं देव निसि स्वपन भयंकरदीन ४ भक्तस्रष्ठ कहं वेग अव ॥ वृजमहि देहु पुचांय ॥ साह स्वपन अरु देखि वृजसादिर दीनपठाय ५॥इति सर्गः ९९

दोहा ॥ नरहरि कर सिख विदत इक संतदास असनाम ॥ सु चि संतन सतकाररत ॥ लालदास अभिराम १ इति सर्ग १००

दोहा ॥ सरव भूत सुहृद भक्तइक ॥ माधो दास सुजान ॥ जन प्रयाग सिष अग्रमुनि ॥ गुरु सेवनरति मान १ सो नृत अवसर हरि चरित करतसुधा रसपान॥तजित कलेवर गवनकरि ॥ गयो भवन भगवान २ इति सर्गः ॥ १०१ ॥

अथ प्रेमनिधी चरितम्॥दोहा ॥ भये नगर कल आगरे॥भक्त रुचिर जदुराय ॥ प्रेमनिधी असनाम जग ॥ सरव भूत सुखदाय १ चोपाई ॥ पौरानक परमातम सेवा ॥ सदाचार रत भक्ति अभेवा ॥ विप्र वंस जहि जन्म उजागर ॥ गुणसंपन्न ज्ञान मति नागर १ ललित भाद्रपद मास सुहावन ॥॥ अवसर एकगगन पयं छावन ॥ भए मेघ गण गरजत सोरा॥ टूटचो वृष्टि धरण अति घोरा २ ब्रह्मणब्रह्म महूरत माहीं ॥ वारनि चल्यो अनाव नकाहीं ॥ जावहिं सदा सेष निसिलीने ॥ तव अति अंधकार द्विजचीने ३ हृदय विचार करतकसजाऊं ॥ वृष्टि अपारपार

किमिपाऊं ॥ तोलोपरस्योहाष्टि जनकाहू ॥ लिए प्रकास करन निज ताहू ४ चल्योजात रवि नंदनि काहीं ॥ तासु विलोकि अभयमन माहीं॥ पाछेचल्यो विप्र वरधाई॥ सान कूल जमना तट जाइं ५ करि सनान पावन जललीना ॥ वहुरि नकेत गवना निजकीना ॥ तेऊ प्रकास धरन जनपानी ॥ आगल चल्यो जात सुखमानी ६ अस निज सदन प्रेमनिधि आवा ॥ करि नधान घटभवन सुहावा ॥ कहत कवन अस अद्भुत एहू ॥ अंग अनंग हरनछव जेहू ७ रूपरास लावन्नत न्यारी देखहुंजाग कवन हित कारी ॥ आज सहायकीन जहि मोरी ॥ लावहुं जायसदन तहि जोरी ८ इत विचार अस दिंजवर कीना ॥ तास दीप उतजोति वहीना ॥ करत तुरंत अन्त गत भेयौ ॥ भक्तदेखि मानस विसमेयौ ९ भगवन चरित जानि अनुरागा करन प्रणाम मनहिं मनलागा ॥ तवतें तज्यं तास निसिज़ाना ॥ हृदय क्लेश जानि भगवाना १० दोहा ॥ अस प्रणकीन प्रवीन तव ॥ वैठि सदन निज चारु ॥ वाचत कथा पुराण कल ॥ सकल लोक मनहारु १ चौपाइं ॥ जुवती वालवृद्ध जुत नारी ॥ तहांहोत कल संचित सारी ॥ तव जडदुष्ट आतमा कोई ॥ भक्त प्रवीन द्वेषरत होई १ दिल्लीपत सनजाय उचारा ॥ नाथ प्रेम निधि पातक भारा ॥ जोरत त्रिय समाज इहि भांती ॥ संतत विषय

निरत दिनराती २ साहसुनत दारुनरिसकीना ॥ ततक्षणचारि पदाति पठीना ॥ धरिलावहु पौरानककाहीं ॥ चले पदाति रिसकि मनमाहीं ३ तहि अवसर दिज सदन सुहाईं ॥ करि पूजन भगवन सिवकाई ॥ नइ वेदादि सकल सनमाना ॥ बैठ्यो लायकृष्ण रतध्याना ४ भृतजन धरन वेग गति धाए ॥ श्रोता देखि सकल अकुलाए॥करि दीन्यो तव सनमुखसाह॥करि त्रिस्कार साह अस काह। ५ कहां भक्ति कहं कामनि सोभा ॥ तुवतो निपट विषय मनलोभा ॥प्रेम निधी तव वदन उचारा॥हमहुं साहगत बिषय विकारा ६ कैवलकृष्ण चरित जगपावन ॥ गायन करहुं ललित मनभावन ॥पुर कर जननि रूप सवनारी ॥ आवहिं श्रवण करन सुखकारी ७ मोरे सदन कथा वर चारू मानस मोह सूल भ्रमहारू ॥ कीन्यो कोप सुनत अससाहू ॥ दीन नदेश भृत न असताहू ८ इहि कहं जाय वेग गत सोधू ॥ करहु वंध नागार निरोधू ॥ भृत नदेश नाहां निजपाई ॥ कीन निरोध वेग तहि जाई ९ दोहा ॥ लागे सुमरण करन उर ॥ तव सुभक्त ब्रत धारि ॥ दीना नाथ दया निधी ॥ त्राहिभक्त भयहारि १ ॥ चौपाई ॥ उत श्रोता जन हृदय दुषारी ॥ देख्यो साह स्वपन इत भारी ॥ ताकर इष्ट देव रिसपागा ॥ वदन प्रचारि कहत असलागा । मैतो त्रिषत विकल मनमाहीं ॥ पान कराहु वार मुहि काहीं ॥ साह सुनत

कर जोरि वखाना ॥ प्रभु कतकौन वार नहिपाना २ इष्ट देव तब बहुरि उचारा ॥ तुव मुहि वार पयावन हारा ॥ कौन निरोध रोष गृहमाहीं ॥ ताहि ते पियहुं वार मै नाहीं ३ जब असभयो स्वपन निसि साहू ॥ भ्रमवस तास नजान्यो काहु ॥ तवतहि इ ष्ट देव रिसकीना ॥ चरण प्रहार पीठतहि दीना ४ ततक्षण जा गि उठयो तवसाहू ॥ उदय अरुन संजुत उतसाहू ॥ जुग कर जोरि भक्त पं आवा ॥ चरणन सीस नम्रगति नावा ५ निज अनु चित सब क्षमा कराई ॥ गयोसाह सुभ आसिख पाई ॥ भक्त सिष्ट जमैना तटआए ॥ करि सनान पूजनयदुराए ६ कौन मुदत आश्रम निजध्याना ॥ श्रोता देषि सकल हरषाना ॥ पू रव सम कल कथा प्रसंगा ॥ लागे करन भीत भ्रम भंगा ७ दोहा ॥ अस इह संसृति प्रेमनिध ॥ भएभक्त भगवान ॥ विदत दिखायो जासनिज ॥ भक्ति प्रभाव महान १ इति भक्तविनोद ग्रंथे प्रेमनिधी चरितं नाम सर्गः १०२

दोहा ॥ भजनदास इक भक्त जग ॥ वाझ इंद्रि रत भोग ॥ कृ
ष्ण कृपातें अंत्र जहि ॥ बिशय विकार वियोग १ रोडाछंद ॥
हरिनारायण भए भक्त वर विदत वरेली ॥ भए हसंका वादभक्त
उद्धव जग वेली ॥ तुलसि राम इक भक्त भेसला ग्राम सुहाए
रामदास कल्यान भक्त परमानंदगाए ॥ अव इहभक्ता भई विदत
संस्रति वरनारी ॥ मीरांहीरां द्माबाइ लख्याव्रत धारी ॥ मणि
लाली जुतरमा बाई हीरां जगगाई ॥ खेचनि गंगा सुमति के
शका धाने सुहाई १ दोहा ॥ जमना अरु जीवा हर्षा राज सु
ता जग एहु ॥ कंधर केशवदास कृष्ण पुनि चरण रति नेहू १
मारग देख्यो एक दिन केशवदास सुजान ॥ वृषभ स्वामि नि
ज वृषभ कहं ॥ हन्यो दंड निजपान २दंडघात छत भक्त वपु
उपज पर्यो मुरछाय ॥ इह अद्भुत दृग देखि निज ॥ सकल
लोक विसमाय २ इति सर्गः १०३

अथ आस करन चरितम्॥दोहा नटवर ग्राम प्रसिद्ध इक॥वसहिं भक्त मतिधीर ॥ आस करन असनाम तहि ॥ निपुन भक्ति यदु वीर १ चोपाई ॥ संस्रति विनु सुमरण भगवाना ॥ जासन हृदय आनरुचि माना ॥ एक दिवस दिल्ली पत आवा ॥ सुनि अचरन ताहिहृदय रिसावा १ भृत बोल न हित दीन पठाई देखे तास भक्त वर आई॥करि पूजन भगवन सुखदाना ॥ मूदित भवन द्वारसनमाना ॥ २ वहिर दंड वत मेदन परयो ॥ भृत अव लोकि गवन तव करयो ॥ कछु प्रति कूल साह सनपाई ॥ कीन्यो कथन तास दुखदाई ॥ ३ आवा साह वदन असठाढे ॥ खडग प्रहारि चरण जुगकाडे ॥ दैव कृपा ते रुधर वहीना ॥ चरण तास जनु भए नवीना ॥ ४ देख्यो ठाड खडग जुत साहू ॥ करिप्रणाम संजुत उतसाहू ॥ वोल्यो भक्त भाग्य वडमोरे ॥ जोपायोप्रभु दरसन तोरे ५ साहसुनत मानस पछताना ॥ मोहि समअधमन संसृति आना ॥ जहि असभगवन संतअभेदे ॥ विनु अपराध चरणजुग छेदे ६ असकहि गिरयो लुकट इवधरना ॥ त्राहि त्राहि मुखमुखर उचरना ॥निज अनुचितसवक्षमा कराई ॥ वितदै कीन विपल सिवकाई ॥ ७ असप्रकार कछुअवसर पाए ॥ मृतवस भयो भक्तजदुराए ॥ साहसुनत शोकारत होई ॥ तासभवन कल दिजवर कोई ८ करनहेतपूजन भगवाना ॥कीनस्थापत अतिसनमाना॥ अताथिसंतसेवन हित

दीना ॥ दैवभवन सनग्राम प्रवीना १ दोहा ॥ देखहु भक्तिप्रभाव इह ॥ साह द्वेषरतभार ॥ अत्र लाग्यो सेबन मुदित चाह भाक्ति व्रतधार १ इति भक्तविनोद ग्रंथे आसकरन माहात्म्यं नाम सर्गः १०४॥

रोडाछंद ॥ हरिवंस कल्यान भक्त वंसीनारायण॥ स्याम दास श्रीरंग सकल हरि भक्ति परायण१ सदानंद गोपालदास विठ्ठल अनुरागा ॥ चपलादास कल्यान आन लकवा वडभाग १ दोहा ॥ इहशंकर गोपाल जुत भए भक्तभगवान॥ जहिंकी तंन कलनामजग ॥ भगवन भाक्ति प्रदान१इति सर्गः १०५

अथजग देब चरितं दोहा ॥ क्षत्रीवंस प्रधानभव भएभक्तजग देव ॥ जांकर संतत हृदय दृढ ॥ भगवन भक्ति अभेव १ चौपई ॥ वैष्णव संतनित सिवकाई ॥ पावन प्रेम चरन जदुराई ॥शि विसमान सरणागत पाला दानि दधीचि सरसजनुदाला१ वलि समनिपुण वाक्य सूइकारा ॥ भक्त प्रवरप्रल्हाद उदारा यद्यपिअ ल्पभूमिकरना इक ॥ तद्यपि सकल लोक सुखदाइक २ आनुग्र हितदेबता काहू ॥ आई नटीनगर इकताहू ॥ गायन नृत्यविसा रद भारी ॥ सूक्षम अंगमान रतिहारी ३ सकल कला संपन्न सु

हाई ॥ तेश्रनुसास भक्त नृपपाई ॥ नटनागर नटभई परायण ॥ लागीकरन मधुरस्वरगायन ४ कीन अलाप ललित मनहारू ॥ छयो विदंत अदभुत रसचारू ॥ भूपमुहत विक्षप्त समाना भयो अचेत चेत विसराना ५ आनलोक मूरछित समुदाई तवप्रसन्न मानस नरराई मणिगण विमलवसन अति रूरी ॥ दीन्यो तासु द्रव्य संभूरी ६ यद्यापि इतोभूपवित दीना तद्यपि हृदय तृप्तिनहि लीना ॥ लेतखडग करसीस उतारी ॥ लाग्यो देनतासु व्रतधारी ७ तहि न वृत्यकारि दाहिनपानी ॥ सनमुख कीनवरानि मृदुवानी ॥ मैंइहिपैं नृपसीस तुमारा ॥ कीन्यो अतिप्रसंन्य सूइकारा ८ इह जोइभूपकलेवर तोरा ॥ ताहिपैं सीस रह्यो अवमोरा ॥ नटीवदन असवचन उचारी करिप्रणाम थलआन सिधारी ९ काहु भूपसनमुख तवजाई॥कीननृत्य अदभुत सुखदाई ॥ राऊविलोक्य परम हरषाना॥इकटक सभासकल विसमाना१०वितजुत निजआभरण अनूपा॥ लाग्यो तासुदेन जवभूपा ॥ तवतहिगाहिन हेतकर वामाआगल कीन प्रीति सनमाना११तासुदेखि नरनाथारिसान्यो ॥ अरुन नयन मुख वचन वख्यान्यो ॥ अधमानि कीनमोर अपमाना ॥ सनमुखकह्यो वामानिजपाना १२ नटीसुनत अस वदन अलाईं॥ इहकरदक्षमोर नहिराई ॥ मैं, जगदेव भूप कहं दीन्यो ॥ जोतहि करानि विदत जगकीन्यो १३ कोअसकरनहार संसारा ॥ धन्य धन्य जगदेवउदारा ॥ तीनकाल तहिसदृश काई

दानमानसामर्थ नहोंइ १४ वोल्योभूप श्रवण जवकीना ॥ तहि असकवनदान तोहिदीना ॥ जाहितेंविविध प्रसंसहुतेहा ॥ कामुहितें कछुसरसनएहा १५ नटीसुनत असवदनप्रकासा ॥ मोरे दीनसीस नृपतासा ॥ अससामर्थ कवन जगमाहीं ॥ देहिं सीस जाचिकजनकाहीं १६ कहिसभूप अस वरणनतोरे विनुदेखे प्रत्येकसमोरे ॥ नटिअससुनतगवन तवकीना ॥ जहांभूप जगदेव प्रवीना १७ करिप्रणाम असवदन अलाई देहुनक्षेप सीसमोहि राई ॥ ततक्षण सुनतधरमध्वज राऊ ॥ दीन्योकाटि सीसनिजताऊ १८ नटीलेत निजहृदय सुखारी ॥ राख्यो वपुनरनाथ संभारी ॥ धरच्योसीस सनमुख नृपआई ॥ असप्रकार मुखवचन अलाई १९ दोहा ॥ अवतें असप्रणमोरनृप सत्यसत्यसंसार ॥ करहुंनइहि निजपानि सन ॥ दानकाहु सूइकार १ चौपई जवमुहिसीस धरमनिधदीना ॥ मैं सूइकार दक्षकरकीना॥तवतेंहृदयएहुप्रणठाना ॥ अवनकरहुं काहुकरदाना १ दोहा इहिकरसन सूइकारनृप ॥ असविचारि जियमाहिं ॥ तवसनमुखतुवकीनमें पानिदक्षनिजनाहिं १ चौपई अद्भुत देखिभूप मुरछावा ॥ उठ्योवहुरिजब चेतन पावा ॥ कीन प्रणाम दंडवत चरना ॥ पुनि पुनि साधु साधु मुखवरना १ मणि कंचन वित वसन महाना ॥ देत बिदाय कीन सनमाना ॥ तव जगदेव नगर नटि आई ॥ कीनन युक्त सीसवपुराई २ हरिहारिमखर करत ततकाला ॥ नटि प्रसाद

नृपउठ्यो रसाला ॥ लोकविलोकि सकल बिसमाए ॥ निजानि जसदन प्रसंसत आए ३ तेऊप्रणाम करत अनुरागी ॥ गवनी मुदितभवनबडभागी ॥ तदइक आनदेस नृपकन्या ॥ रूपसुभाव सील गुणधन्या ४ सुनत सुजस जगदेव सुहावा ॥ जननिज नकसन प्रकट अलावा॥होहिं भक्त जैदेव सुजाना ॥ पती मोर संत्रति सुखदाना ५ नतर मरहुं उदवंधनलाई ॥ तजहु प्राणहालाहलखाई ॥ भूपसुनत जगदेव बुलाए ॥ बारंबारवदन समुझाए ६ वरहुतात इहमोर कुमारी ॥ भए भक्तसुनि हृदय दुखारी ॥ मृतहुंनचाहुं विलोकननयना ॥ असप्रकार जबभाखिस बैना ७ दारुण रोख भूप तवकीना ॥ खड्ग प्रहारि सीस छिद लीना॥ धर्योजाय सन्मुख निजकन्या तत्क्षण परी धरनि सुधि हन्या ८ असव प्रीतभूप मतिदेखी ॥ चिंततचकत लोकअव सेखी॥पश्चातापकरहि समुदाई ॥ तेनटि अकसात तहंआई ९ कट्यो सीस देखत अकुलानी ॥ जोर्योवपुख गहित निजपानी ॥ अतिविचित्र तहिशक्ति प्रभाऊ ॥ उठ्योसि रटत कृष्णनरराऊ १० देखि लोककौतक मनहारन ॥ धन्य धन्य सवलागउचारन ॥ तवनाटि जुतजगदेव सुहाए ॥ संजुत हरष भवन निज आए ११ दोहा ॥ अस प्रकार इह चरित मैं ॥ कीन कथन जगदेव ॥ हरन मैन मददैनजग ॥ जदुपातिभाक्ति अभेव

इति भक्तविमोद ग्रंथे जगदेव भक्ति माहात्म्यं नाम सर्गः १०५

अथकृष्णदास चरितं दोहा ॥ कृष्णदासइकभक्तवर ॥ प्रेम अब
धि संसार ॥ हरि सन्मुख नित करन कल ॥ नृत्यजास व्रतधार
१ चौपाई ॥ निरततएक दिवसग्रहमाहीं ॥ गिरी चरनते बरसु
धिनाहीं ॥ प्रेम मगन तन दसा भुलाए ॥ करत नरंत्र निरत म
नलाए १ तबसजतन कोऊवाल सुजाना॥ डारि गयो नेवरपग
आना ॥ भयो विराम निरततें जबहीं ॥ नेवर आनविलोकिस
तबहीं २ निज पतनी सन पूछन लागा ॥ बोली त्रिये मधुर मु
ख बागा ॥ नोलवरन बालक मनहारू ॥ डारिगयो पगनेवरचा
रू २ दोहा ॥ भक्तसुनत असपतनि कहं ॥ करि कर जोरि प्रणा
म ॥ कहिस धन्य तुव लीन जहि ॥ कृष्णदरस अभिराम१ इति
भक्तविनोद ग्रंथे कृष्णदास चरितं नाम सर्गः १०६

दोहा ॥ अब जेजे संन्यासरत॥ भएभक्त भगवान॥तिनकरनाम स
पृथककतु ॥ करहुं कथन सुखदान १ श्रीदामोदर स्वामि अरु
॥ तीरथ स्वामि सुहाय ॥ माधो स्वामी भक्तवर ॥ रामभद्र जग
गाय २ मधुसूदन हरि भक्तिरत बहुरि सरस्वति नाम ॥ जहिगी
ता कर विदतजगकीन तिलक अभिराम३इति सर्गः १०७

दोहा ॥ जगदानंद प्रसिद्ध इक ॥ भक्त प्रभु द्वा नंद ॥ चेतन
स्वामी सिष विदत ॥ निरत भक्ति जदुनंद १ इति सर्गः १०८

दोहा ॥ कीलदास कर सिष रुचिर ॥ भक्तद्वारकादास ॥ पूरण जनभटलखनइह ॥ भक्तज्ञान गुणरास १ इति सर्गः १०९

अथ कृष्णदास चरितम्॥दोहा ॥ कृष्ण दास पूरव कथा॥ जास कथन में कीन॥तजिन केत काननवसे ॥ बिदत पयो व्रतिलीन १ चौपाइं ॥ तहां विपन इकासिंह सुहावा ॥ ॥ अतिक्षुधित त हि सनमुख आवा ॥ कृष्णदास तृणआस न दीना॥ वैठहु इहां कथन मुखकीना १ करहुं मोर इह भक्षण काया॥ सुनि अस रह्यो मौन मृगराया. कृष्णदासतव हृदयविचारा ॥ इहन करतव पुमोर अहारा २तुरत जंघनिज छेदन कीना ॥ करहु अहार अ मखतहि दीना ॥ मृगपति पावकछुक अभिलाखा ॥ हृदय वि चारि सेष कछु राखा ३ जानन हेतु भक्त वरकाहीं ॥ जोइहभ योतोष मृगसाईं ॥ तव भगवान भक्तसुखदाए ॥ वैष्णवरूप रुचिर धरिआए ४ दोहा ॥ कीन स्परस सुभक्त जन मिटयो स कल दुखघाय ॥ अससंतन सतकारपर कृष्णदास जगगाय१ इति भक्त विनोदग्रंथे कृष्णदास भक्ति माहात्म्यंनाम सर्गः ११०

अथ गदाधर चरितम्॥दोहा ॥ दक्षण देसभये विदत॥ भक्तगदा धर नाम ॥ निवसे आय सुवहिर इक॥विपुन नगर अभिराम१ चौपाइं ॥ जहिदिन भक्तसृष्ट तहं आए ॥ टूटयो वृष्टि गगन

घनछाए ॥ मूसलधार वार जनु परयो ॥ पै नभक्त उर धीरज हर यो १ वैठिरह्यो थिरजिमि पाषाना ॥ तहांकाहु सेवक भगवाना वनक धनक अतिसुमति प्रवीना ॥ तहि अस दशा भक्तवरचीना २ भवनवचित्र दीनाविरचावा॥ राखिदेव मूरति मनभावा सादिर तहां भक्तहरखाई॥ लागे करन अतथि सिवकाई३ धार्यो हृदय भक्त व्रतएहू ॥ आवहि भवन देवावितजेहू ॥ अतथिंसंत दिज दीनन काहीं ॥ कराहिं विभक्त लोभ कछुनाहीं ॥ ४ आयआज कर कालि न राखा ॥ रैंहि एकरस गत अभिलाखा ॥ सिष इ क दिवस राखि कछु लीना ॥ गुरुवर तास मरम असचीना ॥ ५ ॥ देखि दीन अतथी जनकाहू ॥ दीन दिवाय भक्त उतसाहू॥ आवहि आन प्रातें सुततोरे ॥ संतत धरहु वचन जियमोरे ॥ ६ भयो दिवस दूसर असजवहीं ॥ आवा कछुन भवन हरि तबहीं तव सिष अति क्षुद्धित अकुलाना ॥ भाषत अवन वचाहिं इतप्रा नौं ॥ ७ ॥ मैं अव आन काहु थलजाईं ॥ वसहु प्रसन्न परम सुखपाईं ॥ अस क्षुध्यातर तासु निहारी ॥ गुरुहुं लाग चिंतन व्रतधारी ॥ ८ ॥ तव वैष्णव धरि रूपमुरारी ॥ आए वेग भक्ति हित कारी ॥ जुग शत मुद्र भक्त कहदीना ॥ वहुरि दैव प्रत्या वतकीना ॥ ९ सिष कहं वोलि गदाधर काहा ॥ जोतुमार म न वांछित राहा ॥ भयो तात फुर संस्रति आई ॥ अव निजले हु मनोरथपाईं १० असकहि मुद्र जुगल शतदीना ॥ सिषप्र

भाव अस देखि नवीना॥जुगकर जोरि चरन सिरनावा ॥ निज अनुचित सवक्षमा करावा ॥ ११ ॥ दोहा ॥ तव गुरु बर वृंदा विपन ॥ सिष समेत निजआय ॥ लागे करन निवास कल हृदय सुमरि जदुराय ॥ इति भक्त विनोद ग्रंथे गदाधर चरितम् नाम सर्गः ११

अथ नारायण चरितम् दोहा ॥ नारायण जन नाम अस ॥ भक्त निपुण भगवान ॥ वद्रिनाथ दरसन करन ॥ हृदय जास रुचिमान १ चौपाई ॥ केशव देव द्वारअसआई॥ लग्यो निवास करन सुख पाई ॥ एक दिवस दरसन हितआए ॥ विपुललोक मानस हरषाए १ भाखिस चलहु द्वार अवत्यागी ॥ तुमहुं भक्त प्रभु दरसनलागी ॥ तिनकहं भक्त स्पष्टअसकाहा ॥ तुमजवसक लसजनउतसाहा २ करिदरसन आवहुमगमोरे ॥ मैपदत्राणदर सिद्दगतोरे ॥ इहनिजजन्मजतन विनुभावा ॥ इहां सफलकरिले हुंसुहावा ३ सुनिअस भक्त वचनसुखदाए ॥ साधुसाधुसववदन अलाए ॥ अस प्रकार कछु दिवस विहायो ॥ तवकौ अधम दुष्टजन आयो ॥ ४ ॥ भृत वत भार भक्त सिरदीने ॥ चल्यो लेत जढ मरमनचीने ॥ भक्त स्पष्ट कछु रोषन कीना ॥ गवने भार सी सधीर लीना ॥ ५ ॥ आगल चले जात मति धीरा ॥ पाछल

लग्यो अधम अगखीरा आए कछुक दूरजवदोई। मारग मिल्यो आन जनकोई ॥ ६ ॥ तास दोखि नारायण काहीं कीन क्रोधदारुण मनमाहीं ॥ जो पाछिल तहि जावत लागा ॥ बोल्यो तासुकठिनमुखवागा ॥ ७ अरे मंदकाकीनाविचारू ॥ भृतबतसं तसीसदैभारू ॥ चल्योजातदुरमति अभिमाना ॥ नाहिनदुष्टहिताहितजाना ८ यद्यपिइनहंुसमानविचारा ॥ सुखदुखहानलाभसंसारा ॥ तद्यपितुभहं सोचनाहिकीना ॥ मूरखहृदयवज्रधारिलीना ९ कवहुकिकरहिंकोपइहथोरा ॥ हुइहैंसकलंवसक्षैतोरा॥सुनिअसतासत्रासवसहोई ॥ लीनउतारिभारनिजसोई १० जुगकरजोरिचरनलपटाना ॥ वारवारमुखविनयअलाना॥ क्षमहौदीनयालअपराधू जानि निपुट मुहि मुग्ध असाधू ११ अस प्रकार मुख विनय अलाए ॥ निज अनुचित सव क्षमा कराए ॥ करि सूइकार हृदय सुखदाई गुरुवर सुभ्र रुचिर सिवकाई ॥ १२ दोहा ॥ आवा आश्रम भक्तसन ॥ हृदय दुष्टमति खोय ॥ भक्त संसरग प्रसादतें भयो भक्ति रतसोय इतिभक्तविनोदग्रंथे नारायण चरितं नाम सर्गः ११२ दोहा ॥ भएभक्त भगवान इक ॥ मथुरापुरी प्रवीन ॥ करम वचन मन दिवस निसि कृष्ण भजन नितलीन १ चौपाई ॥ अवसर एक मलेछनरेसू॥ असमथुरा निज दीननदेसू ॥ माला मुद्रधरहिं जनकाहू ॥ निश्चय करहुं प्राणगतताहू १ तब त्रासत लोगन समुदाई ॥ माल मुद्र निजलीन दुराई॥ मैभगवान

भक्त नहि त्यागा ॥ ह्योसिसावधान वडभागा २ तासु रिसाकि तवभूप उच्चारा ॥ मूढ न देस मोर सइकारा ॥ कौनन कवन ताहि अभिमाना ॥ भक्त स्रष्ट तवतासु वखाना ३ भूप नदेश तोर मै सुनयो ॥ तहितैं मरण नीकनिज गुनयौ ॥ ताते मैनधर्म निज त्यागा ॥ श्रीपति चरण प्रेम दृढ लागा ॥ ४ तृणवत मरण भूप नियजाना ॥ पैनिज धर्म तजन नहि माना ॥ तव मलेछ चांडाल वुलाई ॥ दीनगोप असमरमजनाई ५ देदे वधन त्रास तु वएहीं ॥ जोजढ हृदय मानि कछुलेहीं ॥ तो मुहि सनतुव देहुं जनाई ॥ चले सुपच अस सुनत लिवाई ६ कानन आय त्रास अतिदीना ॥ सठचांडाल कथन असकीना ॥ नृपनदेश सव लोगन माना ॥ तुवकतकरहु निरादरप्राना ७ भक्त स्रष्ठ तव तासु उचारा ॥ कवलग प्रिये प्राण संसारा ॥ पवन रूप जव निकसत एहा आवहिं किन आवहिं फिरि देहा ८ इनकर कछु भरोस नहिभाई ॥ वुधन करहिं इन सन अपनाई ॥ अपनो एक धरम संसारा ॥ तातें मै न करहुं सूइकारा ९ तजहुं प्राणपै धर्मन हरहौ ॥ काहिन वेग वधन तुव करहौ ॥ करख्यो सुपच सुनत जियमाहीं वरन्यो आय सकल नृपकाहीं १० भूप मलेछ सुनत सुखमाना ॥ लीन वुलाय भक्त सनमाना ॥ जोरि जुगल कर चरनन लागा ॥ वार वार मानस अनुरागा ११ अहो धन्य तुव धन्य सुहाई ॥ निश्चय भक्ति चरन जदुराई ॥

तृण सम जियन जानि संसारा ॥ राख्यो हृदय भक्ति आधा-
रा १२ दोहा ॥ अस निज बदन प्रसंसि नृप अनुचित क्षमा
कराइ ॥ वित जुत कीन्यो विनय करि भक्त स्त्रष्ट सिवकाइ १
सूइरुत कोनन भक्तवर ॥ नृप कहं आसिखदीन॥चल्योभूप गुण
गण कथन करत हरष मनलीन २ इति सर्गः ११३

अथवक्ष्यमाणभक्त चरितम् रोडाछंद ॥अस प्रकार कल्यान दास
गा भक्तउदारा सुचि सिष आतम रामकंध्र जन निरत अ
चारा॥ भक्तदास गोविंद आदि उह संस्त्रति गायन ॥ इन कर
सुमरण विदत भक्ति भगवन सरसायन १ इति सर्गः ११४

अथ वासुकुमार चरितम्॥ दोहा ॥ वासुकुमार प्रसिद्धजग॥ वैष्ण
व भूप सुजान ॥ राखत सदा सुगैल निज ॥ मूरति कृपा निधान
१ चौपाई ॥ समय एक दिल्लीस बुलावा हरषत इंद्र प्रस्थ पुरआ
वा ॥ पूजन हेतु भानुजावारी ॥ लावहि आपु भूप व्रतधारी १
मानसिंह नृपदेखि उचाराइह श्रमविपल भूपतुवधारा॥वासुकुमार
वदनतव काहा ॥ मोरभक्ति इककला नराहा २ जसतुव सुतारु
चिरव्रत धारी ॥ करहि भक्ति सुचि दीपकुमारी ॥ जहि भगवान

हरन दुखसूला ॥ सदारैंहि सनमुख अनकूला ३ दोहा ॥ सुनि अस हरख्यो मानहर ॥ तवते वित जुत आय॥लाग्यो सेवन अत पिजन ॥ संत भक्ति सरसाय१इति भक्तविनोद ग्रंथे वासुकुमार चरितं नाम सर्गः ११५

अथगिरिधर चरितत् दोहा ॥ गोपभक्त इकवैषणव उत्तम गिरिधर नाम॥साधुचरण जलपान व्रत ॥ धर्‌‍यो जास अभिराम १ चोपई ॥ समय एकधूरत जनसाधू ॥ अधम मंदमति कपटअराधू ॥ प्रीक्षाकरन हेतुतहि आवा ॥ कंध्रउठाय साधु मृतलावा १ तहिसन्मुख धरि वदनवषाना इहिपदवार करहु तुवपाना॥ तव गिरिधर गतसंक हुलासा ॥ करनचरण प्रक्षालन तासा २ तेजव कीन पान पदवारी॥ उठयौ संतमृत कृष्ण चितारी ॥ देखिलो कमानस विसमाए ॥ साधुसाधु निजवदन अलाए ३ ॥ दोहा ॥ वारवार धूरतविविध बदनप्रसंसत तास ॥ करिप्रणाम कीन्योगवन भवन विकल वसत्रास१ इतिभक्तविनोद ग्रंथे गिरिधर चरितं नाम सर्गः ११६

अथ गोपालीचरितम् दोहा ॥ गोपीभक्ता विदत इक॥ गोपाली अस नाम ॥ मूरति गोविंद वालनिज ॥ हृदय धारि अभिराम १ जिमिजसुमत सुतनेह तिमि ॥ पुत्र प्रीति जियकीन ॥ सुमरत वाल गुपाल प्रभ ॥ सुभजसुमत गतिलीन २ इति भक्त विनोद ग्रंथे गोपाली चरितं नाम सर्गः ११७

अथ रामदास चरितं दोहा मथुरा प्रांत सभक्तवर ॥ रामदासज हि नाम ॥ सेवत बृंदा विपुनबसी ॥ अतथि संत निसकाम १ चोपई ॥ समय एक तहिसुता सुहावा पानि गृहण अवसर नि यरावा ॥ अखिल ललित पकवान रिचाए ॥ सदन जतन जुत दीनरखाए ॥ १ पतनीतासमुतासन लीन्यो॥निजजजमान गवन गृहकीन्यो ॥ पाछेसंत सदन तहिआए॥ देखत रामदास हरषा ए २ क्षुध्यत संत निकरतहिचीने ॥ चरण वारप्रक्षालन कीने ॥ जेताता पकवानरचाए ॥ दीनेसंत समूह जिवाए ३ करिविदा य मूंदत निजद्वारू बैठ्यो वहिरभक्त व्रतधारू ॥ तोलोंआइ सु ता जुतनारी ॥ सदन विगत पकवान निहारी ४ भई दुखित मानस अकुलाई ॥ कहतदीनपति सदन लुटाई ॥ सुतकहं वो लिमरम सवकाहा ॥ तेअस सुनत मोनजियराहा ५ तोलोंआद बरात सुहावन ॥ हनतनिशान विविधमन भावन ॥ रामदास जुत वैष्णव आना ॥ ॥ लगे करनचिंतन जियनाना ॥ ६ गयेएक तवसदन मझारा ॥ देखन खानपान संभारा ॥ भक्तिप्रभाव प्रकट तहिदेखा ॥ वसतुइमत परवत समलेखा ७ कहि सप्रभाव तास जवआई ॥ भे प्रसन्नवैष्णव समुदाई ॥ सादिरवोलि बरातनली ने ॥ भोजन भूरिसुता समदीने ८ करिप्रतोष सवकरसवभाती ॥ सादिर क्रिये बिदाय बराती ॥ करुणा देखि भक्त चितचोरा ॥ रामदासउरहरषन थोरा ९ दोहा भयोविथागत भक्तवर॥हरि अन

हरन दुखसूला ॥ सदारैंहि सनमुख अनकूला ३ दोहा ॥ सुनि अस हरख्यो मानहर ॥ तवते वित जुत आय॥लाग्यो सेवन अतथिजन ॥ संत भक्ति सरसाय१इति भक्ताविनोद ग्रंथे बासुकुमार चरितं नाम सर्गः ११५

अथगिरिधर चरितत् दोहा ॥ गोपभक्त इकवैष्णव उत्तम गिरिधर नाम॥साधुचरण जलपान व्रत ॥ धर्यो जास अभिराम १ चौपई ॥ समय एकधूरत जनसाधू ॥ अधम मंदमति कपटअराधू ॥ प्रीक्षाकरन हेतुतहि आवा ॥ कंध्रउठाय साधु मृतलावा १ तहिसन्मुख धरि वदनवषाना इहिपदवार करहु तुवपाना ॥ तव गिरिधर गतसंक हुलासा ॥ करनचरण प्रक्षालन तासा २ तेजव कीन पान पदवारी॥ उठ्यो संतमृत कृष्ण चितारी ॥ देखिलोकमानस विसमाए ॥ साधुसाधु निजवदन अलाए ३ ॥ दोहा ॥ बारवार धूरतविविध बदनप्रसंसत तास ॥ करिप्रणाम कीन्योगवन भवन विकल वसत्रास१ इतिभक्तविनोद ग्रंथे गिरिधर चरितं नाम सर्गः ११६

अथ गोपालीचरितम् दोहा ॥ गोपीभक्ता विदत इक॥ गोपाली अस नाम ॥ मूरति गोविंद वालनिज ॥ हृदय धारि अभिराम १ जिमिजसुमत सुतनेह तिमि ॥ पुत्र प्रीति जियकीन ॥ सुमरत वाल गुपाल प्रभ ॥ सुभजसुमत गतिलीन २ इति भक्त विनोद ग्रंथे गोपाली चरितं नाम सर्गः ११७

अथ रामदास चरितं दोहा मथुरा प्रांत सभक्तवर ॥ रामदासज
हि नाम ॥ सेवत बृंदा विपुनबसी ॥ अतथि संत निसकाम १
चोपई ॥ समय एक तहिसुता सुहावा पानि गृहण अवसर नि
यरावा ॥ अखिल ललित पकवान रिचाए ॥ सदन जतन जुत
दीनरखाए ॥ १ पतनीतासमुतासन लीन्यो॥निजजजमान गवन
गृहकीन्यो ॥ पाछेसंत सदन तहिआए ॥ देखत रामदास हरषा
ए २ क्षुध्यत संत निकरतहिचीने ॥ चरण वारप्रक्षालन कीने ॥
जेनाना पकवानरचाए ॥ दीनेसंत समूह जिवाए ३ करिविदा
य मूंदत निजद्वारू वैठ्यो वहिरभक्त व्रतधारू ॥ तोलोंआइ सु
ता जुतनारी ॥ सदन विगत पकवान निहारी ४ भई दुखित
मानस अकुलाई ॥ कहतदीनपति सदन लुटाई ॥ सुतकहं वो
लिमरम सवकाहा ॥ तेअस सुनत मोनजियराहा ५ तोलोंआइ
वरात सुहावन ॥ हनतनिशान विविधमन भावन ॥ रामदास जुत
वैष्णव आना ॥ ॥ लगे करनचिंतन जियनाना ॥ ६ गयोएक
तवसदन मझारा ॥ देखन खानपान संभारा ॥ भक्तिप्रभाव प्रकट
तहिदेखा ॥ वसतुइमत परवत समलेखा ७ कहि सप्रभाव तास
जवआई ॥ भे प्रसन्नवैष्णव समुदाई ॥ सादिरवोलि वरातनली
ने ॥ भोजन भूरिसुता समदीने ८ करिप्रतोष सवकरसवभाती ॥
सादिर क्रिये बिदाय बराती ॥ करुणा देखि भक्त चितचोरा ॥
रामदासउरहरषन थोरा ९ दोहा भयोविथागत भक्तवर॥हरि अन

कूल विचारि ॥ तवतें लीन नरेंद्र निज ॥ हृदय भक्ति प्रभुधारि १ इति भक्त विनोद ग्रंथे रामदास चरितं नाम सर्गः ११८

दोहा ॥ भयो सारसुतनाम इक विप्रभक्त भगवान ॥ रामराज बृंदा विपन ॥ सेवन संत सुजान इति सर्गः ११९

अथभगवंत चरितम् ॥ दोहा ॥ मंत्रीकाहु नरेस कर ॥ विदतनाम भगवंत ॥ बृंदावन वासि दिवस निसि ॥ सेवत संत महंत १ चौपई ॥ सुन्यो तास निजगुरुवर आवन ॥ त्रियसन कहिस वचन मनभावन ॥ आवन चहत भवन गुरुदेवा ॥ तिनकर कवन उचत प्रिय सेवा १ सुमति सुनत असवदन उचारा ॥ पतितन मन धन गुरु कहंसारा ॥ जोइह देहु अल्प तिन होई ॥ गुरुते अधिक प्रिये नहिकोई २ सुनत भक्त मानस हरषाना ॥ धन्य धन्य तहि वदन वखाना ॥ गुरु हित वस्तुवसन वित गेहा ॥ धरिस अजर जुत भक्ति सनेहा ३ गुरु दरसन उतकंठित रागे इकटक नयन भक्त मगलागे ॥ तव सुभ सदिन जानि गुरु आए ॥ भक्तदेखि मानस हरषाए ४ करिप्रणाम जुग जोरत पाना करि सनमान अवधगत नाना ॥ राखे कछुदिन सदन सुहाए ॥ वहुरि भक्ति जुत कीन विदाए ५ तव भगवंत अखिल सुख भोगी ॥ भयो सि करम व्यवस निज रोगी ॥ बांधव जन बृंदावन काहीं ॥ गवने लेत दुखित मनमाहीं ६ अस जव कछुक दूर चलिआए ॥ तव तिन कहं भगवंत अलाए ॥ कहां सजन

मुहि लेत सिधारे ॥ ते वृंदावन वदन उचारे ७ तिन कह भक्त भ्रष्ट असकाहा ॥ मलमय मोर वपुष इहराहा ॥ सोवृंदावन योग्य नत्यागे ॥ वसिहें तहां संत वडभागे ८ दग्ध होनतें छुटहिं दुर गंधू ॥ होहि संत सब विगत अनंदू ॥ असकहि प्राण दीन निजत्यागे ॥ वांधव देखि रुदन करिलागे ९ दोहा ॥ तव लोगन वृंदाविपन ॥ कुंजन भ्रमत निहार ॥ भयोलुपत पुनि भक्तवर ॥ भक्ति प्रभाव अपार १ इति भक्त विनोद ग्रंथे भगवंत

चरितं नाम सर्गः १२०

दोहा ॥ अति प्रिय राधाकृष्ण जग लालामणि इकवाइ ॥ कालिंद्री तट वंसि वट ॥नट नागर कहंजाइ १ खोजत गोवरधन विपन ॥ इादिस प्रेम समेत ॥ भ्रमत भ्रमत अस मिले तहि जदुवर कृपा न केत २ इति भक्त विनोद ग्रंथे लाला मणि

चरितं नाम सर्गः १२१

अथ जगन्नाथ चरितं दोहा ॥ अंत्रवेधि कलदेस इक ॥ जगननाथ दिजनाम ॥ विदत दुवेदी परम पटू ॥ वसहिं छतौली ग्राम १ चौपई हृदय तास श्रद्धा उपजावा ॥ वाजिमेध कल करहुं सुहावा ॥ तव दिज चंदन ग्राम अपारू ॥ संचित कीन ललित संभारू १ कासीतें द्विज वोलि पठाए क्रतु अधिकारि सुनत सव आए ॥ अंत्रवेधि बुध जन समुदाई ॥ आन विविध

अपरोहत राई २ पंडित विपुल निपुन जनमानी ॥ आए विप्र वृंद वर ज्ञानी ॥ जुरयो समाज अनंत अनेका ॥ पैतहि सथल कूपवर एका ३ तहितें सब चिंतन जिय करहीं ॥ जानि परत कछु काज न सरहीं॥ जगननाथ पूजन सरि देवा॥ रह्यो जन्म तें निरत अभेवा ४ वैठि निरंत्र चराचर सेवी ॥ जेजग किलष निवाराणि देवी ॥ सकल लोग चिंतन जिय जाना ॥ धारत हृदय देवसरि ध्याना ॥ ५ ॥ लाग्यो अस्तुति करन सुहाई ॥ हे जननी सुरनर सुख दाई ॥ हेशि वसीस विहरनी माता ॥ विष्णुपदी हे दीनन त्राता ६ हे अभे त्रैलोकउवरनी ॥ हे अनंत दुखदोख निबरनी ॥ मै अब कीन वाजमख माई ॥ तहितें करहु निमंत्रण आई ७ आवहु स दन मोर सुखदानी ॥ निजचरणन सेवक दृढ जानी ॥ जगन्ना थ वहु विनय सुहाई ॥ आवासदन वदन असगाई ८ यथा उचित सव कर सतकारू॥ करि करि विविध भक्त व्रतधारू ॥ सवकहं शयन कराय निसाहीं ॥ सोयो आपु सदन निजमाहीं ९ जुगजोजन कर अंतर ताहां ॥ रह्यो प्रवाह देवसरि जाहां ॥ तव निजभक्त भक्ति वसहोई ॥ अवसर जामनि जान्हवि जोई १० जगन्नाथ द्विजआश्रम आई ॥ जागे घोष सुनत समुदाई॥ वारि कलोल देखि अनु रागे ॥ सकल परस्पर भाषण लागे ११ दोहा ॥लखिनजात अद्भुत विपुल ॥ भक्ति प्रभाव ॥ अभंग

जहां गंगतहं सथलभा ॥ जहांसथलतहं गंग १ चौपई ॥ अस प्रकार कोलाहल लेखी ॥ जागे जगननाथ तवदेखी ॥ ऊरमि उमघ देत छवगंगा ॥ उठेआनकलकोटि तरंगा १ लिये संग वुधजन हरषाता ॥ विप्र वृंद नृप संत जमाता ॥ आयदेव सरि पूजनकीना ॥ सकल लोक मनहरष प्रलीना २ जगन्नाथ सुर सरिकरनाना ॥ करिपावन अस्तुति मुखगाना ॥ विमल सनान पान अवगाहन ॥ लागे करन वाम अरुदाहन ३ वाजमेध पुनि विधिवत कीना । मुद्रा हेम दिजनकहं दीना ॥ वहुरिविदाय कीन सनमाना सकल लोकमुख अस्तुति नाना ४ गायन करत भवन निजधाए ॥ भक्त मेध संभार सुहाए ॥ गयो देवसरि करन प्रवाहू । तहांजाय संजुत उत साहू ५ जुगल जोरिकर विनय अलाई ॥ मैंतोहि वोलि दीन श्रममाई ॥ देवि क्षमहु अनुचित इह मोरा ॥ मैं क्रमवचन दास पदतोरा ६ करि अस विनय भक्त हरषावा ॥ सादिर वंदि सदन निज आवा ॥ तवतें वाजपई अ सनामा ॥ भयोसि विदत भक्त अभिरामा ७ देखहु भक्ति प्रभाव सुहावा ॥ जाकर सदन देवसरि आवा ॥ जवजव वृषाकाल कलआवत ॥ अवहु सालिल तहि मारग छावत ८ कानकुब्ज जोइदेस रसाला ॥ अवलौं विदत वाजपई नाला ॥अस प्रकार इह चरित सुहावा ॥ मैं संक्षप्त वदन कछु गावा ९ दोहा ॥ दाइक मोदप्रमोद कल ॥ कृष्णाकमल पदनेहु ॥जरन सूलज्वर

दुंददुख ॥ हृदय हरन संदेहु १ इति भक्त विनोद ग्रंथे जगन्ना
थभाक्ति माहात्म्यं नाम सर्गः १२२

अथ मणीरामचरितम् ॥दोहा ॥ जगन्नाथ सुभबंसवर॥ भए भक्तम
णिराम ॥ वाजपई संज्ञा विदत ॥ निवसहि भैसरग्राम १ चौपई
मनवच करम भक्त भगवाना ॥ ताकरएक स्त्रवण गुणखाना ॥ दै
ब जोगकर मृतवस होई ॥ परचो अचेत वालमहि सोई १ तासु
विलोकि मृतक मनि रामा ॥ वैठयो दैव भवन अभिरामा ॥ पा
वन पद प्राकृत मुख गाए लग्यो करन अस तुति जदुराए २ जव
पूरणइतभयो अनंदू ॥ उत प्रसन्न भए जादब चंदू ॥ तुरत भक्त सु
तहीन जिवाई ॥ चरित बिलोकि लोकसमुदाई ३ दोहा ॥ भ
क्त स्त्रष्ट कर बदननिज ॥ अस्तुति सकल अलाय ॥ देखहु प्रभुज
हिभाक्तिवस मृतासिसु दीन जयाय १ ॥ इति भक्त विनोद ग्रं
थे मणीराम चरितं नामसर्गः १२३

अथ गोविंद चरितं दोहा ॥ मिथला पुरि भे भक्त इक विप्र
विदत गोविंद ॥ बेद तत्व सव मरम जाहि अग्रगण्य दिज वृं
द १ चौपई ॥ ततपर रमानाथ सिव काई ॥ अतथि संत दीनन
सुखदाई ॥ काव्य प्रदीप जास विरचावा॥ भगवति पूजन पद्ध
तिभावा१ मंत्रशास्त्र इत्यादि सुहाए ॥ जाहि निज सुमति प्रभाव
रचाए॥ हरि पूजन अस व्रत मनमाहीं ॥ तुलसीदल तवनीत

सदाहीं २ करहि नवेदन दिजबर ज्ञानी ॥ पावहिं असन बहु
रि सुखमानी ॥ जोलों इहन मिलहिं दिज काहीं ॥ तोलों कर
हिं पाव कछु नाहीं ३ असप्रकार व्रतधारि सुहावा ॥ दिजबर
काशमीर थल आवा ॥ तहां निपुण पंडित इकराहा ॥ मं मट
नाम विदत सवकाहा ४ काव्य प्रकाश जास विरचाना ॥ ता
स तिलक गोविंद सुजाना ॥ विरचत तासु दिखावन हेतू ॥
आय भक्त मारग श्रम लेतू ५ अम्मट मम्मट कय्यट भ्राता ॥
इह तीनो संस्रति वक्षाता॥ कय्यट कीन भास व्याकरणा ॥ अ
म्मट वेद भास मुख वरणा ६ मम्मट काव्यप्रकाश उचार्‍यो ॥
अस इह बिदत सकल संसार्‍यो ॥ आय भक्त तव मम्मटद्वारा
द्वारपसन अस वदन उचारा ७ मम्मट कहं मुहि देहु मिलाई
सुनि द्वारप अस गिरा अलाई ॥ आवन ऐहिं वेद कछुनाहीं ॥
करहु स्नान कूप जलमाहीं ८ भक्त स्रष्ठ तवजाय निहारा ॥ कू
प सलिल कछु पर्‍यो नपारा ॥ रजसाधन कछुनाहिन पावा ॥
तवमम्मट पंडित तहं आवा ९ दीरघ जास समस्तुकेशा ॥ कं
चुक चरम यमन जनुभेसा ॥ मम्मट देखि हरषि मनमाहीं की
न्यो नमस्कार द्विज काहीं १० भक्त वदन तव पूछनलागे ॥ म
म्मट कहां गवन गृहत्यागे ॥ तव पंडित असवदन उचारा ॥मु
हि कहं मम्मट लेहु निहारा ११ तुब आगमन कहित निज की
ना ॥ दिजबर निजवृतांत कहिदीना ॥ मम्मट कहित चलहु अ

वगेहा ॥ तव बोल्यो हरिभक्त सनेहा १२ करहुं सनान काम म
नमाहीं ॥ पैपंडित साधन कछुनाहीं ॥ मम्मट सुनत भक्त मुखव
रना ॥ लावा मज्जनीय उपकरना १३ दोहा होत रुचिर थिर कू
प तट ॥ पानि उदक कछुधार ॥ अभि मंत्रण करि कूप मध दी
नसि मम्मटडार १ चौपई तहि प्रभाव आकार्शित होई ॥ भयो
कूपपूरन जल सोई ॥ निकसन लग्योबाहिर चुतवारी॥तव मम्मट
अस गिरा उचारी १ करहु सनान विप्र वरनीके ॥ भक्त सृष्ट त
ब विस्मत जीके ॥ करि सनान पूजन भगवाना ॥ विराचि पाक
नइबेद लगाना२ आपुपाय भोजन हरषाई ॥ हृदय स्मरण ला
ग जदुराई ॥ तव मम्मट संजुत निजभ्राता ॥ वैठ्यो आय प्रफु
छत गाता ३ निजकृत काव्य प्रकाश दिखावा ॥ भक्त स्रष्ट मा
नसहरषावा ॥ काव्य प्रदीप तिलक मनभावा ॥ अति सप्रीति
जुत तासु दिखावा ४ तव पंडित ताकर लिखिलीना ॥ निज
कृत भक्त स्रष्ट कहं दीना ॥ भयो परस्पर प्रीति सनेहा ॥ असव
सि कछुक दिवस ताहिगेहा ५ होत विदाय वहुरि सनमाना ॥
मिथुला कीन भक्त प्रस्थाना ॥ रह्योसि एकदास सिष संगा ॥ ए
क सथल मग हृदय उमंगा ६ जव कीन्यो विस्राम
सुहावा ॥ तहां नभक्त तुलसिदल पावा ॥ तहितें कीनन भोजन
वारी ॥ द्वितिय दिवस जवचले सिधारी ७ तवअरन्य मारग चु
तहोई ॥ क्षुधित त्रिषित विथतभे दोई ॥ जवसमा रह्यो नहि

काहू ॥ वैठेदेखि विटप इक छाहू ८ भक्त दास सनवदन अ
लाए ॥ अब आगल पथचल्यो नजाए ॥ तेलाग्यो सुनिरोदन क
रना ॥ कहांवदेस भयो अव मरना ९ सुमरी कृष्ण तब भक्त
प्रवीना ॥ उठे गवन आगलपथकीना ॥ दास उतापन्न मारग
काहीं ॥ देखत चल्यो गहन वनमाहीं १० तव गोपालवाल मृ
दु अंगा दमन दिव्य छवि कोटि अनंगा ॥ नीरजनवलनयन ज
नु सोभा ॥ चितवनि चतुरचारु मनलोभा ११ सुंदरवरण नील
मणि काया ॥ पीतदकूलमूल जनुदाया ॥ मानस हरणजाष्टि, कर
चारू ॥ भाजन पानिनीत नवधारू १२ वरनवरन वरधेनु चर
य्या सुचि सामीप तडाग सुहय्या ॥ तहिपर ललित तुलसि द्रुम
छायो ॥ दास देखि मानस हरषायो १३ दोहा ॥ तहि वालक स
नकहत अस ॥ कहांसदन तुवमीत ॥ कसतुलसी जुतमिलहि
मुहि ॥ ललित मोल नवनीत १ चौपई गोविंद स्वामि कठिन
व्रत धारू ॥ विनु तुलसी दल माषनचारू ॥ भगवन कहं नेवेदन
लावहिं ॥ जोनामिलहिं तवपाक नपावहिं १ सोन मिल्यो जुतदि
वस विहाए ॥ क्षुधित तृषित दुखित अकुलाए ॥ तव गोपाल रू
प भगवाना ॥ तासु वदन असवचन वखाना २ करनहारफुरक
थन तुमारा ॥ इहांआन कोमिन निहारा ॥ इह नवनीत तुलसि
तुमलेहो ॥ जाय प्रधान भक्त कहंदेहो ३ करहु कथन असवदन
प्रवीना ॥ इह गोपाल वालक तोहि दीना ॥ अवतें आगल प्राण

विनासा ॥ धरहु न असब्रत विकट अजासा ४ नारायण भक्ती कर रीझहिं ॥ प्राण विजोग कीये नहि सीझहिं॥केवल प्रेम व्यवस भगवाना ॥ श्रद्धा प्रीति देव प्रियमाना ५ वाल कथन सुनि सुखद सुहावा ॥ ततक्षण दास स्वामि पे आवा ॥ वाल बृतांत सकल समुझायो ॥ हरषत वहुरि सलल भरिलायो ६ गुरु सनान करि पूजन कीन्यो प्रभु कहं तुलसि नीतनव दीन्यो ॥ वहुरि कीन भोजन सुखदाई ॥ दास समेत हृदय हरषाई ७ तव गोविंद दास सनकाहा ॥ कहांतडाग तुलसि द्रुम राहा ॥ चलहु वेग मुहि देहु दिखाई ॥ चल्यो दास तव गुरुहि लिवाई ८ देख्यो आय तहांकछुनाहीं ॥ भाखत दास चक्त गुरु काहीं ॥ रह्यो न डाग तीर द्रुम एहू ॥ तुलसि विटपजुतवालसनेहू ९ देखे दीन ख्याल इततीन्यो ॥ अवप्रतीत सपने जनुचीन्यो ॥ अस कहि हृदय जुगल विसमाई ॥ लोगन कहं पूछित अस आई १० दोहा इहांतडाग गुपाल गृह ॥ विपन कवन थलमाहिं ॥ ते वोले हम आजलों ॥ सुन्यो श्रवण असनाहिं १ चौपई ॥ तव गोविंद दास सन काहा ॥ ते गोपाल बालकस राहा ॥ स्याम बरन घन जलज विलोचन ॥ वय किशोर दुखत्रास बिमोचन १ पीत बसन करवेन सुहावन ॥ नख सिख ललित रूप मन भावन । तनपर बिपन धेनु परि चारन ॥ गोविंद सुनत कथन मनहारन २ हृदय नरंत्र लीन निज जाना ॥ इहतो विदुत चिन्ह भगवाना॥

दीनबंधु प्रभुभक्त उवारी ॥ कानन कीन मोर रखवारी ३ ॥
असकहि हृदय भक्त हरखाई ॥ दीन्यो दास चरन सिरनाई ॥
इह जन आज धन्यजगमाहीं ॥ जहि देखेदृग त्रिभुवन साईं ४
अस सुमरत ताकरजनमंडा ॥ भयोस्फुटत तुरत ब्रह्मंडा ॥ निक
सितेज हरि ज्योति समान्यो ॥ दास देखि रोदनमुख ठान्यो
५ गुरुमृत वपुषकीन तवदाहा ॥ करहिं बिलापवदन असहाहा
॥ कानन तहां रजनि अंधियारी ॥ बैठिरह्यो अति हृदय दुखारी
६ तव भगवान स्वप्न तहि दीना ॥ करहु शोक जनि दास प्रबी
ना ॥ रह्यो अंतकर जनम सुहावा ॥ अव गोबिंद मोक्ष सुखपा
वा ७ भाइहभक्तलीन मुहिमाहीं ॥ करहुवतस चिंता कछुनाहीं
परिहरि हृदय मोहभ्रम कोऊ ॥ भजहु निरंत्र तात्तुव मोऊ८ तो
हि कहं होहिं सुलभ सुखसोई ॥ दास विलोकि स्वपन अस
जोई ॥ उठ्यो प्रातसुमरत भगवाना॥ हरषत कीन भवन निज
पयाना ॥ ९ गोबिंद चरित ललित मनभावा ॥ सादिर सवकहं
दीनसुनावा॥लोक सुनतमानस विसमाए॥धन्यधन्यसब वदनअला
ए १० दोहा असकीनी कछु कथन में ॥ गोबिंद भक्ति अगा
ध ॥ भक्तपुरुष करनहिन कछु ॥ संस्रति होहि असाध १इति भ
क्तविनोदग्रंथे गोविंद भक्ति माहात्म्यं नाम सर्गः १२४

अथ रामप्रसाद चरितम्॥दोहा॥भए अजुध्या भक्तदिज रामप्रसाद
प्रबीन ॥ जहिरघुनंदन भजन हित ॥ गृहस्त धर्म तजि दीन १

चौपई ॥ अतथि संतसेवन व्रतधारा ॥ सदा निरत दिजपर उप
कारा ॥ जांकर हृदययथा रुचिहोई ॥ दिजवर करहि रुचिरफुर
सोई १ जिमि जिमि करहि लोंक सिबकाई ॥ अतथि संत ति
मि देहिं जिबाईं ॥ आवहि बिपलसंतजव गेहू ॥ रहाधनक इ
कवनकसनेहू २ तहितें लेहिं भक्तरिणदाना ॥ भोजन बसतु उ
चित जिमिनाना ॥ अस प्रकार कछुसमय बितयो ॥ ताकर सह
समुद्र तवभ्ययो ३ वासर एकभक्त वरधामा ॥ आए नगरसंत अ
भिरामा ॥ रह्योनकेत अन्नकछु नाहीं ॥ सिखकहं पठयो वनक
गृहकाहीं ४ ताहि दिवस कछु दीनन तासा ॥ तवगुरुपें सिख
आवनिरासा ॥ कहिसवनक कछुदीनन आजू ॥ भक्तदेखिगृहसं
त समाजू ५ क्षुधित विकल विपल दुखमाना ॥ अवकाकरहुं ज
तन भगवाना ॥ तवरघुवीर भक्तदुखहारे ॥ रामप्रसाद रूपनिज
धारे ६ सादिर भक्तभवन प्रभुआई ॥ दीन्यो सहस मुद्रहरषाई॥
कहिसजोरि करवनक प्रवीना ॥ स्वामिनआशु गवन कतकीना
७ मैंइहलेत वेरकछुपाए ॥ प्रभुश्रमवृथा कीनतुबआए ॥ तव भग
वन अस वदन उचारे ॥ नहिन वनक कछु दोषतुमारे ८इहअव
श्व पाछिल रिणदेना ॥ आगल वहुरि वनक वरलेना ॥ असक
हि देतमुद्र भगवाना ॥ हरषत भवन कीन निजप्याना ९ रह्यो
करततव वनक प्रतीक्षा ॥ जवआवत कऊ नाहिन दीक्षा ॥ आ
वा आपुभक्त बरभामा ॥ कीनजुगल करजोरि प्रणामा १०नंम्रत
वहुरि वदन निजकाहा ॥ कारण कवन नाथइह राहा ॥ जोन

पठयो सेवक व्रतधारू ॥ लेनललित भोजनसंभारू ११ भक्तस्र्नुतववदनउचारा ॥ पूरवकररिणदेहुं तुमारा ॥ तव आगल मेलेहु सुजाना ॥ अस प्रकार जव भक्त वखाना ॥ १२ ॥ सह समुद्र तव भक्त दिखायो ॥ मै पूरव रिण लीनासि पायो ॥ निज कर आपु दीन तुवनाथा ॥ अवप्रभुकरहु कवन भ्रमगाथा॥ १३ सुनतलोकमानस विसमाए ॥ भक्त हरषजलनयननछाए ॥ कीन वनककहंदंडप्रणामा ॥ जहिइनद्दगन दरसअभिरामा १४ तीन लोकनाइककरपायो धन्यधन्यअस्तुति मुखगायो ॥ वनकदेखि विसमयवसहोईं ॥ तवतेंसकल धामधनखोई १५ हृदयविरक्तभ किसरसाईं ॥ रामप्रसादवन्यो सिखआईं ॥ भक्त प्रधानलेतसवका हीं ॥ चलिआए मिथुलापुरिमाहीं १६ दोहा ॥ जगधात्रीसिय कररुचिर ॥ करिपूजनसुखदान ॥ मिथुला निवसेकछुकदिन ॥ प्रवरभक्तभगवान १ चौपई ॥ नृपतिकीन सनमानसुहावा ॥ सुंदरअग्वनमास जवआवा॥ शुकलपक्ष कल सप तमिकाहीं॥ सकललोकहरषतमनमाहीं१ भक्त स्रष्टसंजुतनरराऊ सियविवाहलीलाउतसाऊ मानसहरण मद्भुतसवकीना ॥ मोदप्रमोद परस्परलीना २ जिनाजिन ललितमद्भुतसवदेखा ॥ अहस्ततजतरत भक्तिवसेखा ॥ भए भक्तवरसद्दशसारे॥ निपुण भक्त सियरघुवरप्यारे३ दोहा ॥ असइहराम प्रसादजग ॥ संस्रति भक्त प्रवीन ॥ जहि निजभाकि प्रभावतेंसकल लोकजसलीन १ इतिभक्तविनोदग्रंथे रामप्रसादभाक्ति माहात्म्यनाम सर्गः १२५

दोहा ॥ तूकाजी भयविद्दतजग ॥ सूद्रभक्तभगवान ॥ जहिसनभ
स्वनकीनकल ॥ रघुवरकृपानिधान १ सवकरदेखलहारिभवन॥ की
नगवनसनदेहू ॥ समविस्तार विचाराजिय ॥ कीनकथन नाहिंतेह
२ इतिसंग : १२६

दोहा ॥ दक्षण देसप्रसिद्धभे ॥ रामदासयशमूल ॥ हनुमतसद्द
दततहि ॥ लग्योललितलांगूल १ तहितेंभाषतलोकसव ॥
नपूतअवतारि ॥ गुणवल विद्यानिपुणातिमि॥ जिमिहनुमतव्र
रि २ इति सर्ग : १२७

दोहा ॥ अलइहसंसृति भक्त जन ॥ भक्ति महातमचारु ॥
जनकीन जथामती ॥ कथनललितमनहारु १ चौपई ॥ सत्यम
संसयकछुनाहीं ॥ जिनाहिं होतानिश्चयमनमाहीं ॥ तिनकहंसख
सुलभफलदाई॥ इहहरि भक्ति कलपतरुभाई १ दोहा ॥
साजिय परमरुचि ॥ राखि भक्त अभिराम ॥ भजहुकपट ग
क्ति जुत ॥ निसिवासर सियराम १ इति श्रीमन्महा र
राज जंबू काश्मीरा द्यनेक देशाधि पति प्रभुवर राज
श्रीरणवीरसिंहा ज्ञानुसारेण कवि मीहां सिंह विरचिते
नोद ग्रंथे भगवद् भक्ति माहात्म्य चतुर्दशाधिकाद्विशततम
२१४ ॥ समातश्चायं भक्त विनोदग्रन्थः

शोधितोयंनिधिप.तिना